राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश

विजयदान देथा

राजस्थानी-हिंदी कहावत-कोश
धाम : छह

*

पंद्रह हजार कहावतें और तीन सौ तैंतीस संदर्भ-कथाएँ
मूल राजस्थानी कहावतों के हिंदी अर्थ और साँगोपाँग व्याख्या सहित

*

काळ खपै पण ओखांणा अखै
काल नश्वर, कहावतें अमर

राजस्थानी-हिंदी कहावत-कोश

धाम - छह

*

लां से हो तक कहावतें

*

संयोजक व संपादक

विजयदान देथा

*

राजस्थानी ग्रन्थागार

प्रकाशक एवं वितरक

सोजती गेट, जोधपुर-342 001 (राज.)

फोन : 2623933 (का.), 2432567 (नि.)

E-mail : rgranthagar@satyam.net.in

राजस्थानी-हिंदी कहावत-कोश

धाम - छह

*

लां से हो तक कहावतें

*

संयोजक व संपादक

विजयदान देथा

*

राजस्थानी ग्रन्थागार

प्रकाशक एवं वितरक

:ोजती गेट, जोधपुर-342 001 (राज.)

फोन : 2623933 (का.), 2432567 (नि.)

E-mail : rgranthagar@satyam.net.in

RAJASTHANI - HINDI KAHAWAT - KOSH
A DICTIONARY OF RAJASTHANI PROVERBS

*

राजस्थानी-हिंदी कहावत - कोश
छह भाग में सपूर्ण

*

प्रकाशक ·
राजस्थानी ग्रन्थागार
प्रकाशक एवं वितरक
सोजती गेट, जोधपुर-342001
फोन : 2623933 (कार्यालय)
2432567 (निवास)
E-mail : rgranthagar@satyam.net in

*

मूल्य : चार सौ रुपये मात्र (400.00)

*

कंपोज :
सूर्या कम्प्यूटर जोधपुर

मुद्रक :
भारत प्रिण्टर्स (प्रेस), जोधपुर

संकेत-तालिका

पाठा. = पाठांतर

क. सं. = कहावत संख्या

व. = राजस्थानी साहित्य समिति बिसाऊ, राजस्थान से प्रकाशित 'वरदा' जुलाई-सितंबर १९७२। आगे अंकित संख्या का मतलब उक्त अंक में प्रकाशित कहावत की संख्या से है।

भी. = साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर से प्रकाशित राजस्थानी भीलों की कहावतें, विजयादशमी, ७ अक्टूबर, १९५४। आगे अंकित संख्या का मतलब उक्त संग्रह में प्रकाशित कहावत की संख्या से है।

मि. क. सं. = मिलाइए कहावत संख्या।

दे. क. सं. = देखिए कहावत संख्या।

आ. दे. क. सं. = आगे देखिए कहावत संख्या।

सं. = संस्कृत

अनुक्रम :

काळ बहै पण बात रहै
काल बहे पर बात रहे ।

लां - ला

लांठां रा पग माथा ऊपर। १२६३२

बड़ों के पाँव सिर पर।

—बड़ों का आदर सिर आँखों पर।

—बड़ों की हर बात शिरोधार्य होती है।

—बड़ों का दबदबा मानना ही पड़ता है।

—बड़ों के चरण पूजनीय होते हैं।

लांठां री जीत, जीत नीं गिणीजै। १२६३३

बड़ों की जीत, जीत नहीं मानी जाती।

—बड़े व्यक्ति हर दृष्टि से साधन-संपन्न और शक्तिशाली होते हैं, वे गरीब या सामान्य व्यक्ति से जीत भी जाएँ तो वह वास्तविक जीत नहीं होती। वह तो साधन और शक्ति का सहज परिणाम है।

लांठां री संकरांत। १२६३४

बड़ों की संक्रांति।

—जो ताकतवर होता है, वह बाजी मार लेता है।

—बल के बूते पर जबरदस्ती कोई व्यक्ति काम करवाले, उसके लिए।

—शक्तिशाली ही सब तरह की सुविधा भोगने का अधिकारी होता है।

पाठा : ठींगा री संक्रांत।

लांठां रौ डोकौ डांग फाड़ै। १२६३५

जबरदस्त का डंठल भी लट्ठ चीर डालता है।

—समाज में बड़ों की मनमानी सब जगह चलती है।

—ताकत के सामने सभी सिर झुकाते है।

—शक्तिशाली के अन्याय को चुनौती देना बहुत मुश्किल है।

दे.क सं.१२१८९

लांठां रौ हाळी वेगौ ई कूटीजै। १२६३६

बडो का नौकर जल्द ही मार खाता है।

—बडो की देखादेख जब उनका नौकर भी जबरदस्ती करने लगे तो वह लोगों को बर्दाश्त नहीं होता, लोग उस पर हाथ छोड़ देते हैं।

—बड़ों के बल-बूते पर इतराने वाले को लोग सबक सिखा ही देते हैं।

लांठाई रा लाल छोगा। १२६३७

शक्तिशाली का लाल तुर्रा।

—समाज में शक्तिशालियों का हमेशा दबदबा रहता है।

—शक्तिशालियों की पहिचान अलग ही होती है।

लांठा कूटै अर रोवण नीं देवै। १२६३८

जुल्मी मारे और रोने भी न दे।

दे.क स.४८८१,७०२९

लांठी रातां रा लांठा ई तड़का। १२६३९

बडी रातो के बड़े ही सवेरे।

—बड़े व्यक्तियों के काम भी बड़े होते हैं।

—बड़ों का कारोबार भी बड़ा। छोटा व्यक्ति जिसकी कल्पना भी नहीं कर सकता।

दे.क सं ८७४३,११६९६

लांपळा में लागी लाय। १२६४०

घास में लगी आग।

लांपळौ = एक प्रकार का घास जो सबसे घटिया, निकम्मा, काँटेदार और बारीक होता है। यह बारूद की नाईं जल्दी आग पकड़ता है।

—जिस अप्रत्याशित आफत पर कोई काबू न पा सके, तब...।

—क्रांति की आग को बुझाना बहुत कठिन है।

—जो दंगा-फसाद देखते-देखते बढ़ जाय।

पूरी उक्ति इस प्रकार है :

लांपळा में लागी लाय, रेबारण ही नै डाकण व्हैगी, ऊंटां चढ़-चढ़ खाय।

लांबा घूंघटाळी लुगाई अर मुळकण्यौ मोट्यार। १२६४१

लंबे घूँघट वाली नार और मुस्कराने वाला मुटियार।

मोट्यार = यहाँ अर्थ पति से है।

—दोनों ही विश्वस्त नहीं होते। इन पर भरोसा करना उचित नहीं।

—लाज का अधिक दिखावा करने वाली औरत का चरित्र संदिग्ध होता है, उसी तरह हरदम मुस्कराने वाला पति भी बड़ा ढुलमुल होता है।

लांबा तिलक, मधरी वांणी, दगैबाज री आ ई निसांणी। १२६४२

लंबे तिलक, मीठी वाणी, दगाबाज की यही निशानी।

—लोक दृष्टि की पैनी निरीक्षण शक्ति का सॉगोपॉग एहसास इस उक्ति से होता है। पाखंडियों का पर्दाफाश कैसी सहजता से हुआ है—लंबा तिलक और मीठी वाणी, दगाबाज की यही निशानी! पाखंडियों की पहिचान में अब कोई गलती नहीं हो सकती।

—जो व्यक्ति ऊपरी बाना तो भले आदमियों का पहिने और भीतर कुटिलता का जाल बिछा हो, उसके लिए यह एकदम सटीक उक्ति है।

लांबा हाथ बाड़ में घालण सारू नीं व्है। १२६४३

लंबे हाथ बाड़ में डालने के लिए नहीं होते।

—लंबे हाथ काँटों की बजाय फल-फूलों की ओर बढ़ें तो अच्छा है।

—किसी वस्तु की बहुलता अपव्यय के लिए नहीं होती।

—शक्तिशाली की ताकत यदि सामाजिक सदुपयोग में लगे तो वह कल्याणकारी साबित हो सकती है।

लांबा हेला ओछी वीख। १२६४४

ऊँची आवाज और छोटे कदम।

—दिखावा अधिक और वास्तविकता कम—चाहे प्रेम प्रदर्शन के लिए हो चाहे लड़ाई की खातिर। यह राम-बाण सूत्र सभी मानवीय मनःस्थितियों के लिए मुफीद है—आवाज तेज और भावना मद्धिम।

लांबी गांगरत कुण सांभळै ? १२६४५

लंबी बकवास कौन सुनता है ?

—बात तो संक्षिप्त, सटीक, सीधी और स्पष्ट होनी चाहिए, व्यर्थ की बकवाम सुनने के लिए किसी के पास न तो समय है और न उनना धीरज ही।

—वाचाल व्यक्ति किसे भी अच्छा नहीं लगना।

लांबी नस ऊंट री कोई वाढ़ण सारू नीं व्है। १२६४६

लंबी गर्दन ऊँट की काटने के लिए नही होती।

दे.क.सं.१३२७

लांबी बांह आंतरै पसरै। १२६४७

लंबी बाँह दूर तक पसरती है।

—पहुँच वाले व्यक्ति किसी से भी अपना काम आसानी मे करवा लेते है।

—पहुँच वाले व्यक्नियों का दूर-दूर तक मंपर्क होता है।

लांबी बात अर आडी रात। १२६४८

लंबी वात और पूरी रात।

—लंबी बात कहनी है और पूरी रात सामने पड़ी है।

—यदि मनुष्य आकांक्षाओं को अच्छी तरह नियोजित करले, उसकी प्राथमिकताओं को तय करले तो नश्वर जीवन में भी उन्हें पूरा किया जा सकता है।

लांबी रा औखद घणा, माटी औखद जोय। १२६४९
तूटी री बूंटी नहिं, जे वेद धंतर होय॥

लंबी की दवा बहुतेरी, मिट्टी औषधि जोय।
टूटी की बूटी नहीं, वैद्य धन्वंतरि होय॥

जोय = देख।

— यदि उम्र लंबी है तो दवाओं की कोई कमी नहीं, मिट्टी भी औषधि का काम दे सकती है। यदि उम्र कम है तो कोई भी बूंटी कारगर नहीं हो सकती, चाहे धन्वंतरि वैद्य ही प्रत्यक्ष प्रकट हो जाएँ।

—मृत्यु की औषधि न ईश्वर के पास है और न धन्वंतरि वैद्य के पास! और यदि उम्र बाकी है तो [illegible] भी उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।

लांबै रांढू रौ कोई छेह न पार। १२६५०

लंबी रस्सी का न कोई अंत और न कोई पार।

—मनुष्य की लालसाओं का कोई पार नहीं है।

—जिस तरह ईश्वर के रहस्य का भी कोई पार नहीं है।

—और न झूठ का भी कोई पार है। और न कचहरियों में न्याय के लंबे रस्से का भी कोई अंत है।

लांबो हेलो ने चोटी मनुवेर।– भी.६९८ १२६५१

लंबी आवाज और छोटी मनुहार।

—ऊँची आवाज देकर धीमी मनुहार करना शोभनीय नहीं है।

—मामूली खर्च का बड़ा प्रदर्शन करना भी संगत नहीं है।

मि.क.सं.१२६४४

लांबौ घूंघट हळवां चाल, मांय रौ मांय घणौ ग्पाळ। १२६५२

लंबा घूँघट, धीमी चाल, भीतर-ही-भीतर बहुत पंपाल।

—लंबे घूँघट वाली स्त्री जो मंथर गति से चल रही है, जाने उसके मन में कितना कपट-जाल हो सकता है !

—ऊपरी दिखावे से बड़ा धोखा हो सकता है ।

लांम अर कांम रौ बैर । १२६५३

युद्ध और काम का बैर है ।

—युद्ध और वासना का बैर है । यदि सैनिक विषय-वासना में लिप्त हो जाएँ तो अंततः उनकी हार निश्चित है । संयम रखने वाले सैनिक ही युद्ध की वास्तविक शक्ति हैं ।

लाई मांये लाय ने लगाड़वी ।– भी.६९९ १२६५४

आग में आग नही लगानी चाहिए ।

—जाने या अजाने ऐसी कोई बात नहीं करनी चाहिए, जिससे झगड़ा बढ़ जाय ।

—किसी भी झगड़े को बुझाना मनुष्य का धर्म है और उसे बढ़ाना पाप है ।

लाकड़ां रा देव रै खूंसड़ां री पूजा । १२६५५

लक्कड़-देव को जूतो की पूजा ।

—निकृष्ट देवता की पूजा उसके गुणों को ध्यान में रखकर ही करनी चाहिए ।

—जैसा देवता हो, वैसी ही उसकी पूजा होनी चाहिए ।

—जैसा पद, वैसी ही प्रतिष्ठा ।

—जैसा मनुष्य वैसा उसका सत्कार ।

मि.क.सं.५६७२

लाकां चौरासी मांये अेक दण मनख नो जमारो ।– भी.३४३ १२६५६

चौरासी लाख योनियों मे एक बार ही मनुष्य जीवन आता है ।

दे.क.सं.१२५७९

ला कोई बीरन इसड़ौ नर, पीर, बबरची, भिस्ती, खर । १२६५७

ला कोई बांहना ऐसा नर, पीर, बबरची, भिश्ती, खर ।

—ब्राह्मण को लक्ष्य करके यह उक्ति कही गई है, जो सर्वत्र प्रचलित है। प्रसिद्ध है। ब्राह्मण को अमूमन देवता कहकर ही संबोधित किया जाता है। वह देवता की तरह ही हिंदू-समाज में पूज्य है। रसोई भी वह एकदम बढ़िया बनाता है। परिंडे में पानी भी पंडितजी भर देते हैं। रसोई बनाने का सामान भी वे ढोकर ले आते हैं।

—साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादक महोदय के अंतस् में भी ये चारों महानुभाव प्रतिष्ठित रहते हैं।

दे.क.सं.८२६८

लाख कमायां लखेसरी बाजै। १२६५८

लाख कमाने पर लखपति कहलाता है।

—लखेसरी या लखपति कहलाना कोई मामूली सिद्धि नहीं है। अपनी इच्छाओं पर पूर्णतया नियंत्रण रखने पर ही कोई लखपति बन सकता है, बशर्ते वह निष्ठा के साथ कमाई करे। अथक मेहनत करे।

लाख कमाया, जीवता आया। १२६५९

लाख कमाये, जिंदा आये।

—जिंदा लौटकर आ गये, यही गनीमत है। सारी कमाई गई भाड़ में! जिन्हें लखपति बनना है, वे बाहर दिसावर में जाएँ। हम तो भोंदू ही सही, जो सही सलामत अपने घर लौट आये।

—मनुष्य जीवन का मूल्य करोड़ों रुपयों से भी ज्यादा है, इसे क्षति नहीं पहुँचे, इसकी एक मात्र सार्थकता यही है।

लाख कैवतां मूंडौ दाझै। १२६६०

लाख कहते मुँह जलता है।

—लाख की संख्या कोई मामूली चीज नहीं है। उच्चारित करते समय मुँह जलता है। फिर लाख रुपये कमाना तो और भी मुश्किल है।

—आजकल तो लाख रुपयों का कोई विशेष अर्थ नहीं है। कोई भी लुच्चा व्यक्ति चुटकी में लाख रुपये कमा लेता है।

लाख जठै सवा लाख। १२६६१

जहाँ लाख, वहाँ सवा लाख।

—शादी के अवसर पर,मकान बनाने पर या किसी अन्य उत्सव आयोजन पर निर्धारित राशि से अधिक खर्च होने लगे तब खर्च करने वाला व्यक्ति कहता है,कोई बात नहीं—जहाँ लाख वहाँ सवा लाख !

—जो व्यक्ति दिल खोलकर खर्च करे और जिसकी दृष्टि में प्रतिष्ठा का महत्त्व रुपयों से ज्यादा हो।

लाख जाय पण साख नीं जाय। १२६६२

लाख जाय पर साख नहीं जाय।

—साख या प्रतिष्ठा का मूल्य रुपयों से बहुत ज्यादा है। रुपया तो हाथ का मैल है। लाख रुपये भी चले जाएँ तो कोई बात नहीं,साख रहनी चाहिए।

—राजस्थानी में साख का मतलब प्रतिष्ठा के अलावा और भी है—रिश्ता,संबंध ! रिश्ते को बनाये रखने के लिए लाख रुपये भी खर्च हो जाएँ तो कोई बात नहीं। रिश्ता रुपयों से बहुत बड़ा है। कोई मूर्ख व्यक्ति ही रुपयों के बदले संबंध तोड़ सकता है।

लाख टकां री पाव है, चार टकां री सेर। १२६६३

लाख टकों की पाव है, चार टकों की सेर।

—इज्जत को बनाये रखना बहुत मुश्किल है। उसका कोई मूल्य ही नहीं। यदि लाख रुपयों में पाव भर इज्जत भी जुड़ जाय तो वह सस्ती है। और इज्जत खराब होने पर चार टकों में सेर भी कोई लेना नहीं चाहता।

लाख नूर गहणौ-सिणगार, किरोड़ नूर नखरौ। १२६६४

लाख नूर गहना-शृंगार, करोड़ नूर नखरा।

—गहने शृंगार से नूर लाख गुना बढ़ जाता है तो नखरों से वही नूर करोड़ गुना दमकने लगता है।

—गहने शृंगार की बजाय रूप हाव-भाव और नखरों से ज्यादा निखरता है।

—साहित्य का सौंदर्य भी विषय वस्तु की बजाय,कहने के ढंग पर अधिक निर्भर करता है।

लाख मरज्यौ पण लाखां रौ पाळणहार मत मरज्यौ। १२६६५

लाख भले ही मर जाएँ पर लाखों का पालनहार न मरे।

—उक्ति का मर्म फकत इतना ही कि साधारण सदस्य या नागरिकों की बजाय उनके पालनकर्ता का महत्त्व अधिक आँका गया है,जो व्यावहारिक और भावुक दृष्टि से भी सही है।

—जीवन की अपेक्षा जीवन का आधार जुटाने वाला ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।

लाख रा सपना बिचै, तांबा रौ टकौ वत्तौ। १२६६६

लाख के सपने की बजाय, ताँबे का टका बेहतर है।

—सपने की अपेक्षा वास्तविकता का अधिक महत्त्व है। सोने के पहाड़ का कुछ भी उपयोग नहीं होता,पर वास्तविक ईट का उपयोग हो सकता है,इसलिए उसका महत्त्व है।

—कल्पना की बजाय सच्चाई का अधिक महत्त्व है।

लाख री सवाय तारै। १२६६७

लाख की सवाय तारती है।

सवाय = सवा गुना।

—एक रुपये की चीज पर सात गुना नफा भी हो तो सात रुपये ही होता है। पर लाख पर सवा गुना ही नफा हो तो पच्चीस हजार होते हैं।

—अत्यधिक माल पर थोड़ा नफा भी पर्याप्त होता है।

लाख री सवाय मारै। १२६६८

लाख की सवाय मारती है।

सवाय = सवा गुना।

—दस रुपयों की चीज पर आधा भी घाटा हो तो पाँच रुपयों का नुकसान होता है। पर लाख रुपयों पर चौथाई नुकसान हो,तब भी पच्चीस हजार होते हैं। जो काफी भारी है।

— कर्ज के भार से आदमी कभी उबर नहीं सकता।

लाख रौ घोड़ौ, सवा लाख री जीण। १२६६९

लाख का घोड़ा सवा लाख की जीन।

—सजावट पर वस्तु से अधिक खर्च किया जाय तो वस्तु गौण हो जाती है और सजावट प्रमुख।

—चीज के अनुरूप ही उसकी सजावट पर खर्च होना चाहिए।

—किसी भी काम के लिए बहुत सोच-समझकर ही खर्च करना चाहिए।

लाख लखांरा नीपजै, बड़ पीपळ री साख। १२६७०

नटियौ मूतौ नैणसी, तांबौ दियण तलाक॥

लाख लेना चाहो तो वह लखारो के घर मिलेगी। रही साख देने की बात वह पीपल या बरगद पर झूल रही होगी. वहाँ जाकर ले लो! मुहता नैणसी ने एक बार मना कर दिया सो कर दिया! ताँबे का एक टका देना भी मेरे लिए तलाक है। करना है सो करलो। यों मेरे पास बहुत देने के लिए है, पर वह जुर्माने के निमित्त राज्य को देने के लिए नही है।

टे.क सं.७१७९

लाख सोनै रौ व्हौ, है तौ परायौ ई। १२६७१

असली सोने का हो, है तो पराया।

—गोद लिये बच्चे में अनेक गुण हों और यह भी मान लिया कि वह असली सोने का है लेकिन अपनी कोख का जाया तो नहीं है, फिर उसके प्रति क्योंकर ममता उमड़ सकती है?

—अपना सो अपना, पराया सो पराया।

लाखां माथै लेखौ, क्रोड़ां माथै कलम। १२६७२

लाखो पर लेखा, करोड़ो पर कलम।

—अतिशय धनाढ्य परिवार के लिए जहाँ प्रतिदिन लाखों का हिसाब-किताब होता है और बही में करोड़ों पर कलम चलती है।

—भला ऐसे परिवार में कौन अपनी बेटी नहीं देना चाहेगा।

लाखां में अेक। १२६७३

लाखों में एक।

—उच्च व्यक्ति के लिए जो लाखों में तलाश करने पर सिर्फ एक ही मिलता है।

—सुंदर, गुणी, मेधावी, सुशील और धनाढ्य व्यक्ति की प्रशंसा में।

लाखां री तूटी, सैकड़ां सूं नीं संधै। १२६७४

लाखो की टूटी, सैकड़ों से नही जुड़ सकती।

—लाखों रुपयों का घाटा सैकड़ों से पूरा नहीं हो सकता।

—बहुत बडी बदनामी, मामूली प्रयत्नों से नहीं मिट सकती।

लाखाजी वाळी कांबां। १२६७५

लाखाजी वाली छड़ियाँ।

सदर्भ-कथा: लाखा भाटी के बारे में एक आख्यान है कि उसे देवी का इष्ट था—प्रत्यक्ष उसकी सहायता करती थीं। छोटी फौज का वह सरदार था। छापामार लड़ाई के लिए उसका बड़ा आतक था। लोग उसके नाम से डरते थे। धीर-धीरे उसे भी अपने पराक्रम पर अहंकार होने लगा। किसी एक सूर्यग्रहण की बात है, आधे सूरज पर काली छाया पुत गई थी। सूर्य की उस दुर्दशा पर लाखा भाटी को बड़ा दुख हुआ। वह सूर्य की इस विपदा को समाप्त करना चाहता था। उसने नशे की खुदक मे आदेश दिया कि एक सौ आठ घुड़-सवार सूर्य की दिशा की ओर कूच करेगे। बडा लबा सफर तय करना है। सो घोड़े पॉच बरस की आयु से अधिक न हो और सवार पच्चीस वर्ष से बड़े न हों। उसके हुक्म को टालने वाला तो कोई नहीं था। दो योद्धाओ ने नियम का उल्लंघन किया। एक सवार घोड़े की बजाय घोड़ी लाया, जो तीन दिन पहिले ही ब्याई थी। उसकी बछेरी को जस-तस कोशिश करके पीछे ही छोड़ा। एक दूसरे घुड़-सवार का पिता बहुत बूढ़ा था। इकलौता बेटा ही उसकी देख-भाल करता था। वह साथ हो लिया। उसीके आदेशानुसार चमड़े के एक भातड़े में छेद करवाये। उसमें बंद करके घोड़े की पीठ पर बॉध दिया।

सो एक दिन जोशी से शुभ मुहूर्त दिखाकर लाखा भाटी सूर्य का ग्रहण मिटाने हेतु एक सौ आठ घुड़सवारों के साथ जोश-खरोश के साथ रवाना हो गया। सात रोज चलने के बाद वे एक अँधेरे जंगल में फँस गये। किसी ओर से उजाला नजर नहीं आ रहा था। रास्तों के निशान बंद हो गये थे। ज्यों-ज्यों पार करने की चेष्टा की तो बुरी तरह दिशा-भ्रमित होते गये। घुड़-सवार इधर-उधर बिखर गये तो मुश्किल हो जायेगी। सबको एक जगह इकट्ठे होने का

आदेश दिया। तब तक विपत्ति की आशंका जानकर बूढ़े बाप ने बेटे को सारी तरकीब समझा दी थी। पच्चीस बरस के नौजवान साहसी तो खूब थे, पर उनमें अनुभव और बुद्धि की कमी थी। बेटे ने लाखा भाटी को तरकीब बता दी। फिर क्या ढील? ताजी ब्याई घोड़ी की लगाम खोलकर एकदम आजाद कर दी तो उसे अपनी बछेरी की याद आई। स्तनों से दूध छलकने लगा था। वह हिनहिनाती हुई अपने घर की ओर चलने लगी। घोड़ी से ज्यादा पीछे न रह जाएँ, इसलिए सभी घुड़सवारों ने लाखा क आदेश से पेड़ों की छड़ियाँ तोड़ लीं। घोड़े छड़ियों की मार खाते हुए घोड़ी के पीछे ही लगे रहे। आखिर आठवें रोज वे अँधेरे जंगल से बाहर आये। उन सबकी खुशी और घोड़ों की हिनहिनाहट से सूरज का उजाला अधिक दमकने लगा। एक आश्चर्य की बात और कि घुड़-सवारों की छड़ियाँ सभी सोने की हो गई थीं। लाखा भाटी ने एक बार और अँधेरे जंगल में प्रवेश करने के लिए कहा, पर एक भी घुड़-सवार राजी नहीं हुआ। फिर लाखा ने आग्रह किया तो चमड़े के भातड़े से बूढ़ा बाहर निकला। लाखा ने उसके चरण छूए। एहसान माना। उसे काफी इनाम दिया। वह साथ नहीं होता तो एक भी सवार नहीं बचता। उस दिन से लाखा भाटी के दिल में बूढ़ों के प्रति बहुत सम्मान उमड़ पड़ा।

—अनहोने काम के लिए साहस दिखाने पर कुछ-न-कुछ तो पुरस्कार मिलता ही है, जिस तरह लाखा भाटी को सोने की छड़ियाँ मिलीं।

लाखीणौ घर अर लाखां ऊपर लेखौ। १२६७६

बेमिसाल घर और लाखों का हिसाब-किताब।

—जिस घर की कुलीनता और बहबूदी का पार न हो।

—ऐसे घर का रिश्ता करने के लिए सैकड़ों व्यक्ति तैयार रहते हैं और रिश्ता हो जाय तो अपना अहोभाग्य समझते हैं।

मि.क.सं.१२६७२

लाखूं उपाये कीदे लखपती नी थाये, १२६७७
राम करहें जेरा थाहें।– भी.३४४

लाख उपाय करने पर भी कोई लखपति नही बन सकता, राम चाहें तभी बन सकता है।

—भाग्यवादी मान्यता के अनुसार ईश्वर की इच्छा के बिना धनाढ्य बनना संभव नहीं। मनुष्य के जीवन में जो कुछ भी घटित होता है, ईश्वर की इच्छा से ही होता है।

लागणी व्है तौ गैबी गोळी ई लागै परी। १२६७८

लगनी हो तो अदीठ गोली भी लग जाय।

गैबी = अज्ञात, छिपा हुआ।

—होनहार अटल है, पता नहीं कब, किस वक्त, कहाँ से वह प्रकट होकर कुछ भी क्षति पहुँचा दे।

—छिपी हुई आफत कहीं से भी कब कहर ढा दे, कुछ पता नहीं।

लाग लागी तद लाज किसी ? १२६७९

लगन लग गई फिर लज्जा कैसी ?

—लौकिक या अलौकिक प्रेम हो गया तो फिर संकोच कैसा ! अपनी धुन में आगे बढ़ते रहना चाहिए, चाहे राह में कुछ भी विघ्न बाधाएँ क्यों न आएँ।

—किसी भी काम को निष्ठा से शुरू कर दिया तो रुकना नहीं चाहिए।

लागवो तो लोहार नूं, बाजवो होनार नूं।– भी.७०० १२६८०

लगना तो लोहार का, बजना सोनार का।

—लुहार अपने वजनी हथोड़े को आहरण पर पूरी ताकत से पटकता है। वह कानों को बड़ा कर्कश लगता है। इसके विपरीत सोनार छोटी हथोड़ी से चाँदी-सोने पर ठक-ठक की ध्वनि करता रहता है। कानों को सुहाती है।

—विद्वान या पंडित का थोड़ा कहना भी अधिक महत्त्वपूर्ण होता है।

—बड़े व्यक्ति जोर से नहीं चिल्लाते, धीमे स्वर में तथ्य की बात कहते हैं, जो प्रभावशाली होती है।

लागी तो हीक नी ते मांगो भीक।– भी.७०१ १२६८१

लग जाय तो सीख, नही तो माँगो भीख।

—बुजुर्ग या योग्य व्यक्तियों की सीख का असर हो जाय तो ठीक वरना अवज्ञा करने पर दुर्दशा भी संभव है।

—शुभचिंतकों की सीख न मानना अनुचित है।

लागी पग रै अर पाटी बांधै माथा रै। १२६८२

लगी तो पाँव पर और पट्टी बाँधे सिर पर।

—फिर क्योंकर इलाज हो? सच बात बताने पर ही समाधान हो सकता है, उसे छिपाने पर तो गड़बड़ ही होती है।

—जो व्यक्ति असलियत को छिपाने की खातिर ढोंग करे, पर वह ढोंग चलता नहीं।

लागी माथै वळै लागै। १२६८३

लगी पर और लगती है।

—लगी चोट का पूरा ध्यान रखने पर भी फिर वहीं चोट लग जाती है।

—आफत पर कोई नई आफत आ जाय, तब...।

पाठा : लाग्योड़ी में लाग्या करै।

लागी रौ नांव औखद। १२६८४

लग जाय वही औषधि है।

—औषधि वही श्रेष्ठ है जो कारगर साबित हो।

—जिस विधि से किसी काम में सफलता मिल जाय, वही विधि सर्वोत्तम है।

—अनेक उपाय करने के बाद भी कोई बदमाश न सुधरे तो भी यह उक्ति काम में ली जाती है।

पाठा : लागै सो ई औखद।

लागी हळद नीं फिटकड़ी, रंग सांतरौ आयौ। १२६८५

हलदी लगी न फिटकरी, रंग अच्छा आया।

—हलदी-फिटकरी कपड़ा रँगने के काम आती है। यदि इनका उपयोग किये बिना ही रंग अच्छा बैठ जाय तो बुरा क्या है?

—बिना कुछ भी खर्च किये कोई काम संपन्न हो जाय, तब...।

—मुफ्त में काम बन जाय तो अधिक खुशी होती है।

लागै जिणरै चरपरै, दूखै जिणरै पीड़। १२६८६

लगे जिसके चरपरे, दुखे जिसको पीड़ा।

दे.क.सं.६६२९

लागै जिण रै दूखै। १२६८७

लगे उसीको दुखे।

—जिसे चोट लगती है, उसे ही पीड़ा होती है।

—जिस पर गुजरती है, उसे ही कष्ट पहुँचता है। कोई भी आत्मीय उस कष्ट में साझेदार नहीं हो सकता।

—अपनी क्षति खुद को ही झेलनी पड़ती है।

—अपना [illegible] को ही उठाना पड़ता है।

पाठा : लागै जिणरै करकै। लागै जिणरै पोड़।

लागै तौ भूवा पण डरतां मासी कैवै। १२६८८

लगे तो बूआ पर डर से मौसी कहता है।

—जो व्यक्ति डर की आशंका से खामखाह आत्मीयता जोड़ने की चेष्टा करे।

—कोई व्यक्ति अपने मतलब से बड़ों के साथ रिश्तेदारी का संबंध जोड़ना चाहे।

लागै सो ई दवा अर तूठै सो ई देव। १२६८९

लगे वही दवा और रीझे वही देव।

—जिस दवा से रोग मिट जाय वही दवा सबसे बेहतर है और जो देवता तुष्ट होकर इच्छा पूरी कर दे वही सबसे श्रेष्ठ है।

—साधन वही अच्छे हैं, जिनसे काम संपन्न हो जाय और सच्चा मित्र वही है जो वक्त पर काम आ जाय।

—सफलता ही श्रेय की अधिकारिणी होती है।

लाग्योड़ी लाय नै दीवौ झुपाय जोवै। १२६९०

आग की लपटों को दीया जलाकर देखता है।

—भला आग की लपटों को दीपक जलाकर देखने की जरूरत क्या है, लेकिन जिन व्यक्तियों को आँखों देखी बात पर भी विश्वास न हो, जो सच्ची बात का भी प्रमाण चाहें, उनका क्या किया जाय !

लाग्यौ तौ तीर नींतर तुक्कौ ई सही । १२६९१

लगा तो तीर नहीं तो तुक्का ही सही ।

—किसी काम के लिए चेष्टा करने में क्या हर्ज है, पूरी सफलता की बजाय किंचित् सफलता भी मिल जाय तो अच्छा ही है ।

—मजाक-मजाक में कोई बात पार पड़ जाय तो क्या बुरा है ।

लाग्यौ'र भाग्यौ । १२६९२

लगा और भगा ।

—कायर व्यक्ति के लिए, जो घाव लगते ही मैदान से भाग जाय ।

—जो व्यक्ति मामूली आफत का भी सामना नहीं कर सकें ।

लाज कोई हाट-बजारां नीं बिकै । १२६९३

लाज कोई हाट-बाजारों में नहीं मिलती ।

—लाज तथा अन्य गुण कहीं दुकान पर नहीं मिलते, अपने भीतर ही उपजते हैं ।

—गुणों का सौदा हो तो कोई उनसे वंचित नहीं रहे, सभी गुणवान बन जाएँ, पर ऐसा होता नहीं । इसलिए अवगुणों की ही सर्वत्र भरमार है ।

पाठा : सरम कोई हटवाड़ां नीं वपराईजै ।

लाज छोडी तौ लाज रा बंधण ई छोडिया । १२६९४

लाज छोड़ी तो लाज के बंधन भी छोड़े ।

—लाज छोड़ने के बाद फिर कैसा व्यवधान, न बोलने में, न घूँघट-पहिनावे में, न रीति-रिवाजों और न आपसी व्यवहार में ।

—लाज छोड़ने के पश्चात् जो मन में आये सो करो, कौन रोकने वाला है ? मन का ही तो बंधन था, सो मिट गया ।

लाज तौ आंख्यां री इज व्है । १२६९५

शर्म तो आँखों की ही होती है ।

—बाकी सब तो ऊपर का दिखावा है, चाहे घूँघट हो, चाहे बातचीत हो और चाहे बड़ों के सामने धूम्रपान हो ।

—मन में लाज है तो वही असली लाज है, दिखावा तो एक ढर्रा है ।

पाठा : सरम तौ आंख्यां री इज हुवै ।

लाज री मारी बहू नित भूखां थोड़ी ई मरै । १२६९६

लाज की मारी बहू हमेशा भूखों नही मरती ।

—एक दिन की बात हो तो बहू लज्जा-वश भूखी रह सकती है, पर कुदरत की देन कि भूख तो दोनों वक्त लगती है, फिर लाज क्योंकर पोसाये ? लाज अपनी ज-ह है और कुदरत की जरूरतें अपनी जगह हैं । दोनों का यथोचित तालमेल बिठाना आवश्यक है, जिससे शिष्टाचार भी न टूट और जरूरत भी पूरी हो जाये ।

मि.क.सं.१२६००

लाज-लाज में पेट रह्यौ । १२६९७

लाज-लाज में पेट रह गया ।

—घर की बात घर में रह जाय, दूसरों को पता न चले, परिवार की बदनामी न हो, इस कारण घर में ही अनैध संबंध स्थापित हो गया और यह सब लाज के कारण ।

—लज्जा-वश कोई अनर्थ या अवैध कार्य हो जाय, तब... ।

लाज लाज री ठौड़ छाजै । १२६९८

लाज तो लाज की ठौर शोभा देती है ।

—कोई खाने-पीने में शर्म करे तब कहा जाता है कि हर काम में शर्म शोभा नहीं देती, वह तो अपनी ठौर ही अच्छी लगती है ।

—बुरा काम करने में संकोच होना चाहिए, अच्छे काम में संकोच शोभा नहीं देता ।

लाज वाळां नै जोखम है । १२६९९

शर्म वालों को जोखिम है ।

—सामाजिक शिष्टाचार रखने वालों को कई बातों का ध्यान रखना पड़ता है, बाजदफा नुकसान भी उठाना पड़ता है।

—इसके विपरीत बेशर्म व्यक्ति हमेशा निश्चिंत और सुखी रहता है।

पाठा : लाज वाळां नै सतरै विखा झेलणा पड़ै।

लाज-सरम खांधै राळी। १२७००

लाज-शर्म कंधे पर डाली।

—धोती, लहँगा या साड़ी कंधे पर डालने के पश्चात् समाज से कैसा भय !

—निर्लज्ज व्यक्ति के लिए कैसी जोखिम !

—नंगे व्यक्ति को समाज का डर नहीं रहता।

लाजां मरतौ घर में वड़ग्यौ, नागौ कहै म्हां सूं डरग्यौ। १२७०१

लाज के मारे घर में घुसा, नंगा कहे मुझ से डरा।

दे.क.सं.१२५९९

लाजे लबरू, ओढ़वू है।–भी.७०२ १२७०२

लज्जा-वश फटा-पुराना ओढ़ना पड़ता है।

—संकट के दिनों में जब अपनी इच्छा के विपरीत मान-मर्यादा की रक्षा पर्याप्त साधनों के अभाव में जस-तस करनी पड़े, तब...।

—इज्जत आबरू को बचाने के लिए मजबूरी में जीवन व्यतीत करना पड़े, तब...।

लाटा लटग्या। १२७०३

खलिहान बँट गया।

—किसी उत्सव-आयोजन में खाना समाप्त हो जाय, तब...।

—किसी बड़े घर की मान-मर्यादा शेष न रहे, तब...।

लाटी ने नी धाप्यो अेवा चाटी ने धाहे।–भा.७०३ १२७०४

खलिहान से भी तृप्ति नहीं हुई तो अन्न चाटने से क्या होगी !

—समृद्धि के दिनों में भी जब संतोष नहीं हुआ तो अब अभावों के बीच क्योंकर गुजारा होगा ?

—जब घर की पत्नी से तृप्ति नहीं हुई तो अब इभर-उधर मुँह मारने से क्या बात बनेगी ?

—घर की थाली से भी जब भूख नहीं मिटी तो अब दूसरों की जूठी पत्तल चाटने से क्या गर्ज पूरी होगी ?

लाठ री बहू चूल्है में मूतै । १२७०५

लाठ की बहू चूल्हे में मूते ।

—बड़े आदमी गलत काम भी करें तो उन्हें कोई टोकता नहीं ।

—बड़े आदमियों के अपकर्म भी निंदनीय नहीं होते ।

लाठी जिणरी भैंस । १२७०६

लाठी उसकी भैंस ।

दे.क.सं.५१२३

लाठी तूटै नीं भांडौ फूटै । १२७०७

लाठी टूटे न घड़ा फूटे ।

—यत्नपूर्वक ऐसा काम करना जिससे न लाठी टूटने की नौबत आये और न घड़ा फूटने की ।

—किसी भी तरह कोई हानि न हो,इस कौशल से काम करना ।

—जिस फैसले से दोनों पक्ष संतुष्ट हो जाएँ ।

लाठी रा डर सूं बांदरौ नाचै । १२७०८

लाठी के डर से बंदर नाचे ।

—बंदर जैसा उच्छृंखल जानवर भी लाठी के डर से नियंत्रित रहता है ।

—सख्ती के बिना प्रशासन संभव नहीं ।

—भय के बिना कोई काम संपन्न नहीं होता ।

पाठा : लाठी रै जोर लंगूर नाचै ।

लाठी हाथै तौ सगळा साथै । १२७०९

लाठी हाथ में तो सभी साथ में ।

—लट्ठ हाथ में हो तो साहस, हौसला और शौर्य सब बढ़ जाता है ।

—सत्ता हाथ में हो तो सभी साथ जुड़ जाते हैं ।

लाडका टाबर घणा इतरै । १२७१०

लाड़ले बच्चे ज्यादा इतराते हैं ।

—अनुशासन के अभाव में कर्मचारी उच्छृंखल हो जाते हैं ।

—प्यार से राज्य नहीं चलता ।

पाठा : लाडका छोरा बिगड़तां जेज नी लागै ।

लाडकोड मूंघा पण रांमत-खेल सूंघा । १२७११

लाड़-कोड महँगे पर खेल-कूद सस्ते ।

—दामाद या समधी के लाड़-कोड करने में, उनका यथोचित सत्कार करने में काफी खर्च होता है और खेल-कूद देखने में कुछ भी खर्च नहीं होता और मनोरंजन हो जाता है ।

—रीति-रिवाज निभाना मुश्किल है, तमाशा देखना आसान है ।

लाड टाबर सूं है, गू-मूत सूं नीं । १२७१२

लाड़ बच्चों से है, गू-मूत से नहीं ।

—जो फूहड़ स्त्री साफ-सफाई अच्छी तरह नहीं रखे, उस पर कटाक्ष कि प्यार बच्चों से है गंदगी से नहीं ।

—स्नेह, वात्सल्य या प्रेम इत्यादि भावना मर्यादित रहे तभी उचित है, अमर्यादित भावना उचित नहीं । लगाव होना चाहिए, पर पागलपन की सीमा तक नहीं ।

—भावना और कर्तव्य के बीच समन्वय हो तभी संगत है ।

लाडपुरै गधी गमाणी अर पोकरजी में पुन्न । १२७१३

लाड़पुरा में गधी खोई और पुष्कर में पुण्य ।

लाड़पुरा = एक गाँव का नाम ।

—जो व्यक्ति खामखाह किसी पर एहसान लादना चाहे ।

—जो व्यक्ति अपनी गलती का खमियाजा और किसी से वसूलना चाहे।

लाड-हेज तौ माईतां सागै सिधावै। १२७१४

लाड-प्यार तो माँ-बाप के साथ चला जाता है।

—माँ-बाप के दिवंगत होने पर लाड़-दुलार का संसार ही समाप्त हो जाता है।

—माँ-बाप के प्यार की बराबरी कोई नहीं कर सकता। वे गये और प्यार का अस्तित्व ही निःशेष।

लाड़ा नैं लाडी रौ कोड, लाडी नै लाडा रौ कोड। १२७१५

दूल्हे को दुलहन की चाह, दुलहन को दूल्हे की चाह।

—प्यार की भावना नितात आत्मकेंद्रित होती है, दूसरों के लिए उसमें कोई स्थान नहीं रहता।

—प्रेमी को अपने प्यार की ही सुधि रहती है, दूसरों की ओर उसका ध्यान नहीं जाता।

लाडी अर गाडी रौ खरच बराबर व्है। १२७१६

लाडी और गाड़ी का खर्च बराबर होता है।

लाडी = पत्नी, स्त्री।

—पत्नी के खाने और पहिनावे मे उतना ही खर्च पड़ता है जितना बैलगाड़ी रखने में।

—पत्नी का खर्च निबाहना आसान नहीं है।

लाडी अर पाडी पराये घरां ई चोखी। १२७१७

लाडी और पाड़ी दूसरों के घर ही शोभा देती है।

—स्त्री और पाडी का खर्च निभाना हर व्यक्ति के लिए कठिन है। खर्च के अतिरिक्त उनके स्वभाव को झेलना और भी मुश्किल है।

दे.क.सं.८११२

लाडी अर पाडी रौ खाधौ कठै ई न जावै।—व. :२८ १२७१८

लाडी और पाड़ी का खाया कहीं नहीं जाता।

—स्त्री और पाड़ी का खाना-पीना बेकार नहीं जाता। स्त्री अच्छा भोजन करे तभी तो घर और बाहर का सारा काम निबटाती है। भूखी रहकर वह इतना काम थोड़े ही कर सकती है। इसी तरह पाड़ी पर किया अधिक खर्च भी व्यर्थ नहीं जाता। वह ब्याने पर दूध देती है, जिससे घरवाले हृष्ट-पुष्ट रहते हैं।

—उपयोगी खर्च के लिए चिंता नहीं करनी चाहिए।

लाडीजी मांगै खरदांवणौ, देवौ रांड रै दांवणौ। १२७१९

स्त्री माँगे, 'खरदावणा', देओ राँड के दावणा।

खरदांवणौ = हाथ की अँगुलियों में धारण करने हेतु स्त्रियों का एक आभूषण।

दांवणौ = दांमणौ = गाय दुहते समय उसके पिछले पाँवों में घुटनों से ऊपर बाँधने की रस्सी। ऊँट, घोड़ा बैल, गधा आदि पशुओं के अगले पैर बाँधने की रस्सी जिससे वे तेज भाग न सकें।

—बिना अवसर के किसी मूल्यवान वस्तु की माँग करना अनुचित है, उसे ऐसी बेहूदी माँग के लिए कुछ-न-कुछ सजा देनी चाहिए, माँग की पूर्ति करना नितांत असंगत है।

—राज्य कर्मचारी जब भी अनुचित माँग करें, तब उनके लिए भी यही उक्ति प्रयुक्त होती है।

लाड़ी ना खाअेड़ा, लाड़ा ने माता में।– भी.७०४ १२७२०

दुलहन के जूते, दूल्हे के सिर पर।

—विवाह के पहिले अन्य वस्त्राभूषणों के साथ दुलहन के लिए जूते भी वर-पक्ष वाले उठाकर लाते हैं। तभी से पत्नी के भरणपोषण व अन्य सारी चिंताएँ पति के सिर पर ही रहती हैं।

—पत्नी के सुखमय जीवन की संपूर्ण जिम्मेदारी पति की है।

लाडी नै पाडी नीवड़ियां बखांण। १२७२१

लाडी और पाड़ी अच्छे साबित हो जाएँ तभी वे प्रशंसनीय हैं।

—स्त्री और पाड़ी का शुरुआत में पता नहीं चलता वे अंत तक अच्छे साबित हो जाएँ तभी उनकी सराहना करनी चाहिए, पहिले नहीं।

—उपयोगिता ही सबसे उचित प्रमाण है।

मि.क.सं.८८६८

लाडी, पाडी अर गाडी सुगनां सूं लावणी। १२७२२

लाडी, पाड़ी और गाड़ी शुभ-शकुन देखकर ही लानी चाहिए।

—परिवार सुचारु रूप से चलता रहे, इसलिए पत्नी, पाड़ी और गाड़ी शुभ शकुन विचार कर ही लानी चाहिए।

—जिनसे परिवार का मंगल हो, उन्हें शुभ-मुहूर्त में ही प्रतिष्ठित करना चाहिए।

लाड़ी मरो के लाडौ, तोरण नो टको त्यार।– भी.७०५ १२७२३

दुलहन मरे कि दूल्हा, तोरण का टका तैयार।

—जो बढ़ई तोरण बनाता है, उसके परिश्रम का पैसा तो हर सूरत में देना ही है. दुलहन और दूल्हा जीये कि मरे. यह उसकी चिता नहीं है।

—किसी भी धंधे में लाभ हो चाहे हानि, काम करने वालों की मजदूरी में किंचित् भी कटौती नहीं हो सकती।

—किसी भी कार्य की सफलता या असफलता की जिम्मेदारी स्वयं मालिक की है, दूसरों का उससे दूर-दूर का भी वास्ता नही। जिसने भी उस कार्य के निमित्त परिश्रम किया है, उन्हें तो फकत अपने पारिश्रमिक से सरोकार है।

पाठा : लाडी मरौ के लाडौ मरौ, तोरण रौ टक्कौ खरौ।

लाड़ी हूनी जाये ने रांडी नो वळावो।– भी.७०६ १२७२४

दुलहन तो सूनी जाय और विधवा के लिए रक्षक।

—दुलहन जो धन और यौवन से परिपूर्ण होती है, उसकी ओर ध्यान देने की बजाय विधवा का अधिक खयाल रखना।

—जरूरत पर तो किसी को सहायता न मिले और जरूरत बीतने पर सहायता के लिए तैयार होना।

—घर में बुजुर्गों के जीवित रहने तक तो उनकी कतई परवाह नहीं की और उनके मरने पर मृत्युभोज और दानपुण्य करना, यह मूर्खता नहीं तो और क्या है?

लाडू खाया रात रा, घरै गिया परभात रा। १२७२५

लड्डू खाये रात को, घर गये प्रभात को।

—लंपट व्यक्ति के लिए जो रात को तो दूसरी औरतों के साथ ऐश करे और सवेरे प्रतीक्षारत पत्नी को अपना मुँह दिखाये।

—दुश्चरित्र व्यक्तियों पर कटाक्ष।

पाठा : लाडू खावै रात रा, घर जावै परभात रा।

लाडू तूट्यां तौ कीं न कीं हाथै लागै ई। १२७२६

लड्डू बिखरने पर कुछ-न-कुछ तो हाथ लगेगा ही।

—बड़े उत्सव-आयोजन में ही लड्डू या अन्य मिष्ठान बनता है। उनके खंडित होने पर या जूठन की सामग्री में गरीबों का हिस्सा रहता ही है।

—बड़े व्यक्तियों के आयोजन में दूसरों को कुछ-न-कुछ तो लाभ होता ही है।

लाडू बिखरै जठै भोरा तौ खिंडै ई। १२७२७

लड्डू विखरने पर दाने तो गिरते ही है।

—परिवार की फूट से दूसरों को लाभ तो होता ही है।

—एकता टूटने पर कुछ-न-कुछ नुकसान तो अवश्यंभावी है।

लाडू रौ दांणौ किसौ खारौ नै किसौ मीठौ। १२७२८

लड्डू का दाना कौन-सा कड़वा कौन-सा मीठा।

—सज्जन व्यक्ति सबके प्रिय होते हैं।

—हर बच्चे पर माँ-बाप की समान ममता रहती है। वे सबको समान रूप से प्यार करते हैं।

लाडू रौ दांणौ चाखै जठै ई मीठौ। १२७२९

लड्डू का दाना चखें, वहीं मीठा।

—सज्जन व्यक्ति का व्यवहार सबके साथ शालीन व मधुर होता है।

—मृदुभाषी मनुष्य की सराहना के लिए यह उक्ति काम में ली जाती है।

मि.क.सं.११३४८

लाडू संधै जठै भोरा खिंडसी-ई-खिंडसी। १२७३०

लड्डू बनाते समय दाने तो बिखरेंगे-ही-विखरेंगे।

—श्रीमंतों के बड़े उत्सव-आयोजन में गरीबों को कुछ-न-कुछ तो हाथ लगता ही है।

—बड़े आयोजन में कुछ-न-कुछ अव्यवस्था या हानि तो हो ही जाती है।

लाडै री भूवा। १२७३१

दूल्हे की बूआ।

—जो व्यक्ति अनधिकृत रूप से दूसरों की पंचायती करने को उद्यत हो।

—जो व्यक्ति खामखाह दूसरों के काम में टाँग अड़ाये।

मि.क.सं.५७१

लाडै री मां बिचै अणवर री मां उतावळी। १२७३२

दूल्हे की माँ से अधिक अनुवर की माँ को उतावली।

अणवर = अनुवर = विवाह के अवसर पर दूल्हे के साथ रहने वाला बच्चा अथवा दुलहन के साथ रहने वाली बच्ची।

—खामखाह की चिंता या उतावली करने वालों पर कटाक्ष।

—थोथा प्यार जतलाने वालों के प्रति व्यंग्य।

लाडैसर बेटा घणा माथै चढ़ै। १२७३३

लाड़ले बेटे अधिक सिर चढते हैं।

दे.क.सं.१२७१०

लाडोकड़ा इज माईतां रौ नांव काढ़ै। १२७३४

लाड़ले पुत्र ही माँ-बाप का नाम करते हैं।

—चहेते पुत्र ही माँ-बाप को अधिक बदनाम करते हैं।

—अत्यधिक प्यार करके बच्चों को बिगाड़ने वाले माँ-बाप बाद में खूब पछताते हैं।

लाडौ लखणां-बायरौ, कैड़ौ ई बाजै बायरौ। १२७३५

बंदे के बुरे लच्छन, कैसा भी आये परिवर्तन।

—जो व्यक्ति बुरे लच्छनों का ही पुतला है, उस पर बदलते समय का कुछ भी असर नहीं होता। सुधरने की बजाय वह उलटा ज्यादा बिगड़ने लगता है।

—जो लुच्चे-लफंगे व्यक्ति, हवा के बदलते रुख की तनिक भी परवाह नहीं करते।

लात पूठ माथै मारणी, पेट माथै नीं। १२७३६

लात पीठ पर मारनी चाहिए, पेट पर नही।

दे.क.सं.८३२०

लात मत ना मार, थारौ दूध भरपाई। १२७३७

लात मत मार, तेरा दूध भरपाया।

—जो गाय दूध देने की बजाय लात मारे तो कौन बर्दाश्त कर सकता है?

—जो व्यक्ति एहसान करने के बहाने क्षति अधिक पहुँचाए।

—बुरे व्यक्तियों से भले की आशा करना व्यर्थ है।

लात साटै लात, कुण कैवै घात! १२७३८

लात के बदले लात, कौन कहे घात!

—बुराई का बदला कोई बुराई से चुकाये तो वह अन्याय नहीं है।

—बुरे के साथ बुरा बरताव करना ही न्याय-संगत है।

लातां रा देव बातां सूं कद रींझै। १२७३९

दुष्ट व्यक्ति समझाने से नही मानता, वह पिटने से ही सुधरता है।

—नीच व्यक्ति ऊँची बातों से नहीं समझता,उसके साथ नीचता का व्यवहार करने पर वह झट समझ लेता है।

—जो व्यक्ति दंड की ही भाषा समझता है,उसके लिए मीठी वाणी कुछ भी माने नहीं रखती।

पाठा: लातां रा देव, बातां सूं नी मांनै।

लाद दै, लदाय दै, लदावण वाळौ साथ दै। १२७४०

लाद दे, लदाय दे, लदाने वाला साथ दे।

—माल दे,भरवा दे,भरवाने वाला साथ दे।

—विवाह में बेटी को दहेज देने की प्रथा है। दहेज में बहुमूल्य सामान तो देना ही पड़ता है। उसे ठीक तरह जमाना भी पड़ता है। और बाद में ठेठ बेटी ससुराल तक सुरक्षित पहुँच जाय,यह जिम्मेदारी भी बेटी वालों की है।

—जब कोई अच्छा काम कष्ट साध्य हो जाय,तब...।

लाधी डाकिणि कनै पेट कुण मसळावै ?–व.३१५ १२७४१

डायन मिल भी जाय तो उससे पेट कौन मसलाये ?

—डायन तो नजर से ही गर्भ को नष्ट कर देती है.फिर जानबूझकर उससे पेट मसलाने की भूल कौन करे !

—दुष्ट व्यक्ति का तो संपर्क ही बुरा है,उससे दूर रहने में ही लाभ है ।

लाधौ कोईड़ौ कबडी मोल । १२७४२

मिले चाबुक का कौड़ी मोल ।

—मुफ्त की चीज का कुछ भी मूल्य नहीं होता ।

—बिना परिश्रम के प्राप्त वस्तु का महत्त्व नहीं होता ।

लाधौ ताजणा रौ तोड़ौ, घटै जीण, पागड़ा अर घोड़ौ । १२७४३

मिला चाबुक का तोड़ा, घटे जीन, पागड़ा और घोड़ा ।

तोड़ा = टुकड़ा ।

दे.क.सं.४२२०

पाठा : **लाध्यौ चाबक तोड़ौ, घटै जीण अर घोड़ौ ।**

लाधौ माल खाधौ । १२७४४

पाया माल खाया ।

—रास्ते में पड़ा हुआ माल तो अपना ही होता है । उसका कुछ भी उपयोग करें,कौन एतराज़ कर सकता है ।

—रास्ते में जिसे भी पड़ा माल मिले वही मालिक ।

लापसी में कड़ाई थोड़ी ई सीझै । १२७४५

लापसी में कड़ाह थोड़े ही सीझता है ।

लापसी = गेहूँ के दलिये का बनाया हुआ मीठा व्यंजन ।

—कड़ाह में डाला हुआ व्यंजन चाहे लापसी हो या हलुवा, आँच लगने पर वह सीझता है, कड़ाह का कुछ नहीं बिगड़ता ।

—तपस्या करने पर ज्ञानी का परिष्कार होता है,गँवार का नहीं ।

—भावुक का हृदय द्रवित होता है, कठोर मनुष्य का नहीं।

लापसी में लूण कुण राळै ? १२७४६

लापसी में नमक कौन डाले ?

—जो दुष्ट व्यक्ति बनी-बनाई बात को बिगाड़ना चाहे, वही लापसी में नमक डालेगा।

—जो व्यक्ति दूसरों की सफलता देखकर जलता हो, वही मौका मिलने पर उन्हें क्षति पहुँचाने की चेष्टा करता है।

लापसी रा कड़ाव में धूड़ क्यूं न्हकावौ ? १२७४७

लापसी के कड़ाह में धूल क्यों डलवाते हो ?

—बने-बनाये काम को बिगाड़ने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए।

—किसी की प्रतिष्ठा को धूल में मिलाना उचित नहीं है।

लापसी सूं कांम के लपालप सूं। १२७४८

लापसी से काम है कि लपालप से।

लपालप = बकवास।

—व्यर्थ बकवास नहीं करके मनुष्य को सीधे अपने मतलब की बात करनी चाहिए। आम खाना हो तो आम की बात करो, पेड़ गिनने के प्रपंच में पड़ना उचित नहीं।

—मनुष्य को अपने लक्ष्य से हटकर इधर-उधर की बातों में नहीं उलझना चाहिए।

ला म्हारी दोय लप चिणां री दाळ। १२७४९

ला मेरी दो मुट्‌ठी चनों की दाल।

—अनुचित हठ करना।

—अन्याय-पूर्वक अधिकार जताना।

पाठा : ला म्हारी सागै रोटी री कोर।

लाय अैड़ी कठै के दीवौ झुपाय जोवै। १२७५०

आग ऐसी कहाँ कि उसे दीया जलाकर देखना पड़े।

—प्रत्यक्ष सच्चाई के लिए प्रमाण की आवश्यकता कहाँ रहती है !

—हाथ में पहिने कंगन की प्रामाणिकता के लिए काच की जरूरत पड़े तो आग को देखने के लिए दीपक की जरूरत पड़े।

मि.क.सं.१२६९०

लाय नै कांईं दीवौ बतावै? १२७५१

आग को क्या दीया बताये?

—पहुँचे हुए महात्मा के सामने धर्म-शास्त्र की बाते बघारना उतना ही व्यर्थ है कि जब कोई व्यक्ति आग के सामने दीये की लौ का प्रदर्शन करे।

—शेर को घूँसे से डराना उतना ही व्यर्थ है जितना आग को दीपक से डराना।

मि.क.सं.१२५५१

लायपाय रौ म[illegible]गै कोनीं। १२७५२

व्यस्तता की कोई सीमा नहीं है।

—आखिर काम की सार्थकता सुख और शांति में ही निहित है। जिस काम की मार से खाने-पहिनने की भी सुधि न रहे आखिर उसका उद्देश्य क्या है। मनुष्य के लिए कार्य है या कार्य के लिए मनष्य है।

लायपाय लागी। १२७५३

काम की मार।

—जिस व्यक्ति को काम के मारे साँस तक लेने की फुर्सत न हो।

—अत्यधिक व्यस्त व्यक्ति की मनोदशा।

लाय में पूळा राळै। १२७५४

आग मे घास डालता है।

—जो व्यक्ति लड़ाई को बढ़ाने की कुचेष्टा करे।

—जिस व्यक्ति की मनोवृत्ति दंगा-फसाद भड़काने की हो।

लाय रै पूठै वांनी अर बिरखा रै पूठै हरियाळी। १२७५५

आग के पीछे राख और वर्षा के पीछे हरियाली।

—बुराई के पीछे राख और भलाई के पीछे हरियाली।

—बुराई के पीछे बदनामी और भलाई के पीछे गुणगान।

—युद्ध के पीछे बर्बादी और शांति के पीछे बहबूदी। बुरी बात का बुरा प्रभाव, अच्छी बात का अच्छा प्रभाव।

लाय रौ कांईं थोड़ौ। १२७५६

आग का क्या थोड़ा।

—युद्ध का क्या कम और क्या ज्यादा? युद्ध का तो नाम ही बुरा है।

—कलह, ईर्ष्या और आपसी फूट की तो शुरुआत ही बुरी है। इनसे जितना बचा जा सके, बचना चाहिए।

मि.क.सं.१२६०४

लाय लगाय खिलकौ जोवै। १२७५७

आग लगाकर तमाशा देखे।

—जो व्यक्ति दूसरों को लड़ा-भिड़ाकर दूर से तमाशा देखे।

—हीन-वृत्ति के मनुष्यों को दूसरों के कष्ट से आनंद मिलता है।

लाय लगाय पांणी री खथावळ। १२७५८

आग लगाकर पानी की जल्दबाजी।

—जो व्यक्ति दूसरों को लड़ाकर बाद में समझौते की चेष्टा करे।

—जो दुष्ट व्यक्ति दंगा-फसाद करवाने में अगुवाई करे और बाद में शांति का दिखावा करे।

लाय लगाय बंदी आंतरै ऊभी। १२७५९

आग लगाकर बंदी दूर खड़ी।

—जो व्यक्ति दूसरों को लड़ाकर दूर खिसक जाय।

—दूसरों के अहित से जिस व्यक्ति के मन में दुख की बजाय हिंस्र आनंद की अनुभूति हो। मनोरंजन हो।

लाय लागी अर पांणी रौ तुठार। १२७६०

आग लगी और पानी की कमी।

—प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने के लिए जिस समाज में पर्याप्त साधन न हों।

—जो अकुशल प्रशासन प्राकृतिक प्रकोप के निवारण हेतु जनता की सहायता करने में असमर्थ हो।

लाय लागी अर मेह री बाट न्हाळै। १२७६१

आग लगी और वर्षा का इंतजार।

—जो अकुशल प्रशासन प्राकृतिक प्रकोप के लिए तत्काल राहत न पहुँचाकर, प्राकृतिक अनुकंपा की ही प्रतीक्षा करे। और हाथ-पर-हाथ धरकर बैठा रहे।

—राजकीय प्रशासन की अदूरदर्शिता पर कटाक्ष।

लाय लागी अर वेरा रौ चांकौ। १२७६२

आग लगी और कुआँ खोदने की तैयारी।

—व्यक्ति, समाज और राज्य की भयंकर अदूरदर्शिता पर तीखा कटाक्ष कि इधर तो आग लगी और उधर कुआँ खुदवाने की तैयारी हो रही है। कब कुआँ खुदे और कब आग बुझे! पहिले के जमाने की बजाय ये उक्तियाँ आज ज्यादा प्रासंगिक हो रही हैं।

—कोई भी सामाजिक, राजनैतिक व प्राकृतिक विपत्ति का तत्काल समाधान होना चाहिए, तभी प्रशासन की सार्थकता है।

पाठा : लाय लागी अर बावड़ी खुदावण जाय। लाय लाग्यां केड़ै बेरौ खोदै।

लाय लाग्या बेरौ खोदै, वौ कांम कद पार पड़ै।

लाय लागी झूंपड़ै जो बच्यौ सो ई लाभ। १२७६३

झोपड़े मे आग लगी जो बचा सो ही लाभ।

—जिस अचीती दुर्घटना पर मनुष्य का वश न चले और अपने-आप जो भी देवयोग से बच जाय, उसे लाभ समझकर संतोष करना चाहिए। और जो नष्ट हो चुका, उसके लिए पश्चाताप करना व्यर्थ है। वह विनाश तो अपरिहार्य था। भाग्य से जौ बच गया, वही पावना है।

पाठा : लाय में बच्यौ सो ई लाभ!

लाय लागी नै बायरौ छूटौ। १२७६४

आग लगी और हवा छूटी।

—जब दोहरी प्राकृतिक आपदा का प्रकोप हो तो उसका सामना करना असंभव है।

—जिस अभागे व्यक्ति के जीवन में एक के बाद एक संकट का सामना करना पड़े, उसकी हालत बुरी तरह दयनीय हो जाती है।

लाय लागी, पांणी नै भागी। १२७६५

आग लगी, पानी को भगी।

—दूरदर्शिता के अभाव में सक्रियता, सतर्कता और कार्य-कुशलता कुछ भी माने नहीं रखती! यदि मनुष्य को अपने जीवन में सफलता पानी है तो दूरदर्शिता के गुण को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। घर में आग बुझाने का प्रावधान पहिले ही सोच समझकर रखना चाहिए। पशु और मनुष्य में यही तो विराट अंतर है।

लाय लाग्यां तौ पांणी नै हर कोई न्हाटै। १२७६६

आग लगने पर पानी के लिए तो सभी दौड़ते हैं।

—आकस्मिक दुर्घटना आपसी भेद-भाव मिटाकर सब में सहयोग की भावना जगा देती है।

—दूरदर्शिता अनेक विपदाओं से बचा लेती है, उसके प्रति जागरूक होने पर हड़बड़ी में इधर-उधर भागना नहीं पड़ता।

लाय सूं दाझ्योड़ा आगियां सूं डरपै। १२७६७

आग से जले हुए जुगनुओं से डरते हैं।

—एक बार धोखा खाया हुआ व्यक्ति जरूरत से ज्यादा सावधान हो जाता है। यह मनुष्य का स्वाभाविक गुण है।

—दुष्टों के द्वारा उत्पीड़ित मनुष्य भले और नेक आदमियों पर भी संदेह करने लगता है। इसीलिए तो इस उक्ति की सार्थकता है कि आग से जला हुआ व्यक्ति जुगनुओं की चिनगारियों पर भी संदेह करने लगता है कि कहीं वे उसे जला न दें, जो एक अव्यावहारिक और असंभव चिंता है। लेकिन मानव-स्वभाव तर्क की बजाय दुर्भावना से ज्यादा प्रभावित होता है।

दे.क.सं.६६८५

लारला खुरंट उखेलै । १२७६८

मिले घाव को ताजा करना ।

—पुरानी कष्टप्रद बातों को फिर से याद दिलाना, जिससे उस विगत कष्ट का दंश फिर से कसक उठे ।

—कष्टप्रद विस्मृत बातों की याद दिलाना कतई उचित नहीं है ।

लारलै भौ खोटौ कीधौ सो भोग्यां सरसी । १२७६९

पिछले जन्म में बुरे कर्म किये सो भुगतने पड़ेंगे ।

—वर्तमान जीवन में दुखों का कारण पूर्व जन्म के कर्मों का अपरिहार्य परिणाम ही है ।

—इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वर्तमान में सत्कर्म करे सो भविष्य में उनका बुरा फल भोगना न पड़े ।

दे.क.सं.६६२

पाठा : लारलै भौ रा खोटा, इण भौ फोड़ा घातै ।

लारलै भौ रा लेख, पांड्यौ कठै लगावै मेख । १२७७०

पिछले जन्म के लेख, पंडा कहाँ लगाये मेख ।

मेख = कील ।

—पूर्व-जन्म के कर्मों की वजह से जब कोई व्यक्ति वर्तमान में दुखी होकर जोशी के पास जाये, तब इस उक्ति के द्वारा जोशी दुखियारे को सांत्वना देता है ।

—भाग्य में लिखे को कोई मिटा नहीं सकता, क्योंकि भाग्य-लिपि कर्मों के अनुसार ही लिखी जाती है ।

लारवाड़ आंगळी पकड़्यां साथै आवै । १२७७१

लारवाल अँगुली पकड़कर साथ आता है ।

लारवाड़ = लारवाल = विधवा स्त्री का वह लड़का या लड़की जिसे वह पुनर्विवाह करने पर अपने साथ नये पति के घर ले जाती है । उसे 'आंगळियै टीकरौ' यानी अँगुली पुत्र भी कहते हैं ।

—अनाथ को किसी-न-किसी का सहारा अवश्यंभावी हो जाता है ।

—अनाथ का जीवन सहारे के बिना असंभव है।

लारै भाज-भाज घालती। १२७७२

पीछे भाग-भागकर डालती थीं।

संदर्भ-कथा : पश्चिमी राजस्थान में अकाल तो पड़ते ही रहते हैं। भयंकर अकाल के दौरान किसी एक गाँव में एक चौधरी मजबूरी के कारण भीख माँगने लगा। लेकिन उसके द्वारा भीख माँगने में भी एक तरकीब थी। वह किसी के सामने हाथ नहीं पसारता था। पीठ पीछे दोनों हाथों में एक बासन रखता था। मुँह से कुछ भी याचना नहीं करता था। घरों के सामने निकलता तो खाती-पीती औरतें पीछे दौड़कर अनाज या रोटियाँ डाल देती थीं। इसलिए कि वह किसी घर के सामने रुकता नहीं था। सामान्य चाल से चलता ही रहता था। जब अगले वर्ष अच्छी बरसात हुई तो चौधरी के खेत में मन-वांछित अनाज हुआ। पर लोग-बाग ताना दिये बिना नहीं रहते थे। तब चौधरी गंभीर बनकर जवाब देता कि उसने किसी के सामने हाथ पसारा हो तो बताओ। औरतें पीछे भाग-भागकर डालती थीं। उसने तो किसी को भी भीख देने के लिए नहीं कहा। बात सही भी थी। चौधरी का उत्तर सुनकर सभी चुप हो जाते।

—मदद लेकर भी जो व्यक्ति एहसान न मानना चाहे उसके लिए।

—जो व्यक्ति एहसान न मानने का कुछ-न-कुछ औचित्य खोजले।

लारै वायोड़ी तौ फींचां रै ई लागै। १२७७३

पीछे की खेती तो फींचों तक ही पहुँचती है।

फींच = पशुओं व मनुष्यों के घुटनों का पिछला भाग।

—समय पर खेती न करके जो किसान देर से अनाज बोते हैं उनकी फसल फींच या घुटनों से बड़ी नहीं होती।

—समय पर काम न करने वाले हमेशा नुकसान में रहते हैं।

लाल केसियौ गायौ अर गीतां रौ छेह आयौ। १२७७४

लाल-केसिया गाया और गीतों का अंत आया।

लाल-केसियौ = प्रेम-कथा पर आधारित एक अश्लील लोकगीत।

—समाज में उच्छृंखलता का दौर आने पर सामाजिक-मर्यादा का अंत करीब दिखने लगे, तब...।

—जब किसी व्यक्ति या समाज में अच्छाइयों की सीमा समाप्त हो जाय, तब...।

मि.क.सं.३७२२

पाठा : टोडरमल गायौ अर गीतां रौ छेह आयौ।

लालच गळौ वढ़ावै। १२७७५

लालच गला कटवाता है।

—लोभ के वशीभूत होकर मनुष्य अपने प्राण तक खो बैठता है।

—अतएव मनुष्य को लालच के फेर में नहीं फँसना चाहिए वरना जान की जोखिम हो ही जाती है।

पाठा : लालच गळौ फंदाय।

लालच बुरी बलाय। १२७७६

लालच बुरी बला।

—मनुष्य के लिए लालच सबसे बड़ा दुर्गुण है। जहाँ तक बन पड़े इससे बचने का उपाय करना चाहिए।

—लालच के फंदे में फँसने के पश्चात् छुटकारा संभव नहीं।

पूरा दोहा इस प्रकार है :

माखी बैठी सैत पर, पंख रही लिपटाय।
उडणा रौ सांसौ पड़्यौ, लालच वुरी बलाय॥

लालच लाज नै गमावै। १२७७७

लालच लाज को गँवाता है।

—लालची मनुष्य सामाजिक मर्यादाओं के प्रति उदास[illegible] हो जाता है।

—लालच के वशीभूत औरतें अपने शील का सौदा करने की खातिर विवश हो जाती हैं।

—लालची मनुष्य बदनामी की परवाह नहीं करता।

लालजी रा लूगड़ा अर बोहराजी रौ साबू। १२७७८

देवर के कपड़े और बोहरे का साबुन ।

—जब तक उधार मिलता रहे, आदमी कमाई की चिंता नहीं करता ।

—उधार का माल खर्च करने में आदमी मितव्ययता नहीं बरतता, जैसा कि रोकड़ लाने पर बरतता है ।

—जो व्यक्ति उधार के माल को मुफ्त जैसा ही माने, उसके लिए ।

पाठा : लाला रौ लूगड़ौ अर सेठां रौ साबण ।

लाल बही छप्पन रै पांनै, साहजी रोवै छांनै-छांनै । १२७७९

लाल बही छप्पन का खाता, शाह रोये पकड़कर माथा ।

—अभी संवत् २०५६ का वर्ष चल रहा है, इससे सौ वर्ष पहिले संवत् १९५६ में देश व्यापी भयंकर अकाल पड़ा था । इस उक्ति में उसी ओर इशारा है कि जिस किसी बोहरे ने छप्पन के अकाल में किसानों को जितना कुछ उधार दिया वह सब डूब गया तो सिर पकड़कर रोने के अलावा दूसरा कोई उपाय नहीं ।

—अपने किये पर जो व्यक्ति मन-ही-मन पछताये, उसके लिए ।

लाळसावां रौ कोई छेह नीं पार । १२७८०

लालसाओं का न कोई अंत है, न कोई पार ।

—मनुष्य के जीवन की सीमा है, पर उसकी लालसाएँ असीम हैं, तब नश्वर जीवन में वे क्योंकर पूर्ण हो सकती हैं ? इसलिए विवेक-सम्मत निदान तो यही है कि मनुष्य अपनी लालसाओं पर पूरा नियंत्रण रखे ।

लालजी कीधी इग्यारस अर वा बारस री दादी । १२७८१

लालजी ने की एकादशी और वह द्वादशी की दादी ।

—एक कंजूस बनिये ने औरत के हठ पर एकादशी का व्रत रखा । भूख लगने पर उसने सारे दिन इतना फलाहार किया जो द्वादशी के सामान्य भोजन से अधिक महँगा साबित हुआ ।

—सस्ते के लोभ में किसी व्यक्ति को अधिक खर्च करना पड़े, तब... ।

ला-ला माटी घर ठायौ, मूरख कहै घर म्हारौ। १२७८२

मिट्टी लाकर घर बसाया, मूर्ख कहे घर मेरा।

—यह मानव-शरीर मिट्टी का ही बना है और इसे बनाने वाला भी कोई दूसरा है, फिर भी जो व्यक्ति इसे अपना समझकर इतराएँ, वे भुलावे में हैं। जब मिट्टी का बासन चूर-चूर होता है तभी होश ठिकाने आता है।

—मनुष्य क्षण-क्षण कष्ट पाकर जमीन-जायदाद खरीदता है, धन-दौलत इकट्ठी करता है, पक्का मकान बनाता है, पर उसमें निवास करने वाले पंछी की उम्र का कोई पता ठिकाना नही, तब यह प्रपंच किसलिए?

लाला रै दोय सासरा, घड़ीक इण सासरै, घड़ीक उण सासरै। १२७८३

लाला के दो ससुराल, कभी इस ससुराल, कभी उस ससुराल।

—दो विवाह करने वाला व्यक्ति कभी चैन से नहीं रह सकता।

—एक पत्नी भी जब पुरुष को नाच नचा देती है, तब दो पत्नियों के मारे तो उसका जीना ही दूभर हो जाता है।

—जब कोई व्यक्ति दो आफतों के बीच फँस जाय।

लाल्या रे लाल्या, आया जैड़ा ई चाल्या। १२७८४

लल्ले रे लल्ले, आये जैसे ही चल्ले।

—सांसारिक मनुष्य जब अपने जीवन का वास्तविक उद्देश्य पूरा नहीं कर सकते, तब संसार से कूच करते समय वे पछताते हैं, लेकिन समय निकल जाने पर उनके हाथ में कुछ नहीं रहता।

—ईश्वर का सुमिरन, पुण्य और सत्कर्म न करने वाला मनुष्य मरते समय पश्चाताप करता है कि उसका जीवन व्यर्थ ही बीत गया।

लाल्यौ अर जुहार दोनूं कीकर व्है? १२७८५

लाल्या और जुहार दोनों एक साथ कैसे हों?

लाल्यौ = लालाराम का क्षुद्र रूप।

—अपमान और मान दोनों एक साथ नहीं हो सकते।

—जिस व्यक्ति के प्रति आपका मान है, उसका अपमान करना शोभा नहीं देता।

लाव मूंज री है। १२७८६

लाव मूँज की है।

लाव = चमड़े या जूट का बना मोटा रस्सा, जो प्रायः कुएँ में चरस खींचने के काम आता है। मूँज की लाव हो तो कुआँ सींचने वाले के हाथ छिल जाते हैं। और वह कमजोर भी होती है।

—बुरे व्यक्ति से किसी व्यक्ति को सावधान करने के लिए।

—भरोसेमंद साधन न हों तो काम बिगड़ता है।

लावै उधार नै देवै ब्याजीणा। १२७८७

लाये उधार और दे ब्याज पर।

—चालाक और होशियार व्यक्ति के लिए जो उलटा-सीधा काम करके भी अपना मतलब पूरा कर ले।

—जो व्यक्ति दूसरों के सहारे कमाई करे।

लावै नै रांधै। १२७८८

लाये और राँधे।

—जो अभाव-ग्रस्त व्यक्ति रोज कमाये और रोज खाये।

—जिस व्यक्ति की जरूरतें बहुत सीमित हों।

लावै ब्याजू देवै उधारा, ज्यांरा पूत मरै कंवारा। १२७८९

ब्याज पर लाकर दे उधार, उनके पूत मरें कुँआरे।

—नामवरी के लिए जो व्यक्ति अपनी हैसियत से परे काम करता है, उसके घरवाले हमेशा दुख पाते हैं।

—उलटे-सीधे काम करने वाले के प्रति व्यंग्य।

लावै सूई अर जावै हळबांणी। १२७९०

लाये सूई और जाये हलबानी।

हळबांणी = लोहे की लंबी छड़, जिसका एक मुँह तीखा एवं नोकदार होता है।

—चोरी के माल की कभी बरकत नहीं होती। सूई चोरकर लाये तो हलबानी गुम हो जाती है।

—चोर कभी सुखी नहीं हो सकता।

लाहूड़ौ कुत्तौ करै ज्यां कांई करै ? १२७९१

ढीठ कुत्ते की तरह क्या कर रहा है ?

—ढीठ कुत्ता पिटने की परवाह न करके भी कुछ-न-कुछ चीज मुँह में उठाकर ले ही जाता है। उस प्रवृत्ति वाले बेशर्म व्यक्ति को तिरस्कृत करने के लिए।

—जिस ढीठ व्यक्ति की चमड़ी बहुत मोटी हो जो लाज-शर्म की रंचमात्र भी परवाह न करे।

लिं-लू

लिंबड़ा नो कीड़ो लिंबड़ा मांय राजू।– भी.७०७ १२७९२

नीम का कीड़ा नीम में ही खुश रहता है।

—जो व्यक्ति जिस वातावरण का अभ्यस्त हो जाता है, वह कष्ट पाकर भी उसे छोड़ना नहीं चाहता।

—परिवेश, संस्कार, रुचि और स्तर के अनुसार ही मनुष्य का व्यक्तित्व ढलता है और वह उसका आदी हो जाता है।

—मनुष्य अपनी आदतों का गुलाम होता है।

लिखनै दीजै, गिणनै लीजै। १२७९३

लिखकर देना, गिनकर लेना।

—इसमें कभी भूल पड़ने की संभावना नहीं रहती।

—छोटे-बड़े किसी भी काम में मनुष्य को पूरी सावधानी बरतनी चाहिए ताकि बाद में पछताना नहीं पड़े।

लिख-लिख भेजूं पत्तर में, थू सित्तर में नीं बहत्तर में। १२७९४

लिख-लिख भेजूँ पत्तर में, तू सत्तर में न बहत्तर में।

पत्तर = पत्र, चिट्ठी।

संदर्भ-कथा : किसी सेठ का इकलौता बेटा कुसंगति के कारण एक वेश्या पर आसक्त हो गया। और पत्नी के प्रति घोर उपेक्षा बरतने लगा। चोरी-छिपे उसने पत्नी के काफी आभूषण उस

वेश्या के हवाले कर दिये। वेश्या ज्यों-ज्यों मना करती,उसके प्रति उसका विश्वास बढ़ता ही गया। जब उसका प्यार पागलपन की सीमा छूने लगा और पेढ़ी से भी जब-तब रकम मारने लगा,तब बहू ने परिवार के भले की खातिर सास के सामने मन की व्यथा प्रकट की। श्वसुर को संदेह तो होने लगा था पर इकलौते पुत्र की चरित्रहीनता उसके गले उतरना ही नहीं चाहती थी। लेकिन सेठानी के कहने पर उसे विश्वास करना ही पड़ा। पेढ़ी पर खुद बैठना शुरू कर दिया। घर का सारा गहना तिजोरी में रखकर चाबी अपने पास जाब्ते से रखली। रुपया नहीं मिलने के कारण वेश्या उसके प्रति काफी उदासीन हो गई,पर पीछा भी नहीं छोड़ना चाहती थी। चूहा पिंजरे में रहे,तब तक ठीक ही है। किंतु बाप को इकलौते चूहे की बहुत चिंता थी। डाँट-फटकारकर दिसावर में कमाई करने भेज दिया। बेटे की मंशा भी यही थी। यहाँ उसका हाथ एकदम तंग हो गया था। अपनी प्रियतमा को समझा-बुझाकर वह राज़ी-खुशी विदा हो गया। दोनों की आँखें भर आईं।

दिसावर में प्रिया की खातिर उसने खूब मन लगाकर काम किया। मेहनत में भी कसर नहीं रखी। बुद्धिमान तो था ही। पिता का विश्वास अर्जित करने के लिए उसने पहिले उनके पास काफी रुपये भेजे। सेठ बहुत खुश हुआ। इतनी कमाई तो वह भी नहीं कर सका था। तब तो वेश्या के प्यार का नतीजा अच्छा ही हुआ। मर्द का क्या वह तो बाड़ में पेशाब करता ही रहता है। तीन महीने और गुजर गये तो सेठ ने पुत्र के एक खास विश्वस्त मित्र को वहाँ भेजा। दोनों मिलकर बहुत खुश हुए। सेठ के बेटे ने मित्र से प्रिया के समाचार जानने चाहे। मगर व्यवसाय के अलावा उसकी रुचि तो किसी अन्य बात में थी ही नहीं। कुछ दिन बाद मित्र गाँव जाने लगा तो उसने पिता के लिए अलग रुपये भेजे और प्रिया के लिए दस तोले का चंद्रहार दिया। किसी को कानोंकान पता न चले। उसे कहना कि तुम्हें सबसे अधिक प्यार करने वाले ने यह हार भेजा है। नाम बताने के बाद ही उसे हार दे। उसे पूरा विश्वास है कि वह पहिला नाम उसीका ही लेगी। यों चार-पाँच प्रेमियों का उसे पता भी है। पर उन्हें वह ऊपरी मन से प्यार करती है। असली प्रेम तो उसीके साथ है। अंतिम हिदायत पत्र द्वारा पूरे समाचार भेजने की थी। उसे भी कहना कि पत्र दे। मित्र की इच्छा कुछ दिन और रहने की थी। पर सेठ के बेटे ने आग्रह किया तो वह दूसरे दिन रवाना हो गया।

पिता को ऐसी आशा नहीं थी कि बेटा इतना जल्दी सुधर जाएगा। सेठानी से भी पुत्र की बड़ी तारीफ की। दूसरे दिन अल्ल सवेरे मित्र का उपहार लेकर वह वेश्या के घर गया।

देर से सोने के कारण वह देरी से ही उठी थी। मित्र ने खूब दरवाजा खटखटाया। वह हताश होकर जाने ही वाला था कि वेश्या ने उनींदी आँखों से दरवाजा खोला। किसी अपरिचित मानुस को सामने देखकर पहिले तो वह हिचकी फिर आदर-भाव से ऊपर ले गई। मित्र को तो अपना कर्तव्य निबाहना था। उसने सहज भाव से कहा, 'सवेरे-सवेरे तुम्हारे लिए एक खुशखबरी लेकर आया हूँ। बताओ, क्या खुश-खबरी हो सकती है।' वेश्या ने दिमाग पर काफी जोर दिया, तब भी वह सुराग नहीं लगा सकी। तब अजनबी व्यक्ति ने कहा, 'तुम्हें सबसे अधिक चाहने वाले ने एक बहुमूल्य चंद्रहार भेजा है। नाम बताओ और अपनी अमानत सँभालो।' वेश्या ने तत्काल चार-पाँच नाम बताये, पर आश्चर्य कि मित्र का पहिला नाम तो छूट ही गया। तब वेश्या ने बीस नाम और बताये। मित्र का मुँह उतर गया। क्या पता वह जान-बूझकर उसका नाम नहीं बताना चाहती हो। लेकिन उसका धैर्य तो तब टूटा, जब सत्तर नाम गिनाने पर भी मित्र का नाम उसके होंठों पर नहीं आया। मित्र के मुँह पर हवाएँ उड़ने लगीं। तब वेश्या ने उस पर तरस खाते हुए कहा, 'अब तो पाँच सातेक नाम और हैं। कहें तो बता दूँ। अब न हो तो मेहरबानी करके आप ही बता दें। माँ ने मुझे झूठ न बोलने की कसम दिलवाई थी। धंधे को मैं बुरा नहीं मानती, लेकिन झूठ बोलना मेरे लिए महा पाप है।'

मित्र ने जब नाम बताने के लिए साफ मना कर दिया तो वेश्या ने बहुत सोच-विचार कर दो नाम और बताये। तब मित्र ने बीच में टोकते हुए कहा, 'बस, बस अब एक भी और नाम सुनने का मुझ में धैर्य नहीं है। मुझे आशा है कि इससे मित्र का धोखा सोलह आने दूर हो जाएगा। उसे तो विश्वास था कि तुम्हारे मुँह से पहिला नाम उसीका निकलेगा। पुरुषों की यही तो सबसे बड़ी कमजोरी है कि वे प्रिया की नजर में सबसे ऊँचा रहना चाहते हैं। तकलीफ माफ करियेगा। अब मैं दुबारा नाम पूछने नहीं आऊँगा। और आशा करता हूँ कि आपके प्रेमी का भी मुगालता दूर हो जायेगा।' वेश्या को तनिक भी निराशा नहीं हुई। मुस्कराते कहा, 'यदि मैं झूठ बोलती तो सबसे पहिले आपके मित्र का ही नाम बताती। पर मेरे मुँह से झूठ निकला ही नहीं। आप मेरी बेवकूफी का तनिक भी बुरा नहीं मानेंगे।'

'भला बुरा क्यों मानूँगा! मैं तो उलटा खुश हुआ हूँ कि उसकी गलतफहमी दूर हो जायेगी।'

तब वेश्या ने व्यंग्य के लहजे में कहा, 'तुम पुरुषों को पैसे के अलावा और किसी से भी प्यार नहीं हो सकता। माँ की यह सीख कभी भूलूँगी नहीं। जब भी इच्छा हो निःसंकोच आइएगा। मेरा दरवाजा सभी के लिए खुला है। हम सती-साध्वियों की तरह ढोंग नहीं करतीं।'

तब मित्र ने खुश होकर दिसावर चिट्ठी भेजी। सिर्फ एक पंक्ति की। उसमें अधिक कुछ भी लिखना बेकार समय बर्बाद करना था—'लिख-लिख भेजूं पत्तर में, थूं सित्तर में नीं बहत्तर में।'

—पुरुषों को सबसे बड़ा मुगालता यही रहता है कि उसकी प्रिया उसके अलावा किसी दूसरे को प्यार कर ही नहीं सकती।

लिखिया नै भाखिया नीं पूगै। १२७९५

लिखे हुए को जबानी जमा-खर्च नही पहुँच सकता।

—इसलिए कि सौ बका और एक लिखा बराबर है।

—और यों भी मौखिक बात की अपेक्षा लिखी हुई बात अधिक प्रामाणिक मानी जाती है।

लिखै ककड़ी नै बांचै बकरी। १२७९६

लिखे ककडी औ᠎ᠠ ब्रॉचे बकरी।

—बनिये के हिसाब की प्रामाणिकता स्वयं ईश्वर की समझ से भी बाहर का मसला है। वह बही में लिखता तो ककड़ी है, पर बॉचने में बकरी ही नजर आती है। परिणाम स्वरूप असामी तो गरीब-से-गरीब होता जाता है और बोहरा दिन-ब-दिन मोटा होता रहता है।

लिखै मूसा नै पढ़ै ईसा। १२७९७

लिखे मूसा और पढ़े ईसा।

—बनियों की लिखावट ऐसी होती है कि वह किसी से भी बॉची नहीं जा सकती। मसल भी मशहूर है कि गीले बॅचे न आपसे और सूखे बँचे न किसी के बाप से। 'आला बंचै नीं आप सूं, सूखा बंचै नीं किणी रा बाप सूं।'

—जिस व्यक्ति की लिखावट इतनी खराब हो कि उसे कोई नहीं बाँच सके।

लिखै सूंठ अर बांचै ऊंट। १२७९८

लिखे सूँठ और बॉचे ऊँट।

सूंठ = सोंठ।

दे.क.सं.१२७९६

लिख्या जोग नीं टळै । १२७९९

लिखा हुआ योग नहीं टलता ।

—भाग्यवादियों का विश्वास कि भाग्य में जो लिखा है, वही घटित होकर रहता है । उसे कोई बदल नहीं सकता ।

—मनुष्य के सोचने और करने से कुछ भी नहीं होता, जो कुछ भी उसके जीवन में होना है, वह पूर्व निर्धारित है ।

लिख्या ज्यांनै लाधसी, धन धरती रै मांय । १२८००

धरती में धन गड़ा है, लिखा है उन्हीं को मिलेगा ।

—धरती में धन ठौर-ठौर गड़ा है, पर हाथ उन्हीं के लगता है, जिनके भाग्य में लिखा है ।

—समय पर हल तो सभी चलाते हैं, मेहनत में भी कमी नहीं रहती, पर फसल भाग्य के अनुसार ही हाथ लगती है ।

—किसी भी व्यक्ति को अकस्मात् गड़ा धन मिल जाये तो लोग सबसे पहिले यही उक्ति उच्चारित करते हैं ।

लिख्या है लिलाड़ लेख, उण में नीं मीन नीं मेख । १२८०१

लिखा है ललाट में लेख, उसमें न मीन न मेख ।

—जो भाग्य में लिखा है उसमें रंचमात्र भी परिवर्तन नहीं हो सकता ।

—विधाता ने ललाट में जो लिख दिया है, वह अटल है ।

लिख्योड़ा टळै नहीं, बणै अवस संजोग । १२८०२

लिखा टले नही, बने अवश्य संयोग ।

—जो भाग्य में लिखा है, वह टलता नहीं, पर मिलने का संयोग अवश्य बनता है ।

—संयोग होने पर ही भाग्य के अनुसार हाथ लगता है ।

लिख्यौ सो ई बांचीजै । १२८०३

जो लिखा है, वही पढ़ा जाता है ।

—किसी से भी बँचवालो जो लिखा है वही पढ़ा जाएगा, उसमें हेर-फेर नहीं हो सकती।

—जो भाग्य में लिखा है, वही चरितार्थ होता है।

लिगत्यौ करै ज्यूं लिक-लिक कांईं करै ? १२८०४

कुक्कुर की तरह लिक-लिक क्या कर रहा है ?

—जो व्यक्ति दूसरे की कोई बात नहीं सुनकर फकत अपनी-ही-अपनी गाता रहे।

—व्यर्थ बकवास करने वाले व्यक्ति को फटकारते समय...।

लिछमण सूंनी झूंपड़ी, कुटिया काग पड़ंत। १२८०५

लक्ष्मण सूनी झोपड़ी, कुटिया मे काग पड़ंत।

—जिन श्रीमंतों का ठाट-बाट उजड़ गया हो, जिनके घर पर कौवे मँडरा रहे हों। राम के वनवास जाने पर अयोध्या की भी यही दुर्दशा हुई थी।

—अभावग्रस्त व्यक्तियों के घर की दयनीय हालत का वर्णन।

लिछमी आई अर बेलां छाई। १२८०६

लक्ष्मी आई और बेले छाई।

—लक्ष्मी की चरण-रज का परस पाते ही सूखी बेलें हरी हो जाती हैं। उसमें तरह-तरह के फूल महकने लगते है। भौंरे गुजार करने लगते हैं। सारा परिवेश आनंद में नाच उठता है।

—मानव समाज में धन से सारे ठाट-बाट संभव है।

लिछमी आई ज्यूं ई सिधाई। १२८०७

लक्ष्मी जैसे आई वैसे हो चली गई।

—इसीलिए तो लक्ष्मी का एक नाम चंचला भी है। वह कहीं भी एक ठौर नहीं रुकती। इस दरवाजे से आई और उस दरवाजे से गई।

—माया तो वृक्ष की छाया के उनमान है। सुबह इधर तो शाम को उधर।

पाठा : लिछमी आवै ज्यूं ई जावै।

लिछमी आवती ई मारै अर जावती ई मारै। १२८०८

लक्ष्मी आते समय भी मारती है और जाते समय भी मारती है।

—लक्ष्मी दो लातें मारती है। आते समय सीने पर,जिससे आदमी सीधा तनकर गर्व करने लगता है। और गर्व किसी का भी नहीं टिकता। ध्वस्त होकर ही रहता है। और तो और लंकाधिपति रावण का भी गर्व नहीं टिका। अहंकारी से रूठकर जब वह जाने लगती है तो पीठ पर लात मारती है। फलस्वरूप आदमी औंधे मुँह गिरता है। दाँत टूट जाते हैं और सिर फट जाता है।

लिछमी कठै जाय'र तूठै , किणी नै कीं बेरौ नीं पड़ै। १२८०९

लक्ष्मी कहाॅ जाकर तुष्ठमान होती है, किसी को भी पता नही चलता।

—कब किसी कंजूस के पास चली जाती है,कब किसी गंजे के घर लौट आती है,कब किसी तोंदल का घर आबाद करती है और किसी मरियल के गले लग जाती है,पता नही चलता।

—लक्ष्मी के चंचल स्वभाव की ओर इशारा।

लिछमी छांणा बीणती नै तूठै तौ ई उणनै कुण भांडै। १२८१०

लक्ष्मी उपले बीनती को मिले तब भी उसे कोई बुरा-भला नही कहता।

—लक्ष्मी किसी कोढ़ी को गले लगाये या किसी भिखारिन का आलिगन करे या किसी अभागे से नाता जोड़े तो कोई भी उसकी आलोचना नही करता।

—लक्ष्मी किसी का भी घर बसाये वह कुलटा नहीं कहलाती।

लिछमी जांणी बहतौ पांणी। १२८११

लक्ष्मी पहिचानी बहता पानी।

—लक्ष्मी की सही पहिचान यही है कि वह बहते पानी की तरह एक ठौर कहीं नहीं रुकती।

—लक्ष्मी चंचला है,कही एक ठौर स्थिर होकर नहीं रहती।

लिछमी जावै तौ लक्खण ई जावै। १२८१२

लक्ष्मी जाये तो लक्षण भी जाये।

—लक्ष्मी के विदा होने पर गुण,लक्षण,प्रतिष्ठा और मान सभी चले जाते हैं।

—लक्ष्मी है तो सब कुछ है,लक्ष्मी नहीं तो कुछ भी नहीं।

लिछमी टीकौ काढ़ण आई, उण वेळा मूंडौ धोवण गियौ। १२८१३

लक्ष्मी तिलक करने आई, उस समय मुँह धोने गया था।

—भाग्यहीन व्यक्ति की व्यथा।

—जो व्यक्ति दिखने में सुंदर होने के बावजूद निर्धन हो।

लिछमी तिहारै काज, किण विध आवै लाज। १२८१४

लक्ष्मी तेरे काज, किस विध आये लाज।

—लक्ष्मी को पाने की खातिर अन्याय करो, अपराध करो, पाप करो, चोरी करो, डाका डालो, खाद्य-पदार्थों में दिल खोलकर मिलावट करो, डंके की चोट रिश्वत लो, धर्म और ईश्वर के नाम पर जालसाजी करो, शोषण करो कहीं भी लज्जित होने की जरूरत नहीं। लक्ष्मी सब दोषों से मुक्त करती है।

लिछमी तीन रूप धारनै आवै, मां, बेटी अर लुगाई। १२८१५

लक्ष्मी तीन रूप धरकर आती है—माँ, बेटी और पत्नी।

—कंजूस के यहाँ माँ का रूप धरकर आती है और आजीवन सेवा करवाती है। किसी के घर बेटी का रूप धरकर आती है, विवाह और दहेज में खूब धन ले जाती है और किसी के घर पत्नी बनकर आती है और वह उम्र भर मौज-मस्ती में दिन गुजारता है।

लिछमी नै आवतां जेज लागै नीं जावतां। १२८१६

लक्ष्मी को न आते देर लगे न जाते।

—लक्ष्मी की कृपा हो तो उसके आने में भी देर नहीं लगती। और वह रूठ जाये तो उसकी जुदाई में भी देर नहीं लगती। लेकिन उसकी कब किस पर कृपा हो जाती है और वह किससे रूठ जाती है, इसका पता नहीं चलता।

लिछमी बिना कुण आदरै? १२८१७

लक्ष्मी के बिना कोई आदर नहीं करता।

—बस, घर में लक्ष्मी होनी चाहिए, न चोर के सम्मान म कमी रहती है, न डाकू का स्वागत करने में कोई पीछे रहता है और न काला बाजार करने वालों के मान-पत्रों में कोई अशुद्धि

रहती है और न औरतों का व्यापार करने वालों के गले मालाओं से वंचित रहते हैं। पर इसके विपरीत विद्वान, मेधावी और कलाकार यदि निर्धन हैं तो उन्हें कोई नहीं पूछता।

लिछमी बिना रौ लिपोड़। १२८१८

लक्ष्मी के बिना लल्लू।

—जिसके पास लक्ष्मी नहीं हो वह वाचाल है, उल्लू है, चमगादड़ है, गधा है, महामूर्ख है, गँवार और पोंगा है।

—लक्ष्मी हो तो सर्वगुण संपन्न, न हो तो अवगुणों का भंडार।

लिछमी रौ वासौ पांचां के सातां। १२८१९

लक्ष्मी का निवास पाँच दिन या सात दिन।

—लक्ष्मी स्थिर होकर कहीं भी नहीं रहती, इसलिए उस पर गर्व करना बेमानी है। क्या पता गर्व करते-करते ही वह अँगूठा बता जाय।

—धन पाकर मनुष्य को इतराना नहीं चाहिए।

मि.क.सं.१२५९८

लिछमी सूं छेती पड़ी नै दाळद सूं बैर बस्यौ। १२८२०

लक्ष्मी से दूरी बढ़ी और दारिद्र्य से बैर बसा।

—या तो दूसरों की भलाई करने में या अत्यधिक पुण्य करने से लक्ष्मी का तो साथ छूटा और दारिद्र्य से दुश्मनी हो गई। हर वक्त उससे जूझना पड़ता है। घर से बाहर धकियाना चाहता है पर वह तो खूँटा गाड़कर ही जम गया। लक्ष्मी से हाथ धोते ही कैसी दुविधा-जनक स्थिति पैदा हो गई।

लियां-दियां तौ डूंम राजी व्है। १२८२१

लेने-देने से तो डोम खुश होता है।

—विवाह या अन्य किसी लौकिक व्यवहार में लेने-देने की बात चलती है तो दोनों पक्षों के संजीदा लोग अकसर कहते हैं कि लेने-देने की बात करना ही बेकार है। लेने-देने से डोम खुश होता है, मोतबरों के लिए यह खुश होने का मसला ही नहीं है।

—लेने-देने से तो याचक खुश होते हैं और भले आदमी तो सद-व्यवहार, मेल-जोल या स्नेह-मिलन से खुश होते हैं ।

लियौ-दियौ थकै आडौ आवै । १२८२२

लिया-दिया आगे काम आता है ।

—आस्तिकों को यह पुख्ता विश्वास है कि वे दान-पुण्य करें, परोपकार करें, साधु-संन्यासियों को खिलाएँ-पिलाएँ तो अगले जन्म में उन्हें यह सब कुछ प्राप्त होगा अन्यथा वे दुख पाएँगे ।

—दान-पुण्य किया हुआ ही साथ चलता है, इसलिए इसमें कोई कमी नहीं रखनी चाहिए ।

पाठा : **लीन्हौ-दीन्हौ अवस आडौ आवै ।**

लिलाड़ माथै बूक मांड्यां तिरस नीं बुझै । १२८२३

ललाट पर बू[illegible]ने से प्यास नहीं बुझती ।

बूक = हथेली की अँगुलियों को मिलाकर बनाई हुई पात्र-मुद्रा, जिसको मुँह से सटाकर पानी पिया जाता है ।

—मुँह पर बूक लगी हो तो प्यास के अनुसार पानी पीने से तृप्ति हो जाती है, लेकिन ललाट पर बूक लगी हो तो बीस घड़ों से भी प्यास नहीं बुझती । पेट में पानी जाये तो प्यास बुझे ।

—लोभी आदमी कभी सतुष्ट नही हो सकता ।

पाठा : **लिलाड़ मे बूक मांड्यां कीकर धापै ।**

लिलाड़ रै बूक मांडी, कुण पूरै ? १२८२४

ललाट पर बूक लगी, कौन पूर्ति कर सकता है ?

—लालची आदमा को जितना चाहे दो, वह संतुष्ट नहीं हो सकता ।

—बापू का कथन है कि यह धरती सब प्राणियो की जरूरते पूरी कर सकती है, पर एक व्यक्ति के लोभ की पूर्ति नहीं कर सकती ।

मि.क.सं.१२८२३

लिलाड़ रै बूक मांड्योड़ी । १२८२५

ललाट पर बूक लगी हुई ।

—दहेज के लिए लोभ करने वाले का चरित्र ऐसा ही होता है।

—होंठों पर बूक लगी हो तो उसकी प्यास बुझाना आसान है, पर जिस व्यक्ति ने अत्यधिक लोभ के वशीभूत ललाट पर बूक लगा रखी है, उसकी तृष्णा कोई शांत नहीं कर सकता।

लीखां रै डर सूं थाबळियौ नीं फेंकीजै। १२८२६

लीखो के डर से लहँगा नहीं फेका जाता।

लीख = जूँ का अंडा।

दे.क.सं.५२७७

लीजै परायौ छेह, आप तणौ दीजै नहीं। १२८२७

लेना पराई थाह, पर अपनी देना नहीं।

—दूसरों की सहनशक्ति की थाह लेना चाहें तो लें, पर अपनी सहनशक्ति किसी भी कीमत पर खोनी नहीं चाहिए।

—दूसरे अपना धीरज खोएँ तो खोएँ, लेकिन कैसी भी परिस्थिति में अपना धीरज नहीं खोना चाहिए।

लीद ई खावणी तौ हाथी री, पेट तौ भरै। १२८२८

लीद ही खानी हो तो हाथी की, पेट तो भरे।

—रिश्वत ही लेनी हो तो भरपूर ही लेनी चाहिए ताकि लालसाओं की पूर्ति तो हो। वरना छोटी-मोटी रिश्वत से मन भरता नहीं।

—खुशामद ही करनी हो तो, बड़े व्यक्ति की करो जो वक्त पर काम आये।

—बुरा काम ही करना है तो बड़े काम में ही हाथ डालना चाहिए। छोटी बुराई की खातिर भ्रष्ट होना लाभप्रद नहीं।

लीद ई खावणी है तौ पछै गधा री क्यूं खावणी? १२८२९

लीद ही खानी है तो फिर गधे की ही क्यों?

—जब निंदनीय काम पर उतर गये तो छोटे की बजाय बड़ा हाथ ही मारना चाहिए।

—जब भ्रष्ट ही होना है तो थोड़ी चीज के लिए क्यों, उससे पूर्ति तो होती नहीं।

लीपी-चूंपी गार नै पैरी-ओढ़ी नार। १२८३०

लीपी-चूँपी गार और पहनी ओढ़ी नार।

नार = नारी।

दे.क.सं.७६३३

लीर-लीर गाभा अर नांव लिछमी बाई। १२८३१

फटे-पुराने चिथड़े और नाम लक्ष्मी बाई।

—नाम के विपरीत गुण

—अच्छा नाम रखने से अवगुण या दोष नहीं छिपते।

—नाम का महत्त्व नहीं, गुणों का महत्त्व है।

दे.क.सं.५४७८

लीला-लीला चरै। १२८३२

हरे-हरे चरता है।

—जो व्यक्ति बिना जोखिम के सब जगह लाभ उठाता हो।

—जो व्यक्ति बँधे-बंधाये ठिकानों से सप्ताह बटोरता हो।

—जो व्यक्ति लाभ के सिवाय हानि के किसी काम में हाथ नहीं डाले।

लीला-लैर। १२८३३

लीला-लहर।

—जब किसी के जीवन में आनंद-ही-आनंद हो।

—ईश्वर की कृपा से सब ओर मौज-मस्ती की लहरें उमड़ रही हों। सर्वत्र मंगल-ही-मंगल हो।

लीली खेती अर ग्याभण धीणौ, पार पड़ै तद लेणौ-देणौ। १२८३४

हरी खेती और ग्याभिन मवेशी, पार पड़े तब लेना-देना।

दे.क.सं.१४१५

लीली डाळ वाळै ज्यूं वळै । १२८३५

हरी डाली मोड़े उधर ही मुड़ती है ।

—बच्चे को जिस साँचे में ढाला जाय, ढल सकता है ।

—बच्चे में मन-वांछित संस्कार डाले जा सकते हैं ।

—जो सज्जन व्यक्ति किसी बात पर न अड़े, वाजिब राय किसी की भी मानने को तैयार हो जाय ।

लीली लगांम नीं मांनै के दै दारीजी रै कांनां में । १२८३६

लीली लगाम नहीं मानती कि दे रॉड के कानों पर ।

लीली = घोड़ी के लिए संबोधन ।

संदर्भ-कथा : किसी गरीब राजपूत के पुत्र की सगाई के लिए संपन्न मेहमान आये हुए थे । वर-पक्ष के परिवार वाले अपनी आर्थिक स्थिति को बढ़ा-चढ़ाकर बताने की चेष्टा कर रहे थे । जो एक तरह से स्वाभाविक ही था । कन्या पक्ष वाले भी समझने की चेष्टा कर रहे थे । तभी रसोई करते समय एक दुर्योग घटित हो गया । हँड़िया में खीच के लिए पानी उबल रहा था । ओखली में तैयार की गई अध-भीगी बाजरी को हँड़िया में ऊर (डाल) दिया । हिलाने के लिए काठ की डोई हँड़िया के मुँह में डालने की चेष्टा की तो वह उसमें समाई नहीं । कुछ बड़ी थी । अब क्या किया जाय ? औरतों कों कुछ निदान नहीं सूझा तो उन्होंने एक किशोर को समझा कर भेजा कि लीली घोड़ी लगाम नहीं मान रही है । उसने बैठक में जाकर वही बात दोहरा दी । घरवाले इशारे को ताड़ गये । वापस वैसा ही गोलमोल जवाब दिया कि लगाम न माने तो रॉड के कानों पर डंडा मारो । किशोर ने रसोई में आकर कहा तो माँ भी इशारे में समझ गई । काठ की डोई से हँड़िया के किनारे ठोककर चौड़े कर दिये तो तत्काल समाधान निकल आया । वह सलीके से डोई हँड़िया में हिलाने लगी ! उन दिनों घोड़ी या घोड़ा खुशहाली का सूचक था । कन्या पक्ष वालों ने बच्ची की सगाई का दस्तूर कर दिया ।

—जो व्यक्ति बिगड़ी हुई आर्थिक स्थिति को बढ़ा-चढ़ाकर बताने का दिखावा करे ।

लीली लिलाड़ी वाळौ चोखौ । १२८३७

हरे ललाट वाला अच्छा

—जिस भाग्यशाली के पैदा होने पर घर में खुशहाली आये, तब ...।

—अच्छे नक्षत्रों में जन्मा बच्चा घर का अँधेरा मिटाकर सर्वत्र आलोक बढ़ाता है।

लीलौ निंवै पण सूखौ नीं निंवै। १२८३८

हरा मुड़ता है पर सूखा नहीं मुड़ता।

—बच्चे को जैसा चाहें वैसा ही मोड़ सकते हैं, युवक या बुड्ढ़े को नहीं।

—बच्चों को संस्कारित किया जा सकता है, प्रोढ़ों को नहीं।

मि.क.सं.१२८३५

लीहां कूटै है। १२८३९

लकीर पीटता है।

—पुराणपंथी [illegible] [illegible]-बँधाये मार्ग से कभी हटते नहीं, उसी पर चलने के अभ्यस्त होते हैं।

—जो व्यक्ति लकीर का फकीर हो। पुराने रीति-रिवाजों की ढोलक बजाने को ही अपना एक मात्र ध्येय समझता हो।

लुक्योड़ौ चोर लाचारी खावै। १२८४०

दुबका हुआ चोर लाचार होता है।

—इसलिए कि दुबके हुए चोर का कुछ वश नहीं चलता। न जाने कब वह पकड़ लिया जाये, इस कारण उसमें कमजोरी आ जाती है। वह अत्यंत लाचार हो जाता है।

—कसूरवार व्यक्ति की शिनाख्त होने पर वह मजबूर हो जाता है।

लुगाई अर घोड़ी पगां सूं ई चालै। १२८४१

औरत और घोड़ी पाँवो से ही चलती है।

—सिर के बल चलना न औरत को शोभा देता है और न घोड़ी को। इनके पाँवों की चाल सही मार्ग पर रहे, तब तक ही उचित है। पाँव मर्यादा से बाहर होते ही इनका महत्त्व नहीं रहता।

—गौरी और घोड़ी पाँवों पर ही चलें तब तक ही संगत है।

लुगाई अर जेवड़ी रौ अंत नीं लेवणौ। १२८४२

औरत और जेवड़ी का अंत नही लेना चाहिए।

जेवड़ी = रस्सी।

—औरत यो भी अपनी इच्छा से घर का खूब काम करती है। इसलिए काम करती हुई को टोककर उसे तंग करना उचित नही। बार-बार टोकने से वह टूट जाती है। इसी प्रकार रस्सी भी कई कामों में आती है। ज्यादा काम लेने से उसके टूटने का डर रहता है।

—काम करने वाले व्यक्ति और काम में आने वाली चीज का समय-समय पर ध्यान रखना चाहिए।

लुगाई जिसी सुखी नीं अर लुगाई जिसी दुखी नीं। १२८४३

औरत जैसी सुखी नही और औरत जैसी दुखी नही।

—औरत जननी है, वह सृष्टि का परिवद्‌र्धन करने वाली है, सतान का पोषण करने वाली है, इससे बडे सुख की प्रतीति और क्या हो सकती है। लेकिन इसके विपरीत पुरुष-प्रधान समाज में वह वस्तु की तरह बरती जाती है। पाँव की जूती जितना ही उसका महत्त्व है। शोषण की दोहरी चाकी में वह रात-दिन पिसी जाती है। उत्पीडन और प्रताडना के अलावा उसे पुरुषों के द्‌वारा और कुछ नही मिलता।

लुगाई, टाबर अर ढोर, विखा री इज ऊंडी घोर। १२८४४

औरत, बच्चे और ढोर, दुख की ही गहरी घोर।

घोर = कब्र।

—पुरुष-प्रधान समाज में औरत की स्थिति ढोर से अधिक नही है। कदम-कदम पर प्रताडना और उत्पीडन। बच्चों को भी परिजन बात-बात में झिडकते रहते हैं। इनकी बाल्य उच्छृखलता पर पाबदी लग जाती है। खेल-कूद की उम्र में भी वे काम में जोत दिये जाते हैं। ढोर-मवेशियों से भी रात दिन काम और काम। चारे-बाँटे का बस नाम ही नाम। थकान मिटाने की इच्छा करते ही चाबुक और छडी की मार। मानव-समाज में इन तीनों का जीवन गहरी अँधियारी कब्र के समान है।

लुगाई ढबै तौ आप सूं, नींतर जाय सगै बाप सूं। १२८४५

औरत रुके तो आप से, नही तो जाये सगे बाप से।

—नियंत्रण, पाबंदी और अंकुश चाहे जितना रखो औरत को वश में नहीं किया जा सकता। वे रुकें तो अपनी मरजी से ही अन्यथा वे माँ-बाप और भाई की तनिक भी परवाह नहीं करतीं।

—औरत स्वयं ही अपनी नियंता है, उस पर किसी का भी वश नहीं चलता। उसकी माया वही समझती है। उसकी वासना पर किसी की जोर-जबरदस्ती नहीं चलती।

लुगाई तौ अेक ई मोकळी। १२८४६

औरत तो एक ही काफी।

—पुरुष-प्रधान समाज में औरत को आफत की पुड़िया माना जाता रहा है। उसके चरित्र को हमेशा सशंकित दृष्टि से देखा जाता है। ऋषि-मुनियों के कथनानुसार इस मायाविनी पर जो भी भरोसा करेगा, वह धोखा खाएगा। बड़े-से-बड़े परिवार में वह तो अकेली ही पर्याप्त है, यदि भूल-चूक से किसी पुरुष के दो पत्नियाँ हो जाएँ तो उसका जीना दूभर।

पाठा : लुगाई तौ अेक ई उबरती पड़ी।

लुगाई तौ पराई जाई होवै। १२८४७

पत्नी तो पराई बेटी होती है।

—पत्नी तो दूसरे परिवार से ससुराल में आती है। तब पति व अपनी संतान के अलावा क्यों किसी का ध्यान रखने लगी? किसी के भी साथ उसका रक्त संबंध तो होता नहीं, फिर आत्मीयता कैसे हो!

—पराये घर से आने वाली पत्नी के मन में आत्मीयता संभव नहीं। आत्मीयता की दृष्टि से वह विश्वस्त नहीं होती।

लुगाई पग री जूती। १२८४८

औरत पाँव की जूती।

—जननी का पुरुष-प्रधान समाज में ऐसा घिनौना स्थान —पाँव की जूती। जिस तरह जूती फटने पर बदलते हिचक नहीं होती तो मृत पत्नी के देहावसान पर दूसरी पत्नी लाने में क्या हिचक हो सकती है? शौक हो तो पाँच-सात जूतों की जोड़ियाँ रखी जा सकती हैं, तब एक

से अधिक पत्नी क्यों नहीं रखी जा सकती ? सामंती व्यवस्था में बस औरत का यही महत्त्व है।

—पुरुष प्रधान समाज औरत की अवमानना पर ही आधारित है।

लुगाई बूढ़ी व्है जावै तौ ई पीवर री हर आवै। १२८४९

औरत बूढ़ी भी हो जाय तब भी मायके की याद आती है।

—विवाह के पहिले कन्या मायके में ही बड़ी होती है। माँ-बाप की लाड़ली। भाइयों की दुलारी। सहेलियों के साथ खेले-कूदे, कोई रोक-टोक नहीं। विवाह होने पर अपरिचित ससुराल जाते समय वह जार-जार रोती है। उसका कुछ वश भी तो नहीं चलता। पर मृत्यु पर्यंत मायके की मधुर स्मृतियों को न भूले, यह तो सर्वथा उसके वश की बात है। चिता की लपटों के बीच भी संभवतया माँ-बाप, भाई और सहेलियों की याद रह-रहकर कौंधती होगी!

लुगाई में गुण व्है तौ जांन में नीं ले जावै। १२८५०

औरत में गुण हो तो बारात मे नही जाए।

—पुरुष-प्रधान समाज में औरत के प्रति मान्यता का मापदंड कैसा अजीब होता है। जैसे किसी की बरात में जाना बहुत बड़ी उपलब्धि हो—चंद्रलोक में जाने जैसी ? औरतों में गुण या काबलियत होती तो भला वे बारांत में नहीं चलतीं ? मतलब कि उनमें न तो कोई गुण होता है और न कोई योग्यता ? खेतिहर समाज में जिस तरह हल और बैलगाड़ी की जरूरत है, उसी तरह औरत की भी जरूरत है। इससे बेशी उसका कोई महत्त्व नहीं।

पाठा : लुगायां में लक्खण व्है तौ जांन लेयर जावै!

लुगायां में अकल व्हैती तौ जांन नीं चढ़ती ?

लुगाई रा दोय सीरी, धणी के जणी। १२८५१

औरत के दो साथी, पति या माई।

—अजनबी ससुराल में औरत को एकमात्र सहारा पति का ही रहता है। और उधर घर से विदा करने पर भी बेटी माँ के दिल में हरदम बसी रहती है।

—औरत के लिए पति और माँ का सहारा अनिवार्य है।

लुगाई री अकल खुरड़ी मांय। १२८५२

औरत की अक्ल एड़ी मे।

—दूसरे बड़े प्राणियों में अक्ल तो मस्तिष्क में ही होती है। लेकिन पुरुषों के साम्राज्य का अलग ही न्याय होता है। वे औरत की अक्ल मस्तिष्क की बजाय एड़ी में मानते हैं। मस्तिष्क की तुलना में एड़ी बहुत छोटी होती है, इसलिए औरत में अक्ल भी नगण्य होती है।

—औरत नहाते समय एड़ी को रगड़-रगड़कर साफ करती है, जैसे उसकी बुद्धि माथे की बजाय एड़ी में हो, जिसे चमकाना जरूरी है।

पाठा : लुगाई री बुध अंडी रै हेटै।

लुगाई री अकल चोटो में। १२८५३

औरत की अक्ल चोटी मे।

—सामंती व्यवस्था में पुरुष की मनमानी का नमूना तो देखिये—कभी वह औरत की अक्ल एड़ी में मानता है तो कभी चोटी में, जिसे खींचते रहने और पीटने से बुद्धि में हरकत उत्पन्न होती है। अपनी जगह पर ठिकाने रहती है।

पाठा : लुगाई री मत चोटी में।

लुगाई री कमाई मोट्यार खाय तौ टांटिये रौ बिस उतर जाय। १२८५४

औरत की कमाई पति खाये तो ततैये का जहर उतर जाये।

—ततैया और पुरुष दोनों ही उग्र स्वभाव के होते हैं। इनके दंश से बड़ी टीस उठती है। लेकिन तब तक ही जब तक पुरुष घर का खर्च चलाये। जब वह औरत की कमाई पर निर्वाह करता है तो उसकी उग्रता, तेजी और दंश सब खत्म हो जाते हैं। वह निरीह हो जाता है।

लुगाई री दौड़ धणी तांई। १२८५५

औरत की दौड स्वामी तक।

—घर में सास-श्वसुर, देवर-जेठ व ननद पत्नी को तंग करें तो वह केवल अपने पति से ही शिकायत कर सकती है। वह सुने तो ठीक और न सुने तो ठीक। दूसरा सहारा अपने आँसुओं का है, चुपचाप रोती रहती है और घर के काम निबटाती रहती है।

—जिस तरह मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक, उसी तरह पत्नी की दौड़ स्वामी तक।

लुगाई री परख तौ हथळेवै ई व्है जावै। १२८५६

औरत की परख तो पाणिग्रहण के समय ही हो जाती है।

—शादी में पाणि-ग्रहण की वेला पत्नी का हाथ गर्म रहता है या ठंडा, स्थिर रहता है या काँपता हुआ। प्रेम का दबाव हलका रहता है या भारी। पति का हाथ थामकर वह आश्वस्त है या अधीर। पसीने से तरबतर है या शुष्क। कुछ ही देर के स्पर्श से सब पता चल जाता है कि पत्नी का स्वभाव कैसा है?

लुगाई री मरजाद घूंघटौ। १२८५७

औरत की मर्यादा अवगुंठन।

—औरत की लाज, मर्यादा, उसका शील-स्वभाव, उसका चरित्र और उसका वजूद सब घूँघट की स्थिति पर निर्भर करता है। उघड़े मुँह से औरत के स्वभाव का पता चले-न-चले पर घूँघट में छिपा मुँह सब प्रकट कर देता है। उघड़े मुँह में वह अपने भावों को छिपा लेती है, पर घूँघट में अजाने ही सब दिखलाई पड जाता है।

—घूँघट औरत का संरक्षक है।

पाठा : लुगाई री लाज घूंघटा में।

लुगाई री मार खायोड़ौ बोलै कोनीं। १२८५८

औरत की मार खाया हुआ बोलता नहीं।

—पुरुष औरत को अबला मानता है। बच्चे से भी कमजोर समझता है। जब शूरवीर मर्द औरत के हाथों पिट जाय तो वह शर्म के मारे कहीं चर्चा तक नहीं करता। चुपचाप अपनी बेइज्जती को सहन कर लेता है।

लुगाई रै नाक नीं व्है तौ मैलौ ई खायलै। १२८५९

औरत के नाक न हो तो मैला भी खाले।

—यदि नाक से बदबू नहीं आये तो औरत मैला खाने में भी नहीं हिचकिचाये। कैसा भी गंदा काम करने में वह पीछे नहीं हटे।

—यदि औरत को नाक कटने का डर न हो तो वह खुले आम गंदी हरकत करने से बाज न आये।

—औरत को मर्यादा का डर न हो तभी उसके असली स्वभाव का पता चले।

लुगाई रै पेट टाबर खटै पण बात नीं खटै। १२८६०

औरत के पेट मे बच्चा रह सकता है पर बात नही रह सकती।

—औरत इतनी साहसी और धीरज वाली होती है कि नौ महीने तक बच्चे को चुपचाप पेट में झेल लेती है। पर पेट में बात को नहीं झेल पाती। होंठों से बाहर प्रकट किये बिना जैसे उसका दम घुटने लगता हो। वह खाना पचा लेती है, पर बात नहीं पचा पाती।

लुगाई रौ खसम मोट्यार नै मोट्यार रौ खसम रुजगार। १२८६१

औरत का खसम पुरुष और पुरुष का खसम रोजगार।

—औरत को वश में रखने वाला यानी औरत पर राज चलाने वाला उसका पति है। और पति पर नियंत्रण रखने वाला, उस पर राज्य चलाने वाला उसका रोजगार है। रोजगार के अभाव में वह एकदम असहाय हो जाता है।

—पत्नी अपने पति का हुक्म बजाती है तो पति अपने धंधे का हुक्म बजाता है।

पाठा : लुगाई रौ मांटी मिनख नै मिनख रौ मांटी रिपियौ।

लुगाई रौ गाढ़ विखा रै मांय। १२८६२

औरत की पहिचान दुख मे।

—सुख में तो सभी साथ रहना चाहते हैं, पर दुख में जो मित्र साथ निभाये, वही असली मित्र है। सुख के दिनों में तो दूर के रिश्तेदार भी अपना समझने लगते हैं पर दुख के समय नजदीक के रिश्तेदार भी दूर खिसक जाते हैं। इसी प्रकार औरत की खास पहिचान भी दुर्दिनों में होती है। वह अविचलित रहकर संकट की वेला पति का हाथ बटाये तो आत्मीयता की होड़ में उसका कोई मुकाबला नहीं।

लुगाई रौ जमारौ ई न्यारौ। १२८६३

औरत की जिंदगी ही अलग है।

—बेचारे पुरुष को न तो माहवारी की पीड़ा सहनी पड़ती है, न नौ महीने बच्चे को गर्भ में धारण करना पड़ता है और न उसे प्रसव का दरद ही झेलना पड़ता है। पर औरत यह सब कुछ सहज-भाव से चुपचाप बर्दाश्त करती रहती है। तिस पर प्रसव के पहिले दिन तक घर के काम में जुती रहती है। औरत की तो जिदगी ही तीन लोक से अलग है। कैसा भी भीम, अर्जुन व कर्ण उसका मुकाबला नहीं कर सकता। उसका मुकाबला तो स्वयं उसी से है।

लुगाई रौ जमारौ काच री चूड़ी। १२८६४

औरत की जिदगी काच की चूड़ी।

—पुरुष की मान्यता के अनुसार कैसी विचित्र समानता है काच की चूड़ी और स्त्री के जीवन में। काच की चूड़ी मामूली ठेस से कब टूट जाय पता नहीं चलता। उसी प्रकार नगण्य चूक से औरत का जीवन कब ध्वस्त हो जाय, पता नही चलता। तनिक भी पॉव फिसला और वह गहरे गर्त में। बचने का कोई उपाय नहीं।

लुगाई रौ टाचरौ अर गाडी रौ पाचरौ कूट्योड़ौ ई कांम देवै। १२८६५

औरत का टाचरा और गाड़ी का पाचरा ठोकने पर ही काम देता है।

दे.क.सं.३४६३

लुगाई रौ नूर मांटी नै मांटी रौ नूर माया। १२८६६

औरत का नूर पति और पति का नूर माया।

—औरत का प्रभामंडल पति है और पति का प्रभामंडल माया। माया न हो तो पति का चेहरा विकीर्ण हो जाता है। यदि औरत का पति सभी दृष्टि से योग्य न हो तो औरत की आत्मा मलिन हो जाती है।

मि.क सं १२८६१

लुगाई रौ न्हाणौ, मरद रौ खांणौ। १२८६७

औरत का नहाना, मर्द का खाना।

—औरत के नहाने में और पुरुष के खाने में देर बिल्कुल नहीं लगनी चाहिए। किसी की नजर पड़े उसके पहिले औरत को झटपट नहा लेना चाहिए ताकि वह अपने काम में अदेर व्यस्त हो जाय। पुरुष के लिए कब कौन-सा जरूरी काम आ जाय या कोई महत्त्वपूर्ण बुलावा आ जाय, उसे तत्काल भोजन से निवृत्त हो जाना चाहिए।

लुगाई रौ रूप कांई देखै, गुण देख। १२८६८

औरत का रूप क्या देखे, गुण देख।

—अब तक तो दुनिया के सारे लेखक, चित्रकार और मनोवैज्ञानिक औरत के रूप-यौवन की ही चर्चा करते आये हैं पर लोक-मानस उसके सौंदर्य की बजाय उसके गुणों को अधिक महत्त्व देता है। उसकी दृष्टि में औरत का रूप गौण है और गुण प्रमुख। उसका चरित्र उज्जवल होना चाहिए, रूप साँवला हो तो भी कोई बात नहीं।

लुगाई लड़ी'र वेरा रै मांय। १२८६९

औरत लड़ी और कुएँ में।

—भारतीय नारी के लिए सब दुखो का समाधान कुएँ में गिरने से हो जाता है। कुएँ के अलावा उसका आश्रय और कहीं नहीं। वह रूठे तो दौड़कर कुएँ की शरण में जाती है। लड़े तो कुएँ की शरण माँगती है। यदि दुर्भाग्य से कुएँ खोदने का आविष्कार नहीं हुआ होता तो औरत किसकी शरण ढूँढ़ती ?

लुगाई सूई सूं घर खोद न्हाकै। १२८७०

औरत सूई से घर खोद डालती है।

—नित्य नये-नये और महँगे कपड़े सी-सीकर औरत घर का सर्वनाश कर सकती है। शृंगार-शृंगार में घर डुबा सकती है।

—औरत सूई जितनी छोटी-सी बात से महाभारत मचा सकती है।

लुगायां ई मूंछ्यां सारू मन डुळावै। १२८७१

औरतें भी मूँछों के लिए चाह करती हैं।

—औरत भी अबला का रूप छोड़कर पराक्रमी बनना चाहती है।

—औरत को मूँछों वाले यानी ताकतवर मर्द की अधिक चाह होती है।

—औरत अभिशप्त जिंदगी छोड़कर कभी-कभार पुरुष बनने की इच्छा करती है।

लुगायां भेळी होय किणी रौ घर भांगै। १२८७२

औरतें इकट्ठी हों तो किसी का घर तोड़ती हैं।

—जब चार औरतें इकट्ठी होकर चर्चा करने लगती हैं तो समझ लीजिए कि किसी का घर टूट रहा है। अपने बंगाली मित्रों से भी कई बार मैंने ऐसी उक्ति सुनी है।

—दूसरों की बुराई करने के अलावा औरतों की चर्चा का अन्य विषय हो ही नहीं सकता।

दे.क.सं.४३३१

लुगायां में अकल ओछी क्यूं व्है के वांरा केस लांबा व्है। १२८७३

औरतों की अक्ल छोटी क्यों होती है कि उनके केश लंबे होते हैं।

—पुरुषों की प्रखर बुद्धि का ज्वलंत उदाहरण तो देखिये कि बुद्धि की पहिचान के लिए क्या-क्या बढ़िया उपाय ईजाद किये हैं कि औरतों के केश इसलिए लंबे होते हैं कि उनकी बुद्धि छोटी होती है। पता नहीं सामंती मान्यता से ग्रस्त स्वयं औरतों ने ही ऐसी उक्तियाँ सृजित करने में सहयोग दिया हो।

लुगायां में अकल व्है तौ घोड़ां नीं चढ़ै? १२८७४

औरतों में अक्ल हो तो घोड़ों पर नहीं चढ़ें?

—औरतों में अक्ल हो तो वे घोड़ों पर नहीं चढ़तीं? केवल पुरुषों में ही वैसी अक्ल होती है जिसकी वजह से वे घुड़-सवारी करते हैं।

—पर आजकल तो विडंबना कुछ दूसरी है कि पुरुषों की अपेक्षा औरतें अच्छी घुड़सवार होती हैं।

—पुरुषों की दृष्टि में मर्द का हर काम श्रेष्ठ और स्त्री का हर काम निकृष्ट।

लुगायां में अकल होवती तौ वै पाग नीं बांध लेती? १२८७५

औरतों में अक्ल होती तो पगड़ी नही बाँध लेती?

—सामंती व्यवस्था समाप्त होने पर भी सामंती स्थापनाएँ ज्यों-की-त्यों मौजूद हैं कि औरतों में अक्ल होती तो वे पगड़ी नहीं बाँध लेतीं ! मगर पुरुष के शौर्य की प्रतीक पगड़ियाँ भी आज उनके माथों से नदारद इसलिए हो रही हैं कि दिन-ब-दिन पुरुषों की अक्ल सठियाने लगी है। उन्हीं का सिर और उन्हीं की जूती। कहावतें किसी का लिहाज नहीं रखतीं। सूत्र तो यह भी बुरा नहीं है कि पुरुष में अक्ल होती तो वह ओढ़नी नहीं ओढ़ लेता ?

लुगायां रा गाभा लुगायां नै ई सोहै। १२८७६

औरतो का पहिनावा औरतों को ही सोहे।

—नैसर्गिक पहिनावा औरतों को ही सोहे।

—नैसर्गिक बनावट के अनुरूप ही पहिनावे का चलन होता है। इसलिए औरतों का लिबास पुरुष के लिए मुफीद नहीं है। औरतों का पहिनावा उन्हीं के शरीर पर शोभा देता है।

लुगायां री अकल घाघरिया रै घेर जित्ती। १२८७७

औरतो की अक्ल लहँगे के घेर जितनी।

—लहँगे के घेर की नाई औरतों की अक्ल भी सीमित होती है तभी तो जिस-तिस के सामने अपना लहँगा बिछा देती हैं। गहराई मे सोच नहीं पातीं।

—लेकिन आजकल तो परीक्षाओं मे लड़कियाँ लड़कों से अधिक अंक लाती हैं। फिर इस मान्यता का अर्थ क्या है ?

लुगायां री सोझी गुद्दी लारै। १२८७८

औरतो की समझ गर्दन के पीछे।

—औरत की बुद्धि तुरंत काम नहीं देती, उसे बाद में सूझती है।

—मार खाने पर ही औरत की अक्ल काम देती है, उसके बिना उसमें हरकत पैदा नहीं होती।

लुगायां रै घी आवै तौ भैंसियां कुण मोलावै ? १२८७९

औरतो के घी आये तो भैंसियाँ कौन खरीदे ?

—पुरुष इतना स्वार्थी और लोभी है कि औरतों के दूध से घी निकलता तो वह भैंस-गायों को जंगल में छोड़ आता, पर ऐसा होता नहीं, तभी तो मन मारकर उसे दूध-घी वाले मवेशी रखने पड़ते हैं।

—किसी चीज का आसान हल निकल आये तो मनुष्य कष्ट उठाने के लिए तैयार नहीं होता।

लुगायां लड़सी अर मिनख मरसी। १२८८०

औरतें लड़ेंगी और मनुष्य मरेंगे।

—औरतों की मामूली अनबन मनुष्यों के लिए कट-मरने का बहाना बन जाती है।

—इतिहास साक्षी है कि अधिकांश युद्धों का कारण औरतें रही हैं, जिनमें लाखों मनुष्यों को अब तक अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी है।

लुळताई सदावंत सांतरी व्है। १२८८१

विनम्रता सदैव अच्छी होती है।

—विनम्रता झगड़े को शांत करती है, सामने वाले का क्रोध मिटाती है, कई अनर्थो से बचाती है।

—विनम्रता एक ऐसी नियामत है जिसमें एक भी अवगुण नहीं होता।

लूंकड़ी नारेळ रौ कांई करै? १२८८२

लोमड़ी नारियल का क्या करे?

दे.क.सं.३५४६

लूंकड़ी पाद्यौ अर सियाळियौ साख भरी। १२८८३

लोमड़ी ने पादा और सियार ने हामी भरी।

—जब किसी नीच आदमी की बात का समर्थन कोई अधम आदमी करे, तब ...।

—दुष्ट प्रवृत्ति के लोग मौका मिलने पर एक हो जाते हैं।

लूंकड़ी बूझै अर स्याळ हांमळ भरै। १२८८४

लोमड़ी पूछे और सियार हामी भरे।

—जब धूर्त व्यक्ति एक दूसरे की हाँ-में-हाँ मिलाएँ ताकि उनकी स्वार्थ सिद्धि में कोई खामी न रहे।

—जब चोर एक दूसरे की ताईद करें।

लूंकी करतां पूंछ लांबी ! १२८८५

लोमड़ी से भी पूँछ लंबी !

—किसी बड़े आदमी को आमंत्रित करने पर उसके साथ कई व्यक्ति चले आएँ, तब...।

—मूल से भी अधिक ब्याज बढ जाये, तब...।

लूंकी चढ़गी बांस, उतरै चौथै मास। १२८८६

लामडी चढ गई बॉस, उतरेगी चौथे मास ।

सदर्भ-कथा : एक लोमड़ी किसी तालाब पर पानी पीने गई तो वहॉ एक सियार पद्मासन लगाये बैठा था। धूर्त का क्या भरोसा। कब अचीता झपट पड़े। उसने विनम्रता से अगले पॉव जोडते कहा, 'सियार मामा, प्यास के मारे गला सूख रहा है, पानी पीने की इज्जजत दें तो आपके नाम की माला झपूँगी।' उस सियार को अपनी प्रशसा सुनना बहुत सुहाता था। उसने कहा, 'तू मेरी प्रशंसा करे [illegible] पानी पीने दूँगा' लोमड़ी को सचमुच प्यास लगी थी। क्या करती ? उसने सियार का हुलिया देखकर उसी वक्त बात बनाई, 'वाह ! क्या रूप है आपका भी। चॉदी का चूबतरा, जिस पर सोने का पतरा चढ़ा है। कानों में सोने के कुंडल चमक रहे है। ऐमा लगता है कि जगल का राजा अपने सिहासन पर वैठा है।' सियार ने खुश होकर पानी पीने की इजाजत दे दी तो लोमडी ने डटकर अपनी प्यास बुझाई। सियार का बहुत-बहुत एहमान मानकर चलने लगी तो सियार ने कहा, 'यो ही चली जाएगी ? पानी नहीं पीने देता तो तेरी प्यास कैसे बुझती ? अब सच्ची-सच्ची बात और बतादे। पहिले तूने कुछ ज्यादा ही तारीफ कर दी।' तब लोमडी ने कहा, 'जैसी आपकी इच्छा। तो सुनो, गोबर-मिट्‌टी का चबूतरा, कानों मे उपलो के कुंडल, जैसे कोई रैगर जूते गॉठ रहा हो।' सुनते ही सियार आग-बबूला होकर लोमड़ी पर झपटा। लोमडी ने आव-देखा न ताव, पास ही बॉस का झुरमुट था, उस पर चढ़ गई। सियार दॉत पीसता हुआ नीचे बैठ गया। लोमडी ने उसे धत्ता पिलाते कहा, 'मैं तो बॉस पर आराम से बैठी हूँ। चार महीनों के बाद उतरूँगी। तुम मजे से माला झपते रहो।'

सियार भी कम चालाक नही था। उसने भी बात बनाई, 'गीदड़ ने मारी पालथी, मेह गरजने पर हिलेगा। देखता हूँ, कब तक बॉस पर बैठी रहेगी।' लोमड़ी दुविधा में फँस गई। बॉस पर बैठे रहना सचमुच मुश्किल था। उसने दिमाग लड़ाया। थोड़ी देर बाद चौंककर कहा, 'मामा, मामा उधर देखना। चार कालौ-कबल वाले सँपेरे आ रहे हैं। उनके पीछे नाहर जैसे

चार कुत्ते हैं। मेरी रक्षा करना। ऐसा न हो कि भाग जाओ।' सँपेरे और कुत्तों का नाम सुनते ही पहिले तो सियार घबराया। तत्पश्चात् अगले ही क्षण पूँछ उठाकर भागा। लोमड़ी ठहाका मारकर हँसी। हँसते-हँसते ही बोली, 'मामा यूँ क्या, मैं तो मजाक कर रही हूँ, मजाक। जरा रुको तो!' सियार और जोर से भागा। पीछे मुड़कर देखने की भी हिम्मत नहीं हुई।

—जब दो चालाक आदमी एक दूसरे को चकमा देकर ठगना चाहें, तब...।

लूंकी रा लख मारग। १२८८७

लोमड़ी के लाख रास्ते।

—लोमड़ी के उनमान जो व्यक्ति चाहे जिस मार्ग से निकल भागे और जिसे ढूँढ़ना बहुत मुश्किल हो।

—जो चालाक व्यक्ति बहुत से हथकंडे जानता हो।

लूंकी रै मूंडै नारेळ कुण राखै? १२८८८

लोमड़ी के मुँह नारियल कौन रहने दे?

—गरीब व्यक्ति सभी तरह की सुविधाओं से वंचित रहता है।

—गरीब को कोई भी सुख से नहीं रहने देता।

दे.क.सं.४७३२

लूंकी लोई म्हारी पूंछ खांचै कोई। १२८८९

लोमड़ी लोई मेरी पूँछ खींचे कोई।

संदर्भ-कथा : एक सियार और लोमड़ी में मित्रता थी। एक दिन सियार ने मौज में आकर लोमड़ी से कहा, 'चलो, गाँव की सैर कर आएँ। साँझ की वेला कहीं गरमा-गरम ब्यालू कर आएँ।' लोमड़ी ने अपने मन की आशंका दरसाई, 'यदि कुत्ते पीछे पड़ गये तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी।' सियार ने लापरवाही से कहा, 'मुझे सब पता है। कल ही शेर महाराजा ने मुझे इस गाँव का पट्टा दिया है। हमें कोई रोकने वाला नहीं?' लोमड़ी ने खुश होकर कहा,' तब आपके रहते मुझे क्या डर, चलिए।' दोनों गाँव की ओर मुँह करके चलने लगे। लोमड़ी आगे और सियार पीछे। बस्ती के पास जाते ही कुत्तों को सियार की बास आई तो भौंकते हुए उधर

ही भागे। लोमड़ी के पास तो पट्टा था नहीं। पूँछ दबाकर जंगल की ओर भागी। सामने ही एक बिल नजर आया तो उसमें घुस गई। सियार ने भी घुसने की चेष्टा की। पर घुस नहीं सका। बिल छोटा था। तब तक कुत्ते लपककर सियार के पास पहुँचे। एक कुत्ते ने उसकी पूँछ पकड़ली। सियार ने चिंचियाते कहा, 'लोमड़ी लोई, मेरी पूँछ खींचे कोई।' लोमड़ी ने बिल के भीतर से ही जवाब दिया, 'अब तो जो होना है होगा वो ही।' वापस लोमड़ी को कुछ भी जवाब सुनाई नहीं दिया।

—जो व्यक्ति दूसरों को चकमा देकर फँसाना चाहता है, अंततः वह स्वयं ही उसमें फँसकर अपने प्राण गँवाता है।

लूंकी वाळौ घर मंडण। १२८९०

लोमड़ी वाला गृह-निर्माण।

संदर्भ-कथा : एक लोमड़ी मौत नहीं आने की वजह से बस, जी भर रही थी। अव्वल दर्जे की आलसी थी। सर्दियों के दिनों में साँझ होते ही संकल्प करती कि कल तो दिन में जरूर एक लंबा बिल खोदकर उसमें ठाट से निवास कर लेगी। वह जस-तस एक झाड़ी में दुबककर रात बिता लेती। सूर्योदय होने पर रात जैसी ठंडक नहीं लगती, तो वह दिन भर इधर-उधर घूमती। धूप में सो जाती। और साँझ को वही दृढ़ संकल्प कि जरूर लंबा बिल खोदकर ठाट से निवास करूँगी। पर वह कभी अपने संकल्प को क्रियान्वित नहीं कर सकी। एक रात भयंकर पाला पड़ा तो वह झाड़ी से बाहर ही नहीं निकल पाई। मरने के बाद ही सर्दी-गर्मी से मुक्त हुई।

—जो निकम्मी सरकार और निकम्मे अधिकारी जनता से नित्य नये वायदों का एलान करते हैं, उन्हें पूरा करने की सपने में भी चिंता नहीं करते।

लूखौ गवूं अर भूखौ ठाकर। १२८९१

रूखा गेहूँ और भूखा ठाकुर।

—रूखा गेहूँ बादी करता है और भूखा ठाकुर रैयत को परेशान करता है। किसी-न-किसी बहाने माँगता ही रहता है। इसलिए दोनों ही बुरे हैं। जहाँ तक बने गेहूँ की रूखी चपाती नहीं खानी चाहिए और जहाँ तक बन पड़े भूखे ठाकुर के सामने नहीं जाना चाहिए। नीति की बात यही है।

लूखौ ठाकुर, मुजरा रौ भूखौ १२८९२

ठाकुर रूखा, मुजरे का भूखा।

—गरीब ठाकुर रैयत के द्वारा राम-राम के इंतजार में रहता है।

—छोटा कर्मचारी सलाम से ही खुश हो जाता है।

लूखौ बच्यौ नीं बासी, नींद उडगी कासी। १२८९३

रूखा बचा न बासी, नींद उड़ गई काशी।

—घर में पेट भरने के लिए रूखा बासी कुछ नहीं हो तो भला नींद कैसे आ सकती है!

—अभावग्रस्त व्यक्ति जब चिंता के मारे सो नहीं सके, तब...।

लूखौ लाड घणी-खम्मा। १२८९४

रूखा लाड़ घणी-खम्मा।

—जो व्यक्ति थोथा लाड़-दुलार करे और रंचमात्र भी सहयोग न दे।

—जो व्यक्ति ऊपर से आत्मीयता का दिखावा करे और देने के नाम पर फीकी मुस्कराहट।

लूचा ऊं लाख पांवडा, हाथी सूं हजार पांवडा।– भी.७०९ १२८९५

लुच्चे से लाख, हाथी से हजार कदम।

दे.क.सं.१२६१६

लूट रौ खीचकांणौ ई भलौ। १२८९६

लूट का मूसल ही भला।

—लूट में जो कुछ भी हाथ लग जाय, चाहे वह मूसल या बेलन ही क्यों न हो, वह अच्छा है।

—मुफ्त का तो पान भी अच्छा है।

—रिश्वत का एक रुपया भी मिले तो क्या बुराई है!

लूट रौ माल थोड़ौ ई लायौ हूं। १२८९७

लूट का माल थोड़े ही लाया हूं।

—जब कोई किसान बाजार में अपना अनाज बेचने आता है और बनिये उसे भाव कम बताएँ तो वह कहता है—क्यों सेठजी, भाव कम क्यों बता रहे हो, घर के खेत का अनाज है, लूट या चोरी का माल नहीं है।

—पसीने की खरी कमाई का माल कोई क्यों सस्ता देना चाहेगा ?

लूटवळ रा मालूपा हाथै आवै जिका ई नफा रा। १२८९८

लूट के मालपूवे जितने हाथ लगे वही लाभ।

दे क स १२८९६

लूटीजण रै मारग क्यूं जावणौ? १२८९९

लुटने की राह क्यों जाना?

—जिस काम में नुकसान हो, उसमें हाथ भी नही डालना चाहिए।

—चोर-लुटेरे और दुष्ट से हमेशा दूर रहना चाहिए।

लूटीज्यां उपरांत डर कांई कांम रौ। १२९००

लुटने के बाद डर किस काम का।

—पहिले जितनी हिफाजत या सुरक्षा करनी हो, कर लेनी चाहिए, पर इज्जत या धन लुटने के बाद कैसा डर? जिस प्रकार नुकसान होने के बाद चिंता करना व्यर्थ है, उसी प्रकार लुटने के बाद डरना व्यर्थ है।

—जिस बात का भय हो, यदि वह मिट जाये तो फिर उससे डरने की क्या जरूरत।

पाठा : लूटीज्यां केड़ै किण बात रौ डर! लूटीज्या पाछै कैड़ौ डर!

लूण तौ फूट-फूट'र निकळै। १२९०१

नमक तो फूट-फूटकर निकलता है।

—नमकहराम को कोढ निकलकर ही रहता है ताकि उसके घावों से नमक फूट-फूटकर बह जाय और उसके पापों का प्रत्यक्ष प्रायश्चित हो जाय।

—नमकहरामी की निःसंदेह दुर्दशा होती है।

लूण री पोवै। १२९०२

नमक की बेलता है।

—सरासर झूठे व्यक्ति के लिए जो बगैर आटे के केवल नमक की रोटियाँ बेलता है। आटे में नमक जितना तो झूठ चल सकता है, पर कोरे नमक की रोटी तो नहीं बनाई जा सकती।

लूण विहूण, रसोई पूण ! १२९०३

बिना लौन, रसोई पौन !

—नमक के बिना न रोटी का स्वाद अच्छा लगता है और न साग-सब्जी का।

—कुछ-न-कुछ झूठ के बिना विशुद्ध सच्चाई भी अच्छी नहीं लगती।

—सानुपातिक नखरे के बिना रूप-सौंदर्य भी फीका है।

लूण सारू लड़ै जकौ सीरौ कद खवाड़ै ! १२९०४

नमक के लिए लड़े वह हलुवा कब खिलाये !

—जो व्यक्ति कटी अँगुली पर पेशाब न करे, वह मरहम पट्टी क्या खाक करवायेगा ?

—ओछे स्वार्थी से बड़ी आशा रखना निरर्थक है।

—मक्खीचूस व्यक्ति सपने में भी सहयोग नहीं दे सकता।

लूरां तौ फागण में ई चोखी लागै। १२९०५

लूरे तो फागुन मे ही अच्छी लगती है।

लूर = राजस्थानी लोकगीतों का एक प्रकार जो फागुन मास में स्त्रियों द्वारा चक्राकार वृत्त मे झूम-झूमकर करतल ध्वनि के साथ नृत्य करते हुए गाया जाता है। जिसमें श्लील-अश्लील सभी प्रकार के गीत हैं।

—हर चीज अपने समय के संदर्भ में ही अच्छी लगती है।

—अवसर के अनुकूल हो तो अभद्र बात भी बड़ी शिष्ट लगती है और अवसर के प्रतिकूल शिष्ट बात भी अभद्र लगती है।

लूली अर नीपै ? दो जणा पकड़्यां थका ! १२९०६
आ कांई बात ? के वा चोखौ नीपै।

लॅंगड़ी और लीपे ? दो जन पकड़े हुए ! वह कैसी बात ? कि वह अच्छा लीपती है !

—आजादी के बाद देश की पंचवर्षीय योजनाओं की क्रियान्विति इस उक्ति के अनुसार ही हुई है कि लँगड़ी के तथाकथित हितैषियों को कोई कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं है और

लँगड़ी के नाम पर असंख्य धन राशि उच्च अधिकारियों और नेताओं के घर पहुँच रही है। और आजादी के जश्न मनाये जा रहे हैं।

—नितांत अव्यवस्था पर तीखा कटाक्ष।

लूली नै ई लातां बावण री मन में आवै। १२९०७

लँगड़ी भी लातें मारने की चाह करती है।

—अक्षम व्यक्ति अपनी औकात को भूलकर ऐसे काम के लिए उद्यत हो जो उसके लिए किसी भी सूरत में संभव नहीं है। जैसे नपुंसक विवाह के लिए हठ करे।

—अयोग्य व्यक्ति व्यर्थ ही अपनी योग्यता दिखाने का असफल प्रयास करे,तब ...।

लूली फूस बुहारै जद अेक टांग पकड़ण वाळी चाहीजै। १२९०८

लँगड़ी फूस बुहारे तब एक टाँग पकड़ने वाली चाहिए।

—जो अयोग्य व्यक्ति दूसरों की सहायता के बिना कुछ भी काम करने के लिए सक्षम न हों।

—देश की पंचवर्षीय योजनाएँ और सार्वजनिक कार्य इसी उक्ति के अनुसार संचालित हो रहे हैं। लँगड़ी बहू फूस निकाल रही है और उसकी सहायता के लिए कई सहेलियाँ सहारा दे रही हैं।

दे.क.सं.७९६२

लूवां बाजै जद आक रौ दूध ई सूख जावै। १२९०९

लूएँ चलें तब आकड़े का दूध भी सूख जाता है।

—जब पश्चिमी राजस्थान में लूएँ यानी गर्म हवाएँ चलने लगती हैं तो आक का भी दूध सूखने लगता है।

—जब प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं तो अच्छी-अच्छी हस्तियाँ विचलित हो जाती हैं।

—जब सामाजिक आंदोलन का दौर आता है तब बड़े-बड़े पराक्रमियों के प्राण भी सूखने लगते हैं।

लें - ल्हा

लेंपयू लोट्यू झूपड़ो रूपाळौ लागे ।–भी.७१२ १२९१०

लीपा-पोता झोपडा सुंदर लगता है ।

—केवल झोंपडा ही क्यों सफाई और सलीके से रखी हुई हर चीज सुंदर लगती है ।

—जरूरत और उपयोगिता की दृष्टि के अलावा मनुष्य सुंदरता का भी पक्षधर है ।

लेख में मेख कुण मारै ? १२९११

लेख मे मेख कौन लगाये ?

—भाग्य में लिखे को भला कौन रोक सकता है ?

—विधाता ने जो लेख लिख दिया,उसे कोई बदल नहीं सकता,ऐसा भाग्यवादियों का विश्वास है ।

मि.क.सं.१२८०१

लेखा रौ नांव चोखौ । १२९१२

लेखा का नाम चोखा ।

—लेखे का दूसरा नाम चोखा,यानी 'अच्छा' है । यों हिसाब रखना तो किसी भी धंधे के लिए अच्छा ही है । पर इस उक्ति की विशेषता यह है कि हिसाब का दूसरा नाम अच्छा है । इससे हिसाब की महत्ता कई गुना बढ जाती है ।

लेखै लाख अर अलेखै कोडी ई नीं । १२९१३

हिसाब के लाख और बेहिसाब कौडी भी नही ।

—यदि हिसाब में लाख रुपये निकलते हैं तो पूरे लाख ही मिलेंगे और यदि कुछ भी नहीं निकलता तो कौड़ी भी बेकार गँवाने के लिए नहीं है।

—जरूरत पर लाख रुपये भी खर्च करने में हिचक नहीं, पर जरूरत के बिना एक कौड़ी भी खर्च करना उचित नहीं है।

लेखौ जौ-जौ, बगसीस सौ-सौ। १२९१४

लेखा जौ-जौ, बख्शिश सौ-सौ।

—हिसाब, हिसाब की जगह है और बख्शिश, बख्शिश की जगह है। परिजनों के बीच भी हिसाब पैसे-पैसे का होना चाहिए, बख्शिश चाहे कोई किसी को सैकड़ों की दे दे।

—रिश्तेदारों के बीच या घनिष्ठ मित्रों के बीच छोटे-मोटे लेन-देन के प्रति उदारता को लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है कि हिसाब तो पाई-पाई का होना चाहिए। यही लौकिक व्यवहार की बात है, बख्शिश की कोई सीमा नहीं, वह हिसाब के अंतर्गत नहीं आती।

लेखौ बाप-बेटा रौ। १२९१५

हिसाब बाप-बेटे का।

—बाप-बेटे परस्पर त्याग चाहे जितना कर सकते हैं, पर हिसाब की बात अलग है। हिसाब में आत्मीय संबंधों की दखल नहीं चलती। यदि बाप-बेटों में भी लेन-देन हो तो हिसाब के प्रति उतनी ही गंभीरता बरतनी चाहिए जो दो अजनबियों के बीच बरती जाती है।

—हिसाब की दृष्टि से कोई भी अपवाद नहीं होना चाहिए।

पाठा : लेखौ मां-बेटी रौ।

लेड गांठ छोडै नहिं।–व.४१ १२९१६

लेड गाँठ नही छोड़ता।

लेड = बनिये के लिए निम्न संबोधन।

—बनिये की गाँठ बड़ी मुश्किल से ढीली होती है।

—बनियों की कंजूसी पर कटाक्ष।

लेडां-तीडां अेक बांण। १२९१७

बनियों और टिड्डियों की एक ही बान।

लेड = बनिये के लिए हीन संबोधन।

—टिड्डी-दल जहाँ भी पड़ता है, उसका सफाया कर देता है। इसी प्रकार बनिये के चंगुल में जो भी फँसता है उसका कचूमर ही निकल जाता है।

—बनिया और टिड्डी दोनों ही शोषक हैं।

लेणौ उतारै बाप रौ तौ तिल चिणकारां वाय। १२९१८

कर्ज उतारो बाप का तो तिल बोवो चनकार।

चिणकार = चनकार = चने बोने से पहले पाँच-सात बार खेत की अच्छी तरह जुताई हो जाती है। फलस्वरूप चने अच्छे फलते हैं। चने की फसल लिये हुए को चनों का खेत, मसलन चिणकार यानी चनकार कहते हैं। चने की फसल के कारण जमीन बहुत उपजाऊ हो जाती है। तत्पश्चात् उसमें तिलहन की फसल ली जाय तो वह बहुत अच्छी फलती है। तिलहन का भाव भी काफी महँगा रहता है, जिससे पिता के ऋण का बोझ उतर सकता है।

मि.क.सं.५३२४

लेती जा भोपी धूंपेड़ौ। १२९१९

लेती जा भोपी धूँपेड़ा।

भोपी = देव विशेष की पूजा करने वाली, पुजारिन।

धूंपेड़ौ = धूपदान।

—किसी व्यक्ति में बुरे लक्षणों की वजह से कुछ बुरा ही घटित हो जाय, तब...।

—उदाहरण के बतौर मधुमक्खियों के छत्ते में हाथ डालने पर शहद तो बूँद मात्र भी हाथ न आये और मधुमक्खियाँ ठौर-ठौर डंक मार दें, तब उस व्यक्ति को संबोधित करते हुए यह उक्ति काम में आती है—लेती जा भोपी धूँपेड़ा।

लेतौ जा के कमावू थारै जैड़ौ है। १२९२०

लेता जा कि कमाऊ तो तुम जैसा है।

संदर्भ- कथा: एक ढोली के घर में चोर घुसा। अत्यधिक गरीबी के कारण झोंपड़े में ठौर-ठौर लंबी लकड़ियों का सहारा लगा था। अंधेरे में धन माल टटोलते हुए चोर का सिर तीन-चार बार लकड़ियों से टकरा गया। चोट की पीड़ा के कारण चोर के मुँह से आह निकल गई। ढोली

की नींद उचट गई। फिर भी वह चुप रहा। खूब अच्छी तरह जानता था कि यहाँ कुछ भी माल हाथ लगने वाला नहीं है। एक जोर की टक्कर और लगी तो चोर का सिर भन्ना गया। हताश होकर बाहर जाने लगा तो ढोली ने परिहास करते कहा, 'लेता जा।' चोर ने भी उधार नहीं रखा। हाथोंहाथ जवाब दिया, 'कमाने वाले तो तुम्हीं हो।' ढोली कमाकर रखता तो चोर को भी कुछ हाथ लगता।

—गरीब के घर से चोर भी निराश होकर लौटता है।

लेयनै बैठग्यौ जांणै बोदौ खेत बीज लेयनै बैठौ। १२९२१

लेकर बैठ गया जैसे पुराना खेत बीज लेकर बैठ जाता है।

—फसल बोते-बोते जो खेत पुराना पड जाता है, उसमें फसल उगती ही नहीं। वह दानों को अपने भीतर ही छिपा लेता है। पुराने खेत की प्रवृत्ति वाला जो मनुष्य रुपये उधार लेकर न लौटाये, कोई दू[illegible]क्ति किसी की चीज दबाकर वापस उसकी छाया तक न दिखाये और कोई अकर्मण्य व्यक्ति जो काम को लेकर ही बैठ जाता हो, कभी शुरुआत ही न करे, इन सबके लिए यह कहावत सटीक बैठती है।

लेय'र गांठियौ सूंठ रौ, बणग्यौ पंसारी। १२९२२

लेकर गाँठिया सोंठ का बन गया पसारी।

—जो व्यक्ति अकिंचन आमदनी पर भी घमंड करने से न चूके।

—जो अद्‌र्ध-शिक्षित व्यक्ति विद्‌वान की बराबरी करे।

—अपनी औकात भूलकर जो व्यक्ति बड़ी-बड़ी बातें बघारे।

लेवण गई पूत, गमाय आई मांटी। १२९२३

लेने गई पूत, गँवाकर आई घरवाला।

—जिस व्यक्ति को लाभ की आशा में घाटा लग जाय, तब...।

—आशा के विपरीत काम होने पर।

लेवण-देवण नै हर रौ नांव। १२९२४

लेने-देने को हरि का नाम।

—जिस कंजूस व्यक्ति से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कुछ भी सहयोग न मिले।

—जिस साधु-संन्यासी के पास ईश्वर का नाम लेने के सिवाय अन्य कोई विद्या अथवा ज्ञान न हो।

लेवण नै रांणी आवै अर देवण नै दासी ई नीं फरूकै। १२९२५

लेने के लिए रानी आये और देने के लिए दासी भी नहीं झाँके।

—कोई चीज माँगने के लिए घर का मुखिया जाये और बाद में देने के लिए कोई बच्चा भी न आये, तब...।

—निपट स्वार्थी के लिए जो अपना मतलब पूरा होने के बाद सीधे मुँह बात भी न करे।

लेवण रौ धणी लांठौ व्है। १२९२६

लेने वाला व्यक्ति बड़ा होता है।

—छोटा लेनदार भी अपने-आपको देनदार से बड़ा समझता है। चाहे किसी विद्वान में भी उसका कुछ बकाया निकलता हो।

—देनदार की बजाय लेनदार की मूँछ हमेशा ऊँची होती है।

लेवाळ तौ घणा ई पण देवाळ सोध्योड़ौ ई नीं लाधै। १२९२७

लेने वाले तो बहुतेरे पर देने वाला एक भी नहीं मिलता।

—प्राण लेने वाले तो कदम-कदम पर बैठे हैं, पर प्राण देने वाला दूर-दूर तक नजर नहीं आता।

—ईश्वर से माँगने वाले तो असंख्य हैं लेकिन देने वाले स्वयं ईश्वर का तो कुछ अता-पता ही नहीं।

लेवू अेक नी देवू बे।– भी.७१० १२९२८

लेना एक न देना दो।

—न किसी से एक लेना और न वापस दो देना।

—जिस व्यक्ति को किसी से कुछ भी लेन-देन न हो।

—जिस व्यक्ति का किसी से कोई सरोकार न हो। नितांत आत्मतुष्ट व्यक्ति के लिए।

लेवू-देवू हाऊकारां नो काम है।– भी.७११ १२९२९

लेन-देन साहूकारों का काम है।

—वायदे के अनुसार लेन-देन केवल साहूकार ही कर स्कते हैं, हर व्यक्ति के बूते की यह बात नहीं।

—जरूरत पड़ने पर लेना तो सभी जानते हैं पर वक्त पर देना-साहूकार को ही याद रहता है।

लेहणौ बाप रौ ई खोटौ। १२९३०

कर्जा बाप का भी बुरा है।

—निकट से निकटतम संबंधी ही क्यों न हो ऋण तो उसका भी बुरा है।

—मनुष्य को चाहिए कि वह किसी का भी ऋणी न रहे।

लेहणौ, मिनख रौ पेंखड़ौ। १२९३१

कर्ज, मनुष्य की बेड़ी।

—कर्जदार कभी भी स्वयं को स्वतंत्र महसूस नहीं कर सकता।

—यदि मनुष्य को मुक्त रहना हो तो उसे किसी से भी कर्ज नहीं लेना चाहिए। यदि ऐसी ही मजबूरी आ पड़े तो वापस चुकाने के लिए मुस्तैद रहना चाहिए।

लेहणौ, सात भौ रौ देणौ। १२९३२

कर्ज, सात भव का मर्ज।

—बोहरों ने कुछ ऐसी धारणाएँ स्थापित की हैं जिनसे कर्जदार कभी मुक्त नहीं हो सकता कि इस जन्म का ऋण अगले जन्म तक कायम रहता है। कर्जदार की सद्गति नहीं होती। पिछले जन्म में हाथी ने पाड़े से ऋण लिया था, नहीं चुकाने के कारण इस जन्म में उसे पाड़े से भिड़ंत में हारना पड़ा। कर्जदार का सिर हमेशा नीचे रहता है। इन धारणाओं की सत्यता पर बोहरा भले ही विश्वास न करे पर असामी जरूर करता है। और उसे ऋण चुकाने की चिंता हरदम खाये रहती है।

—कर्ज का हिसाब सात जन्म तक खत्म नहीं होता।

लै जूत नै गिरै-दसा आई। १२९३३

जूता लेकर ग्रह-दशा आई।

—दिनमान खराब होने पर बार-बार जूते पड़ते हैं। मतलब कि संकट-पर-संकट आते रहते हैं।

—ग्रह-दशा बिगड़ने पर आदमी का उबरना मुश्किल है।

लैण-दैण नै कीं नीं, जुहार ई जुहार। १२९३४

लेन-देन को कुछ नहीं, फकत जुहार-ही-जुहार।

—शादी-विवाह या अन्य उत्सव-आयोजन में जो व्यक्ति नमस्कार-नमस्कार करके ही संबंधित लोगों को विदा करना चाहे।

—सहयोग देने की बजाय जो आदमी केवल राम-राम से खुश करना चाहे।

लैण-दैण विवहार, तळाव-पांणी रौ सीर। १२९३५

लेन-देन व्यवहार, तालाब-पानी का सीर।

सीर = हिस्सा।

तळाव-पांणी रौ सीर = तालाब पानी का हिस्सा होना अर्थात् किसी प्रकार का लेन-देन बाकी नहीं रहना, अतः भविष्य में सामान्य व्यवहार जारी रखना।

—लेन-देन का ऐसा सुथरा व्यवहार होना चाहिए कि जाने-अजाने कभी कोई झमेला उत्पन्न न हो। सहज व्यवहार में किसी प्रकार की ग्रंथि न पड़े।

लैण-दैण सूं नीं धापीजै, नीत सूं धापीजै। १२९३६

लेन-देन से संतोष नहीं होता, नीयत से संतोष होता है।

—लेने-देने से आदमी की लालसा कभी नहीं बुझती, नीयत से बुझती है।

—कारोबार चाहे जितना करो, मन ही नहीं भरता, मन तो संतोष से भरता है।

लैणा अेक नंह दैणा दोय। १२९३७

लेना एक न देना दो।

दे.क.सं.१२९२८

पूरी उक्ति इस प्रकार है :

परदेसां सूं साजन आया, ऊंची मेड़ी पिलंग बिछाया।
आया हा पण रैग्या सोय, लैणा अेक नंह देणा दोय॥

लैणा-दैणा रा बाट न्यारा। १२९३८

लेने-देने के बाट दूसरे।

—दोहरे चरित्र वाले व्यक्ति के लिए जो लेने के बटखरे अलग रखे और देने के बटखरे अलग रखे।

—लोभ के वशीभूत जो व्यक्ति खोटा-खरा तोले। माल लेते समय उसके बटखरों का वजन अधिक होता है और माल देते समय उसके बटखरों का वजन कम होता है।

—व्यवसाय में धोखा-धड़ी करने वाला।

लैणौ अेक देणा दोय, बैठौ मोडौ मिंदर रौ दीवौ जोय। १२९३९

लेना एक और देना दोय, साधु बैठा मंदिर का दीपक जोय।

दोय = दो। जोय = जलाकर।

—जिस व्यक्ति के पास कुछ काम नहीं हो तब वह बेकार के कामों में लगा रहता है।

—अकर्मण्य व्यक्ति का समय बहुत मुश्किल से बीतता है।

लैणौ घी तद कैणौ जी। १२९४०

लेना घी तब कहना जी।

—खुशामद करने से या आदर-भाव प्रकट करने से घी-गुड़ मिलता है। बहुत आसान सौदा है—जी कहो और घी खाओ।

—कड़वे शब्द बोलने की बजाय मीठे शब्द बोलने से लाभ हो तो किसी को भी नाराज करने की जरूरत क्या है?

लैणौ जद-कद दैणौ। १२९४१

लेना जब-तब देना।

—मनुष्य जिस किसी रूप में लेता है, उसे उसी रूप में वापस देर-सबेर चुकाना ही पड़ता है। स्नेह लिया है तो स्नेह देना पड़ेगा। प्रेम पाया है तो प्रेम करना पड़ेगा। एहसान लिया है तो एहसान चुकाना पड़ेगा। रुपया लिया है तो रुपया वापस देना पड़ेगा। इसमें गफलत करने वाला गुनाहगार होता है।

लैणौ सोरौ, देणौ दोरौ। १२९४२

लेना आसान, देना मुश्किल।

—लेना तो दूसरों की कमाई में हिस्सा बटाना है, इसमें कुछ भी जोर नहीं पड़ता और इसके विपरीत देना तो अपनी कमाई से हिस्सा बटाना है, इसमें बहुत जोर पड़ता है। इसीलिए देना बहुत कठिन है और लेना बहुत आसान।

लै तौ लैवै पण देवतां माईत मरै। १२९४३

ले तो लेते हैं पर देते समय माँ-बाप मरते हैं।

—दूसरों की कमाई से कुछ लेना कितना आसान काम है, तनिक भी जोर नहीं पड़ता, पर देते समय अपनी कमाई से हाथ धोना पड़ता है, कितना मुश्किल काम है। माँ-बाप की मृत्यु से भी अधिक कष्ट देने में होता है।

लै रे लाला लांणी, लै रे भूत पिरांणी। १२९४४

ले रे लाला लाणी, ले रे भूत पिराणी।

लाला = एक चौधरी का नाम।

लांणी = ऊन की गड्ढ़ी। पिरांणी = बैलों को हाँकने की छड़ी।

संदर्भ-कथा: काफी पुरानी बात है, लालाराम नाम का एक चौधरी बैलगाड़ी जोतकर बोहरे की ऊन लेने जा रहा था। दो-ढाई कोस चलने के बाद रास्ते की दाईं तरफ उसे एक मेमना नजर आया। मेमना बड़ा सुंदर था। चिकनी सफेद-सफेद ऊन। बेचारे को कोई हिंसक जानवर मार डालेगा। चौधरी के मन में दया उमड़ी और उसे उठाकर गाड़ी पर ले आया। मेमना अनुमान से कहीं अधिक भारी लगा। चौधरी को तनिक वहम हुआ। कुछ दूर चलते ही छोटा मेमना एक मेढ़ा बन गया। चौधरी ने उसकी ओर घूरकर देखा। भूल तो हो ही गई। मेमने का रूप धरे भूत को उठा लाया। डर से भूत का हौसला काफी बढ़ जाएगा। उधर भूत ने भी अपना करिश्मा दिखाना चाहा। व्यंग्य में मुस्कराते बोला—ले रे लाला लांणी। भूत का इतना कहना हुआ कि चौधरी ने पूरे जोर से छड़ी घुमाकर उसके सिर पर दे मारी और मुस्कराते कहा—ले रे भूत पिरांणी। भूत की आँखों के सामने अँधेरा छा गया। इतने में लाला ने लात मारकर पूरी ताकत से धक्का दिया तो भूत गाड़ी से नीचे लुढ़क पड़ा। गाड़ी का पहिया माथे पर से गुजरा तो मेढ़े के मुँह से आखिरी मे-मे निकली। चौधरी ने नीचे उतरकर देखा तो मरा हुआ मेढ़ा पूरा सोने का बन गया। चौधरी ने बड़ी मुश्किल से उठाकर गाड़ी में पटका और चुपचाप अपने घर चला आया।

—मार के आगे तो भूत भी डरते हैं।

—कमजोर को भूत दबाते हैं और साहसी भूत को दबाते हैं।

लै-लपकौ। १२९४५

ले-लपका।

लपकौ = वाचालता।

—अधिक टर्राने से कोई बात गले पड़ जाय, तब...।

—कभी-कभार जीभ वश में न हो तो आफत में फँस जाना पड़ता है।

लैली रौ मांडौ अर चैची रा फेरा। १२९४६

लैली का मंडप और चैची की भॉवरें।

लैली = एक प्रकार का पक्षी।

चैची = एक छोटा पक्षी।

—बड़े आदमियों के यत्किंचित् सहयोग से छोटे आदमियों का भला हो जाता है और बड़े आदमियों की परेशानी तनिक भी नहीं बढ़ती।

—श्रीमंतों को चाहिए कि वे गरीबों की सहायता करें।

लै-लै कर्‌यां तौ चोर धाड़ायती ई नीं लेवै। १२९४७

ले-ले करने से तो चोर-डाकू भी नहीं लेते।

—लेने की गर्ज हो, तभी चीज का महत्त्व है, चाहकर देने से चीज की कद्र घट जाती है। लेने का आग्रह करने पर डकैत भी मुँह मोड़ लेते हैं। उसमें हीन भावना है, शौर्य नहीं।

—यों भी बाजार में किसी चीज की कमी हो तो भाव बढ़ जाते हैं, इसके विपरीत किसी चीज की आमद ज्यादा है तो भाव घट जाते हैं।

—बाजार के भी अपने नियम होते हैं।

पाठा : लै-लै कर्‌यां तौ डाकण ई कोनीं लेवै।

लै लोटी अर मार लंगोटी। १२९४८

ले लोटा और मार लंगोटा।

—हाथ में लो कमंडल, मारो लंगोट और माँगो भीख। इससे आसान कमाई और कुछ नहीं है।

—कमाई करने का हौसला नहीं है तो साधु बन जाओ, तनिक भी कष्ट नहीं होगा।

लैवै जित्ती नींद अर खावै जित्ती भूख। १२९४९

ले जितनी नींद अर खाये जितनी भूख।

—नींद और भूख पर कोई नियंत्रण नहीं पा सका है। नींद को तजने वाला यति के पद पर पहुँचता है और भूख को तजने वाला योगी का पद ग्रहण करता है। सामान्य मनुष्य इन दोनों को ही तज नहीं पाता, वह नींद भी पर्याप्त लेता है, भूख को भी खाना खिलाकर शांत करता है।

लोई छांणनै नीं पीवीजै। १२९५०

लहू छानकर नहीं पिया जाता।

—शोषण करने वाले किसी में भेद नहीं करते, उनके लिए तो सभी समान हैं, क्या बूढ़े, क्या बच्चे और क्या औरत। यह पानी थोड़ा ही है जो छानकर पिया जाये! यह तो शोषण का लहू है बिना किसी भेदभाव के बिना छाने ही पिया जाता है।

—अहिंसा के पुजारी बनिये पानी तो छानकर पीते हैं और लहू बिना छाने ही गटक जाते हैं।

लोई बळ्यां हाड हंसै। १२९५१

लहू गर्म रहे तो हड्डियाँ हँसती हैं।

—जब तक लहू में जोश है, हड्डियाँ मुस्कराती हैं। मतलब कि आदमी पूर्णतया स्वस्थ रहता है।

—लहू ठंडा हुआ और खेल खत्म।

लोक लगाई नो अेक मतो, पले करो बो मता।–भी.७१३ १२९५२

पति-पत्नी का एक मत, क्या करे बहुमत।

—यदि पति-पत्नी की एक राय हो तो लोगों का बहुमत कुछ भी माने नहीं रखता।

—हर किसी मसले में बहुमत की दुहाई नहीं चलती। यदि दो व्यक्तियों की परस्पर एक राय हो तो हजारों लोगों की राय वहाँ व्यर्थ हो जाती है।

लोक-वांणी सो देव-वांणी। १२९५३

लोक-वाणी सो देव-वाणी।

—जो जनता की वाणी है, वही जनार्दन की वाणी है।

—अनेक लोगों की राय ही ईश्वर की राय है।

लोग आपरै घर जासी अर अपां अेक-रा-अेक। १२९५४

लोग अपने घर जाएँगे और हम एक-के-एक।

—लोगों का क्या है मुफ्त में तमाशा देखकर घर चले जाएँगे, फिर हमें कौन रोकने वाला, हम तो एक ही रहेंगे।

—अपनी राय दृढ़ हो तो लोगों की राय प्रभावशाली नहीं होती।

लोग कमाय घालै तौ पूत कुण मांगै ? १२९५५

लोग कमाकर खिलाएं तो संतान कौन माँगे ?

—लोग तो तमाशबीन होते हैं, उन्हें तमाशे के अलावा और कुछ भी मतलब नहीं। वे माँ-बाप ही हैं जो संतान की चिंता करते हैं और वह संतान ही है जो माँ-बाप की चिंता करती है।

—संतान की होड़ दुनिया में कोई नहीं कर सकता।

लोग खायां टाळ रह जावै, पण कह्यां टाळ नीं रैवै। १२९५६

लोग खाये बिना रह जाते है, पर कहे बिना नहीं रहते।

—लोगों को निंदा करने में या आलोचना करने में रोटी की अपेक्षा अधिक आनंद मिलता है। वे रोटी छोड़ सकते हैं पर आलोचना किये बिना नहीं रह सकते।

—पेट की भूख तो नैसर्गिक है, पर मनुष्य ने वाणी स्वयं अर्जित की है, इसलिए उसे बोलने में जितना मजा आता है, उतना खाने में नहीं।

लोग घरां नूं बावड़ै, तद गांगी रावळै जाय। १२९५७

लोग-बाग घर लौटे, तब गंगा गढ़ में जाय।

गांगी = औरत का एक नाम विशेष। हिंदी में गंगा कर दिया है।

—जिस व्यक्ति के कार्य-कलाप किसी से भी मेल नहीं खाते हों। जब लोग पूर्व दिशा की ओर चलते हैं तो वह निःसंदेह पश्चिम की ओर अकेला ही रवाना होगा।

लोग तौ चढ़्या नै हंसै अर पाळा नै ई हंसै। १२९५८

लोग तो चढ़े हुए को भी हँसते हैं और पैदल को भी हँसते हैं।

—लोगों का तो काम ही हँसना है। वे तो हर स्थिति पर हँसेंगे। घुड़सवार घोड़े पर बैठा हो तो वे उसका मजाक उड़ाएँगे कि अपने मामूली आराम की खातिर घोड़े को धूप में कितना कष्ट दे रहा है? लोगों की राय का सम्मान करते हुए जब घुड़-सवार पैदल चलने लगता है तब भी वे मजाक उड़ाये बिना नहीं मानते कि यदि पैदल ही चलना था तो घोड़े को साथ लाने की जरूरत ही क्या थी! जब ले ही आया है तो बड़े मजे से घोड़े पर बैठना चाहिए। घोड़े तो बैठने के लिए ही बने हैं।

—लोगों की राय नहीं मानकर अपना मन कहे वही काम करना चाहिए।

लोग रोटी आपरी खाय, बात करै पराई। १२९५९

लोग रोटी अपनी खाएँ और बात करें पराई।

—अपना पैसा खर्च करके भी लोग दूसरों की आलोचना करने में आनंद अनुभव करते हैं।

—पर-निंदा से कुछ भी ज्ञात-अज्ञात लाभ नहीं होता,फिर भी लोग दूसरों की चर्चा किये बिना नहीं मानते। शायद उनका खाना हजम न होता हो।

लोगां रा सींठ ऊभा मत करौ। १२९६०

लोगों के बाल खड़े मत करो।

—चरित्रहीन व्यक्ति की बड़ाई करने पर उसका उत्साह और अधिक बढ़ता है,इसलिए उसकी बड़ाई नहीं करनी चाहिए।

—झूठी खुशामद से आदमी फूलता है। रोमांचित होता है।

लोगां री पंचायती में लांगड़ी आछी कोनीं। १२९६१

लोगों की पंचायती में अड़ंगा लगाना अच्छा नहीं।

—दूसरों की बातों में मीन-मेख निकालना अच्छा नहीं।

—अपना दायरा छोड़कर दूसरों के दायरे में सेंध मारना उचित नहीं है।

लोगां रै मूसळ सिरकावै, खुद रै तिणकौ ई नीं मावै। १२९६२

लोगों के मूसल सरकाये, खुद के तिनका भी न समाये।

—जो व्यक्ति लोगों के असह्य कष्ट की तनिक भी परवाह न करे, जबकि स्वयं किंचित् तकलीफ पाने पर हायतोबा मचाये।

—जो व्यक्ति दोहरा मापदंड रखे, अपने लिए कुछ और दूसरों के लिए कुछ और।

लोटा री घड़त सूं इज कारीगर री जाच पड़ै। १२९६३

लोटे के बनावट से ही कारीगर की परख होती है।

—कलाकार बातें चाहे जितनी बनाये, उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता, उसकी पहली और अंतिम परख तो उसकी कृति के आधार पर ही होती है।

—बातों से कुछ पता नहीं चलता आदमी की पहिचान तो उसके कामों से ही होती है।

लोटौ लेयनै गियौ अर तूंबी लेय'र आयौ। १२९६४

लोटा लेकर गया और तूँबी लेकर आया।

—कोई व्यक्ति धंधे की खातिर जाये और साधु बनकर लौटे।

—जिस व्यक्ति में काम करने की कोई काबलियत न हो।

—जो व्यक्ति आशा के विपरीत कुछ ज्यादा ही निकम्मा हो।

लोड़ी लुगाई नै खोळायत बेटौ गाय लारै टोगड़ा ज्यूं रबड़ता फिरै। १२९६५

छोटी पत्नी और गोद का लड़का गाय के पीछे बछड़े की नाई डोलते है।

—जिस तरह गाय के पीछे बछड़ा डोलता है, उसी तरह छोटी पत्नी पति के पीछे डोलती है और गोद का लड़का पिता के पीछे चक्कर लगाता है।

—जो व्यक्ति बिना काम-काज के इधर-उधर व्यर्थ डोलता फिरे।

लोड़ै ई 'कू' अर बडै ई 'कू'। १२९६६

छोटा ही 'कू' और बडा भी 'कू'।

—जिन दो व्यक्तियों में एक जैसे ही बुरे लच्छन्न हों।

—जब दो भाई या मित्र एक-से-एक बढ़कर चरित्रहीन या बदमाश हों।

लोढ़ा तिरै, सिल डूबै। १२९६७

'बड़े पत्थर तिरे और शिला डूबे।

—यों यह उक्ति चंबल नदी को संबोधित करके कही गई—'चांबल चवड़ै घाट, सिल डूबै अर लोढ़ा तिरै।' चंबल के तेज प्रवाह में मनुष्य तो डूब जाते हैं और पत्थर पानी के ऊपर तैरते हैं।

—जहाँ न्याय-अन्याय, संगत-असंगत और भले-बुरे में कोई भेद न हो।

—जिस समाज या राज्य की विवेकशक्ति पूर्णतया नष्ट हो गई हो, परिणामस्वरूप अनहोनी बातें घटित होने लगी हों।

लोढ़ी बिना सिल किण कांम री ! १२९६८

लोढ़ी के बिना शिला किस काम की !

लोढ़ी = पत्थर का वह लंबा व गोल टुकड़ा, जिससे शिला पर कोई वस्तु रखकर पीसी जाती है।

—दो वस्तुओं के समन्वय से ही कोई काम सफल होता है। एक चीज अकिंचन भी हो, तब भी उसका महत्त्व कम नहीं होता।

—उदाहरण से बात और अधिक स्पष्ट होगी कि सूई के बिना धागा किस काम का।

—जिस प्रकार लोढ़ी के बिना शिला अधूरी है, उसी प्रकार पुरुष के बिना औरत अधूरी है एवं औरत के बिना पुरुष अधूरा है।

लोबौजी लोबौजी करतौ भमै। १२९६९

लोबाजी लोबाजी करतें डोलता है।

—जो व्यक्ति 'हाय-धन', 'हाय-धन', करने में मशगूल हो, जिसे राम का नाम लेने की भी वेला नहीं है।

—जो व्यक्ति आठों पहर इतना व्यस्त हो कि परिजनों से बात करने का समय भी नहीं निकाल सके।

लोभ टाळ कोई नीं झिलै। १२९७०

लोभ के बिना कोई नहीं फँसता।

—दुनिया में लोभ या लाभ के बिना कुछ भी हरकत नहीं होती।

—लोभ से अछूता कोई नहीं रह सकता।

लोभ री जड़ रौ छेह न पार। १२९७१

लोभ की जड़ का न छेह न पार ।

—जिंदा रहने के लिए कुछेक प्राणी लोभ अवश्य करते हैं पर मनुष्य की सर्वोपरि पहिचान लोभ ही है ।

—मनुष्य के लोभ की कोई सीमा नहीं है ।

पाठा : लोभ री जड़ां पयांळां तणी । लोभ री माठ नीं व्है । लोभ रै कांई थोभ ।

लोभां लागौ बांणियौ अर लूंकारां लागी गाय। १२९७२
आवै तौ आवै नींतर आगड़ा ई जाय ।।

लोभ के वशीभूत बनिया और छोटा हरा घास खाती गाय ।
लौटकर आयें तो आयें वरना दूर-ही-दूर चले जायें ।।

—कमाई के लोभ में बनिया एक स्थान से दूसरे तीसरे स्थान पर चला जाता है, गाँव लौटने की परवाह नहीं करता । उसी प्रकार दूध न देने वाली गाय पहली बरसात का छोटा और कच्चा घास खाते-खाते आगे चलती ही रहती है इसलिए कि एक जगह रुकने से उसका पेट नहीं भरता ।

—पेट भरने के लिए मनुष्य और पशु-पक्षी कहाँ-कहाँ पहुँच जाते हैं !

पाठा : लोभै लाग्यौ बांणियौ अर चाटै लागी गाय।

लोभियां रौ माल कूड़िया खाधौ।–व.३४८ १२९७३

लोभी का माल झूठे ने खाया ।

—लोभी की अपेक्षा झूठा व्यक्ति अधिक घातक होता है ।

—लोभी पर भरोसा किया जा सकता है, पर झूठे पर नहीं ।

लोभी गरु, लालची चेला, दोनूं नरक में ठेलमठेला। १२९७४

लोभी गुरु, लालची चेला, दोनों नर्क में ठेलमठेला ।

ठेलमठेला = एक दूसरे को धकियाते हुए अंदर घुसना ।

—जो भी लोभ लालच करेगा, वह नर्क का अधिकारी होगा ।

—अतएव मनुष्य को चाहिए के लोभ-लालच पर पूरा नियंत्रण रखे, यदि उसे नर्क की यातना नहीं भोगनी हो।

लोभी नै नीं नींद नीं भूख। १२९७५

लोभी को न नीद और न भूख।

—कमाई, कमाई और रात-दिन कमाई की चिता के मारे लोभी को न भूख की सुधि रहती है न नींद की। न सुख और न शांति। लोभ के वशीभूत मनुष्य अपना विवेक भी खो देता है कि कमाई मनुष्य के लिए है, मनुष्य कमाई के निमित्त नहीं है।

—जिस लोभ की वजह से मनुष्य की नींद व भूख हराम हो जाती है, उसका परित्याग करने में उसे तनिक भी सोचना नहीं चाहिए। जिसके कारण सुख छिन जाय, वह घिनौनी दुर्भावना किस काम की ?

लोभी बसै जठै धूतरगारा भूखां नीं मरै। १२९७६

लोभी जहॉ बसते है वहॉ धूर्त भूखो नही मरते।

—लोभी का तो बस एक ही लक्ष्य रहता है—येन-केन-प्रकारेण धन अर्जित करना। इस दायरे के बाहर उसकी चिता निहायत सीमित रहती है। और यह भी जरूरी नहीं कि लोभी का दिमाग भी तेज हो। पर इसके विपरीत धूर्त तो बहुत चालाक व प्रखर बुद्धि वाला होता है। लालचियों को लोभ देकर वह आसानी से ठग लेता है। जहॉ लोभ का बोलबाला है, वहॉ धूर्त मजे करते हैं।

लोय लड़णौ अलोय नीं लड़णौ। १२९७७

वाजिब लडना चाहिए, गैर-वाजिब नही।

—दुश्मनी की भी अपनी नैतिकता होती है, उससे नीचे उतरकर दुश्मन से लड़ना न्याय-संगत नहीं है।

—लोक-मानस की पारदर्शिता का नमूना देखिये कि वह लड़ाई में भी नैतिक-अनैतिक के प्रति पूर्ण सजग रहता है। लड़ना भी कायदे से, बेकायदे लड़ना अनुचित है।

लोह जांणै लुहार जांणै, खाती री बलाय जांणै। १२९७८

लोहा जाने लुहार जाने, बढ़ई की बला जाने।

—जिसका जो काम हो, उसकी जिम्मेदारी उसी पर रहती है, दूसरे का उससे कोई सरोकार नहीं। जिसका जो उत्तरदायित्व हो, वही उमे सँभाले। भला दूसरा उसकी चिंता क्यों रखने लगा?

—अपने-अपने काम की जवाबंदेही अपनी ही होती है, दूसरे का उससे कोई वास्ता नहीं।

पाठा : लोह जांणै, लुहार जांणै धूंकण वाळा री बलाय जांणै।

लोहं तणी तरवार न लागै, जीभ तणी तरवार जिसी। १२९७९

लोहे की तलवार वैसा घाव नहीं करती, जैसा जीभ की तलवार करती है।

—लोक-मानस का चिंतन कैसा विचित्र होता है कि जीभ के बाण, लोहे के नुकीले बाणों की अपेक्षा गहरा घाव करते हैं। हथियार का घाव तो मिट जाता है, किंतु जीभ का घाव नहीं मिटता।

—इसी आशय पर प्रसिद्ध कवि किरपारामजी ने अपने स्वामीभक्त नौकर राजिया को संबोधित करते हुए बड़ा सटीक सोरठा लिखा है :

पाटा पीड़ उपाव, तन लाग्यां तरवारियां।

बहै जीभ रा घाव, रत्ती न औखद राजिया॥

(तलवार से लगे घावों की तो मरहम-पट्टी भी है, यथा योग्य उपचार भी है, मगर जीभ के जहरीले घावों की न तो कोई औषधि है और न उपचार ही)

लोह रा चिणा चाबणा दोरा। १२९८०

लोहे के चने चबाना मुश्किल है।

—किसी खतरनाक काम में संलग्न होना।

—असंभव काम में हाथ डालना तो आसान है, पर उसे पार पटकना बहुत कठिन है। लोहे के चने चबाने से भी कठिन।

लोह री लकीर। १२९८१

लोह की लकीर।

—जिस बात की सत्यता में किसी प्रकार का संदेह न हो।

—जो बात शत-प्रतिशत सही हो।

—जिस बात की सफलता में रंचमात्र भी संदेह न हो।

—जो व्यक्ति वादा करके कभी पीछे नहीं हटे।

लोह-लीक नै पोटळिये गांठ। १२९८२

लोहे पर लकीर और पोटलिये में गाँठ।

पोटळियौ = बकरी के बालों से बना हुआ घास फूस की गठरी बाँधने का वस्त्र विशेष। जिसमें गाँठ लगाना असंभव है।

—पुराने जमाने की सच्चाई है,जब लोहे पर लकीरें खींचना संभव नहीं था। अब तो आसानी से चाहें जितनी लकीरें तुरंत खींची जा सकती हैं। पर पोटलिये में गाँठ तो आज भी नहीं लगाई जा सकती।

—जिस काम को बड़ी कठिनाई से संपन्न किया जा सकता हो,उसके लिए।

लोह सूं लोह वढ़ै। १२९८३

लोहे से लोहा कटता है।

—शक्तिशाली पर अशक्त के द्‌वारा विजय प्राप्त करना असंभव है। दोनों पक्ष बराबर सक्षम होने चाहिएँ।

—सक्षम के सामने सक्षम ही ठहर सकता है।

—जिस तरह डंठल लोहे की सलाख को नहीं काट सकता,उसी तरह गरीब धनाढ्‌य के सामने टिक नहीं सकता।

पाठा : लोह तौ लोह सूं ई वढ़ै।

लोह सूं लोह रगड़्यां बासदी नीसरै। १२९८४

लोहे से लोहा टकराने पर चिनगारियाँ निकलती हैं।

—दो शक्तिशालियों का परस्पर लड़ना भयावह होता है।

—दो ताकतवर शक्तियों के भिड़ने पर आग फैल सकती है।

लोहां, लकड़ां, चामड़ां, पैली किसा बखांण। १२९८५
बहू, बछेरां, डीकरां, नीवड़ियां परवांण॥

लोहा, लक्कड़, चम्मड़ा, पहिले कैसा बखान।
बहू, बछेरे, पुत्र सब काम पड़े पहिचान॥

—लोहा, लकड़ी और चमड़े का पहिले कुछ पता नहीं चलता, प्रयोग में आने पर ही उनकी सही पहिचान होती है। इसी प्रकार बहू, बछेरे और बेटों का भी वयस्क होने पर पता चलता है, पहिले कुछ भी राय नहीं दी जा सकती।

—उपयोग में आने के पश्चात् ही किसी वस्तु की अच्छाई-बुराई का पता चलता है।

दे.क.सं.८८६८

लौ रौ ठबकौ। १२९८६

लोहे की चोट।

—लोहे की मामूली चोट भी दर्द करती है।

—शक्तिशाली से भिड़ना घातक है।

—गरीब व्यक्ति धनी की चोट सहन नहीं कर सकता।

ल्याळियां रै जरख ई पांवणा। १२९८७

भेड़ियो के जरख ही मेहमान।

—दुष्ट-ही-दुष्ट के मेहमान होते हैं।

—दुष्प्रवृत्ति के व्यक्तियों में मेलजोल अपने-आप ही हो जाता है।

ल्हासिया रै सागै पळासियौ तौ आवै ई। १२९८८

ल्हासिया के साथ पलासिया तो आता ही है।

ल्हास = फसल की कटाई, बुवाई आदि के समय सामूहिक रूप से कार्य-संलग्न व्यक्तियों को खिलाये जाने वाला भोज। 'ल्हास' में जाकर काम करने वाले को ल्हासिया कहते हैं।

पळासियौ = जो व्यक्ति 'ल्हास' में काम करने में तो सम्मिलित न हो किंतु भोजन में जरूर शामिल होता है।

—जब किसी उत्सव-आयोजन में आमंत्रित व्यक्तियों के साथ गैर-आमंत्रित व्यक्ति आ जाएँ, तब...।

—जब अच्छे कारीगरों के साथ नौसिखिये जुड़ जाएँ, तब...।

—किसी भी सामूहिक आयोजन में मुफ्तखोरे जुड़ ही जाते हैं।

वं-वा

वंदोळी में सांप निकळ्यौ। १२९८९

वंदोली में सॉप निकला।

वंदोळी = विवाह के पहले दिन दूल्हे-दुलहन के पितृगृह में रात को मनाया जाने वाला उत्सव।

—किसी काम की शुरुआत में ही कोई अचीता विघ्न पड़ जाय, तब...।

—किसी महत्त्वपूर्ण काम में व्यवधान उपस्थित हो जाय, तब...।

—किसी काम की संभावना में आशंका महसूस हो, तब...।

पाठा : वनोळी में सांप कठा सूं नीसरया ?

वंस रौ बैर पीढ़्यां लग चालै। १२९९०

वंश का वैर पीढ़ियों तक चलता है।

—सुपुत्र का यही लक्षण है कि वह वंश के दुश्मनों को भूले नहीं, बदला चुकाये बिना उसका जीवन निरर्थक है। सामंती व्यवस्था को कायम रखने के निमित्त ऐसी मान्यता जरूरी थी।

—लड़का-लड़की कोई भी हो उसे हर सूरत में बुजुर्गों के बैर का बदला लेना ही है। उसका कोई समय निर्धारित नहीं होता।

वंस-वंस रौ बैरी। १२९९१

वंश-वंश का वैरी।

—प्राणी-जगत् की कई प्रजातियों में जन्म-जात बैर होता है। मसलन, चूहे बिल्ली का बैर, कुत्ते-बिल्ली का बैर, साँप-नेवले का बैर इत्यादि। इनमें कभी समझौता नहीं हो सकता। इसी तरह मनुष्य की कुछेक प्रजातियाँ भी आपस में बैर रखती हैं।

—दुश्मन जितनी क्षति नहीं पहुँचा सकता उससे भी ज्यादा क्षति वंश के द्वारा होती है।

वंस सूं वंस वढ़ै। १२९९२

वश से वंश कटता है।

—कोरी-मोरी कुल्हाड़ी से लकड़ी नहीं काटी जा सकती, जब तक उसमें लकड़ी का मजबूत डंडा नही लगे। डंडा लगने पर जंगल को साफ किया जा सकता है।

—जब वश ही वंश का नाश करने के लिए उद्यत हो जाय, तब बचाव की किससे आशा की जाय।

वऊ जाणे वीशल्यू, हाऊ जांणै धोय्यू।— भी.७१४ १२९९३

सास समझती है कि धो लिए, लेकिन बहू तो असलियत जानती है।

—सास का खयाल है कि बहू ने घर के बासन और कपड़े धो लिए, लेकिन बहू से तो असलियत छिपी नहीं है कि उसने बासन और कपड़े धोये हैं कि नहीं।

—भरोसा-भरोसे की जगह है, यह कतई जरूरी नहीं वास्तविकता और भरोसे में परस्पर मेल हो।

—दूसरे के भरोसे किसी का भी काम संचालित नहीं होता।

वऊ वाहदो कीदे हीरावण है।— भी.७१५ १२९९४

बहू सफाई कर लेगी तभी नाश्ता-पानी होगा।

—परिवार के भी अपने ज्ञात-अज्ञात नियम हैं, जिनसे वह संचालित होता है। एक नियम यह भी है कि सवेरे कलेवा करने से पहिले घर के सारे काम संपन्न हो जाने चाहिएँ।

वकारयौ भांबी कोकारी को देवै नीं। १२९९५

कहने से भॉबी आवाज नही लगाता।

—ठिकाने के गाँवों में कोई विशिष्ट सूचना देने के लिए गाँव-भाँबी ऊँचे स्थान से उच्च स्वर में आवाज लगाता था। यह उसकी बेगार थी। फिर भी किसी के कहने से वह आज्ञा नहीं मानता था।

—ओछा आदमी शालीनता की बजाय सख्ती से मानता है।

मि.क.सं.१०१२

वकार्‍यौ भूत बोलै। १२९९६

पुकारने से भूत बोलता है।

—ऐसी धारणा है कि रात की वेला किसी को भी पुकारने से भूत पीछे लग जाता है। आवाज न दो तो वह छेड़ता नहीं, चुप रहता है।

—आवाज देते ही जो व्यक्ति अदेर बोल उठे, उसके लिए परिहास में यह उक्ति कही जाती है।

वकील रा हाथ खलकां रै खूंजिये। १२९९७

वकील के हाथ दूसरों की जेबों में।

—अपनी जेब में हाथ डालकर कुछ भी खर्च करने की आदत वकीलों में नहीं होती, वे तो दूसरों की जेबों में हाथ डालने के अभ्यस्त होते हैं।

—जो व्यक्ति दूसरों के धन पर मौज करना चाहे।

वखेरो करे वाणियानी नो ने मरे रचपुताणी नो।– भी.७१६ १२९९८

बखेड़ा करता है बनियाइन का और मरे रजपूतानी का।

—आपसी लेन-देन के लिए बनिये परस्पर झगड़ा करते हैं, जिसे निबटाने के लिए ठाकुरों को कष्ट उठाना पड़ता है।

—झमेला तो करे कोई दूसरा और दौड़-भाग करनी पड़े किसी और को, तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।.

वगड़्यो दूद वाड़े वरोवणां।– भी.७१७ १२९९९

बिगड़े हुए दूध का बाड़े में अर्घ्य दे देना चाहिए।

—खराब हो जाने पर उत्कृष्ट वस्तु का भी परित्याग कर देना चाहिए,उसे चिपकाये रखना उचित नहीं।

—रद्द होने पर मूल्यवान वस्तु से मोह रखना संगत नहीं।

वगड़े जाये ते बूकरो लेई ने आवे।–भी.७१८ १३०००

जंगल मे जाये तो कुछ भक्ष्य लेकर आना।

—बेकार व्यक्ति को लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है कि घर में दिन भर तो वह कुछ काम करता नहीं,यदि जंगल में जाये तो वहाँ से कुछ भक्ष्य लेकर आये।

—निठल्ले व्यक्ति को काम की याद दिलाते रहना चाहिए।

वगत अर जोबन जावणहार। १३००१

समय और यौवन जा॰॰नहार।

—न समय स्थिर रहता है और न यौवन,इसे भूलने पर ही दुनिया में सारे अनर्थ होते हैं।

—यह जीवन, यह जवानी और यह वक्त एक बार जाने पर वापस कभी नहीं लौटते, इसे हमेशा याद रखना चाहिए।

पाठा : **वगत अर जोबन जावण सारू ई आवै।**

वगत कोवगत वळती आवे, राम पांणी पाये जेम पीवो पड़े।–भी.७१९ १३००२

समय और कुसमय तो बदलता रहता है, राम जैसे पिलाये वैसे ही पीना पड़ता है।

—अच्छे-बुरे दिनमान तो आते ही रहते हैं,जिन पर किसी का वश नहीं चलता,ईश्वर जिस हाल में रखे,उसी में संतुष्ट रहना चाहिए।

—जैसी ईश्वर की इच्छा होती है,वही घटित होता है,फिर शिकायत किससे की जाय,क्यों की जाय?

वगत देख बिणजै नहीं, सो बांणियौ गिंवार। १३००३

समय देख चले नही, वह बनिया निपट गॅवार।

—समय के अनुसार जो व्यक्ति अपनी गति-विधियाँ नहीं बदलता, वह मूर्ख है, समय उसे कभी माफ नहीं करता।

—जैसी हवा बहे, वैसी ही ओट लेनी चाहिए।

पाठा : वगत जोय नंह बिणजै सो बांणियौ गिंवार।

वगत पड़े आंबो आमली भाळवे पड़े।– भी.७२० १३००४

वक्त पड़े तो आम को इमली कहना पड़ता है।

—मौके-मौके की बात है, कभी-कभार आम को इमली कहकर भी पुकारना पड़ता है।

—मतलब बनाने के लिए कभी-कभार झूठ बोलना जरूरी हो जाता है।

वगत पड़्यां री बात। १३००५

समय-समय की बात।

—दिनमान का पासा उलटने पर कोई किसी से सहयोग माँगे और वह आनाकानी करे तब दुखी व्यक्ति कहता है—समय-समय की बात है।

—समय पर किसी का जोर नहीं चलता।

पाठा : वगत-वगत री बात। टेम-टेम री बात।

वगत माड़ौ व्है जद डील रा गाभा ई बैरी व्है जावै। १३००६

समय खराब आये तब शरीर के वस्त्र भी बैरी बन जाते है।

—दिनमान खराब हों तो घरवाले भी साथ छोड़ देते हैं।

—समय रूठने पर सभी रूठ जाते हैं।

वगत रा ढोल घुरै। १३००७

समय का डंका बजता है।

—जिस व्यक्ति के आँगन में सुख के नगाड़े बजते हों।

—जिस घर में सब तरह से आनंद-मंगल हो।

पाठा : वगत-वगत रा बाजा।

वगत रा बाजा वगतां सोहै। १३००८

समय के बाजे समय पर ही सुहाते है।

—फागुन में चंग की आवाज भी बहुत सुहानी लगती है। बच्चे के जन्म पर कॉसी के थाल की झनझनाहट कानों में अमृत घोलती है। शादी पर ढोल कितना सुहाना लगता है। समय के अनुकूल ही सारी बातें सुहाती हैं।

वगत रा वाया मोती नीपजै। १३००९

समय पर बोने से मोती उत्पन्न होते है।

—समय पर फसल बोने से पैदावार बहुत अच्छी होती है।

—कोई भी काम समय पर करने से ही वह फलीभूत होता है।

—जो समय पर मुस्तैद रहता है, समय भी उसका साथ देता है।

वगत रौ पासौ, धारै सो करै। १३०१०

समय का पासा, जो सोचे वही करे।

—समय अनुकूल हो, तब कोई भी इच्छा अधूरी नही रहती।

—समय साथ तो सब-कुछ हाथ।

वगत रौ मांन व्है, मिनख रौ नीं। १३०११

समय का मान होता है, मनुष्य का नहीं।

—ऑखों देखी बात है— आजादी के पहिले गोरी चमड़ी का कितना आतंक और दबदबा था, आज हमारे बच्चे उन्हीं पर्यटकों को चिढ़ाते फिरते हैं। तमाशा देखते हैं। पहिले राजा-नवाब तक उनके नाम से थर्राते थे और जिन राजा-महाराजाओं को प्रजा ईश्वर तुल्य मानती थी, उनके पत्थर तैरते थे और आज उनका सूखा काठ भी डूबने लगा है। कोई ऑख उठाकर भी उनकी ओर नहीं झॉकता। यह समय का ही तो चमत्कार है।

पाठा : वगत रौ मोल, आदमी रौ नी।

वगत-वगत रा वांना न्यारा। १३०१२

समय-समय का अपना लिबास होता है।

—अबोध-शिशु नंग-धड़ंग ही सुंदर लगता है। वही शिशु विवाह के समय जब दूल्हे की तरह सजता है, तब कैसा विलक्षण लगता है! और शोक के समय रंग-बिरंगे कपड़े आँखों को कितने खटकते हैं। वैरागी का अपना बाना होता है। राजा का अपना बाना होता है। सब समय के संदर्भ में ही अच्छे-बुरे लगते हैं।

वगत-वगत री राग-रागणियां। १३०१३

समय-समय की राग-रागिनियाँ हैं।

—भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न बातें घटित होती रहती हैं—सबकी अलग-अलग लय और सबका अलग सुर होता है—और अलग ही होता है उन सबका छंद। उसी परिप्रेक्ष्य में उनका रस ग्रहण करना पड़ता है।

—प्रत्येक बात का अपना समय होता है और वही उसी संदर्भ में अच्छी बुरी लगती है।

वगत-वगत रौ बायरौ। १३०१४

समय-समय की हवा।

—लू झुलसाती है। शीत-लहर कँपाती है। वासंती बयार मन में कलियाँ चटकाती है। आँधी धूल से भर देती है। कोई हवा राजाओं के मुकुट उड़ा देती है और भिखारी को ताज पहिना देती है। समय-समय की हवा का अपना ही निराला ठाट होता है।

वगत विलाय जासी पण बात रह जासी। १३०१५

समय बीत जाएगा पर बात रह जाएगी।

—विपदा के समय किसी की सहायता करने पर स्मृति में उसकी याद हमेशा रहती है, पर समय गुजर जाता है। समय कभी एक-सा नहीं रहता। समय विस्मृत हो जाता है। भली-बुरी बातें बच रहती हैं।

—समय पर अजनबी की भी सहायता करनी चाहिए।

—समय गुजर जाता है, इतिहास बाकी रह जाता है।

पाठा : वगत जाय परौ, बात रह जाय।

वगर अकले वगड़ ग्यो जमारौ मनका नो।–भी. ३४५ १३०१६

बिना अक्ल के बिगड़ गया मनुष्य का जीवन।

—पैसे कमाने में ही बुद्धि का अपव्यय हो जाय तो यह मनुष्य की निरी मूर्खता ही है। बुद्धि की सार्थकता तभी है, जब मनुष्य का जीवन उदात्त हो, उन्नत हो। मनुष्य का विवेक खो गया है, तभी वह ज्ञान की बजाय अज्ञान की ओर अग्रसर हो रहा है। उजाले की बजाय अंधकार की तरफ भाग रहा है। अमृत की बजाय विष की कामना कर रहा है।

वगर चाबय्यू पेट मांये दूखे ।– भी.३४६ १३०१७

बिना चबाया पेट में दर्द करता है।

—अच्छी तरह चबाये बिना भोजन करने से बदहजमी होती है। पेट दुखता है। इसलिए भोजन को यथा-संभव चबाना बहुत आवश्यक है।

—उतावलेपन में कोई भी गलत कार्य करने से बाद में पछताना पड़ता है।

वगर तोली माटी गेलन्नजे ।– भी.३४७ १३०१८

बगैर तोली मिट्टी बेकार गई।

—शरीर की काफी मांस-मज्जा खामखाह क्षीण हुई।

—जब किसी आदमी को अथक परिश्रम करने पर भी उसका उचित पारिश्रमिक न मिले, तब...।

वगर टुकड़य्यो तमासो है ।– भी.७२१ १३०१९

बिना पैसे का तमाशा है।

—बिना पैसा खर्च किये मुफ्त में मनोरंजन हो जाय, तब...।

—जिस कार्य में एक पैसा भी खर्च न हो और आनंद की अनुभूति हो जाय, तब यह कहावत चरितार्थ होती है।

वचके बतको, कोई नी जाणे लसको ।– भी.५४१ १३०२०

पीठ पीछे बँधी शराब, कोई न जाने जनाब।

—धोखे से किये काम की असलियत जानना कठिन है।

—जालसाजी के काम की वास्तविकता का पता लगाना आसान नहीं है।

वचार करवा ऊं कई थावानो नी, करवा ऊं थावा नो ।– भी.७२७ १३०२१

विचार करने से कोई काम नहीं होता, करने से होता है।

—कितनी सादी कहावत है पर कितनी गंभीर और गहरी कि छोटे-से-छोटा काम भी बातों से कभी पूरा नहीं होता, करने से ही होता है।

—एक तिनका भी खिसकाने से खिसकता है, सोचने से नहीं।

वचार कीदे हूं वे फायले, मोरे मरवू है।– भी.७२८ १३०२२

विचार करने से क्या होगा, जब आगे-पीछे मरना ही है।

—मरना तो एक दिन है ही, इसकी व्यर्थ चिंता न करके अपना काम पूर्ण निष्ठा व ईमानदारी से करते रहो।

—मरने की चिंता करने से मृत्यु को रोका नहीं जा सकता। जिस सत्कार्य के निमित्त जन्म लिया है, उसे तो हर सूरत में पूरा करना ही है।

वठै ई बहू रौ पीसणौ अर वठै ई सुसरौजी री खाट। १३०२३

वहीं बहू का पीसना और वहीं श्वसुर की खाट।

—प्रभावशाली व्यक्तियों के सामने सामान्य आदमी काम करते हिचकिचाता है।

—जो व्यक्ति स्वयं काम में पूर्णतया दक्ष हो, अच्छा काम न करने वाले की त्रुटियाँ समझता हो, उसके सामने काम करने की हिम्मत नहीं होती।

—जब लज्जा करने में दुविधा-जनक स्थिति उत्पन्न हो जाय, तब...।

वड़कलियां रा नाड़ा अर वूजीसा नांव। १३०२४

वड़कलियों के नाड़े और माँजीसा नाम।

वड़कलियां = टूटे-फटे।

—नाम के विपरीत हुलिया।

दे.क.सं.१२३४९

वड़ में बोल, पींपळ में बोलज्या। १३०२५

बरगद में बोलकर पीपल में बोल जाय।

—जो व्यक्ति अपने मत पर स्थिर न रहे। जब जैसा मौका आये गिरगिट की नाईं बदल जाय, उसके लिए।

—आजकल की राजनीति में दल-बदलुओं के लिए बड़ी उपयुक्त कहावत है।

वड़ला नो भार वड़वाट ई ढाब हें, बड़लाअे हूं दोरो आवे ।– भी. ३४८ १३०२६

बरगद का भार शाखाएँ झेलती हैं, इसमे बरगद को क्या अडचन ?

—किसी चीज के फैलाव का बोझ उस पर न पड़े, तब यह कहावत चरितार्थ होती है ।

—बरगद बुजुर्गों का प्रतीक है और शाखाएँ औलाद की । तब इस कहावत का मर्म उजाले की नाईं स्पष्ट हो जाता है कि जब बच्चे बड़े होकर कमाने लग जाएँ तो परिवार का बोझ वे अपने-आप सँभाल लेते हैं, बुजुर्गों को चिता करने की जरूरत नही ।

वड़ां पैली तेल पीवै । १३०२७

बड़ो से पहिले तेल पीता है ।

—जो चतुर व्यक्ति बात को पहिले ही समझ लेता है, उसके लिए... ।

—जो व्यक्ति सबसे पहिले अपनी स्वार्थ-सिद्धि करने में मफल हो जाता है ।

—अत्यधिक होशियार व्यक्ति के लिए प्रशंसा का भाव ।

वड़ा खावणा अर हिसाब में रैवणौ । १३०२८

बड़े खाने और हिसाब से रहना ।

—गर्मागर्म बड़े बड़ी चटपटी चीज है । जब तक सामने रहे खाने के लिए संयम नहीं रखा जाता । यह जानते हुए भी कि अधिक खाना ठीक नही है, फिर भी रहा नहीं जाता ।

—लोभ का अवसर मिले तो संयम रखना मुश्किल है ।

—आकर्षक वस्तु के प्रति लगाव हो ही जाता है ।

वड़ियां सूं खेती करै ज्यांरी जड़ियां ऊखल जाय । १३०२९

मजदूरो से खेती करने वाले समूल नष्ट हो जाते है ।

—पश्चिमी राजस्थान में खरीफ की फसल के लिए यह उक्ति सही बैठती है कि मजदूरों से खेती करवाना घाटे का धंधा है । खेती उन्हीं के लिए लाभप्रद है जो स्वयं खेत में मेहनत करते हैं ।

पूरा दोहा इस प्रकार है :

भायां सूं भिड़ियां पछै, घर घड़ियां में जाय ।
वड़ियां सूं खेती करै, ज्यांरी जड़ियां ऊखल जाय ।।

—दोहे की पहली पंक्ति सर्वत्र सही उतरती है कि भाइयों से लड़ने पर कुछ ही घड़ियों में घर नष्ट हो जाता है।

वढ़्योड़ा वढ़ै, नीं जिका कांई वढ़ै। १३०३०

जो काटे गये है वे ही कटते हैं, जो नही हैं वे क्या खाक कटेगे।

—जो वृक्ष पहिले कट चुके हैं, वे ही फिर कटते हैं और जो मौजूद ही नहीं हैं, उनके कटने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

—जो उदार हैं वे ही बार-बार दान करते हैं, भला कंजूस किसी को क्या दे सकते हैं? जिसे अपना भला सोचने की भी फुर्सत नहीं, वह दूसरों का भला क्योंकर कर सकता है।

—शूरवीर ही युद्ध में बार-बार क्षत-विक्षत होते हैं, कायर कभी मरने या घाव खाने के लिए मैदान में नहीं जाता।

वणां ने मोत ही वाड़ो दड़ो ते हाच नी बोले।–भी.७२३ १३०३१

वे मर जाएँ तब भी सच नही बोल सकते।

—जो जीवन भर झूट बोलते रहे हैं, वे मर जाएँ तब भी उनके मुँह से सत्य नहीं निकल सकता।

—जिन बोहरों का धंधा ही झूठ पर आधारित है, वे भला सच बोलने का खतरा क्यों उठाएँगे?

वणां मोरे पेंड़ा धूजै।–भी.७२४ १३०३२

उनके सामने पॉव थर्राते है।

—किसी डकैत, ठाकुर, आतताई या पुलिस के सिपाही की ओर इस कहावत में इशारा है।

—बोहरे के सामने भी असामी की यही हालत होती है।

वणे वगत जणी दन हारा अवळा फरे।–भी.७२५ १३०३३

जिस दिन काम बनने को होता है, सारे खिलाफ हो जाते है।

—मानवीय संसार का ढर्रा ही ऐसा है कि बने-बनाये काम को बिगाड़ने वाले बहुत हैं।

—भले और नेक आदमियों की संख्या दुष्टों की तुलना में बहुत ही कम है।

वण्नी जे वगत।–भी.७२२ १३०३४

समय पर जो हो जाय सो अच्छा है।

—मनुष्य के अधिकांश कार्य-कलाप परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं और परिस्थितियों पर मनुष्य का वश नहीं चलता, इसलिए अनुकूल परिस्थितियों के दौरान कोई भी काम संपन्न हो जाय तो बेहतर है ।

—जब तक परिस्थितियाँ अनुकूल हों, काम को टालना नहीं चाहिए, क्या पता कब प्रतिकूल परिस्थिति बीच में विघ्न उपस्थित नहीं कर दे ।

वत्तू मळवा वाळू पेट पाळ हैं, परवार नी पाळै ।– भी.७२६ १३०३५

अधिक कमाने वाला अपना पेट पालता है, परिवार का नहीं ।

—जो कमाता है, कमाई पर उसी का एकमात्र अधिकार होता है । वह अपना पेट भरने के अलावा परिवार के भरण-पोषण की क्यों खामखाह चिंता करने लगा ?

—अपनी कमाई पर ही अपना अधिकार समझना चाहिए, दूसरों की कमाई पर नहीं, चाहे वह सगा भाई ही क्यों न हो ।

वद गीवी अर सुद आई । १३०३६

कृष्ण पक्ष गया और शुक्ल पक्ष आया ।

—दुख के अँधियारे दिन जस-तस बीत गये, अब सुख की चाँदनी चमकने लगी है ।

—दुख के असह्य दिन बीते, अब सुख की घड़ियाँ आईं ।

वन नै सिंघ रौ कोड अर सिंघ नै वन रौ कोड । १३०३७

वन को सिंह की चाह और सिंह को वन की चाह ।

—परस्पर समान विचार या भावना वाले व्यक्ति साथ रहते हैं ।

—ऋषि-मुनियों के लिए अरण्य मुफीद है और अरण्य के लिए ऋषि-मुनि मुफीद हैं ।

—युद्ध-भूमि को शूरवीरो की चाह और शूरवीरों को युद्ध-भूमि की चाह रहती है ।

वन रौ सिणगार, नवहत्थौ नाहर । १३०३८

वन की शोभा, नव-हत्था नाहर ।

—जिस प्रकार वन की शोभा नाहर है, उसी प्रकार सामंती मान्यता के अनुसार मनुष्य समाज की शोभा शूरवीरों से है जो युद्ध की वेला नाहर की नाईं दहाड़ते हैं ।

वन-वन रा काठ भेळा व्हिया। १३०३९

वन-वन के काठ एकत्र हुए है।

—किसी उत्सव-आयोजन मे, किसी मेले मे या किसी तीर्थ स्थान में दूर-दूर से मनुष्य उमड पडे हो।

—जगल में हरे भरे पेडो की नाई जिस स्थल पर बेशुमार मनुष्य शामिल हुए हो।

पाठा वन-वन रौ काठ।

वनो बे भाग खावे।–भी ३४९ १३०४०

दूल्हा दो हिस्से का अधिकारी।

—बारातियो की अपेक्षा दूल्हे का अधिक सम्मान होता है, उसे सर्वाधिक सुविधाएँ मिलती है। भोजन मे भी भेदभाव रखा जाता है। बारातियो का आदर सत्कार तो दूल्हे के पीछे है।

—कैसा भी उत्सव-आयोजन हो प्रमुख व्यक्तियो का अधिक सम्मान होता है।

वरतीया री खण-खण भागी।–व ११९ १३०४१

व्रतचारी की खनखनाहट भगी।

—भूख की खनखनाहट मिटने पर व्रत रखने वाले को शाति मिलती है।

—चाहना पूरी होने पर प्रत्येक व्यक्ति को खुशी होती है।

वरतीये री लोवड़ी।–व ३९० १३०४२

व्रतचारी की लोवडी।

लोवडी = लोवडी नामक ऊनी वस्त्र धारण करने वाली देवी के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द।

—व्रत रखने वाले की सहायता उसकी देवी करती है।

—सहायता करने वाला व्यक्ति देवतुल्य ही होता है।

वरसाळै रौ लाभै लाटै, ऊन्हाळै रौ लाभै हाटै। १३०४३

खरीफ का लाभ खलिहान मे, रबी का लाभ हाट मे।

—खरीफ की फसल बरसात पर निर्भर करती है, किसान को खर्च कम करना पडता है और रबी की फसल बोहरे के सहयोग से हाथ लगती है, जिसका अधिकाश लाभ बोहरा ले जाता

है । एक ऐसी मिलती-जुलती कहावत के अनुसार—सावणूं री गाडी अर उन्हाळी री गांठ । यानी खरीफ की फसल में गाड़ी भरा अनाज हाथ लगता है तो रबी में गठरी जितना ही, शेष बनिया ले जाता है ।

—जहाँ तक बन पड़े किसान को बनियों से ऋण नहीं लेना चाहिए, ताकि उसकी मेहनत का फल उसीके हाथ लगे, बनिये की दुकान में नहीं जाये ।

वळगत भाड़ै । १३०४४

राह चलते सहयोग ।

—बिना व्यय अथवा बिना मेहनत या बिना समय नष्ट किये संयोग से इच्छानुसार काम हो जाय, तब... ।

—राह चलते अप्रत्याशित रूप से जब कोई काम बन जाये, तब... ।

वळतै में डांडौ काढ़णौ ।–व.८१ १३०४५

जलते मे डंडा निकालना ।

दे.क.सं.८८०५

वळतौ जांनी अर निवड़्यौ गवाह । १३०४६

लौटता हुआ बराती और निवृत्त गवाह ।

—जब तक विवाह संपन्न नहीं हो जाता बरातियों के प्रति आदर-सत्कार का भाव बना रहता है । समय-समय पर उनकी पूछ होती रहती है । वधू की विदाई के बाद बरातियों की पूछ समाप्त हो जाती है । उनका महत्त्व तभी तक रहता है जब तक विवाह संपन्न नहीं हो जाता । उसी तरह गवाही हो चुकने के बाद गवाह की भी वह कद्र नहीं रहती । उसकी पूछ समाप्त हो जाती है ।

—हर व्यक्ति की सामयिक उपयोगिता होती है, तत्पश्चात् समय निकल जाने के बाद उसका पहिले जैसा मान नहीं रहता । उसे अपेक्षा भी नहीं करनी चाहिए । मानव-समाज में उपयोगिता के आधार पर ही संबंध स्थापित होते हैं ।

वळवाड़ै वूठी, तिलवाड़ै तूठी । १३०४७

वलवाड़े बरसी, तिलवाड़े बरसी ।

—अरावली पर्वत की प्रारंभिक घाटियाँ—यानी ब्यावर, बर, बिराँठिया और बलाड़े पर जो वर्षा बरसती है, उसका पानी नदी में बहकर तिलवाड़े (बालोतरा से आगे) में फैल जाता है। परिणामस्वरूप सारा खाद चारों और बिखर जाता है। मनवांछित फसलें होती हैं। कहाँ पर बरसा पानी कहाँ पहुँच कर लाभप्रद साबित होता है। मसलन बाप के घर जन्मी कन्या, ससुराल में लक्ष्मी का रूप धर कर तुष्ठमान होती है।

—किसी को होने वाला लाभ जब किसी अन्य के हाथ लग जाय, तब...।

पाठा : वळै वूठी नै तळै तूठी।

वळा ना पामणा कोवळा ना वेरी।– भी.७२९ १३०४८

वेला का पाहुन, कुवेला का बैरी।

—जिन मेहमानों का उचित समय पर आगमन हो जाता है उनका सत्कार भी ठीक होता है और जो मेहमान अचानक असमय में आ धमकते हैं वे मेजवानों को अखरते हैं। ऊपरी मन से ही जैसा-तैसा उनके साथ बरताव होता है।

—समय का ध्यान रखकर आने वालों की कद्र होती है। असमय आकर कष्ट देने वालों के प्रति उपेक्षा बरती जाती है।

वळावे न वाचरू वाड़े वाट जोवे।– भी.७३० १३०४९

बछड़े अपनी गायों के लौटने का इंतजार करते हैं।

—जब चारागाह में भैंस-गायों को चरने के लिए भेज दिया जाता है, तब से पाड़े-बछड़े उनके लौटने की प्रतीक्षा करने लगते हैं। उनकी आवाज सुनते ही किलोलें करने लगते हैं। मस्ती में कूद-फाँद करते हैं।

—दुनिया में माँ का प्रेम सर्वोत्कृष्ट है, उसकी तुलना किसी अन्य प्रेम से नहीं हो सकती।

वळी न वार आवे ते चावे हूं ?– भी.७३१ १३०५०

समय लौटकर आ जाय तो क्या चाहिए ?

—लेकिन मानव जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी यही है कि जो समय एक बार बीत जाता है, वह कभी वापस नहीं आता।

—इसलिए समय रहते विवेकशीलता से उसका अधिकतम सदुपयोग करने से ही समय सार्थक होता है।

वळी नै मोबिया रौ आधार नै मोबिया नै वळी रौ आधार। १३०५१

वली को मोबिये का आधार और मोबिये को वली का आधार।

वळी = वली = लंबी-मोटी लकड़ी जो कच्चे मकानों की छाजन में लंबी लगी रहती है।

मोबियौ = एक प्रकार की मोटी मजबूत और अधिक चौड़ी खपरेल जो छाजन में काम आती है।

—मनुष्य-समाज में परस्पर एक दूसरे का सहयोग अपरिहार्य है, जिसके बिना न अमीर का काम चल सकता है और न गरीब का।

वळै नीं बीजौ वागड़वास। १३०५२

न कहीं दूसरा वागड़वास।

वागड़वास = डूँगरपुर-बाँसवाड़ा प्रदेश का एक प्राचीन नाम।

—वागड़वास के बाशिदों को उससे सुंदर, सुहाना और आकर्षक प्रदेश कहीं नजर नहीं आता।

—हर व्यक्ति को अपनी जन्मभूमि और अपने प्रांत से अत्यधिक लगाव होता है।

ववार रौ तौ खोपरौ ई लेवणौ पण फोगट रौ नांव नीं करणौ। १३०५३

व्यवहार के बतौर नारियल ही काफी पर मुफ्त का नाम बुरा।

—लोक व्यवहार के तौर पर कन्या-पक्ष वालों को वर-पक्ष वालों से एक नारियल भी मिलता हो ले लेना चाहिए। मुफ्त में या धर्मार्थ के नाम पर बेटी देना मर्यादा-जनक नहीं है।

—कुछ-न-कुछ मूल्य चुकाकर ही कोई वस्तु लेनी चाहिए, मुफ्त का नाम बुरा है।

वसती ऊझड़ नै खावै।—व.३४१ १३०५४

बस्ती उजाड़ को खाती है।

—किसी भी गाँव या शहर की आबादी बढ़ने पर वीरान की ओर ही बस्ती का फैलाव होता है। और बस्ती बसने के साथ-साथ ही वीरान समाप्त होने लगता है।

—बस्ती के मवेशी निर्जन चारागाह में उगी घास ही खाते हैं।

दे.क.सं.८८४५

वहै बाढ़ नांव तरवार रौ । १३०५५

चले धार और नाम तलवार का ।

—गलती कोई करे और नाम किसी दूसरे का हो ।

—अपराध कोई करे और बदनामी किसी दूसरे की हो, तब...।

—काम कोई करे और यश किसी दूसरे को मिले ।

वांगण दियां बिना गाडी नीं चालै । १३०५६

वॉगण दिये बिना गाडी नही चलती ।

वांगण = वह स्निग्ध पदार्थ जो गाड़ी या रहॅट को आसानी से घूमने के लिए चक्रो की धुरी मे लगाया जाता है ।

—अच्छी खुराक खाये बिना शरीर स्वस्थ नहीं रहता ।

—रिश्वत दिये बिना काम नहीं होता ।

—बदमाश आदमी की धुनाई किये बिना वह नही सुधरता ।

वांगरौ बळद नीं तौ फळै अर नीं फळवा दै । १३०५७

तेज चलने वाला बैल न तो फले और न फलने दे ।

—गाड़ी और हल में तेज चलने वाला बैल न तो खुद खाता है और न साथ वाले बैल को खाने देता है । उसे तो फकत तेज चलने की धुन लगी रहती है ।

—उतावला मनुष्य न तो स्वयं चैन मे रहता है और न दूसरों को चैन से रहने देता है ।

वांडै नै ई सासरिया री हर आवै । १३०५८

कुँआरे को भी ससुराल की याद आये ।

—अनधिकृत मानुस किमी चीज की चाहना करे, तब. .।

—जब कोई अपनी मीमा का अतिक्रमण करे, तब ...।

—अधिकार से परे किसी चीज की आशा करना ।

वांणिणि विटळी तौ छांपणि सूं चोखी ।—व.२४९ १३०५९

बनियाइन बिगड़ी तब भी छीपन से अच्छी ।

दे.क.सं.९३९९

वांणियां दीठां लूखौ कुण खावै ।–व.२०७ १३०६०

बनिया दिख जाय तो रूखा कौन खाये ।

दे.क.सं.८९१२

वांणिया तरवार दै वाहर जावां, ठाकुरां थे आया कै आया नहीं तौ ।–व.२८२ १३०६१

बनिया तलवार दे पीछा करे कि ठाकुर तुम आओ, न भी आओ ।

दे.क.स.८९०९

वांणिया री बाटकियां चाट्यां पार नीं पड़ै । १३०६२

बनिये की कटोरियाँ चाटने से पार नही पड़ता ।

—बनिये की खुशामद करने से कुछ भी लाभ नहीं हो सकता । वह खुशामद से नहीं केवल लाभ से खुश होता है ।

—विशुद्ध लाभ के अलावा बनिया न तो रिरियाने से पसीजता है, न प्रशंसा करने से और न तलवे चाटने से ।

वांणी में परमेसर रौ वासौ । १३०६३

वाणी मे परमेश्वर का निवास ।

— मेहनत ने मनुष्य को दो पाँवों पर सीधा-सतर खड़ा किया तो वह प्राणी-जगत् से बहुत ऊपर उठ गया । और जब उसकी जिह्वा पर वाणी अवतरित हुई तो वह विमान में उड़ने लगा, मछलियो की भाँति सात-समंदरों में तैरने लगा और हवा के साथ बहने लगा । मनुष्य की वाणी ने ही ईश्वर और देवताओं को जन्म दिया है । तैंतीस करोड़ देवताओं की माँ है—यह वाणी ।

—मनुष्य की विकास यात्रा में वाणी ने मस्तिष्क को उर्वर किया तो उससे तितलियों की नाईं सहस्र कल्पनाएँ ब्रह्मांड को छूने लगीं । उनमें एक कल्पना परमेश्वर की भी थी ।

—वाणी ने ही मनुष्य को धर्म-दर्शन और ज्ञान-विज्ञान से दीक्षित किया है ।

वांणीयौ कोढ़ी हुवै पिण कळंकी न हुवै ।–व.२७० १३०६४

बनिया कोढ़ी भले ही हो, पर कलंकी नही होता ।

दे.क.सं.८९४४

वांणियौ नै बड़ौ, उन्हौ-उन्हौ वधारीजै।–व.२५ १३०६५

बनिया और बड़ा, गर्म-गर्म ही तोड़ना चाहिए।

दे.क.सं.८७५८

वांणियौ सीत नै ससौ धाड़ेवौ।–व.१६ १३०६६

बनिया सन्निपात में और खरगोश डाकू।

दे.क.सं.८९६०

वांरी उडायोड़ी चिड़ियां पाछी रूंख ई नीं बैठै। १३०६७

उनकी उड़ाई हुई चिडियाँ तो वापस पेड़ पर ही नही बैठती।

दे.क.सं.८५४८

वा इज कवाड़ी नै वौ इज डांडौ। १३०६८

वही कुल्हाडी और वही डंडा।

—बुरी आदतों वाला मनुष्य किसी के ममझाने मे कुछ दिन ठीक रहे और बाद में अपने उसी पुगने ढर्रे पर आ जाय, तब...।

—मनुष्य के दुर्गुण आसानी से नहीं मिटते।

—जो बदमाश अपनी करतूतों से बाज न आये।

वा इज गाडी नै वै इज चीला। १३०६९

वही गाड़ी और वही रास्ता।

—जो पोंगापंथी अपनी रूढ़ परंपराओं की राह न छोड़े।

—जिस व्यक्ति के जीवन का ढर्रा कभी नहीं बदले।

—जिस व्यक्ति की आदतों में बरसों बाद भी कोई परिवर्तन न हो।

पाठा: **वा इज गाडी अर वौ इज गेलौ।**

वा ई नार सुलखणी, जिणरी कोठी धांन। १३०७०

वही नारि सुलक्षणी, जिसकी कोठी मं अनाज भरा हो।

—जो दूरदर्शी स्त्री पूर्ण रूप से व्यवस्थित हो, घर में किसी चीज का अभाव न हो और जो घर आये किसी भी अतिथि को भूखा न जाने दे, वही अन्नपूर्णा है।

वाई पण लागी नहीं, बांस चूल्हा में बाळ। १३०७१

वार किया पर लगा नहीं, वह बाँस चूल्हे में जलाओ।

—यदि लंबा बाँस लाठी की तरह उपयोगी न हो, वह किस काम का?

—जो वस्तु समय पर काम न आये, वह निरर्थक है।

—जो व्यक्ति समय पर साथ न दे, वह त्याज्य है।

वा चढ़ती ई फूटौ, जिण हांडी में सीर कोनीं। १३०७२

वह चढ़ते ही फूटे, जिस हाँड़ी में हिस्सा नही।

—जो व्यक्ति अपने स्वार्थ के अलावा किसी अन्य प्रपंच में न पड़े।

—जिस बात से अपना भला न हो, वह भाड़ में जाये।

—निपट आत्मकेंद्रित व्यक्ति पर कटाक्ष।

वाटे ही वाळी न वेट नी करणी।– भी.७३२ १३०७३

इधर-उधर की बेगार नहीं करनी चाहिए।

—दूर टलती हुई आफत को जानकर नहीं बुलाना चाहिए।

—खामखाह किसी कठिनाई में फँसना उचित नहीं।

वाड़्यो गळो ने फीटो हा।– भी.७३३ १३०७४

गला काटा और साँस छूटा।

—गला कटने पर आदमी का बचना संभव नहीं।

—स्वयं आत्म-हत्या करने या किसी को मारने का आसान उपाय है—गला काटना।

वाड़ ही जेरां वेलो चढ़ग्यो।– भी.७३५ १३०७५

बाड़ थी, जिस पर बेलें चढ़ गईं।

—गरीब व्यक्ति किसी सहयोग के बिना पनप नहीं सकता।

—निर्बल को किसी शक्तिशाली का सहारा चाहिए-ही-चाहिए।

वाड़ाय्यी मूंडी वाकळा बूके जणां हूं करा ?–भी.७३४ १३०७६

कटी मुंडी भी बाकले खाये तो क्या किया जा सकता है।

वाकळा = बाकळा = उबला हुआ अनाज जो देवी-देवताओं या भूत-प्रेतों को चढ़ाया जाता है।

—दुष्ट व्यक्ति को अधमरा करने पर भी वह अनर्थ करने से बाज न आये तो क्या किया जा सकता है ?

—निर्लज्ज व्यक्ति मरने पर भी अपनी आदतें न छोड़े तो दूसरा उपाय क्या है ? आदत से लाचार व्यक्ति का हठी-चरित्र।

वाड़ि काकड़ी खाय।–व.९७ १३०७७

बाड़ी ककड़ियाँ खाय।

—जब फलों को बगीचा ही खाने लग जाय तो भला क्योंकर सुरक्षा हो सकती है ?

—जब घरवाले ही अस्मत लूटने पर उतारू हो जाएँ तो असहाय अबला क्या कर सकती है ?

वाढ़ी आंगळी माथै ई को मूतै नीं। १३०७८

कटी अँगुली पर भी पेशाव न करे।

—यह एक लोक-उपचार है कि ताजा कटे स्थान पर पेशाब करने से घाव पकता नहीं। खून जल्द ही बंद हो जाता है। यह कहावत उस खुद-गर्ज व्यक्ति पर लागू होती है जो किसी दूसरे की कटी अँगुली पर पेशाब तक नहीं करना चाहता। पेशाब तो उसे जब-तब करना ही है, पर किसी की कटी अँगुली पर नहीं। उसके पेशाब से भी किसी को क्यों फायदा हो जाय ?

—कोई मनुष्य इस सीमा तक भी अविवेकी या निपट स्वार्थी हो सकता है, जो किसी की कटी अँगुली पर भी पेशाब न करे ? हाँ, अधिकांश मनुष्य इसी मनोवृत्ति के होते हैं।

पाठा : वाढ़ी आंगळी माथै मूतण सारू ई मुसागत आवै।

वाढ़ी माथै क्यूं लूण भुरकावै ? १३०७९

कटी पर क्यों नमक छिड़कते हो ?

—दुखी आदमी को और सताना उचित नहीं है।

—जो व्यक्ति अपना कसूर कबूल करले, उसे ताने मार-मार कर शर्मिंदा नहीं करना चाहिए।

—पुरानी बातों के घाव उकेरना, उन पर नमक छिड़कने जैसा ही घृणित कार्य है।

पाठा : वाढ़ी ऊपरां लूंण भुरकावै।

वाढ़ै बूटी थारा कांन। १३०८०

काटे बूची तेरे कान।

—बूची के न तो कान होते हैं और न वे काटे जा सकते हैं, फिर भी कान कटने का डर हमेशा बना रहता है। कायरों की ठीक यही मनोवृत्ति होती है। वे आफत का सामना करने के पहिले ही किनारा करने लगते हैं।

वाणन्या वाळी गत राखी नै कमावौ।– भी.७३७ १३०८१

बनिये वाली सूझ रखकर कमाओ।

—बणिक-बुद्धि के बिना व्यापार में लाभ होना संभव नहीं। और बणिक बुद्धि का मायना सिर्फ इतना ही है—कोई दो बोल सुनाये तो चुपचाप सुन लेना, लाभ के मसले में बाप का भी लिहाज नहीं रखना, भावुकता की बजाय हमेशा तटस्थ रहना और लाभ को ही सर्वोपरि नैतिकता समझना। यही बणिक बुद्धि की विशिष्टता है, जिसके बिना व्यवसाय में सफलता नहीं मिल सकती।

वाणी रूपाळी है, मनख रूपाळौ नी है।– भी.७३८ १३०८२

वाणी सुंदर है, मनुष्य नही।

—मनुष्य के सौंदर्य से उतनी सफलता नहीं मिलती, जितनी मीठी बोली से मिलती है।

—वाणी की मधुरता तो वृद्धावस्था तक मौजूद रहती है, पर सुंदरता जवानी के बाद अपना आकर्षण खो देती है।

वाण्यो बामण थाई ने वेहवानू हूं काम चालवानो।– भी.७३६ १३०८३

बनिया ब्राह्मण बनकर बैठ जाय तो क्या काम चल सकता है?

—स्पष्ट उत्तर है कि नहीं चल सकता। लेकिन इसके विपरीत ब्राह्मण बनिया बनकर बैठ जाय तो सफलता असंदिग्ध है।

—बनिया तो बनिया रहकर ही व्यापार में मन-वांछित लाभ कमा सकता है, ब्राह्मण बनकर तो वह सारी पूँजी गॅवा बैठेगा।

वात-वात में वगरो लागे।– भी.७३९ १३०८४

बात-बात मे बखेडा हो जाता है।

—इसलिए बहुत सोच समझकर होंठ खोलने चाहिएँ। अन्यथा चुप रहना ही श्रेयस्कर है।

—पता नहीं, कब किस बात का बतंगड़ बन जाये, सो एक बार बोलने से पहिले दस बार विचार करना चाहिए।

वातां, बळदस्या, गोटा चणाय्या।– भी.७४० १३०८५

बातें बलदस्या, गोठ चणाय्या।

—बलदम्या और चणाय्या भीलों के दो गॉव हैं। एक बार किसी मसले को लेकर दोनो गॉवों के पंच शामिल हुए। अच्छा भोजन बना। लेकिन बलदस्या के पंच बातें करने मे मशूगल रहे और चणाय्या के पंच सारा भोजन खा गये। इस संदर्भ में यह उक्ति समझनी पड़ेगी कि लोगों के झगड़े में जब दूसरे लोग अपना काम पटा लेते हैं तब यह कहावत प्रयुक्त होती है। जो व्यक्ति अतिशय सतर्क रहता है, वही सफल होता है।

वातां में वाधा नहिं, निकमी माथा-फोड़। १३०८६

बातो मे बाधा नही, बेकार मगजमारी।

—कोई कैसी भी अच्छी बुरी बात करे, कौन टोक सकता है ? हर व्यक्ति को बोलने की आजादी है, मगर बेकार मगजमारी किसे भी अच्छी नहीं लगती। सुनने वाले को भी आजादी है कि वह किसी की बात सुने-न-सुने।

वाताळू रौ बिगड़ै नै ऊद्याळू रौ सुधरै। १३०८७

वाचाल का बिगडता है और उद्यमी का सुधरता है।

—वाचाल का काम बिगड़ता है, उद्यमी का काम सुधरता है।

—इस सच्चाई में कभी अपवाद नहीं हो सकता कि काम तो करने से होता है, बातों से कभी नहीं होता।

दे.क.सं.९१६३

वाते वाळी वात रेई जावे ते ठीक ।–भी.७४१ १३०८८

सफलता मिलने से बात रह जाय तो ठीक है ।

—जिस कठिन काम में सफलता संदिग्ध हो, यदि किसी कारण-वश या भाग्य से बात बन जाय तो अधिक खुशी होती है । प्रतिष्ठा को आँच नहीं आती ।

—सफलता से ही किसी काम की सार्थकता चरितार्थ होती है ।

वाद तौ रावण रौ ई को निभ्यौ नीं । १३०८९

दुराग्रह तो रावण का भी नहीं निभा ।

— जब लंकाधिपति रावण का भी हठ पार नहीं पड़ा, उसका गर्व भी लंका जलने के साथ भस्म हो गया तो दूसरों की औकात ही क्या है, जो वे घमंड करें ।

—दुराग्रह करने वालों को आज भी रावण मे मबक सीखना चाहिए कि वे सपने में भी दुराग्रह से कोसों दूर रहें ।

पाठा : वाद तौ रावण रौ ई नी चाल्यौ ।

वादीली दूजौ विवाद भलां ई कर पण गांव मत बाळजै के भलां याद अणायौ । १३०९०

हठीली ! तू दूसरा विवाद भले ही कर लेकिन गाँव मत जलाना कि अच्छी याद दिलाई ।

दे.क.सं.३७०५

वादीली धणी सूं वाद करै तौ ऊंडै पांणी डूब मरै । १३०९१

हठीली पति से जिद करे तो गहरे पानी में डूब मरे ।

दे.क.सं.१२०२१

पाठा : वादीली वाद करै तौ ऊंडा में डूब मरै ।

वानर री चांदी ।–व.२४२ १३०९२

वानर की चाँदी ।

चांदी = घाव ।

—बंदर के घाव होने पर वह मार खुजलाता है । घाव को और गहरा कर देता है ।

—बंदर की नाईं जो नासमझ व्यक्ति अपनी आफत-विपदाओं को स्वयं अपने हाथों बढ़ाये।

वापरय्यो वदे, हगरय्यौ ह्ळै।–भी.७४३ १३०९३

उपयोग से बढ़ोतरी, संचय से क्षति।

—वस्तु, पदार्थ या धन कुछ भी हो, हमेशा उपयोग में लाते रहने से वृद्धि होती है और इन्हें जोड़ने से क्षति अवश्यंभावी है।

—संचय की बजाय खर्च करने के निमित्त आदमी की प्रवृत्ति हो तो कई समस्याओं का निराकरण स्वतः हो जाय।

वापरैला जठै तौ बिखरैला ई। १३०९४

जहाँ होगा, वहाँ तो बिखरेगा ही।

—जहाँ माल की बहुतायत होगी, वहाँ कुछ-न-कुछ तो बिखरता ही है। और जहाँ कुछ भी न हो, वहाँ बिखरने का सवाल ही नहीं उठता।

—उत्सव-आयोजन में भोजन करने के बाद जूठा तो बचता ही है।

—धनाढ्य के यहाँ नौकर-चाकर पेट भरते ही हैं।

पाठा : वापरै जठै ई बिखेरौ।

वाभरा भूत व्हैणौ। १३०९५

आग-बबूला होना।

—क्रोध के मारे लाल होना।

—क्रोध में भभकने वाले व्यक्ति का विवेक नष्ट हो जाता है, उसे भले-बुरे का कुछ भी होश नहीं रहता।

वाभौ भोळौ नै भाभी डंयाळ, उठी री कसर अठी आंण। १३०९६

भाई भोला और भाभी चालाक, उधर की कसर इधर बेबाक।

—दो व्यक्तियों में परस्पर विरोधी प्रवृत्तियाँ हों तो एक की कसर दूसरे में पूरी हो जाती है। दोनों के मिलन से हिसाब [illegible] बैठ जाता है। यदि संयोग से पति-पत्नी में ऐसी स्थिति हो तो दांपत्य जीवन सुचारु रूप से चलने लगता है।

वाभौसा नै दांणा मत मिळ्ज्यौ , बळीता नै मेलैला। १३०९७

पिताजी को अनाज नही मिले तो ठीक वरना मुझे ईधन के लिए भेजेंगे।

दे.क.सं.११८५४

वाय वादळा फाट जासी। १३०९८

हवा चलने पर बादल फट जाते हैं।

—सही है कि एक विशेष किस्म की हवा चलने से बादल फट जाते हैं लेकिन साथ-ही-साथ यह बात भी तो सही है कि दूर की घटा को हवा ही तो खींचकर लाती है।

—जमाने की हवा के अनुसार यथास्थिति बदलती रहती है।

वाये आवै नै बदळै जावै। १३०९९

हवा के साथ आता है और बदले मे चला जाता है।

—मुफ्त में कोई चीज आती है तो वह वापस मुफ्त में ही चली जाती है।

—जैसा आया वैसा ही गया।

वायोड़ी तौ भांबी री ई खाली नीं जावै। १३१००

चलाई हुई तो भॉबी की भी खाली नही जाती।

—लाठी या हथियार छूआछूत नहीं मानते, भॉबी के प्रहार की चोट तो लगती ही है, परिणाम-स्वरूप खून भी निकलता है और हड्डियॉ भी टूट सकती हैं। ज्यादा ही हुआ तो मृत्यु भी हो सकती है।

—यदि कोई अनुसूचित जाति का व्यक्ति सवर्ण पर प्रहार करे तो वह प्रभावहीन नहीं होता। मनुष्य की नाई प्रकृति किसी का लिहाज-संकोच नहीं करती।

मि.क सं.१२६३

वायौ तौ आंम अर ऊग्यौ आक। १३१०१

बोया तो आम और उगा आक।

—संतान बिगड़ जाने पर।

—आशा के विपरीत कोई काम असफल होने पर।

—अच्छे कर्म का दुष्परिणम मिलने पर।

पाठा : आंब-आंब कर सेवियौ, नीसर आयौ बंबूळ।

वायौ रूंख बबूल रौ, आंम कठा सूं होय। १३१०२

बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से होय।

—भला कुकर्मों का अच्छा फल क्योंकर मिल सकता है ?

—जो जैसे कर्म करेगा,उसे वैसा ही फल मिलेगा। अफीम बोने पर अफीम ही हाथ लगेगा, अंगूर नहीं।

वार तौ बैरी रा ई बखांणीजै। १३१०३

प्रहार तो बैरी के भी बखाने जाते हैं।

दे.क.सं.४०७७

वार तौ सात अर तिंवार नौ। १३१०४

वार तो सात और त्योहार नौ।

—हिंदुओं में त्योहारों की बहुलता को निर्देशित करने के लिए।

—जीवन की एकरसता को मिटाने के लिए आनंद-उत्सव अनिवार्य हैं। बेहिसाब मनाने चाहिएँ।

वार वागा तिंवार नागा। १३१०५

आये दिन वागा, त्योहार पर नागा।

वागौ = जामा। सजधज कर रहना। नागौ = नंगा।

—जिस सिरफिरे व्यक्ति की असामान्य कामों में रुचि रहती हो।

—औंधे व्यक्ति का दिमाग हमेशा औंधे कामों में ही व्यस्त रहता है।

—सामाजिक प्रचलन के विरुद्ध काम करने वाला व्यक्ति।

वारी ओ वारी ! हेटै छाजळौ अर माथै बुहारी। १३१०६

वारी ओ वारी ! नीचे सूप और ऊपर बुहारी।

—किसी काम की आलोचना न करके झूठी प्रशंसा करने पर।

—ओछी हरकतों के बावजूद बड़े व्यक्तियों की खुशामद करने वालों पर कटाक्ष।

वारूं तौ सौ गज, फाडूं नीं अेक गज। १३१०७

वारूँ तो सौ गज, फाड़ूँ नही एक गज।

—जो व्यक्ति बातें तो बहुत ऊँची-ऊँची बनाये पर काम किसी के न आये।

—उदारता की डींग मारने वाला व्यक्ति जो काम पड़ने पर मुँह भी नहीं दिखाये।

वा' रे म्हारा वीर, रांधी राब अर व्हैगी खीर। १३१०८

वाह रे मेरे बीर, राँधी राब और हो गई खीर।

वीर = बीर, भाई।

राब = बाजरी, ज्वार या मकई आदि के आटे को छाछ में पकाकर बनाया जाने वाला अति सामान्य पेय-पदार्थ। इससे गरीबों का पेट जस-तस भर जाता है।

—बहिन के अंतस् में भाई के आने की ऐसी उत्कृष्ट खुशी होती है कि गरीबी की मजबूरी के कारण चूल्हे पर राब की हँड़िया चढ़ाई और उसमें खीर पक आई। प्यार का करिश्मा कुछ भी हो सकता है।

—भाई के प्रति बहिन के अगाध प्रेम की निर्मल अभिव्यक्ति इस कहावत में चरितार्थ हुई है।

वारौवार चांनणी रातां को आवै नीं। १३१०९

वार-दर-वार चाँदनी राते नही आती।

—सुख-शांति व आनंद के दिन हमेशा नहीं रहते, इसलिए आदमी को ऐश्वर्य की चाँदनी देखकर इतराना नहीं चाहिए। पूनम के बाद अमावस तो आती ही है।

—मनुष्य को चाहिए कि अपने सुखमय जीवन की वेला दुखियारों को याद करना नहीं भूले।

वाळियोड़ौ खत। १३११०

खारिज खाता।

—जिस तरह बही में खारिज खाते का महत्त्व नहीं रहता, उसी तरह बुढ़ापे में आदमी का महत्त्व नहीं रहता।

—जिस संपन्न व्यक्ति की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई हो। खारिज खाते की नाईं उसकी भी कहीं पूछ नहीं होती।

—जो पुरुष असमय में ही नपुंसक हो गया हो।

वाळौ, घर रुखाळौ, सुख पूछण नै साळौ। १३१११

नारू घर का रखवाला, सुख पूछने को साला।

वाळौ = मनुष्य के शरीर पर होने वाला एक रोग-विशेष जो, पहिले फुनसियों के रूप में दिखाई देता है और उससे सफेद तंतु जैसा महीनतम कीड़ा निकलता है जो सूत के आकार का होता है। वह बढ़ते-बढ़ते कई हाथ तक लंबा हो जाता है। बीच में टूट जाय तो बहुत तकलीफ देता है। यदि घुटनों के बीच टूट जाय तो भयंकर दर्द होता है। पॉव अकड़ जाता है। बहुत समय तक बिस्तर में पड़े रहना पड़ता है। तालाब के पानी से यह रोग होता है। आजकल नई व्यवस्था के कारण गाँवों में तालाब का पानी अब पीने के काम नहीं आता। अतएव यह रोग बहुत ही कम हो गया है—नहीं के बराबर।

—नारू रोग से पीड़ित व्यक्ति घर में रहने के कारण घर की रखवाली कर लेता है। साले या अन्य ससुराल वाले सुख पूछने आते हैं।

—अपना कष्ट अपने को ही भोगना पड़ता है, दूसरे लोग उसमें हाथ नही बॅटा सकते।

वाल्हौ कांम, न वाल्हौ चांम। १३११२

प्यारा काम, न प्यारी चाम।

—जो व्यक्ति काम करे वही प्रिय होता है, गोरी-साँवली चमड़ी की दुहाई यहाॅ नहीं चलती।

—जो सुंदर औरत नाज-नखरों में काम करना भूल जाती है, वह किसे भी अच्छी नहीं लगती।

—खून के रिश्ते की बजाय, काम करने वाले कर्मठ व्यक्ति का मान अधिक होता है, चाहे वह नौकर ही क्यों न हो।

मि.क.सं.४२९४

वावळ बाजै जद काकड़ा ई उड जावै। १३११३

ऑधी आने पर पेड़ भी उड़ जाते हैं।

—परिवर्तन की ऑधी चलती है तो बड़े-बड़े महारथी उड़ जाते हैं।

—परिवर्तन की ऑधी ऐसी विचित्र होती है कि वह हाथियों को उड़ा ले जाती है पर चींटी को बचा लेती है।

वाव सुरायां मोटा नीं बाजै। १३११४

पादने से कोई बडा नही बन जाता।

—अमूमन बड़े आदमी आम लोगों के बीच धड़ल्ले से पाद लेते हैं, पर छोटे आदमी को संकोच होता है। पर पादने से ही कोई बड़ा आदमी नहीं बन जाता।

—बड़े आदमियों के व्यसन अपनाने से कोई बड़ा आदमी नहीं हो जाता।

वावै कठै ई अर ऊगै कठै ई। १३११५

बोये कहीं और उगे कहीं।

—जरूरत मे ज्यादा होशियार व्यक्ति की बात का सुराग पाना आसान नहीं है, वह बोता कहीं है और उगता कहीं है।

—धूर्त व्यक्ति अपने कारनामों का पता किसे भी नही लगने देते।

वावैला सौ पावैला। १३११६

बोयेगा सो पायेगा।

—जो परिश्रम करता है उसे ही पारिश्रमिक मिलता है।

—कर्ता ही फल का अधिकारी होता है।

पाठा : वावै सो ई लूणै।

वावौ कण, होवै मण। १३११७

बोओ कन, उपजे मन।

—खेती करने में ऐसा विचित्र लाभ है कि एक दाना बोने पर सहस्र दाने हाथ लगते हैं।

—कृषि के काम की श्रेष्ठता प्रमाणित करने के लिए ही इस कहावत का आशय है कि उत्तम खेती, मध्यम बान, अधम चाकरी, भीख निदान।

वासकजी मर्‌या जणा परड़ बाई पाटै बिराज्या। १३११८

वासुकि नाग मरा तब परड बाई गद्‌दी पर बैठी।

परड़ = एक प्रकार का साँप, जो काफी जहरीला होता है।

—एक दुष्ट के मरने पर दूसरा दुष्ट सामने आ जाय, तब...।

—आजकल की राजनीति में जो घिनौनी परंपरा पैदा हो रही है, उसके लिए ये पुरानी उक्तियाँ ज्यादा प्रासंगिक हैं कि एक पार्टी का पराभव होने पर जो नई पार्टी सत्ता में आ रही है वह वासुकि नाग के मरने पर परड़ बाई को सिहासन सौंपने जैसी ही बात है।

वासग नाग पंयाळ ऊतरै तौ बोगियां ई फुण करै। १३११९

वासुकि नाग पाताल में जाय तो बोगियाँ भी फन करने लगती हैं।

बोगी = दुमुँहा साँप जो फन नहीं कर सकता और काटता भी नहीं। पर चूहों को खूब निगलता है।

—बड़े आतंकवादी के मरने पर जब छोटे-मोटे उचक्के सिर उठाने लगें, तब...।

—बड़े नेता का पराभव होने पर जब उसके अनुयायी उत्पात करने लगें तब...।

वासदी कनै सोर नीं खटै। १३१२०

आग के पास बारूद नहीं टिकता।

—कुँआरी किशोरी को पुरुष के संसर्ग से दूर रहना चाहिए वरना आग और बारूद के मेल जैसा ही घातक परिणाम होता है।

—जिन वस्तुओं के मेल से प्राणघाती परिणाम होता हो, उन्हें दूर ही रखना चाहिए।

वासदी खासी वौ खीरा हंगसी। १३१२१

अग्नि खायेगा वह अंगार हँगेगा।

—जो बुरे काम करेगा, वही उसके दुष्परिणाम भोगेगा।

—जो अपराध करेगा, वही सजा पायेगा।

—ऐसी ही एक मिलती-जुलती कहावत है—जो कोयले खाएगा, उसीका मुँह काला होगा।

वासदी गोडै घी नीं खटै। १३१२२

आग के पास घी नही टिकता।

—पुरुष और स्त्री का साहचर्य आग और घी जैसा ही है, दूर रहने पर ही इनका अस्तित्व खतरे से बच सकता है।

—जहाँ तक संभव हो, पुरुष और स्त्री का मेलजोल नहीं होना चाहिए। शास्त्रों के अलावा लोक-बुद्धि का भी यही निचोड़ है।

वासदी टाळ धूंवौ नीं। १३१२३

अग्नि के बिना धूआँ नहीं।

—यदि चिनगारी जितनी भी सच्चाई न हो तो अफवाहों का धूआँ नहीं फैलता।

—कारण के अभाव में कोई कार्य घटित नहीं हो सकता ।

—अफवाहें सर्वथा निराधार नहीं होतीं ।

वासदी नै रोजीना आवै , पण छांणौ कदै ई नीं लावै । १३१२४

आग के लिए हमेशा आये, पर उपला कभी नहीं लाये ।

—मुफ्तखोरों की ऐसी ही आदत पड़ जाती है कि वे वापस किसी के कुछ भी काम नहीं आते ।

—मुफ्तखोरों पर तीखा कटाक्ष ।

वासदी रौ नांव लियां मूंडौ नीं दाझै । १३१२५

आग का नाम लेने से मुँह नहीं जलता ।

—किसी पदार्थ का नाम लेने मात्र से उसका प्रभाव प्रकट नहीं होता । रोटी खाने से पेट भरता है,रोटी का बार-बार नाम लेने से नहीं ।

—पदार्थ ही सत्य है,उसके नाम में अंश मात्र भी सच्चाई नहीं होती ।

वासी भातौ अर रुगट खायां पेट नीं भरीजै । १३१२६

बासी रोटियाँ और बेईमानी से पेट नहीं भरता ।

—जिस तरह बासी भोजन से तृप्ति नहीं होती,उसी प्रकार बेईमानी करने से भी पेट नही भरता ।

—आदमी को चाहिए कि वह निष्ठारत होकर ईमानदारी से काम करे ।

वाह रे मारवाड़ ! म्हां ईं डीकरा बाज्या ! १३१२७

वाह रे मारवाड़ ! हम भी 'डीकरे' कहलाये !

डीकरौ = बेटा,पुत्र ।

—पश्चिमी राजस्थान में पुत्र के लिए 'डीकरा' शब्द प्रचलित है । इसी शब्द के अनोखेपन से मारवाड़ के प्रति आभार प्रकट करते हुए यहाँ के बाशिंदे परिहास के भाव से कहते हैं कि वे थे तो पुत्र या बेटे ही पर उन्हें 'डीकरा' बनना पड़ा ।

वाह रे म्हारा देव , रांधी बड़ियां अर बणगी सेव । १३१२८

वाह रे मेरे देव, राँधी मुँगेड़ी और बन गई सेव ।

—गलती करने पर भी कोई बात सुधर जाय,तब... ।

—कभी-कभार उलटा पासा भी सीधा पड़ जाता है ।

वाह रे वाह मियां बांका, डगली में सौ-सौ टांका। १३१२९

वाह रे वाह मियाँ बाँके, फतूही में सौ-सौ टाँके।

—अभावग्रस्त होते हुए भी जो व्यक्ति खामखाह ऐंठ दिखाये।

—जो व्यक्ति अपनी औकात भूलकर बड़ी-बड़ी बातें बघारे।

वा ही हळदी-फळदी, म्हैं हूं सठवा सूंठ। १३१३०

वह थी हलदी-फलदी, मैं हूँ सठवा सोंठ।

—बच्चों की एक कथा में हलदी और सोंठ दो सगी बहिनें थी। हलदी थी बहुत ही विनम्र, उदार, संवेदनशील और परिश्रमी। और इसके विपरीत सोंठ थी अक्खड़, अहंकारी, मुँहफट और कामचोर। हलदी जहाँ भी गई सबने उसे प्यार किया, सम्मान दिया और उसे कई पुरस्कार भी दिये। हलदी ठाट से लौटी तो डाह वश सोंठ भी यात्रा पर निकल पड़ी। लेकिन उसकी थोथी हेकड़ी से सभी बेहद नाराज हुए, उसे काफी प्रताड़ना मिली। उसका सब जगह तिरस्कार हुआ। वह मुँह लटकाकर लौटी। चूल्हे ने जहाँ हलदी को हीरे-मोती दिये थे, वहाँ सोंठ का मुँह उसने राख से भर दिया।

—विनम्रता से ही कुछ प्राप्त किया जा सकता है, अक्खड़ से नहीं।

विं-व्है

विंधग्या सो मोती अर अणविंध्या कांकरा। १३१३१

विंध गये सो मोती और अनबिंधे कंकर।

—जिन्होंने कष्ट पाया वे मोती बन गये और जिन्होंने कष्ट नहीं पाया वे कंकर ही रह गये।

—जो मनुष्य कष्ट से गुजरे, वे तो सफल हो गये और जो मनुष्य कष्ट से नहीं गुजरे वे काहिल ही रह गये।

विख घोळै विसूंदरी घोळै ज्यूं। १३१३२

विष घोले छिपकली की नाई।

—जो व्यक्ति छिपकली की नाई दूसरों को नुकसान पहुँचाने की ताक में हो।

—जो व्यक्ति स्वभाव से जहरीला हो।

विख बिना सांप नीं, दांत बिना हाकम नीं। १३१३३

विष बिना साँप नहीं, दाँत बिना हाकिम नहीं।

—जहर न हो तो साँप से कोई नहीं डरता, बच्चे गले में डालकर घूमें। ठीक यही स्थिति हाकिम या अधिकारियों की है जो सख्त नहीं होते उनकी कोई परवाह नहीं करता।

—अधिकारी सक्षम और शक्तिशाली चाहिए। दंतहीन अधिकारी जो काट नहीं सकता, उसकी सब अवज्ञा करते हैं।

विखायत तौ ई खींवरौ। १३१३४

दुख के बावजूद खींवरा है।

दे.क.सं.२८०५

पूरा दोहा इस प्रकार है :

गूदळियौ तौ ई गंगजळ, सांकळियौ तौ ई सीह ।

विखायत तौ ई खीवरौ, खांखळियौ तौ ई दीह ॥

विखौ तौ दुस्मण रौ ई चोखौ नीं व्है । १३१३५

दुख तो दुश्मन का भी अच्छा नही होता ।

—जिस दुख से स्वयं को तकलीफ होती है,उसकी कामना दुश्मन के लिए भी करना उचित नही ।

—दूसरों की देह में भी अपना स्वरूप समझना चाहिए । जो अपने लिए सुखद नहीं,वह किसी के लिए भी सुखद नहीं हो सकता ।

—ईश्वर दुनिया में किसी को भी कष्ट नही दे ।

विखौ तौ दुस्मण रौ ई चोखौ व्है । १३१३६

दुख तो दुश्मन का ही अच्छा होता है ।

—दुख या कष्ट परिजन या मित्रों की बजाय दुश्मन को सहना पड़े तो अच्छा है । .

—दुश्मन के लिए तो हमेशा बुरी कामना ही की जाती है ।

विखौ पड़्यां ईं मिंत री पारख व्है । १३१३७

दुख पड़ने पर ही मित्र की पहिचान होती है ।

—जरूरत पड़ने पर ही अपनों की पहिचान होती है ।

—दुख में काम न आये वह मित्र या आत्मीय किस काम का ?

—तुलसी बाबा ने भी पुरजोर शब्दों में यही बात कही है :

आपत काल परखिये चारि ।

धीरज, धरम, मित्र अरु नारि ॥

विचार नै मार है । १३१३८

विचार को मार है ।

—जो समझदार है उसे ही दुख पहुँचता है । मूर्ख व्यक्ति अप्रभावित रहता है ।

—जो विचारशील है, वही चिंतित होता है, गँवार को किसी से कोई वास्ता नहीं होता।

—राजस्थानी में ऐसी ही दूसरी कहावत है—सेठां दुखी क्यूं के समझां जिण सूं। सेठजी दुखी क्यों हो कि समझते हैं, इसलिए।

विणठौ बांणीयौ, भिसटे बखांणीयौ।—व.१९६ १३१३९

खराब बनिया, विष्ठे के समान है।

—बनिया यों भी वह क्रूर, संवेदनहीन और निपट स्वार्थी होता है, तिस पर वह बिगड़ैल हो तो उससे विष्ठे की नाईं दूर रहना चाहिए, वह अछूत है।

—जहाँ तक संभव हो बिगड़ैल बनिये से दूर रहना ही लाभप्रद है।

विणास री वेळा अंवळी बुध। १३१४०

विनाश की वेला विपरीत बुद्धि।

—इसी आशय की एक राजस्थानी कहावत और है कि—दई न मारे डांग सूं, दई कुमत्तां देय। ईश्वर लाठी से प्रहार नहीं करता, वह फकत कुमति उत्पन्न कर देता है, जिससे मनुष्य स्वयं अपनी मौत मर जाता है।

—विनाश कोई दूसरा नहीं करता, खुद मनुष्य की बुद्धि ही विनाश के पहिले खराब हो जाती है—विनाश काले विपरीत बुद्धिः।

विधना रा आंक कुण मेटण हारौ ? १३१४१

विधाता के अंक कौन मिटाने वाला ?

—भाग्यवादियों की मान्यता के अनुसार हर व्यक्ति का भाग्य पहिले से ही निर्धारित होता है और उसीके अनुसार वह अपने कर्मों को भोगता है। इसे कोई मिटा नहीं सकता।

—मनुष्य तो निमित्त मात्र है, जो उसके भाग्य में लिखा है, वही उसे भोगना पड़ता है।

विद्या आडी वींदणी, उद्यम आडी अैस। १३१४२

विद्या आड़ी बहू, उद्यम आड़ा ऐश।

—केवल धारणा ही नहीं, इसमें बहुत-कुछ सच्चाई है कि विवाह होने के बाद विद्यार्थी आगे पढ़ नहीं सकता। दुलहन का चक्कर ही ऐसा होता है कि उससे मन हटे तो पति का मन पढ़ने में लगे।

—जिस तरह दुलहन पढने में आड़े आती है,उसी तरह आराम और ऐश उद्यम के आड़े आते हैं। ऐश करने वाला उद्यम के लिए समय नहीं निकाल पाता,उल्टे मेहनत से कतराता है।

विद्या कंठी, नांणौ अंटी। १३१४३

विद्या कंठ मे, रोकड़ अंट मे।

दे.क.सं.७२६३

पाठा : विद्या कंठै, नांणौ अंटै।

विद्या किसी घोळनै पाईजै। १३१४४

विद्या घोलकर थोड़े ही पिलाई जाती है।

—विद्या तो अपनी बुद्धि, अपनी मेहनत और अपनी लगन से ही आती है, उसे पानी मे शर्बत की तरह घोलकर नहीं पिलाया जाता।

—विद्या अपने पुरुषार्थ से ही प्राप्त होती है, किसी दूसरे के दवारा थोपी नही जाती।

विपदा बराबर सुख नहीं, जे गिणिया दिन होय। १३१४५

विपदा बराबर सुख नही, जो थोड़े दिन होय।

—थोड़े दिन के लिए विपत्ति आये तो वह बड़ी नियामत के रूप में माबित होती है, उससे आदमी की बुद्धि निखर जाती है, उसका मनोबल बढ़ता है।

पूरी उक्ति इस प्रकार है .

विपदा बराबर सुख नही, जे गिणिया दिन होय।
दुष्ट, मित्र, भ्रात, वधु, जाण पड़ सब कोय॥

विपदा तूटी भली, बिरखा वूठी भली। १३१४६

विपदा टूटी भली, बारिश बरसी भली।

—कुछ चीजों का अभाव कल्याणकारी होता है और कुछ चीजों का सान्निध्य मागलिक होता है। मसलन दुख और विपत्ति का अभाव मुखद होना है और बरसात का सान्निध्य लाभप्रद होता है।

विभीसण बिना भेद कुण बतावै? १३१४७

विभीषण के बिना भेद कौन बताये?

—घर का भेदी दुश्मन के साथ नहीं जुड़ता तो लंका का विनाश असंभव था।

—घर की फूट से ही घर बर्बाद होता है।

विरमाजी री घड़ी मोटी है। १३१४८

ब्रह्माजी की घड़ी मोटी है।

—ब्रह्माजी का एक दिन चार चौकड़ी के बराबर होता है। एक चौकड़ी चार युगों के बराबर मानी जाती है, ऐसी लोक धारणा है।

—ब्रह्मा के समय की तुलना में मनुष्य के समय का कुछ अर्थ ही नहीं है।

विलायत में किसा गधा को हुवै नीं! १३१४९

विलायत मे गधे नही होते क्या!

—विलायत में सभी विद्वान हों, यह जरूरी नहीं है। वहाँ भी मूर्ख और गँवार बसते हैं।

—अच्छे-बुरे व्यक्ति सब जगह होते हैं।

विस केवटै सो विस खाय। १३१५०

विष का काम करने वाले विष खाते हैं।

—सीमेंट की फैक्ट्री के मजदूरों के पेट में सीमेंट जाती है, आटे की चक्की वालों के पेट में आटा और कोयलों की खान में काम करने वालों के पेट में कोयला पहुँचता ही है उसी प्रकार विष की सार-सँभाल करने वाले जाने-अजाने विष का भक्षण करते ही हैं।

—विष की सार-सँभाल करने वाले ही विष को पचाने की क्षमता रखते हैं।

—खतरा झेलने वाला ही खतरों का सामना कर सकता है।

विसवास आपरी छियां रौ ई नीं। १३१५१

विश्वास अपनी छाया का भी नही।

—उस सशंकित आदमी के लिए जो दूसरों का तो क्या स्वयं अपनी छाया का भी विश्वास न करे।

—यों सामान्यतया लोग ऐसा भी कहते हैं कि दुनिया में किसी का भी विश्वास नहीं करना चाहिए क्योंकि मनुष्य की दुनिया विश्वास के योग्य है भी नहीं।

विसवासघाती महापापी। १३१५२

विश्वासघाती महापापी।

—यों तो मानवीय संसार में कई किस्म के पापी होते हैं, पर इनमें महापापी फकत विश्वासघाती को ही माना है।

—विश्वासघात से बढ़कर कोई पाप नहीं है।

विसवास तौ डील रै गाभां रौ ई नीं करणौ। १३१५३

विश्वास तो शरीर के वस्त्रों का भी नहीं करना चाहिए।

—खराब समय आने पर शरीर के कपड़े ही बैरी बन जाते हैं, फिर किस पर भरोसा किया जाय।

—बेटा, भाई, बाप और मित्र-किसी का भी भरोसा नहीं करना चाहिए। मनुष्य नाम का प्राणी विश्वास के योग्य है ही नहीं।

विसवास देयनै गळौ वाढ़ियौ। १३१५४

विश्वास देकर गला काटा।

—खुल्लमखुल्ला दुश्मनी न करके जो व्यक्ति विश्वास देकर गला काटे।

—धोखे से मारना बहुत बड़ा अपराध है।

विसवास पाकै। १३१५५

विश्वास पकता है।

—दुनिया में हर काम विश्वास से ही संपन्न होता है।

—दुनिया में एक-दूसरे पर विश्वास किये बिना काम ही नहीं चल सकता।

विसवास रै पांण गाडौ चालै। १३१५६

विश्वास के सहारे गाड़ी चलती है।

—बैलों और पहियों के सहारे गाड़ी नहीं चलती, विश्वास के सहारे चलती है।

—दुनिया का सारा कार्य-व्यापार विश्वास के बल पर क्रियान्वित होता है।

विसवास सूं मतीरौ पाकै। १३१५७

विश्वास से तरबूज पकता है।

—पतली व नाजुक बेल पर इतना बड़ा फल केवल विश्वास के आसरे ही फलता है।

—जच्चा के गर्भ में नौ महीने तक बच्चा विश्वास के आधार पर ही जीवित रहता है।

वींटोरा तौ उडै अर पा'यां रा लेखा लेवै। १३१५८

भींटोरे तो उड़ें और पाहियों का हिसाब माँगे।

दे.क.सं.१०१६८

वींद अणूंतौ रूपाळौ पण नाक फींडौ। १३१५९

दामाद बेहद खूबसूरत पर नाक चपटा।

—मामूली चूक बताकर पूरा काम बिगाड़ देना।

—साफ न कहकर अप्रत्यक्ष रूप से किसी काम में अड़ंगा लगा देना।

पाठा : वींद रूपाळौ तौ घणौ पण नाक फींडौ।

वींदणियां घर केवटलै तौ सासवां नै कुण बूझै? १३१६०

बहुएँ घर सँभाल लें तो सासुओं को कौन पूछे?

—क्षमता की अपनी सीमाएँ हैं और अनुभव की अपनी अहामयत है। अनुभव की सर्वत्र पूछ इसीलिए होती है कि अनुभव के बिना कोई काम संपन्न नहीं हो सकता।

दे.क.सं. ५५७४, ५५७५

वींदणी इग्यारस करसी के म्हैं तौ टाबर हूं। वींदणी सगार लैसी के? आप फरमावौ तौ लेलैस्यूं, इतरौ पुन्न तौ म्हैं ई करल्यूं! १३१६१

बहू, एकादशी करेगी कि मैं तो बच्ची हूँ! बहू, सगार लेगी कि आप फरमाएँ तो ले लूँगी, इतना पुण्य तो मैं भी अर्जित कर लूँगी!

—बच्चा भी अपने स्वार्थ में अच्छी तरह समझता है।

—यह मनुष्य का स्वभाव है कि वह तकलीफ से बचना चाहता है कि और सुख-प्रद काम के लिए पहल करता है।

वींदणी फूठरी तौ घणी पण आंख में फूलौ। १३१६२

बहू खूबसूरत तो काफी है, पर आँख में फूली।

दे.क.सं.१३१५९

वींदणी रै पेडू में पीड़ अर सासू नै पोता री पड़ी। १३१६३

बहू के उपस्थ में पीड़ा और सास को पोते की चाह।

दे.क.सं.८८६३

वींद नै कुण बखांणै के वींद री मां ! १३१६४

दूल्हे को कौन बखाने कि दूल्हे की माँ !

—माँ को तो अपने बच्चों की बुराइयाँ भी नजर नहीं आतीं,तब उसकी सराहना का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

—घरवालों की प्रशंसा से बच्चे योग्य नहीं हो जाते।

—जो व्यक्ति अपने घरवालों की प्रशंसा करता रहे,उसके लिए।

पाठा : **वीद नै बखांणै वीद री मां !**

वींद नै साथरौ , तरां जांनीयां नै आंगणौ।–व.५४ १३१६५

दूल्हे को चटाई तो बरातियों को आँगन।

साथरौ = कुश की बनी चटाई,तृण-शैया।

—जब दूल्हे को ही चटाई मिली तो बारातियों को आँगन ही नसीब होगा।

—अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार ही सत्कार होता है।

वींद नै सूधै घोड़ै चढ़ावै। १३१६६

दूल्हे को सीधे घोड़े पर चढ़ाते हैं।

—प्रत्येक दूल्हा घुड़सवार तो होता नहीं,उसे तो विवाह की रस्म निभाने के लिए घोडे पर बैठना होता है,इसलिए सीधे घोड़े को ही लाया जाता है।

—अपनों के लिए किसी भी प्रकार का खतरा मोल लेना उचित नहीं।

वींद पगल्या भरै। १३१६७

दूल्हे की तरह चले।

—विवाह में चलने का जब भी काम पड़ता है,दूल्हा शालीनता के नाते धीरे धीरे ही कदम भरता है।

—जरूरी और तत्परता के काम में भी जो व्यक्ति धीरे-धीरे चले उसके लिए।

वींद बिना कैड़ी जांन, सासू बिना कैड़ौ सासरौ ! १३१६८

दूल्हे के बिना कैसी बरात, सास के बिना कैसा ससुराल !

—किसी भी संगठन का अपने मुखिया के पीछे ही महत्त्व होता है। मुखिया के अभाव में कोई भी संगठन बिखर जाता है।

—हर वस्तु अपनी सापेक्षता में ही सुंदर लगती है।

—अपनों के बीच रहने में ही शोभा है।

वींद बिना री जांन। १३१६९

बिना दूल्हे की बारात।

—जिस तरह दूल्हे के बिना बारात का कोई महत्त्व नहीं है, उसी प्रकार मुखिया के अभाव में अनुयायियों का भी कोई महत्त्व नहीं होता।

—डोर के बिना पतंग आकाश में नहीं उड़ सकती।

—अव्यवस्थित संगठन पर कटाक्ष।

वींद मरौ के वींदणी मरौ बांमण रौ टकौ खरौ। १३१७०

दूल्हा मरे कि दुलहन मरे, ब्रामन का टका तैयार।

दे.क.सं.१२७२३

वींदराजा सूं मोटौ तौ रांम है। १३१७१

दूल्हे से बड़ा तो राम है।

संदर्भ-कथा : एक बूढ़े दूल्हे की बारात में सभी उससे उम्र में छोटे थे। कुँअर कलेवे की रस्म-अदायगी के वेला ससुराल पक्ष वालों ने कहा कि दूल्हे से बड़े बाराती मेहरबानी करके बाहर ही रहें, जो छोटे हों वे भीतर पधारें। तब एक बाराती ने परिहास करते कहा, 'दूल्हे से बड़ा तो राम है। उसे बुला सकते हों तो बुलालो।' तब ससुराल वाले क्या जवाब देते ! सभी बाराती दूल्हे के साथ भीतर घुस पड़े। दूल्हे ने शर्म के मारे सिर नीचे कर लिया।

—अनमेल विवाह पर कटाक्ष।

वींद रै तौ कीं भायका ई कोनीं अर जांनिया लूय-लूय पड़ै। १३१७२

दूल्हे को तो कुछ दिलचस्पी ही नहीं और बाराती हुलस-हुलस पड़ें।

—जब दूल्हे का मन ही कुंद है तो बाराती क्या उत्साह दिखाएँ ?

—जब नेता में ही योग्यता नहीं है तो अनुयायियों का उत्साह भी ठंडा पड़ जाता है ।

—जब प्रमुख में ही शक्ति न हो तो सहायक क्या सहायता कर सकते हैं ?

वींद रै मुंह लाळां पड़ै तौ जांनीया कांई करै !–व.४६ १३१७३

दूल्हे के मुँह में लार पड़े तो बाराती क्या करें !

—जब सेनापति ही कायर हो तो सैनिक अपनी वीरता कैसे दिखाएँ !

—जब मुखिया कमजोर और नाकाबिल हो तो अनुयायी भला क्या कर सकते हैं ?

—ढुलमुल नेता किसी भी संगठन को नहीं सँभाल सकता ।

पाठा : **वींद रै मूंडै लाळां पड़ै तौ जांनिया बापड़ा कांई करै ?**

वींद रै लारै ई जांन चढ़ै । १३१७४

दूल्हे के कारण ही बारात चढ़ती है ।

—किसी भी संगठन का महत्त्व मुखिया की योग्यता पर निर्भर करता है ।

—योग्य नेता की वजह से ही अनुयायियों में उत्साह रहता है ।

वींद-वींदणी जोड़ै-तोड़ै, लै पंसेरी माथौ फोड़ै । १३१७५

दूल्हा-दुलहन एक समान, ले पंसेरी फोड़ें कपाल ।

—जब दो मित्र, भाई या नेता एक-से-एक बढ़कर दुष्ट और विरोधी हों । एक दूसरे को नीचा दिखाना चाहते हों ।

—दो बेहूदा व्यक्तियों की जोड़ी पर कटाक्ष ।

वींद-वींदणी सावधांन, घर में नहीं पाव धांन । १३१७६

दूल्हा-दुलहन सावधान, घर में नहीं पाव धान ।

—गरीब माँ-बाप के लड़के जब ब्याह कर आते हैं तो उन्हें जीवन-निर्वाह के लिए बड़ा संघर्ष करना पड़ता है । उन्हें कदम-कदम पर सतर्क रहने की जरूरत पड़ती है ।

—जो गाफिल दंपती अभावग्रस्त होने पर भी सँभलने की चेष्टा न करे ।

वींद वींदणी सूं राजी, जांनिया जीमण सूं राजी । १३१७७

दूल्हा दुलहन से राजी, बराती भोजन से राजी ।

—हर व्यक्ति की अपनी रुचि और अपना स्वार्थ होता है,जिसकी पूर्ति होने पर वह संतुष्ट हो जाता है।

—हर व्यक्ति की खुशी का अपना ही दायरा होता है,जिसकी परिपूर्ति के लिए ही वह आतुर रहता है।

वींद, वींद रौ भाई अर तीजौ नाई, चौथौ आई तौ धक्का खा'ई। १३१७८

दूल्हा, दूल्हे का भाई और तीसरा नाई, चौथा आएगा तो धक्के खाएगा।

—जो व्यक्ति अपनी स्वार्थ-पूर्ति के अलावा किसी और का कतई ध्यान नहीं रखे।

—जो व्यक्ति अधिकार प्राप्त होने पर अपनों-अपनों को ही फायदा पहुँचाये।

पाठा : **वींद, वींद रौ भाई, तीजौ बांमण, चौथौ नाई।**

वीखै जकौ सीखै। १३१७९

जो चलता है, वह सीखता है।

—कदम के लिए राजस्थानी में 'वीख' शब्द है। जो कदम बढ़ाकर चलता है, वही सीखता है।

—जो व्यक्ति भ्रमण करता है,उसका अनुभव समृद्ध होता है। नये-नये अनुभव उसमें निरंतर ज्ञान का संचार करते हैं।

वीणती आपरै हाथै, करणौ रांम रै हाथै। १३१८०

विनती अपने हाथ, करना राम के हाथ।

दे.क.स.१८७०,९७४५

वीती सौ वेद।–व.३३७ १३१८१

बीते सो वैद्य।

दे.क.स.९५०४

वीते देस नो मूंडय्यो है, कणांओ नी आई करे।–भी.७४४ १३१८२

वह तो देश भर का मूँड़ा हुआ है, किसी से हार नही मानता।

—अत्यधिक धूर्त व्यक्ति के लिए जिसने अनेक चालाक गुरुओं से दीक्षा ली हो, भला वह किसकी परवाह करेगा।

—महा-धूर्त व्यक्ति पर कटाक्ष जो किसी से नहीं डरता हो ।

वीरा कांचळी सींव जांणै के म्हारौ नांव ई कांचळियौ । १३१८३

भैया कॉचली सीना जानते हो कि मेरा नाम ही कॉचलिया है ।

दे क.सं.६३६५

वीरा देवासी ! म्हारी बकरी ब्याई के बाई म्हांरै तौ टोळा-रा-टोळा ब्यावै । १३१८४

देवासी बीर ! मेरी बकरी ब्याई कि बहिना हमारे तो झुंड-के-झुंड ब्याते है ।

देवासी = गडरिये के लिए आदर सूचक संबोधन ।

—गडरिये के पास सैकडो भेड-बकरियाँ होती हैं । ब्याती भी अनेक हैं । यदि किसी ने उसके रेवड़ में चराने के लिए भेड या बकरी सौंपी हो,उसकी पहिचान तो मालिक ही कर सकता है । पूछताछ करने पर गडरिया सही जवाब नहीं दे सकता ।

—जिसके पास एक ही किम्म का ढेर सारा कामं हो, सही हवाला बताये बिना वह पुख्ता जानकारी देने मे असमर्थ हैं ।

वीरा रै नीं बळदियौ अर बाई रै नीं भतवार । १३१८५

भाई के नही बैल और बहिन के नही भतवार ।

भतवार = खेत पर भोजन ले जाने वाली स्त्री ।

—जब दो व्यक्ति समान रूप से अभाव-ग्रस्त हों तो उनके पास जरूरत मुताबिक साधन या व्यवस्था क्योंकर हो सकती है ?

—जिन साधन-रहित गरीब व्यक्तियों की समान स्थिति हो ।

वीरा रौ जुहार रह्यौ नै बाई री आसीस रही । १३१८६

भाई का जुहार रहा और बहिन की असीस रही ।

—जब दो मित्र या रिश्तेदारों में वैमनस्य हो जाय तो सामान्य शिष्टाचार भी समाप्त हो जाता है ।

—असहाय अवस्था में जब मित्र या रिश्तेदार परस्पर एक दूसरे को सहयोग नही दे सकें, तब... ।

वीरा रौ सिधावणौ बाई रै हाथ। १३१८७

भाई की विदाई बहिन के हाथ।

—बहिन भाई का कितने दिन आदर-सत्कार कर सकती है, यह उसकी क्षमता और प्यार पर निर्भर करता है।

—जब कोई व्यक्ति स्वतंत्र निर्णय लेने में असमर्थ या मजबूर हो।

वीरौ आयौ परकै भोळै, बाई बैठी लपटौ घोळै। १३१८८

भाई आया पिछली आस, बाई बैठी भरे निसास।

लपटौ = बाजरी के आटे को सेककर बनाया गया तरल पेय पदार्थ।

—पिछले वर्ष अच्छी बरसात हुई तो किसी एक बहिन ने अपने भाई का मन-वांछित आदर-सत्कार किया। पर अगले वर्ष भयंकर अकाल पड़ा तो बहिन की हालत बहुत खस्ता हो गई। किंतु भाई पिछले वर्ष के भरोसे बहिन के घर आया तो वह लपटा घोल रही थी। जब बहिन के लिए भी खाने के लाले पड़ने-लगे तो वह भाई का पहिले जैसा सत्कार क्योंकर कर सकती थी। भाई को बड़ी हताशा हुई।

—जब किसी पिछले संदर्भ की आशा के प्रतिकूल निराशा झेलनी पड़े, तब...।

वीरौ आयौ बाई हंसी, देग्यौ साठ अर लेयग्यौ अस्सी। १३१८९

भाई आया बाई हँसी, दे गया साठ और ले गया अस्सी।

—अकस्मात् भाई के आने पर बहिन को बड़ी खुशी हुई। उसने हँसकर भाई का स्वागत किया। भाई के पास साठ रुपये थे तो उसने बहिन के पास जमा करवा दिये। किंतु जाते समय वह साठ के बदले अस्सी रुपये ले गया।

—जो व्यक्ति थोड़ा देकर अधिक हथियाले, उस पर कटाक्ष।

दे.क.सं.९५११

वीरौ छोटौ ई नर, बाई मोटी ई ढळ। १३१९०

भाई छोटा ही नर, बाई बड़ी भी बेखबर।

—पुरुष-प्रधान समाज में औरत को हमेशा प्रताड़ना सहनी पड़ती है। इस उक्ति में वही वास्तविकता उजागर हुई है कि पुरुष तो छोटा भी सक्षम और समर्थ होता है और नारी बड़ी उम्र की होने पर भी मूर्ख और असमर्थ होती है।

—औरत की अपेक्षा पुरुष हर दृष्टि से श्रेष्ठ है ।

वीरौ म्हारौ धोरै-धोरै साथ ।—व.१३४ १३१९१

बीर मेरा टीले-टीले साथ ।

—जो व्यक्ति सुख-दुख में हमेशा साथ रहे । सीधी राह में भी साथ रहे और टीलों को पार करते हुए भी साथ रहे ।

—जो व्यक्ति इतना विश्वस्त हो कि विपदा की वेला बिन बुलाये आ जाय ।

वीवाहतां किसा टोईया गिणसी ।—व.३४७ १३१९२

विवाह की वेला कितने टोहिये गिनोगे ।

टोहणौ = दर्द के स्थान की टोह लेकर उस पर बार-बार सेक करना ।

—विवाह संपूर्ण होने तक जाने कितनी अड़चनें, कितना मनमुटाव, कितने और क्या-क्या झंझट खड़े हो सकते हैं, उसका अनुमान भला कौन लगा सकता है ?

—जीवन में कदम-कदम पर कठिनाइयाँ आती हैं, जिनकी गिनती रखना संभव नहीं ।

वीवाह में गीत गावै सो साचा नहीं सगळा ।—व.३६६ १३१९३

विवाह में गीत गाये वे सभी सच नहीं होते ।

—राजस्थानी लोकगीतों में बहिन-भाई, पति-पत्नी और माँ-बेटी की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए जो कल्पनाएँ की गई हैं, वे सब वास्तविक जगत् से मेल नहीं खातीं । आधुनिक आलोचक उन्हें अतिरंजना कहकर टाल देते हैं । लेकिन कल्पना का निवास वास्तविकता की बजाय मनुष्य के मानस में रहता है ।

वूजी फलका फूठरा पोवौ के आखी ऊमर कांम औ इज कर्‌यौ । १३१९४

माँजी फुलके बहुत अच्छे बनाती हो कि सारी उम्र यही काम किया ।

—जिसका जो हुनर या धंधा है, उसमें वह स्वतः पारंगत हो जाता है, जिसकी प्रशंसा करना अधिक माने नहीं रखता ।

—अनुभव से बड़ा गुरु कोई दूसरा नहीं होता ।

पाठा : मांजी सोगरा ठावका पोवौ के नव बरस री रांड व्ही तद सूं औ इज कांम करूं ।

वूठा री बात बटावू कहै। १३१९५

वारिश की बात बटोही करते हैं।

—लोकमंगल के काम की चर्चा अपने-आप सर्वत्र फैल जाती है,किसी के द्‌वारा प्रचार करने की जरूरत नहीं पड़ती।

—लोगों की भलाई का काम किसी से छिपा नहीं रहता,बरबस होंठों पर आ ही जाता है।

वूठौ जितरौ तौ ऊंचौ नीं जावै। १३१९६

बरसा जितना तो ऊँचा नही जाता।

—बादलों से बरसा पानी कुछ तो हवा सोख लेती है और कुछ सूर्य की किरणें और धूप सोख लेती है,फिर भी उसकी अधिकांश मात्रा धरती में ही समाहित होती है।

—जो भी अर्थ-प्राप्ति हो जाय,वह अपने हित में ही है।

—उदार या महान व्यक्ति उपकार करके भूल जाते हैं,वापस कुछ भी प्रत्याशा नहीं रखते।

वूठौ बरसै मेहड़लौ, दीठौ रांचै चोर। १३१९७
वळकै आवै प्रांमणौ, हिलियौ आवै ढोर।

जहॉ मेह बरसता है वहीं वापस झड़ी लगती है, चोर देखी हुई जगह की ताक मे रहता है। जहॉ अच्छी आव-भगत होती है मेहमान वही लौटता है। एक बार चरा हुआ पशु वही चरने के लिए चक्कर काटता है।

—कोई भी प्राणी,व्यक्ति या कुदरत को परिचित स्थान से लगाव हो जाता है। वे सुविधानुसार वहीं लौटकर आते हैं।

वूढ़ा भाथड़े घाल्या।—व.२७६ १३१९८

बूढ़े भातड़े मे डाले।

भातड़ौ = खाने का सामान आदि भरने के लिए चमड़े का थैला।

—अनुभवी बूढ़ों की कद्र न करने वाले आखिर पछताते हैं।

दे.क.सं.१२६७५

पाठा : बूढ़ा भातड़ै सीवीजै।

वेंत बिगड़ जावै पण खेत नीं बिगड़ै। १३१९९

बेटे बिगड़ जाते हैं पर खेत नहीं बिगड़ता।

—खेत बिगड़ जाय तो नया खाद डालकर उसे चाहे जितनी बार सुधारा जा सकता है। वरना सारा परिवार ही भूखों मरने लग जाय। लेकिन विडंबना की बात यही है कि बिगड़ी हुई औलाद को सुधारना किसी के वश की बात नहीं है।

—प्रकृति को अनुकूल बनाना आसान है, पर मनुष्य को अनुकूल बनाना बहुत कठिन है।

वेंत भर री डावड़ी, गज भर री जीभ। १३२००

बालिश्त भर की बिटिया, गज भर लंबी जीभ।

—छोटी उम्र के बावजूद जो व्यक्ति लंबी-चौड़ी बातें बनाये उसके लिए।

—यह उक्ति पहेली के रूप में भी काम आती है। अर्थ है—सूई-डोरा। छोटी सूई और लंबा धागा।

वेंत सांधूं अर सवा हाथ तूटै। १३२०१

बालिश्त भर जोड़ता हूँ और सवा हाथ टूटती है।

—भाग्य विमुख हो तो काम सुधरने की बजाय अधिक बिगड़ता है। बित्ते भर सुधरता है तो सवा हाथ बिगड़ता है।

—अभावग्रस्त व्यक्ति का काम हमेशा बिगड़ता ही है, सुधरने की बहुत कम गुंजाइश रहती है।

वेचू ना जाब नी जाणे ने जाई ने काळा उतारे।–भी.५५४ १३२०२

बिच्छू का मंत्र नहीं जानता और काले नाग का विष उतारे।

—जो अक्षम व्यक्ति सामान्य काम करने के योग्य भी न हो और वह असाधारण काम करने की हिमाकत करे तो बड़ा अखरता है। हास्यास्पद लगता है।

—जो व्यक्ति अपनी औकात भूलकर बड़ी-बड़ी बातें बघारे। हैसियत के परे योजनाएँ बनाये, जिनका पार पड़ना कभी संभव नहीं हो पाता।

—जो व्यक्ति अपने सामर्थ्य के प्रति सदैव मुगालते में रहे।

वेठिया बाड़ कर दै के बावजी कागलौ बैठण री जेज। १३२०३

बेगारी बाड़ करदे कि हजूर कौआ बैठने की देर।

—जो व्यक्ति काम करने के लिए तत्काल हामी भरे और करे कभी नहीं। हरदम कोई-न-कोई बहाने-बाजी करके टालता रहे।

—काम-चोर व्यक्ति काम न करने का औचित्य ढूँढ़ ही लेता है।

पाठा : वेठिया वाळी बाड़।

वेड़की ब्यावतां ईं बाई रै धांमीणी मेल देवांला। १३२०४

बछिया ब्याते ही बाई को धामीणी भेज देगे।

धामीणी = पिता या भाई द्वारा पुत्री या बहिन को दी जाने वाली गाय **अथवा** भैंस।

—कब तो बछिया ब्याये और कब बिटिया के घर भेजे ?

—किसी की भलाई या उपकार के निमित्त जो व्यक्ति स्वय को मिथ्या आश्वासन देकर संतुष्ट करना चाहे।

वेदजी ! म्हैं तौ मस्यौ के अठै जीवतौ कुण बचै ? १३२०५

वैद्यजी ! मै तो मरा कि यहाँ जिदा कौन बचता है ?

—जो व्यक्ति अपनी अकुशलता के लिए ऊँचे सिद्धांत का सहारा ले।

—रोगी यह भूल जाता है कि वैद्य या हकीम बीमारी का इलाज करते हैं मौत का नहीं।

वेदजी री सूंठ सरब गुणकारी। १३२०६

वैद्यजी की सोठ राम-त्राण औषधि।

—जो व्यक्ति सर्वगुण-संपन्न होने का दावा करे और जाने कुछ भी नहीं।

—वह धूर्त व्यक्ति जो दूसरो को ठगने में काफी माहिर हो।

वेद री किसी रांड को होवै नीं ? १३२०७

वैद्य की क्या विधवा नही होती ?

—दूसरों के प्राण बचाने वाले वैद्य या हकीम स्वयं नहीं मरते क्या ? उनकी औरतों को भी वैधव्य का अभिशाप भोगना पड़ता है।

—जब बहुत चतुर व्यक्ति के हाथ से काम बिगड़ जाय, तब...।

—महाधूर्त भी कभी-कभार धोखा खा जाता है।

पाठा : वेदां रै घरवाळा किसा अमर व्है।

वेद, वकील अर वेस्या नै प्रीत पईसां री। १३२०८

वैद्य, वकील और वेश्या को पैसे की प्रीत।

—अनुप्रास अलंकार की वजह से ये तीनों ही उल्लिखित हुए हैं, अन्यथा साधु और व्यापारी सभी पैसे के लिए लालायित रहते हैं।

—इन तीनों के माध्यम से इस उक्ति का आशय इतना ही है कि मनुष्य मात्र को पैसों से जबरदस्त मोह होता है।

वेद वेद रौ बैरी। १३२०९

वैद्य वैद्य का बैरी।

—एक ही हुनर वाले व्यक्ति परस्पर डाह और वैमनस्य रखते हैं।

—एक ही धंधे वालों के बीच स्वार्थ की टकराहट होती है।

वेद, वेस्या अर वकील तीनूं ई रोकड़िया। १३२१०

वैद्य, वेश्या और वकील तीनों ही रोकड़िये।

—इन तीनों का नकद रुपयों से प्रेम होता है। जहाँ तक बन पड़े यहाँ उधार नहीं चलती।

—काम निकल जाने के बाद इन्हें किसी की याद नहीं रहती।

मि.क.सं.१३२०८

वेमाता घड़ती-घड़ती ई पांतरगी। १३२११

विधात्री घड़ते-घड़ते ही भूल गई।

—बदसूरत व्यक्ति के लिए कि विधात्री उसे घड़ते-घड़ते बीच ही में बिसर गई। अतएव हुलिया अधूरा ही रह गया।

पाठा : वेमाता घड़तां-घड़तां ई भूलगी।

वेरा में उतारनै वरत वाढ़ी। १३२१२

कुएँ में उतारकर रस्सा काटा।

—जो व्यक्ति विश्वास देकर चुपचाप धोखा करे, उसके लिए।

—धोखेबाज व्यक्ति का सपने मे भी भरोसा नही करना चाहिए।

वेरी गारे नो खोटो।– भी ७४५ १३२१३

बैरी गार का भी बुरा।

—बैरी मिट्टी का भी हो तो उस पर विश्वास नही करना चाहिए।

—शत्रु कैसी भी अवस्था मे हानि पहुँचा मकता है, इसलिए उससे हमेशा सतर्क रहना चाहिए।

वेरी वगत माते वगरो करे।– भी ७४६ १३२१४

बैरी समय पर झगडा करता है।

—दुश्मन हमेशा अवसर की ताक मे रहता है और मौका हाथ मिलते ही झगडा शुरू कर देता है।

—दुश्मन सदैव इसी टोह मे रहता है कि वह बनते हुए काम को बिगाडने मे कैसे सफल हो सकता है।

वेळा जिणरी आंण है। १३२१५

वेला जिसकी सौगध है।

—हिदू मान्यता के अनुसार दिन-रात की बत्तीस घडियों मे किसी-न-किसी देव योनि या प्रेत-योनि का प्रभाव रहता है। यात्रा की वेला कोई भी यात्री अपना मगल चाहता है,तब सबधित घडी मे जिस किसी का प्रभाव हो,वह उस अदीठ देव या प्रेत को सौगध दिलाता है कि उसकी यात्रा सुखद हो।

—जब जिस सत्ताधारी का समय हो,उसीका दबदबा स्वीकार करके चलना पडता है कि वह कामना करने वाले की भरसक सहायता करे।

वेळा ज्यांरी रिंछ्या। १३२१६

जिसका समय उसकी सुरक्षा।

दे क स ९६६४

वेळा-पुळ रा वाया मोती नीपजै। १३२१७

वेला के बोये मोती फलते है।

दे क स ८३०२,१३००९

पाठा : वेळा रा बायोड़ा मोती नीपजै। वेळा-पुळ रा मोती।

वेळा बह जासी, बातां रै जासी। १३२१८

समय बह जाएगा, बातें रह जाएँगी।

दे.क.सं.१३०१५

वेळा-वेळा री छांवळी। १३२१९

समय-समय की छाँह।

—सूर्योदय से सूर्यास्त की वेला तक पेड़-पौधों, इमारतों इत्यादि सबकी छाया बदलती रहती है। उसकी दिशा और आकार कभी समान नहीं रहते।

—छाया की भाँति मनुष्य के दिनमान व.उसका भाग्य भी बदलता रहता है। कभी कुछ तो कभी कुछ।

—दुनिया में सब-कुछ परिवर्तनीय है।

वेळा-वेळा री राग है। १३२२०

समय-समय की राग है।

दे.क.सं.१३०१३

वेलो वाड़ खाये पचे उपा हूं लागे?– भी.७४७ १३२२१

बाड़ बेले खाये तो फिर उपाय क्या है?

—बरसात में उगने वाली बेलें अमूमन बाड़ पर फैलती हैं। उसीके सहारे ही पसरती हैं। यदि बाड़ ही बेलें खाने लग जाय तो फिर दूसरा उपाय ही क्या है।

—जब सहायक ही क्षति पहुँचाने के लिए आमादा हो जाएँ, तब सुरक्षा की किससे आशा की जाय?

मि.क.सं. ९१०६,१३०७७

वेवणी रौ वींद। १३२२२

वेपनी का दूल्हा।

वेवणी = चूल्हे के सामने की ओर छोटी पाली से बनाया हुआ स्थान, जिसमें राख इकट्ठी होती है। जिसे संस्कृत में वेपनी कहते हैं।

—जो अकर्मण्य व्यक्ति चूल्हे के पास ही जमा रहता हो और इधर-उधर की गप्पें हाँकता रहता है,उसके लिए।

—आलसी व्यक्ति पर कटाक्ष।

वेवतां-वेवतां आंख्यां में धूड़ झोक दै। १३२२३

चलते-चलते आँखों में धूल झोंक दे।

—जो चालाक व्यक्ति ध्यान रखते-रखते धोखा दे जाय।

—जो धूर्त व्यक्ति धोखा देने में बहुत माहिर हो।

वेसुंदर देवता घणा ई चोखा पण घर में लाग्यां बेरौ पड़ै। १३२२४

अग्नि देव बहुत ही अच्छे है पर घर को जलाएँ तब पता चलता है।

—जिस बड़े व्यक्ति या महात्मा के द्वारा किसी व्यक्ति को भारी नुकसान हो जाय तो क्षतिग्रस्त व्यक्ति के लिए तो बुरा है ही,वह भला उसकी प्रशंसा क्यों करने लगा ! बड़े हैं तो अपने घर में हैं,दूसरों के लिए तो नहीं है।

—भले आदमी के द्वारा किसी को नुकसान पहुँचाने पर।

वेस्या बरस घटावै अर जोगी बधावै। १३२२५

वेश्या बरस घटाये और योगी बरस बढ़ाये।

—वेश्या की उम्र कम हो तो उसकी पूछ होती है और इसके विपरीत योगी की उम्र बड़ी हो तो उसकी ज्यादा पूछ होती है।

—हर व्यक्ति अपने हित के प्रति पूरा सतर्क रहता है,चाहे हितों का मुद्दा अलग-अलग हो।

वेस्या रै धणी नीं, मूसळ रै अणी नीं। १३२२६

वेश्या के धणी नही, मूसल के अणी नही।

धणी = पति। अणी = नोक।

—वेश्या के संसर्ग में कई पुरुष आते हैं,पर उसका पति कोई नहीं होता। वह एक पुरुष से बँधकर नहीं रहना चाहती। मूसल के नोक हो तो कोई भी गीला अनाज ओखली में कूटा नहीं जा सकता। मूसल के अणी हो तो वह बेकार है,उसी तरह वेश्या के पति हो तो उसका धंधा नहीं चल सकता।

वेस्यावां कद सतियां व्हैती ! १३२२७

वेश्या कब सती हो !

—एक पति हो तो सती हो, लेकिन वेश्या के तो अनेक यार होते हैं। फिर किसके प्रति सत उमड़े ?

—राज्य कर्मचारी बिरले ही ईमानदार होते हैं।

वेस्या सीरी नै बांणियौ मिंत किणी रा ई नीं। १३२२८

वेश्या साथी और बनिया मित्र किसी के भी नहीं।

—साथी या मित्र के लिए त्याग करना पड़ता है। दुख उठाना पड़ता है। लेकिन लोभी मनुष्य किसी के लिए भी त्याग नहीं कर सकता। वेश्या और बनिया सर्वाधिक लोभी होते हैं, इसलिए न वेश्या किसी की सच्ची साथिन हो सकती है और न बनिया किसी का मित्र हो सकता है।

वैं री गत वौ ई जांणै। १३२२९

उसकी गति वही जाने।

दे.क.सं.१२२१

वै ई कवाड़िया अर वै ई बसूला। १३२३०

वे ही कुल्हाड़े और वे ही वसूले।

वसूलौ = बढ़ई का एक औजार जो लकड़ी छीलने के लिए काम आता है।

—आदत से मजबूर व्यक्ति जो अच्छा काम छोड़कर वापस अपने घटिया काम में मशगूल हो जाय, उसके लिए।

—जो व्यक्ति कष्ट उठाने का ही आदी हो।

वै ई कसियां, वै ई साज, काल करै सो करल्यौ आज। १३२३१

वे ही कस्सिएँ, वे ही साज, कल करे सो करलो आज।

—जो भी उपलब्ध साधन हों, उन्हीं के बूते पर काम में जुट जाना चाहिए। आज के काम को कल के लिए टालना उचित नहीं। समय किसी का इंतजार नहीं करता।

—साधनों की प्रतिक्षा में समय गँवाना लाभप्रद नहीं है।

वै ई पईसा रा दोय धेला। १३२३२

वे ही पैसे के दो धेले।

—कहीं भी जाओ मनुष्य सर्वत्र एक-सा है। समान अवगुण और समान कमजोरियों का पुतला। कहीं कोई अपवाद नहीं।

—कुछ भी ज्ञान अर्जित कर लो, चाहे सारे धर्म-शास्त्र रटलो, मनुष्य की पाशविक प्रवृत्तियों में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।

वैगा आजौ अठै ई बसा हां! १३२३३

जल्दी आना यही बसते हैं!

—कोई किसी को जोश में धमकी दे तो सामने वाला व्यक्ति इस कहावत का प्रयोग करता है कि जल्दी करियेगा, हम यहीं बसे रहेंगे, भागकर कहीं जाएँगे नहीं।

—चुनौती का जवाब वापस ललकार के साथ मिले, तब...।

वैगा वावौ अर वैगा लूणौ। १३२३४

जल्दी बोओ और जल्दी काटो।

—खेती के साथ-साथ यह उक्ति हर काम के लिए उपयुक्त है कि किसी भी काम को जल्दी संपन्न करने पर उसका फल भी जल्दी मिलता है।

—किसी भी काम में ढील करना हानि को न्योता देना है।

वै चिड़ दूजा, जिका हरड़ देती रा उडज्या। १३२३५

वे चिड़ियाँ दूसरी, जो एक साथ झट उड़ जाएँ।

—एक पत्थर फेंकते ही जो चिड़ियाँ एक साथ उड़ जाती हैं, हम उन चिड़ियों में नहीं हैं। उस भरोसे कहीं धोखा खा जाओगे।

—कोई व्यक्ति खामखाह किसी पर हेकड़ी जमाये तो सामने वाला यह कहावत चुनौती के रूप में सुनाता है।

वैण, सगाई, चाकरी राजीपै रौ कांम। १३२३६

वादा, सगाई और चाकरी राजी-खुशी का काम।

—कोई वादा करता है तो अपनी मरजी से करता है, नौकरी भी इच्छा हो तो करे न करे। और सगाई भी दोनों पक्षों की रजामंदी से होती है। किसी की जोर-जबरदस्ती नहीं चलती।

—कोई भी काम अपनी इच्छा से हो तो बहुत बेहतर है।

वैती गंगा में हाथ धोवणा। १३२३७

बहती गंगा में हाथ धोने।

—लाभ के काम में पीछे नहीं रहना चाहिए।

—अवसर का फायदा उठाने में ही बुद्धिमानी है।

—चलते रास्ते पुण्य कमाने में कोई हर्ज नहीं।

वैती गाडी रौ चार। १३२३८

चलती गाड़ी का चारा।

—चलती गाड़ी को तो कहीं-न-कही चारा मिलता ही है, यहाँ नहीं तो वहाँ।

—जो उद्यम करता है, उसे फल मिलता ही है। अकर्मण्य को कुछ भी हाथ नहीं लगता।

वैती पांत में ई नीं जिमावै, जका घरै थाळी कद भेजै। १३२३९

चलती पाँत मे भी नही खिलाएँ, वे घर पर थाली कब भेजने वाले।

—जो सामान्य अधिकार का भी उपयोग न करने दें, वे विशेष सुविधा क्या उपलब्ध करा सकते हैं?

—जो सार्वजनिक साधनों को भी न बरतने दें, क्या वे अपने साधनों की ओर किसी को झाँकने भी देंगे?

वै तौ है ई कोनीं! वै कठा सूं आवै? वा व्हैला ई कोनीं। १३२४०

वे तो हैं ही नही! वे कहाँ से आएँ? वह होगी ही नही।

—यह अपने ढंग की एक विशिष्ट ही उक्ति है, जिसका शब्दों से भी बहुत परे अर्थ है। चूहे तो हैं ही नहीं। वे आएँगे कहाँ से? घर में अनाज होगा तभी तो आएँगे? चूहे किसी के घर भूख से मरने के लिए तो आते नहीं। जब घर में ढेरों अनाज होगा तो चूहे भी बेशुमार मिलेंगे।

—गरीब व्यक्ति पर अप्रत्यक्ष व्यंग्य।

वै दिन ढळग्या जद नन्है-खां फाखता उडावता। १३२४१

वे दिन ढल गये जब नन्हे खाँ फाखता उड़ाते थे ।

—जब किसी व्यक्ति की बहबूदी के दिन लद जाएँ,तब ।

—मौज मस्ती की बजाय फाका-मस्ती करनी पडे,तब ।

वै दिन तौ पाछा सपनै ई नीं बावड़ै। १३२४२

वे दिन तो वापस सपने मे भी नही आएँगे ।

—धन चाहे जितना अर्जित कर लो लेकिन बचपन की अलमस्ती के आलम का वापस सपना भी नही आ सकता।

—यौवन का आनद जीवन में एक बार ही आता है। लाट साहब भी चाहे ता उसका दुबारा आनद नही उठा सकता।

वै दिन राळौ जाजम हेट। १३२४३

वे दिन डालो जाजम के नीचे ।

—पुराने वैमनस्य की बातें भुलाकर आपस में मेलजोल रखना बेहतर है।

—पुरानी बातें पुराने दिनों के साथ ही भुला देनी चाहिएँ।

वै बातां ई बिलायगी। १३२४४

वे बाते ही बीत गई ।

—किसी के अच्छे दिन कूच कर जाएँ,तब ।

—वे दिन हवा हुए,जब पसीना गुलाब था।

—सुहाने दिनो की याद सताये,तब ।

वैम भूत अर सक डाकण। १३२४५

वहम भूत और शक डायन ।

—भूत-प्रेत और डायन-चुडैलों का अपना स्वतत्र अस्तित्व नहीं होता। ये मनुष्य के मन में ही अवस्थित है। कभी वहम के कारण भूत नजर आते हैं तो कभी शक की वजह से डायन का रूप धर लेते है।

—बड़े आश्चर्य की बात है ,मनुष्य के अलावा प्राणी-जगत का कोई कीट-पतंग भी न भूत-प्रेत को मानता है,न डायन को और न देवी-देवताओं को ।

वैम रौ औखद धंतर वैद रै पाखती ई कोनीं । १३२४६

वहम की औषधि धन्वंतरि के पास भी नही है ।

—मानव-देह में जितनी बीमारियाँ हैं उन सबकी औषधियाँ तो शायद ही ईजाद हुई हों,पर बहम के रोग की औषधि तो धन्वंतरि वैद्य के पास भी नहीं है और न कभी हो सकेगी । यह असाध्य बीमारी है ।

पाठा : **वैंम रौ इलाज हकीम गोडै ई कोनी । वैंम रौ दारू कोनी ।**

वैरागण अर भोपी अेक घर में नीं खटै । १३२४७

वैरागन और भोपी एक घर में नही रह सकती ।

—वैरागन तो सात्विक विचार और भक्ति भावना में लीन रहती है और भोपी छल-छद्म और ढोंग का जीवन बिताती है,तब दोनों का साथ रहना कैसे संभव हो सकता है ?

—दो विरोधी स्वभाव वाले व्यक्तियों में मेलजोल नहीं हो सकता ।

वैराग रौ कोई मौरत नीं व्है । १३२४८

वैराग्य का कोई मुहूर्त नही होता ।

—वैराग्य का मुहूर्त होता तो यशोधरा सिद्धार्थ को कभी अपने से जुदा नहीं करती । पर वैराग्य तो वातचक्र की नाईं आदमी को जाने कहाँ उडा ले जाता है,पता ही नहीं चलता ।

—सपने का कोई मुहूर्त हो तो वैराग्य का भी मुहूर्त हो ।

वैरागी रौ जांम , कदै न आवै कांम । १३२४९

वैरागी का जाम, कभी न आये काम ।

वैरागी = गृहस्थ साधु । जाम = बेटा,पुत्र ।

—वैरागी का लड़का अकर्मण्य होता है,वह भूल-चूक से भी किसी के काम नहीं आता ।

—ढोंगी व्यक्तियों की संतान भला किसके काम आ सकती है ?

वै रा वै गुरुमंतर पण तूंबी रा फटकारा इदकाई में । १३२५०

वे ही गुरुमंत्र पर तूँबी के झटके खास-तौर पर ।

संदर्भ-कथा : एक सद्-गृहस्थ की पत्नी बीमार पड़ी तो वह उसे रामद्वारे ले गया। आसपास के गाँवों में महंतजी अच्छे खासे वैद्य माने जाते थे। वे पूजाघर में रोगी का अकेले में ही इलाज करते थे। महंतजी की एक विशेष सनक और थी—वे कमर पर एक तूँबी बाँधकर रखते थे। वे सारे इलाके में तूँबी वाले महंत ही कहलाते थे। जब आधे घंटे तक पत्नी बाहर नहीं आई तो भोला पति और भी खुश हुआ। शायद महंतजी खूब मन लगाकर इलाज कर रहे हैं। आखिर पत्नी को बाहर तो आना ही था। वे दोनों रामद्वारे से बाहर निकले तो पति से धीरज नही रखा गया। पूछा 'क्यों, महतजी ने इलाज तो बढ़िया किया।' पत्नी पति से भी ज्यादा भोली और निष्कपट थी। सहज भाव से जवाब दिया, 'बाकी सब गुरुमंतर तो एक जैसे थे, पर तूँबी की ताल नई थी।'

'तूँबी की ताल' . भोले पति ने विस्मय से पूछा।

'हाँ, तूँबी की ताल।' भोली पत्नी ने सहज भाव से हामी भरते कहा, 'महंत की कमर से हमेशा एक तूँबी बँधी रहती है ना ? सभी जानते हैं।'

'हॉ, मुझे भी पता है। तभी तो वे तूँबी वाले महंतजी कहलाते हैं, शायद गुरु ने इलाज की यही तरकीब बताई हो।'

'क्या पता ?' पत्नी ने तनिक सकोच के साथ कहा, 'लेकिन, मैं कल इलाज के लिए नही आऊँगी।'

'क्यों ?'

'यों ही...।'

—महंत-साधुओं के दुहरे चरित्र पर तीखा कटाक्ष।

वै रा वै तीन बीसी अर वै रा वै साठ। १३२५१

वही तीन-बीसी और वही साठ।

तीन बीसी = बीस का तिगुना, साठ।

—समझ का फर्क होने से जब खामखाह कोई विवाद खड़ा हो जाय।

—जिस झमेले का कोई ठोस आधार न हो। एक पक्ष तो कहे तीन-बीसी और दूसरा पक्ष कहे साठ।

दे.क.सं.६०४५

वैवतै री लाठी लांबी व्है जावै । १३२५२

राहगीर की लाठी लंबी हो जाती है ।

—कोई भी राहगीर अपने मन में कुछ सोचता हुआ, आगे बढ़ता रहता है । हाथ में लंबी लाठी को सहलाता हुआ । राह की बाजू किसी बढ़ई का घर आये तो पानी पीने बैठ जाता है । दो-चार फूँक तंबाकू की भी खींच लेता है और कुछ काम नहीं हुआ तो लाठी को सहलाता हुआ कहता है, 'लाठी कुछ लंबी है' जरा चारेक अंगुल काट देना तो...।' बढ़ई राहगीरों की यह बान अच्छी तरह से जानता है । सभी राहगीरों की लाठियाँ चलते-चलते लंबी हो जाती हैं ।

—जब कोई व्यक्ति किसी को अनावश्यक सताये, तब .।

वैसाख वाळी बातां करै । १३२५३

वैशाख वाली बाते करे ।

—खरीफ की फसल कार्तिक माह में किसान के खलिहान मे उठकर बनियों की हाट में चली जाती है । जब अधिकाश फसल बनियों के कब्जे में आ जाती है तो वे मनमाना भाव वसूल करते हैं । कोई ग्राहक उधार लेने जाता है तो ज्वार-बाजरी के ऊँचे भाव सुनकर कहना, 'सेठजी' अभी मे बैसाख के भाव बता रहे हो ?' तब बनिया उपेक्षा से कहना है, 'मैं नो तुम्हारे पास माल बेचने आया नही । तुम्हें लेना हो तो लो मेरे यहाँ तो यही भाव है ।'

—जब कोई दुकानदार असमय में ही चीजो के भाव बढा दे, तब ।

वोट अर बेटी गिनायत नै । १३२५४

वोट और बेटी तो जात मे ।

—यह आजादी के बाद की नई उक्ति है । लोकतंत्र के माहौल में जाति और संप्रदाय की दुष्प्रवृत्तियाँ दिन-ब-दिन सकीर्ण होती गईं । बेटी की तरह वोट भी जाति के बाहर न देने का चलन लगातार बढ़ता गया । मतदान के समय कई बार यह उक्ति कानों में झनझना उठती है—वोट और बेटी जात में ।

वौ इज काजळ ठीकरी, वौ इज काजळ नैण । १३२५५

वही काजल ठीकरी, वही काजल नैन ।

—काजल तो एक ही है, पर वह ठीकरी में फकत काला-काला सा धब्बा नजर आता है, पर ज्यों ही आँखों की पलकों पर अंकित हो जाता है तो आँख की शोभा अधिक बढ़ जाती है। और आँख की चमक से काजल की शोभा बढ़ जाती है।

—जब किसी स्थान-विशेष की महत्ता से वस्तु का महत्त्व बढ़ जाय, तब...।

वौ इज रांम-कळस नै वौ इज तोत। १३२५६

वही राम कलश और वही ढोंग।

—जब धर्म और राम की ओट में छल-छद्म का आडंबर चारों ओर फैलने लगे, तब...।

—जब नैतिक-मान्यताओं का ह्रास होने लगता है तब अध्यात्म के नाम पर पाखंड के शंख बज उठते हैं।

वौ जीतै जो पैली मारै। १३२५७

वही जीते जो पहिले मारे।

—अनुभव के निचोड़ से नि.सृत इस उक्ति का महत्त्व सचमुच उजागर होता है कि जो पहिले वार करता है, जीत उसीकी होती है। इसलिए कि सामने वाला हक्का-बक्का रह जाता है। तत्पश्चात दूसरे वार से तो वह काफी कुछ घबरा जाता है। तब तक लोग बीच-बचाव करके आपस में समझौता करा देते हैं।

—जो पहल करता है, वही लाभ में रहता है।

वौ पांणी मुलतांन पियौ। १३२५८

वह पानी मुलतान पी गया।

संदर्भ-कथा : एक बार भक्त रैदास से मिलने के लिए मल्लिनाथजी आये। उस समय रैदास चमड़े की सफाई कर रहा था। साखी की गुनगुनाहट जैसा ही रैदास को चमड़े की सफाई में आनंद आ रहा था। मल्लिनाथजी ने पीने के लिए पानी माँगा तो औघड़ रैदास ने चमड़े की कुंडी से एक कटोरी भरकर थमा दी। पानी की रंगत देखी तो मल्लिनाथजी का जी मितला गया। तब भी गुरु के लिहाज से उन्होंने पीने की कोशिश की तो बदबू के मारे उबकाई आने लगी। पीठ फिराकर कटोरी का गंदा पानी जामे पर गिरा दिया। रैदास तो अपने-आप में ही डूबा हुआ था। मल्लिनाथजी जाने लगे तो मुस्कराकर आशीर्वाद दिया। थोड़ी दूर जाने के

बाद गीले जामे से बदबू के भभूके आने लगे तो उन्होंने मुलतान धोबी को पहिना हुआ जामा सौंप दिया। उसके यहाँ उनके कपड़े धुले रखे थे। उन्होंने लिबास बदल लिया।

दूसरे दिन मुलतान धोबी कपड़े देने उनके महल में आया तो बड़ा खुश था। खुशी के मारे उसका चेहरा दमक रहा था। उसने विनम्रता-पूर्वक मल्लिनाथजी का बहुत एहसान माना। गद्‌गद् स्वर में कहने लगा,'जब आपका जामा धोने के लिए उठाया तो एक ऐसी खूशबू आई कि मुझे एक अलौकिक-सा नशा आने लगा। तब मुझसे रहा नहीं गया तो मैं गीले जामे को लालची की तरह बार-बार चूसने लगा। मुझे ऐसा दिव्य ज्ञान हुआ, जैसे मैं हवा में तैर रहा होऊँ। एक पल भर में भीतर का अँधियारा छँट गया। ऐसा आत्म-बोध मुझे पहली बार ही हुआ। आपका यह ऋण मैं सात जन्म भी चुका नहीं सकूँगा। साधु-संन्यासी जो आत्म-ज्ञान पचास बरस की तपस्या के बाद भी प्राप्त नहीं कर सकते, मुझे पल भर में हो गया।

इधर मुलतान धोबी बहकी-बहकी बातें कर रहा था और उधर मल्लिनाथजी अपने किये पर मार पछताने लगे। धोबी आगे भी कुछ कहने जा रहा था। पर मल्लिनाथजी तब तक अपना धीरज खो चुके थे। धोबी के साथ ही महल से बाहर निकले। पर उन्हें घोड़े पर चढ़ने की भी सुधि नहीं रही। पैदल ही भक्त रैदास के घर गये। चमड़ा साफ करने के बाद उन्होंने कुंडी को भी साफ कर दिया। उसमें ताजा पानी भर रहे थे। मल्लिनाथजी ने रैदास के चरण छूकर कुंडी की ओर इशारा किया। रैदास मुस्कराकर चुप हो गया। अधीर होकर कहा, 'भूल हो गई सो हो गई। कुंडी का अमृत पीने आया हूँ।' रैदास ने आह भरते कहा, 'अब कुंडी में वह पानी कहाँ ? वह तो मुलतान पी गया ! तूने समय गँवा दिया मल्लिनाथ।'

तब मल्लिनाथ ने पछताते कहा, 'अब एक पल भी नहीं गवाऊँगा।' और वे राज्य छोड़कर गुरु की शरण में आ गये।

—अमृत-वेला बीत जाने के बाद वापस कभी लौटकर नहीं आती।

इस उक्ति का एक महत्त्वपूर्ण पाठांतर और है :

वौ पांणी मुलतांन गियौ।

वह पानी मुलतान गया।

स्वर्गीय एस डब्ल्यू फैलन ने अपने हिंदुस्तानी कहावत-कोश में पृष्ठ ३३३ पर इसकी जो व्याख्या की है, उसे अक्षरशः उद्‌धृत कर रहा हूँ।

एक समय गुरु गोरखनाथ भक्त रैदास से मिलने आये। प्यास लगने पर उन्होंने पानी माँगा तो रैदासजी ने उनका खप्पर पानी से भर दिया। जब उन्हें ध्यान आया कि रैदास तो जाति के चमार हैं तो उन्होंने पानी नहीं पिया और उसे खप्पर में ही रहने दिया। वहाँ से वे कबीर से मिलने गये। जब कबीर ने पूछा कि खप्पर में क्या है,तो उन्होंने असली किस्सा बता दिया। कबीर की लड़की कमाली जो उस समय वहाँ बैठी हुई थी और रैदास की ख्याति से भलीभाँति परिचित थी,उस पानी को पी गई। पानी पीते ही उसे दिव्यज्ञान उत्पन्न हो गया। ऐसा आश्चर्यजनक परिवर्तन होते देख गोरखनाथ को होश हुआ और फिर रैदासजी के पास आकर उन्होंने पानी माँगा। इसी बीच कमाली अपने पति के साथ मुलतान चली गई। रैदास ने अपने योग-बल से सब हाल जानकर गोरखनाथजी से कहा—प्यावत थे जब पिया नहीं,तब तुमने बहु अभिमान किया। भूला योगी फिरे दिवाना,वो पानी मुलतान गया।

—अब तो वह बात बहुत दूर चली गई।

—तुम जो चाहते थे,वह अब नहीं होने का।

वौपारै में धीमौ सुभाव चालै। १३२५९

व्यापार में धीमापन चलता है।

—व्यापार में न क्रोध से काम चलता है और उतावली से। धीरज,विनम्रता और शांति से ही व्यापार गति पकड़ता है।

—प्रत्येक काम की अपनी-अपनी विशेषताएँ होती हैं।

वौपारे वधंतै लछमी। १३२६०

व्यापार से लक्ष्मी बढ़ती है।

—सट्टे के अलावा व्यापार ही ऐसा धंधा है जिसमें खूब लाभ होता है। सट्टे में लाभ भी तेजी से होता है और घाटा भी तेजी से होता है। लेकिन व्यापार में लाभ और नुकसान में इतना अंतर नहीं रहता।

—व्यापार की अहमियत इस उक्ति में प्रकट हुई है।

वौरै री बकरी सौ बरस सखरी। १३२६१

बोहरे की बकरी सौ बरस सखरी।

सखरी = अच्छी,स्वस्थ।

—बोहरे का रेवड़ तो उसके असामी होते हैं, जो पीढ़ियों तक ब्याज भर-भरकर बोहरे को लाभान्वित करते हैं। ऋणी किसान बनिये की ऐसी बकरियाँ हैं जो बरसों तक दूध देती रहती हैं।

वौ सोढ़ौ दूजौ जिकौ गीतां में गाईजै। १३२६२

वह सोढ़ा दूसरा जो गीतों में गाया जाता है।

—राजस्थानी में 'सोढ़ा-रांणा' नामक लोकगीत प्रचलित है। जब उस गीत के आधार पर सोढ़ा जाति के दूसरे राजपूत गर्व करते हैं तो सुनने वाला जवाब देता है कि गीतों में गाया जाने वाला सोढ़ा ही दूसरा है, तुम नहीं हो।

—इतिहास और लोकगीतों में जिनकी ख्याति वर्णित है, मनुष्यों की वह किस्म ही अलग है, जो सामान्य लोगों से मेल नहीं खाती।

व्यांणजी कांईं ढुळै के लखण ढुळै। १३२६३

समधिन क्या गिर रहा है कि लक्षण गिर रहे हैं।

—आदमी के कुलक्षण ही उसे दंडित करते हैं, दंड देने वाला दूसरा न्यायकर्ता नहीं होता।

—कोई भी व्यक्ति अपनी बुराइयों से ही उत्पीड़ित होता है।

पाठा : व्यांणजी वाळौ सुभाव झरै।

व्हियौ सो व्हियौ। १३२६४

हुआ सो हुआ।

—कोई व्यक्ति अपनी गलती स्वीकार करके कहता है—जो हुआ सो हुआ। माफी चाहता हूँ। भविष्य में ऐसी चूक नहीं होगी।

—लड़ाई बुझाने वाले मोतबर दोनों पक्षों को शांत करते हुए अमूमन यही शब्द दोहराते हैं—जो हुआ सो हुआ, उसे भूल जाइये। लड़ने में किसी को फायदा नहीं।

व्है नर तौ बसावै घर। १३२६५

हो नर तो बसाये घर।

—साधु-संन्यासी या संत-महात्मा संसार का परित्याग करके तपस्या करने के आशय से जाते हैं, उसका कोई महत्त्व नहीं है। महत्त्व तो उन गृहस्थ नरों का है, जिनके द्वारा मनुष्य प्रजाति की अभिवृद्धि होती है।

—संसार से पलायन करने की बजाय संसार में रहकर संघर्ष करना चाहिए। जन्म लेकर मनुष्य का जीवन पाया है तो संतान को जन्म देकर उन्हें भी मनुष्य जीवन की नियामत सौंपनी है, तभी ऋण-मुक्त हुआ जा सकता है।

व्है नांणा तौ परणीजै कांणा। १३२६६

नकद हो पैसा तो दूल्हा ब्याहे जैसा-तैसा।

दे.क.सं.११

सं-स

संईयां थरपीज्या कोटवाळ अबै डर किणरौ ? १३२६७

सैयाँ भये कोतवाल अब डर किसका ?

—घर का व्यक्ति ही जब जिम्मेदार अधिकारी हो जाय तो फिर डर किस बात का। जो भी डरेगा वह हमसे डरेगा।

—जब सत्ता की छोटी-मोटी बागडोर हाथ में है, जो चाहे सो करो, कौन रोकने वाला है ?

पाठा: **सैंयां भये कोटवाळ, अबै डर किणरौ।**

संकरांत रा थेप्योड़ा होळी में कांम आवै। १३२६८

संक्रांति को थापे हुए होली मे काम आते है।

—संक्रांति को थापे हुए भड़भोल्ये होली में काम आते हैं।

भड़भोल्यौ = होलिकोत्सव पर गोबर की बनाई जाने वाली वे छोटी टिकियाँ जिन्हें एक माला के रूप में पिरोकर होलिका-दहन में जमा देते हैं। ये भड़भोल्ये संक्रांति पर बनते हैं।

—संचय की हुई कोई भी चीज पास में हो तो वह जरूरत पर किसी वक्त भी काम आ सकती है।

—संचय के महत्त्व की ओर संकेत।

संकोच री मां-रांड नातै गी। १३२६९

संकोच की माँ-रॉड नाते गई।

—अधिक संकोच रखने वाली या लज्जा का अधिक दिखावा करने वाली औरतें अमूमन ज्यादा चरित्रहीन होती हैं।
—ऊपरी दिखावे का भीतर से भी साम्य हो, यह जरूरी नहीं है।

संख अर खीर भर्‌यौ ? १३२७०

शंख और खीर से भरा ?
—शंख खीर से भरा हो तो और क्या चाहिए। खीर पीने के बाद शंख बजाने में और अधिक आनंद मिलेगा।
—जिस काम में दुहरा लाभ हो तो दुहरी खुशी होती है।

संख बजै अर सुरळा उडै। १३२७१

शंख बजे और थूक उड़े।
—जो अभावग्रस्त व्यक्ति व्यर्थ का दिखावा करे तो उसे परिहास में कहा जाता है कि अधिक दम वाली बात नहीं है—थोथा शंख बज रहा है, उसके साथ थूक उछल रहा है।
—अप्रतिष्ठित व्यक्ति के प्रति व्यंग्य।

संखियौ मेह तालर में वूठौ। १३२७२

शंख वाला मेह ऊसर में बरसा।
—कभी-कभार मेह के साथ एकाध सूत के छोटे-छोटे शंख बरसते हैं। छोटी-छोटी सीपियाँ बरसती हैं। इनमें कीट-कीड़े आदि भी होते हैं। ऊसर भूमि में नष्ट हो जाते हैं। और ऊसर भूमि में बरसे मेह की कुछ उपयोगिता भी नहीं है।
—ऐसी नियामत जो किसी के उपयोग में नहीं आये।

संग जिसौ रंग। १३२७३

संग जैसा रंग।
—संगत का रंग लगे बिना नहीं रहता। संगत बुरी है तो बुरा रंग लगता है। संगत अच्छी है तो अच्छा रंग लगता है।
—संगत का प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता।
पाठा : संगत जिसी रंगड़।

संगत जिसा परवाड़ा। १३२७४

जैसी संगत वैसा परिणाम।

—संगत के अनुरूप ही परिणाम होता है।

—खराब संगत का खराब परिणाम और अच्छी संगत का अच्छा परिणाम।

संगत बडां री कीजिये, बधत-बधत बध जाय। १३२७५
छाळी हाथी पर चढ़ी, चुग-चुग कूंपळ खाय॥

संगत बड़ो की कीजिये, बढ़त-बढ़त बढ़ जाय।
बकरी हाथी पर चढ़ी, चुन-चुन कोपल खाय॥

संदर्भ-कथा: किसी एक गड़रिये के रेवड़ से एक बकरी बिछुड़ गई। लोभ-वश एक हरी झाड़ी के पत्ते चरने में कुछ देर मशगूल रही तो भेड़-बकरियों का झुंड काफी आगे निकल गया। भला अकेली बकरी जंगल के हिंसक जानवरों का क्योंकर मुकाबला करती। घबरा गई बेचारी। इधर-उधर भटकने पर उसे बब्बर शेर के पदचिह्न नजर आये। भला पदचिह्न क्या नुकसान करेंगे, यह सोचकर वह उन पदचिह्नों के पास बैठ गई। दुर्योग से एक सियार उधर आया। अकेली बकरी को देखकर बड़ा खुश हुआ। पास आकर कहा, 'मुझे बड़ी भूख लगी है, तुझे खाऊँगा।' बकरी शेर के पदचिह्न से काफी आश्वस्त थी। निर्भय होकर बोली, 'पहिले यह पदचिह्न तो अच्छी तरह पहिचान ले। खुद जंगल के राजा मुझे यहाँ पर बिठाकर गये हैं। उनके आने पर मैं नहीं मिलूँगी तो वे तुम्हारी जात का नामोनिशान मिटा देंगे...।' बकरी आगे भी कुछ कहना चाहती थी, पर सियार तो पूरी बात सुने बिना ही वहाँ से सरपट भागा। लेकिन बकरी का दुर्भाग्य कि सियार के जाते ही एक भेड़िया वहाँ आ गया। उसने भी बकरी को खाने की धमकी दी तो, उसने फिर वही दाँव अपनाया। और भेड़िया तो डरके मारे सियार से भी तेज भागा। भेड़िये के भागते ही एक शेर आ पहुँचा। बकरी को देखकर बोला, 'मैं तुझे खाऊँगा।' बकरी ने सोचा कि डरने से भी वह बचेगी नहीं, तो फिर डरने का मतलब क्या है? उसने अपना हौसला कायम रखते हुए कहा, 'अब तक आपके पदचिह्नों की शरण में बैठी मैं एक खूँखार भेड़िये और एक चालाक सियार से बच गई। अब आप स्वयं खाना चाहें तो मजे से खाइये? फिर जंगल के राजा की शान का क्या मतलब रह जाएगा?'

शेर को गरीब बकरी की बात अच्छी लगी। अपने पदचिह्न पहिचानकर उसने बकरी को अभयदान दिया। कहा, 'पूरे जंगल में मेरा एकछत्र राज्य है। निश्चिंत होकर तेरी जहाँ मरजी हो वहाँ मजे से फिर। तुझे कोई टोकने वाला नहीं है।' फिर बकरी की मौज में क्या कमी। कुछ दिन तो खूब चरी। तत्पश्चात् कुछ कठिनाई होने पर अपने सिंह को बताया कि वह नीचे-नीचे की सारी पत्तियाँ खा चुकी है। उससे ऊपर पाँव नहीं पहुँचते...।'

'कोई बात नहीं। मैं अभी व्यवस्था करता हूँ।' इतना कहकर वह जंगल में छलाँगें भरता हुआ ओझल हो गया। कुछ ही देर में एक विशाल हाथी को साथ लाया। हाथी ने जोर से हँसते हुए पूछा, 'क्या यही नन्हीं-सी बकरी है। मुझे इसका क्या बोझ?' सूँड से पकड़कर उसने बकरी को अपनी पीठ पर आराम से बिठा दिया। पूछा, 'अब तो खुश।' फिर शेर ने हिदायत दी कि हाथी बकरी को पीठ पर बिठाये सारे जंगल में घूमे। मेरी बिटिया जहाँ कहे, वहीं रुके और कोमल-कोमल पत्तियाँ खिलाये। शेर ने जैसा कहा, वही हुआ। वैसी मौज तो आज दिन तक दुनिया की किसी भी बकरी ने नहीं की होगी। तीनों की दोस्ती खूब निभी। दूर-दूर तक उनके मेल की चर्चाएँ चलतीं।

—बड़े आदमियों की संगत के ऊँचे ही फल मिलते हैं।

संगत रा फळ। १३२७६

जैसी संगत वैसा फल।

—बुरी संगत के बुरे फल और अच्छी संगत के अच्छे फल ही मिलते हैं। इसमें अपवाद की गुंजाइश नहीं।

—इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह हमेशा अच्छी संगत ही करे और बुरी संगत से बचे।

संगत रा फळ भोग्यां सरसी। १३२७७

संगत के फल भोगने पड़ेंगे।

—बुरी संगत के अच्छे फल सपने में भी नहीं मिल सकते। बुरे फल ही मिलेंगे और उन्हें भोगना ही पड़ेगा। उससे बचना मुश्किल है।

संगत रौ असर अखरै। १३२७८

संगत का असर अटल।

—किसी दूसरी चीज का असर हो न हो, पर बुरी संगत का बुरा प्रभाव तो पड़ता ही है। अच्छी संगत किसी को प्रभावित करती है, किसी को नहीं भी करती। लेकिन बुरी संगत के प्रभाव से बचना मुश्किल है।

पाठा : संगत रौ असर कठै ई नीं जावै।

संगत सार। १३२७९

संगत सार।

—निःसंदेह संगत का प्रभाव तो पड़ता ही है, चाहे बुरी संगत हो चाहे अच्छी संगत। बुरी संगत का बुरा फल निश्चित है और अच्छी संगत का अच्छा फल।

संगतसार अनेक फळ, लोहा काठ तिरंत। १३२८०

संगत सार अनेक फल, लोहा तिरे काठ के संग।

—लोहे का एक कण भी क्यों न हो, वह पानी में डूबता ही है। और लकड़ी सौ मन भारी हो, तब भी नहीं डूबती। लकड़ी की नाव में चाहे जितना लोहा लगा हो, चाहे नाव में पड़ा हो, वह पानी में डूबने से बच जाता है। इसलिए कि काठ की संगत से उसका भी निस्तार संभव है।

पाठा : संगत सार, फळ अनेक।

संगत सूं रंग तौ नीं, पण अकल अवस बदळै। १३२८१

संगत से रंग तो नहीं, पर अक्ल अवश्य बदलती है।

—हाँ, यह तो निर्विवाद सत्य है कि संगत से रंग में बदलाव तो नहीं आता, पर बुद्धिमान व्यक्ति की संगत से बुद्धि का विकास होता है।

—संगत रंग को प्रभावित नहीं करती पर बुद्धि को जरूर करती है।

संगत सूं सुधरै कम अर बिगड़ै घणा। १३२८२

संगत से सुधरें कम और बिगड़ें ज्यादा।

—यह भी एक परखा हुआ सत्य है कि संगत अच्छाई को कम प्रभावित करती है पर बुराई की ओर उसका झुकाव कुछ ज्यादा ही रहता है।

—गुणों की अपेक्षा अवगुणों की छूत जल्दी लगती है।

संगी हजार मिळजौ पण कुसंगी अेक ई मत मिळजौ। १३२८३

संगी हजार मिलें पर कुसंगी एक भी न मिले।

—अच्छी संगत का बुरा प्रभाव तो नहीं भी पड़ता, इसलिए अच्छों की संगत खूब मिले तब भी कोई हानि नहीं, पर इसके विपरीत कुसंगत के बुरे प्रभाव से बचना बहुत मुश्किल है। एक भी बुरे व्यक्ति की संगत जीवन का सर्वनाश कर सकती है।

संजोग पीवतां कांई वार लागै? १३२८४

संयोग बनते क्या देर लगती है?

—किसी दुखी व्यक्ति को आश्वस्त करने के लिए यह कहावत कही जाती है कि चिंता से दुख कम होने की बजाय बढ़ता है। इसलिए चिंतित होना व्यर्थ है। संयोग की महिमा अपरंपार है। संयोग बनते कुछ देर नहीं लगती। पता नहीं कब भयंकर दुख आशातीत सुख में बदल जाय।

संत रौ, नीं किणी पंथ रौ। १३२८५

सत का, न किसी पंथ का।

—जिस व्यक्ति का अपना मत न हो तो न वह किसी सत का रहता है और न किसी पंथ का। न दीन का रहता है और न दुनिया का।

—सर्वथा निकम्मे व्यक्ति के लिए।

संतां रांम-रांम के रींगणां रौ कांई भाव? १३२८६

महाराज राम-राम कि बैगन का क्या भाव?

—जिस तरह बहरे व्यक्ति से संवाद करना मुश्किल है, उसी तरह गँवार या अज्ञानी व्यक्ति के साथ भी संवाद करना कठिन है। बहरा व्यक्ति आवाज ही नहीं सुन पाता, इसलिए उसके साथ बातचीत की पटरी ही नहीं बैठती। फिर भी उसे इशारों में समझाया जा सकता है। पर गँवार व्यक्ति जो बहरा नहीं है, वह बात के मर्म को समझने में असमर्थ है, इसलिए उसके साथ पटरी बैठना तो और भी मुश्किल है।

संतां रै कांई सवाद, अणविलोयौ ई आवण दै। १३२८७

संतों को कैसा स्वाद, अनबिलोया ही आने दे।

संदर्भ-कथा : कोई एक साधु महात्मा किसी के घर गये। घरवाली बिलौना कर रही थी। महात्मा ने छाछ के लिए पूछा तो घरवाली ने कहा, 'थोड़ा ठहरिये, बिलौना हो जाय तो चाहे जितनी छाछ लीजिये।' तब महात्मा ने तटस्थ भाव से कहा, 'हम संत-महात्माओं को कैसा स्वाद, अनबिलोया ही आने दे।' अनबिलोये में छाछ भी गाडी होती है। मक्खन की कुछ मात्रा भी बच रहती है। छाछ की बजाय अनबिलोया दही ज्यादा स्वादिष्ट होता है। घरवाली ने जवाब देने की जरूरत नहीं समझी। तनिक मुस्कराकर बिलौना और तेजी से करने लगी। तब प्रतीक्षा करने के अलावा महात्मा के पास दूसरा कोई उपाय नहीं था।

—जो व्यक्ति भोला बनकर अपनी स्वार्थ-सिद्धि करना चाहता हो।

—ऊपर से भोला दिखने वाला व्यक्ति जो वास्तव में बड़ा चालाक हो।

संतां संसार केड़ौ के आपरै मन जैड़ौ। १३२८८

महाराज संसार कैसा कि अपने मन जैसा।

—संसार के वैविध्य की कितनी सुंदर व्याख्या चित्रित हुई है कि संसार का अस्तित्व हर व्यक्ति की भावना के अनुसार विभिन्न है।

—संसार में जितने व्यक्ति हैं उतने ही संसार हैं। किन्हीं दो व्यक्तियों का संसार एक नहीं है, क्योंकि मनुष्य की भावना एक नहीं है।

—तुलसी बाबा ने भी इस तथ्य को सुंदर वाणी दी है :

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

पाठा : स्यांमीजी संसार कैड़ौ के आपरै मन जैड़ौ।

संतां सिरावण करस्यौ के भातौ खाख में लियां चालूं। १३२८९

महाराज कलेवा करलो कि पाथेय बगल में लिये चलता हूँ।

—जो व्यक्ति दूसरों का मोहताज न होकर पूरा स्वावलंबी हो।

—जो व्यक्ति दिखने में ही महात्मा हो और बगल में खरगोश दबा रखा हो।

—जिस व्यक्ति को मनुहार करके खिलाने वाले बहुतेरे हों तो बगल में पाथेय जैसी सुविधा ही समझनी चाहिए।

संतोख धन सूं नीं आवै। १३२९०

संतोष धन से नहीं मिलता।

—संतोष धन की मात्रा पर निर्भर नहीं करता। सिकंदर महान को भी संतोष नहीं हुआ, जबकि उसने आधी दुनिया पर विजय प्राप्त करली थी। अनगिनत माया उसके पास थी, फिर भी माया की तृष्णा मिटी नहीं थी।

—संतोष मन की भावना पर निर्भर करता है। दो जून खाने की व्यवस्था हो तब भी मनुष्य संतुष्ट रह सकता है ?

—जब आये संतोष धन, सब धन धूल समान।

संतोख सिरै लाभ। १३२९१

संतोष श्रेष्ठ लाभ है।

—संतोष धारण करने के बाद किसी भी लाभ की लालसा नहीं रहती। फिर उससे बड़ा लाभ और क्या हो सकता है।

—जब तक धन-माया की तृष्णा नहीं मिटती, वह निर्धन ही है। केवल संतोष प्राप्त करने के पश्चात् ही वह संसार का सबसे सुखी और सबसे समृद्ध व्यक्ति है।

संतोखी नर सदा सुखी। १३२९२

संतोषी नर सदा सुखी।

—जिस व्यक्ति को कुछ भी अभाव नहीं खटकता, वही सबसे अधिक सुखी और समृद्ध है। लालसा तो संसार का समूचा धन प्राप्त हो जाने के बाद भी नहीं मिटती। इसलिए उसका दुख भी कभी नहीं मिटता।

—जो व्यक्ति धीरज रखकर काम करता है, उसका काम कभी नहीं बिगड़ता, इसलिए वह कष्ट भी नहीं पाता। अपने को हर दृष्टि में सुखी अनुभव करता है।

चाह गई, चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह।
जाकौ कछु ना चाहिए, वो ही शाहंशाह॥

संदेसां ओळग न व्है। १३२९३

संदेश से सेवा नहीं होती।

—आगे-से-आगे संदेश पहुँचाने से कोई काम नहीं बनता। काम तो करने से ही संपन्न होता है।

—किसी के भरोसे काम नहीं होता, अपने बूते पर ही होता है।

संदेसां खेती नंह पाकै। १३२९४

संदेशों से खेती नहीं पकती।

—खेती तो उसीकी पकती है, जो खुद खेत में मौजूद रहता है। चारों तरफ चौकस रहता है कि कब खेत को पानी चाहिए, कब खाद चाहिए, कब निराई चाहिए और कब उपचार चाहिए। इतना ध्यान रखने पर मन-वांछित फसल पकती है।

—कोई भी काम करने से होता है, बातों से नहीं।

पाठा : संदेसां खेती नीं व्है।

संदेसां बिणज नै पर-हाथां खेती। १३२९५

संदेशों से व्यापार और पराये हाथों से खेती।

—संदेश पर संदेश पहुँचाकर व्यवसाय किया जाय और दूसरों के विश्वास पर खेती छोड़ दी जाय तो उसमें कभी सफलता नहीं मिलती।

—कोई भी काम अपनी मौजूदगी में अपनी देखरेख से ही सफल होता है, नहीं तो बिगड़ जाता है।

संप जठै लिछमी, कळै जठै काळ। १३२९६

एकता जहाँ लक्ष्मी, कलह जहाँ काल।

—जिस परिवार या समाज में एकता है, वहीं लक्ष्मी का निवास है। सुख और शांति है। और जहाँ कलह और द्वेष है, वहाँ-वहाँ सर्वनाश है।

—मनुष्य को हर कीमत पर एकता और शांति बनाये रखनी चाहिए, वरना दुख-दैन्य व कष्टों का पार नहीं है।

संपत में लिछमी रौ वासौ। १३२९७

एकता में लक्ष्मी का निवास है।

—फूट में रात-दिन झगड़ा, समय और रुपयों की बर्बादी और आठों पहर चिंता लगी रहती है। सुख और शांति तो एकता से ही संभव है।

—इसलिए मनुष्य को चाहिए कि किसी भी सूरत में घर, समाज और देश की एकता कायम रहे। देशवासियों की फूट से भारत में विदेशी आक्रांताओं का राज्य कायम हुआ। देश का धन बाहर गया।

पाठा : सांयत में लिछमी रौ वासौ।

संपत ही तद भूत कना सूं ईं धन लै झांप्यौ। १३२९८

एकता थी तब तो भूत के पास से भी धन छीन लिया।

—एकता से ही सुख-चैन और समृद्धि संभव है और फूट से सर्वनाश। एकता के अभाव में अपना देश दो हजार बरसों से दासता का अभिशाप भोगता रहा।

—सर्वनाश की जड़ फूट से बचकर हमेशा एकता कायम रखनी चाहिए।

संपत हुवै तौ घर, नींतर भलौ परदेस। १३२९९

एकता हो तो घर वरना परदेश भला।

—एकता के अभाव में रात दिन फूट, कलह, वैमनस्य का नर्क भोगने की बजाय तो परदेश जाकर बसना उचित है।

—सुख, शांति और चैन जहाँ भी मिले वह घर है और इसके विपरीत घर में हमेशा कलह और झगड़ा रहे तो वह नर्क है।

संवारतां वार लागै, बिगाड़तां नीं लागै। १३३००

सँवारने में समय लगता है, बिगाड़ने में नहीं।

—इस उक्ति का अर्थ करते समय यूगोस्लाविया का विध्वंस आँखों के सामने कौंध उठा। जिन इमारतों का निर्माण करने में यूगोस्लाविया के कर्मठ लोगों को बरसों-बरस लगे। जिस वैभव को अर्जित करने में वहाँ की पीढ़ियाँ खप गई। पर नाटो उर्फ अमेरिका की दादागिरी को उसे नष्ट करने में क्या वक्त लगा—सिर्फ एक धमाके जितना वक्त और सारे सपने धराशायी।

संवी-सांझ पांतरयोड़ा नै दिन मोड़ौ ऊगै। १३३०१

ऐन साँझ की वेला भूले हुए का दिन बड़ी देर से उगता है।

—साँझ होते ही जो राह भटक जाय, उसकी राह बहुत लंबी हो जाती है और सूर्योदय बहुत देर से होता है।

—वक्त पर चूकने वाले को कष्ट उठाना पड़ता है।

संवै पांणी चढ़ै उणरी साध कीकर पुरावां ? १३३०२

औंधे पानी चढ़े उसकी इच्छा क्योंकर पूरी करें ?

—जो व्यक्ति सब औंधे-ही-औंधे काम करे, भला उसकी चाह कौन पूरी कर सकता है ?

—गलत काम करने वाले व्यक्ति का साथ कोई नहीं देना चाहता।

संसार में आया जीव जावण रा। १३३०३

संसार में आये जीव जाने को।

—संसार में जो भी छोटे-बड़े प्राणी जन्म लेते हैं, उन सबको एक दिन जाना है, यह बात मनुष्य न भूले तो उसका विवेक संतुलित रहता है। वह अकर्म से बचता है, दूसरों को कष्ट नहीं देता। और जो इस तथ्य को भूल जाते हैं वे लोभी-लालची, उत्पीड़क और शोषक होते हैं।

संसार में कुण ई सुखी नीं। १३३०४

संसार में कोई भी सुखी नहीं है।

दे.क.सं.६३४७

संसार हार है। १३३०५

संसार संग्राम है।

—समस्त संसार ही एक रणक्षेत्र है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को जीवित रहने के लिए प्रतिक्षण संघर्ष करना पड़ता है, जूझना पड़ता है। जो संघर्ष नहीं करता उसकी हार निश्चित है।

सक्करखोरा नै सक्करखोरौ सौ कोस री अंवळाई खायनै ई मिळ जावै। १३३०६

शक्कर-खोरे को शक्कर-खोरा सौ कोस का चक्कर काटने के बाद भी मिल जाता है।

—जीवन-निर्वाह के लिए जितनी भी जरूरतें हैं, वह सर्वशक्तिमान् परमेश्वर सबके लिए पूरी करता है।

—भाग्यवादियों की मान्यता के अनुसार ईश्वर सबकी आवश्यकताएँ समझता है।

सक्कर दियां मरै जिणनै विस क्यूं देवणौ ? १३३०७

शक्कर देने से मरे उसे जहर क्यों देना ?

दे.क.सं.३६३३

सखरौ जिमायोड़ौ नै सखरौ कूटीज्योड़ौ घणा दिन याद राखै। १३३०८

अच्छी तरह खिलाया हुआ और अच्छी तरह पिटा हुआ बहुत दिन तक याद रखता है।

—यों तो याद रखने के लिए अन्य बहुत सारी बातें हैं, पर इस उक्ति के अनुसार अच्छी तरह भोजन कराया हुआ और अच्छी तरह पिटा हुआ व्यक्ति आसानी से भूलता नहीं। याद रखते हैं कि किसने कब क्या खिलाकर सत्कार किया और किसने कब उसकी जमकर पिटाई की।

सखरौ ठूंठ मिळ्यां खाती खावणौ पांतरै। १३३०९

अच्छी लकड़ी मिलने पर बढ़ई खाना भूल जाता है।

—बढ़ई का निर्वाह लकड़ियों पर ही निर्भर करता है। यदि उसे सूखी हुई उम्दा लकड़ी मिल जाती है तो वह अपनी सुधि खो बैठता है। खाना-पीना बिसर जाता है।

—हर व्यक्ति को उसकी रुचि के अनुसार पसंद का काम मिल जाय तो उसकी खुशी का पार नहीं रहता।

सखी रौ बोलबालौ, सूम रौ मूंडौ काळौ। १३३१०

सखी का बोलबाला, कंजूस का मुँह काला।

सखी = दानी, दातार, उदार।

—जो व्यक्ति अपनी संपत्ति को दूसरों की हित-साधना के लिए सुरक्षित रखते हैं, उनका हमेशा बोलबाला रहे। और इसके विपरीत जो व्यक्ति अपनी अर्जित संपदा को न स्वयं भोगता है और दूसरों के काम आने देता है, उसका हमेशा मुँह काला रहे। बस, ईश्वर से इतनी भर प्रार्थना है, जरूर पूरी करेगा।

सगती जैड़ी भगती। १३३११

शक्ति जैसी भक्ति।

—ईश्वर या कोई संत महात्मा भक्ति का ऊपरी बाहुल्य देखकर खुश नहीं होता। वह तो हर व्यक्ति की वैयक्तिक शक्ति के अनुसार जितनी और जैसी भी भक्ति बन पड़ती है, उसी से खुश हो जाता है। वह मन की भावना के साथ, हर व्यक्ति की आर्थिक-स्थिति का ध्यान रखता है। जैसी जिसकी क्षमता होगी, उतनी ही तो उससे भक्ति हो सकेगी। शबरी के जूठे बेरों को भी भगवान राम ने आदर के साथ अंगीकार किया।

—सर्वशक्तिमान् परमेश्वर भक्ति का आडंबर नहीं देखता, क्षमता और सामर्थ्य देखता है।

पाठा : सरधा जित्ती भगती। सगती परवांणै भगती।

सगती ने भगती जोड़ नी है।–भी.७४८ १३३१२

शक्ति और भक्ति की जोड़ी नही है।

—ईश्वर की भक्ति के लिए शक्तिशाली होना कतई आवश्यक नहीं है। गरीब व्यक्ति की भावना भी ईश्वर के लिए उतनी ही मान्य है।

—इसी प्रकार शक्तिशाली बनने के लिए ईश्वर की उपासना अनिवार्य नहीं है। इसलिए ये दोनों भावनाएँ अपने-आप में स्वतंत्र हैं। इनकी परस्पर जोड़ी नहीं है।

सगपण सोनौ अर पीतळ प्रीतड़ी। १३३१३

विवाह सोना और प्रेम पीतल।

—सामंती मान्यताओं का ऐसा ही तेवर है जो आज के जमाने से मेल नहीं खाता। सामंती दृष्टि से विवाह तो सोना है और दो प्रेमियों की प्रेम भावना जिसे हर युग के कवियों ने तरह-तरह से व्यक्त किया है, वह पीतल है। भला सोने और पीतल की क्या बराबरी!

सगळां पैली सिंवरिये, गवरी-पुत्र गणेस। १३३१४

सबसे पहिले गौरी-पुत्र गणेश का सुमिरन करना चाहिए।

—हिंदू-समाज में किसी भी काम की मांगलिक शुरुआत के लिए गणेश की उपासना करते हैं। यह सबके लिए सर्व-मान्य देवता हैं।

सगळां री मत अेक सारीसी नीं व्है । १३३१५

सबकी मति एक समान नहीं होती ।

—जितने मुंड हैं उन सबके भीतर अपनी-अपनी स्वतंत्र मति है,इसीलिए हर व्यक्ति का स्वभाव भिन्न होता है । अंततःमानवोचित तो यही है कि हर व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की भावना, उसके विचार और उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व का सम्मान करना चाहिए ।

सगळा ई आप-आपरी रोट्यां हेटै खीरा देवै । १३३१६

अपनी-अपनी रोटियों के नीचे सभी अंगार रखते हैं ।

दे.क.सं.८१४

सगळा ई आप-आपरै भाग री खावै । १३३१७

सभी अपने-अपने भाग्य की खाते हैं ।

—भाग्यवादियों की मान्यता के अनुसार कि भाग्य अटल है,हर व्यक्ति अपने भाग्य के अनुसार ही कमाई कर पाता है । भाग्य के आगे किसी का भी वश नहीं चलता ।

—संसार में जो भी व्यक्ति दुखी है,गरीब है,वह अपने भाग्य की वजह से है और जो सुखी और समृद्ध है वह अपने भाग्य की वजह से है ।

मि.क.सं.८१९,८२४

पाठा : सैंग आप-आपरै भाग री खावै । सै आप-आपरै करमां री खावै ।

सगळा ई आप-आपरौ काढ़्यौ पांणी पीवै । १३३१८

सभी व्यक्ति अपना-अपना निकाला हुआ पानी पीते हैं ।

—हर व्यक्ति अपनी मेहनत का खाता है,अपनी मेहनत का पीता है,फिर वह क्यों किसी से दबे और क्यों किसी से डरे ?

—अपने परिश्रम की कमाई खाने वाला,हर व्यक्ति स्वतंत्र है,उस पर किसी का रुआब नहीं चल सकता ।

पाठा : सै आप-आपरै काढ़बोड़ौ पांणी पीवै ।

सगळा ई आप-आपरौ मूंडौ चीकणौ करणी चावै । १३३१९

सभी अपना-अपना मुँह चिकना करना चाहते हैं ।

—मनुष्य स्वभावतः मतलबी है, उसे फकत अपनी ही चिंता लगी रहती है और दूसरों के प्रति वह सदा उदासीन रहता है।

—मनुष्य स्वयं अपनी ही सुख-सुविधा के लिए उद्यत रहता है। दूसरों की कीमत पर स्वयं अच्छा खाना-पीना चाहता है।

मि.क.सं.८२७

पाठा : सै आप-आपरौ मूंडौ मीठौ करणी चावै।

सगळा ई ऊगंता नै पूजै। १३३२०

सभी उगते हुए को पूजते हैं।

—हर व्यक्ति उगते हुए सूर्य को ही अर्घ्य देता है, उसकी उपासना करता है। अस्त होते हुए सूरज की कोई परवाह नहीं करता।

—जिस व्यक्ति का सितारा बुलंद है, सभी उसकी ओर दौड़ते हैं। उससे ही आशा रखते हैं।

—जो अधिकारी पद पर होता है, उसीकी सब खुशामद करते हैं, सेवा-निवृत्त कर्मचारियों की ओर किसी का भी ध्यान नहीं जाता।

पाठा : सै कोई ऊगता नै पूजै।

सगळा ई अेक बेल रा तूंबा है। १३३२१

सभी एक बेल के तुंबे हैं।

—जिस परिवार के सभी सदस्य एक-से बुरे और एक-से बिगड़ैल हों, उन पर कटाक्ष।

—ऐसा परिवार जो किसी के भी काम नहीं आये और उसके सभी सदस्य एक-से दुष्ट और पाजी हों।

पाठा : सै अेक ई बेल रा तूंबड़ा है।

सगळा ई कैवै आई-माई, कुण ई नीं सूंपै पाई। १३३२२

सभी कहते हैं आई-माई, कोई नहीं सौंपता पाई।

—सभी व्यक्ति अपने माँ-बाप या अपने बुजुर्गों का सम्मान तो दिखावटी तौर पर करते ही हैं, उन्हें पैसों के लेन-देन का अधिकार कोई नहीं सौंपना चाहता।

—बुजुर्गों की पारिवारिक विवशता को इस उक्ति में वाणी मिली है।

पाठा : सै कैवै आई-माई, कुण ई नीं सूंपै पाई।

सगळा ई खत राखलै तौ चूल्हौ कुण फूंकै ? १३३२३

सभी दाढ़ी रखलें तो चूल्हा कौन फूँके ?

—चूल्हा फूँकने वाले को दाढ़ी जलने का डर रहता है। इसलिए वह रसोई बनाने से कतराना चाहता है। यदि सभी दाढ़ी वाले इस तरह कतराने लगें तो कौन चूल्हा फूँकना चाहेगा ? फिर रसोई क्योंकर बनेगी ? घरवालों की भूख कैसे मिटेगी ?

—घर या समाज में अपनी-अपनी जिम्मेदारी सभी को निबाहनी चाहिए, कतराने या बहाना बनाने से काम नहीं चलता।

सगळा ई घालै तौ धरै कठै, सगळा ई नटै तौ खावै कांई ? १३३२४

सभी डालें तो धरे कहाँ, सभी नटे तो खाये क्या ?

—साधु या फकीर घर-घर भिक्षा माँगने के लिए फेरी लगाते हैं। यदि उन्हें हर घर से कुछ-न-कुछ मिल जाय तो रखने की ठौर ही कहाँ है ? यदि सभी इनकार कर जाएँ तो वे खाएँ क्या ? पर वास्तव में ऐसा होता नहीं। कुछ घरों से भिक्षा मिलती है और कुछ घरवाले मना कर देते हैं।

—मानवीय संसार में न तो सभी उदार होते हैं और न सभी इतने खुदगर्ज कि दूसरे की परवाह ही न करें। समन्वय के आधार पर ही संसार का काम चलता है।

पाठा : सगळा देवै तौ राखूं कठै, सै नटै तौ जावूं कठै ?

सगळा ई नटै तौ जावै कठै, सगळा घालै तौ मैलै कठै ?

सगळा ई चीकणी चोटी रा लागू व्है। १३३२५

सभी चिकनी चोटी के लिए लालायित रहते हैं।

दे.क.सं.४४११

पाठा : सै चीकणी चोटी रा लगवाळ व्है।

सगळा ई चूकै, पण चुगलखोर नीं चूकै। १३३२६

सभी चूकते हैं, पर चुगलखोर नही चूकता।

दे.क.सं.४४२१

सगळा ई पाडा मारकणा नीं व्है। १३३२७

सभी पाड़े मारने वाले नहीं होते।

—सभी व्यक्ति बदमाश नहीं होते, जिस प्रकार कि सभी पाड़े मारने वाले नहीं होते।

—सभी व्यक्ति दुष्ट और दुराचारी नहीं होते।

सगळा ई फूल महेस चढ़ै। १३३२८

सभी फूल महेश पर चढ़ते हैं।

—महादेव ही एक ऐसे औघड़ देवता हैं जिन्हें वनस्पति के सभी फूल चढ़ते हैं। वे किसी फूल से परहेज नहीं करते।

—जो अधिकारी या बड़ा नेता किसी भी गरीब-अमीर या छोटे-बड़े व्यक्ति के बीच भेदभाव नहीं रखे और सभी से दिल खोलकर मिले, उसके लिए।

पाठा : सै ई फूल़ महेस चढ़ै।

सगळा ई बैठनै सूवै, ऊभौ-ऊभौ कुण ई नीं पड़ै। १३३२९

सभी बैठकर सोते हैं, खड़ा-खड़ा कोई नहीं पड़ता।

—हर व्यक्ति अपनी भलाई के काम में पूर्णतया सतर्क रहता है, कोई भी जान बूझकर गफलत नहीं करता।

—हर व्यक्ति अवसऱ के अनुकूल काम करता है और अपने भले-बुरे में खूब समझता है।

दे.क.सं.१४१७

पाठा : सैंग समझै, बैठनै सूवै। सै बैठा-बैठा सूवै, ऊभौ कोई नीं पड़ै।

सगळा ई मंगळ मनावै, आधण ऊरवा कोई नीं आवै। १३३३०

सभी मंगल मनाते हैं, अदहन में ऊरने कोई नहीं आता।

आधण = अदहन = आग पर चढ़ा हुआ गर्म पानी जिसमें दलिया, दाल, खीच की कूटी हुई बाजरी और चावल आदि पकाते हैं। ऊरणौ = डालना।

—जिस व्यक्ति के लिए शुभ-कामनाओं की तो भरमार हो, पर सहयोग की वेला कोई पास तक न फटके। उसकी मनोव्यथा इस उक्ति में व्यंजित हुई है।

—जो व्यक्ति काम की वेला तो दूर रहें और मौज-मस्ती में सबसे आगे, उन पर कटाक्ष।

सगळा ई मां रौ काचौ दूध पीयौ । १३३३१

सभी ने ही माँ का कच्चा दूध पिया है ।

—हर व्यक्ति चाहे गरीब हो चाहे अमीर, चाहे छोटा हो, चाहे बड़ा सभी अपनी माँ का कच्चा दूध पीकर ही युवा होते हैं, बूढ़े होते हैं ।

—हर व्यक्ति में कुछ-न-कुछ कमजोरी होती है ।

—संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, जिसमें अवगुण न हों ।

—मनुष्यों से भूल होना तो स्वाभाविक ही है, क्योंकि सभी ने अपनी माँ का कच्चा दूध ही पिया है ।

सगळा ई रांम-रांम अेक सरीखा नीं करै । १३३३२

सभी राम-राम समान रूप से नहीं करते ।

—अभिवादन के सभी तरीके सहज और अकृत्रिम नहीं होते ।

—किसी मे मन की सच्ची भावना रहती है तो किसी में दिखावटीपन । किसी में व्यंग्य तो किसी में चुनौती । किसी में सम्मान तो किसी में रुआब । किसी में सहानुभूति तो किसी में ईर्ष्या ।

सगळा ई सुपातर, कुपातर अेक, सोनै रै थाळ तांबा री मेख । १३३३३

सभी सुपात्र, कुपात्र एक, सोने के थाल में ताँबे की मेख ।

—किसी परिवार में या किसी बारात में या किसी उत्सव आयोजन में सभी भले और सज्जन व्यक्ति हों, सुपात्र हों, पर एक व्यक्ति के अपवाद होने पर, यानी उसके कुपात्र या बदमाश होने पर सोने के थाल में जैसे ताँबे की मेख लग गई हो । एक की बुराई से सभी बदनाम हो जाते हैं ।

सगळा ई स्वारथ रा सीरी । १३३३४

सभी स्वार्थ के साथी हैं ।

—दुनिया में जितनी रिश्तेदारी नजर आती है, जितना मेलजोल दिखलाई पड़ता है, जितनी मित्रता या आत्मीयता झलकती है, यह सब ऊपरी मुलम्मा है, भीतर सिर्फ एक ही निरावृत्त सच्चाई है—वह है स्वार्थ की भावना । कोई भी व्यक्ति इससे परे नहीं होता ।

—दुनिया में कोई भी संबंध है, वह निखालिस स्वार्थ के अलावा दूसरा कुछ नहीं।

पाठा : सै सुख रा सीरी। सै स्वारथ रा सीरी।

सगळा कांम कळ रा, गीत गळा रै बळ रा। १३३३५

सभी काम कल के, गीत गलों के बल के।

—सभी काम तरकीब और बुद्धिमानी से संपन्न होते हैं। यंत्र के काम में भी मनुष्य की सूझ-बूझ आवश्यक है। बुद्धिमानी के अभाव में काम बिगड़ता है। इसी तरह गीत भी गले की ताकत से गाये जाते हैं। सुरीले कंठ के साथ-साथ उसकी क्षमता भी अपरिहार्य है।

पाठा : सै कांम कळ रा, गीत गळा रै बळ रा।

सगळा कांम वगत परवांणै सोहै। १३३३६

सभी काम समय के अनुसार अच्छे लगते हैं।

—किसी भी काम की स्वतंत्र या निरपेक्ष अहमियत नहीं होती। वह समय से जुड़ा रहता है। समय के अनुरूप ही काम की महत्ता स्थापित होती है।

पाठा : सै कांम बखत परवांण ओपै।

सगळा कैवै बापड़ौ, कुण ई नीं सींवै कापड़ौ। १३३३७

सभी कहते हैं बापड़ा, कोई भी नहीं सीता कापड़ा।

बापड़ा = जिस बच्चे का बाप मर गया हो। बेचारा।

कापड़ौ = कापड़ा = कपड़ा।

—संवेदना जताने में तो कोई कमी नहीं रखता पर कपड़े सिलवाने की जरूरत पड़ती है तो सभी मुँह मोड़ लेते हैं।

—हमदर्दी प्रकट करने में सभी माहिर, सहयोग करने में सभी काहिल।

सगळा घर तौ गार सूं ईं नीपीजै। १३३३८

सारे घर तो मिट्टी से ही लीपे जाते हैं।

—गार यानी मिट्टी का अर्थ इतना व्यापक है कि इसमें चूना व सीमेंट आदि सबका समावेश हो जाता है। समय के साथ शब्दों के आयाम बदलते रहते हैं।

—हर मकान की चहार-दीवारी में कुछ-न-कुछ तो बुराइयाँ अथवा दुर्गुण तो होते ही हैं। कोई घर इनसे अछूता नहीं रहता।

सगळा पापड़ वेल्योड़ा है। १३३३९

सभी पापड़ बेले हुए है।

—जिस व्यक्ति ने काम के नाम पर कोई काम नहीं छोड़ा, पर कामयाबी किसी में भी न मिली हो।

—अत्यधिक अनुभवी व्यक्ति के लिए।

सगळा पेच सिखा दिया, अेक मिन्नी आळौ राख लियौ। १३३४०

सभी दाँव-पेंच सिखा दिये, एक बिल्ली वाला रख लिया।

संदर्भ-कथा : अपने नन्हे शावक को छोड़कर सिंहनी चल बसी तो उसकी धर्म-बहिन एक बिल्ली ने उस शावक को पालना शुरू किया। वह भी उसे मौसी-मौसी कहकर पुकारता। बिल्ली बड़ी खुश होती। इस आशा से कि बड़ा होने पर बहिन का बच्चा शिकार में उसका यथोचित हिस्सा रखेगा, वह उसे तरह-तरह के दाँव-पेंच सिखाती कि हाथी का शिकार कैसे किया जाता है और सूअर के शिकार में क्या सावधानी बरतनी पड़ती है? बंदरों का शिकार करते समय पेड़ पर चढ़ने की जरूरत नहीं, तने के पास हत्थल पटककर जोर से दहाड़ने पर ही वे डर के मारे नीचे गिर पड़ते हैं। हिरणों के पीछे भागने की कतई जरूरत नहीं, एक ठौर दहाड़ने से ही उनके पाँव चिपक जाते हैं। शेर का बच्चा बड़ा होता गया और शिकार के गुर अपनी मौसी से सीखता गया। एक दिन किसी बात पर तकरार हुई तो सिंहनी के बच्चे ने दहाड़कर मौसी को ही दबोचना चाहा। पर चालाक मौसी नौसिखिये भानजे को क्या निकालकर देती! भानजे ने ज्यों ही पंजा उठाया, मौसी तो पेड़ पर चढ़ती ही नजर आई। भानजा टुकुर-टुकुर ताकता रह गया। पेड़ पर उससे नहीं चढ़ा गया तो उसने लार टपकाते पूछा, 'मौसी! यह दाँव तो मुझे सिखाया ही नहीं?'

तब बिल्ली मौसी ने खिल-खिल हँसते कहा, 'प्यारे भानजे, यदि यह दाँव तुझे सिखा देती तो मैं तेरे क्रूर पंजे से बचती भला? अब तेरी राह चला जा, नहीं तो अपने मामा सूअर को बुलाकर तेरा पेट चिरवा दूँगी। अभी तो मैं कई दाँव पेंच जानती हूँ। चला जा, वरना तेरी ताकत के चिथड़े-चिथड़े हो जाएँगे।'

भानजा लज्जित होकर वहाँ से चुपचाप चलता बना।

—हिंसा को बुद्धि से परास्त किया जा सकता है।

—अपने प्राणों की सुरक्षा का सभी को अधिकार है।

सगळा माईत अेक सारीसा नीं व्है। १३३४१

सभी माँ-बाप एक जैसे नहीं होते।

—सभी माँ-बाप एक जैसे वात्सल्य के पुतले नहीं होते। कोई बच्चों के लिए क्रूर भी होते हैं, उन्हें बात-बात पर पीटते हैं। कोई उदात्त व उदार होते हैं तो कोई अधम और निकृष्ट भी। कोई बच्चों पर अपने प्राण निछावर कर देते हैं तो कोई उन्हें यातना देने में भी कसर नहीं रखते। जिस तरह माँ-बाप की सूरत दूसरों से नहीं मिलती तो उनके स्वभाव भी परस्पर नहीं मिलते।

सगळा सगा सारीसा नीं व्है। १३३४२

सभी समधी समान नहीं होते।

—समधी ही क्यों, कोई भी व्यक्ति दूसरे से नहीं मिलता। न सूरत में और न स्वभाव में। कोई समधी दरिया-दिल होते हैं, तो कोई मक्खीचूस। कोई समधी निपट स्वार्थी तो कोई जबरदस्त उपकारी। कोई समधी तनिक भी लोभी नहीं होता तो कोई लोभ-लालच का ही प्रतिरूप होता है।

सगळा स्वांग आवै पण बोहरा वाळौ स्वांग नीं आवै। १३३४३

सभी स्वाँग आते हैं पर बोहरे वाला स्वाँग नहीं आता।

—जिंदगी में सभी पापड़ बेलने आते हैं पर यह बोहरे वाली झीनी कला समझ में नहीं आती। मेहनत करने में दस बोहरों से बाजी मार लें, पर कलम से गला काटने की कला लाख समझने पर भी समझ में नहीं आती। और उनकी यह झीनी कला भी कहाँ समझ में आती है कि वे पानी तो छानकर पीते हैं पर असामियों का लहू बिन छाने ही पी जाते हैं। हम तो पसीना बहाकर भी पेट नहीं भर पाते और वे पेढ़ी पर बैठे-बैठे ही लाखों का वारा-न्यारा करते रहते हैं।

—न जेब में अनगिनत रुपये हों और न बोहरे का स्वाँग आये।

सगळी ऊमर दिल्ली में रह्या पण भाड़ ई झोंकी। १३३४४

सारी उम्र दिल्ली में रहे पर भाड़ ही झोंकी।

—बेशऊर व्यक्ति पर कटाक्ष कि वह कहीं भी जाय, अपना गँवारपन नहीं छोड़ सकता।

—अभागे व्यक्ति के लिए कि वह अपना भाग्य कहीं भी आजमाने जाय, वही ढाक के दो पात। वह सोने की खान में रहकर भी अपना पेट शायद ही भर सके।

सगळी बातां खोटी, खरी दाळ रोटी। १३३४५

सारी बाते खोटी, खरी दाल रोटी।

—संसार में धर्म-पुण्य की, मोक्ष की, निर्वाण की, ज्ञान-विज्ञान की, ईश्वर-परमात्मा की, यश-अपयश की सारी बातें बेकार हैं, व्यर्थ थूक उछालना है। इस संसार में एकमात्र सच्चाई यही है कि अपने-अपने पेट के लिए अपनी-अपनी दाल-रोटी का इंतजाम होना परमावश्यक है।

पाठा : सै बात खोटी, सिरै दाळ रोटी।

सगळी रांमायण सुणनै बूझ्यौ के सीता कुण ही ? १३३४६

सारी रामायण सुनकर पूछा कि सीता कौन थी ?

—जो व्यक्ति कानों से सुनकर भी कुछ नहीं समझे, उस पर कटाक्ष।

—केवल सुनना ही पर्याप्त नहीं होता, समझकर आत्मसात करना भी जरूरी है।

सगळी रात पीस्यौ अर ढकणी में अंवास्यौ। १३३४७

सारी रात पीसा और ढकनी में अँवारा।

दे.क.सं.६४५

सगळी रात भजन गाया, तड़कावू लाल-केसियौ गायौ। १३३४८

सारी रात भजन गाये, सवेरे लाल-केशिया गाया।

लाल-केसियौ = एक प्रकार का अश्लील लोकगीत, जिसमें प्रेम का खुला वर्णन है।

—किसी सत्कर्म का बुरा अंत होने पर।

—बना-बनाया काम बिगड़ जाने पर।

दे.क.स ६४८

, पाठा : सैंग रात हरजस गाया पण साकळै लाल-केसियौ गायौ।

सगळी रात रांमांण बांची, पण ठा नीं पड़ी के रांम कुण हौ? १३३४९

पूरी रात रामायण बाँची, पर पता नहीं कि राम कौन था?

दे.क.सं.६४६

सगळी रात रूना पण मर्‍यौ अेक ई कोनीं। १३३५०

सारी रात रोये पर मरा एक भी नहीं।

दे.क.सं.६४७

पाठा : सैंग रात बरकिया पण मर्‍यौ अेक ई नीं।

सगळै ही माटी रा चूला छै।–व.२३६ १३३५१

सर्वत्र मिट्टी के चूल्हे हैं।

दे.क.सं.३८९०,१३३३८

सगळै ई करमां री बाजै। १३३५२

सर्वत्र कर्मों के साज बजते हैं।

—भाग्यवादियों की यह धारणा भी अटल है कि इस जन्म में जो कुछ भी गुजरता है, वह पिछले कर्मों का ही परिणाम है और अगले जन्म में जो कुछ भी बीतेगा, वह वर्तमान जीवन के कर्मों का ही फल होगा।

—कर्मों की धुन ही सर्वत्र बजती है।

सगळै ई कागला तौ काळा। १३३५३

सभी जगह कौए तो काले ही हैं।

—दुनिया में कहीं भी जाओ मनुष्य तो सर्वत्र धन कमाने के पीछे ही लगा रहता है।

—जिस तरह कौओं का काला रंग नहीं बदलता उसी तरह मनुष्य का यह स्वभाव भी नहीं बदलता। कौआ जहाँ घाव या मैला देखेगा, वहीं चोंच मारेगा, इसी तरह मनुष्य भी जहाँ धन देखेगा, वहीं मुँह मारेगा।

—मनुष्य तो सर्वत्र ही बुरे हैं।

—किसी समूह या जाति-विशेष पर भी यह कहावत प्रयुक्त होती है।

सगळै ई चोखै कांमां में विघन तौ आवै ई। १३३५४

सर्वत्र अच्छे कार्यो मे विघ्न तो आता ही है।

—विघ्न-बाधाओं के डर से अच्छे काम छोडने नही चाहिएँ ,विघ्न तो आते ही रहते हैं। उनका सामना करना चाहिए।

—यदि विघ्न-बाधाओं से घबराकर अच्छे काम छोड़ दिये गये तो ससार में अच्छे कामों का टोटा ही पड़ जाएगा।

सगळै गुण री बूझ है। १३३५५

सभी जगह गुणो की पूछ होती है।

—मनुष्य के रूप-रंग व कुल-जाति की नही,उसके गुणों की पूछ होती है।

दे क.सं ३६०७,३६०९

सगळै बणिक-बुध सूं कांम नीं सरै। १३३५६

सभी जगह बनिक-बुद्धि से काम नही बनता।

—सारे काम लाभ की दृष्टि से ही नही होते,कई काम ऐसे होते हैं जहॉ त्याग या उदारता भी बरतनी पडती है।

—काम के अनुसार ही बुद्धि का उपयोग होना चाहिए। प्रेम की जगह प्रेम। लोभ की जगह लोभ।

सगळौ गांव लटै, कोई घालै कोई नटै। १३३५७

सारा गॉव लटता है, कोई डालता है, कोई नटता है।

—बिना किसी भेद-भाव के सारे गॉव में भिक्षा के लिए घूमना पड़ता है। कोई खुशी से देता है तो कोई नाक-भौंह सिकोड़ कर मना करता है। दे उसका भी भला और न दे उसका भी भला।

सगां री गाळियां, घी री नाळियां। १३३५८

सगे-समधियो की गालियॉ, घी की नालियॉ।

—अपने परिजन किसी बुरी नीयत या ईर्ष्या से नहीं बल्कि भले की खातिर ही नाराज होते हैं, गालियाँ देते हैं। उस पर एतराज करना उचित नहीं।

—जो अपना होता है, वही बुरा भला कहता है।

मि.क.सं.१०९२७

सगाई ठगाई है। १३३५९

सगाई ठगाई है।

सगाई = संबंध, रिश्ता। विवाह के पूर्व रिश्ता तय करना।

—पारस्परिक प्रेम के बिना कोई भी संबंध स्थापित करना एक तरह से ठगना ही तो है।

—रिश्ता कायम करते समय दोनों पक्ष एक-दूसरे से कई बातें छिपाकर रखते हैं। यह एक तरह का छल-कपट नहीं तो क्या है?

सगाई दो जणा, पण ब्याव सौ जणा। १३३६०

सगाई के समय दो जने, पर ब्याह की वेला सौ जने।

—सगाई जैसे सामान्य काम में दो जनों से ही काम चल जाता है पर विवाह जैसे महत्त्वपूर्ण काम के लिए सौ बारातियों का मजमा जरूरी है।

—छोटे काम का छोटा आयोजन, बड़े काम का बड़ा आयोजन।

सगी नै बाई कहै सो ओस्याळै थकै। १३३६१

समधिन को बाई कहे सो दबाव के कारण।

ओस्याळौ = आश्रित।

—आश्रित मनुष्य ही नैतिक दबाव के कारण अतिरिक्त विनम्रता प्रकट करता है, यह उसकी मजबूरी है।

—एहसान का बोझ आदमी को निर्बल करता है।

सगी रौ, म्हारौ हेज नहीं छै, मात्रे ही रौ हेज छै।–व.३७४ १३३६२

समधिन व मुझ में प्यार नही है, मात्र दिखावे का प्यार है।

—लौकिक व्यवहार में शिष्टाचार का निबाह करना आवश्यक बंधन हो जाता है। आंतरिक प्रेम न भी हो, फिर भी औपचारिक संबंध रखना जरूरी होता है।

—समाज में रहना है तो सामाजिक रीति-रिवाजों का पालन अनिवार्य होता है।

सगी सासू सूं रूसणौ अर थोबण वूजी पगां लागूं। १३३६३

सगी सास से रूठना और धोबिन माई पालागन।

—उस नासमझ व्यक्ति पर कटाक्ष जो अपने-परायों का भी भेद नहीं समझे।

—आपसी मन-मुटाव के कारण अपनों से मन फट जाता है। फटा हुआ मन कहीं-न-कहीं तो जुड़ना चाहता ही है, तब वह ऊँच-नीच की परवाह नहीं करता।

सगौ कीजै जांण अर पांणी पीजै छांण। १३३६४

समधी कीजे जानकर और पानी पीजे छानकर।

दे.क.सं. ३३२७

सगौ सगा री जड़। १३३६५

सगा सगे की जड़ है।

—समधियों को हमेशा एक दूसरे से प्रेम रखना चाहिए, ताकि पारस्परिक सहयोग से दोनों की समृद्धि हो सके।

—एक समधी की शोभा दूसरे पर निर्भर करती है। दोनों के हितचिंतन से ही समधियों का परिवार फलता-फूलता है।

सगौ समरथ कीजिये, जद-कद आवै काज। १३३६६

समधी समर्थ कीजिये, जब-तब आये काम।

—समर्थ व्यक्तियों से संबंध स्थापित करने पर दोनों को लाभ है।

—बड़े व्यक्तियों का रिश्ता कभी व्यर्थ नहीं जाता, समय पर काम ही आता है।

सट्टै री कमाई अर तेल री मिठाई। १३३६७

सट्टे की कमाई और तेल की मिठाई।

—दोनों ही खराब हैं, इनसे बचना चाहिए, अन्यथा कुछ-न-कुछ नुकसान होने की आशंका हमेशा बनी रहती है।

—बुरी चीजों से दूर रहने की नसीहत।

सठ सनेह, जीरण वसन, जतन करंतां जाय। १३३६८
सजन सनेह, रेसम लछा, घुळत-घुळत घुळ जाय ॥

शठ स्नेह, जीर्ण वसन, यत्न करें तो जाय।
सज्जन स्नेह, रेशम-लच्छे, घुले-घुले और घुल जाय ॥

—यह सीख या नसीहत देने वाली कहावत है, दुष्ट व्यक्ति का स्नेह और जीर्ण वसन यत्न करने पर भी बचते नहीं, नष्ट होते ही हैं। इसके विपरीत सज्जन व्यक्ति का स्नेह और रेशम के धागे परस्पर मिलने से अधिक घुलते रहते हैं।

सत में सायबो है।–भी.३५० १३३६९

सत में साहिब है।

—ईश्वर न देव-लोक में है, न आकाश में है, न इंद्रलोक में है, उसका शाश्वत निवास तो केवल सत्य के बीच है। न उसे सत्ता से मतलब और न माया से। यह तो सत्य का आदिम निवास छोड़कर कहीं नहीं जाता।

—ईश्वर की प्रेरणा से ही सत्कर्म किये जाते हैं। उसका सान्निध्य न हो तो हर वक्त बुरी-ही-बुरी बातें सूझती रहती हैं।

सतरां नै सायां अर ते'रां नै बधायां देवता फिरै। १३३७०

सत्रह को पेशगी और तेरह को बधाई देते फिरते हैं।

—जो बहुधंधी मनुष्य अपने ही गोरख-धंधे में उलझा रहता है। उसे न तो एक घड़ी की शांति है और दो घड़ी का चैन।

—जिस बंदे का अनेक व्यक्तियों से संपर्क हो, उसके लिए।

पाठा : सतरै सायां अर सौ बधायां।

सत री घणी गेडियां रळगी। १३३७१

सत्य की अनेक लाठियाँ गुम हो गईं।

—सत्य का कोई एक स्वरूप निर्धारित नहीं होता। समय के साथ उसके स्वरूप बदलते रहते हैं। कल का सत्य आज निरर्थक हो जाता है। और आज का सत्य कल बदल जाएगा।

—सत्य का दबदबा समय के साथ बदलता रहता है।

सतरै गांव अर अेक लखारी। १३३७२

सत्रह गॉव और एक लखारी।

—सत्रह गाँवों में लाख के चूड़े-चूड़ियाँ बनाने वाली एक ही लखारी हो तो उसके लाभ का कुछ पार है भला।

—जब सारे लाभ का अधिकारी एक ही व्यक्ति हो।

—जिस व्यक्ति का बाजार में एकाधिपत्य हो।

सतरै धोबा धूड़। १३३७३

सत्रह मुट्ठी धूल।

—जो बडा व्यक्ति किसी के काम न आये, सत्रह मुट्ठी धूल उछालकर उसका स्वागत करना चाहिए।

—जिस काम में किंचित् भी रुचि न हो, उसके पीछे भी सत्रह मुट्ठी धूल फेंककर उससे छुटकारा पा ही लेना चाहिए।

—दो व्यक्तियों के बीच अच्छी दोस्ती हो, किसी कारण-वश टूटने लगे तो सही मित्र यह उक्ति काम में लेता है।

सतरै पटेलां बिगड़ै गांव। १३३७४

सत्रह पटेलो से बिगड़े गॉव।

—जिस तरह अधिक दाइयाँ जच्चा के लिए घातक हैं, उसी तरह ज्यादा व्यवस्थापकों से काम बिगड़ता है। जरूरत के मुताबिक ही व्यवस्थापक होने चाहिएँ।

—बहुतेरे नेता अपने विभिन्न स्वार्थों से देश को रसातल में पहुँचा देते हैं।

—किसी भी काम में अधिक व्यक्तियों का दखल निःसंदेह नुकसान पहुँचाता है।

सतलड़ी तौ अबै धकै लाधसी। १३३७५

सतलड़ी तो अब आगे मिलेगी।

—साझे का काम संपन्न होने से पहिले जब आपस में झगड़ा हो जाय तो लाभ की उम्मीद रखना ही व्यर्थ है।

—सहकारी काम में लाभ का बँटवारा होने से पहिले ही झमेला उत्पन्न हो जाय तो उस काम को डूबना ही है। सतलड़ी के लाभ की आशा अब सपने में भी नहीं हो सकती।

सतवंती तौ फिरै बांझड़ी, फूहड़ जिण-जिण हारी। १३३७६

सतवंती तो फिरे बाँझड़ी, फूहड़ जन-जन हारी।

—देश की आजादी के बाद कुछ ऐसा ही उलट-फेर हो रहा है। जाने किसकी हाय लगी है? जाने किसका ऐसा पुण्य फला है कि सती-साध्वी औरतें तो निपट बाँझ की नाईं इधर-उधर डोल रही हैं और फूहड़ एक के बाद एक बच्चा जन रही है। अपनी आशाएँ जरूरत से ज्यादा पूरी कर रही है।

—जिस व्यवस्था में सत्यवादियों की कोई पूछ न हो और दुनिया भर के झूठे मौज मना रहे हों, वह व्यवस्था कितने दिन चल सकेगी?

सतहीणा सिरदार मतहीणा राखै मिनख। १३३७७

सत्वहीन सरदार, मतिहीन रखें मानुस।

—समाज या देश के सिरमौर जो सत्वहीन हो चुके हैं, जिनका विवेक सर्वथा नष्ट हो गया है, वे चुन-चुनकर मति-मंद लोगों को स्थापित कर रहे हैं, तब उस समाज और देश का क्या भवितव्य होगा, वह दिन के उजाले की नाईं साफ है कि उस समाज या देश का अधःपतन अपरिहार्य है। उसे कोई बचा नहीं सकता।

पूरा सोरठा इस प्रकार है :

सतहीणा सिरदार, मतहीणा राखै मिनख।

अस आंधौ असवार, रांम रूखाळौ राजिया॥

—कवि ने अपने सेवक राजिया को संबोधित करते हुए समाज के उस भवितव्य की ओर इशारा कर दिया है कि जब घोड़ा अंधा हो और घुड़सवार भी अंधा हो तो उस समाज को बचाने वाला केवल ईश्वर ही है।

सती माता कांई दीसै? धणी तौ मरग्यौ, म्हैं बळूं, टाबरिया रूळता दीसै। १३३७८

सती माँ क्या दिख रहा है? कि पति तो मर गया, मैं जल रही हूँ, बच्चे बर्बाद होते दिख रहे हैं।

—चिता पर जलती सती से लोग समाज की भविष्यवाणी सुनना चाहते हैं कि माँ तुम्हें जो चमत्कार दिखाई दे रहा है, हमें बताकर कृतार्थ करो। माँ वास्तव में सच बोलने वाली है, उसे जो भी दिखाई दे रहा है उसे बेबाक बता रही है—मेरा पति तो दिवंगत हुआ और मैं थोड़ी ही देर में भस्म हो जाऊँगी। पीछे मेरे बच्चों को सँभालने वाला कोई नहीं है, वे अनाथ बच्चे निश्चित रूप से बर्बाद हो जाएँगे। उसे तो बस यही साफ-साफ दिख रहा है।

—चमत्कारी लोगों को भी केवल अपने स्वार्थ की ही चिंता लगी रहती है, दूसरों के बारे में उन्हें जाने-अजाने कोई सुधि नहीं रहती।

सती रा गाभा झीर, वेस्या रै रेसम रौ चीर। १३३७९

सती के वस्त्र झीर-झीर, वेश्या के रेशम का चीर।

—जिस समाज की बुरी व्यवस्था के कारण भले, नेक और सज्जन व्यक्ति दुख में छटपटा रहे हों और लुच्चे, लफंगे और दुराचारी मौज मना रहे हों, आखिर उस व्यवस्था का अंत संभव है कि नहीं. क्या यही ढाँचा हमेशा चलता रहेगा?

सती सराप देवै नीं अर छिनाळ रौ लागै नीं। १३३८०

सती शाप देती नही और छिनाल का शाप लगता नहीं।

—सती-साध्वी स्त्री किसी के लिए भी मन में दुर्भावना रखती नहीं और इसके विपरीत छिनाल औरतों की दुर्भावना फलती नहीं, इसलिए किसी भी प्रकार के अनिष्ट की संभावना निरर्थक है।

—सज्जन व्यक्ति किसी के लिए भी अहितकारी भावना नहीं रखते और दुष्ट व्यक्तियों की ईर्ष्या या डाह का कोई अर्थ नहीं है।

सद कमाई खावणी। १३३८१

सत कमाई खानी चाहिए।

—जिससे मति भ्रष्ट होने की आशंका नहीं रहती। बुरी कमाई का काला धन मनुष्य के मन को काला कर देती है।

—यदि संतोष की महिमा है तो मनुष्य को सुकर्मों से ही जरूरतें पूरी करनी चाहिएँ, ताकि उसकी लालसाएँ नहीं बढ़ें।

सदा दिवाळी संत रै, आठूं-पौ'र आणंद। १३३८२

सदा दीवाली संत के, आठों-पहर आनंद।

—गृहस्थ के लिए तो वर्ष में एक बार ही दीवाली का त्योहार आता है, तब वह आनंद में विभोर हो जाता है। घर में दीयों का उजाला करता है। पटाखे छोड़ता है। पर संत के लिए तो हर दिन ही दीवाली है। वह सदा सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

—संत दुख को भी सुख मानकर संतुष्ट रहते हैं।

सदा न जग में जीवणौ, सदा न काळा केस। १३३८३

सदा न जग में जीना, सदा न काले केश।

—जानते हुए भी मनुष्य सर्वथा अजान बना हुआ कि उसका जीवन नश्वर है, मरने के अगले क्षण में ही उसके होंठों से स्मित मुस्कान हमेशा के लिए छिन जाएगी ? वह जानकर अबूझ बना हुआ है कि उसका यौवन जर्जर बुढ़ापे में बदल जाएगा। यौवन के प्रतीक उसके कजरारे केश सफेद हो जाएँगे। दाँत गिर जाएँगे। सारी क्षमताएँ देखते-देखते क्षीण हो जाएँगी। इस सत्य को भूलना ही मनुष्य के सब दुखों की जड़ है। इसलिए इस सत्य को प्रतिक्षण याद रखते हुए उसे सत्कर्मों की निष्कंटक राह पर ही हमेशा चलना चाहिए।

सदा न बरसै बादळी, सदा न सांवण होय। १३३८४

सदा न बरसे बादली, सदा न सावन होय।

—इसलिए चौमासे में जब भी बादली बरसे मनुष्य को चाहिए कि बादली की एक बूँद भी व्यर्थ नहीं जाय। बल्कि बरसे हुए पानी का अधिक-से-अधिक सदुपयोग होना चाहिए। इसलिए कि बादल हमेशा नहीं बरसेंगे और न यह हरा-भरा सावन ही हमेशा स्थिर रहेगा।

—अवसर का उचित लाभ उठाने वाला मनुष्य ही जीवन में सफल होता है। अवसर का अनुचित लाभ उठाना मनुष्य के लिए श्रेयस्कर नहीं है।

सदाबाई सांवळा के कोयलां रौ वौपार। १३३८५

सदाबाई साँवली कि कोयलों का व्यापार।

सदा बाई = किसी भी एक औरत का नाम।

—कोयलों के व्यापार में मुँह पर कालिख तो पुतती ही है, उससे बचना कतई संभव नहीं।

—किसी भी धंधे का असर तो संबंधित व्यक्ति पर पड़ता ही है।

सदावंत इकसार दिन कोनीं रैवै। १३३८६

हमेशा दिन एक से नही रहते।

—यह कहावत दुतरफा आश्वस्त करती है। जो अभावग्रस्त व्यक्ति दुखों के बीच पला है वह भी यह सोचकर आश्वस्त होता है कि दुख के ये दिन हमेशा नहीं रहेंगे। कभी तो इस जीवन में सुख की छाया छितरायेगी। इसके विपरीत जो व्यक्ति सुख के झूले में झूल रहा है वह भी इस उक्ति के संदेश से सतर्क होता है कि ये अच्छे दिन भी हमेशा रहने वाले नहीं है। किसी का भी अहित नहीं करना चाहिए। अपना आपा नहीं खोना चाहिए। हो सके तो इन अच्छे दिनों में किसी का भला ही करना चाहिए।

सदावंत चांनणी रातां को हुवै नीं। १३३८७

हमेशा चाँदना राते नही होती।

—जब प्रकृति के लिए भी हमेशा चाँदनी राते नही रहतीं, तब मनुष्य के लिए चाँदनी रातें सदैव कैसे रह सकती हैं ?

—अच्छे दिन हमेशा नही रहते, इसलिए इस बीच दूसरों के दुख में कुछ मदद हो सके तो अवश्य करनी चाहिए। यदि मनुष्य ही मनुष्य के काम नहीं आएगा तो और कौन आएगा ? इसलिए सुख की चाँदनी को कुछ-न-कुछ बाँटते रहना चाहिए।

सदा होत री जोत। १३३८८

होने की हमेशा जोत रहती है।

—होने के नाम पर चाहे धन हो, चाहे जायदाद हो और चाहे सत्ता पर अधिकार हो, होने की हमेशा दुंदुभि बजती है, सभी उसका जयगान करते हैं।

—हर व्यक्ति के पास कुछ-न-कुछ होना चाहिए, वरना उसे कोई नहीं पूछता, उसकी तिनके जितनी भी कद्र नहीं होती।

—होने का दबदबा सभी मानते हैं।

सदिये-सदिये सिंवरिये बाबा गोरखनाथ। १३३८९

साँझ रहते-रहते बाबा गोरखनाथ का स्मरण करना चाहिए।

—जिससे अँधियारी रात सहज ही आसानी से कट सके।

—किसी भी काम को समय रहते संपन्न कर लेना चाहिए।

पाठा : ठाडै-ठाडै सिंवरिये बाबा बदरीनाथ।

सपनां-सपनां रात ढळै। १३३९०

सपने देखते-देखते रात ढल जाती है।

—जब तक जीते रहते हैं, ऐसा लगता है कि वास्तविक जिंदगी जी रहे हैं पर आँखें मुंदते ही समस्त जिंदगी एक सपने की नाईं लुप्त हो जाती है।

—सपने देखते-देखते पूरी रात भी ढल जाती है और सपने देखते-देखते सारा जीवन भी अंतिम साँस के साथ ढल जाता है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि यह सपना नहीं ढले तब-तक सुकर्मों में ही व्यस्त रहे तो मनुष्य जीवन सार्थक हो सकता है।

—महती आकांक्षाओं के सपनों की बजाय मनुष्य को चाहिए कि न्यूनतम जरूरतों पर ही अपना ध्यान केंद्रित करे।

सपना तौ सूतां केड़ै ई आवै। १३३९१

सपने तो सोने के बाद ही आते हैं।

—जो गाफिल की तरह सोया है, वही सपने देखता है और सवेरे जागने के बाद सपने बंद हो जाते हैं।

—जो अज्ञानी है वही सोते-जागते सपने देखता है। मोह-माया के सपने। बड़ी-बड़ी महत्त्वाकांक्षाओं के सपने। दुनिया को जीतने के सपने। लेकिन आँखें मुँदते ही सब सपने धरे रह जाते हैं। इसलिए मनुष्य को ऐसी जिंदगी जीनी चाहिए जो मायावी सपनों से मुक्त हो।

सपना में तौ चावै जठै पूग सकौ। १३३९२

सपने में तो जहाँ चाहें वहीं पहुँच सकते हैं।

—सपने में तो इंद्रलोक या चंद्रलोक की सैर की जा सकती है, लेकिन खाट या पलंग पर पड़े-पड़े ही। जागने पर पता चलता है कि वह तो एक ऐसी सैर थी, जिसके लिए पलंग तक छोड़ने की नौबत नहीं आई।

—जो व्यक्ति जाग्रतावस्था के सपनों में भी ऐसी सैर करता है, वह अंततः धराशायी होकर रहता है। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह सहज और सात्विक जिंदगी जिये जो लालसाओं से सर्वथा मुक्त हो।

सपना री सौ मोहर सूं कोडी सरै न कांम। १३३९३

सपने की सौ मोहर से कौड़ी बने न काम।

—मनुष्य को चाहिए कि मोहरों के सपने छोड़कर वास्तव में कुछ ऐसी कमाई करे, जिससे रोजमर्रा की जरूरतें पूरी हो सकें।

—सपने में हाथ लगी सौ मोहर से जागने पर एक कौड़ी की गर्ज भी पूरी नहीं होती, उसी प्रकार जागते समय जो लाखों-करोड़ों की माया एकत्रित की, आँखें मुंदने पर एक कौड़ी भी साथ नहीं ली जा सकती। इसलिए मनुष्य को जरूरत मुताबिक इतनी ही कमाई करनी चाहिए कि पीछे अधिक कूड़ा-करकट छोड़कर न जाना पड़े।

सपनै ई देखै सांखली ढींकाई रा रूंख। १३३९४

अब सपनों में ही देखेगी साँखली ढींकाई के पेड़।

सांखली = पँवार वंश की साँखला शाखा की कन्या।

ढींकाई = एक गाँव विशेष जो ओसियाँ के पास बसा हुआ था। अब उसका नाम बदलकर जोधपुर के भूतपूर्व महाराजा उम्मेदसिहजी के नाम से उम्मेदनगर रख दिया है।

—जब कोई व्यक्ति किसी को जबरदस्ती अपने गाँव से बेदखल कर दे और वह आजीवन उस गाँव के हिलते पेड़ों को न देख सके।

—जब दो शक्तिशाली आदमियों के बीच ठन जाये तो अधिक ताकतवर सामने वाले को चुनौती देता है कि उसमें ऐसी बिताएगा कि वह अपने गाँव की झाड़ियाँ वापस क्या देख ले!

सपनै री सौ, परतख री अेक। १३३९५

सपने की सौ, प्रत्यक्ष की एक।

—सपने की सौ मोहरों की बजाय प्रत्यक्ष एक मोहर ज्यादा उपयोगी है, जो सौदा-सूत लेने में जब चाहें, तब काम आ सकती है। लेकिन सपने की सौ मोहरों से तो नमक की एक डली भी नहीं खरीदी जा सकती।

—आदमी को हमेशा व्यावहारिक ढंग से वास्तिकता का आकलन करना चाहिए कि सपने कभी फलीभूत नहीं होते। आखिर निरावृत वास्तविकता से सामना करने पर ही सच्चाई का पता चलता है।

सपनै सालावास, काग उडावौ करण सी। १३३९६

सपने में सालावास, काग उड़ाओ करण सी।

सालावास = लूनी जंकशन की ओर जाते हुए, जोधपुर से दूसरा स्टेशन। गाँव का नाम है, सालावास।

—अपनी हठधर्मिता की वजह से करणसिंह को सालावास से हाथ धोना पड़ा था। वापस सपने में वह उसकी झाँकी क्या देख ले?

—हठधर्मिता के कारण किसी भी मनुष्य का पतन अवश्यंभावी है।

सपनौ तौ काच सूं ई नाजक व्है। १३३९७

सपना तो काच से भी नाजुक होता है।

—मामूली ठेस लगने पर काच के टुकड़े हो जाते हैं। लेकिन सपना तो काच की अपेक्षा अधिक कोमल होता है, टूटने पर उसका कोई अस्तित्व ही शेष नहीं रहता। जबकि काच के टूटे टुकड़े तो प्रत्यक्ष नजर आते हैं।

—किसी के भी सपने तोड़ना, बहुत बड़ा अपराध है।

सपळोट्या रौ कांई तौ छोटौ अर कांई मोटौ। १३३९८

साँप के बच्चे का क्या तो छोटा और क्या बड़ा।

—दुश्मन या दुष्ट छोटा हो या बड़ा, भूलकर भी उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। पता नहीं वह कब किसी अँधेरे क्षण में डसले!

—न साँप पर भरोसा करना चाहिए और न दुश्मन पर चाहे वह छोटा ही क्यों न हो।

सपूत अेक ई भलौ अर कपूत सात ई खोटा। १३३९९

सपूत एक ही भला और कपूत सात भी खोटे।

—सपूत एक भी सारे कुनबे या सारे समाज को उबार सकता है, जाने कितनों का भला कर सकता है, पर कपूत तो सात मिलकर भी कुछ नही कर सकते, उलटे हानि पहुँचाने में एक से बढ़कर एक साबित हो सकते हैं।

पाठा: सपूत तौ सौ ई भला अर कपूत अेक ई खोटौ।

सपूत तौ पाड़ौसी रौ ई चोखौ। १३४००

सपूत तो पड़ोसी का भी अच्छा।

—सपूत किसी के भी घर जन्मे, वह सबके लिए ही ठीक है, उससे किसी को हानि नही पहुँच सकती।

—सपूत की दरकार सर्वत्र होती है और कपूत से तो घरवाले भी कतराते हैं।

सपूत री कमाई में सगळां रौ सीर। १३४०१

सपूत की कमाई मे सबका साझा।

—सपूत के मन में अपने-पराये का भेद नही रहता, वह परायों को भी अपना समझता है। इसलिए उसकी कमाई से हर व्यक्ति कुछ-न-कुछ आशा रखता है।

सपूत रै अेक पीढ़ी, कपूत रै सौ पीढ़ी। १३४०२

सपूत के एक पीढ़ी, कपूत के सौ पीढी।

—सपूत रिश्ते में चाहे जितना दूर हो सभी उससे निकटता स्थापित करना चाहते हैं और कपूत रिश्ते में चचेरा भाई क्यों न हो, उससे कोई रिश्ता रखना नहीं चाहता।

—सपूत को दूर वाले भी अपना समझते है और कपूत को सगे-संबंधी भी दूर रखना चाहते हैं।

सपूत सगळां नै वाल्हौ। १३४०३

सपूत सबका प्रिय होता है।

—कपूत अपना भी हो तब भी अखरता है और सपूत दूर होते हुए भी सबको अपना लगता है। सभी उसकी संगत के लिए लालायित रहते हैं।

सपूत सोनार रै अर कपूत कलाळ रै। १३४०४

सपूत सोनार के और कपूत कलाल के।

दे.क.सं.१७८४

सपूत सौ पीढ़ी ई नैड़ौ। १३४०५

सपूत सौ पीढ़ी भी नजदीक।

—सपूत सौ पीढ़ी दूर होने पर भी सबको एकदम नजदीक लगने लगता है।

—सपूत से संबंध स्थापित करके हर व्यक्ति स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है।

सफळता रौ मूळ, विसवास। १३४०६

सफलता का मूल, विश्वास।

—हालाँकि दुनिया में सर्वत्र छल-कपट और धोखा-ही-धोखा है, फिर भी एक-दूसरे पर विश्वास किये बिना संसार का कारोबार ही नहीं चलता।

—जो आदमी किसी का विश्वास नहीं करता, उसकी सफलता भी संदिग्ध है। अविश्वासी आदमी खुद अकेला ही काम कर सकता है, वह दूसरों से काम ले नहीं सकता, इसलिए उसे बड़ी कामयाबी हासिल नहीं हो सकती।

सबर मोटी है। १३४०७

सब्र बड़ा है।

—मनुष्य की भूख सब्र से मिटती है, भोजन से तो कुछ देर के लिए शांत होती है।

—लालसाओं का गुलाम कभी सफल नहीं हो सकता और सब्र के शाहंशाह को कोई हरा नहीं सकता।

सबर रौ फळ मीठौ। १३४०८

सब्र का फल मीठा।

—दो भाइयों के बीच या दो मित्रों के बीच तनाजा पड़ने पर हितैषी लोग समझाते हैं, बार-बार समझाते हैं फकत इसी उक्ति का सहारा लेकर कि सब्र का फल मीठा होता है। जो सब्र रखेगा, वही लाभ में रहेगा।

सब री मावड़ सांझ। १३४०९

सब की माई साँझ।

—दिन भर काम करके थके हारे मजदूर, किसान, कर्मचारी या व्यापारी साँझ पड़ते ही आराम महसूस करते हैं। माँ की गोद जैसा सुखद अनुभव करते हैं। और साँझ अपनी तारों जड़ी नीली ओढ़नी फैलाकर सबको माँ की नाईं दुलराती है।

सबळ महेली, निबळ पीव, घर में ई मेवास। १३४१०

सबल महिला, निर्बल पति घर में ही मेवास।

मेवास = लुटेरों या डाकुओं के रहने या छिपने का सुरक्षित स्थान।

—हमेशा अबला कहलाने वाली नारी जब सबला हो जाती है और उसकी तुलना में पति कुछ निर्बल मालूम पड़ता है तो घर चोर-डाकुओं की गुफा के उनमान तनावग्रस्त हो जाता है। आत्मीयता की ठौर कलह और झगड़े की नौबत आ जाती है।

सबळां निबळां ऊजड़ वाट। १३४११

सबल निर्बल ऊजड़ राह।

—सबल हो चाहे निर्बल, सबके लिए मर्यादा की राह छोड़कर ऊजड़ मार्ग अपनाना संगत नहीं है।

—मर्यादा के मार्ग का अतिक्रमण करना किसी के लिए भी न्यायोचित नहीं है।

सबळी बांह भायां री। १३४१२

सबल बाँह भाइयों की।

—यदि सहयोग करना चाहें तो भाइयों की सशक्त भुजा का कोई मुकाबला नहीं कर सकता।

—आफत-विपदा की वेला भाइयों की सबल बाँहें ही काम आती हैं।

सबसूं अळियौ अर नांव सैणौ। १३४१३

सबसे बदमाश और नाम सरल।

—नाम के विपरीत लक्षण या प्रकृति।

सबसूं पैली तौ सिरी-गणेस ई व्है। १३४१४

सबसे पहिले तो श्री-गणेश ही होता है।

—मनुष्य के सभी मांगलिक कार्यों की शुरुआत 'श्री-गणेश' से ही होती है।

—कोई भी शुभ-कार्य गणेश-भगवान के बिना आरभ ही नहीं होता।

सब सूं पैली मनवार ई पांणी री। १३४१५

सबसे पहिले मनुहार ही पानी की।

—पृथ्वी, पहाड़ और वनस्पति के पहिले सर्वत्र पानी-ही-पानी था। पानी से ही समूची सृष्टि उत्पन्न हुई है, इसलिए सभी प्राणियों के जीवन हेतु सर्वोपरि महत्त्व पानी का ही है। घर में कोई भी अतिथि प्रवेश करता है तो सबसे पहिले पानी की ही मनुहार की जाती है। आकाश से पानी बरसने की खुशी सबसे ज्यादा होती है। हवा में पानी हो तो वह कितनी सुहानी लगती है! मनुष्य और मोती का मूल्य ही पानी पर निर्भर करता है। अंतिम समय में मनुष्य को पानी ही पिलाया जाता है। पानी की महिमा का कोई पार नही है।

सब सूं बड़ौ रूपरांम! १३४१६

सब से बड़ा रूपराम!

—बाकी सारे देवी-देवता तो मन बहलाने के लिए अपनी-अपनी जगह ठीक ही हैं, पर राम-रुपये बिना किसी को एक पल के लिए भी चैन नही मिलता। यह सब देवों से बडा देव है। इसलिए मनुष्य रात-दिन इसी के दर्शन हेतु लालायित रहता है।

सब सूं भली चुप्प। १३४१७

सबसे भली चुप।

—बात-चीत या संवाद-विवाद से शायद कुछ-न-कुछ तकरार हो सकती है। बात बढ़ते-बढते कुछ भी अनिष्टकारी घटित हो सकता है पर चुप से तो सपने में भी झगडा नहीं होता। चुप का सकारात्मक पहलू बहुत लाभकारी है।

सबसूं भलौ छड़ौ, हांडी राखै न घड़ौ। १३४१८

सबसे भला छड़ा, हँड़िया रखे न घड़ा।

—अकेले व्यक्ति के सुख का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। और इस बात की डींग भी सबसे अधिक छड़ा आदमी ही हाँकता है। इसलिए कि वह रात-दिन अपनी आँखों से गृहस्थियों के अनेक संकट देखता है। कानों से उनके दुख-दैन्य की बातें सुनता है कि आज अमुक औरत तीन बच्चों के साथ कुएँ में गिर पड़ी और अमुक पुरुष की लाश पेड़ से टँगी हुई झूल रही थी। छड़े व्यक्ति के लिए आत्म-हत्या का कोई आधार ही नहीं जुटता।

सब सूं मीठी भूख। १३४१९

सबसे मीठी भूख।

—भूख न हो तो मिठाई भी कड़वी लगती है और यदि भूख हो तो सूखी रोटी भी तिल-पट्टी की तरह मीठी लगती है।

—भूख हो तभी खाने का आनंद है, वरना पेट भरने की बेगार निकालनी है।

सब सूं मीठी माठ। १३४२०

सबसे मीठा मौन।

—दुनिया के अधिकांश झगड़े जीभ की वजह से होते हैं। यदि मनुष्य मौन रहने का अभ्यस्त हो जाय तो सर्वत्र अमन-चैन की बाँसुरी बजने लगे।

—भारत के अरण्य-वासी ऋषि मुनियों ने मौन के द्वारा ही ज्ञान की ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं। उस ज्ञान से मीठा तो शहद भी नहीं है।

सब सूं रिळमिळ चालिये, नदी-नाव संजोग। १३४२१

सबसे हिलमिल चालिये, नदी-नाव संयोग।

—तुलसी-बाबा की यह अमर वाणी आज जितनी प्रासंगिक है, इससे पहिले शतांश भी प्रासंगिक नहीं थी। मानो तुलसी-बाबा ने बीसवीं शताब्दी के बर्बर मनुष्य को ध्यान में रखकर ही इस दोहे की सृष्टि की। दुनिया में जाने कितने तरह के लोग हैं, सबकी अलग-अलग प्रवृत्तियाँ हैं। फिर भी परस्पर सुख-शांति के लिए सारे भेदभाव भुलाकर मेलजोल से रहना चाहिए। ठीक वैसा ही मेलजोल जो नदी और नाव के बीच होता है, तभी पार उतरना संभव है।

पूरा दोहा इस प्रकार है :

तुलसी इण संसार में भांति-भांति के लोग ।

सबसे हिलमिल चालिये, नदी-नाव संयोग ।।

सब सूं हेटै तौ जड़ ई व्है । १३४२२

सबसे नीचे तो जड़ ही होती है ।

—जड़ के बल-बूते पर ही कोई छोटा-बड़ा पेड़ पसरता है, झूमता है, लहराता है ।

—मनुष्य-समाज में भी जड़ की तरह नीचे दबे हुए लोग दुनिया के सारे वैभव को अपने बूते पर सँभाले हुए हैं, वरना यह दुनिया कब की पैंदे बैठ जाती ।

—असली काम करने वाले तो जड़ की तरह अदृष्ट रहते हैं और चालाक लोग बाजी मार ले जाते हैं ।

सभागिया नै जंगळ में ईं मंगळ, निरभागियौ बस्ती में ईं भूखां मरै । १३४२३

भाग्यशाली को जंगल में भी मंगल, अभागा बस्ती में ही भूखों मरे ।

—भाग्यवादियों की धारणा के अनुसार भाग्य प्रबल हो तो जंगल में मंगल की कोई कमी नहीं है और यदि भाग्य विमुख हो तो बस्ती के बीच भूखों मरने की नौबत आ जाती है । बस्ती ही क्यों, अभागा व्यक्ति तो महाभोज के बीच भी भूखा रह जाता है । अपना-अपना भाग्य है । उसे कोई बदल नहीं सकता ।

सभामिया री जीभ अर अभागिया रा पग । १३४२४

भाग्यशाली की जीभ और अभागे के पाँव ।

—भाग्यशाली की जीभ से ही सारे काम बन जाते हैं और अभागा पाँवों के बूते इधर-उधर भाग-दौड़ करके मुश्किल से अपना पेट भर पाता है ।

—भाग्यशाली मामूली जीभ हिलाकर करोड़ों के वारे-न्यारे कर लेता है और अभागा सारे दिन दौड़कर भी पेट पूरा नहीं भर पाता ।

सभागिया री बेटी जावै अर अभागिया रौ जंवाई । १३४२५

भाग्यशाली की बेटी जाती है और अभागे का दामाद ।

—भाग्यशाली की बेटी पहिले मरती है और अभागे का जामाता पहिले मरता है ।

—बेटी के मरने का दुख तो होता ही है, पर वह इतना दुर्दांत और भयंकर नहीं होता, जितना बेटी का वैधव्य। हिंदू समाज में विधवा का प्रताड़ित जीवन मौत से अधिक दारुण होता है।

पाठा : सभागिया री बेटी मरै, अभागिया रौ जंवाई।

सभागिया रै भूत कमावै। १३४२६

भाग्यशाली के भूत कमाते है।

—भाग्यशाली पेढ़ी में गद्दी पर बैठा-बैठा इतनी कमाई कर लेता है कि हजारों मनुष्य हमाली का काम करके भी उसका हजारवाँ हिस्सा भी नहीं कमा पाते। तब वे सोचते हैं कि भाग्यशाली को तो भूत कमा-कमाकर देते हैं, वरना ऐसी कमाई क्या मनुष्य-बंदे के वश की बात है ?

पाठा : भागवांन रै भूत कमावै।

सभागियौ खळां, अभागियौ हळां। १३४२७

सभागा खलिहान के समय और अभागा हल जोतने के समय।

दे.क.सं.३०४

सभा बिगाड़। १३४२८

सभा बिगाड़।

—भरी सभा के बीच में जो बेशऊर व्यक्ति उठकर चल दे, उसके लिए।

—जो उद्दंड बदमाश हो-हल्ला करके, सड़े-गले अंडे फेंककर या विरोधी नारे लगाकर सभा का रंग बिगाड़ते हैं, उनके लिए...।

समंद जैड़ा सगा अर वळै अलूणौ। १३४२९

समंदर जैसे समधी फिर भी अलौना।

—समुद्र की नाईं भाग्यशाली समधी भी बिना नमक की रसोई खिलाएँ तो इससे बड़े दुख और आश्चर्य की बात और क्या हो सकती है ?

—कंजूस रिश्तेदार के प्रति कटाक्ष जो समृद्ध होने पर भी किसी की कुछ भी सहायता न करे।

समझणिया री मौत। १३४३०

समझदार की मौत।

संदर्भ-कथा: अकबर बादशाह के दरबार में कलाकारों की पूछ होती थी। जब-तब गवैयों की महफिल होती रहती थी। एक बार हिंदुस्तान के बहुत बड़े गवैये की खातिर शानदार महफिल जमी। कुछ ही देर बाद अकबर बादशाह का सिर स्वतः झूमने लगा। तब तक सारे श्रोता अविचल बैठे रहे। वे टकटकी लगाये जहाँपनाह की ओर देख रहे थे। ज्योंही उनका सिर हिलने लगा, सभी श्रोताओं के सिर भी धीरे-धीरे झूमने लगे। बादशाह को बड़ी खुशी हुई की उसकी प्रजा और दरबारी गाने के कितने शौकीन हैं। गुणी की कद्र करना जानते हैं। बीरबल का सिर भी धीरे-धीरे हिलने लगा। बादशाह ने खुश होकर कहा, 'बीरबल, मुझे ऐसी आशा नहीं थी कि मेरी प्रजा और दरबारी संगीत के इतने शौकीन हैं। कद्रदान हैं।' बीरबल ने अदेर कुछ जवाब नहीं दिया तो अकबर बादशाह ने फिर उसकी राय जाननी चाही तो बीरबल ने बिना किसी लाग-लपेट के कहा, 'जहाँपनाह, वे आपके कद्रदान हैं, संगीत के नहीं। आपकी देखादेखी सभी श्रोताओं में सिर हिलाने की होड़ लग गई है।' बीरबल का जवाब सुनते ही अकबर का हिलता सिर भी अपने-आप स्थिर हो गया और अगले ही क्षण यंत्रचालित पुतलों की नाई, सबके सिर इस कदर हिलने बंद हो गये, मानो वे सभी काठ के बने हों। अकबर हैरान। बीरबल की बात तो कभी झूठी होती ही नहीं। जाने क्या सोचकर बीरबल ने गवैये को रोककर, बादशाह को बिना पूछे ही ऐलान कर दिया, 'खबरदार, अब किसी ने जहाँपनाह से पहिले या बाद में सिर हिलाया तो, उसी वक्त उसका सिर कलम कर दिया जाएगा। और काफी देर तक सिर की बात तो दूर किसी ने पलकें तक नहीं हिलाईं। गवैये का गाना और अधिक प्रभावकारी होने लगा। पर क्या मजाल कि आँखों की कोई पुतली भी हिल जाय। ऐसी असह्य खामोशी का माहौल था कि जैसे दरबार एक-दम सूना हो कि अकस्मात् एक बुजुर्ग से रहा नहीं गया तो वह जोर से दाद देते बोला, 'वाह! वाह! खुदा ने भी क्या गला इनायत किया है। अब सिर कलम भी हो जाय तो परवाह नहीं। जिंदा रहते कोई शख्स गाने का ऐसा आनंद उठाले तो और क्या चाहिए। मैं गाने का यह दर्द समझने के बाद चुप रह नहीं सकता। मेरा सिर हाजिर है, कलम करें या हलाल करें। जब तक हवा में गाने के शब्द गूँजते रहेंगे मेरा सिर हिलता रहेगा। माफ करियेगा, मैं मजबूर हूँ। समझदार को तो कदम-कदम पर मरना पड़ता है।'

अकबर बादशाह ने इशारे से अपने पास बुलाया, सिर कलम करवाने की बजाय उसे मोहरों की थैली पुरस्कार में दी।

—जो समझदार है, उसे सब दृष्टि से मरना पड़ता है। मूर्ख को कोई उलाहना नहीं देता। कोई भी काम बिगड़े तो समझदार को उलाहना। कोई काम संपन्न न हो तो समझदार की जिम्मेदारी। कहीं भी दंगा-फसाद भड़क उठे तो समझदार का उत्तरदायित्व। इसलिए कि समझ का ही सब दोष है।

पाठा : समझदार री भांत-भांत सूं मौत।

समझणै रा सोळै सीरी होवै। १३४३१

समझदार के सोलह साझेदार होते हैं।

—समझदार की बुद्धि चारों तरफ चौकस रहती है, मानो उसके बीसियों सलाहकार हों। वह अकेला सोलह व्यक्तियों की कमी पूरी करता है।

—बुद्धिमान व्यक्ति की सफलता देखकर हर कोई उसका साझेदार बनना चाहता है।

समझदार नै सोनौ अर मूरख नै जूत। १३४३२

समझदार को सोना और मूर्ख को जूते।

—समझदार आगे और भी अच्छे-अच्छे काम करे तो उसे प्रोत्साहित करने के लिए सम्मानित करना चाहिए, पुरस्कृत करना चाहिए और मूर्ख आगे गलती न करे, इसलिए उसे जूतों का दंड मिलना चाहिए, ताकि वह याद रख सके।

—समझदार से चूक हो जाय तो उसका नुकसान भी बड़ा होता है, इसलिए उस पर रुपयों का भारी जुर्माना करना चाहिए और मूर्ख को पिटाई करके ही छोड़ देना चाहिए।

समझ नै डंड। १३४३३

समझ को दंड।

—जो जितना ज्यादा समझदार है, उसे उतनी ही जिम्मेदारियाँ संभालनी पड़ती हैं। संयोग से काम बिगड़े तो उसे ही उलाहना दिया जाता है। मूर्ख को मूर्ख के नाते माफी मिल जाती है। समझदार खतरे के काम में सबसे आगे रहता है। चंदे में आगे रहता है। भोजन में

शिष्टाचार के कारण सबसे पीछे रहता है। उसे कदम-कदम पर अपनी समझ का खमियाजा भुगतना पड़ता है।

दे.क.सं.१३४३०

पाठा : समझ नै मार है।

समझ परवांण कमाई। १३४३४

समझ के अनुसार कमाई।

—हर व्यक्ति की समझ अलग-अलग होती है और वह अपनी समझ के अनुसार ही कमाई करता है।

—जितनी समझ,उतनी कमाई।

समझी रे वीरा समझी, नीं घणौ खावूं नीं कुबेळां बारै जावूं। १३४३५

समझी रे भाई समझी, न ज्यादा खाऊँ और न कुवेला बाहर जाऊँ।

दे.क.सं.३८५८

समझै सौ मरै। १३४३६

समझे सो मरे।

—मूर्ख व्यक्ति काम करना भी चाहे तो उसे मना कर दिया जाता है और समझदार व्यक्ति अपनी मजबूरी भी प्रकट करे तो भी उसे पूरी जिम्मेदारी सौंप दी जाती है। और जिम्मेदारी लेने पर वह हमेशा उसीका ध्यान रखता है। एक बार जिम्मेदारी मे काम करने पर उसे आगे भी कई जिम्मेदारियों का भार वहन करना पड़ता है। अपना काम करने के लिए वह बड़ी मुश्किल से समय निकाल पाता है।

मि.क.सं.१३४३०

समझ्यां लागौ बांण। १३४३७

समझा तभी बाण लगा।

दे.क.सं.९४०८

समदर अर नाडी री कांईं बराबरी। १३४३८

समंदर और तालाब की क्या बराबरी।

—'कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली' जैसी ही कहावत है। जब दो असमान व्यक्तियों की तुलना करने पर कही जाती है। कोई व्यक्ति समंदर-सा विशाल हृदय वाला हो, असीम उदार और वैसा ही गहरा हो और कोई नासमझी से उसकी बराबरी एक अति-सामान्य व्यक्ति से करे, तब...।

समदर डाक्यां केड़ै लंका याद आवै। १३४३९

समंदर पार करने के बाद लका याद आती है।

—भयंकर संकट में उबरने के बाद भी उसकी स्मृति मिटती नहीं। याद आने पर एक बार फिर उसकी कसक टीसने लगती है।

—बीते दुखों की तिक्त अनुभूतियाँ सुख के समय भी सताने लगती हैं।

समदर भर जाय, पण पेट नीं भरै। १३४४०

समदर भर जाता है, पर पेट नही भरता।

—समंदर भर जाता है, पर लोभी का पेट नहीं भरता।

—समंदर की लालसा मिट जाती है, पर मनुष्य की लालसाएँ कभी नहीं मिटतीं।

समदर में ई लाय लागै! १३४४१

समंदर मे भी आग लगती है!

—आश्चर्य चाहे जितना करलें लेकिन समुद्र में सचमुच आग लगती है, जिसके लिए अलग ही शब्द है बडवानल! पानी से ही आग बुझाई जाती है, किंतु जब उसमें ही आग लग जाय और वह भी समंदर में तो उसे क्योंकर बुझाया जा सकता है?

—जब किसी बहुत बड़े धनी व्यक्ति पर विपत्ति टूट पड़े, तब...।

—जब कोई बड़ा राजनेता या दुर्दम्य तानाशाह आफतों की लपटों में घिर जाय, तब ..।

समदर में कांईं नीं मावै। १३४४२

समंदर में क्या नही समाता?

—सुगंभीर और सहिष्णु व्यक्ति क्या नहीं सहन कर सकता ?

—समुद्र की तरह विशाल हृदय वाला व्यक्ति निंदा, आलोचना और प्रतिवाद सुनकर भी विचलित नहीं होता। सब अंदर-ही-अंदर जज्ब करता रहता है।

समदर में कांई संखां रौ तोटौ ! १३४४३

समंदर में क्या शंखों का टोटा !

—पृथ्वी से भी तिगुनी मात्रा में समंदरों का विस्तार है। उनमें मोती तो बिरले ही मिलते हैं, किंतु छोटे-बड़े शंखों से समंदर अटे पड़े हैं।

—समंदर के मोतियों की नाईं पृथ्वी पर विद्वान, उदार, नेक और पानी वाले इनसान बिरले ही मिलते हैं, अँगुलियों पर गिनने लायक, पर मूर्खों की संख्या शंखों का मुकाबला करे जितनी है—बेशुमार।

समदर में रैवणौ अर मगरमच्छ सूं बैर। १३४४४

समंदर में रहना और मगरमच्छ से बैर।

—समंदर में रहना है तो मगरमच्छ से समझौता करना ही पड़ेगा, उससे दबकर चलना पड़ेगा और वक्त जरूरत उसकी खुशामद भी करनी पड़ सकती है और भेंट-उपहार देने की नौबत भी आ सकती है। इसी प्रकार मनुष्यों के बीच रहना है तो राजा, ठाकुर, आतताई, सरपंच और नेताओं से बैर बसाने की बजाय उनसे मेलजोल रखकर ही रहा जा सकता है, अन्यथा नहीं।

—दुष्ट दादाओं के मुहल्ले में रहना है तो सिर ऊँचा नहीं रख सकते। उन्हें येन-केन-प्रकारेण खुश रखना ही होगा।

पाठा : समदर रौ बास अर मगरमच्छ सूं खेरौ।

समदर में लाय लागी अर परियां रै ओजगौ। १३४४५

समंदर में आग लगी और परियों का जागरण।

—दूसरों की विपत्ति में झूठी संवेदना प्रकट करने वालों पर कटाक्ष।

—दुर्भिक्ष या वैसी ही सार्वजनिक त्रासदी पर जब श्रीमंत वर्ग खामखाह चिंता व्यक्त करे, तब...।

समदर में सीर अर नाडोल्या में न्हावै। १३४४६

समंदर मे साझा और पोखर मे नहाये।

—जब कोई पहुँचा हुआ महात्मा गृहस्थियों की नाईं छोटे-मोटे हथकंडे करने लगे, तब...।

—बहुत बड़ा अधिकारी जब मामूली रिश्वत की खातिर ललचाने लगे, तब...।

समदर रौ के सूखै! १३४४७

समंदर का क्या सूखे!

—प्रकांड विद्वान का ज्ञान कभी खत्म नही होता।

—पहुँचे हुए महात्मा का अध्यात्म कभी क्षीण नही होता।

पाठा: सम्दर रौ भला कांई सूखै।

समदर सारू लूण री रसाळ! १३४४८

समंदर के लिए नमक की भेट!

—अव्यावहारिक और महामूर्ख व्यक्ति पर व्यग्य, जो समदर के लिए नमक का उपहार ले जाये।

—जिस काम का रचमात्र भी औचित्य न हो, उसके लिए।

समदर सूखै तौ ई गोडां तणौ कादौ। १३४४९

समदर सूखे तब भी घुटनो तक कीचड़।

—किसी बडे सेठ का दिवाला भी निकल जाय तब भी उसके पास काफी कुछ बच रहता है। गरीब की अपेक्षा तो वह समृद्ध है।

—राजाओं का राज्य छिनने पर भी वे उच्च वर्ग से तो बेहतर हैं ही।

पाठा: समदर सूखौ तौ ई गोडा सूदौ। सम्दर सूखै तौ ई गोडा-तणौ पांणी रैवै।

समय चूकियां कांईं पछतांणौ, कांईं बिरखा जद खेत सुखांणौ। १३४५०

समय चूक पुनि क्या पछताये, का वर्षा जब कृषि सुखाये।

—समय चूकने पर पश्चाताप करना उतना ही व्यर्थ है जितना खेत सूखने पर पानी बरसना।

—समय पर मिला सहयोग ही लाभप्रद होता है।

समरथ को नंह दोस गुसांईं। १३४५१

समरथ को नहिं दोस गुसाँईं।

—समर्थ या शक्तिशाली सामाजिक परंपराओं की परवाह नहीं करते। वे उलटा-सीधा, वैध-अवैध कुछ भी काम करें, उन्हें दोष नहीं लगता। बड़े आदमियों के बुरे कामों को जानते हुए भी लोग अनजान बन जाते हैं और उनके मुँह से एक ही अकाट्य तर्क निकलता है—समरथ को नंह दोस गुसांईं।

समळी हुती नै तीडां रौ साथ। १३४५२

चील थी और टिड्डियों का साथ।

—चीलों को टिड्डियों का भक्षण बहुत अच्छा लगता है। इन्हें खाने के लिए ये आकाश में खूब चक्कर काटती हैं, यदि संयोग से चीलों का साथ टिड्डी दल से हो जाय तो फिर क्या चाहिए!

—किसी व्यक्ति को मन-वांछित अचीता लाभ हो जाय, तब...।

—किसी दुष्ट व्यक्ति को संयोग से अप्रत्याशित शिकार हाथ लग जाय, तब...।

समेर री पूंद में दो डोरा हुवै। १३४५३

सुमेर की पूंद में दो डोरे होते हैं।

समेर = सुमेर = माला के सिर पर रहने वाला बड़ा मनका, जिसमें दो छेद होते हैं और उनमें दोहरा धागा पिरोया जाता है। पूंद = गुदा।

—श्रीमंतों को, मुखिया को और जिम्मेदार व्यक्ति को अधिक कष्ट उठाने पड़ते हैं।

—बड़ा बनने का कुछ-न-कुछ अतिरिक्त खमियाजा उठाना पड़ता है।

समै दीवाळी, पोकर सिनांन। १३४५४

दिवाली और पुष्कर का स्नान साथ ही आते हैं।

—कार्तिक की अमावस्या को दीवाली आती है। एक पखवाड़े के बाद पूनम, पुष्कर में नहाने का पुण्य दिवस। किसानों के घर खरीफ की फसलें भी इसी महीने मे आती हैं। इस तरह का शुभ संयोग भाग्य से ही जुड़ता है।

—भाग्य अनुकूल हो तो शुभ-संयोग जुड़ने में ढील नहीं होती।

समै नै निमौ है। १३४५५

समय को नमस्कार है।

—मनुष्य शक्तिशाली नहीं है,समय शक्तिशाली है। मनुष्य के लिए समय ही भाग्य है,समय ही एकमात्र सहयोगी है।

—समय का सयोग ही मनुष्य के लिए सबसे बडी नियामत है। सबसे बड़ा आशीर्वाद है। इसीलिए समय को शत्-शत् प्रणाम।

—तुलसी-बाबा ने भी समय की महिमा बडे सशक्त शब्दों में बखानी है :

तुलसी नर का क्या बड़ा, समय बड़ा बलवान।
काबा लूटी गोपिका, वही अरजुन वही बाण॥

समै बडौ के नर? १३४५६

समय ब्रड़ा कि नर?

—निश्चित रूप से नर की अपेक्षा समय बहुत बडा है। नर बड़ा होता तो गांडीव धनुष के रहते अर्जुन की आँखों के सामने लुटेरे गोपिकाओं को लूटकर नहीं ले जाते। समय की ताकत के सामने गाडीव और अर्जुन दोनो ही व्यर्थ हो गये। समय ने पलटा खाया तो तीन सौ वर्ष हिदुस्तान को गुलामी के शिकजे मे रखने वाले दुर्दम्य अंग्रेज यहाँ का एकछत्र आधिपत्य छोड़कर चलते बने। यह सब ममय की बलिहारी है—मनुष्य की नहीं।

समै बडौ बळवांन। १३४५७

समय बड़ा बलवान।

—समय की ताकत के सामने मनुष्य और हथियारों की ताकत कुछ भी माने नहीं रखती। समय का तिनका मनुष्य की तोप के टुकड़े-टुकड़े कर डालता है। मनुष्य के घुटने किसी के सामने टिकते हैं तो वह केवल समय के सामने ही। समय की शक्ति ही सर्वोपरि शक्ति है। जिसे कोई जीत नहीं सकता।

समै-समै री बात। १३४५८

समय-समय की बात।

—एक समय था जब लंका पर कुबेर का एक छत्र राज्य था। समय ने करवट बदली तो कुबेर को हराकर रावण ने सोने की लंका पर कब्जा कर लिया। फिर समय ने करवट बदली तो लंकाधिपति रावण को मुँह में डालने के लिए सोने का तुस भी नहीं मिला। बड़ी-बड़ी विचित्र बातें हैं—समय की। कभी रात बड़ी तो दिन छोटा। कभी दिन बड़ा तो रात छोटी।

समै-समै रौ मोल है। १३४५९

समय-समय का मोल है।

—हर समय का अपना-अपना महत्त्व है।

—समय के साथ-साथ नैतिक मान्यताएँ बदलती रहती हैं।

—समय का ही मोल है, मनुष्य का नहीं।

सरग-नरक कुण देखनै आयौ? १३४६०

स्वर्ग-नर्क किसने देखा?

—स्वर्ग-नर्क का कहीं स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। मनुष्य का वर्तमान संसार ही स्वर्ग-नर्क है, जो उसकी करनी पर ही निर्भर करता है।

—मनुष्य अपने वर्तमान जीवन में जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल उसे मिलता है और वही उसका स्वर्ग-नर्क है।

सरड़-फरड़ साळा री घांणी, आधौ तेल अर आधौ पांणी। १३४६१

सरड़-फरड़ साले की घानी, आधा तेल और आधा पानी।

—बहिन को सहयोग देने के लिए साले जिस घर में अपने पाँव जमाने आते हैं, अंत में उनकी लापरवाही से घर की व्यवस्था चरमराने लगती है। घर के कोल्हू से जो तेल निकलता है, उसमें आधा पानी मिला रहता है।

—जिस घर में सालों की हुकूमत हो वह घर अंततः पैंदे बैठ जाता है।

सरधा जिसी भगती। १३४६२

जैसी बिसात वैसी भक्ति।

—भक्ति का स्वतंत्र रूप से कोई मूल्यांकन नहीं होता। जिसकी जैसी औकात होती है, उसी के अनुसार वह भक्ति कर पाता है। भक्ति के निमित्त गरीब की एक कौड़ी, राजा की हजार

मोहरों जितना मूल्य रखती है। भक्ति के लिए समय भी अपनी सुविधा के अनुसार दिया जाता है।

मि.क.सं.१३३११

सरधा व्है तौ सिगरी, नींतर घरपूठ्यौ ई सही। १३४६३

औकात हो तो सपरिवार, नही तो घर का एक ही सही।

—अपनी औकात भूलकर मनुष्य को कोई काम नहीं करना चाहिए, अन्यथा वह कष्ट पाता है।

—यदि दिखावे के मोह में पड़कर आदमी कुछ भी काम करता है तो आखिर उसे पछताना पड़ता है।

—जो व्यक्ति अपनी हैसियत भूला, वह अपने जीवन की राह भूला।

सरपां रै किसी मासी? १३४६४

सॉपो के लिए कैसी मौसी?

—दुष्ट व्यक्ति न मित्रता का कोई लिहाज रखते हैं और न रिश्तेदारी का। उनके लिए तो स्वार्थ ही सर्वोपरि रिश्ता है।

—रिश्वतखोर व दुराचारी रिश्ते की मर्यादा नहीं समझते।

सरब सुखी संसार में कोई नीं व्है। १३४६५

सर्व-सुखी संसार मे कोई नही होता।

संदर्भ-कथा : किसी राजा के कानों में आखिर यह फुसफुसाहट पहुँची ही कि दुनिया में सर्व-सुखी कोई नहीं है। राजा को विश्वास नहीं हुआ तो उसने अपने विश्वस्त दीवान को बुलाकर पूछा, 'क्यों दीवानजी, इतने बड़े संसार में सर्व-सुखी कोई नहीं है?' दीवान तो हमेशा ऐसे प्रश्नों की तलाश में ही रहते हैं और बना-बनाया जवाब पेश कर देते हैं, 'दूर क्यों जाएँ अंदाता, आप से बड़ा सर्व-सुखी और कौन हो सकता है?' राजा ने आश्चर्य से कहा, 'मैं? सर्व-सुखी? आप से ज्यादा कौन जानता है कि राज के खजाने में कमी होने पर आप ही तो अमुक गाँव के सेठजी से रुपये लेकर आते हैं। फिर मैं सर्व-सुखी कैसे हुआ? मुझ से ज्यादा सुखी तो वे सेठजी हैं।' दीवान क्या जवाब देता, राजा की बात एकदम सही थी। राजा ने

आदेश दिया तो सेठजी को बुलाने के लिए उनके गाँव हरकारा भेजा। तेज ऊँट था सो तीसरे दिन सेठजी गुलाबी पगड़ी बाँधे दरबार में हाजिर हो गये। राजा ने भरे दरबार में उनकी माया का बखान करते हुए उनसे पूछा तो सेठ ने कहा, 'हुजूर ठीक फरमाते हैं। मैंने कई बार खजाने की पूर्ति की, पर मैं सुखी नहीं हूँ?' राजा ने तो सबके सामने प्रश्न पूछ लिया, पर सेठ को सबके सामने जवाब देने में कुछ हिचकिचाहट महसूस हुई तो राजा ने एकांत में मुलाकात की। सही बात बताते हुए सेठ की आँखें भर आईं। विगलित स्वर में बोला, 'आप तो सर्व-सुखी की बात पूछ रहे हैं, लेकिन मुझ-सा दुखी दुनिया में और कोई नहीं है। यह बात सेठानी जानती है, मैं जानता हूँ और मुनीम जानता है। इस दुख के मारे जब एक बार नींद उड़ जाती है तो वापस आती ही नहीं। मेरी यह अखूट माया मुनीम के लड़के भोगेंगे?' राजा ने अधीर होकर पूछा, 'क्यों, मुनीम के लड़के क्यों भोगेंगे, तुम्हारे अपने भी तो चार लड़के हैं।' सेठ नीची आँखें करके बोला, 'कहने को मेरे हैं, मेरी संपत्ति के हकदार वे ही हैं, लेकिन वास्तव में वे लड़के मुनीम के हैं। अंदाता के सामने झूठ कैसे बोलूँ? मेरी आखिरी इच्छा एकमात्र यही है कि अपनी सारी माया राज के खजाने में जमा करवाकर संन्यास ले लूँ। मेरे गुरुजी ने समझाया तो मैं समझ गया। मेरे खयाल से मेरे गुरुजी सरब सुखी हैं। मैं उन्हें आपके पास ही बुलाकर लाता हूँ। इस संसार में जो संतोषी है, वही सरब सुखी है। हम गृहस्थ लोग कभी संतोषी हो नहीं सकते, इसलिए सुखी भी नहीं हो सकते। मेरे गुरुजी के मुँह से चाँदनी-सी किरणें फूटती हैं। आप देखेंगे तो देखते रह जाएँगे।' और सचमुच राजा ने उसके चेहरे की ओर देखा तो देखता ही रह गया। चरण-स्पर्श करके वही बात पूछी तो गुरु का चेहरा तनिक फीका पड़ गया। सिर झुकाकर बोला, 'कोई दूसरा होता तो निःशंक जवाब देता कि मैं सर्व-सुखी हूँ, लेकिन राजा के सामने झूठ क्योंकर बोलूँ। आप गृहस्थ लोग कभी महसूस नहीं कर सकते कि मनुष्य जीवन पाकर कोई नारी के बिना एक रात भी सुखी रह सकता है? हमेशा पकड़े जाने का डर मन में बैठा रहता है। लाख कष्ट उठायें, मेरे खयाल से तो आप सभी गृहस्थी सर्व-सुखी हैं जो निश्चिंत होकर अपनी-अपनी मेड़ी में बिना भय के अपनी पत्नी के साथ सो सकते हैं।' गुरु के उत्तर से दोनों को बड़ी हताशा हुई। राजा को हमेशा के लिए विश्वास हो गया कि दुनिया में एक भी मनुष्य सर्व-सुखी नहीं है।

—संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिल सकता जिसे किंचित् भी दुख नहीं हो, चाहे वह राजा हो, चाहे धन-कुबेर या कोई महान योगी।

सरम कोई हाट-बजारां नीं वपराईजै । १३४६६

शर्म कोई हाट-बाजार में नही मिलती ।

—मानवीय गुण और उदात्त भावनाएँ यदि बाजार में मिलने लगे तो सारे अमीर-उमराव सर्व-गुण संपन्न हो जाएँ और बेचारे गरीब्र सारे गुणों से वंचित रह जाएँ । लेकिन मजेदार बात यही है कि ये बाजार में नहीं मिलते । साधना और मनोबल से अर्जित किये जाते हैं । जो हर मनुष्य के वश की बात नहीं ।

—निर्लज्ज व्यक्ति को संबोधित करके यह कहावत कटाक्ष रूप में सुनाई जाती है ।

दे.क.सं.१२६९३

सरम री बांधी सात घर करै । १३४६७

शर्म की बँधी सात घर करती है ।

—शर्म की मजबूरी के कारण कोई गलत काम करने पर. . ।

—कभी-कभार गुण भी अवगुण का काम करते हैं ।

—लाज का अधिक दिखावा करने वाली औरतें सच्चरित्र नहीं होतीं ।

सरम री मां गोडा रगड़ै । १३४६८

शर्म की माँ घुटने रगड़ती है ।

—लाज की मजबूरी के कारण कोई अवैध काम करना पड़े, तब. . . ।

—शर्म का अधिक दिखावा करने वाली औरतें वास्तव में वैसी नहीं होतीं । भीतर-ही-भीतर कई गुल खिले रहते हैं ।

सराई खीचड़ी दांतां चढ़ै । १३४६९

सराही खिचड़ी दाँतो से चिपकती है ।

—ओछे व्यक्ति की प्रशंसा करने से वह सिर चढ़ जाता है ।

—सोच-समझकर प्रशंसा करनी चाहिए । ओछा मनुष्य प्रशंसा को पचा नहीं पाता और वह बिगड़ जाता है ।

सराधां रौ आफरौ नोड़तां में उतरै । १३४७०

श्राद्ध का अफरा नवरात्रि मे उतरता है ।

—श्राद्ध पक्ष में मन-वांछित माल खाने को मिलता है और श्राद्ध समाप्त होते ही व्रत-उपवास रखने पड़ते हैं। डटकर अच्छा भोजन खाने की पिछली सारी कसर निकल जाती है।

—सुख के दिन हमेशा नहीं रहते, दुख का भी जीवन में अनिवार्य पक्ष है, इसे याद रखना चाहिए।

सराय वाळौ गिंडक। १३४७१

सराय वाला कुत्ता।

—जिसका कोई मालिक नहीं होता। कौन ध्यान रखे और कौन टुकड़े डाले।

—जिस व्यक्ति का कोई हमदर्द या सहयोगी नहीं हो।

—आवारा मनुष्य के लिए।

सरावण टाळ सरै कोनीं। १३४७२

नाश्ते के बिना चलता नही।

सरावण = सिरावण = नाश्ता, कलेवा। सराहना।

—जोधपुर जिले में नाश्ते या कलेवे को सिरावण कहते हैं। पर गोडवाड़ और साँचौर क्षेत्र में छोटी 'इ' की मात्रा लोप हो जाती है। मसलन—मिरच की जगह मरच व सिरावण की जगह सरावण या सरामण।

—किसान व मजूर जब काम करने के लिए सूर्योदय की वेला घर से बाहर निकलते हैं तो भूखे पेट को भरना अत्यावश्यक हो जाता है। यहाँ ब्रेकफास्ट व लंच का प्रचलन नहीं है। सवेरे डटकर खाने के बाद अथक परिश्रम के कारण दोपहर को वे फिर पूरी क्षुधा मिटाते हैं। 'दोपारी' या 'दोपारा' के पश्चात् शाम को ब्यालू। मेहनत तीन समय खाना माँगती है। मेहनत करने वालों के लिए कलेवा अपरिहार्य है।

—खाने की तरह मनुष्य को अपने काम की सराहना सुनना भी जरूरी है। जिससे प्रोत्साहन व ऊर्जा मिलती है। सरावण पेट की भूख है और सराहना मन की भूख है।

सरासेरी तौ यूं री यूं, पछै टाबर-टूबर व्हैगा क्यूं? १३४७३

सावचेती तो यों की यों, फिर नन्हें-मुन्ने हो गये क्यों?

—पूरी सावधानी रखने के बावजूद कोई काम बिगड़ जाय, तब...।

—सतर्कता रखते-रखते भी कुछ काम बिगड़ जाते हैं।

सरीर रौ औखद व्है, मन रौ नीं। १३४७४

शरीर की औषधि होती है, मन की नही।

—मानसिक रोग भी शारीरिक रोगों के अंतर्गत आ जाते हैं। मन के रोग हैं—लोभ, ईर्ष्या, लालसा, क्रोध, अहंकार इत्यादि, इनकी कोई औषधि नहीं है, कोई उपचार नहीं है। और ये रोग शारीरिक रोगों से ज्यादा घातक हैं। यहाँ विज्ञान एकदम असमर्थ है।

सरौता बिचाळै सोपारी। १३४७५

सरौते के बीच सुपारी।

—सरौते के बीच फँसी सुपारी की वही दशा होती है जो काल के जबड़े में फँसे प्राणी की होती है।

—दुष्ट के जाल में फँसा निरीह व्यक्ति।

—दो पत्नियों के बीच फँसे पति की वैसी ही दुर्दशा होती है जो सरौते के बीच फँसी सुपारी की होती है।

—वेश्या के चंगुल में फँसा व्यक्ति भी समय-समय पर कटता रहता है।

सलबै वेरौ अर बहू उतावळी। १३४७६

नजदीक कुआँ और बहू उतावली।

—फिर पानी भरने में क्या ढील, जब उतावली बहू को ऐसी सुविधा मिल जाय।

—कुशल व्यक्ति को साधनों की सुविधा मिल जाय तो काम की सफलता असंदिग्ध है।

दे.क.सं.८८५६

सळ टाळ सगाई नीं, भेद बिना चोरी नीं। १३४७७

जानकारी बिना सगाई नही, भेद बिना चोरी नही।

—जानकारी हो तो आगे-से-आगे संबंध स्थापित करने में कठिनाई नहीं आती। और कोई-न-कोई भेद हुए बिना चोरी नहीं होती।

—जब भी किसी के घर चोरी होती है दर्शकों के मुँह से पहली बात यही निकलती है कि भेद बिना चोरी हो ही नहीं सकती।

सळ सूं सळ दबै। १३४७८

शिकन से शिकन दबती है।

—अपने-अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए मनुष्य आपसी लिहाज और आपसी जानकारी के सहारे काम सलटा ही लेते हैं। यही सामाजिक संबंधों का सकारात्मक पहलू है।

—पारस्परिक मुरौवत से कई काम सहज ही संपन्न हो जाते हैं।

सलांम साटै मियांजी नै बेराजी क्यूं करणा? १३४७९

सलाम के बदले मियाँजी को नाराज क्यो करना?

दे.क.सं.११४००

सळू साटै भैंसौ। १३४८०

सलू के बदले भैसा।

सळू = गाय-भैंस के चमड़े से काटे हुए टुकड़े जो जूतों की सिलाई में काम आते हैं।

—चमड़े के छोटे टुकड़े की खातिर भैंसा कटवा डालना—निम्न स्वार्थ की पराकाष्ठा है।

—नगण्यतम लाभ के लिए भयंकर हानि कर बैठना।

सवाग तौ उधार नै रंडांपौ रोकड़ौ। १३४८१

सुहाग तो उधार और वैधव्य नकद।

—भाग्य,विधाता या ईश्वर से उधार लिये सुहाग का कोई भरोसा नहीं कि वह कब लौटाना पड़ जाये। पर वैधव्य की त्रासदी तो प्रत्यक्ष है और आजीवन भोगनी है।

—मनुष्य के जीवन में सुख-सुविधाएँ तो अनिश्चित हैं लेकिन दुख और विपदाएँ तो निश्चित हैं,प्रत्यक्ष हैं।

सवाद री ठाह तौ जीमणिया नै ई पड़ै। १३४८२

स्वाद का पता तो जीमने वाले को ही होता है।

—प्रत्यक्ष अनुभव से रहित जानकारी विश्वसनीय नहीं होती।

—सुख-सुविधाओं की अनुभूति तो भोगने वालों को ही होती है।

सवा मण दूध में काचर रौ अेक बीज पड़ै तौ ई मोकळौ। १३४८३

सवा मन दूध में काचरे का एक बीज ही बहुत है।

काचर = छोटी ककड़ी जो प्रायः स्वाद में कुछ खट्टी होती है। दूध में यदि इसका एक बीज भी पड़ जाय तो दूध फट जाता है।

—सवा मन दूध को बिगाड़ने के लिए काचर का एक बीज ही पर्याप्त है।

—थोड़ी-सी बुराई सारी अच्छाइयों का नाश कर देती है।

—एक व्यक्ति सारे परिवार, जाति या समाज को बदनाम करने के लिए काफी है।

—इससे मिलती-जुलती कहावत है—एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।

सवार रौ भूल्योड़ौ सिंझ्या रा घरै आवै तौ भूल्योड़ौ नीं बाजै। १३४८४

सवेरे का भूला हुआ साँझ को घर आ जाय तो भूला हुआ नही कहलाता।

—एक बार चूक करके आदमी जल्दी सुधर जाय तो वह कसूरवार नहीं कहलाता।

—जो व्यक्ति जल्द ही अपनी कमजोरियों का एहसास करले तो उसके परिष्कार में देर नहीं लगती।

—अपनी भूल स्वीकार करने में आदमी को तनिक भी संकोच नहीं रखना चाहिए।

—अपने मिथ्या हठ पर अड़े रहने वाला व्यक्ति यदि कुछ समय बाद ही अपनी भूल स्वीकार करले तो लोग उसे बुरा नहीं कहते।

सवा रिपिया री सीरणी अर ऊपर सूं फेर दीवेल। १३४८५

सवा रुपये की सीरनी और ऊपर से तेल।

—नकद रिश्वत देने पर भी कुछ अन्य भेंट चढ़ानी पड़े, तब ...।

—जब किसी व्यक्ति की दोहरी खुशामद करनी पड़े।

—जब एक बेगार के बाद दूसरी बेगार गले पड़ जाय, तब ...।

सवेळी पिणियार नै अवेळौ मेह। १३४८६

सुवेला की पनिहारिन और कुवेला का मेह।

—सवेरे की पनिहारिन और साँझ की बरसात अच्छी रहती है।

—साँझ या साँझ के बाद की वर्षा से दिन भर के काम में कोई व्यवधान नहीं होता और दूसरे दिन वर्षा के काम सुविधा से संपन्न हो जाते हैं। और सवेरे-सवेरे समय पर पनिहारिन पानी भर ले तो दिन भर की समस्या समाप्त।

—हर समय की अपनी उपयोगिता है और उसीके अनुसार उसका महत्त्व निर्धारित होता है।

ससिये री मींगणी रौ कांम पड़्यौ तौ वौ दौड़'र भाखर चढ़ग्यौ। १३४८७

खरगोश की मेंगनी का काम पड़ा तो वह अदेर पहाड़ पर चढ़ गया।

—ओछा व्यक्ति वक्त-जरूरत किसी के काम नहीं आता।

—कंजूस व्यक्ति से सहयोग माँगने पर साफ मना कर देता है या कहीं अन्यत्र चल देता है।

—निकृष्ट व्यक्ति से अकिंचन सहयोग की आशा रखना भी व्यर्थ है।

सस्तौ भाड़ौ अर पोकर जात। १३४८८

सस्ता भाड़ा और पुष्कर की यात्रा।

—कोई शुभ कार्य थोड़े में ही संपन्न हो जाय, तब...।

—कोई मन-वांछित काम सस्ते में निबट जाय तो उसकी बड़ी खुशी होती है।

सस्तौ रोवै बारंबार, मूंघौ रोवै अेकण बार। १३४८९

सस्ता रोये बारबार, महँगा रोये एक बार।

दे.क.सं.११४३८

पाठा: सूंघौ कळपै बारंबार, मूंघौ छीजै अेकज वार।

सहजां पाकै सौ मीठौ। १३४९०

सहज पके सो मीठा।

—समय पर स्वाभाविक रूप से जो फल पकता है, वह मीठा होता है।

—कोई भी काम प्राकृतिक रूप से अपनी वांछित अवधि में निष्पन्न हो तो वह सबसे अच्छा रहता है।

—सहजता का अपना ही विशिष्ट महत्त्व है।

सहजै चुड़लौ फूटियौ अर हळका व्हिया हाथ। १३४९१

सहज ही फूटा चूड़ा और हलके हुए हाथ।

चूड़ौ = चूड़ा = स्त्रियों द्वारा भुजाओं में पहिने जानी वाली चूड़ियों का वह समूह जिसमें छोटी चूड़ी कुहनी के पास तथा सबसे बड़ी चूड़ी बाहुमूल में रहती है। चूड़े प्रायः हाथी दाँत के अधिक प्रयोग में लिये जाते हैं। गरीब लोग रबड़ के चूड़े काम में लेते हैं।

—पति की मृत्यु पर चूड़े को पड़ोसी औरतें या परिवार वाली औरतें पत्थरों से तोड़ती हैं। इस उक्ति में उस औरत के हृदय-विदारक उद्‌गार हैं जिसका पति या तो लंबी बीमारी से पीड़ित था या जिसने रात-दिन कलह करके पत्नी का जीना हराम कर दिया था या वह नपुंसक ही था, इन तीनों स्थितियों में उस पत्नी का सुहाग कुछ भी माने नहीं रखता। पति की आकस्मिक मृत्यु पर सहज भाव से चूड़ा फूट गया तो और कुछ नहीं, हाथ तो उसके हलके हुए ही थे।

—किसी अचीती आकस्मिक विपत्ति से अपेक्षित नुकसान न हो, तब...।

सहर जंवाई फूल बराबर, गांव जंवाई आधौ। १३४९२
घर जंवाई गधै बराबर, मन पड़ै ज्यूं लादौ॥

शहर जामाता फूल बराबर, गाँव जामाता आधा।
घर जामाता गधे बराबर, जितना चाहा लादा॥

—दूरी संबंधों को प्रगाढ़ करती है और इसके विपरीत पास रहने से आत्मीयता घटती है।

—मनुष्य को अच्छे संबंध बनाने हों तो पास रहने की बजाय अलग रहना उचित है और व्यावहारिक भी।

सहर में धूंवौं मत करज्यौ, रांणीजी री आंख्यां दूखै। १३४९३

शहर में धूआँ मत करना, रानीजी की आँखे दुख रही हैं।

—श्रीमंतों की मामूली तकलीफ के लिए शहर के समूचे बाशिंदों को अपनी अधिकृत सुविधा से वंचित रखना कहाँ तक संगत है!

—बड़े व्यक्तियों की मनमानी पर तीखा कटाक्ष।

दे.क.सं.१२०४२

सहर री सौ दवा, गांव री अेक हवा। १३४९४

शहर की सौ दवा, गाँव की एक हवा।

—गाँव के विशुद्ध वातावरण को महिमा-मंडित करने के लिए।

—इस उक्ति का मर्म केवल इतना ही है कि गाँव का जीवन शहर के जीवन से हर हालत में बेहतर और सुविधा-जनक है।

सह्यरौ दियां तौ टाबर ई थड़ियां करै। १३४९५

सहारा देने पर तो बच्चा भी खड़ा हो जाता है।

—मानव-समाज सहयोग और सहारे पर ही निर्भर करता है।

—मनुष्य को चाहिए अपने से निर्बल या कमजोर आदमियों को वक्त-जरूरत सहायता दे ताकि वह स्वावलंबी बन सके।

सहू सरीखौ साथ, अै बामन नै बीजा वांणीया।—व.३३१ १३४९६

इन सबका साथ समान, ये बामन और दूसरे बनिये।

—बामन तो जब-तब माँगते रहेंगे और बनिये कुछ-न-कुछ दाँव-पेंच लड़ाते रहेंगे। ऐसे साथ की बजाय तो साथ न होना ही बेहतर है।

—हर व्यक्ति का साथ लाभदायक नहीं होता।

सां

सांईजी रोवौ क्यूं के रांमजी सूरत ई अैड़ी घड़ी। १३४९७

सॉईजी रोते क्यो हो कि रामजी ने सूरत ही ऐसी घड़ी।

दे.क सं *१२२६

सांई दो सींगड़ा देवै तौ ई कबूल। १३४९८

सॉई दो सींग भी दे तब भी मजूर है।

—आफत-विपदाओं से उत्पीड़ित व्यक्ति की मजबूरी कि वह कुछ भी सहने को तैयार है क्योंकि वह मुसीबतें सहने का आदी हो गया है।

—ईश्वर जो भी कष्ट दे, उसे सहने के अलावा दूसरा चारा ही क्या है, तब रोने-रीकने की बजाय खुशी के साथ ही उसे कबूल करना चाहिए।

सांई नै साच वाल्हौ। १३४९९

सॉई को सॉच प्यारा।

—ईश्वर न धनी को प्यार करता है, न वीरों को और न राजा-महाराजाओं को, उसे तो केवल सत्यवादियों से प्यार है।

—ईश्वर भक्तों की अपेक्षा सच बोलने वालों को अधिक चाहता है।

सांई रा सौ खेल। १३५००

सॉई के सौ खेल।

—ईश्वर को खेल बदलते देर नहीं लगती, इसलिए कि वह सैकड़ों खेल जानता है। कब कौनसा खेल खेलने लग जाय, कुछ पता नहीं चलता। उसीके खेलों का प्रभाव संसार की गतिविधियों पर पड़ता है और वे साँई के इशारे पर ही संचालित होती हैं।

सांई रा सौ खेल, कठै ई खाड कठै ई मै'ल। १३५०१

सॉई के सौ खेल, कहीं गड्ढे तो कही महल।

—संसार में कहीं अमीरी तो कहीं गरीबी, कहीं झोंपड़ी तो कहीं महल, कहीं गुफा तो कहीं गढ़, कहीं तालाब तो कहीं टीले, कहीं पहाड़ तो कहीं समंदर, कहीं नदियाँ तो कहीं झरने और इन सबके बहाने वह अपने खेल खेलता है, अपनी लीला रचता है।

सांई री कुदरत है। १३५०२

सॉई की कुदरत है।

—संसार में जो कुछ भी घटित होता है वह सब परमात्मा की कुदरत है, परमेश्वर की लीला है।

—परमात्मा प्रकृति के माध्यम से ही प्रकट होता है।

—अदृष्ट ईश्वर का दृष्ट रूप ही अनंत प्रकृति है।

—साँई की इच्छा के बिना पेड़ का एक पत्ता भी नहीं हिल सकता।

सांई हाथ कतरणी, राखैला उनमांन। १३५०३

सॉई के हाथ में कैंची, रखेगा तरतीब से।

—जिसके जैसे कार्य होंगे, सॉई उन्हीं के अनुसार सबको नियंत्रित करेगा, जिस तरह बागवान बगीचे को नियंत्रित करता है।

—मनुष्यों की जो भी सामाजिक स्थिति है, वह सब ईश्वर के द्वारा निर्धारित है।

सांकड़-भीड़ै सगपण। १३५०४

जल्दबाजी में विवाह।

—विवाह जैसे महत्त्वपूर्ण काम के लिए जल्दबाजी करना संगत नहीं है।

—जीवन के गंभीर मसलों पर जहाँ बहुत गहराई से सोच-विचार करने की आवश्यकता है, वहाँ कोई भी निर्णय उतावली में करना उचित नहीं है।

सांकड़-भीड़ौ अर बिचाळै बड़लौ। १३५०५

स्थान की कमी और बीच में बरगद।

—जहाँ असुविधाओं की कोई कमी नहीं हो।

—परेशानी-पर-परेशानी।

सांकड़ी गळी अर मारकणी गाय। १३५०६

सँकड़ी गली और मरखनी गाय।

—जिस विपत्ति से बचना बहुत मुश्किल हो।

—जिस संकट का उपाय न मिलने के कारण मनुष्य पूर्णतया हताश हो जाय, तब...।

पाठा : **सांकड़ी सेरी अर मारकणौ सांड। सांकड़ौ गळियारौ अर मारकणौ पाडौ।**

सांकड़ै आयोड़ी मिनकी कुत्ता सूं पंजा-बाछी करै। १३५०७

चारो तरफ़ से घिरी हुई बिल्ली कुत्ते से पंजा भिड़ाती है।

—मरता क्या नहीं करता।

—जब जान पर बन आती है तो लोग जान की बाजी लगा देते हैं।

—जब किसी संकट से बचने का कोई उपाय न हो तो बहुधा लोग हताश होने की बजाय दिलेर बन जाते हैं।

सांखळियौ तौ ई सीह। १३५०८

मरियल होने पर भी शेर।

दे.क.सं.३६७३

पूरा दोहा निम्न-प्रकार है :

गूदळियौ तौ ई गंगजळ, सांखळियौ तौ ई सीह।
विखायत तौ ई खींवरौ, खांखळियौ तौ ई दीह॥

सांगर फोग थळी रौ मेवौ। १३५०९

साँगर-फोग थली का मेवा।

सांगर = शमी वृक्ष, जिकी फलियाँ उबालकर साग बनाया जाता है। सूखी फली को बच्चे शौक से खाते हैं। फोग = मरुस्थल की एक छोटी झाड़ी, जिसके फल की सब्जी बनती है।

—हर व्यक्ति को अपनी जमीन और अपनी वनस्पति का जबरदस्त मोह होता है। दूसरे सर-सब्ज इलाके से तुलना करने की कोई जरूरत नहीं, जो अपनी है, वह सुंदर है, श्रेष्ठ है।

—जो कुछ भी हमारे मरुस्थल में उपजता है, वही हमारे लिए मेवा है।

—मनुष्य की पसंद-नापसंद अपने परिवेश की स्वाभाविक प्रक्रिया है।

सांगूखां रा खोखा। १३५१०

साँगूखाँ के खोखे।

—साँगर या शमी वृक्ष को प्यार से साँगूखाँ कहा गया है। कच्ची साँगरी की सब्जी बनती है। साँगरियाँ पकने पर खोखे कहलाते हैं। बच्चे, किशोर और स्त्रियाँ खोखों को शौक से खाते हैं।

—साँगर के शब्दार्थ की खातिर पिछली कहावत दृष्टव्य है और अर्थ के लिए भी।

सांच-कूड़ में चार आंगळ रौ आंतरौ। १३५११

साँच और झूठ में चार अंगुल का अंतर।

दे.क.सं.३७८, २००५, २५२८

पाठा : साच अर झूठ में चारेक आंगळ री छेती।

सांच तिरै अर कूड़ डूबै। १३५१२

साँच तैरता है और झूठ डूबता है।

—साँईं को साँच से प्यार है, इसलिए साँच तैरता है और झूठ डूबता है।

—साँच की महिमा व्यक्त की गई है।

सांच बोलणौ अर लड़ाई मोल लेवणी। १३५१३

सच बोलना और लड़ाई मोल लेनी।

—काने को काना कहना, गंजे को गंजा कहना, लँगड़े को लँगड़ा कहना, पिता को माँ का यार कहना, ये अपशब्द साँच के दायरे में नहीं आते। फिर भी सच्ची गवाही देना सुकर्म है, तब भी लड़ाई का आधार तो जुट ही जाता है।

—सच बोलने पर लड़ाई तक ही बात सीमित रह जाय तो कोई समस्या नहीं पर सच बोलने वालों को सलीब,सूली या फाँसी ही नसीब होती है और होती रहेगी। फिर भी ऐसे सत्यवादी बंदे पैदा होते रहे हैं और होते रहेंगे।

सांच बोलै, सत्यानास जाय। १३५१४

सच बोले उसका सर्वनाश।

—सच बोलने वाले के कई दुश्मन हो जाते हैं। उसके वश रहते वे उसे नुकसान पहुँचाने में कोई कसर नहीं रखते।

—जो सच बोलेगा,वह मरेगा।

सांच बोलै सो बुरीगार। १३५१५

सच बोले सो बुरा।

—सच बोलने से जिसका नुकसान होता है,वह तो बौखलाकर समाज-द्वेषी हो ही जाता है।

—सच बोलो और बुरे बनो। यही आज की दुनिया का ढर्रा है।

पाठा: **असल भाखै सो ओटाळ।**

सांच रौ बेली रांम। १३५१६

सच का साथी राम।

—सच बोलने वाले का कोई और साथ दे-न-दे,पर ईश्वर तो उसका साथ कभी छोड़ता ही नहीं।

—ईश्वर को सत्य प्रिय है,इसलिए उसे सत्यवादी भी प्रिय हैं।

सांची कही अर मां मारी। १३५१७

सच कहा और माँ ने पीटा।

—जब सच बोलने पर माँ भी खीज उठती है,अपने बच्चों को निर्ममता से पीटती है,तब भला दूसरे लोग साँच को क्योंकर बर्दाश्त कर सकते हैं।

—सच बोलो और माँ को भी दुश्मन बना डालो।

सांची कही, जांणै भाटा री दई। १३५१८

साँच कहो या पत्थर की मारो।

—सच बात पत्थर की चोट के उनमान असह्य लगती है।
—सच बात कहना तो सभी पसंद करते हैं, पर सच बात कोई सुनना नहीं चाहता। सबको कड़वी लगती है।
—अजीब विडंबना है सच का बखान तो सभी करते हैं, पर अपनाना कोई नहीं चाहता। छूत की बीमारी के उनमान उससे दूर रहना चाहते हैं।
पाठा: साची कैवणी, जांणै माथा में देवणी।

सांचै मन सूं पूज्यां, भाटौ ई सहाय करै। १३५१९
सच्चे मन से पूजने पर पत्थर भी रक्षा करता है।
—आडंबर से पत्थर भी प्रभावित नहीं होता, किंतु सच्चे मन से उसकी पूजा करने पर वह द्रवित हो जाता है, कामना पूरी करता है।
—सच्ची पूजा का फल मिलता ही है।

सांझ रा बाछड़ौ चूंघियौ तौ कांईं सवारै तौ दूधीजसी। १३५२०
साँझ को बछड़ा चूँघ गया तो क्या सवेरे दूध निकलेगा ही।
—बहाना बनाने वाले पर व्यंग्य कि साँझ का दूध तो बछड़ा चूँघने की वजह से नहीं डाला पर सवेरे तो दूध निकलेगा ही, तब क्या बहाना बनाओगे?
—बहानेबाजी की असलियत छिपी नहीं रहती।

सांझ रा मूवा नै दिन कद ऊगै? १३५२१
साँझ के मरे को, दिन कब उगे?
—भारतीय हिंदू समाज में दिन के समय ही दाहक्रिया होती है। यदि कोई साँझ की वेला मरता है तो उसे आँगन में लिटा हुआ रखते हैं। घरवाले लाश के इर्द-गिर्द बैठ जाते हैं। कोई भी सोता नहीं। रात लंबी-ही-लंबी हो जाती है, महीने जितनी लंबी।
—संकट या शोक का समय बड़ी मुश्किल से बीतता है।

सांझ री लीधी नै कठा सूं आपड़ौ? १३५२२
साँझ की सौंपी को कहाँ से पकड़े?
—साँझ की झुटपुट वेला में किसी की सौंपी हुई अमानत कब तक सँभालकर रखी जाय।

—अँधेरे में सौंपी हुई वस्तु को सँभालना मुश्किल होता है।

सांझ रै मूवा नै कठा लग रोवै ? १३५२३

साँझ के मुर्दे को कब तक रोयें ?

—हिंदू समाज में दिन के समय ही दाहक्रिया का प्रावधान है। साँझ की वेला मरने पर शव को ढॉपकर आँगन में रखा जाता है। लोग-बाग इर्द-गिर्द बैठ जाते हैं। मन-ही-मन रोते-बिलखते हैं।

—कष्ट सहने की भी सीमा होती है।

—जो दुष्ट रात-दिन कष्ट पहुँचाता है,उसे कब तक बर्दाश्त करना उचित है।

सांझां देख्या मलापता नंह ऊगंतै सूर। १३५२४

सॉझ को देखा छलांग भरते, पर सुबह कही नजर नहीं आये।

—साँझ की वेला उल्लू और चमगादड़ उड़ानें भरते दिखलाई पड़ते हं,पर सूर्योदय के उजाले में जाने कहाँ छिप जाते हैं ?

—अँधेरे में अपकर्म करने वाले लंपट या चोर रात को ही सक्रिय होते हैं,दिन के प्रकाश में उनका वश नहीं चलता।

सांठै रै बदळै लट्ठ कुण देवै ? १३५२५

सॉठे के बदले लाठी कौन दे ?

सांठौ = ज्वार के पौधे का डंठल,जिसे गन्ने की नाई चूसा जाता है।

—मूर्ख या गॅवार व्यक्ति भी अपने लाभ-नुकसान में खूब समझता है,वह भी सॉठे के बदले अपनी लाठी नहीं देना चाहेगा।

—घाटे का सौदा कोई नहीं करता।

सांड खसै नै बूंठां रौ खोह।–व.२३८ १३५२६

सॉड लड़े और झाड़-पौधो का विनाश।

दे.क.स.३१४९

सांड नै कांई बेरौ के सुभराज कैड़ी व्है ? १३५२७

सॉड को क्या पता कि शुभराज कैसी होती है।

सांड = वह बछड़ा जो नस्ल सुधारने के उद्देश्य से बिना खस्सी रखा गया हो।

—मूर्ख व्यक्ति शिष्टाचार में नहीं समझता।

—अनभिज्ञ व्यक्ति को ज्ञान की बातें बताना व्यर्थ है।

—गँवार व्यक्ति पशु के तुल्य होता है जो शिष्ट बातों से कोई सरोकार नहीं रखता।

सांड हळ में कद जुतै ! १३५२८

सॉड हल में कब जुते !

—बिगड़ैल व्यक्तियों से काम नहीं लिया जा सकता।

—बड़े व्यक्तियों से छोटे काम नहीं करवाये जा सकते।

—मुस्टंड साधु मेहनत से कतराते हैं।

पाठा : सांडां नै हळ कुण जोतै ! सिंघां नै हळ कुण जोतै ?

सांडां री लड़ाई, किण सूं सज आवै ? १३५२९

सॉडों की लड़ाई कौन वहन कर सकता है ?

—बड़े अधिकारी या नेताओं की लड़ाई सामान्य व्यक्ति वहन नहीं कर सकता।

—श्रीमंतों की लड़ाई श्रीमंत ही जानें, दूसरों का उससे क्या सरोकार ?

सांडियौ सौ कोस जावै तौ ई आंक धणी रौ। १३५३०

सॉड सौ कोस भी जाय तब भी निशान मालिक का।

—मालिक की वस्तु मालिक से चाहे जितनी दूर क्यों न हो उसका संबंध नहीं मिटता।

—अधिकृत वस्तु दूर भी चली जाय तो स्वामी का अधिकार उस पर बना रहता है।

सांढ़ रौ लखाव अर जाटां रौ पंचोळ छांनौ कोनीं रैवै। १३५३१

ऊँटनी का लखाव और जाटों की पंचायत छिपी नहीं रहती।

—गाय, भैंस और घोड़ियों की तरह साँढ़ (ऊँटनी) गर्मी में नहीं आती। मौका देखकर उस पर जबरदस्ती ऊँट को पकड़कर चढ़ाया जाता है। साँढ़ खूब अरड़ाती है। दूर से ही पता चल जाता है कि ऊँट और ऊँटनी का मिलाप यानी लखाव हो रहा है। इसी तरह जाट भी पंचायती करते समय बहुत जोर-जोर से बोलते हैं, दूर-दूर तक सुनाई पड़ता है।

—सबके सामने घटित होने वाली बात किसी से भी छिपी नहीं रहती।

सांढ़ वाळौ होठ ।–व.२१० १३५३२

सॉढ़ वाला होठ ।

साढ = ऊँटनी ।

—तीन चार बार ब्याने के बाद सॉढ का निचला होंठ लटक जाता है, उसके नियत्रण में नही रहता ।

—जिस व्यक्ति का निचला होंठ लटका रहता है, परिहास मे उसकी उपमा ऊँटनी के होंठ से दी जाती है ।

सांढ़ विगोवै विगर न ब्यायै ।–व १८८ १३५३३

सॉढ़ बेहद कष्ट पाये बिना नहीं ब्याती ।

—नये प्राणी को जन्म देना कष्ट-दायक तो होता ही है ।

—कजूस का दिल आसानी से नही पसीजता ।

—कष्ट उठाये बिना सफलता नही मिलती ।

सांढ़ियां दूध देवै तौ गाय कुण वपरावै ? १३५३४

सॉढ़ियॉ दूध दे तो गाय कौन रखे ?

—सॉढ (ऊँटनी) के दूध का बिलौना नही होता, उसका दही नही जमता । जामन देने पर कीड़े पड जाते है ।

—बदमाश काम करलें तो कर्मठ आदमी को कौन पूछे ?

—दुष्ट किसी की सहायता करें तो भले आदमियों की कौन परवाह करे ।

सांढ़ौ जोय सासरै गी अर नेवां झाल ऊभी रही । १३५३५

साथ देखकर ससुराल गई और 'नेवे' पकड़कर खडी रही ।

नेव = ढलुवाँ छप्पर या मकान में दीवार पर से बाहर की ओर रहने वाला वह छज्जेनुमा भाग जहाँ से वर्षा का पानी गिरता है । अरवाती, औलती ।

—कोई औरत साथ देखकर बड़ी उत्सुकता से ससुराल गई पर वहॉ किसी ने सत्कार करना तो दूर, पूछा तक नही । तब क्या करती बेचारी । झोंपडी के नेव पकडकर चुपचाप खडी रही ।

—कोई व्यक्ति बड़ी उत्सुकता से अपने परिजनों से मिलने जाय और वहाँ उसे कोई पहिचाने तक नहीं, तब...।

सांढ़ौ तौ सांप रौ ई आछौ। १३५३६

संग-साथ तो साँप का भी अच्छा।

—अकेले व्यक्ति की व्यथा का आभास इस उक्ति में मिलता है कि अकेले रहने की बजाय तो साँप का साथ भी स्वीकार है।

—अकेले व्यक्ति का जीवन बहुत असह्य होता है।

—अकिंचन व्यक्ति का साथ भी लाभदायक होता है।

सांणियां रा दीन्हा घोड़ा जावै नीं। १३५३७

साणियों के दिये घोड़े जाते नही।

सांणी = घोड़ों की देख-रेख करने वाला। अस्तबल का सेवक।

—जिसे कोई अधिकार न हो, वह भला किसी को क्या चीज दे सकता है। अस्तबल का सेवक चाहे तो घोड़ों की लीद दे सकता है, पर किसी को घोडे इनायत नहीं कर सकता। यह अधिकार तो केवल ठाकुर या मालिक का ही है।

—अनधिकृत व्यक्ति का निर्णय कहीं नहीं चलता।

पाठा: साणिया रा बगसिया किसा घोड़ा बगसीजै।

सांनी में समझै सो स्यांणा। १३५३८

इशारे मे समझे सो सयाना।

—समझदार को ज्यादा समझाने की जरूरत नही पड़ती, वह इशारे में ही सारी बात भाँप जाता है।

—मूर्ख व्यक्ति समझाने पर भी नहीं समझता, वह भला इशारे में क्या समझेगा?

सांप अंगूठा रौ मेळ। १३५३९

साँप अँगूठे का मेल।

—जब कोई अघटित घटना होती है तो उसका दुर्योग स्वतः बैठ जाता है।

—जिसे अपयश मिलना होता है तो अचानक उसका योग जुड़ जाता है।

—दुर्योग कोई सूचित करके नहीं घटता उसका मेल अपने-आप हो जाता है।

पाठा : सांप अंगूठा वाळौ मेळ।

सांप ई बांबी में पाधरौ होयनै ई वड़ै। १३५४०

साँप भी बाँबी में सीधा होकर घुसता है।

दे.क.सं.८९९४

पाठा : सांप बांकौ व्है तौ कांई, बिल में तौ सीधौ होयनै ई बड़ै।

सांप ई मर जावै अर गेडी ई नीं भागै। १३५४१

साँप भी मर जाय और लाठी भी नहीं टूटे।

—कोई भी कार्य इस युक्ति व कौशल से किया जाय कि काम पूरी सफलता से निष्पादित हो जाय और तनिक भी नुकसान उठाना नहीं पड़े।

—अपना काम बन जाय और हानि का बोझ भी मत्थे न पड़े।

पाठा : सांप मरै अर लाठी ई नी तूटै।

सांप कांचळी छोडै पण विस नीं छोडै। १३५४२

साँप केंचुल छोड़ता है पर विष नहीं छोड़ता।

—जो दुष्ट मुखौटे बदलता रहे पर अपनी दुष्टता वैसी ही कायम रखे।

—जो धूर्त बाहरी आवरण तो बदले पर आचरण तनिक भी न बदले।

सांप किणी रौ ई सगौ नीं व्है। १३५४३

साँप किसी का भी सगा नहीं होता।

—साँप को तो बस मौका भर मिलना चाहिए, वह तो हर किसी को भी काट लेता है—चाहे अबोध बच्चा हो, चाहे गर्भवती माँ हो, चाहे राजा हो, चाहे संत-महात्मा हो।

—इसी प्रकार जो दुष्ट साँप-प्रवृत्ति के होते हैं वे किसी के भी सगे नहीं होते। वे अपने परिजनों से भी नहीं चूकते।

पाठा : सांप भलां किणरी कांण राखै ? सांप रै किसा मासियाई भाई ? सांपां रै सगौ कुण ? सांपां रै कैड़ी साख ? सांपां रै किसी मासियां ?

दे.क.सं.१३४६४

सांप कोनीं देख्यौ, सांप री लींगडी देखी। १३५४४

सॉंप नहीं देखा, सॉंप की लकीर देखी।

—जो व्यक्ति वास्तविक डर की बजाय निराधार डर की आशंका से ही परेशान हो।

—वहमी व्यक्ति पर कटाक्ष।

—अफवाहों की शुरुआत इसी तरह होती है।

सांप खाधौ अर परवाई छूटी। १३५४५

सॉंप ने काटा और पुरवैया चली।

—ऐसी मान्यता है कि पुरवा चलने से सॉंप के डसे को तकलीफ ज्यादा बढ़ जाती है।

—कष्टों का निवारण होने की बजाय उनके इजाफे के और आधार जुट जाएँ, तब...।

—दुखों की आग में कोई घास झोंकने की कुचेष्टा करे, तब...।

—जब एक के बाद एक दुखों का ताँता जुड़ता जाय।

सांप खायां नीं मरै धबक सूं मर जावै। १३५४६

सॉंप खाने से नही मरता, उसके खौफ से मरता है।

—नुकसान पहुँचाने वाली घातक वस्तुओं की अपेक्षा उनका खौफ ज्यादा खतरनाक होता है।

—दुष्ट, चोर, डकैत या सॉंप की बजाय इनका खौफ ज्यादा दहशत पैदा करता है।

—प्रत्यक्ष आफत की अपेक्षा धमकी से डर अधिक लगता है।

पाठा : सांप नीं मारै, धस मारै।

सांप खावणौ तौ छोड्यौ पण फुंकारा सूं ई गियौ? १३५४७

सॉंप ने डसना तो छोड़ा, पर क्या वह फुफकारने से भी गया?

—किसी डाकू ने आत्मसमर्पण कर दिया तो क्या वह क्रोध भी नहीं कर सकता।

—रिश्वत छोड़ने वाला अधिकारी डॉंट-फटकार तो कर ही सकता है।

—दुर्गुण छूट सकते हैं पर अधिकार नहीं छूट सकता।

सांप गियौ नै लींगटी रही। १३५४८

सॉंप गया और लकीर रह गई।

—स्वस्थ परंपरा के लुप्त होने पर रूढ़ियों का बंधन रह जाता है।

—वास्तविक डर मिटने पर भी आशंका नहीं मिटती।

—दुख बीत जाते हैं पर उनकी याद शेष रह जाती है।

—नशा समाप्त होने पर भी उसकी खुमारी नहीं जाती।

—सेवानिवृत्त अधिकारी पद से तो हट जाता है पर उसकी चर्चा वह हमेशा करता रहता है।

सांप चालती-फिरती मौत है। १३५४९

सॉंप चलती-फिरती मौत है।

—यों मौत का अपना कोई स्वरूप नहीं होता, पर साँप को सभी चलती-फिरती मौत ही मानते हैं। जो चलकर कहीं भी दुबक जाती है और जिसे मरना होता है, उसे डस लेती है।

सांप छछूंदर नै नीं छोड सकै अर नीं गिट सकै। १३५५०

साँप छछूँदर को न छोड़ सकता है औरं न निगल सकता है।

—ऐसी मान्यता है कि मुँह में पकड़े छछूँदर को साँप निगले तो वह मर जाता है और छोड़े तो अंधा हो जाता है। दोनों ही स्थितियाँ बड़ी भयंकर हैं। न छोड़े बने और न निगले।

—जब ऐसी दुविधाजनक परिस्थिति खड़ी हो जाती है, तब आदमी कुछ भी निर्णय नहीं कर पाता।

सांप छछूंदर वाळी कदै-कदै ई व्है जावै। १३५५१

साँप छछूँदर वाली कभी-न-कभी हो जाती है।

—मनुष्य कभी-कभार धर्म-संकट की ऐसी विकट स्थिति में फँस जाता है कि वह कुछ भी निर्णय लेने के लिए असमर्थ हो जाता है। निर्णय लेने की कोई स्थिति नहीं बचती। बिल्कुल साँप जैसी गति हो जाती है—न छछूँदर को छोड़ सकता है और न निगल सकता है। और छछूँदर को मुँह में भी रखे तो कब तक!

सांप छछूंदर वाळी गत। १३५५२

साँप छछूँदर वाली गति।

—यदि साँप-छछूँदर वाली दुर्गति में मनुष्य फँस जाय तो उसका उबरना मुश्किल है।

—और मनुष्य के विकट जीवन में ऐसी स्थितियाँ आती ही रहती हैं, जब वह कुछ भी निर्णय नहीं ले पाता। और यह अनिर्णयात्मक स्थिति मौत से कम भयानक नहीं होती।

सांप तौ ढळ्यौ अठी अर बतावै कठी ? १३५५३

सॉप तो गया इधर और बताये किधर ?

—जो व्यक्ति वास्तविकता को छिपाने की चेष्टा करे।

—जो व्यक्ति अपराधी का भेद बताने में हिचकिचाहट करे।

सांप तौ ढळ्यौ अर लींगटी कूटै। १३५५४

सॉप तो गया और लकीर पीट रहे हैं।

दे.क.सं.१३५४८

पाठा : सांप गियौ अर लींगटी रही।

सांप तौ दब्योड़ौ ई फुफकारै। १३५५५

सॉप तो दबा हुआ भी फुफकारता है।

—दुष्ट व्यक्ति आसानी से हार नहीं मानता। वह तो जकड़ा हुआ भी फुफकारता है।

—कुटिल व्यक्ति सजा देने पर भी नहीं सुधरता, अधिक गुर्राता है।

सांप तौ पूंगी माथै ई नाचै। १३५५६

साँप तो पूँगी पर ही नाचते हैं।

पूंगी = सँपेरे का फूंक वाद्य।

—दुष्ट व्यक्ति को भी संगीत मोहित करता है।

—कुटिल व्यक्ति में भी कुछ-न-कुछ तो कमजोरी होती है।

—अत्याचारी को अन्याय से नहीं ज्ञान से वशीभूत किया जा सकता है।

सांप थकां दीवौ नीं झुपै। १३५५७

साँप के सामने दीया नही जलता।

—ऐसी मान्यता है कि काले साँप के फन पर मणि होती है, जिसकी वज़ह से दीपक नहीं जलता।

—बड़े मनुष्य के सामने छोटे की नहीं चलती।

सांपनाथ कैवौ भलां ईं नागनाथ कैवौ। १३५५८

सॉंपनाथ कहो भले ही नागनाथ।

दे.क.सं.५१७४

सांप नै दूध पायां जैर ई बणै। १३५५९

सॉंप को दूध पिलाने से जहर ही बनता है।

—दुष्ट को सहयोग देने से उसकी कुटिलता ज्यादा बढ़ती है।

—दुष्ट को ज्ञान देने से वह उलटा शेर होता है।

सांप रा खाधोड़ा नै अदीतवार कद आवै ? १३५६०

सॉंप के काटे को रविवार कब आये ?

संदर्भ-कथा: कोई एक विशिष्ट ओझा अदीतवार को ही सॉंप का जहर उतारता था। सॉंप के डसे एक व्यक्ति को सोमवार के दिन वहॉं ले गये तो उसने सीधा जवाब दिया—अदीतवार को लाना। साथ वालों ने चिरौरी करते कहा,'भला,सॉंप के काटे को अदीतवार कब आये ? अभी इसी वक्त जो भी करना है,करिये।'

—समय पर जरूरत की चीज न मिले तो उसके अस्तित्व की कोई सार्थकता नहीं।

—मनुष्य के जीवन में कुछ आपात्-स्थितियाँ ऐसी होती हैं,जिन्हें आगे के लिए एक घड़ी भी नहीं टाला जा सकता।

सांप रा पग अलाय जांणै। १३५६१

सॉंप के पॉंव अलाय जाने।

अलाय = बला,इल्लत।

—दुष्टों के रहस्य का भेद ईश्वर भी नहीं जानता,कोई बला जाने तो जाने।

—सॉंप के पॉंव नहीं होते हुए भी वह तेजी से चलता है,दौड़ता है। उसके पंख भी कहीं नजर नहीं आते। फिर भी उसका दौड़ना कैसे संभव होता है ?

—नेताओं के मन की बात जानना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य है।

सांप रा पग सांप ई ओळखै। १३५६२

सॉंप के पॉंव सॉंप ही पहिचानता है।

—बिना पाँवों के साँप को चलने में कितनी कठिनाई होती है, उसे फकत वही जानता है, दूसरे नहीं जान सकते। उसी तरह हर मनुष्य अपनी रोजमर्रा की कठिनाइयों का किस तरह सामना करता है, उसे केवल वही जानता है, दूसरे नहीं जान सकते।

—किसी भी मनुष्य को उसकी हैसियत से परे कोई भी काम करने के लिए मजबूर नहीं करना चाहिए।

सांप रा बिल में हाथ घाल्यां जीव री जोखम। १३५६३

सॉप के बिल मे हाथ डालने पर प्राणो की जोखिम।

—खतरे के काम में हाथ डालकर मौत को न्योता नहीं देना चाहिए।

—किसी भी दुष्ट को छेड़ने का परिणाम घातक होता है।

—आपत्तिजनक काम करने का नतीजा हमेशा बुरा होता है।

—जिस काम में प्रत्यक्ष हानि या खतरे की गुंजाइश नजर आये और उसे ही करने के लिए कोई मनुष्य आतुर दिखे तो उसे रोकने के लिए इस उक्ति का सहारा लिया जाता है।

पाठा : सांप री वांबी मे क्यूं हाथ घालणौ ?

सांप री डाढ़ झाड़ूलौ वाढ़ै। १३५६४

सॉप की डाढ़ झाड़ूला तोडता है।

झाड़ूलौ = पाँवों में पहिनने के लिए चमड़े का मौजा, जो घुटने से टखने तक लंबा होता है। काँटे, साँप या अन्य जीव-जंतुओं से बचने के लिए।

—कुटिल या दुष्ट व्यक्तियों को शक्तिशाली पुरुष ही सीधा कर सकता है।

—वीर-बहादुर ही अत्याचारों से गरीबों की रक्षा कर सकते हैं।

सांप री लींगटी पीट्यां कांई सांधौ लागै ? १३५६५

सॉप की लकीर पीटने से क्या लाभ ?

—दुष्ट का सामना न करके उसके पदचिह्नों पर जूते मारने से क्या बात बनेगी, इस पर तनिक विचार तो करना चाहिए।

—वास्तविकता से रूबरू न होकर उस पर बहसबाजी चाहे जितनी करलो उससे कुछ भी नतीजा निकलने वाला नहीं है।

सांप री संवळाई कांईं कांम री ? १३५६६

सॉप का सीधापन किस काम का ?

—जब तक सॉप अपनी दाढ़ के विष को नहीं छोड़े, डसने की कुटिल प्रकृति का परित्याग न करे, उसके सीधेपन का कुछ भी माने नहीं है। इसी प्रकार दुष्ट की विनम्रता का भी कोई अर्थ नहीं है, जब तक उसकी दुष्टता समूल रूप से नष्ट नहीं होती।

सांप रै काट्योड़ौ बचै पण मिनख रै काट्योड़ौ नीं बचै। १३५६७

सॉप का काटा बच सकता है पर मनुष्य का काटा नही बचता।

—ऐसी धारणा है कि सॉप का डसा व्यक्ति मंत्र या टोने-टोटके से ठीक हो सकता है। कोई ओझा उसका विष उतार सकता है। गुग्गापीर या केसरिया कुँअरजी की तॉंती बाँधने से सॉप का जहर मिट जाता है पर मनुष्य का काटा न मंत्र से ठीक हो सकता है न किसी टोने-टोटके से और न किसी तॉंती से। उसकी कोई भी औषधि आज दिन तक नहीं बनी और न कोई धार्मिक ग्रंथ उसके विष को रंचमात्र भी कम कर सके हैं।

—सॉप की अपेक्षा मनुष्य ज्यादा जहरीला है।

सांप रै खायोड़ौ भलां बीछू सूं कद डरपै ? १३५६८

सॉप का डसा व्यक्ति भला बिच्छू से कब डरने वाला ?

—जो व्यक्ति बड़ी-बड़ी मुसीबतों से गुजर चुका हो, वह मामूली दुख की परवाह नहीं करता।

—जिस बदमाश ने बार-बार जूते खाये हों, उस पर डॉट-फटकार का क्या असर हो सकता है ?

सांप रै खायोड़ौ सींदरी सूं डरै। १३५६९

सॉप का काटा हुआ रस्सी से डरता है।

—एक बार धोखा खाया हुआ व्यक्ति आगे के लिए पूरा सावधान हो जाता है।

—दुष्टों से ठगाया हुआ व्यक्ति साधु-संन्यासियों को भी संदेह की दृष्टि से देखता है।

मि.क.सं.६६८५

सांप रै जाया रौ कांईं छोटौ अर कांईं मोटौ ! १३५७०

सॉप के बच्चे का क्या तो छोटा और क्या बड़ा !

दे.क.सं.१३३९८

पाठा : सांप रै बिचिया रौ कांईं छोटौ अर कांईं मोटौ।

सांप तौ सांप ई व्है, छोटौ भायै मोटौ।

सांप रै मूंडै मोती नीं बणै। १३५७१

सॉंप के मुँह में मोती नहीं बनते ।

—साँप चाहे दूध पिये या अमृत या स्वाति नक्षत्र में बरसा पानी, उसके मुँह की तासीर ही ऐसी है कि सभी जहर में बदल जाते हैं ।

—कुटिल व्यक्ति चाहे जितनी ज्ञान की बातें सुने, वह अपनी दुष्प्रवृत्ति छोड़ नहीं सकता ।

सांप रौ खायोड़ौ बिच्छू सूं डरपै। १३५७२

सॉंप का काटा हुआ बिच्छू से डरता है ।

—दुष्टों के द्वारा सताया हुआ मनुष्य सामान्य व्यक्तियों से भी डरने लगता है ।

—कटु अनुभवों से गुजरा व्यक्ति अपने दुखद अतीत की स्मृतियों से घबराने लगता है ।

मि.क.सं.१३५६९

सांप रौ विस उतरै, पण जीभ रौ नीं उतरै। १३५७३

सॉंप का विष उतर जाता है, पर जीभ का नहीं उतरता ।

—तीर-तलवार का घाव ठीक हो जाता है और सॉंप के काटे का जहर भी उतर जाता है पर मनुष्य की वाणी का विष नहीं उतरता ।

—मनुष्य को चाहिए कि वाणी के माध्यम से विष की बजाय अमृत बरसाये ।

मि.क.सं.१३५६७

सांप रौ सोवै, बिच्छू रौ रोवै। १३५७४

सॉंप का सोये, बिच्छू का रोये ।

—साँप का काटा मनुष्य सोये और बिच्छू का काटा मनुष्य रोये ।

—साँप का विष जब सारे शरीर में घुल जाता है तो मनुष्य बेहोश हो जाता है । ऐसा लगता है जैसे वह सो रहा हो । इसके विपरीत बिच्छू के डंक से बड़ी जलन होती है । जिसके कारण मनुष्य चिल्लाने लगता है ।

—बड़े व्यक्ति तो भारी क्षति सहन कर लेते हैं, जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो, पर गरीब मामूली नुकसान से भी विचलित हो जाता है।

पाठा : सांप रौ खाधौ सोवै, बीछू रौ खाधौ रोवै।

सांप लांबौ तौ गोह चवड़ी। १३५७५

सॉप लंबा तो गोह चौड़ी।

—दुष्टों की आकृतियाँ भले ही भिन्न हों पर वे दुष्टता में समान ही होते हैं।

—बेईमान या कुटिल व्यक्तियों के हुलिये एक से नहीं होते पर उनके लक्षण एक-से होते हैं।

—आकृति माने नहीं रखती आचरण माने रखता है।

सांप सळीट्या घणा ई दीठा, अजगर बाबौ अबकै। १३५७६

सॉप-सँपोले बहुत ही देखे, अजगर बाबा इस बार।

—छोटे-मोटे साँप तो इधर-उधर देखने को मिल जाते हैं, लेकिन अजगर से मुलाकात इस बार ही हुई।

—छुटपुटे समाज-कंटक तो हर जगह दिखलाई पड़ जाते हैं, पर नामजद आतंकवादी से साक्षात्कार पहली बार ही हुआ है।

—साधारण कार्यकर्ता तो स्वच्छंद डोलते ही हैं, पर बड़े नेताजी के दर्शनों का सौभाग्य अभी हुआ है।

सांप सांढ़ा रौ मेळ। १३५७७

सॉप सॉढ़े का मेल।

सांढ़ौ = गोधा की आकृति का एक जंगली-जंतु जिसका माँस पौष्टिक एवं स्वादिष्ट माना जाता है। इसकी चर्बी औषधियों में काम आती है। इसका तेल भी निकाला जाता है।

—साँढ़े की तरह साँप में भी चर्बी होती है। साँप बिल नहीं खोदता। चूहों और साँढ़ों के बिलों पर कब्जा कर लेता है। साँढ़ा घास पर जिंदा रहता है। साँप जानवर खाता है। साँढ़ा किसी को भी नहीं काटता। और साँप मौका मिलने पर काटे बिना नहीं चूकता। इसलिए साँप और साँढ़े की बेमेल जोड़ी है।

—किसी दुष्ट की भले मानुस के साथ मैत्री हो, तब...।

सांप सांपां रै पांवणा, जीभां रा लपरका। १३५७८

सॉप सॉपो के पाहुन, जीभों की लपालप।

—कहीं भी वाचाल व्यक्तियों का मजमा जुड़ता है तो वहॉ बातों का ही पेय, बातों का ही नाश्ता, बातों का ही भोजन और बातों का ही ब्यालू होता है। खाने-पीने की बात को वे बड़ी सफाई से टालते रहते हैं।

—जहॉ केवल चटपटी बातों से आदर होता है और मीठी-मीठी बातों से सत्कार होता हो।

मि.क.सं.४२४७

पाठा: सांप सांपां रै पांवणा, जीभां रा विल-विलास।

सांप सांपां रै प्रामणा, जीभां री लळवाट। सांपां रै ब्याव में जीभां री लपालप।

सांपां री न्यात में जीभां रा लपरका। सांपां रै आया सांप पांवणा, जीभां री लापालोई।

सांपां नै अर वळै दूध? १३५७९

सॉपो को और फिर दूध?

—दुष्ट व्यक्तियों को परोक्ष-अपरोक्ष रूप से किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं देना चाहिए, वरना उनका हौसला पहिले से ज्यादा बढ़ जाता है।

—जो अपने हितैषी नहीं हैं, उन्हें मुँह लगाना उचित नहीं।

पाठा: सांपां नै क्यूं दूध पावौ?

सांपां री लड़ाई, जीभां री लपराई। १३५८०

सॉपों की लड़ाई, जीभों की लपराई।

लपराई = वाचालता, लबारपना।

—कायरों की लड़ाई में केवल जीभों की तलवार और जीभों के बाण चलते हैं। घायल एक भी नहीं होता, पर माहौल ऐसा गरमागरम दिखता है कि शायद एक भी वाग्वीर न बचे।

—बनियों के झगड़े का भी ऐसा ही माहौल होता है, वे सीधे खंभों को उखेड़कर हमला करना चाहते हैं, पर लाख चेष्टा करने पर भी खंभे उखड़ते नहीं।

मि.क.सं.१३५७८

सांपां रै कांईं मोहमाया, लोभी रै कांईं साख ? १३५८१

साँपों के कैसी मोहमाया, लोभी के कैसा रिश्ता ?

—कुटिल या दुष्ट व्यक्तियों के दिल में किसी भी प्रकार की मोह-ममता नहीं होती। वे सबके साथ समान रूप से क्रूर और निर्दयी होते हैं, वरना वे दुष्टता कर ही नहीं सकते। इसी प्रकार लोभी के लिए किसी भी रिश्ते की मर्यादा नहीं होती। वह निर्विकार भाव से भाई, बहिन या चाचा-ताऊ के साथ धोखा करके अपना उल्लू सीधा करता रहता है।

सांपां रै कैड़ी सैंध, ठगां रै कैड़ी मिंतराई। १३५८२

साँपों के कैसी पहिचान, ठगों के कैसी मित्रता।

—दुष्ट व्यक्ति की खातिर रुपये के अलावा कोई दूसरी पहिचान नहीं होती। और ठगों की खातिर रुपये के अतिरिक्त उनका कोई दूसरा मित्र नहीं होता।

—दुष्ट व ठग के लिए रुपया ही परमेश्वर है और उनकी धारणा के अनुसार रुपया ही सर्वोपरि धर्म है।

मि. क. सं. १३५८१

सांपां रै डर गोगौ ध्यावै। १३५८३

साँपों के डर से गुग्गा-पीर का ध्यान करता है।

—ऐसी धारणा है कि गुग्गा-पीर की ताँती बाँधने पर, मनौती बोलने पर साँप का विष उतर जाता है।

—अधिकांश व्यक्ति डर के मारे या किसी अनिष्ट से बचने के लिए देवी-देवताओं की उपासना करते हैं।

—उच्च अधिकारियों या बड़े व्यक्तियों की खुशामद करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

सांभर जाय, अलूणौ खाय। १३५८४

साँभर जाय, अलौना खाय।

—मूर्ख, अव्यावहारिक और हतभागे व्यक्ति पर कटाक्ष जो नमक की प्रसिद्ध झील साँभर जाकर भी अलौना खाये।

—जो व्यक्ति सामने पड़ी चीज का भी उपयोग नहीं कर सके या उपलब्धियों का तनिक भी लाभ नहीं उठा सके।

सांभर जाय लूण बेचणौ। १३५८५

सॉभर जाकर नमक बेचना।

—साँभर की झील नमक के लिए विख्यात है, फिर भी औंधी खोपड़ी का कोई व्यक्ति वहाँ जाकर नमक बेचे तो निरी मूर्खता ही है।

—जो व्यक्ति व्यापार-व्यवसाय के बारे में सामान्य-बुद्धि भी नहीं रखता हो।

पाठा : सांम्ही लूण सांभर नै। सांम्ही सांभर लूण कुण चढ़ावै ? सांभर लूण भरणौ।

सांभर तौ सींगां रै भार सूं मरै। १३५८६

सॉभर तो सींगो के भार से मरता है।

—जो व्यक्ति आकंठ अपने अहंकार में ही खोया हो, उसका पतन सुनिश्चित है।

—जो व्यक्ति अपनी बुराइयों का ही शिकार हो।

सांभर पड्यौ सो ई लूण। १३५८७

सॉभर पड़ा सो ही नमक।

—सॉभर झील में जो भी चीज गिरती है, वह अंतत नमक में ही बदल जाती है।

—राजनीति में जो भी व्यक्ति शरीक होगा, वह भ्रष्ट हुए बिना नही बच सकता।

—जो राज्य कर्मचारी होगा, वह तो रिश्वत लेगा-ही-लेगा।

—बुरी संगत का बुरा असर तो होता ही है।

सांभर में लूण रौ कांई तोटौ! १३५८८

सॉभर मे नमक का क्या टोटा!

—ज्ञानी के पास अक्ल की क्या कमी ?

—अधिकारी और नेताओं के पास रिश्वत की क्या कमी ?

सांभर में लूण रौ तोटौ। १३५८९

सॉभर मे नमक का टोटा।

—बनियों के पास धन की कमी!

—नेता और अधिकारियों के पास रिश्वत की कमी!

—जंगल में लकड़ियों की कमी!

सांभी थकी हांडी चौवटै फूटै। १३५९०

सॅभाली हुई हॅड़िया चौक में फूटती है।

—अजीब विडंबना है कि अधिक हिफाजत रखी वस्तु नष्ट होती ही है या खो जाती है।

—पाप को चाहे जितना दबाकर रखो वह फूटता ही है।

—बुरी करतूतों का गट्ठर बिखरता ही है।

सांमण साची अर मोडा कूड़ा ई सही। १३५९१

साध्वी सच्ची और साधु झूठे ही सही।

—दो पक्षों में विवाद होने पर जब एक पक्ष वाला गलती न होने पर भी अपनी गलती स्वीकार कर ले, ताकि विवाद समाप्त हो जाय।

—जब निर्दोष व्यक्ति पर तोहमत लगे तो वह इस उक्ति का प्रयोग करता है कि चलो वह दोषी भी सही।

सांमळां सूं सिरकायौ ई नीं सिरकै। १३५९२

सब्बलो से खिसकाया भी नही खिसके।

सांमळ = लोहे की लंबी और मोटी छड़ जो आगे से चपटी व पतली होती है। जो पत्थर खोदने व खिसकाने के काम आती है।

—आलसी व्यक्ति जो बार-बार कोंचने पर भी अपनी जगह से न हिले।

—अकर्मण्य व्यक्ति पर कटाक्ष।

सांम सूं संगरांम नीं करणौ। १३५९३

सॉई से संग्राम नही करना चाहिए।

—ईश्वर से विमुख होना उचित नहीं है।

—अहंकारी व्यक्ति जो अपने सामने ईश्वर को भी नहीं मानता।

—बड़ों से विरोध नहीं करना चाहिए।

पाठा : सांम सूं संगरांम बणै नही।

सांमीजी ! इण वैरसलपुर सारू तपस्या मतां करजौ।–व.२५८ १३५९४

स्वामीजी ! इस बैरसलपुर की खातिर तपस्या मत करना।

बैरसलपुर = एक गाँव का नाम।

—संभवतया बैरसलपुर बहुत ही बदमाश और कृतघ्न गॉव है।

—कृतघ्न मनुष्य की भलाई करने पर भी बदनामी का सेहरा बॅधता है।

सांमीजी जीमता जावौ, किसकै बाबा?—व.१२६ १३५९५

स्वामीजी जीमकर जाएँ, किसके यहॉ बाबा?

—कोई भला मानुष इस गॉव में खिलाने वाला तो हो, यहॉ मनाही किसकी है?

—जिस बस्ती में सब कजूस-ही-कजूस बसे हों।

सांम्हलै घर दीवौ थोड़ौ ई बाळीजै। १३५९६

सामने वाले घर मे दीया थोडे ही जलाया जाता है।

—गॉवों में यह प्रचलित मुहावरा है—जब किसी औरत का पुनर्विवाह किसी पडोसी के घर ही करे, तब लोग औरत के घरवालो को समझाते है कि सामने वाले घर में दीया थोड़े ही जलाया जाता है। सगाई तोड़ने पर, पड़ोसी के घर में वहीं सगाई करे, तब भी यही बात कही जाती है कि सामने वाले घर में दीया जलाना उचित नहीं।

—कोई भी अनसुहाता काम पड़ोस में नहीं करना चाहिए।

—कोई लंपट व्यक्ति पड़ोस में ही किसी औरत से लगा हो, तब...।

—दूसरा सीधा-सादा अर्थ यही है कि हर व्यक्ति पहिले अपना स्वार्थ देखता है, दूसरे का नहीं।

पाठा: सांम्हलै घर दीवौ बाळणौ। सांम्हली गवाड़ी दीवौ झुपावै।

सांम्ही चोर कोटवाळ नै डंडै। १३५९७

उलटा चोर कोतवाल को दंड दे।

देे.क.स.२७३,१२६७

सांम्ही बैठी सुरमौ सारै, माखी नीं आ मुळकौ मारै। १३५९८

सामने बैठी सुरमा सारे, मक्खी नही यह पुलक मारे।

सारणौ = सुरमा या काजल लगाना।

—जो व्यक्ति भावुकता में बहकर कोई काम कर डालते हैं, उसे बाद में पछताना पड़ता है।

—उपकार किया हुआ व्यक्ति जब अपने उपकारी के सामने ही रुआब जताये।

पूरी उक्ति इस प्रकार है :

म्हारी हुती नै म्है ई लाई, बैन हुती नै सोक कहाई।
सांम्ही बैठी सुरमौ सारै, माखी नी आ मुळकौ मारै ॥
(मेरी थी और में ही लाई, बहिन थी और सौत कहाई)

सांम्ही सांप अर लारै बाघ। १३५९९

सामने सॉप और पीछे बाघ।

—जब कोई व्यक्ति दुतरफा संकटों से घिरा हो और बच निकलने का कोई उपाय न हो।

—ऐसी दुविधा-जनक स्थिति, जिमके निस्तार की कोई गुजाइश न हो।

सांम्ही सादड़ी बांस चढ़ावै। १३६००

उलटे सादड़ी बॉस चढ़ाये।

—चित्तौड़ जिले की सादड़ी के आस-पास खूब बॉस होते हैं। जब कोई अनभिज्ञ या नासमझ व्यक्ति बेचने के लिए वहीं बॉस ले जाय तो वहॉ कौन खरीदेगा ?

—मूर्ख या अव्यावहारिक व्यक्ति पर कटाक्ष।

मि. क. सं. १३५८५

सांम्ही सूरज पांणी नीं चढ़ै। १३६०१

सूरज की ओर पानी नहीं चढ़ता।

—सूर्योदय अर्थात् पूर्व दिशा की ओर पानी नहीं चढ़ता, इसलिए कि नदियों के प्रवाह का रुख पूर्व से पश्चिम की ओर है।

—प्रकृति के विरुद्ध काम करना उचित नहीं है।

—सामाजिक मान्यताओं के खिलाफ चलने पर कई व्यवधान उपस्थित हो जाते हैं।

सांम्हेळै गधा आया तौ धकै घोड़ां री आस क्यूं करणी ? १३६०२

अगुवानी मे गधे आये तो आगे घोड़ो की आशा क्यो करनी ?

सांम्हेळौ = कन्या पक्ष वालों के द्वारा गॉव के प्रागण अथवा सीमा पर दूल्हे एवं बारातियों का किया जाने वाला स्वागत।

दे.क.सं.६८२

पाठा : सांम्हेळै ई गधा आवै तौ कांईं निहाल करै !

सांयत में लिछमी री वासौ। १३६०३

शांति में लक्ष्मी का निवास।

दे.क.सं.१३२९७

सांयत में सगळां री नेमत। १३६०४

शांति में सबकी नियामत।

—युद्ध में सबकी कलह और सबकी क्षति है। शांति में सबका सुख और सबकी समृद्धि है।

—इसलिए क्या परिवार में, क्या समाज में और क्या देश में शांति स्थापित रखना ही श्रेयस्कर है।

सांवण बीकानेर। १३६०५

श्रावण बीकानेर।

—आजादी के पहिले जब राजस्थान रियासतों में बँटा हुआ था, तब प्रत्येक रजवाड़े की प्रशंसा में उक्तियाँ प्रचलित थीं। कुछ हद तक सही भी थीं और कुछ हद तक अतिरंजित भी।

—सावन-भादौं के महीनों में बीकानेर बहुत मनोरम लगता है। न कहीं कीचड़ और न कहीं गंदगी। पानी बरसा और टीलों के भीतर। सर्वत्र हरा-हरा घास और हरी-हरी झाड़ियाँ। चौमासे में बीकानेर की यात्रा बड़ी सुखद रहती है।

पूरी उक्ति निम्न प्रकार है :

सीयाळै खाटू भली, उन्हाळै अजमेर।

नागांणौ नित रौ भलौ, सांवण बीकानेर॥

सांवण में गियौ अर भादवा में आयौ। १३६०६

सावन में गया और भादौं में आया।

—निष्क्रिय व्यक्ति पर कटाक्ष जो मामूली काम में बहुत अधिक समय लगाये।

—आलसी व्यक्ति पर कटाक्ष जो समय का महत्त्व कतई न समझे।

सांवण रा आंधा नै लीलौ ई लीलौ सूझै। १३६०७

सावन के अधे को हरा-ही-हरा दिखता है।

—जो व्यक्ति सावन में अधा हो जाय तो उसकी आसन्न स्मृति में सर्वत्र हरियाली-ही-हरियाली रहती है। उसे बैसाख-जेठ में भी हरियाली के सपने आते हैं।

—यह एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि प्रत्येक व्यक्ति दूसरों की स्थिति खुद जैसी ही समझता है।

—उन लोगों के प्रति कटाक्ष जो स्वय काला धन अर्जित करके धनाढ्य हुए हैं, वे समझते हैं कि दूसरों के पास भी दो नबर का माल है। वे उनके उनमान ही समृद्ध हैं।

सांवण रै जायोड़ा गधा नै सै हरयौ ई हरयौ दीसै। १३६०८

सावन मे जन्मे गधे को सब हरा-ही-हरा दिखता है।

—अनुभवहीन व्यक्ति के लिए जो इस मुगालते में है कि सर्वत्र ऐसे ही हरे-भरे मैदान हैं, कोई टोकने वाला नही, पूरी जिदगी बडे मजे से गुजर जाएगी।

—धनवानों के बच्चो को यही महसूस होता है कि सभी घरो के बच्चे इसी तरह ठाट से रहते हैं।

पाठा. सावण मे जल्मियोड़ा गधा नै सै लीलौ ई लीलौ निगै आवै।

सांवण रै महीनै गधा रौ भोगनौ भमै। १३६०९

सावन के महीने मे गधे की खोपडी चकरा जाती है।

—सावन के महीने में चारों तरफ हरियाली देखकर गधा इसलिए चितित हो जाता है कि इतना घास वह अकेले क्योंकर खा सकेगा ? यदि किसी दूसरे ने हिस्सा बँटा लिया तो उसे क्योंकर रोक सकेगा। इससे अच्छे तो बैसाख-जेठ के सूखे दिन थे सो वह देखते-देखते सब चट कर जाता था। पर इस सावन का क्या करे कि आँखो के सामने हरियाली के मैदान लहरा रहे है, जिन्हे वह सौ जन्म में भी खा नही सकता। इसी चिता मे वह हरियाली के बीच घुलता रहता है।

सांवण रै महीनै गधेड़ी ई करबौ हंगै। १३६१०

सावन के महीने मे गधी भी करबा हॅगती है।

करबौ = दले हुए अनाज को पकाकर छाछ के मिश्रण से बना एक पेय पदार्थ ।

—चौमासे में घास-अनाज की सर्वत्र इफरात रहती है । गरीब भी खुशी मनाता है । सुख से रहता है । फकत अमीरों की ही इजारेदारी नहीं है कि वे खुशियाँ मनाएँ । गरीब भी आराम से रहना जानता है ।

सांवण साजै सासरौ तौ काती ल्हासिया जाय । १३६११

सावन में ससुराल रहे तो कार्तिक में मजदूरी करे ।

—जो व्यक्ति अनाज बोने के समय ससुराल में मौज मनाता है वह कार्तिक मास में दूसरों के यहाँ मजदूरी करके पेट पालता है ।

—कमाई करने की उम्र में खूब कमाई करनी चाहिए, वरना कष्ट उठाने पड़ते हैं ।

पूरी उक्ति इस प्रकार है :

सांवण साजै सासरौ, काती ल्हासिया जाय ।

काळी-पीळी आंधी बाजै, धूळ बापड़ा खाय ।।

सांवण सूखौ नीं भादवौ हस्यौ । १३६१२

सावन सूखा न भादों हरा ।

—स्थित-प्रज्ञ मानुस न तो प्रचुर धन होने पर रंचमात्र भी इतराता है और न अभावों के दौरान हाथ खींचता है । उसके लिए सभी स्थितियाँ समान होती हैं ।

—सदा एक ही हाल में मस्त रहने वाला व्यक्ति ।

सांवणूं री गाडी अर उन्हाळी री गांठ । १३६१३

खरीफ की गाड़ी और रबी की गठरी ।

—खरीफ की फसल बरसात के कारण सस्ती और सहज होती है । इसके विपरीत रबी की फसल अधिक मेहनत व मुश्किल से हाथ लगती है । खर्च भी ज्यादा होता है । रबी के अनाज की गठरी भी खरीफ की गाड़ी से अधिक महत्त्व रखती है ।

—किसी भी वस्तु का मूल्य परिमाण से नहीं उसके महत्त्व पर निर्भर करता है ।

सांवरियौ टेक राखै । १३६१४

ईश्वर टेक रखे ।

—ईश्वर सब तरह की आफत-विपदाओं से बचाये और शांति-पूर्वक जीने की राह बताये।

—हम सब तो मनुष्य का जीवन जीने के लिए बाध्य हैं, हमारे किये कुछ भी होता-जाता नहीं, हमें नियंत्रित करने वाला तो फकत ईश्वर है, वही हम सबकी टेक रखेगा।

सांवरियौ संवळौ हुवै तौ अंवळा हुवौ अनेक। १३६१५

ईश्वर सम्मुख रहे तो विमुख रहे अनेक।

—यदि ईश्वर साथ है तो हजार दुश्मन भी कुछ नहीं बिगाड़ सकते। और यदि वह विमुख है तो हजार हितैषी भी कुछ भला नहीं कर सकते।

—मनुष्य को ईश्वर के अलावा और किसी से कुछ भी आशा नहीं रखनी चाहिए।

सांवळी रा आळा में मांस सोधै। १३६१६

चील के घोंसले में मांस खोजे।

—निर्दयी से दया की आशा रखना व्यर्थ है।

—लाख निहोरे करो कंजूस से कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता।

दे.क.सं.४४१८

सांस आयौ अर नीं आयौ। १३६१७

साँस आया और नही आया।

—कुछ पता नहीं कि अगला साँस आये कि न आये, इसलिए मनुष्य को हमेशा सत्कर्मों में ही मशगूल रहना चाहिए।

—मनुष्य और माया सभी नश्वर हैं, अमर केवल ईश्वर है, इसलिए उसके ध्यान में ही जीवन बिताना सार्थक है।

सांस जित्तै आस। १३६१८

जब तक साँस, तब तक आस।

—कैसा भी असाध्य रोग हो, मगर जब तक साँस है, तब तक आशा बनी रहती है कि बीमार ठीक हो जाएगा।

—साँस के साथ-साथ प्रतिपल आशा में ही मनुष्य जीता है। साँस के बिना आस व्यर्थ है और आस के बिना साँस निरर्थक है।

सांसण विटळै तौ कांईं बिगड़ै ? १३६१९

सॉसिन बिगड़े तो कैसी हानि ?

—भ्रष्ट मनुष्य बिगड़कर और कितना बिगड़ सकता है ? बिगड़ने की भी एक सीमा होती है।

—कोयले पर कालिख नहीं लगती।

—अधःपतन की कोई सीमा नहीं होती।

सांस नीसर जासी, सूई रै डोरा ज्यूं। १३६२०

सॉस निकल जाएगा, सूई के धागे की नाईं।

—जिस तरह सूई से धागा एकदम निकल जाता है, उसी तरह मनुष्य का साँस भी जाने कब निकल जाता है, पता नहीं चलता, इसलिए मनुष्य को चाहिए कि किसी का दिल नहीं दुखाये, ओछी हरकतें नहीं करे और किसी के साथ भी धोखा-धड़ी नहीं करे।

—क्षण-भंगुर जीवन के लिए अनंत योजनाएँ बनाना कतई उचित नहीं है।

सांस, बटावू, प्रांमणौ, आवण होय तौ होय। १३६२१

सॉस, बटोही, पाहुन आना हो तो हो।

—घर आये बटोही और मेहमान का यथाशक्ति आदर सत्कार करना चाहिए कि अगले साँस के उनमान क्या पता वे फिर आयें कि नहीं आयें।

—अतिथि और पाहुन साँस के सदृश ही महत्त्वपूर्ण हैं उनका सत्कार अपने सॉसों का ही सत्कार है।

सांस रौ कांईं बिसास, आवै'र नीं आवै। १३६२२

सॉस का क्या विश्वास, आये और नही भी आये।

—इसलिए सॉस रहते किसी का उपकार ही करना चाहिए।

—इसलिए सत्कर्म और ईश्वर की उपासना के निमित्त ही साँस की सार्थकता है।

सांसा अर वासा घणा दौरा छूटै। १३६२३

सॉस और वास बड़ी मुश्किल से छूटते हैं।

—जीवन से कम मोह मनुष्य का अपने आवास से भी नहीं होता। मनुष्य की बात तो दूर पशु-पक्षियों को भी अपनी ठौर से लगाव होता है। इसलिए किसी को अपने निवास से बेदखल करना बहुत जघन्य अपराध है।

सांसा जितरै वासा। १३६२४

सॉस तब तक वास।

—जब तक सॉस है तब तक ही संसार में निवास है। सॉस निकलते ही घर-बार, जमीन जायदाद, मॉ-बाप, भाई-बहिन, पत्नी और बच्चे, निर्झर-नदियॉ, टीले और पहाड़, बाग-बगीचे तितली-भौंरे, चाँद-चॉदनी और बादल-बिजली सब-कुछ लोप हो जाते हैं।

—साँस गया और संसार गया।

सांसी रै कांईं देवाळौ? १३६२५

सॉसी का क्या दिवाला?

—चोरी करने वालों का कैसा दिवाला? कुछ कमी हुई तो एक नई चोरी और करली। पकड़े जाएँ तो जेल में भी खाना-कपड़ा तैयार। जब छूटे तो चोरी का हुनर फिर तैयार।

—जो व्यक्ति हर-हाल में मस्त रहे, उसके लिए न तो दिवाला कुछ माने रखता है और न लक्ष्मी।

सांसौ बूकणौ है। १३६२६

दुख फॉकना है।

सांसौ = चिंता, दुख।

—जिस तरह चूर्ण को एक साथ फाँकते हैं, उसी तरह दुख को भी फाँक लेना चाहिए। रोने-रींकने से वह खत्म नहीं होता। फाँकने से ही खत्म होता है।

सा

साईणां सूं ई भला, ब्याव, बैर अर प्रीत। १३६२७

बराबरी वालों से ही उचित, ब्याह, बैर और प्रीत।

—कोई भी सामाजिक संबंध समान स्तर वालों से हो तो सुविधा रहती है, अन्यथा कई कटु अनुभवों का सामना करना पड़ता है। ब्याह का रिश्ता भी बराबर के व्यक्ति से न करके यदि उच्च स्तर के श्रीमंत से कर दिया जाय तो हीन भावना से ग्रसित होना पड़ता है। बाप-बेटी के संबंधों में भी ऊँच-नीच की बात उत्पन्न हो जाती है। बैर भी बड़े आदमी से हो जाय तो जाने क्या-क्या भुगतना पड़ जाय। प्रेम-प्रीत भी समान स्तर पर न हो तो वह निभती नहीं, टूट जाती है। यह एक नसीहत देने वाली साफ-सुथरी कहावत है।

साई दियां पछै सोदौ थोड़ौ ई तूटै। १३६२८

पेशगी देने के बाद सौदा थोड़े ही टूटता है।

—लाख रुपये के सौदे के भले ही पाँच रुपये पेशगी हों, वह सौदा कायम रहता है। इसलिए कि कलम की तुलना में जीभ का महत्त्व बहुत ज्यादा है। कलम तो बाजार में मोल बिकती है, पर जीभ तो नहीं बिकती। जीभ अमूल्य है। जो जबान से तय हो गया—वह लोहे की लकीर। पेशगी देना-लेना तो मात्र एक औपचारिकता है।

साई देयनै सीयां मारी। १३६२९

पेशगी देकर ठिठुरायी।

—जो व्यक्ति अपनी जबान का पक्का न हो, वह जब चाहे आफत में फँसा सकता है।

—जिस व्यक्ति की जबान का भरोसा नहीं, वह दो कौड़ी में भी महँगा है। जाने कब किस विपत्ति में झोंक दे।

साई देयनै सीयां मारै, जिणरौ पतियारौ कुण करै? १३६३०

पेशगी देकर ठिठुराये, उसका एतबार कौन करे?

दे.क.सं.१३६२९

साकर तौ सूनी अर लूण रै पोहरौ देवै। १३६३१

शक्कर तो सूनी और नमक पर पहरा दे।

—नितांत अव्यवस्थित कारोबार के लिए, चाहे व्यक्ति का हो चाहे राज्य का, जहाँ शक्कर तो सूनी पड़ी है और नमक पर सख्त पहरा लगा है।

—जो व्यक्ति पैसे को दाँत से पकड़े और मोहर की कुछ भी परवाह न करे।

साकुलटा सातां री साई नै बीसां री बधाई लेवै। १३६३२

होशियार कुलटा सातों से पेशगी और बीसियों से बधाई लेती है।

—जो व्यक्ति कई तरह के दंद-फंद जानता हो और तरह-तरह के काम में प्रवीण हो।

—उस गैर-जिम्मेदार व्यक्ति पर कटाक्ष जो किसी को कुछ और किसी को कुछ झाँसा-पट्टी देकर अपना निर्वाह करता हो।

साकूतरा, कूतरा। १३६३३

साकूता, कुत्ता।

साकूतरौ = साकूतौ = सौतेला बेटा।

—सौतेला बेटा, कुत्ते के समान।

—सौतेला बेटा कुत्ते से भी गया-गुजरा होता है।

—सौतेला बेटा कभी सुख नहीं दे सकता।

साख अेक सुसिया री। १३६३४

साक्षी एक खरगोश की।

संदर्भ-कथा : एक बनिया दिसावर में व्यापार के लिए जा रहा था। मोहरों की थैली फरगल (मिरजई) के नीचे बाँध रखी थी। तीसरे पहर ठगों ने उसे घेर लिया। लाठी को सहलाता हुआ मुखिया बोला,'सेठजी,हम तो आप ही के पास आ रहे थे। सूनम को बेटी का ब्याह है। और आज हो गई तीज। फकत छह दिन बाकी हैं। मुझे उधार रकम चाहिए।' सेठ ने सहज भाव से पूछा,'कितनी ?' 'जितनी आपके पास हो।' सेठ तो पहिले ही समझ गया था कि ठगों के फंदे में फँस गया है। मोहरें तो देनी ही पड़ेंगी। ठगों के पास लाठियाँ है,पर उसे तो अपनी बनिक-बुद्धि से सामना करना है। मुस्कराते बोला,'अच्छा हुआ कि दिसावर का चक्कर बच गया। मैं उधारी के धंधे पर निकला हूँ। शकुन भी अच्छे हुए थे। कुछ गिरवी रख सकोगे ?' 'गिरवी ?' मुखिया ने चौंककर कहा,'गिरवी तो मेरी जीभ है,कहें तो काटकर दे दूँ।' सेठ ने गरदन हिलाते कहा,'नहीं,काटने की जरूरत नहीं,यह तो मुँह में ही शोभा देती है।' फिर उसने चुपचाप मोहरों की थैली निकाली। गमछे पर मोहरें खाली करते हुए बोला,'सिर्फ एक मोहर राह-खर्च के लिए रखूँगा।' मुखिया ने प्रतिष्ठा रखने के लिए शराफत दिखलाई,'क्यों एक ही क्यों,दो रख लीजिये।' बनिये ने मुस्कराते हुए कहा,'बनिये का बेटा हूँ न,बेकार ब्याज क्यों गँवाऊँ। एक ही काफी है।'

मुखिया मन-ही-मन बहुत खुश हुआ। ऐसा गावदी बनिया तो आज दिन तक न देखा, न सुना। उधर बनिया भी खुशी-खुशी मोहरें गिनने लगा। एक सौ बीस मोहरें थीं। कहा,'तुम भी गिन लो।' मुखिया ने फिर उदारता दिखाई,'आपने अभी गिनी ही हैं। अब कोई जरूरत नहीं। बरगद के नीचे बैठे हैं। भरोसा तो करना ही पड़ता है।'

'हाँ,यह बात तो सही। पर एक बात तो करनी ही पड़ेगी। किसी की साख डलवाये बिना मैं उधार नहीं देता। साख डलवाने की तकलीफ तो करनी ही होगी।' संयोग की बात ऐसी बनी कि इतने में एक खरगोश पास से गुजरा। मुखिया झट कहने लगा,'इस बीहड़ जंगल में और साख तो कहाँ से लाऊँ। इस 'सुसिये' की साख ही लिख दीजिये।' बनिया तुरंत मान गया। खुशी प्रकट करते बोला,'कोई बात नहीं,सुसिये से बढ़िया साख और किसकी हो सकती है ?' इतना कहकर उसने बही खोली एक सौ बीस मोहरों का हवाला देते हुए उसने मुखिये का नाम-गाँव लिख लिया,जो एकदम गलत था। अंत में जोर से बोलते हुए बही में लिखा—'साख अेक सुसिया री।' और उसने मोहरें मुखिये को सँभला दीं। राम-राम करने के बाद चारों ही ठग अपनी राह लगे और बनिये ने अपने गाँव की राह पकड़ी।

घर आकर सेठानी से उसने कुछ नहीं छिपाया, सारी बात बता दी। वक्त जरूरत वह राजा को भी उधार देता था। सभी दरबारी उससे परिचित थे। राजा से उसने कुछ चर्चा नहीं की। ऐसी मूर्खता का नमूना किसे बताये ? क्यों बताये ? पर उसने एक विश्वस्त सैनिक से साँठ-गाँठ अवश्य की। वह सैनिक उसकी पेढ़ी पर दो-तीन चक्कर लगा जाता।

संयोग बनना होता है तो किसी से पूछकर नहीं बनता। वे ही चारों ठग वेश बदलकर उसकी पेढ़ी हजार मन बाजरी का सौदा करने आये। बीस कोस दूर किसी गाँव के नामजद बनजारे थे। बनिये ने मुखिये को बोलते ही पहिचान लिया। पर जाहिर कुछ भी नहीं होने दिया। बाजरी का भाव-ताव सभी तय हो गया। बनिये ने कहा, 'आप दो-तीन जगह भाव का पता कर लें। तब तक मैं रुपयों का इंतजाम करता हूँ। लक्खी बनजारे के मौसेरे भाई को कौन नहीं जानता। लेकिन एक पखवाड़े में आपको हजार मन बाजरी मेरी पेढ़ी पर पहुँचानी होगी।' मुखिया पुरजोर हामी भरकर साथियों के साथ बाजरी का भाव पूछने गया। उनके जाते ही बनिये ने विश्वस्त सैनिक को सारी बात समझा दी। वह थोड़ी ही देर में पाँच सैनिक और लेकर पेढ़ी के भीतर छिप गया।

कुछ ही देर बाद मुखिया ने भाव की रजामंदी जतलाकर कहा, 'मुझे मंजूर है।' बनिये ने और भी जोर से कहा, 'आपको मंजूर है तो मुझे भी मंजूर है।' बनिये का इतना कहना हुआ कि भीतर दुबके सैनिक बाज की नाईं झपटे सो चारों ठगों को पकड़ लिया। मजबूत रस्सियों से झटपट बाँध दिया।

इलाके के नामजद ठग थे। राजाजी के सामने बिल्कुल मुकर गये कि बनिया सरासर झूठ बोल रहा है। वे तो उससे पहिली बार मिले हैं। राजाजी असमंजस में फँस गये। उन्होंने बनिये से पूछा, 'तुमने किसी की साख डलवाई थी ?' बनिये ने तुरंत उत्तर दिया, 'डलवाई थी हुजूर। बही में साफ लिखा है—साख एक लोमड़ी की। मुखिया के तीनों साथी एक साथ बोल उठे, 'अंदाता, बनिया एकदम झूठ बोल रहा है। यह लोमड़ी कहाँ से आ गई ? उस समय तो खरगोश पास से निकला था ?' मुखिया ने इशारा भी किया, पर उन्होंने देखा नहीं। बनिये को झूठा साबित करने के लिए, वे राजा के चेहरे की ओर देख रहे थे। तब तक बनिया बही खोलकर राजाजी के सामने खड़ा हो गया। 'ये तीनों बिल्कुल सच कह रहे हैं। यह देखिये गरीब-परवर साफ लिखा है—साख अेक सुसिया री। बाकी सारी बातें लिखी हुई हैं। गलती माफ करें अंदाता। जबान थोड़ी उथल गई। खरगोश के बदले लोमड़ी का नाम निकल गया।'

राजा ने जोर से ठहाका लगाकर कहा, 'मैं तुम्हारी गलतियाँ खूब समझता हूँ। तभी तो तुम्हारा इतना मान रखता हूँ। आज से ही राज के खजाने की जिम्मेदारी तुम्हारी।' फिर दीवान की ओर देखते आदेश दिया, 'इन चारों के नाक-कान काटकर ललाट पर ठग का दाग लगा दो। इन सबकी सारी जायदाद जब्त करके अपने राज्य से सौ कौस दूर खदेड़ दो। गनीमत समझो कि इन्हें सूली पर नहीं चढ़ाया।' मुखिया ने सूली की खातिर हाथ जोड़े, पर राजा नहीं माना सो नहीं माना।

—बनिये की बुद्धि का मुकाबला न ठग कर सकते हैं, न चोर और न डकैत।

साख नै पारख सारीखी।–व.२४४ १३६३५

प्रतिष्ठा और पहिचान एक समान।

—प्रतिष्ठा से ही आदमी के व्यक्तित्व का आकलन होता है। प्रतिष्ठित व्यक्ति की बात का सभी एतबार करते हैं। उसका नाम चलता है। इसी तरह परिचित व्यक्तियों पर भी सहज विश्वास करना पड़ता है। जिसकी जितनी ज्यादा पहिचान होती है, उसकी उतनी प्रतिष्ठा बढ़ती है।

—अच्छे गुण एक-सा महत्त्व रखते हैं।

साख में सादू अर जीमण में लाडू। १३६३६

रिश्ते में सादू और भोजन में लाडू।

सादू = दो बहिनों के पति परस्पर सादू कहलाते हैं।

लाडू = लड्डू।

दे.क.सं.३२६६

साख समझै ज्यांरी। १३६३७

जो समझे उसके लिए ही रिश्ता है।

—जो व्यक्ति रिश्ते की मर्यादा समझता है, उसीके लिए रिश्ते का महत्त्व है, जो नहीं समझता उसके लिए रिश्ता या संबंध कुछ भी माने नहीं रखता।

—जो माने उसीके लिए रिश्ते की पवित्रता है।

साख सौ पीढ़ी ई बूढ़ी नीं व्है। १३६३८

प्रतिष्ठा सौ पीढ़ी भी बूढ़ी नही होती।

—प्रसिद्ध व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी उसकी चर्चा लोगों की जबान पर रहती है और आगे से आगे चलती रहती है।

—प्रसिद्ध विभूतियों का नाम इतिहास में दर्ज होने के पश्चात् कभी मिटता नहीं।

साख हारया, जमारौ थोड़ौ ई हारया। १३६३९

फसल गॅवाई, जिदगी थोड़े ही गॅवाई है।

दे.क.सं.३०८९

साग खायां सवाद रौ बेरौ, साथै रह्यां मिनखां री पारख। १३६४०

साग खाने पर स्वाद की पहिचान, साथ रहने पर मनुष्य की पहिचान।

— अलग अलग वस्तुओं की पहिचान के अलग-अलग तरीके होते हैं। सब्जी की पहिचान खाने से होती है, मनुष्य की पहिचान साथ रहने पर होती है। सोने की पहिचान कसौटी से होती है, इत्र की पहिचान सूँघने से होती है और संगीत की पहिचान सुनने से होती है।

सागड़ी नै पाघड़ी रौ भार नहीं।–व.२६७ १३६४१

सागडी को पगड़ी का क्या बोझ।

सागडी = बैल या हल हॉकने वाला। किसान का नौकर जो खेती संबंधी सारे काम करता है।

—जो व्यक्ति रात-दिन अथक मेहनत करता है, उसके लिए छोटे काम का कोई बोझ नहीं होता।

—जिसने जिदगी में बड़ी-बड़ी आफतें उठाई हैं, वह मामूली दुख की परवाह नहीं करता।

सागर रै भरोसै गागर नीं फोड़ीजै। १३६४२

तालाब के भरोसे घड़ा नही फोड़ा जाता।

दे.क.सं.९१६४, ९४५०

साग सुधरै मसालां, बहु सुधरै कसालां। १३६४३

सब्जी सुधरे मसालो से, बहू सुधरे कसालों से।

कसालौ = अभाव, संकट, दुख।

—भोजन तो पर्याप्त सामग्री से अच्छा बनता है और मनुष्य दुखों की आँच से निखरता है।

—खुशहाली मनुष्य को जीवन के प्रति लापरवाह बना देती है।

सागी रोटी री कोर ला। १३६४४

उसी रोटी की कोर ला।

—किसी असंभव काम के लिए हठ करना।

—जिस बात की सफलता पूर्णतया संदिग्ध हो, उसे पाने का दुराग्रह करना बेकार है।

सागेड़ौ कुटीज्योड़ौ ताजिंदगी नीं भूलै। १३६४५

अच्छी तरह पिटा हुआ व्यक्ति आजीवन नही भूलता।

—बदमाश व्यक्ति मीठे उपदेशों से नहीं, दंड से सुधरता है।

—सुख के दिन विस्मृत हो जाते हैं, पर दुख के दिन नहीं भुलाये जाते।

सागै ई कुवाड़ा नै सागै ई डांडा। १३६४६

वही कुल्हाड़े और वे ही डंडे।

—जो व्यक्ति लाख समझाने पर भी अपनी आदतों से बाज न आये और जीवन के उसी पुराने ढर्रे को चलाता रहे तब इस उक्ति का प्रयोग होता है।

—तंगी के दिनों में भी जो व्यक्ति अपने खर्चीले स्वभाव को पहिले की तरह कायम रखे।

सागै कुण कै'र जावै। १३६४७

कौन कहकर साथ चलता है।

—चंद्रलोक में साथ निभ सकता है, पर मरने की वेला न बेटा बाप का साथ निभाता है, न माँ बेटे का साथ निभाती है और न सती-साध्वी पति का साथ निभाती है।

—मनुष्य अकेले ही आता है और अकेला ही जाता है।

सागै बिणजै सो साह कुहावै। १३६४८

वही भाव बेचे सो शाह कहाये।

—ऊँचे भाव से तो सभी बनिये अपना माल बेचते हैं। पर माल को बिना रोके, उसी भाव से बेचे वह वास्तव में शाह कहलाने का अधिकारी है। लाभ कमाने की बजाय बेकार बैठे रहना ज्यादा घातक है।

—लाभ हो चाहे न हो बनिये का तराजू रुकना नहीं चाहिए।

सागै सोवै अर मुंह लुकोवै। १३६४९

साथ सोये और मुँह छिपाये।

—उस कृतघ्न व्यक्ति पर कटाक्ष जो सहवास के सुख का तो साथी बने और बाद में कायर की भाँति मुँह छिपाता रहे।

—जो व्यक्ति बुरे कामों में तो साथ रहे पर बदनामी से बचना चाहे।

सागै तौ सेवळा रौ ई चोखौ। १३६५०

साथ तो सेवले का भी बेहतर।

सेवळो = एक प्रकार का छोटा जंतु जिसकी समस्त रोमावली काँटेदार होती है। खतरे का आभास पाते ही वह अपना मुँह व पाँव रोमावली में छिपा लेता है, तब क्रुद्ध सर्प उस पर फन मारता है। काँटे चुभने पर वह और जोर से वार करता है और वार करते-करते मर जाता है।

संदर्भ-कथा : एक बनिया दिसावर में कमाई करने जा रहा था। आदतन उसने माँ के पाँव छूए। माँ ने भी हमेशा की तरह आशीर्वाद दिया। पर एक बात नई कही, 'दिसावर की यात्रा लंबी है और तू है अकेला। एक से दो सदा ही अच्छे होते हैं। साथ तो साँप का भी बुरा नहीं होता। तुझे राह में जो भी जीव-जंतु मिल जाय उसे साथ ले लेना। माँ का दूध और माँ का वचन कभी झूठ नहीं होता। और यों भी वह इकलौता बेटा माँ का खूब आदर करता था। माँ के हाथ से गुड़ की मांगलिक डली मुँह में रखकर वह खुशी-खुशी रवाना हो गया।'

गाँव से कोस डेढ़-कोस दूर निकला ही था कि उसे रास्ते पर गोल-मटोल सेवला दिखलाई दिया। गमछे में लपेटकर बुगचे में रख लिया। चलते-चलते आकाश में तपता सूरज सिर पर आया तो उसने भी सामने के सघन बरगद के नीचे विश्राम करना चाहा। शायद उसकी तरह सेवले को भी भूख लगी हो। बरगद के नीचे कटोरदान खोलते ही उसने सबसे पहिले सेवले को बाहर निकालकर उसके सामने सूखे पत्ते पर चूरमा रखा। सेवले को जाने क्यों उस पर पूरा विश्वास हो गया था। मुँह बाहर निकालकर वह चुपचाप चूरमा खाने लगा। फिर तो

उसका डर बिल्कुल मिट गया। रोटी खाने के बाद आँखें भारी-भारी महसूस हुईं तो बनिया वहीं सो गया। और सोते ही खर्राटे भरने लगा। बड़ी मीठी और गहरी नींद आई थी उसे। सेवले को और कुछ नहीं सूझा तो वह इधर-उधर घूमने लगा।

कोई घड़ी-सवा-घड़ी के बाद जब बनिया आलस मरोड़कर उठ बैठा। इधर-उधर देखा, पर सेवला कहीं नजर नहीं आया। घबराकर पीछे देखा तो उसकी आँखें फटी-की-फटी रह गईं। दो पुरस लंबा काला साँप मरा पड़ा था। साँप की पूँछ सेवले के मुँह में पकड़ी हुई थी। और लहूलुहान फन सेवले के पास पड़ा था। बनिया उसी पल सारी बात अच्छी तरह समझ गया। भावावेश में आकर सेवले को सहलाया। ऊप्र उठाते ही साँप की पूँछ मुँह से छूट गई। तत्पश्चात् लकड़ियाँ जलाकर साँप की दाह क्रिया की। सेवले को बुगची में रखने लगा तो उसकी आँखें भर आईं। माँ के दूध-वचन की नाईं आँसू भी झूठे नहीं होते।

—मामूली व्यक्ति का भी साथ बहुत अच्छा होता है, अनदेखा नहीं करना चाहिए।

दे.क.सं.१३५३६

पाठा : सांढ़ौ तौ सेळा रौ ई आछौ।

साच कहण, सुखी रहण। १३६५१

सच कहना, सुखी रहना।

—सच बोलने वाले के मन में किसी प्रकार की ग्रंथि या अपराध-बोध की भावना नहीं रहती इसलिए वही सुखी रहता है।

—सच बोलने वाला तनावमुक्त होता है।

साच कही मांनै नहीं, झूठै जग पतियाय। १३६५२

साच कही माने नहीं, झूठ से जग पतियाये।

—मानवीय संसार का कुछ ढर्रा ही ऐसा है कि सच बात से सबको खीज होती है और झूठ सबको अच्छा लगता है। लोग उस पर अदेर विश्वास कर लेते हैं।

साच नै कांई आंच! १३६५३

साच को क्या आँच!

—सच बोलने वाले व्यक्ति बहुधा इस बात के लिए गर्व करते हैं कि साच को कैसी आँच और कैसा डर ! जो भी कहेंगे सच कहेंगे। किसी का डर नहीं लगता।

पाठा : सांच नै कैड़ी आंच। सांच नै आंच कोनीं।

साच नै सराप नीं। १३६५४

साच को शाप नहीं।

—संत-महात्माओं या किसी दुखियारे का शाप सबको लगता है पर सच बोलने वाले पर उसका कुछ भी असर नहीं पड़ता।

—सत्य की शक्ति को शाप छू भी नहीं सकता।

साचा-बोली मां ! कूड़ा-बोली कित गई ? १३६५५

सच-बोली माँ ! झूठ-बोली कहाँ गई ?

संदर्भ-कथा : एक लड़का बहुत उच्छृंखल था। बाहर खेलने-कूदने जाता तो समय पर खाने के लिए नहीं आता। बार-बार समझाने पर भी उसकी आदत में रंचमात्र भी बदलाव नहीं आया तो घरवाले सभी हैरान हो गये। संयोग से बच्चे की दो माताएँ थीं, एक सगी और दूसरी सौतेली। एक दिन दोनों ने छोकरे को सुधारने के लिए एक नियम बनाया कि यदि वह समय पर घर न आये तो उसे खाना मत दो। भूख से तंग आकर वह अपने-आप सुधर जाएगा। बच्चे को सख्त हिदायत दे दी। पर हामी भरने के बाद भी अपनी मनमानी से बाज नहीं आता। सौतेली माँ तो नियम का सच्चाई से पालन करती। जब सगी माँ बाहर होती और वह देर से आता तो उसे कहती कुछ भी नहीं। पर खाने के लिए उसे कुछ भी नहीं देती। नियम का अक्षरशः पालन करती। लड़का खूब चिरौरी करता, पर वह नहीं मानती। रो-धोकर सो जाता। सगी-माँ तो आखिर सगी-माँ ही होती है। जहाँ तक बनता वह घर पर ही रहती। देर से आने पर वह बेटे की पिटाई तो खूब करती, लेकिन उसे भूखा नहीं रखती। आखिर खाना दे ही देती। बच्चा आँसू पोंछकर खुश हो जाता। एक दिन रात को वह बहुत देर से आया। उस समय सगी-माँ बाहर थी। और उसके पेट में चूहे कूद-फाँद कर रहे थे। पर सौतेली-माँ क्यों परवाह करने लगी। उसे बेटे की भूख से कोई वास्ता नहीं था। वह नियम और सच्चाई का पालन करना जानती थी। क्या मजाल कि किंचित् भी व्यतिक्रम हो जाय। छोकरे से आखिर

नहीं रहा गया तो उसने सौतेली माँ से पूछा, 'मेरी सच-बोली माँ, वह झूठ-बोली माँ कहाँ गई ? कुछ पता है ?'

'मैं नहीं जानती। कहीं पड़ोस में गई होगी।' इतना कहकर वह सोने चली गई। इतने में झूठ-बोली माँ आ गई। पड़ोस से बच्चे के लिए थोड़ा घी-गुड़ माँगकर लाई थी। पहिले पिटाई तो उसने अच्छी-खासी की। पर अंत में अपने हाथों से घी-गुड़ का चूरमा बनाया। बच्चे ने आँसू पोंछकर चूरमे की रंगत देखी तो एकदम चकित रह गया। बोला, 'माँ, पहली बार तुम्हारी कसम खाकर कहता हूँ कि अब मैं कभी देर से नहीं आऊँगा। मुझे सच-झूठ की असली पहिचान आज ही हुई है।'

—सच बोलने के झूठे अभिमान में मनुष्य नियमों की पाबंदी को ही सच्चाई मान लेता है।

—कभी-कभार झूठ की मर्यादा सत्य से बढ़कर होती है।

साची कह्यां झाळ ऊठै। १३६५६

सच कहने पर आग लगती है।

—सच बोलने की हवस तो सबको रहती है, पर सच सुनना कोई पसंद नहीं करता। सच बात कान में उतरी नहीं और समूची देह में मानो अंगारे सुलग उठे हों।

—अजीब विडंबना है कि सच बोलने का ढोल तो खूब पीटा जाता है, पर सच सुनने से सभी कतराते हैं।

साची कह्यां मां ई माथा में मेलै। १३६५७

सच कहने से माँ भी माथे पर मारती है।

दे.क.सं.१३५१७

साची कैवणियौ, बाप रौ मारणियौ ज्यूं लागै। १३६५८

सच कहने वाला, बाप का हत्यारा लगता है।

—कहने-सुनने को तो 'सत्यमेव जयते' बहुत सुंदर लगता है, पर सच बोलने से बड़ा अवगुण कोई दूसरा नहीं है। इसके विपरीत झूठ की सभी बुराई करते हैं, पर झूठ सबको सुहाता है। कभी-कभार तो निखालिस सच बोलने वाला बाप के हत्यारे-सा बुरा लगता है।

मि.क.सं.१३५१८

साची बात कैवण रौ बळौ किणनै है ? १३६५९

सच बात कहने की गर्ज किसे है ?

—सच बोलने वाले की बात पर कोई कान नहीं देता, तब वह खीजकर कहता है कि सच्ची बात कहने की गर्ज किसे है, सुनना हो तो सुनो, नहीं तो भाड़ में जाओ।

—सच बोलने वाले से सभी दूर रहना चाहते हैं।

साची बात सगळां नै खारी लागै। १३६६०

सच बात सबको कडवी लगती है।

—जब सच्ची बात ममता की प्रतिरूप माँ को भी बुरी लगती है, तब इसे सुनने वाला और कौन मिलेगा।

—सच बोलने का उपदेश तो सर्वत्र सुनने को मिलता है, पर वास्तव में सच सुनना सबको कड़वा लगता है। सच्चाई से उकताकर ही तो लोगों ने ईसा-मसीह को सलीब पर टाँगा था।

साचै री बावड़ै, झूठै री नीं बावड़ै। १३६६१

सच्चे के लौट आते है, झूठे के नही लौटते।

—सच्चे के दिन लौट आते हैं, पर झूठे के दिन कभी लौटकर नहीं आते।

—सच्चा व्यक्ति अंततः सुख-समृद्धि की प्राप्ति कर लेता है, पर झूठा व्यक्ति आखिर कष्ट उठाता है।

साचौ ऊभौ नाचै अर कूड़ा माथै धूड़। १३६६२

सच्चा मजे मे नाच रहा है और झूठे पर धूल।

—सच्चा व्यक्ति जीत की खुशी में नाच-नाच उठता है और झूठे की हार पर सभी उसका तिरस्कार करते हैं। उस पर थूकते हैं।

—सत्य सर्वत्र समादृत होता है और झूठ सब जगह तिरस्कृत।

साचौ नांव सायब रौ। १३६६३

सच्चा नाम साहिब का।

—साहिब का नाम ही एकमात्र सत्य है, बाकी सब मिथ्या।
—ईश्वर के नाम का सुमिरन करते ही सत्य स्वतः साथ जुड़ जाता है।

साचौ मिंत तौ अेक ई घणौ। १३६६४

सच्चा मित्र तो एक ही काफी।

—जीवन में एक भी सच्चा मित्र मिल जाय तो इससे बड़ी नियामत और कुछ भी नहीं है। लेकिन उसका मिलना नितांत दुर्लभ है। संयोग से यदि मिल जाय तो उससे बड़ा सौभाग्य और कुछ भी नहीं हो सकता।

साजन जिसा भोजन। १३६६५

साजन जैसा भोजन।

—जैसा प्रियतम वैसा पकवान।
—मनुष्य की योग्यता के अनुसार ही उसका सम्मान होता है।
—जैसा गुण वैसा आदर।

साजनिया साल्है नहीं, साल्है आईठांण। १३६६६

साजन दुखते नहीं, छाले दुखते हैं।

आईठांण = पैर अथवा हाथ की अँगुलियों में अधिक कार्य या एक ही वस्तु के अधिक संघर्ष से पड़ने वाली ग्रंथि जहाँ की चमड़ी कठोर एवं सुन्न हो जाती है।

—संयुक्त-परिवार की गृहिणी के मन की व्यथा कि उसे गृह-स्वामी से कोई शिकायत नहीं है, शिकायत है तो केवल काम की अत्यधिक मार से। चाकी चलाते-चलाते उसके हाथों में छाले पड़ गये हैं, खेतों में काम करते-करते उसके पाँव टीसने लगे हैं। बस, यही तकलीफ है।

साजा-वाजा केस, गौड़ बंगाला देस। १३६६७

सजे-सिंवरे केश, गौड़-बंगाली देश।

—राजस्थान में भिन्न-भिन्न रजवाड़ों की प्रशंसा में उक्तियाँ मिलती हैं तो यह एक भारतवर्ष के प्रांत बंगाल की उक्ति है। वहाँ की रमणियों और शौकीन पुरुषों के केश सजे सँवरे रहते

हैं। औरतों के जूड़ों में फूल। पुरुषों के केशों में सुगंधित तेल। हवा महक-महक उठती है।

साजा हुआ साहजी खूंटण लागा कैर। १३६६८

स्वस्थ हुए शाहजी बीनने लगे कैर।

कैर = मरुभूमि में होने वाला एक प्रकार का पत्तेविहीन काँटेदार झाड़ीनुमा पेड़ व उसके फल, करील।

—राजस्थान में पेट भरना बहुत मुश्किल है। अवकाश मिलता ही नहीं। मिलता है तो केवल बीमारी में। स्वस्थ होने पर वे ही हाथ, वे ही पाँव और वही काम। आराम करना था सो बीमारी की अवस्था में कर लिया। स्वस्थ होते ही वही कोल्हू और वे ही बैल।

सा'जी आवै तौ जीमण करजौ, साजी आवै तौ भखार में न्हाक दीजौ। १३६६९

साहजी आये तो पकवान बनाना, साजी आये तो भंडार में डाल देना।

साजी = एक प्रकार का क्षार विशेष जो अधिकतर पापड़ बनाने के काम आता है और औषधियों में भी।

—इस उक्ति में दो समान शब्दों का कौतुक है, उच्चारण में जिनकी ध्वनि एक-सी लगती है। सा'जी और साजी।

—गुणों के अनुसार ही व्यक्ति का सम्मान होता है। एक व्यक्ति के लिए तो पकवान बनता है और दूसरे को तहखाने में जगह मिलती है।

साजी, खारौ डळौ। १३६७०

साजी, कड़वी डली।

—साजी के लिए देखिये पिछली कहावत।

—जिस व्यक्ति की बोली में ही क्षार घुला हो, उसके लिए।

—जिस मनुष्य का समूचा व्यक्तित्व ही कड़वा हो।

साजै पूंदां आक लीन्हौ। १३६७१

स्वस्थ गुदा में आक लिया।

आक = मंदार। इस पौधे का डंठल, पत्ते या फल-फूल तोड़ने पर दूध जैसा गाढ़ा पदार्थ निकलता है। आक का दूध खरोंच या घाव से शरीर में जहर की नाईं चढ़ जाता है।

—चलते रास्ते जान-बूझकर आफत मोल लेना।

—बैठे-ठाले कुछ ऐसा काम करना जिससे काफी क्षति हो।

साजौ खावै धांन अर मांदौ खावै दांम। १३६७२

स्वस्थ खाये धान और रोगी खाये दाम।

—स्वस्थ आदमी के लिए खाने-पीने में उतना खर्च नहीं होता, जितना बीमार व्यक्ति के लिए डाक्टर, वैद्य और औषधियों में खर्च हो जाता है। इसलिए रोगी धन खाता है और स्वस्थ व्यक्ति धान खाता है।

पाठा : साजौ खावै धांन अर मांदौ खावै धन।

साजौ बांणियौ मांदा बिरौबर अर मांदौ बांणियौ मरया बिरौबर। १३६७३

स्वस्थ बनिया बीमार के बराबर और बीमार बनिया मरे बराबर।

—शारीरिक काम की मेहनत से बचने के लिए बनिये सहज भाव से इस उक्ति का सहारा लेते हैं कि स्वस्थ बनिया तो बीमार के बराबर है और बीमार बनिया मरे के बराबर हैं। यों भी धन कमाने के अलावा लड़ाई-झगड़े के काम से इनका कोई वास्ता नहीं रहता।

साझै री नाव, गंगा-पार नीं उतारै। १३६७४

साझे की नाव, गंगा पार नहीं उतारती।

—लोक मानस में जाने क्यों सहकारिता के विरुद्ध इतनी खीझ है। लेकिन आजादी के बाद सहकारी समितियों और अर्ध-सरकारी निगमों की जो दुर्दशा सामने आई है, इससे तो पता चलता है कि लोक-मानस का अनुभव एकदम पुख्ता और खरा है कि साझे की नाव गंगापार नहीं उतार सकती।

साझै री मां नै स्याळिया फाड़ै। १३६७५

साझे की माँ को सियार फाड़ते हैं।

—सहकारी समितियों और निगमों की बात छोड भी दें तो कोई बात नहीं, पर ममता की साक्षात् मूर्ति माँ भी यदि सात बेटों के जिम्मे हो तो उसकी भी कोई देखभाल नही करता। बड़ी दुर्दशा हो जाती है।

—साझे का कोई भी काम क्यों न हो, उसमें निश्चित रूप से घाटा और अपमान है।

साझै री हांडी, चौरस्तै फूटै। १३६७६

साझे की हॅडिया, चौराहे पर फूटती है।

—साझे का कोई भी काम अतत विफल होता है।

—साझे के काम में लाभ की आशा करना व्यर्थ है।

साझै री होळी नै सगळा ई बाळै। १३६७७

साझे की होली को सभी जलाते है।

—सारे सदस्य मिलकर ही सहकारिता के काम को चौपट करते है।

—साझे का काम आखिर भस्म होता है।

साझौ बाप रौ ई खोटौ। १३६७८

साझा बाप का भी बुरा।

—और तो और बाप के साथ भी साझे का काम नही करना चाहिए, वह भी ठेठ तक निभता नही।

—मनुष्य की प्रकृति मे निजत्व का भाव इतना गहरा जमा हुआ है कि साझे के काम मे उसका मन रमता ही नही।

साटिया लड़ै ज्यूं कांई लड़ौ! १३६७९

साटियो की भाँति क्या लड़ रहे हो!

साटिया = राजस्थान की अनुसूचित जाति जो बैलो का सौदा करती है। बछडो को बधिया करती है। आपस मे लड़ने के लिए साटिये बडे मशहूर है।

—लोगों को परस्पर लडते देखकर शरीफ लोग इस उक्ति का प्रयोग करते है।

साटिया वाळा आटा-साटा, ब्याव में नीं चालै। १३६८०

साटिये वाली अदला-बदली, ब्याह मे नही चलती।

—साटिया जाति के लोग औरतों का सौदा भी आपस में करते रहते हैं। एक औरत के साथ इनका मन अधिक दिन तक नहीं रमता।

—विवाह एक प्रतिष्ठित व्यवस्था है, उसमें औरतों की अदला-बदली नहीं होती। उसकी मर्यादा रखने में ही समाज की मर्यादा है, व्यक्ति की मर्यादा है और परिवार की मर्यादा है।

साटिये रै भाग रा गिड़ा पड़ै। १३६८१

साटिये के भाग्य से ओले पड़ते हैं।

—ओलों की मार से पशु-पक्षी मर जाते हैं तो साटियों के लिए अचीता महाभोज हो जाता है।

—प्राकृतिक प्रकोप और सामाजिक दंगों से भी दुष्ट लोग अपनी स्वार्थ-सिद्धि कर लेते हैं।

साटी रौ पांन घड़ीक अठी तौ घड़ीक उठी। १३६८२

साटी का पान कभी इधर तो कभी उधर।

साटी = जमीन पर फैलने वाली एक बेल जिसके पत्ते मामूली हवा से भी हिलने लगते हैं।

—जिस व्यक्ति का अपना कोई मत न हो और वह दूसरों की राय से कभी इधर तो कभी उधर झुक जाता हो।

—राजनैतिक दल-बदलुओं के लिए यह उक्ति बहुत सटीक है।

साटै री छींयां कित्तीक ताळ बैठौ रहीजै। १३६८३

साटे की छाया में कब-तक बैठा रहा जा सकता है।

साटौ = पुनर्नवा से मिलता-जुलता एक प्रकार का क्षुप जो जमीन पर फैलता है।

—जो व्यक्ति स्वयं अभावग्रस्त है, उसके सहारे कोई कितने दिन गुजारा कर सकता है।

—राजनैतिक कार्यकर्ताओं से अधिक आशा रखना व्यर्थ है।

—छोटे कर्मचारी अधिक लाभ नहीं पहुँचा सकते।

साठ पाठां में अेक फुलड़ी। १३६८४

साठ पाठों में एक फुलड़ी।

पाठा = जवान बकरी। फुलड़ी = जिस बकरी के कान पूरे सफेद हों।

—श्रेष्ठ गुणों वाला व्यक्ति हजारों में एक होता है।

—श्रेष्ठ व्यक्ति की दूर से पहिचान हो जाती है, फुलड़ी बकरी के उनमान।

साठां कोसां पांणी अर बारह कोसां वांणी। १३६८५

साठ कोस पर पानी और बारह कोस पर वाणी ।

—साठ कोस पर पानी बदल जाता है और बारह कोस पर बोली बदल जाती है ।

—प्राकृतिक वैविध्य और सामाजिक या सांस्कृतिक वैविध्य की अपनी खूबसूरती है । मनुष्य को चाहिए कि इस वैविध्य को सुरक्षित भी करे और परिवृद्धित भी ।

साठां में ई नीं आवै तद आठां में कद आवै ? १३६८६

साठ मे भी न आये तो आठ मे कब आये ?

—साठ वर्ष की उम्र में भी अक्ल न आये तो आठ वर्ष की उम्र में क्योंकर आ सकती है ?

—कोई बुजुर्ग नासमझी की बात करे तब परिहास मिश्रित व्यंग्य के रूप में यह उक्ति काम में ली जाती है ।

साठा पाठा । १३६८७

साठा पाठा ।

—कोई बूढा शादी करे तो वह अपनी सफाई में कहता है कि साठ वर्ष की उम्र में ही पुरुष पट्ठा बनता है ।

—मर्द अपने को कभी बातों में बूढ़ा नहीं मानता । उसकी जवानी आजीवन कायम रहती है ।

साठीकौ किसौ चाखनै खोदीजै । १३६८८

साठीका कौन-सा चखकर खोदा जाता है ।

साठीकौ = साठ पुरुष गहरा कुऑ । सीने की तरफ दोनों हाथ लंबे करने पर जो लंबाई बनती है, वह एक पुरुष कहलाती है ।

—इतना गहरा कुऑ पहिले पानी चखकर थोड़े ही खोदा जाता है ।

—किसी भी कार्य का परिणाम पहिले मालूम थोड़े ही होता है, फिर भी काम तो शुरू करना ही पड़ता है ।

साठी बुध न्हाटी । १३६८९

साठ आये, बुद्धि जाये ।

—बड़ी उम्र का कोई व्यक्ति बेवकूफी की बात करे तो प्रत्यक्ष-दर्शी इस कहावत का हवाला देते हैं कि साठ बरस आये और बुद्धि जाये। कभी-कभार तो वह व्यक्ति स्वयं इस उक्ति के द्वारा अपनी भद्द उड़ाता है।

सादू सगपण गिंडक धन। १३६९०

सादू का संबंध श्वान धन।

—अन्य मवेशी और बड़े पशुओं की तुलना में कुत्ते का कुछ भी महत्त्व नहीं है, इसी प्रकार अन्य रिश्तों की तुलना में सादू का रिश्ता भी विशेष महत्त्व नहीं रखता।

—सादू और कुत्ते का महत्त्व एक जैसा ही है।

सात ई भव री सूझै। १३६९१

सात ही भव की सूझती है।

—बेहद चतुर और अत्यधिक बुद्धिमान व्यक्ति की प्रशंसा में...।

—दूरदर्शी व्यक्ति के लिए।

सात ई सोना रा, तौ ई पूंद पीतळ री। १३६९२

सात ही सोने के, फिर भी गुदा पीतल की।

—आदमी में अनेक गुण होते हुए भी कुछ-न-कुछ अवगुण तो होता ही है।

—श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ व्यक्ति में एकाध अवगुण तो होते ही हैं।

सात घरां री गिंडकड़ी। १३६९३

सात घर की कुतिया।

—जिस प्रकार कुतिया अपनी प्रकृति के अनुसार टुकड़ों की खातिर इस घर से उस घर में भटकती रहती है, उसी प्रकार कुछ स्त्रियाँ भी बातें छौंकने के लिए कई घरों के चक्कर लगाती हैं। उन्हें ही लक्ष्य करके यह कहावत कही जाती है।

—बिना बुलाये किसी के भी घर पहुंचने वाले व्यक्ति का कोई आदर नहीं करता।

सात नेवरा करौला। १३६९४

सात निहोरे करोगे।

—जो व्यक्ति वाजिब बात को भी न माने तब सामने वाला चुनौती-पूर्ण लहजे में कहता है, कोई बात नहीं पर बाद में खूब निहोरे करोगे, इसलिए अभी मान जाओ तो गरिमा बनी रहेगी।

सात-पांच री लाकड़ी, अेक जणा रौ भारौ। १३६९५

सात-पॉच की लकड़ी, एक का भारा।

दे.क.सं.७९८५

सात बीसी सौ अर नव बीसी हजार। १३६९६

सात बीसी सौ और नौ बीसी हजार।

—सात को बीस से गुणा करने पर १४० होते हैं और नौ को बीस से गुणा करने पर १८० होते हैं। पर जो व्यक्ति क्रमशः सौ और हजार बताये, उसकी बुद्धि को क्या कहा जा सकता है।

—महामूर्ख या अज्ञानी व्यक्ति पर कटाक्ष।

सात बेटां री मां नै स्याळिया खावै। १३६९७

सात बेटो की मॉ को सियार खाते है।

दे.क.सं.१३६७५

सात भौ री लागै। १३६९८

सात भव की लगती है।

—कोई भले, नेक और पर दुख-कातर व्यक्ति पर अचीता संकट आये तो लोग संवेदना प्रकट करते हुए कहते है कि इस भले मानुस ने तो चींटी तक को नहीं सताया, इस पर यह आफत क्योकर आई ? तब बूढ़े-बुजुर्ग कहते हैं कि भैया, इस जन्म का ही हिसाब नहीं होता, सात जन्मो के कर्म का हिसाब होता है, पता नहीं किस जन्म मे क्या किया ?

—अच्छे-बुरे कर्मों का सात-जन्म तक फल मिलता है।

सात मांमा रौ भांणजौ भूखां मरै। १३६९९

सात मामो का भानजा भूखो मरता है।

—एक व्यक्ति की जिम्मेदारी से ही कोई काम संपन्न होता है। सामूहिक उत्तरदायित्व का कुछ अर्थ ही नहीं होता।

—जो काम एक से अधिक व्यक्तियों के जिम्मे होता है, वह बिगड़ता ही है।

पाठा : सात भायां री बैनड़ भूखां मरै। सातां रौ भांणजौ निरणौ ई सोवै।

सात मूत अर अठारा गोत। १३७००

सात मूत्र और अठारह गोत्र।

—जब कोई वर्ण-शंकर अपने खानदान और गोत्र की बड़ाई करने लगे, तब कोई-न-कोई मुँह-फट व्यक्ति इस उक्ति के द्वारा उसे चुप करता है।

—अवैध या वर्णशंकर औलाद का कोई कुल और गोत्र नहीं होता।

—जिस व्यक्ति के बाप का पता न हो और जब वह दूसरों पर कीचड़ उछाले तब...।

सात रावळा तौ ई सारी-बारी पीसै। १३७०१

सात रावले तब भी बारी-बारी पीसें।

रावळौ = ठाकुर के निवास को आदर-भाव से रावला कहते हैं।

—सात ठाकुरों के मकानों में चाकी एक हो तो बारी-बारी से पीसना अनिवार्य हो जाता है।

—अभाव में जीने वाले व्यक्तियों की मजबूरी।

सात रिपियां री काठ, खरचौ रिपिया साठ। १३७०२

सात रुपयों का काठ, खर्च हुए रुपये साठ।

—कम मूल्य की वस्तु को बनाने में जब खर्च अधिक पड़ जाय, तब...।

—लाभ-हानि का विचार किये बिना जो व्यक्ति अंधा-धुंध रुपया खर्च करे, उसके लिए...।

—छोटे काम में ज्यादा खर्च करने पर।

सातळियौ पाड़ौसी नै पूगै। १३७०३

सातलिया पड़ोसी के लिए घातक।

सातळियौ = बछड़े या बैल के मुँह में अमूमन आठ दॉत होते हैं। संयोग से सात दॉत ही निकले तो वह बड़ा अशुभ माना जाता है। पड़ोसी पर गाज गिरती है। ऐसी मान्यता है। बछड़े या बैल के खरीददार सबसे पहिले मुँह के दॉत गिनते हैं। सात दॉत वाले बैल को सस्ते दामों मे भी नहीं खरीदते।

—बदमाश या दुष्ट व्यक्ति अडोस-पड़ोस वालों को ही तकलीफ देते हैं।

सात वार, नव तिंवार। १३७०४

सात वार, नौ त्योहार।

—हिंदू-समाज मे त्योहारों की बहुलता को दरसाया गया है कि सप्ताह में वार तो सात होते हैं पर त्योहार नौ।

—कमाने-खाने के अलावा मनुष्य जीवन मे अवकाश और उत्सव-आयोजनों का महत्त्व भी कम नहीं है। इस उक्ति मे मनुष्य के आनदभाव को उन्मुक्त अभिव्यक्ति मिली है।

सात वाहेला करै सो सती। १३७०५

सात प्रेमी करे सो सती।

सदर्भ-कथा : दो मुसलमान औरतें आपस में बातें कर रही थी। एक ने पूछा, 'इन लोगों में मती-सती की बडी चर्चा सुनती हूँ। बात कुछ समझ में नही आती। तू जानती हो तो बता कि यह सती का माजरा क्या है ?'

दूसरी औरत ने आश्चर्य प्रकट करते कहा, 'अरे ! तू इतना भी नहीं जानती। जिस औरत के सात प्रेमी हों, वह सती है।'

पहली औरत ने अकृत्रिम भाव से कहा, 'बस, यही बात है ' तुझे ही पहली बार बता रही हूँ कि मेरे भी छह प्रेमी हैं। एक प्रेमी और जुडते ही मै सती हो जाऊँगी।'

दूसरी औरत ने सात और सती की मिलती-जुलती ध्वनि के कारण अपनी समझ के अनुसार जवाब दिया था। पर उसकी समझ से वास्तविकता का कतई मेल नहीं था।

—अज्ञानी लोग सत्य को बहुत झुठलाकर प्रस्तुत करते हैं। फिर भी उन्हें अपनी अज्ञानता पर काफी भरोसा होता है।

सातवौ सुख बैकूंठां वासौ। १३७०६

सातवॉ सुख, बैकुठ का वास।

—लोक-मानस ने मनुष्य जीवन के सुखों की विभिन्न कामनाएँ की हैं। छठे और सातवें सुख की कामनाओं में रद्दोबदल होता रहता है। कहीं सातवाँ सुख बैकुंठ के निवास को माना है तो कहीं विद्या को। पहला सुख निरोगी काया को माना है। कहावत संख्या ८४६७ में सातों सुख बताये गये हैं।

सातां मांमा रौ भांणेज, निबाळूऔ रहै।–व.१८० १३७०७

सात मामों का भानजा, बिन ब्यालू के रहता है।

दे.क.सं.३८२४

सातां री सासू उकरड़ै मुहकांण।–व.१८१ १३७०८

सात दामादों की सास का घूरे पर मुहकॉण।

मुहकांण = मुकांण, मोखांण = मृतक के पीछे उनके घरवालों के पास संवेदना प्रकट करने के लिये जाने की क्रिया अथवा भाव।

—जो काम अधिक आदमियों के जिम्मे होता है, वह निश्चित रूप से बिगड़ता है। यह लोक-मानस का परखा हुआ अनुभव है।

—काम तो अमूमन वही संपन्न होता है जो सिर्फ एक व्यक्ति के जिम्मे होता है।

—अधिक लोगों की जिम्मेदारी, अधिक नुकसान की तैयारी।

दे.क.सं.१३६७५

सातूं खुणा राजी व्है तौ कांम करज्यौ। १३७०९

सातों कोने राजी हों तो काम करना।

—कोई सौदा या इकरारनामा करते समय सामान्यतया दोनों पक्ष एक-दूसरे को कहते हैं कि घर के सातों कोने रजामंद हों तो यह काम करना अन्यथा नहीं।

—कोई भी काम सभी घरवालों की राय से होना चाहिए।

मि.क.सं.३९७०

सातूं गेला सांतरा, थारै जच्चै जठै जा। १३७१०

सातों मारग सुथरे, तुम्हारी इच्छा हो वही जाओ।

—किसी परिवार का सदस्य काम न भी करे तो कोई बात नहीं, पर बात-बात में घर छोड़ने की धमकी दे या रूठना करे तब यह कहावत चुनौती के रूप में कही जाती है कि गाँव से बाहर जाने वाले सभी मारग एक-से-एक बढ़कर है, जो इच्छा हो, वह रास्ता अपना लो।

—धमकियों से झुकने की बजाय परिस्थिति का यथाशक्ति सामना करना चाहिए।

सातूं थोक पराया, लाडा रै मरोड़ घणी। १३७११

सातो माल पराये, दूल्हे के ऐंठ बड़ी।

—जो व्यक्ति दूसरों की संपत्ति पर थोथी हेकड़ी दिखाये।

—अपनी जायदाद पर भी अभिमान करना उचित नहीं है, तब दूसरों की जायदाद पर गर्व करना तो बहुत ही अशोभनीय है।

साथ देख'र सासरै कोनीं चालीजै। १३७१२

साथ देखकर ससुराल नहीं जाया जाता।

—बिना किसी काम के फकत किसी का साथ देखकर रवाना नहीं हो जाना चाहिए।

—अपने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ही चलना चाहिए, सुविधा देखकर मन डॉवाडोल न करना ही शोभनीय है।

पाठा : सांढ़ौ देखनै सासरै नी सिधाईजै।

साथै तौ रांम रौ नांव ई चालै। १३७१३

साथ तो राम का नाम ही चलता है।

—यह चल-अचल संपत्ति, यह घर-परिवार, यह तामझाम कुछ भी साथ नहीं चलता। बंद मुट्ठी आये, खुली-मुट्ठी अकेले ही जाना पड़ेगा। साथ चलेगा तो केवल राम-नाम।

—दुनिया भर के दुष्कर्म करके जीवन व्यर्थ बिताना उचित नहीं है। सत्कर्म और अध्यात्म से ही समय का सदुपयोग होता है।

साथै बैठ'र कवा नीं गिणीजै। १३७१४

साथ बैठकर कौर नहीं गिने जाते।

दे.क.सं.१०३५८

सादूळौ कचरा में ठग लियौ। १३७१५

सादूले ने कचरे में ठग लिया।

सादूळौ = एक नाम विशेष। शार्दूल।

संदर्भ-कथा : शार्दूल नाम का एक बनिया कंजूस के साथ-साथ बड़े ओछे स्वभाव का था। चालीस बरस की आयु में विधुर हुआ तो उसने खर्च के भार से दूसरी शादी नहीं की। दो बेटे दिसावर में अच्छी-खासी कमाई करने लगे थे। घर में अकेला रहता था। गाँव के आधे से अधिक किसान उसके असामी थे। सवेरे-सवेरे ही मकान का फूस-कचरा स्वयं निकालकर अपने हाथों हो रसोई बनाता। मकान के पीछे ही बाड़ा था। मकान का फूस-कचरा वह बाड़े में डाल देता। इस तरह कचरा डालते-डालते बाड़े में काफी बड़ा ढेर लग गया। पूरा ढेर गाँव के बाहर फिंकवाना तो महँगा पड़ेगा। उसने मन-ही-मन एक तरकीब सोचली। साँझ की वेला उसने दस टोकरी कचरा खुद बाड़े से बाहर डाल दिया। सवेरे एक मजूर को बुलाकर लाया। पूछा, 'यह ढेरी बस्ती के बाहर डालनी है। बोल, क्या लेगा?' मजदूर ने मन-ही-मन सोचकर अंदाज लगा लिया—दो-ढाई घड़ी का काम है। कहा, 'अठन्नी दे दीजियेगा।' शार्दूल बोला, 'मुँह माँगी तो मौत भी नहीं मिलती। चल, छह आने दे दूँगा। दोपहर को रोटी यहीं खा लेना।'

मजदूर मान गया। एक टोकरी भरकर रवाना हुआ तो कुछ देर बाद शार्दूल ने बाड़े से टोकरी भरकर ऐन पीछे डाल दी ताकि ढेरी की खाली जगह साफ दिखलाई पड़े। मजदूर ने सचमुच दो-ढाई घड़ी में पूरी दस टोकरियाँ बस्ती के बाहर डाल दीं, पर ढेरी तो खत्म ही नहीं हुई। सेठ ने कहीं जादू टोना तो नहीं कर दिया। लेकिन पूछता कैसे? चलो, दो-ढाई घड़ी और सही। वह फिर टोकरी भरने लगा।

लेकिन आश्चर्य की बात कि दस टोकरियाँ डालने के बाद ढेरी तो वैसी-की-वैसी बनी रही। कहीं आँखें तो खराब नहीं हो गईं जो बड़ा ढेर छोटी ढेरी जितना ही नजर आता है। पर वह ढेरी तो शाम तक भी नहीं उठी। फिर अठन्नी कैसे माँगता? किस मुँह से माँगता। मगर वह ढेरी तो दूसरे दिन भी नहीं उठी। मजदूर हैरान। क्या करता बेचारा। तीसरे दिन दो घड़ी दिन रहते वह कचरा बड़ी मुश्किल से उठा। कौल मुजब बनिये ने छह आने से एक पाई भी ज्यादा नहीं दी। घर जाकर घरवाली को मजदूरी सौंपते समय उसने इतना भर कहा, 'नीच, सादूले ने कचरे में ठग लिया, उसीका दुख है। और किसी सुथरे काम में ठग लेता तो परवाह नहीं थी।'

—ठगे जाने की भी अपनी मर्यादा होती है। कचरे मे ठगा जाना वाकई बडे शर्म की बात है।

साध किसा कमावण नै जावै ? १३७१६

साधु कमाई के लिए कब जाते है ?

—माँगने से जीवन निर्वाह हो जाय तो मेहनत करने की तकलीफ कौन करे ?

—कमाने वाले भी पेट ही भरते है और माँगने वाले भी जस-तस पेट भर लेते है। भूखा कोई नही रहता।

साध ढोली रौ सीर, धोबां-धोबां लाटीजै। १३७१७

साध-ढोली का साझा, अनाज कधे पर लादा।

—अयोग्य व्यक्ति साझे मे खेती करे तो उसका यही परिणाम होता है।

—किसी भी काम की वाछित सफलता के लिए योग्यता, परिश्रम और साधन तीनो ही अपरि᳚र्य है। साध = एक जाति-विशेष, पुजारी।

साध री जात कांई बूझौ, ग्यांन बूझौ। १३७१८

साधु की जाति क्या पूछते हो, ज्ञान पूछो।

—साधु-महात्मा बनने के बाद व्यक्ति जाति, गोत्र और कुल से ऊपर उठ जाता है। उसकी पहिले वाली पहिचान ही मिट जाती है। एक ही जीवन मे दो जन्म ग्रहण करता है। और दूसरे जन्म की पहिचान है—ज्ञान और अपरिग्रह। इन पर खरा उतर जाय, वह सच्चा साधु है।

साधां नै कूट'र स्वामियां नै जिमावै। १३७१९

साधुओ को पीटकर स्वामियो को खिलाये।

स्वामी = गृहस्थ साधु।

—जिस समाज मे गुणी का अनादर और पाखडियो का सम्मान हो।

—जहाँ योग्यता की बजाय अयोग्यता का आदर हो।

साधां नै ठोकै जद स्वामी पैली समझै। १३७२०

साधुओ को पीटे तब स्वामी पहिले समझते है।

—साध और स्वामी दोनों ही विशिष्ट जाति के अंतर्गत आते हैं। गृहस्थ का जीवन बिताते हैं। आटा माँगकर लाते हैं। गाँव में स्थित मंदिरों में बारी-बारी से पूजा करते हैं।

—बड़े अपराधियों को सजा मिलने पर छोटे अपराधी स्वतः मन-ही-मन समझ जाते हैं कि अब हमारी बारी है।

पाठा : स्वामियां नै ठोकै जद साध पैली चेतै।

साधां नै तौ बस सीयारांम री सूझै। १३७२१

साधुओं को तो बस सीयाराम की ही सूझती है।

—हर व्यक्ति के अपने संस्कार होते हैं और वह उन्हीं के अनुसार आचरण करता है।

—जिसकी जैसी मनोवृत्ति होती है, वह स्वतः प्रकट हो जाती है।

साधां, माळा फेरौ के व्हिया कांईं थूड़ खावण नै। १३७२२

साधु-बाबा, माला जप रहे हो कि हुए क्या झख मारने को।

—जिसकी जो जीविका है, उसे करने के लिए वह बाध्य है।

—जीने के लिए कुछ-न-कुछ काम करना तो अनिवार्य है।

साधां रा तिलक तौ सूख्यां केड़ै ई उघड़ै। १३७२३

साधुओं के तिलक तो सूखने के बाद ही उघड़ते हैं।

—किसी काम का अच्छा-बुरा परिणाम तो उसे पूरा करने के बाद ही उघड़ता है।

—पहिले कुछ भी पता नहीं पड़ता कि किस काम का क्या परिणाम होगा।

पाठा : स्वामियां रा तिलक सूख्यां पछै ई उघड़ै।

साधां रै कांईं सवाद, अणविलोयौ ई आवण दे। १३७२४

साधुओं के कैसा स्वाद, अनबिलोया ही आने दे।

दे.क.सं.१७५४,१३२८७

साधां रै घरै आटौ नीं बचै। १३७२५

साधुओं के घर आटा नही बचता।

—मुफ्त जीविका बसर करने वालों के घर बचत नहीं होती।

—माँगकर खाने वाले कभी कुछ भी संचय नहीं कर सकते।

साधां रै तौ पावली ई चोखी। १३७२६

साधुओं को तो चवन्नी ही काफी।

—मुफ्त का माल खाने वालों को जो भी मिल जाय वह अच्छा ही है।

—माँगने वालों की इच्छा-अनिच्छा कुछ भी माने नहीं रखती, उन्हें जो भी मिल जाय वही उनका प्राप्य है।

पाठा : **साधां रै तौ पावली ई सांतरी।**

साधु-भाई अेक मत। १३७२७

साधु-भाई एक मत।

—समान लक्षणों वाले व्यक्तियों की समान ही मति होती है।

—धर्म, ईश्वर, भाग्य और कर्म के बारे में सभी साधु-संन्यासियों का एक ही विचार है, जिसके बिना उनका पाखंड चलता नहीं।

साधु री पारख तौ सबदां सूं ईं व्है। १३७२८

साधु की परख तो शब्दो से ही होती है।

—साधु का बाना नहीं देखा जाता, उसकी वाणी देखी जाती है। उसके शब्दों का मर्म देखा जाता है।

—साधु की परख ज्ञान से होती है बाहर के भेख से नहीं।

—हर व्यक्ति की पहिचान उसकी साज-सज्जा से नहीं, उसके व्यक्तित्व एवं विद्वता से होती है।

साधु रै कुण ई सगौ नीं व्है। १३७२९

साधु के लिए कोई भी सगा नही होता।

—नाते-रिश्तों का मोह छोड़कर संन्यास ग्रहण करने वाले का कोई अपना नहीं होता, कोई पराया नहीं होता।

—साधु सबको समदृष्टि से देखता है—उसकी नजर में न कोई ऊँच है न कोई नीच।

साधु रौ धन सीर हंदौ। १३७३०

साधु का धन साझे का।

—सज्जन के धन पर सबका समान अधिकार होता है।

—साधु या संन्यासी अपने-पराये के संकीर्ण दायरे में नहीं जीता, उसके पास जो कुछ भी है, वह सबका है।

साधुवां रै कोई सासरा थोड़ा ई व्है। १३७३१

साधुओं के ससुराल नही होते।

—जब साधु-महात्मा ने आसक्ति की राह छोड़कर अनासक्ति का पथ अपना लिया तब उसे आनंद-मौज या भावना से क्या सरोकार?

—सज्जन व्यक्ति विशिष्ट आदर-सत्कार की आकांक्षा नहीं रखता। जो उसे सहज-भाव से मिल जाय, वही उसके लिए उत्तम है।

साधु-संतां वाई खेती, नीं निपजै तौ करमां सेती। १३७३२

साधु-संतो ने खेती बोई, न उपजे तो भाग्य-दुहाई।

—अयोग्य व्यक्ति कार्य की विफलता का दोष भाग्य पर डाल देते हैं।

—किसी भी कार्य की सफलता के लिए तत्संबंधी कौशल अनिवार्य है।

साधू कौडी राखै तौ कौडी रौ, गिरस्थ कौडी टाळ कौडी रौ। १३७३३

साधु क़ौड़ी रखे तो कौड़ी का, गृहस्थ कौड़ी के बिना कौड़ी का।

—हर व्यक्ति का जीवन सापेक्ष होता है। किसी के लिए धन वरदान है तो किसी के लिए अभिशाप।

—हर व्यक्ति की गुणवत्ता के मापदंड अलग-अलग होते हैं। साधु के लिए क्रोध करना वर्जित है तो सैनिक के लिए अनिवार्य गुण।

साधू नो फटकारो खोटो।–भी.७५० १३७३४

साधु की फटकार बुरी।

—साधु के शाप से अनिष्ट भी हो सकता है, इसलिए उसे नाराज करना उचित नहीं।

—किसी भी भले, नेक एवं सज्जन व्यक्ति को तंग करना अनुचित है, क्योंकि वे केवल स्वार्थ के सीमित दायरे में ही नहीं जीते।

साप खाय नै मुंह थोथो।–व.२४७ १३७३५

काटने के बाद साँप का मुँह थोथा।

—आतताई आखिर पस्त होता ही है।

—अत्याचारी अपने दुष्कृत्यों से चाहे जितनी पूँजी जोड़ले अंत में मृत्यु उससे सब-कुछ छीन लेती है।

सापुरसां रा जीवणा थोड़ा ई भला। १३७३६

श्रेप्ठ पुरुषो का जीना थोड़ा ही बेहतर।

—श्रेष्ठ व्यक्ति केवल अपने या अपने परिवार के सकीर्ण घेरे में नही जीते। उनके जीवन का कुछ-न-कुछ महान लक्ष्य होता है, वे अपने लक्ष्य की खातिर कब अपने प्राण उत्सर्ग कर दें, कुछ पता नही। सरदार भगतसिह की वह उम्र फॉसी पर चढने के लिए नही थी, पर उसका जीवन तो देश की स्वतत्रता के निमित्त अर्पित था। मृत्यु का मोह जीवन के मोह से अधिक प्रबल था, तभी उसने मृत्यु को जीवन की तरह अपनाया। और आज वह मरकर भी जीवित है।

साफ कैवणौ, सुखी रैवणौ। १३७३७

साफ कहना, सुखी रहना।

—अकसर कटु सत्य बोलने वाले इस उक्ति का प्रयोग करते हैं, पर उन्हें यह पता नही कि उनके साफ बोलने से सामने वाले को क्या तकलीफ हो रही है।

—साफ कहने से, सुनने वाला और कहने वाला दोनों खुश हों तो साफ कहने का कुछ अर्थ है।

पाठा : सुभट कैवणौ, सुखी रैवणौ। साफ कैवणौ, मगन रैवणौ।

सामरथ परवांण ई पांवंडा भरणा चाहीजै। १३७३८

क्षमता के अनुसार ही कदम बढ़ाने चाहिएँ।

—किसी भी व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार काम करने से दिक्कतों का सामना नहीं करना पड़ता, वरना कदम-कदम पर कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

—ऐसी ही एक दूसरी उक्ति है—तेतै पांव पसारिये, जेती लंबी सौर।

—क्षमता के परे काम करने पर असफलता ही हाथ लगती है, अचीते कष्ट उठाने पड़ते हैं।

सायब कहै पदौरी, म्हैं निछावर जावूं। १३७३९

साजन कहे पदोरी, मैं बलि-बलि जाऊँ।

—मूर्ख या भोले व्यक्ति अपनी बुराई सुनकर भी खुश हो जाते हैं। वे बुराई और प्रशंसा के भेद को समझ पाने में असमर्थ होते हैं।

—कई व्यक्ति अंधे बनकर प्यार करते हैं तो उन्हें अपने प्रियतम के अवगुण नजर ही नहीं आते, बल्कि उनकी बुराइयों को भी वे गुणों के रूप में ही ग्रहण करते हैं।

सारण वाळा कांकरिया कदै ई अठी नै तौ कदै ई उठी नै। १३७४०

सारण के कंकर कभी इधर तो कभी उधर।

सारण = कुएँ पर चरस खींचने वाले बैलों द्वारा चरस खींचते समय चलने हेतु बना हुआ ढलुआँ मार्ग।

—जिन व्यक्तियों का अपना स्थिर मत नहीं होता वे दूसरों के प्रवाह में आकर कभी उधर लुढ़क जाते हैं तो कभी इधर।

—-अस्थिर मत वाले हवा का रुख देखकर अपनी गति उसीके अनुसार बदल लेते हैं।

सारस तौ सदावंत जोड़ा सूं ईं जीवै। १३७४१

सारस तो हमेशा जोड़े से ही जीते हैं।

—सारस का जोड़ा कभी बिछुड़ता नहीं, हमेशा साथ रहता है। ऐसी मान्यता है कि एक के मरने पर दूसरा सिर फोड़-फोड़कर मर जाता है।

—जिन में अत्यधिक प्रेम होता है, वे एक पल की भी जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकते।

सारी ऊमर कांदा ई छोल्या दीसै। १३७४२

सारी उम्र प्याज ही छीले हैं।

दे.क.स.६४४

सारी दुनिया ओगणगारी अर आप-आपरै पड़दां उघाड़ी। १३७४३

सारी दुनिया अवगुणों से भरी है और अपने-अपने पर्दों में नंगी है।

—संसार में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो सर्व-गुण-संपन्न हो, उलटे वह तो कई अवगुणों का पुतला है, जो मौका मिलने पर ही प्रकट होते हैं और हर व्यक्ति कपड़ों के भीतर नंगा है।

—मनुष्य ने अपने ही हाथों एक ऐसे तंत्र का जाल बुना है, जिसके परिणाम-स्वरूप वह अनेक मुखौटों के सहारे जीने को बाध्य है।

सारी धरती किसी ऊंदरा कुरटी है। १३७४४

तमाम धरती कोई चूहो ने नहीं कुतरी।

—कोई शक्तिशाली किसी गरीब को अपने कदीमी स्थान से बेदखल करता है तो गरीब अपनी सफाई में इतना भर कहता है कि तमान धरती चूहों ने नहीं कुतरी है, जरूरत मुताबिक कुछ नो आसरा मिल ही जाएगा।

—असहाय मनुष्य फकत आशा के सहारे जीता है।

पाठा : आखी जमीं किसी ऊंदरिया कुरटी।

सारी रांमायण बांची अर बूझै के सीता किणरी बहू? १३७४५

सारी रामायण बॉची और पूछता है कि सीता किसकी बहू थी?

दे.क.सं.६४६,१३३४६,१३३४९

सारी रात रोया पण मस्यौ अेक ई कोनीं। १३७४६

सारी रात रोये पर मरा एक भी नही।

दे.क.सं.६४७,१३३५०

सारीसा सूं कीजै ब्याव, बैर अर प्रीत। १३७४७

बराबरी वाले से करिये ब्याह, बैर और प्रीत।

—आर्थिक, सामाजिक व शैक्षणिक समानता वाले पक्षों में ब्याह हो तो वह टूटता नहीं, निभ जाता है। विषम या बेमेल ब्याह में कई अड़चनें उपस्थित हो जाती हैं। इसी तरह बैर और

प्रीत का भी यही मसला है। सक्षम एवं शक्तिशाली और कमजोर व शक्तिहीन पक्षों में बैर होगा तो निर्बल पक्ष शिकस्त खा जाएगा।

—बहुत सोच-विचारकर सामाजिक संबंध स्थापित करने चाहिएँ।

दे.क.सं.१३६२७

सारौ नीं कीं वारौ, बैठा कुत्ता मारौ। १३७४८

न कोई हक न कोई अधिकार, बैठे-ठाले कुत्ते मार।

—परिवार, समाज या सत्ता में जिस व्यक्ति का कोई अधिकार नहीं होता, उसकी कुछ भी नहीं चलती। वह हाथ पर हाथ धरे बैठा रहता है।

—परिवार के बूढ़े-बुजुर्ग या सास अपनी असहायता का रोना रोते हुए इस उक्ति को बाहर वालों के सामने दोहराते रहते हैं।

साळगरांम रा साळगरांम अर गोफणिया रा गोफणिया। १३७४९

शालिग्राम के शालिग्राम और गोफनिये का गोफनिया।

गोफण = सूत का गुँथा हुआ या चमड़े का बना हुआ एक प्राचीन शस्त्र जिसके बीच में एक चौड़ी पट्टी होती है। प्राय: सर्प के फन की नाईं। जिसके दोनों किनारों पर एक-एक लंबा कस्सा होता है। जिसमें पत्थर या ढेले रखकर फसल की रक्षार्थ चिड़ियों आदि को उड़ाने के लिए अथवा प्रतिपक्षी पर फेंके जाते हैं।

गोफणियौ = गोफन में-रखकर फेंका जाने वाला पत्थर या ढेला।

दे.क.सं.३७३६

साळसिंघी सेतबाजा, कांई करैला रूठौ राजा? १३७५०

सालसिंगी सेत बाजा, क्या करेगा रूठा राजा?

माळसिंघी = सियार प्रजाति से मिलता-जुलता एक जंतु, जिसके सिर पर केवल एक सींग होता है। यदि किसी शिकारी को वह हाथ लग जाय तो जिस पर भी वह सींग फिराये, उसके वश में हो जाता है।

सेतबाजौ = एक अद्‌भुत पदार्थ जो सिद्‌धि-प्राप्त पुरुषों के पास मिलता है, जिसके सहारे वह किसी को भी वश में कर सकता है।

—जिस सिद्ध-पुरुष या तांत्रिक के पास ये अलौकिक पदार्थ हों तो राजा भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

—राजा ही सर्वोच्च शक्तिमान नहीं होता, कुछ विभूतियाँ उससे भी बड़ी होती हैं, जिनका आदेश वह टाल नहीं सकता।

साळां टाळ सासरौ सूनौ। १३७५१

सालों के बिना ससुराल सूना।

—जिन व्यक्तियों का जहाँ महत्त्व होता है उनके बिना कोई भी मामला जमता नहीं।

—कोई भी ठौर या पद पर महत्त्वपूर्ण व जिम्मेदार व्यक्ति न हो तो काम नहीं चलता।

पाठा : साळां बिना कैड़ौ सासरौ।

साळियां छोड सासू सूं मसखरी। १३७५२

सालियो के बदले सास से मसखरी।

—बराबरी वालों से ही हँसी-मजाक करना उचित रहता है।

—बडों का सम्मान करना चाहिए। उनसे दिल्लगी करना शोभा नहीं देता। कभी-कभार अघटित भी घटित हो जाता है और मामला तूल पकड लेता है।

पाठा : साळेलियां छोड सास सूं खमडोळ।

साळी छोड सासू सूं वेक मांडी।–व.३४४ १३७५३

साली छोड सास से मजाक।

दे.क.सं.१३७५२

साव आळौ खालड़ौ ओढ़ लियौ। १३७५४

सचमुच आला चमड़ा ओढ़ लिया।

आळौ-खालड़ौ = बिना रँगा हुआ गाय का चमड़ा। सामंती व्यवस्था के दौरान एक प्रथा थी, यदि दो किसानों के बीच जमीन का विवाद खड़ा हो जाता तो गाँव-चौधरी मोतबरों की मौजूदगी में आला चमड़ा ओढ़कर जिधर से निकल जाता, वह जमीन की सीमा मान ली जाती। कभी-कभार पक्षपात या अन्याय भी हो जाता पर उस प्रथा को सामाजिक मान्यता प्राप्त थी।

—किसी के प्रति पंच-गण सरासर अन्याय करें, तब...।

—अन्याय को व्यक्त करने के लिए इस उक्ति का प्रयोग वही पक्ष करता है, जिसके साथ अन्याय हुआ हो।

सावका सै बैरी। १३७५५

सौतेले भाई सभी दुश्मन।

—सौतेले भाइयों पर अधिक विश्वास नहीं करना चाहिए, वे मन-ही-मन ईर्ष्या रखते हैं।

—दूर के संबंधी मौका मिलते ही झगड़ा करने के लिए आमादा हो जाते हैं।

सावचेती आपरी है, किणी रै बाप री कोयनीं। १३७५६

सावधानी अपनी है, किसी के बाप की नही।

—किसी भी छोटे-बड़े काम के प्रति सतर्क रहना निहायत जरूरी है, अन्यथा काम की सफलता संदिग्ध हो जाती है।

—अपने काम के लिए जिम्मेदारी और सावधानी रखना किसी और का काम नहीं है। काम करना है तो सावधानी रखनी होगी, किसी के प्रति एहसान नहीं है।

—हर व्यक्ति को अपने काम के प्रति चिंता रहती है।

सावळ करतां कावळ पड़ै। १३७५७

अच्छा करते बुरा हो जाता है।

—जब भाग्य या परिस्थितियाँ प्रतिकूल हों तो सीधा काम भी उलटा हो जाता है।

—जब किसी योग्य आदमी को हर काम में असफलता मिले, तब...।

सावळ चबावै तौ डूंजौ क्यूं बंधै ? १३७५८

अच्छी तरह खाये तो गोला क्यों बने ?

—बिना सोचे-विचारे उतावली में काम करने से कष्ट होता है।

—किसी भी काम को सलीके से संपन्न किया जाय तो उसमें बाधा उपस्थित नहीं होती।

—कायदे के अनुसार काम करने में सुविधा रहती है।

मि.क.सं.४३१८

साव सूना कांटां में ठिरड़ौ। १३७५९

व्यर्थ कॉटों में घसीट रहे हो।

—बिना कोई स्वार्थ पूरा हुए किसी व्यक्ति को इधर-उधर की बेगार बता दी जाय तब भुक्तभोगी आखिर विवश होकर यह उक्ति प्रकट करता है।

—अपने मतलब से कोई बड़ा व्यक्ति किसी को फालतू कामों में घसीटता रहे, तब...।

साव सैणी तौ उखरड़ी होवै, जिण माथै सै फूस न्हाकै। १३७६०

एकदम सीधा तो घूरा होता है, जिस पर सभी कूड़ा डालते हैं।

—मनुष्य समाज का ढर्रा ही ऐसा है कि एकदम भले और सज्जन व्यक्तियों पर सभी सवारी गाँठते हैं। इसलिए बिल्कुल सीधा होना भी अभिशाप है। जिस तरह घूरे पर सभी बेहिचक कूड़ा-करकट डालते हैं, उसी तरह भले आदमी से सभी बेगार लेते रहने में संकोच नहीं करते।

सास-बहू रौ रीसणौ नै मक्की रौ पीसणौ। १३७६१

सास-बहू का रूठना और मकई का पीसना।

—परिवार में जिम्मेदार व्यक्तियों की अनबन से घर के काम बिगड़ जाते हैं।

—पारिवारिक सदस्यों के बीच मन-मुटाव होना उचित नहीं। हानि को जान-बूझकर न्योता देना है।

सासरा रा साल अर पीवर रा बोल। १३७६२

ससुराल का दुख और पीहर के बोल।

—औरत के लिए कहीं भी सुख नहीं है। न ससुराल में और न मायके में। ससुराल में हरदम सास और ननद का कोंचना। काम करते हुए भी वह चैन से नहीं रह सकती। उधर मायके में भौजाइयों का राज होने पर वे आराम से नहीं रहने देतीं। बात-बात में उलाहनों का ताँता।

—औरत का जीवन ही अभिशाप है। मरने के बाद भी शांति मिले-तो-मिले।

सासरा री सतरै कांण। १३७६३

ससुराल के सत्रह कायदे।

—ससुराल में लड़की या लड़के को बहुत शिष्टाचार और कायदे से रहना जरूरी हो जाता है अन्यथा खामखाह आलोचना होती रहती है।

—कोई भी मनुष्य कहीं भी मेहमान बनकर जाये तो उसे अपने स्वभाव पर अंकुश रखना पड़ता है।

पाठा : सासरिये री सतरै कांण।

सासरा रौ बास, कुळ रौ नास। १३७६४

ससुराल का वास, कुल का नाश।

—जो जामाता ससुराल में आकर जम जाता है वह अपने कुल की प्रतिष्ठा खो देता है।

—ससुराल में रहने वाले व्यक्ति का न अपना मान रहता है और न उसके परिवार का। यदि श्वसुर या साले उसके परिवार वालों के बारे में भला-बुरा कहें तो वह चुपचाप सुनता रहता है, प्रतिवाद करने की स्थिति में नहीं रहता।

सासरै आंणै गियौ नै वींदणी भुलांणी। १३७६५

ससुराल लाने गया और बहू को ही भूल आया।

—समाज में ऐसे जिम्मेदार व्यक्ति हों तो और चाहिए ही क्या ? कितनी बढ़िया जिम्मेदारी सँभाली कि हजरत ससुराल बहू को लेने के लिए गये और उसे लाना भूल गये।

—सर्वथा गैर-जिम्मेदार व्यक्ति पर तीखा कटाक्ष।

सासरै कदै सिधाई नीं अर दूजां नै सीख देवै। १३७६६

ससुराल कभी गई नहीं और दूसरों को सीख दे।

—जो व्यक्ति अपने आचरण के विरुद्ध दूसरों को नसीहत दे।

—जिस व्यक्ति के व्यवहार और आचरण में कोई सामंजस्य न हो। वह करे कुछ और कहे कुछ।

मि.क.सं.१०३२६

सासरै खटावै कोनीं, पीहर में सुहावै कोनीं। १३७६७

ससुराल में खटे नहीं, मायके में सुहाये नहीं।

—अपने अभद्र व्यवहार के कारण जो बहू ससुराल में रह नहीं सके और मायके वाले उसका मुँह तक देखना पसंद नहीं करें।

—अपने अहंकारी या बुरे बरताव के कारण जिस व्यक्ति का न घर में आदर हो, न बाहर।

सासरै जाय तौ सांस रै जाय। १३७६८

ससुराल जाये तो साँस रह जाय।

—'सासरै' शब्द के किंचित् परिवर्तित रूप को दुबारा कहकर एक खेल रचा गया है। जिसका तात्पर्य यह है कि मायके में ठाट से रहने वाली बेटी को ससुराल नाम से ही चिढ़ होती है।

—जिन औरतों को ससुराल में बहुत कष्ट दिया जाता हो वे उसकी स्मृति से भी सिहर उठती हैं।

सासरै तौ घूंघटौ काढ़णौ ई पड़ै। १३७६९

ससुगल गे तो घूँघट निकालना ही पडता है।

—गाँवों में तो आज भी बहू पति के घर घूँघट निकालती ही है, पर साथ-ही-साथ गाँव में भी उघाडे मुँह नही रहती।

—शिष्टाचार के नाते मनुष्य को अपने सहज स्वभाव पर नियंत्रण रखना ही पड़ता है।

सासरै सिधावती नै कुण छिनाळ बतावै? १३७७०

ससुराल जाने वाली को कौन छिनाल कहे?

—ससुराल जाने पर पति के साथ सहवास तो होता ही है, पर विवाहिना बहू को कोई छिनाल नहीं कहता। उसके आचरण पर कोई सदेह नही करता। इसी प्रकार अच्छी संगति में रहने वाले व्यक्ति के चरित्र पर भी कोई कालिख नही पोतता।

—बुरे व्यक्तियों की सगति में रहने वाले को सभी संदेह की दृष्टि से देखते हैं।

दे.क.स.६८८५,१०८३५

पाठा : सासरै जावती नै कुण ई छिनाळ नी कैवै।

सासरौ कर लेवणौ पण आसरौ नीं करणौ। १३७७१

सासरा कर लेना पर आसरा नही करना।

सासरौ = ससुराल।

—सासरा और आसरा में अनुप्रास अलंकार की छटा है।

—जिन जातियों में पति की मृत्यु के बाद नाता यानी पुनर्विवाह होता है, उस स्त्री को उसके शुभचिंतक कहते हैं कि नया ससुराल भले ही करले पर किसी का आसरा लेकर निर्वाह मत करना।

—किसी भी संबंधी से सहयोग की आशा रखना शोभनीय नहीं है।

सासरौ कोनीं भाया। १३७७२

ससुराल नही है भाई।

—कोई व्यक्ति कहीं दूसरी ठौर अवांछित व्यवहार करे, हँसी-ठट्ठा करे तो उसे लोग टोकते हुए कहते हैं कि भैया यह ससुराल नहीं है, जरा शालीनता से पेश आओ।

—किसी भी व्यक्ति को सर्वत्र भद्रतापूर्वक व्यवहार करना चाहिए।

सासरौ खेवणौ खांडै री धार। १३७७३

ससुराल से पार पाना तलवार की धार।

—किसी भी बहू के लिए ससुराल में शांतिपूर्वक निबाह करना तलवार की धार पर चलने के बराबर है।

—प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाकर जीना वास्तव में बड़ा कठिन काम है।

सास रौ जीकारौ बहू नै भारी। १३७७४

सास का जीकारा बहू को भारी।

—कटु आलोचना करने वाला व्यक्ति अचानक प्रशसा करने लगे तो उसे पचाना मुश्किल हो जाता है। जिस प्रकार रात-दिन लड़ने वाली सास बहू के प्रति आदर प्रकट करे तो उसे सहन करना वाकई कठिन है।

—कोई बड़ा व्यक्ति छोटे का आदर करे तो उसे झेलना भारी पड़ जाता है।

पाठा : सासू रौ जीकारौ अर बहू रौ मरण। सासू रा जीकारा बहुवां नै आछा कोनीं।

सासरौ सुख आसरौ, जे ढबै दिन चार। १३७७५
जे बसै दिन दस बीस, हाथ में खुरपी माथै भार॥

ससुराल सुख का आसरा, यदि रुके दिन चार।
गर बसे दिन दस-बीस, हाथ में खुरपी सिर पर भार॥

—कैसी भी रिश्तेदारी क्यों न हो, ज्यादा दिन आश्रित रहने पर उपेक्षा का भाव स्वतः उत्पन्न होने लगता है। मेजवान के दिल में रूखापन आ ही जाता है।

—कहीं भी अधिक दिन रहने से मान घटता है। पहिले जैसी खातिरदारी नहीं होती।

—थोड़े दिन की मेहमानदारी ही मीठी होती है।

सासरौ सुख वासरौ। १३७७६

ससुराल सुख का निवास।

—दामाद के लिए ससुराल आमोद-प्रमोद का स्थान है।

—किसी भी व्यक्ति को कहीं भी इतना हार्दिक सम्मान नहीं मिलता, जितना जामाता को ससुराल में मिलता है।

सासरौ सुख वासरौ, दो दिनां रौ आसरौ। १३७७७

ससुराल का सुख बहुतेरा, मगर दो दिन का बसेरा।

—सही है कि ससुराल दामाद के लिए आनंद की ठौर है, लेकिन कुछ ही दिनों के लिए। बाद में हाथ और मन दोनों खिंचने लगते हैं।

—यह संसार भी ससुराल की नाईं दो दिन का ही मेला है।

सासा बिसासा करै। १३७७८

सॉस बिसॉस करता है।

—जब अचानक असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो जाय...।

—'क्या करूँ, क्या न करूँ' जैसा अनिर्णयात्मक द्वंद्व मन में घुमड़ने लगे।

सासू आगली ठीकरी। १३७७९

सास वाली ठीकरी।

ठीकरी = मिट्टी के बर्तन का टूटा हुआ टुकड़ा।

संदर्भ-कथा : एक किसान के घर में सब ठाट था। दो बैलगाड़ियाँ, तीन जोड़ी बैल। दो हल। तीन गाएँ। अस्सी एकड़ उपजाऊ जमीन। सारी जमीन चौमासे में भरी रहती। गेहूँ और चने सेंवज होते थे। घर में इकलौती बहू, सास और विधवा ददिया सास, बस ये ही औरतें थीं। दो पुरुष और एक हाली। पुरुषों को खेत जोतने, फसल काटने और खलिहान से ही अवकाश नहीं मिलता था। पति के गुजरने पर दादी सास एकदम असहाय हो गई। सास के हाथ में घर का सारा राज्य आ गया। चाँदी के कंदोरे से चाबियाँ लटकती रहतीं। चलते समय पाँवों से अधिकार की आवाज गूँजने लगी। अपनी सास के अलावा सबके खाने-पीने का ध्यान रखती। पर किशोर पोते का लाड़-दुलार सबसे ज्यादा था। मलाई का दूध और मलाई का दही। घी-गुड़ का चूरमा। बचपन में ही ब्याह हो गया था। अगले ही बरस शुभ मुहूर्त देखकर गौने का विचार था। दादा की मृत्यु के तीन महीने तक सामान्य रूप से ठीक ढर्रा चल रहा था। एक दिन बहू ने दादी सास का खाना एक बड़े ठीकरे में रखा हुआ देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। सोचा शायद बर्तन मँजे हुए नहीं हों। उसने शंकित निगाह से सास की ओर देखा और धीमे-से कहा, 'मैं अभी बरतन माँजकर लाती हूँ। ठीकरे में खाना देखकर वूजी नाराज होंगी।' सास ने डपटकर कहा, 'बेकार पंचायत मत कर। चुपचाप खाना पकड़ा दे। इन्होंने आठ बरस तक अपनी सास को इसी तरह ठीकरे में खिलाया था। सब घरों का यही ढर्रा है। फालतू थूक मत उछाल। जा, जल्दी खाना दे आ। फिर चीपटे की कुट्टी गायों और बैलों को डाल देना। समझ गई।'

और वह बहू बहुत बुद्धिमान थी। एक ही बार में हमेशा के लिए समझ गई। दादी-सास ने खाने का ठीकरा पकड़ा तो यकायक उनकी आँखें भर आईं। मामूली-से होंठ हिले। पर कहा कुछ भी नहीं। ओढ़नी के पल्लू से चुपचाप आँसू पोंछकर खाने के लिए हाथ बढ़ाया। भूख भी कम समझदार नहीं होती।

कुछ ही देर बाद बहू ने वापस आकर दादी-सास की ठीकरी बाड़े में फेंकने की बजाय अच्छी तरह धो-पोंछकर औसारे के एक कोने में सँभालकर रख दी। समय तो हर हालत में गुजरता है। थाली में खाओ चाहे ठीकरी में। देखते-देखते तीन महीने गुजर गये। दादी-सास का खाना ठीकरे में चलता रहा। तीन औरतों के अलावा और किसी को भी इस भेद का पता नहीं था। पति जिंदा होता तो शिकायत भी करती। एक दिन सास औसारे में गई तो अचानक उसकी निगाह कोने में सजी ठीकरियों पर पड़ी। बड़ा अचरज हुआ उसे! कंजूस बहू ने जाने

क्या सोचकर उन्हें यहाँ सँभाल रखा है। जिस काम आई थी, उसे भूलकर वह तेजी से बहू के पास गई। उलाहना देते कहने लगी, 'ऐसी कंजूसी तू पीहर से सीखकर आई है क्या? इस घर में ठीकरों की क्या कमी! फूटते ही रहते हैं। इतनी सारी ठीकरियाँ क्यूँ सजा रखी हैं?' बहू ने भी मौके पर चुप रहना उचित नहीं समझा। धीमे-से बोली, 'पीहर में ऐसी बात देखती तो सीखती। यहीं आकर इस ज्ञान की सीख मिली है। और इस सीख के लिए आपका खूब एहसान मानती हूँ। जब आपकी बारी आएगी तो मैं कहाँ ठीकरियाँ खोजने जाऊँगी। सब अच्छी तरह से धो-पोंछकर रखी हैं। भला जूठी ठीकरी में आपको कैसे खिलाती? इतनी अकल तो मुझमें है।'

सास की आँखों के सामने भविष्य का स्याह अँधियारा झप-झप कौंधने लगा। कुछ भी जवाब दिये बिना वह पॉव घसीटती हुई लौट गई। सॉझ को बहू ने दादी-सास के लिए थाली में खीर परोसी देखी तो उसे अधिक आश्चर्य नहीं हुआ। सास से कुछ भी सवाल किये बिना वह उतावली से कदम बढ़ाती हुई वहॉ से चल दी। पाँवों के झाँझर क्वणन ध्वनि करते हुए हलके-हलके गूँज रहे थे।

—कभी-कभार जो बात समझाने पर भी समझ में नहीं आती, वह एक ही झटके में पूरमपूर समझ में आ जाती है।

पाठा : सासू री ठीकरी बहू नै त्यार।

सासू आगली बहू। १३७८०

सासू आगली बहू हूँ।

—खूब सोचने पर भी मैं हिंदी में 'आगली' शब्द का पर्याय नहीं खोज सका। मातहत से काम चल सकता है, फिर भी मूल शब्द रखना जरूरी समझा। हिंदी वाक्य की लय नहीं टूटे, इसलिए सासू की जगह सास नहीं किया। जब कोई पड़ोसिन बहू से कोई चीज मॉगे और वह देने के लिए असहाय हो, तब वह अदेर इस उक्ति का सहारा लेती है कि मैं तो फकत सासू आगली बहू हूँ। ऑगन का फूस भी किसी को देने का अधिकार मुझे नहीं है।

—जिस व्यक्ति को कोई भी छोटा-बड़ा काम करने के लिए किसी से आज्ञा लेनी पड़ती हो।

—जिस व्यक्ति को स्वतंत्र रूप से निर्णय करने का कोई अधिकार नहीं हो।

सासू खावती पांवणा, बहू बटाऊ खाय। १३७८१

सास खाती थी पाहुन, बहू बटोही खाय।

—सास तो घर आये मेहमानों को ही खाती थी पर बहू तो उससे भी चार कदम आगे निकली। वह तो राहगीरों को भी खाने लगी है।

—जो व्यक्ति एक-से-एक बढ़कर चालाक, धूर्त और दुष्ट हों, उनके लिए यह कहावत एकदम सटीक बैठती है।

—पुराने अधिकारी और राजनेताओं की तुलना में आज के अधिकारी और राजनेता इस उक्ति के सही पात्र हैं। ज्यादा नजदीक हैं।

सासू खेबली अर बहू अेबली, कोई आ भली नीं वा भली। १३७८२

सास बेईमान और बहू बदमाश, न वह भली और न यह भली।

—यह उक्ति भी आज के भ्रष्ट नेता और धूर्त अधिकारियों के लिए एकदम उपयुक्त है। दोनों में कौन किससे बढ़कर बुरा है, निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता।

—जिस परिवार में बाप और बेटा दोनों एक-से-एक बढ़कर हरामी हों।

सासू छांनै बहू आई, गोहूं देनै जव लाई।–व.८४ १३७८३

सास से छिपकर बहू आई, गेहूँ देकर जौ लाई।

—परिवार में कोई भी बुजुर्ग हो उससे पूछकर काम करना लाभप्रद ही रहता है।

—बड़े और अनुभवी व्यक्तियों की राय न लेने से ठगे जाने की काफी संभावना है।

सासू जितरै सासरौ, आसू जितरै मेह। १३७८४
संपत जितरै पांवणौ, जोबन जितरै नेह॥

सास तब तक ससुराल, आश्विन तब तक मेह।
संपत्ति तब तक पाहुन, यौवन तब तक नेह॥

—कुछ व्यक्तियों की वजह से घर का महत्त्व कायम रहता है। कुछ वस्तुओं के प्रति आशा समय सापेक्ष रहती है। समय के बीत जाने पर वह मिट जाती है। जब तक घर में संपत्ति और एकता तब तक ही मेहमान का यथोचित सत्कार होता है। और जब तक शरीर में यौवन का उद्वेग मौजूद है, तब तक ही प्रेम करने की क्षमता शेष रहती है।

—संसार में कई बातें व्यक्तियों के वर्चस्व पर निर्भर करती हैं। कुछ बातें स्थितियों पर निर्भर करती हैं। इस उक्ति के आधार पर मनुष्य जीवन के ये तीन ही प्रमुख आयाम हैं।

सासू जितरै सासरौ, मां जितरै पीहर। १३७८५

सास तब तक ससुराल, माँ तब तक मायका।

—परिवार में कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की वजह से ही कुछ विशिष्ट व्यक्तियों का आकर्षण है,उनकी गैर-मौजूदगी से वह आकर्षण मिट जाता है। दामाद के लिए जब तक सास मौजूद है,तब तक ससुराल का आकर्षण है। सास को दामाद जितना प्रिय होता है उतनी बेटी भी नहीं। इसी प्रकार मायके में जब तक माँ है,तभी तक बेटी का अधिकार और आकर्षण बना रहता है।

मि.क.सं.१३७८४

पाठा: सासू बिना कैड़ौ सासरौ, मां बिना कैड़ौ पीवर।

सासूजी! थें जावौ, म्हारै ई कोई रांम है। १३७८६

सास-माँ आप जाएँ, मेरा भी कोई राम है।

—असहाय व्यक्ति का एकमात्र सहायक ईश्वर ही है।

—कोई भी व्यक्ति पूर्णतया किसी पर निर्भर नहीं रहता,किसी-न-किसी के सहयोग की आशा बँधी रहता है।

सासूजी थें सांस ल्यौ, म्हैं कातूं थें पीसलौ। १३७८७

सास-माँ तुम साँस लो, मैं कातूँ तुम पीसलो।

—जब कोई चालाक बहू पीसते-पीसते थक जाती है तो अपनी बुढ़िया सास के पास जाकर कहती है कि चरखा कातते-कातते वे थक गई हों तो तनिक हलका काम कर लें और वह कठिन काम करने लगे तो सास को तनिक राहत मिलेगी। सास अब बाकी समय चाकी चलाने का काम करे तो वह चरखे का भारी काम सँभाल लेगी।

—जो चालाक व्यक्ति फुसलाकर दूसरों को तो भारी और कष्ट-प्रद काम सौंपने की चेष्टा करे और स्वयं हलके काम की जिम्मेवारी सँभालना चाहे।

—मृदुभाषी चालाक व्यक्ति पर कटाक्ष।

सासूजी मौजा मांणै, पण बहू रै ई रांम बेली है। १३७८८

सास-माँ मौज उड़ाये, पर बहू का भी राम हितैषी है।

—सबके दिन एक-से नहीं रहते, कभी-न-कभी तो आश्रितों के दिन भी बदलते हैं।

—कभी सुख की छाया इधर तो कभी उधर।

मि.क.सं.१३७८६

सासूजी ! म्हारै जापौ व्है जणा जगाय दीजौ के थूं आखै गांव नै मत जगाजै। १३७८९

सासूजी। मेरे बच्चा हो तब जगा देना कि तू सारे गाँव को मत जगाना।

दे.क.सं.१०८२९

सासूजी ! रिपियौ लाधौ के थारै दिनां ही जद दोय लाधता। १३७९०

सासूजी ! एक रुपया मिला कि तेरी उम्र में थी जब दो मिलते थे।

संदर्भ-कथा: नैतिक मान्यताएँ हर किसी व्यक्ति को नियंत्रित नहीं करतीं, उम्र और प्रकृति के तकाजे की अवहेलना आसान नहीं है। इस उक्ति में यही बात सास और बहू के माध्यम से चरितार्थ हुई है। बहू दुराचार से रुपया लेकर आई तो उसने सास के सामने झूठा बहाना बनाया कि उसे रुपया कहीं मिला है। बहू का बहाना सुनकर सास ने मुस्कराकर जवाब दिया, 'जब मैं तेरी उम्र में थी, तब मुझे दो रुपये राह में पड़े मिलते थे।' दोनों एक दूसरे का भेद मन-ही-मन समझ गईं।

—यौवन की उद्दाम कामनाएँ सामाजिक नियमों का अंकुश नहीं मानतीं।

सासूजी री कोथळी में मींगणा अर बोर। १३७९१

सासूजी की कोथली में मेंगनियाँ और बेर।

कोथळी = छोटी थैली।

—सास का जब जी चाहे कोथली से बेर निकालकर खा जाती है और दूसरे घरवाले माँग करें तो उन्हें मेंगनियाँ निकालकर बता देती है।

—जो छद्म व्यक्ति खाने के मामले में भी अपने परिजनों से भेदभाव रखे।

—जिस व्यक्ति को अपने स्वार्थ के अलावा और किसी की सपने में भी चिंता न हो।

सासूजी ! सकरपारा खावौ के गधा री लीद सारू तौ म्हारौ ई मन नीं करै । १३७९२

सासूजी ! शक्करपारे खाओ कि गधे की लीद के लिए तो मेरा भी मन नही करता ।

—उपलब्ध होने पर स्वादिष्ट वस्तु कौन नहीं खाना चाहता, इसके लिए किसी को पूछने की भी जरूरत नहीं ।

—सुविधा मिले तो कौन उसका उपयोग नहीं करना चाहता ?

सासू टाळ कांईं सासरौ , नदी टाळ कांईं नीर ! १३७९३

सास बिना क्या ससुराल, नदी बिना क्या नीर !

दे.क.स.१३७८४

सासू देवै सीख अर बहू कीड़ियां गिणै । १३७९४

सासू सीख दे और बहू चींटियाँ गिने ।

—जो बहू सास की सीख से चींटियाँ गिनने के काम को कही ज्यादा महत्त्वपूर्ण समझे ।

—नादान व्यक्ति पर किसी भी अनुभवी बुजुर्ग की समझाइश का कोई असर नहीं पड़ता ।

—उम्र, अनुभव, शिक्षा और देश-काल के अनुसार हर व्यक्ति की अपनी-अपनी समझ होती है, उसीके अनुसार वह किसी भी काम में दिलचस्पी रखता है । दूसरों की राय उसे प्रभावित नहीं करती ।

सासू नै तौ अंतस मां रौ राखणौ चाईजै । १३७९५

सास को तो अंतस् माँ का रखना चाहिए ।

—एक पराई बेटी पीहर का सारा सुख छोड़कर, माँ की ममता को अनदेखा करके अनजान ससुराल मे आती है तो सास का यह सहज कर्तव्य है कि वह बहू को माँ की ममता का अभाव न खलने दे । उसे बेटी के उनमान ही छाती से चिपकाये ।

—किसी भी बुजुर्ग व्यक्ति को अपने से छोटों के लिए संवेदना और उदारता की भावना रखनी चाहिए ।

सासू बहू लड़ती जाय, लोह रा लाडू घड़ती जाय। १३७९६

सास-बहू लड़ती जाएँ, लोह के लड्डू घड़ती जाएँ।

—सास बहू के झगड़े में घर का विनाश निश्चित् है। उन्हें अपने हीन स्वभाव पर बहुत अंकुश रखना चाहिए। वरना उन्हें लड़ने की वेला घर का कुछ भी भला-बुरा नहीं सूझता, वे मन-ही-मन लोहे के गोले बनाती रहती हैं।

—लड़ाई में किसी भी पक्ष को लाभ नहीं होता, इसलिए जहाँ तक बन पड़े शांति रखनी चाहिए। क्या घर में और क्या घर के बाहर।

सासू बिना सासरौ सूनौ। १३७९७

सास बिना ससुराल सूना।

—सास अपने दामाद को पुत्रों से भी अधिक प्यार करती है, इसलिए कि दामाद के साथ बेटी का भाग्य भी जुड़ा है। सास के अलावा दामाद का वैसा लाड़-दुलार और वैसा सत्कार संभव नहीं होता। जिस तरह पक्षियों के बिना पेड़ सूना-सूना-सा लगता है, उसी तरह सास के बिना ससुराल सूना लगता है।

—किसी भी प्रमुख महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के बिना जो स्थान और वह परिवेश सूना-सूना लगता हो।

दे.क.सं. १३७५१

सासू मरगी, कटगी बेड़ी, बहू चढ़गी हर री पेढ़ी। १३७९८

सास चल बसी, कट गई बेड़ी, बहू चढ़ गई हर की पेड़ी।

—सास के जिंदा रहते बहू पर बीसियों किस्म के बंधन रहते हैं। पिंजरे के तोते जैसा उसका जीवन होता है। अपनी इच्छा से समय पर खाना भी नहीं खा सकती। सास के मरने पर वह काफी राहत महसूस करती है। बाजदफा कई बहुएँ निरंकुश भी हो जाती हैं। सामंती व्यवस्था के दौरान सास-बहू की अनबन आम बात थी, पर आजकल शिक्षित व संस्कारित परिवारों में सासू बहू को बेटी की नाई प्यार करती है।

—चाहे पारिवारिक दासता हो, चाहे सामाजिक या राष्ट्रीय उसके मिटने पर कोई भी मनुष्य मुक्ति का अनुभव करता है।

सासू मरी अर बहू रौ राज। १३७९९

सास मरी और बहू का राज।

—सास के राज्य में बहू गुलाम रहती है, उसके मरने पर घर में उसका राज्य स्थापित हो जाता है।

—सत्ता और लक्ष्मी समय के साथ बदलती रहती है।

सासू मर्‍यां चोकौ बंद नीं व्है। १३८००

सास के मरने पर चौका बंद नहीं होता।

—कोई कितना ही बड़ा व्यक्ति क्यों न हो, उसके मरने पर संसार के सारे कार्य-व्यापार तो यों ही चलते रहते हैं। कहीं कुछ भी नहीं रुकता। वैसी ही हवा चलती है, वैसी ही चाँदनी छिटकती है। समय पर वैसी बरसात होती है। फूल खिलते हैं। भौंरे गुंजार करते हैं। बाजारों में उसी तरह सौदा होता है।

—मृत व्यक्ति के लिए कहीं कुछ भी नहीं रहता, जिंदा प्राणी के लिए सब-कुछ वैसा ही है।

सासू मुई नै बाळू जलम्यौ, रह्या तीन रा तीन। १३८०१

सास मरी और बच्चा जन्मा, रहे तीन के तीन।

—जब किसी परिवार की स्थिति घट-बढ़कर पहिले जैसी ही बनी रहे, तब...।

—आंशिक बदलाव के बावजूद परिस्थिति ज्यों-की-त्यों बनी रहे, तब...।

सासू मुई साल भागौ, ऊठ बहू कांम लागौ। १३८०२

सास मरी कटा फंदा, उठो बहू करो धंधा।

—किसी परिवार, समाज या देश में निरंकुश व्यक्ति के मरने पर संबंधित व्यक्ति आजाद महसूस करते हैं और अपनी इच्छानुसार अपना-अपना काम सँभालकर सुचारु रूप से करने लगते हैं।

—दासता का दायरा छोटा हो या बड़ा, उसके छिन्न-भिन्न होने पर ही व्यक्ति उन्मुक्त होकर काम कर सकता है।

पाठा : सासू रौ साल मिट्यां बहू नै सांस आवै।

सासू में लक्खण हुवै तौ बहू नै केवटै। १३८०३

सास में गुण हों तो बहू को सँभाले।

—मुखिया में काबलियत हो तो वह अपने आदमियों पर नियंत्रण रख सकता है और उनसे इच्छानुसार काम ले सकता है।

—मुखिया की सतर्कता और होशियारी से ही संबंधित क्षेत्र के कार्यों की सफलता निर्भर करती है।

सासू में लक्खण होवै तौ बहू में आवै। १३८०४

सास में गुण हों तो बहू में आएँ।

—मुखिया के गुण व आचरण का ही संबंधित क्षेत्र में अनुकरण होता है।

—यदि मुखिया चतुर और संवेदनशील है तो उससे जुड़े व्यक्ति उसका सम्मान करते हैं, उसका कहा मानते हैं। जब दो व्यक्तियों के जुड़ाव से उनकी गुणात्मक शक्ति ग्यारह गुना बढ़ जाती है तो अधिक व्यक्तियों का जुड़ाव क्या नहीं कर सकता!

सासू सीधी ई लड़ै, फोग आलौ ई बळै। १३८०५

सास सीधी भी लड़े, फोग गीला भी जले।

फोग = मरुस्थल की एक छोटी झाड़ी। जिसकी गीली लकड़ियाँ भी आग में जल जाती हैं।

—जिस तरह फोग गीला होने पर भी आग पकड़ लेता है, उसी तरह सास सीधी होने पर भी बहू से लड़ने को आमादा हो जाती है। गीली लकड़ी और सीधी-सास का कैसा अद्‌भुत सामंजस्य बिठाया है।

—सास-बहुओं की अनबन में प्रश्न सीधे या टेढ़े स्वभाव का नहीं है। मुख्य बात है परस्पर अधिकारों का टकराव। कोई भी व्यक्ति सीधा हो या टेढ़ा, अपने अधिकार नहीं छोड़ना चाहता।

पाठा : सासू सैंणी ई लड़ै, कैर आलौ ई बळै।

सासू सूं बैर, पड़ौसण सूं नातौ। १३८०६

सासू से बैर, पड़ोसिन से मेल।

—अपने तो आखिर अपने ही रहते हैं, चाहे बैर करो या प्रेम। वक्त पर स्वतः साथ जुड़ जाते हैं। लेकिन परायों को अपना बनाना यह एक विशिष्ट गुण है। ऐसी मनोवृत्ति वाले व्यक्ति अपनों से तो मन-मुटाव रखते हैं और दूसरों के साथ हिल-मिलकर रहते हैं।

—जो नासमझ व्यक्ति अपनों और परायों का भेद भी न समझे उस पर व्यंग्य।

सासौ-ई-सास रांम उचारण। १३८०७

सॉस-सॉस के साथ राम-नाम का जाप।

—जाने कब इस नश्वर जीवन का अंतिम सॉस टूट जाय, इसलिए सृष्टि-कर्ता ईश्वर का सुमिरन करना चाहिए, जिससे मुक्ति की संभावना बने। राम नाम के अलावा कुछ भी साथ नहीं चलता।

साहजादी री आंख्यां दूखै, सैर में धूंवौं मत करौ। १३८०८

शाहजादी की ऑखे दुख रही है, शहर मे धूऑ मत करना।

दे.क.सं.१२०४२

साहजी, आंमळ गूंछळिया।–व.१५५ १३८०९

शाहजी कपट के ही पुतले है।

—जिस व्यक्ति के जीवन का एकमात्र उद्देश्य व्यवसाय के द्वारा लाभ अर्जित करना ही है, वह मानवीय भावनाओं से वंचित हो जाता है। और व्यवसाय में कपट-जाल के बिना मुनाफा हो नहीं सकता।

—लोभ की आसुरी प्रवृत्ति हर व्यक्ति को जालसाजी के लिए मजबूर कर देती है।

साहजी गिया दिक्खण, पण वै-रा-वै ई लक्खण। १३८१०

शाहजी गये दक्खन, पर वही-के-वही लच्छन।

—जो व्यक्ति शिक्षित होने पर भी संस्कारित न हो, उस पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति अनुभव से कुछ भी नहीं सीख पाये।

साहजी घोड़ौ चायै के वळता आजौ। १३८११

शाहजी घोड़ा चाहिए कि लौटते हुए आना।

—वक्त पर ही किसी चीज की उपादेयता है, वक्त गुजरने के बाद उसका उतना महत्त्व नहीं रहता।

—जो व्यक्ति स्पष्ट न कहकर बुराई से बचना चाहे तो वह मनाही के बहाने बनाता है।

—देने की इच्छा न होने पर टालने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य।

साहजी जात कांईं के चोपड़ा। खावौ कांईं के खोपरा के थांरै डील री पसम ई कैवै। १३८१२

शाहजी जात क्या कि चोपड़ा। खाते क्या हो कि खोपरा कि शरीर की चमक ही बता रही है।

—बचपन में इस उक्ति की जाने कितनी बार पुनरावृत्ति की है, जिसकी कोई गिनती ही नहीं। दूर से ही किसी मरियल बनिये को देखकर यह उक्ति अपने-आप होंठों पर उछल आती थी। तब इसकी सहज लय प्रभावित करती थी और आज इसका मर्म प्रभावित करता है। चोपड़ा जाति में चुपड़ी खाने की व्यंजना निहित है। तिस पर खोपरे खाने से चर्बी बढ़ने की बजाय घटने का क्या कारण है?

—जिस व्यक्ति की बातों का उसके व्यक्तित्व से तनिक भी मेल न हो।

साहजी थांरै बाप नै बाघ मारै, बाप रै नै बाघ रै लेखौ कोई नहीं थौ।–व.१४३ १३८१३

शाहजी आपके बाप को बाघ मार रहा है कि बाप और बाघ का कोई हिसाब नहीं था।

—जो व्यक्ति बाघ के द्वारा बाप के मारे जाने की चिंता न करके केवल बाप और बाघ के पारस्परिक लेन-देन की बात ही सोच रहा हो।

—जिस व्यक्ति का उद्देश्य लाभ और हिसाब-किताब तक ही सीमित हो, वह मानवोचित भावनाओं से सर्वथा वंचित हो जाता है।

—लोभी व्यक्ति के चरित्र पर कटाक्ष।

साहजी निंवतौ तोलजौ के पेढ़ी तौ बैठण दै। १३८१४

शाहजी ठीक तोलना कि मुझे पेढ़ी पर तो बैठने दे।

—बदमाशी करने के पहिले अवसर तो मिले, फिर कोई बिरला ही व्यक्ति चूकता है।

—आदमी के आचरण की मुख्य कसौटी है, अवसर। अवसर मिलने पर कौन अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रह पाता है और कौन नहीं, तभी पता चलता है। अवसर के अभाव में मनुष्य का असली चरित्र उजागर नहीं होता।

पाठा : साहजी निंवतौ जोख्या के ताकड़ी हाथ बसू तौ होवण दै।

साहजी री भुळावण फळसै तांई। १३८१५

शाहजी की हिदायत फलसे तक।

—किसी भी व्यक्ति की जो अपनी समझ होती है, वक्त पर वही काम आती है, दूसरों की सीख ज्यादा कारगर साबित नहीं होती।

—दूसरों को हिदायत या सीख झाड़ने की जिन व्यक्तियों में आदत होती है उनके लिए यह उक्ति एकदम सटीक है कि किसी की सीख अधिक देर तक नहीं टिकती, उसका असर क्षणिक होता है।

पाठा : सासू री सीख झूपा सूधी। भूवाजी री सीख फळसै तांई।

साहजी री सीख फळसा तांई।

साहजी री मूंछ ऊंची नीं तौ नीची ई सही। १३८१६

शाहजी की मूँछ ऊँची नहीं तो नीची ही सही।

दे.क.सं.८९११

साहजी रै सैण घणा! १३८१७

शाहजी के हितैषी बहुतेरे!

—यह व्यंग्यात्मक उक्ति है। शाहजी ने ठौर-ठौर दुश्मनी बिखेर रखी है। उसे कहीं कोई चाहने वाला नही मिलता। लेकिन बुराई तो सभी करते ही हैं। उसके दुष्कृत्यों को याद करते हैं।

—जिस व्यक्ति का एक भी हितैषी न हो, उस पर कटाक्ष।

साहजी सूरा अर लेखा पूरा। १३८१८

शाहजी शूरा और लेखा पूरा।

—जब कोई बोहरा अपनी होशियारी से अपनी इच्छानुसार किसी भी असामी का हिसाब पूरा बिठा देता है, तब वह अपने को शूरवीर से कम नहीं समझता।

—जब अपने मन-वांछित काम में सफलता मिलती है तो खुश होना अनिवार्य है, चाहे बनिया ही क्यों न हो, वह भी अपनी सफलता पर गर्व करता है।

साहूकारां सारू ताळौ, चोरां सारू किसा ताळा! १३८१९

साहूकारों के लिए ताले, चोरों के लिए नहीं।

—हिफाजत और सुरक्षा तो साहूकारों के लिए होती है। चोर तो कैसी भी हिफाजत या तालों को तोड़कर चोरी कर लेता है।

—भले, नेक और सच्चे व्यक्तियों के लिए नियम-कायदे और कचहरियाँ नहीं होतीं, ये सब तामझाम तो अपराधी और झूठे व्यक्तियों के लिए होते हैं।

साहूकारौ काचौ तांतण छै।–व.१६९ १३८२०

साहूकारी कच्चा धागा है।

—साहूकार की प्रतिष्ठा तो कच्चे धागे से टँगी रहती है। कुछ पता नहीं, वह कब मामूली झटके से टूट जाय।

—समाज में प्रतिष्ठा या साहूकारी रखना बहुत मुश्किल है।

सा है जित्तै सो है। १३८२१

साँस है तब तक सब है।

—राजस्थानी के उच्चारण में शब्द का अंतिम अक्षर 'स' हो तो वह लोप हो जाता है।

—जीवन है तब-तक सब-कुछ उपलब्ध है—आनंद, खुशियाँ और खेल-कूद, सहवास का सुख, मुस्कान और हँसी।

सिं-सी

सिंघ कद छाळियां नै जीवती छोडै ? १३८२२

सिंह कब बकरियों को जीवित छोड़ता है ?

—यदि सिंह बकरियों को जिंदा छोड़े तो शक्तिशाली गरीब या असहाय को आराम से जीने दे।

—दुष्ट किसी का सगा नहीं होता। उसे जब भी मौका मिलता है वह गरीब को नोचने की चेष्टा करता है।

सिंघ कद मूंडा धोवै के दांतण करै। १३८२३

सिंह कब मुँह धोये कि मंजन करे।

—जो व्यक्ति स्नान से कतराता है, वह अपनी सफाई में अकसर यह तर्क देता है कि मुँह धोना या नहाना कोई खास बात नहीं है। सिंघ कब मुँह धोता है, मंजन करता है फिर भी उसकी दहाड़ से जंगल के सभी जानवर थर्राते हैं।

मि.क.सं. ७४५०

सिंघ गियां ई पूजिये, सिंघ रह्यां री ठौड़। १३८२४

सिंह गये ही पूजिये, सिंह रहे की ठौर।

—प्रत्यक्ष सिंह से तो डर लगता ही है, पर उसकी माँद का भी डर लगता है, भले ही वह कबसे खाली पड़ी हो। मनुष्य समाज में अन्यायी, आतताई और दुष्ट की ठीक यही स्थिति है।

इन्हें दूर से ही नमस्कार करना उचित है। जहाँ वे रहते हों, उस स्थान को भी सिर नवाते हुए चलना चाहिए।

—दुष्ट मनुष्यों से दूर रहना ही लाभप्रद है।

सिंघ ढोळै बैठा तद घेटा ई सींगड़ा काढ़्या। १३८२५

सिंह असहाय हुए तब मींढ़ों ने सींग निकाले।

—आजादी के बाद राजाओं, नवाबों और ठाकुरों के सभी अधिकार छिनने के बाद, जब वे शक्तिहीन हो गये, तब गरीबों ने भी सिर उठाकर उनका सामना करने का साहस जुटाया।

—परिवर्तन का चक्र कभी एक-सा नहीं रहता। हिंसक आततायियों के सींग और खूनी नाखून टूटते रहते हैं और दूसरी ओर भेड़ों के सिर पर सींग उगने लगते हैं। ताकि वे अपने हत्यारों का सामना करने के लिए समर्थ हो सकें।

सिंघ तौ सिकार करनै ई खावै। १३८२६

सिंह तो शिकार करके ही खाता है।

—जिस तरह सिंह अपना ही शिकार खाता है, दूसरों के मारे हुए शिकार की ओर झाँकता तक नहीं, उसी तरह स्वाभिमानी और स्वावलंबी व्यक्ति अपने हाथों की कमाई पर ही पूर्णतया निर्भर रहते हैं। दूसरों के कभी मोहताज नहीं होते।

—पानीदार व्यक्ति माँगने की बजाय मरना बेहतर समझता है।

सिंघ नै वन रौ ई आधार। १३८२७

सिंह को वन का ही आधार।

—सिंह, साधु-संन्यासी और डकैतों को निर्जन एकांत अधिक प्रिय होता है।

—स्वावलंबी पुरुष अपने बलबूते पर कहीं भी जीना पसंद करते हैं। वे दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहते।

सिंघ नै सपूत मारग नीं चालै। १३८२८

सिंह और सपूत लीक पर नहीं चलते।

—महान व्यक्ति किसी भी पंथ का अनुकरण नहीं करते। वे अपना नया ही मार्ग बनाते रहते हैं।

—बुद्धिमान और दृढ़ स्वभाव वाला व्यक्ति रूढ़ियों की राह से हटकर चलता है।

सिंघ पकड़्यौ स्याळिये, जे छोडै तौ खाय। १३८२९

सिघ पकड़ा सियार ने, गर छोड़े तो खाय।

—जब कोई मनुष्य अपनी नासमझी से ऐसे काम में फँस जाय, जिसे छोड़े तो क्षति और न छोड़े तो क्षति।

—ऐसा संकट जिसका आसानी से निवारण नहीं सूझे।

सिंघ रा कांन कुण अपड़ै? १३८३०

सिह के कान कौन पकड़े?

दे.क.सं.११८२१

सिंघ री थै खाली नीं रैवै। १३८३१

सिह की मॉद खाली नही रहती।

—सत्ता का आसन खाली नहीं रहता। एक के जाते ही दूसरा आ बैठता है। मनुष्य समाज का तंत्र ही ऐसा है कि वह शासकों के बिना नहीं रह सकता।

—राज्य-कर्मचारी की कुर्सी खाली नहीं रहती।

सिंघ री भलां किसा जिनावर सूं यारी! १३८३२

सिह की भला किस जानवर से यारी!

—आतताई किसी के भी सगे नहीं होते। स्वार्थ ही इनका सबसे बड़ा आत्मीय है।

—समाज-कंटक या दुष्ट का कोई मित्र नहीं होता। रुपया ही इनका धर्म है। रुपया ही इनका ईश्वर है।

सिंघ रै कांधै मोमाखी। १३८३३

सिह के कंधे पर मधुमक्खी।

—ईश्वर के अलावा सर्वशक्तिमान कोई नहीं होता। बड़े-से-बड़ा शक्तिशाली मामूली अड़चन से परेशान हो सकता है।

—जब हाथी को चींटी और शेर को मधुमक्खी चुनौती दे सकती है तो इनकी शारीरिक ताकत का अर्थ क्या है?

—बड़ा-से-बड़ा दिग्गज भी कठिनाई में फँसकर असहाय महसूस कर सकता है।

सिंघ रै पांखां आई। १३८३४

सिंह के पाँखें आईं।

—किसी नामजद दुष्ट को बड़े व्यक्ति का सहयोग मिल जाय, तब उसकी दुष्टता दुर्दम्य हो जाती है।

—जब कोई आतताई सत्ता पर काबिज हो जाय तो उसके दुष्कृत्यों को कौन रोक सकता है?

सिंघ लंघण करै पण घास नीं खावै। १३८३५

सिंह भूखा रहे पर घास नहीं खाता।

—आदर्श व्यक्ति अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं करता, चाहे वह कैसे भी भीषण संकट में क्यों न फँस जाय! भूखों मर जाएगा पर लोभवश निकृष्ट कार्य नहीं करेगा।

—स्वाभिमानी बंदा टूट भी जाय, पर झुकता नहीं। वह स्वस्थ व पवित्र भोजन के अलावा कीचड़ में कभी मुँह नहीं मारता। पर यह नस्ल आजादी के बाद काफी तेजी से घटने लगी है।

पाठा : सिंघ-बच्चा जे लंघण होय तौ ई घास नंह चरंत।

सिंघ वाळी हत्थळ। १३८३६

सिंह वाला पंजा।

—सिंह के पंजे की नाईं अकस्मात् किसी व्यक्ति पर भारी संकट आ पड़े तब वह नितांत असहाय हो जाता है।

—किसी गरीब पर दुष्ट का प्रकोप सिंह की हत्थल जैसा अनिष्टकारी होता है।

सिंघां नै हळ कुण जोतै? १३८३७

सिंहों को हल कौन जोते?

—ऐसी ही एक कहावत कि साँड हल में कब जुते, पर खस्सी किया हुआ बैल तो खेती के हर काम में आता है। और जिस बछड़े को खस्सी नहीं करते वह साँड का प्रचंड रूप धर लेता है, किंतु दोनों की प्रजाति एक ही है। बैल है अनुशासित, प्रशिक्षित एवं नियंत्रित और इसके विपरीत साँड है—उच्छृंखल और निरंकुश।

—निरंकुश मनुष्य को अनुशासन में रखना असंभव है, जब वह स्वयं सिंह की नाईं दुर्दम्य ताकत वाला हो या यों कहें कि सत्ता में जिसकी हिस्सेदारी हो, वह कभी किसी का नियंत्रण नहीं मानता।

मि.क.सं. १३५२८

सिंघां रा भाई बघेरा, वै नौ कूदै के ते'रा। १३८३८

सिंह के भाई बघेरे, वे नौ कूदें कि तेरह।

—सत्ता के छुटभैयों का उत्पात भी सत्ताधारियों से कम नहीं होता। वे मदोन्मत्त वहशी कभी नौ हाथ कूदते हैं तो कभी तेरह हाथ। और सत्ताधारी तटस्थ भाव से उनकी उछल-फाँद देखते रहते हैं।

—चोर-चोर मौसेरे भाई, कौन छोटा, कौन मोटा।

सिंघां रै किसी मास्यां हुवै? १३८३९

सिंहों क कब मौसियाँ होती हैं?

—जो व्यक्ति रिश्तेदारों से आत्मीयता रखना तो दूर, मौका लगने पर उनसे घात करने में भी नहीं चूके। उस पर तीखा कटाक्ष।

—जो व्यक्ति रक्त-संबंधों की मर्यादा में रंचमात्र भी न समझे और उलटे उनके साथ बैरी का-सा बरताव करे।

मि.क.सं. १३५४३

सिंघां रै कैड़ा संगाती! १३८४०

सिंहों के कैसे संगाती!

—दुष्ट व्यक्ति मित्रता के पवित्रतम संबंध की मर्यादा क्या समझे। वह तो अपने स्वार्थ की लालसा में रुपये के अतिरिक्त और कोई रिश्ता नहीं मानता।

—न तो कोई व्यक्ति दुष्ट को मन से चाहता है और न वह मतलब के बिना किसी को मित्र समझता है।

मि.क.सं. १३५४३

पाठा: **सिंघां रै किसी मिंतराई।**

सिंघां रै तौ सिंघ ई जलमसी। १३८४१

सिंहों के तो सिंह ही जन्मेंगे।

दे.क.सं.७४५५

सिंघां रै बाड़ा नीं व्है। १३८४२

सिंहों के बाड़े नहीं होते।

—स्वतंत्र प्रवृत्ति वाले स्वाभिमानी व्यक्तियों को बंधन में नहीं रखा जा सकता। न उनकी जबान पर ताला लगाया जा सकता है। वे खुले आम सिंहों की तरह दहाड़ते हैं।

—'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं' इस सूत्र की गरिमा स्वाभिमानी व्यक्ति ही समझता है। दासता में जीने की बजाय वह स्वतंत्रता के निमित्त मरना उत्तम समझता है।

सिंघां रै सिकार में केई धापै। १३८४३

सिंहों के शिकार में कई अघाते हैं।

—बड़े व्यक्तियों के सहारे कई गरीब पलते हैं।

—नेताओं की शह पर अनेक अनुयायी मौज करते हैं।

सिंघां रौ कांई सांढ़ौ! १३८४४

सिहों का कैसा साथ!

—कोई डर से भले ही दुष्टों की हाजरी बजा ले, पर मन से उनके साथ कोई नहीं रहना चाहता।

—दुष्ट ही दुष्ट का संगाती हो सकता है, भला व्यक्ति तो समाज-कंटक की छाया से भी दूर रहना चाहता है।

पाठा : **सिंघां रौ कैड़ौ साथ!**

सिंदूर-माळीपन्ना लाग्यां तौ भाटा ई पूजीजै। १३८४५

सिंदूर-मालीपन्ने लगने पर तो पत्थर भी पूजे जाते है।

—जब सिदूर-मालीपन्नों से पत्थर भी देवता बन जाते हैं, तब व्यक्ति-प्जा की अंध-भावना से मनुष्य देवता के समान उपास्य हो जाय तो इसमें आश्चर्य की क्या बात!

—साधक ही पत्थर और सामान्य मनुष्य को सिद्ध बनवाकर पुजवाते हैं।

सिंदूर रा सिट्टा नै जावै। १३८४६

सिंदूर के सिट्टे लेने जाय।

—सिंदूर का सिट्टा होता ही नहीं है। लोक-मानस की कल्पना तो बहुत ही सुंदर है। पर यह एक असंभव कल्पना है। लेकिन इस अवास्तविक कल्पना से वस्तु-स्थिति जितनी स्पष्ट होती है, वह प्रत्यक्ष यथार्थ से नहीं होती।

—जो व्यक्ति सामान्य काम करने की बजाय हमेशा असामान्य या अव्यावहारिक कामों में ही उलझा रहे और नतीजा शून्य।

पाठा : सिंदूर री फळियां लेवण नै गियौ।

सिंधूड़ौ सुणियां पूठै सूरौ घर में ना रहै। १३८४७

सिधु-राग सुनने पर शूरवीर घर मे नही रहता।

—युद्ध में आमंत्रित होने के लिए जब सिंधु-राग के वाद्य उद्घोष करने लगते हैं तब शूरवीर घर म चुपचाप बैठे नहीं रह सकते। उनकी नाड़ियाँ फड़कने लगती हैं। वे रोमांचित हो उठते हैं। अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर वे रणक्षेत्र की ओर इस उत्साह से कदम बढ़ाते हैं, जैसे प्रेयसी से मिलने जा रहे हों।

सिंधू सूरां तणी पिछांण। १३८४८

सिधु-राग शूरवीरो की पहिचान।

—सिधु-राग का उद्घोष ही शूरवीरों की खरी कसौटी है। युद्ध के नाम से ही जिन कायरों को जूड़ी चढ़ती है, वे घर में दुबककर बैठ जाते हैं। और जिन शूरवीरों की भुजाएँ सिंधु-राग का नाद सुनकर फड़कने लगती हैं और वे अदेर शस्त्रों से सुसज्जित होने लगते हैं, वे वास्तव में सच्चे योद्धा हैं। वे अपने प्राणों का उत्सर्ग करके देश को बचाते हैं।

पाठा : सिंधु-राग बाजै जणा सूर फड़फड़ावै। सिंधु-राग सुणतां ई सूरा बारै नीसरै।

सिकल चुड़ैल री अर मिजाज परी रौ। १३८४९

सूरत चुड़ैल की और मिजाज परी का।

—जो बद-शक्ल महिलाएँ बनाव-सिगार ज्यादा करती हैं और प्रसाधनों के बूते पर सुंदर दिखने की व्यर्थ चेष्टा करती हैं।

—बदसूरत औरतें जब कृत्रिम साधनों से परियों की भौंडी नकल करने के लिए उतारू हों, तब...।

सिकल देखनै गधा भिड़कै। १३८५०

सूरत देखकर गधे बिदकते हैं।

—पाड़े की नाईं बदसूरत व्यक्ति पर करारा व्यंग्य।

—आचरण और स्वभाव का तो बाद में पता चलता है, किंतु प्रथम दृष्टि में तो आदमी का हुलिया ही प्रभावित करता है, भद्दे व्यक्ति के गुण भी दबे रहते हैं और बाहरी हुलिया ही प्रमुख हो जाता है।

सिकार री वेळा कुत्तौ हंगायौ। १३८५१

शिकार की वेला कुत्ता हँगाया।

—ऐन वक्त पर काम करने की बजाय जो व्यक्ति बहाना-बाजी करने लगे, उस पर करारा चाबुक।

—कुछ व्यक्तियों की आदत ही ऐसी होती है जो जरूरी काम की वेला कुछ-न-कुछ अच्छा बहाना ढूँढ़ लेते हैं, उन पर इस उक्ति में तीखा कटाक्ष है।

पाठा : सिकार री वगत कुत्ता नै हंगणौ सूझै। सिकार री टेम कूतरौ हूंगण न्हाटै।

सिक्सा बिचै दीक्सा लेवणी अणूंती दौरी। १३८५२

शिक्षा की बजाय दीक्षा लेनी बहुत मुश्किल।

—शिक्षित होने की बजाय दीक्षित होने में बड़ा जोर पड़ता है। शिक्षा बुद्धि का व्यापार है और दीक्षा आचरण की कसौटी है। कोई भी ज्ञान आचरण में न ढले तब तक वह सार्थक नहीं होता।

—शिक्षा शिष्टाचार सिखाती है और दीक्षा व्यक्तित्व एवं आचरण को संस्कारित करती है, इसलिए उसकी साधना बड़ी कठिन है।

सिड़ांद सेड़ै पड़ी , बतळाई तौ केड़ै पड़ी। १३८५३

मरियल किनारे पड़ी, पुकारा तो पीछे पड़ी।

—हमदर्दी दिखाने पर जो व्यक्ति पीछे ही पड़ जाय, उसके लिए।

—तनिक सहयोग की बात करने पर जो व्यक्ति पीछा ही न छोड़ना चाहे,उस पर कटाक्ष ।

सिणगार तौ चूड़ै वाळी नै छाजै । १३८५४

शृंगार तो सुहागिन को ही सोहे ।

—विधवा औरतों के लिए हिंदू-समाज में सिर्फ जिंदा रहने की मजबूरी के अलावा बाकी सब सुख-सुविधाएँ वर्जित हैं,केवल सुहागिन ही उनकी एकमात्र अधिकारिणी है ।

—पति की चिता के साथ विधवा की उमंगें भी जल जाती हैं । सधवा की तुलना में वह एक अभिशप्त जिंदगी जीते हुए मसान की प्रतीक्षा करती रहती है ।

सिणगार्‌यौ बांवळ पण सोहै । १३८५५

सजा-सँवरा तो बबूल भी शोभा देता है ।

—जब देशी बबूल पर पीले-पीले गोल फूल महकने लगते हैं तो खुशी के मारे शूलें भी अपनी मुस्कान रोक नहीं पातीं । हवा का तनिक-सा झोंका मिलते ही सारा बबूल झूम-झूम उठता है । जब सजे-सँवरे बबूल की ऐसी स्थिति है तो शृंगार में सुशोभित नारी के आकर्षण का तो पार ही नहीं ।

सिणियौ हुतौ अर वतूळ्यै वड़ग्यौ । १३८५६

सिणिया था और वातचक्र के हवाले हो गया ।

सिणियौ = सिणतरौ = राजस्थान में पाया जाने वाला तंतुदार जंगली क्षुप,जो छप्पर,झोंपड़ी आदि के छाजन में काम आता है । इसकी रस्सी भी बनाई जाती है । पत्ते न होने के कारण यह हलका होता है ।

—ओछे व्यक्ति का अचीता भाग्योदय होने पर उसके पाँव जमीन पर नहीं टिकते । वह हवा में उड़ने लगता है जिस प्रकार अपने प्रवाह में फँसे सिणतरे को जमीन से उठाकर वातचक्र अपने साथ उड़ा ले जाता है ।

उर्दू के शायर अकबर इलाहाबादी ने भी इसी आशय का शेर कहा है :

बुदधू मियाँ भी हज़रते गाँधी के साथ हैं । गो गर्द राह हैं, मगर आँधी के साथ है ।

सितंतरै री झाट । १३८५७

सतहत्तर की मार ।

—संवत् १९७५ में प्लेग की जबरदस्त महामारी फैली थी। राजस्थानी में जिसे 'मरी' कहते हैं। गाँव में दाहक्रिया के लिए मनुष्य ही नहीं बचे थे। संवत् १९७६ आधा अकाल जैसा ही था। और संवत् १९७७ में मालवे जाते समय मनुष्य और मवेशी बरसाती तूफान की चपेट में ऐसे फँसे कि हजारों का सफाया हो गया। तत्पश्चात् जब कभी भयंकर त्रासदी घटित होती है तो उसे 'सतहत्तर की मार' कहकर संबोधित करते हैं।

—जब किसी समाज को अप्रत्याशित भीषण त्रासदी का सामना करना पड़े, तब ...।

मि.क.सं.८२३६

सित्तर-फित्तर हूं समझूं कायनीं, तीन-बीसी पूरा लेस्यूं। १३८५८

सत्तर-फत्तर मै समझूँ नही, पूरे तीन-बीसी लूँगा।

संदर्भ-कथा: एक जाट भोला था। हिसाब-किताब में अधिक समझता नहीं था। फिर भी भोलों के सहायक भगवान तो होते ही हैं। आये साल अच्छी खेती हो जाती थी। मेलों में पशुओं की बिक्री से भी काफी आमदनी हो जाती थी। लोग उसे भोला कहते तो वह मुस्कराकर चुप हो जाता। उनकी खास परवाह नहीं करता। कभी-कभार मौज में होता तो मजाक के लहजे में कहता, 'मैं तो भोला ही ठीक हूँ। आप सभी देखते ही हैं कि बड़े-बड़े समझदार जरूरत पड़ने पर मुझ से उधार ले जाते हैं। न बोहरे की तरह ब्याज लेता हूँ, न उनके घर उधारी वसूल करने जाता हूँ। जो घर पर आकर दे जाते हैं, बिना गिने ले लेता हूँ। बीस से ऊपर गिनती भी तो नहीं जानता।' लोग-बाग सही बात की हामी भरते हुए, चिलम की एकाध फूँक खींच लेते। सचमुच उसे अपने भोलेपन पर भी मामूली गुमान था।

किसी एक मेले में वह ऊँट बेचने गया। खरीददार ने ऊँट को अच्छी तरह देख-भाल कर कहा, 'सत्तर रुपये दूँगा। तुम्हारे जँचे तो मोहरी मुझे पकड़वा दो। मैं सौदेबाजी नहीं करता।'

'मुझे भी सौदेबाजी पसंद नहीं। एक ही मोल बता दूँ,' पूरे तीन-बीसी रुपये लूँगा। सत्तर-फत्तर का लफड़ा मेरी समझ में नहीं आता।'

खरीददार एक क्षण भर के लिए सकते में आ गया। पर दूसरे ही क्षण उसकी नादानी पर मुस्कराते हुए कहा, 'पर मैं तो दस रुपये ज्यादा दे रहा हूँ, बोलो, सौदा तय। ये लो रुपये और सँभलाओ मुझे मोहरी।'

'नहीं,मैं तो फकत तीन-बीसी ही लूँगा। दस रुपये ज्यादा नहीं चाहिए। दो जीभ वाला, दो बात करे।' संयोग से खरीददार भी उसीके माजने का था। अपनी आन पर अड़ते हुए बोला, 'मैं तो सत्तर रुपये ही दूँगा। मेरे मुँह में भी सिर्फ एक ही जबान है। दो बाप का हो वह दो बात करे।'

आखिर वह सौदा नहीं बैठा। ऊँट वाला तीन-बीसी रुपयों पर अड़ा रहा और खरीददार सत्तर रुपयों पर। दुनिया में उस किस्म का वह पहिला और अंतिम सौदा था जिसमें मालिक और खरीददार दोनों को लाभ होने पर भी नहीं बैठा। क्योंकि दोनों के मुँह में एक-एक ही जबान थी।

—जान-बूझकर किसी को ठगने की अपेक्षा अपनी नादानी से ठगा जाना बहुत बेहतर है। ठगना अमानवीय है,ठगा जाना इनसानियत है। औघड़ कबीर की ऐसी ही औंधी समझ थी—

कबिरा आप ठगाइयै, और न ठगियै कोय।

आप ठगँ सुख ऊपजै, और ठगैं दुख होय।

सित्तर में नीं बहोत्तर में। १३८५९

सत्तर मे न बहत्तर मे।

दे.क.सं.१२७९४

सिध-साधक रौ जोड़ौ। १३८६०

सिद्‌ध-साधक का जोड़ा है।

—सिद्‌ध और साधक का ऐसा अन्योन्याश्रित संबंध है कि एक का अस्तित्व दूसरे के बिना संभव ही नहीं। साधक न हो तो सिद्‌ध का कुछ अर्थ नहीं। और सिद्‌ध न हो तो साधक का कुछ अर्थ नहीं। सिद्‌ध में कुछ-न-कुछ विशेषता हुए बिना साधक भी उसे कहाँ तक बढ़ावा दें। शून्य को चाहे कितने से ही गुणा करो,वह शून्य ही रहता है। और इसके विपरीत कोई कितना भी बड़ा सिद्‌ध क्यों न हो,उसे साधक न मिलें तो उसका कोई नामलेवा ही न रहे।

सिधस्री में इज खोट है। १३८६१

सिद्‌धश्री में ही खोट है।

—जिस काम की शुरुआत में ही गलती रह जाय।

—जों काम प्रारंभ करने के साथ ही बिगड़ जाय यानी जिसकी बिसमिल्ला में खोट रह जाय।

सिधस्त्री सूं लेयनै संवत् मिती लग आखी भागवत बांचली। १३८६२

सिद्धश्री से लेकर संवत् तिथि तक पूरी भागवत बाँचली।

—फिर भी परिणाम शून्य-का-शून्य।

—मूर्ख व्यक्ति कुछ भी पढ़ ले या उसे कितना ही समझाया जाय,उस पर कोई असर नहीं पड़ता।

सिधां री सिधाई साधकां सूं। १३८६३

सिद्धों की महिमा साधकों से।

—किसी भी विभूति या विद्वान अपने तईं प्रसिद्ध नहीं हो सकता,जब तक उनके साधक अतिरंजना-पूर्वक उनका प्रचार-प्रसार न करें।

—किसी भी बड़े व्यक्ति की प्रचारित छवि और वास्तविकता में कितना मेल है,शायद ईश्वर भी उसे नहीं जानता और कुछ समय के बाद साधक स्वयं भूल जाते हैं कि उनके उपास्य का असली रूप क्या है। व्यक्ति-पूजा से सम्मोहित प्रजा महान् व्यक्तियों की प्रस्थापित छवि को उनका सही व्यक्तित्व समझ बैठती है। सिद्ध और साधकों की यह अप्रत्यक्ष मंत्रणा युगों से चलती आ रही है और युगों तक चलती रहेगी।

सिनांन करनै कोई नीं पिछतावै। १३८६४

स्नान करके कोई नहीं पछताता।

—स्नान करने के बाद मनुष्य स्फूर्ति महसूस करता है। थकान मिट जाती है। ऐसा लगता है, जैसे शरीर में नये प्राणों का संचार हुआ हो। एक ऐसी मानसिक और शारीरिक तृप्ति होती है जो सब तृप्तियों से बढ़कर महसूस होती है। वह पानी के प्रति बड़ा उपकृत महसूस करता है।

पाठा : मिनख सैंग कांम करनै पिछतावै पण सिनांन करनै नीं पिछतावै।

सियाळ री सिवरात। १३८६५

सियार की शिवरात।

संदर्भ-कथा : किसी एक सिंह और सियार में अच्छी-खासी मित्रता थी। सिंह साधु-स्वभाव का था। अपनी भूख से बेशी शिकार नहीं करता था। कई बार सियार के लिए मांस बचता ही नहीं था। सियार की अँतड़ियाँ कुलबुलाने लगतीं तो वह दूसरा शिकार करने के लिए कहता। तब सिंह जवाब देता, 'कुदरत ने ही मुझे मांसाहारी बनाया है, यह दोष तो मेरा नहीं। थोड़ा धीरज रख कल तेरे लिए बड़ा शिकार करूँगा।' सियार क्या जवाब देता। जंगल के राजा की आज्ञा मानने के अलावा दूसरा कोई चारा ही नहीं था। सिंह ध्यान भी रखता, पर कभी-कभार छोटा शिकार सामने आने पर उसे झपटना ही पड़ता। उधर सियार की आदत ऐसी थी कि झूठ बोले बिना मांस हजम ही नहीं होता था। कुछ भी हो सिह के साधु-स्वभाव के कारण दोनों मित्रों में मेल बना हुआ था।

संयोग न मनुष्यों के राजा को सूचित करता है और न जंगल के राजा को। एक मर्तबा वह अकेला ही मस्ती से घूम रहा था कि अचानक एक दुःस्वप्न की नाईं शिकारी के जाल में फँस गया। एक गर्जना की पर जाल से छुटकारा नहीं मिला कि अचानक उसकी नजर मित्र पर पड़ा तो वह बड़ा आश्वस्त हुआ। सियार के पास आते ही बोला, 'अब तो तुम्हें कभी दूर नहीं जाने दूँगा। बड़े मौके पर आये। शिकारी के आने से पहिले झटपट जाल काट दे तो मेरी मुक्ति हो। जल्दी कर भैय्या।'

सियार ने तत्काल तरकीब सोच ली। अफसोस करते कहने लगा, 'ऐसे जाल तो दिन में दस काट लूँ। पर आज तो मेरे शिवरात का व्रत है। मैं सूखे चमड़े की ताँत को सूँघ भी नहीं सकता। पर आपके लिए जाल काटना तो बहुत आसान है।'

सिंह ने प्रतिवाद किया, 'क्या तुझे भी बताना पड़ेगा कि मरे पशु को मैं छूता तक नहीं। अरे भैया, ये बातें तो बाद में कर लेंगे। तू देरी मत कर। मुझे शिकारी की गंध आ रही है।'

उधर सियार तो जान-बूझकर देरी कर रहा था। जाल के पास आकर भी इधर-उधर जाल की पड़ताल करता रहा कि इतने में एक तीखी धार वाली कुल्हाड़ी उसके माथे को चीर कर टकराई। सियार तो वहीं ढेर हो गया। कुल्हाड़ी की रफ्तार इतनी तेज थी कि उसके अगले वार से जाल कट गया। शेर ने जाल से छुटकारा पाते ही मित्र की ओर देखा—वह मर चुका था। फिर उसने शिकारी की ओर देखा—वह भागता हुआ काफी दूर पहुँच गया था। यदि मनुष्य का मांस न खाने की शपथ उसने नहीं ली होती तो उसे वहीं ढेर कर देता।
—मित्र के साथ धोखा करने वाले की देर-सवेर, यही दुर्गति होती है।

सियाळिया री मां सूंठ में कांई समझै ! १३८६६

सियार की माँ सोंठ में क्या समझे !

—यदि गँवार व्यक्ति ज्ञान की बातें समझे तो सियार की माँ सोंठ के स्वाद में समझे।

—मूर्ख व्यक्ति काव्य एवं कला के मर्म को नहीं समझ सकता।

दे.क.सं.८९७८

सियाळै में तौ तप रौ इज संधीणौ। १३८६७

सर्दियों में तो आँच का ही मिष्ठान्न।

—सर्दियों में अंगारों की मंद-मंद आँच एक अपूर्व अनुभूति उत्पन्न करती है। ऐसा महसूस होता है कि रोम-रोम में व्याप्त जकड़न धीरे-धीरे खुलने लगी हो।

सियाळै री छाछ पूतां नै, चौमासै री भूतां नै। १३८६८

सर्दियों की छाछ पूतों को, चौमासे की भूतों को।

—यह स्वास्थ्य संबंधी उक्ति है। वर्षा ऋतु में हरा-कच्चा घास खाने से मवेशियों का दूध, दही स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और छाछ भी। वह भूतों के पीने योग्य ही होती है। कार्तिक में पका और पौष्टिक घास खाने से मवेशियों का दूध-दही स्वास्थ्य-प्रद होता है। और छाछ भी। सर्दियों की छाछ परिजनों को पिलानी चाहिए।

पाठा : सांवण री सुरियां नै, भादवा री भूतां नै, आसोजां री कुत्तां नै अर काती री पूतां नै।

सुरियां नै = गायों कों।

सियाळै री पोह, उनाळै री दोपार अर चौमासै री रात। १३८६९

सर्दियों का सवेरा, गर्मियों की दोपहर और चौमासे की रात।

—ये सभी कष्टप्रद होने की वजह से लंबे महसूस होते हैं।

—जो स्थिति कष्टदायक होती है,उसकी अवधि अधिक लंबी लगती है।

सियाळौ तौ भोगी रौ अर ऊन्हाळौ जोगी रौ। १३८७०

सर्दी तो भोगी के लिए और गर्मी योगी के लिए।

—सर्दियों की मौसम भोगियों के लिए आनंदप्रद होती है तो गर्मी की तप्त मौसम योगियों के लिए उपयुक्त है, इसलिए कि साधना में विकार उत्पन्न नहीं होते।

—मनुष्यों के संदर्भ में प्रत्येक ऋतु की अलग-अलग उपादेयता होती है।

सिरक भूवा भतीजी आई। १३८७१

खिसक बूआ भतीजी आई।

—मानव समाज में प्रत्येक रिश्ते का समय के अनुसार महत्त्व बदलता रहता है।

—समय बीतने के साथ-साथ रक्त-संबंधों का अपनत्व भी बीतने लगता है।

सिर चढ़ाई गादड़ी गांव ई फूंकण लागी। १३८७२

सिर पर चढ़ाई सियारिन गॉव ही फूँकने लगी।

दे.क.सं.११०४६

पाठा : सिर चढ़ाई फोयली गांव ई फूंकण लागी।

सिर डूबै अर लोढ़ा तिरै। १३८७३

सिर डूबे और पत्थर तिरे।

—चंबल नदी का इतना तेज प्रवाह है कि पत्थर एक जगह स्थिर नहीं रह पाते, वो लुढ़कते हुए तैरते रहते हैं, पर आदमी डूबकर मर जाता है।

—समय के प्रवाह में शक्तिशाली जीवित रह जाते हैं और कमजोर मिट जाते हैं।

पूरी उक्ति इस प्रकार है :

चांमल चौड़े पाट, सिर डूबै, लोढ़ा तिरै।

चांमल = चंबल नदी।

सिरदारां री जांन में, रैणौ मांन-तांन में, बात करणी कांन में अर रोटी असमांन में। १३८७४

सरदारो की बारात मे, रहना आन-मान मे, बात करनी कान मे और भोजन आसमान मे।

—बड़े व्यक्तियों के उत्सव-आयोजन में नौकरों को भोजन बहुत देर से मिलता है। काम की मार से उनकी भूख ही मर जाती है।

—बड़े आदमियों के अपने ठाट हैं तो अपने दोष भी हैं।

सिर पर खेई अर तंबू में डेरौ। १३८७५

सिर पर खेई और तंबू में डेरा।

देक.सं.११०४३

पाठा : सिर पर भींटकां री खेई अर तंबू में वड़ण दौ।

सिरफ लल्लौ ई सीख्यौ, दद्दौ नीं। १३८७६

सिर्फ लल्ला ही सीखा, दद्दा नहीं।

दे.क.सं.८५३०

सिरफोड़ा रौ मूंडफोड़ौ भायलौ। १३८७७

सिरफोड़े का मुंडीफोड़ा साथी।

—घूम-फिरकर दुष्ट को दुष्ट खोज ही लेता है।

—जिस व्यक्ति के जैसे लच्छन होते हैं वैसे साथी मिल जाते हैं।

सिर मोटौ सपूत रौ, पग मोटौ कपूत रौ। १३८७८

सिर बड़ा सपूत का, पॉव बड़ा कपूत का।

—यह एक शारीरिक लक्षण से संबंधित उक्ति है। लोक-मान्यता के अनुसार शरीर के अंगों से मनुष्य के भाग्य का संकेत मिल जाता है।

—जिस व्यक्ति का सिर बड़ा होता है वह भाग्यशाली होता है और जिसका पॉव बड़ा होता है वह अभागा एवं कपूत।

पाठा : सिर बड़ौ सिरदार रौ, पग बड़ौ मुरदार रौ।

सिर लांठौ सुपातर रौ, पग लांठौ कुपातर रौ।

सिर रौ सेवरौ। १३८७९

सिर का सेहरा।

—अपने से बड़ों के लिए एक सम्मान-सूचक संबोधन।

—परम हितैषियों के लिए आत्मीय संबोधन।

सिर रौ सेवरौ, माथै रौ मोड़, घर जंवाई गिंडक री ठौड़। १३८८०

सिर का सेहरा, माथे का मोड़, घर-जमाई कुत्ते की ठौर।

—जामाता दूर रहे तब तक सिर का सेहरा है, सरताज है। जब वह ससुराल में आकर डेरा जमा लेता है तो उसके साथ कुत्ते-सा व्यवहार होने लगता है।

—दूरी से अपनापन और सम्मान कायम रहता है, साथ रहने पर वह धीरे-धीरे मिटने लगता है।

सिर सलांमत तौ पोत्या मोकळा। १३८८१

सिर सलामत रहे तो साफे बहुतेरे।

—जो व्यक्ति जैसे-तैसे जीवित रहने को ही सबसे बड़ा आदर्श और सबसे बड़ी मर्यादा मानता हो और अन्य नैतिक मान्यताओं को गौण समझता हो।

—जीवन है तो प्रतिष्ठा है, आनंद मंगल है।

पाठा : सिर सलांमत रैवै तौ पागड़ियां री कांई घाटौ। सिर सलांमत तौ पागड़ियां पचास।

सिर साटै मतीरा। १३८८२

सिर के बदले तरबूज।

दे.क.सं.११०३९

सिर हंदौ बोझ पगां नै भारी। १३८८३

सिर का बोझ पाँवों को भारी।

दे.क.सं.११०५९

सिरांतियौ कठीनै ई करौ, पूंद तौ बिचाळै ई रैसी। १३८८४

सिरहाना किधर भी करो, नितंब तो बीच में ही रहेंगे।

—सत्ता पर किसी का भी अधिकार हो, बिचौलिये हमेशा सुविधाजनक स्थिति में रहते हैं।

—शासक बदल जाते हैं पर अधिकारी स्थापित रहते हैं। वे अपनी स्थिति को बदलने नहीं देते।

सिरावण सेडा माथै इज। १३८८५

नाश्ता सेड़े पर ही।

—गरीब जस-तस जीवन बसर करने को मजबूर होते हैं।

—जो व्यक्ति ओछे हथकंडों से जीविका उपार्जित करते हैं।

सिरी गणेस में ई डबकौ । १३८८६

श्री गणेश में ही संशय ।

—जिस काम की शुरुआत ही संशय या त्रुटि से हो ।

—जिस काम के प्रारंभ में ही चूक रह जाय,तब...।

दे.क.सं.१३८६१

सिरोळी चीज हमेसां फोड़ा घातै । १३८८७

साझे की चीज हमेशा तकलीफदेह होती है ।

—लोक-मानस तात्कालिक सुविधाओं को ध्यान में रखकर किसी व्यवस्था को स्वीकार नहीं करता । वह पीढ़ियों के निचोड़ से कोई निर्णय निकालता है । लोक-मानस ने सामूहिक-स्वामित्व को कभी प्रश्रय नहीं दिया । साझेदारी और सहकारिता को हमेशा नकारने की चेष्टा की है । इसी मान्यता के अंतर्गत यह उक्ति है कि जब तक किसी वस्तु पर निजी स्वामित्व न हो,उसकी देख-रेख अच्छी तरह नहीं हो सकती । फलस्वरूप वह बिगड़ती भी जल्दी है ।

सिरोळी मां नै स्याळिया खावै । १३८८८

साझे की माँ को सियार खाते है ।

दे.क.सं.१३६७५

सिरोळी मावू रौ उखरड़ी मोकांण । १३८८९

साझे की माँ का घूरे पर शोक ।

दे.क.सं.१३७०८

पाठा : **सिरोळी मावू उखरड़ी माथै सिड़ै ।**

सिल-लोढ़ा सारीखा । १३८९०

शिला-लोढ़ा एक समान ।

—जब कोई बदमाश या दुष्ट एक-से अनिष्टकारी हों ।

—समान बुरे लक्षण वाले व्यक्तियों पर कटाक्ष ।

—जब पिता-पुत्र दोनों ही अव्वल दर्जे के दुराचारी हों ।

सिलांम साटै मिंयांजी नै क्यूं नाराज करणौ ? १३८९१

सलाम के बदले मियाँजी को क्यों नाराज करना ?

दे.क.सं.११४००

सिलाड़ी खटै पण बोल नीं खटै । १३८९२

शिला सही जा सकती है पर बोल नहीं सहे जाते ।

—शिला का प्रहार सहा जा सकता है, पर कड़वे बोल नहीं सहे जाते ।

—जहाँ तक बन पड़े, मनुष्य को विनम्र और सुशील होना चाहिए । वह अपनी जबान को इस तरह संयमित रखे कि उससे किसी बच्चे को भी ठेस न लगे ।

सिलारै नै सिलारौ कोनीं भाळ सकै । १३८९३

दरजी को दरजी नही देख सकता ।

—समान धंधे वालों में ईर्ष्या स्वाभाविक है ।

—निजी स्वार्थ में टकराव होने से समान पेशे वालों की प्रतिस्पर्धा अवश्यंभावी है ।

सिवली रोटी री बाट जोवै ज्यां । १३८९४

चील रोटी की बाट जोहे ज्यों ।

—रोटी पर झपटने से पहिले चील की आँखों में जो तीखी चाह होती है, ठीक वैसी ही चाह से कोई व्यक्ति किसी वस्तु की ओर दृष्टिपात करे ।

—ललचाई आँखों से देखने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

सिव-सिव रटै, संकट कटै । १३८९५

शिव-शिव रटे, संकट कटे ।

—किसी देवी-देवता का अस्तित्व हो-न-हो, पर मन की प्रबल भावना की शक्ति अदम्य होती है । शिव-शिव के निरंतर जाप से संकट टल जाते हैं या उनसे सामना करने की ताकत स्वत: बढ़ जाती है ।

सिसियां पांती सोळवीं, लड़ाई में आध । १३८९६

शिष्यों में हिस्सा सोलहवाँ और लड़ाई में हिस्सा आधा ।

—किसी गुरु के सोलह शिष्य थे। एक शिष्य सबसे ज्यादा तर्राट था। गुरु की खातिर किसी से भी लड़ने में ढील नहीं करता था, जबकि गुरु की चीजों में उसका सोलहवाँ ही हिस्सा था।

—जो व्यक्ति अनधिकृत रूप से इधर-उधर सींग मारता फिरे।

सींग झालै तौ खांडौ, पूंछ झालै तौ बांडौ। १३८९७

सींग पकड़े तो टूटा हुआ, पूँछ पकड़े तो कटी हुई।

—जो झूठा व्यक्ति किसी भी तरह पकड़ में न आये।

—जो बदमाश व्यक्ति इतना चतुर हो कि उससे कुछ भी कबूल नहीं करवाया जा सके। बात-बात में बदल जाय।

सींग पकड़नै लावणौ अर पूंछ पकड़नै बेचणौ। १३८९८

सींग पकड़कर लाना और पूँछ पकड़कर बेचना।

—किसी मवेशी को खरीदते समय जितनी सावधानी और होशियारी की आवश्यकता है, उतनी बेचते समय नहीं होती।

—व्यापार का यह नियम है कि कोई भी चीज खरीदते समय उसके सभी पहलुओं पर अच्छी तरह सोच-विचार करना चाहिए। पर बेचते समय उतनी चौकसी की जरूरत नहीं पड़ती।

सींग री कसर पूंछ में। १३८९९

सींग की कसर पूँछ में।

—एक वस्तु की कमी किसी दूसरी वस्तु से पूरी कर लेने पर...।

—एक स्थान में कमी पड़ती हो तो किसी दूसरे स्थान से उसकी पूर्ति हो जाय, तब...।

—आदमियों की कसर आदमियों से पूरी कर लेना।

—कोई विवाहित पुरुष पत्नी के अलावा कहीं अन्यत्र अपना ठसिया भिड़ाले, तब...।

सींगला सी ऊतरै आधै जातां माह, तुरियां फागण ऊतरै। १३९००
नर-बांदर बैसाख, डूमां कदै न ऊतरै, थितियौ बारूं मास॥

शृंगी उतरे सरदी आधे माघ, घोड़ों की उतरे फागुन मास।
नर-बंदर उतरे बैसाख, डोम कभी नहीं उतरे, स्थिर बारह मास॥

— सींग वाले मवेशियों की सर्दी आधे माह के बाद उतरती है, घोड़ों की सर्दी उतरती है फागुन बीतने पर। नर-बंदर की बैसाख पर और डोम को तो बारह मास ही सर्दी लगती है, कभी उतरती ही नहीं।

—इस उक्ति का खास मकसद तो यह बताना है कि डोम को सर्दी बहुत ज्यादा लगती है। साथ-ही-साथ कुछ जानवरों के संबंध में सर्दी बाबत व्यावहारिक जानकारी मिल जाती है। पद्य-बद्ध होने के कारण याद रखने में सुविधा रहती है।

सींग वढ़ाय बाछड़ां भिळणौ। १३९०१

सींग कटवाकर बछड़ों में शामिल।

—सींग और दाँतों से बैल की उम्र का पता चलता है। बैल के सींग न रहें तो वह बछड़ों की गिनती में थोड़े ही आ सकता है! इसी प्रकार कोई पुरुष मूँछ-दाढ़ी कटवाकर, बालों में खिजाब डालकर युवकों में शामिल होना चाहे तो यह उसकी धृष्टता ही है। यदि कोई औरत भी प्रसाधन या कृत्रिम सजावट से युवती दिखना चाहे तो यह उसकी भूल ही है। इस तरह का निष्फल प्रयास करने वालों पर यह कहावत सटीक बैठती है।

—जो व्यक्ति वृद्ध हो जाने पर भी लड़कों के साथ खेले, उनका-सा आचरण-व्यवहार करे, उसके लिए...।

सींच्यां तौ बाड़ ई लीली व्है जावै। १३९०२

सींचने पर तो बाड़ भी हरी हो जाती है।

—पौष्टिक खुराक मिलने पर मरियल व्यक्ति भी हृष्ट-पुष्ट हो जाता है।

—विद्या से गँवार व्यक्ति भी बुद्धिमान हो जाता है।

—कार्य के अनुरूप ही परिणाम उजागर होता है।

सींठ खोसीयां मड़ौ हळकौ न होय।—व.२८४ १३९०३

बाल तोड़ने पर मुरदा हलका नहीं होता।

दे.क.सं.२६२३, ९३३०

सींठ रांड माहिंदी नै सीयां मारया सगळी रात। १३९०४

बदजात झूठी राँड ने ठिठुराया सारी रात।

—झूठा वादा करके जो व्यक्ति बात-बात में धोखा दे जाय।

—झूठे व्यक्ति पर एतबार करने से कष्ट ही उठाना पड़ता है।

सींठां रा तोरण वायरै सूं उडै।–व.३३२ १३९०५

बाल के तोरण हवा से उड़ें।

—यत्नपूर्वक काम किये बिना वह पूर्णतया असफल ही होता है।

—उचित साधनों के बिना कोई भी कार्य संपन्न नहीं हो सकता।

—बेगार निकालने से कुछ भी बात नहीं बनती।

सींदरी बळगी पण मरोड़ नीं मिटी। १३९०६

रस्सी जल गई पर ऐंठ नहीं गई।

—बुरी तरह बर्बाद होने पर जो व्यक्ति अपना अहंकार नहीं छोड़े।

—जो व्यक्ति किसी भी कीमत पर अपने सिद्धांतों के साथ समझौता न करे, चाहे उसका सर्वस्व ही दाँव पर लग जाय।

दे.क.सं.१२३४६

पाठा : सीदरी बळगी, पण मरोड़ बाकी। सीदरी बळै तौ ई आंट नी छोडै।

सींदरी मांय सूं सांप नीसर्‌यौ। १३९०७

रस्सी के भीतर से साँप निकला।

—अकस्मात् कोई अचीता खतरा उत्पन्न हो जाय, तब...।

—अतिशय सीधा दिखने वाला व्यक्ति कोई भारी अपराध कर बैठे, तब...।

—जब कोई अघटित, घटित हो जाय, तब...।

सींदरी रौ सेड़ौ आयग्यौ। १३९०८

रस्सी का किनारा आ गया।

—कोई बूढ़ा व्यक्ति स्वस्थ दिखने पर अचानक चल बसे तो लोग कहते हैं कि रस्सी का किनारा आ गया तो फिर कैसे रुकता।

—किसी बात का अंत आ जाने पर...।

—होनहार दिखने वाले व्यक्ति का अचानक अधःपतन हो जाय, तब...।

—किसी प्रतिष्ठित परिवार की बदनामी हो जाय, तब...।

—आशा के विपरीत काम होने पर...।

सींव री पेठ बाड़ा दैवै। १३९०९

सीमा की गवाही बाड़े देते हैं।

दे.क.सं. ३४१६

पाठा : सींव री साख बाड़ा भरै।

सी कस्यां सी है, बी कस्यां बी है। १३९१०

सर्दी मानें तो सर्दी है, डर मानें तो डर है।

—किसी भी बात के संदर्भ में महसूस करना ही बहुत-कुछ है। आप सर्दी महसूस करें तो सर्दी है और डर महसूस करें तो डर है।

—किसी भी तथ्य का अस्तित्व आपकी धारणा पर निर्भर करता है।

सी कित्तौ के दोय मूठी ? १३९११

ठंड कितनी कि दो मुट्ठी ?

—सर्दियों में जब कोई व्यक्ति मुट्ठियाँ भींचकर बगल में दबाकर रखे और उससे पूछा जाय कि सर्दी कैसी है तो वह बगल से मुट्ठियाँ निकालकर कहता है—दो मुट्ठी। मतलब कि सर्दी को मुट्ठियों में दबाकर बगल में रखलो, सर्दी कम हो जाएगी।

सीखड़ल्यां घर ऊजड़ै, सीखड़ल्यां घर होय। १३९१२

सिखाने से घर उजड़ते हैं, सिखाने से घर बसते हैं।

—मनुष्य समाज में उचित-अनुचित सीख पर बहुत कुछ निर्भर करता है। बुरी सीख से घर उजड़ जाते हैं और अच्छी सीख से घर सुधर जाते हैं।

—राजस्थान में अकसर यह बात सुनने को मिलती है कि किसी को बुरी राय देने की बजाय उसे गोली मारना ठीक रहता है। गोली मारने से तो एक व्यक्ति ही मरता है पर बुरी राय से तो सारा घर बर्बाद हो सकता है। इसलिए दुश्मन को भी बुरी राय नहीं देनी चाहिए।

सीख न दीजै बांदरां, घर बय्यां रौ जाय। १३९१३

बंदरों को सीख देने से बैयों के घोंसले नष्ट होते हैं।

संदर्भ-कथा : पंचतंत्र की एक बहु-प्रचलित कथा है कि एक पेड़ पर अनेक बैयों का बसेरा था। समझो कि सारा कबीला ही वहाँ आकर बस गया हो। लंबे-लंबे झूलते हुए दुहरे घोंसले। पतले-पतले तिनके इस कदर तरतीब से गुँथे हुए कि मनुष्य ध्यान से देखे तो उसका भी मगज चकरा जाय—कैसी तो सुंदर कारीगरी है और कैसी माकूल हिफाजत है। न साँप का खतरा और न चील-कौओं का। न ओले या मूसलाधार बारिश का।

एक दिन संयोग ऐसा घटित हुआ कि वर्षा का खतरा जानकर कई बंदर उस पेड़ के नीचे बैठ गये। थोड़ी ही देर में बूँदों के साथ तड़ातड़ ओले बरसने लगे। बंदरों का बुरा हाल। इधर-उधर उछल-फाँद करते रहे। दाँत किटकिटाते रहे। ठिठुरते रहे। और उधर खुली बारिश में झूमते हुए घोंसलों के भीतर बैये पक्षी आराम से बारिश का आनंद ले रहे थे।

बारिश थमने पर चहचहाते पक्षी बाहर निकले। बंदरों को ठिठुरते देखा तो मुखिये से रहा नहीं गया। उसे सीख देने का कुछ विशेष ही शौक था। चहचहाते हुए कहने लगा, 'आप सबकी हालत देखकर हमें बड़ा तरस आ रहा है। कहाँ हम निरीह पक्षी और कहाँ आप सशक्त हनुमान। चाहें तो मनुष्यों की तरह मकान बना सकते हैं। मगर अफसोस कि आप आलस्य के मारे कुछ नहीं कर पाते। इधर देखिये, हमारा क्या बूता है—मुट्ठी जितना शरीर और पतली चोंच। एक-एक तिनका तोड़कर हमने ऐसे सुंदर और सुविधा-जनक घोंसले बनाये कि मनुष्य चाहे तो इनकी नकल तक नहीं कर सकता। बाहर ओले बरसते रहे और हवा साँय-साँय करती रही और हम मजे से झूलते रहे और आप कभी इधर तो कभी उधर उछल-फाँद करते रहे। ठिठुरन के मारे दाँत बजाते रहे। हमारे बच्चे आप सबकी बेबसी का तमाशा देखते रहे...।'

खैरियत समझो कि बंदरों का सरदार अकिंचन पक्षी की इतनी बकवास सुनता रहा। आखिर अपने गुस्से पर नियंत्रण नहीं रख सका तो दाँत पीसता हुआ पेड़ पर चढ़ गया। मुखिये का घोंसला तोड़कर उसने नीचे पटक दिया। बस, इतना इशारा काफी था। अगले ही क्षण सारे बंदर छलांग मारकर पेड़ पर चढ़े। जमीन पर तड़ातड़ घोंसलों की बरसात होने लगी। अंडे फूट गये। बच्चे और बैये घोंसलों के इर्द-गिर्द चीं-चीं करते रहे। बंदरों के सरदार ने मुट्ठी तानते हुए कहा, 'और देगा, हम जैसे बुद्धिमानों को सीख! हमारी तकलीफ से तुम्हें क्या लेना-देना था। और हमारी ताकत का कुछ अंदाज भी है तुम्हें? घोंसले बना नहीं सकते पर तोड़ तो सकते हैं। घड़ी भर का समय मिले तो मैं अकेला तुम्हारे हजार घोंसलों का सफाया कर सकता हूँ।'

भला पक्षियों का मुखिया बंदरों की मनमानी का क्या जबाव देता ! वहाँ से कबीले के साथ उड़ा सो एक दूसरे सघन पेड़ का आश्रय लिया। और नया घोंसला बनाने के लिए उसने घास का एक तिनका चोंच से तोड़ा और पेड़ की ओर दुगुने जोश से उड़ा।

—जो सीख माने उसे ही सीख देना सार्थक है वरना मूर्खों को सीख देने से बैया-पक्षियों की भाँति अपने आवास से हाथ धोना पड़ सकता है।

पाठा : सीख उणनै दीजिये, सीख सवाई जांण। सीख दीन्ही बांदरां नै, घर बैयां री हांण।

सीख-पाठ साळै री घांणी, आधौ तेल नै आधौ पांणी। १३९१४

सीख-पाठ साले की घानी, आधा तेल और आधा पानी।

—अपने ही आदमियों को जिम्मेदारी सौंपने पर वे ज्यादा नुकसानदेह साबित होते हैं।

—जहाँ तक बन पड़े अपने परिजनों पर आँख मींचकर विश्वास नहीं करना चाहिए।

सीख बाप री, अकल आपरी। १३९१५

सीख बाप की, अकल आप की।

—सीख देने वाले तो कई हैं, पर ग्रहण करने वाली बुद्धि उपयुक्त न हो तो सबकी सीख व्यर्थ चली जाती है।

—पानी जमीन पर गिरे तो वह सार्थक होता है, पत्थर पर गिरे तो एकदम व्यर्थ है। इसी तरह सीख ग्रहण करने वाले में दम नहीं तो बड़े-से-बड़ा ज्ञान भी वहाँ निरर्थक सिद्ध होता है।

सीख में फगत मुजरौ घटै। १३९१६

विदाई में फकत मुजरा बाकी।

—सारा काम संपूर्ण होने में जब किंचित् ही कसर बाकी हो।

—जब किसी काम की व्यवस्था काफी बिगड़ी हुई हो तब ताने के रूप में यह उक्ति प्रयुक्त होती है।

पाठा : सीख में मुजरौ घटै।

सीख री दाढ़। १३९१७

समझ की डाढ़।

—लोक-धारणा के अनुसार पंद्रह और अठारह वर्ष के बीच किसी के दाँत-पर-दाँत आये तो उसे चोर दाँत कहते हैं और डाढ़-पर-डाढ़ आये तो उसे अक्ल डाढ़ कहते हैं। जब काफी प्रौढ़ होने पर भी कोई व्यक्ति बेवकूफी की बातें करे तो ताने के रूप में कहा जाता है कि अभी अक्ल डाढ़ आनी बाकी है।

सीख सरीरां ऊपजै, दीन्हां लागै डांम। १३९१८

समझ शरीर से उपजती है और दाग दिये जाते हैं।

दे.क.सं.८८

सीख सूं तौ भाटौ ई तिड़क जावै। १३९१९

सीख से तो पत्थर भी तड़क जाता है।

—बुरी सीख का दुष्परिणाम निश्चित है।

—बुरी सीख से अप्रभावित रहने वाले बिरले ही होते हैं।

सीखैगा तौ नाऊ का, वाढ़ैगा तौ काहू का।–व.१५८ १३९२०

सीखेगा तो नाऊ का, काटेगा तो काहू का।

—जो व्यक्ति दूसरों की कीमत पर योग्य बने।

—जिस व्यक्ति की सफलता या ख्याति में दूसरों का योगदान हों।

पाठा : सीखेला तौ नाऊ रौ, वाढैला तौ काऊ रौ।

सीतळा-माता घोड़ौ दीजै के म्हैं ई गधै चढ़ी फिरूं। १३९२१

शीतला-माँ घोड़ा दो कि मैं तो खुद गधे पर चढ़ी डोलती हूँ।

—अयोग्य व्यक्तियों से किसी भी बात की आशा रखना व्यर्थ है।

—जो व्यक्ति स्वयं अपनी सहायता नहीं कर सकता, वह दूसरों का भला क्या खाक कर सकता है!

सीतळा सूं भैंरूं कद माड़ौ। १३९२२

शीतला से भैंरू कमजोर नहीं।

—सीतला-माँ के गधे की सवारी है और भैरव के कुत्ते की। कोई किसी से कम नहीं।

—किन्हीं दो प्रतिद्वंद्वियों में परस्पर तन गई हो और दोनों ही एक-दूसरे से बढ़कर साबित करने की चेष्टा कर रहे हों, तब...।

सीता किसन कह्यौ कोनीं। १३९२३

सीता-कृष्ण कहा नहीं।

—सरासर गलत बात का प्रचार नहीं किया जा सकता।

—बेतुकी बात कहने में हर किसी को संकोच होता है।

सीता जैड़ी सतवंती, दूजी थोड़ी ई व्है। १३९२४

सीता जैसी सतवंती, दूसरी थोड़े ही होती है।

—सीता हो गई सो हो गई, उसके बाद वैसी सच्चरित्र महिला होना संभव नहीं है।

—जब कोई औरत अपने व्यक्तित्व एवं चरित्र की डींग मारे तब उसके जवाब में यह उक्ति कही जाती है।

सीदौ निंवाणां नीर निठै। १३९२५

सरोवर का पानी भी समाप्त हो जाता है।

—आमद बढ़े बिना बड़े-से-बड़े तालाब का पानी भी खूट जाता है तब बिना कमाई किये पुरखों की पूँजी खत्म होने में क्या देर लगती है?

—बुजुर्गों की कमाई को 'सीधे' के रूप में ग्रहण न करके उसमें अपनी कमाई जोड़कर कुछ-न-कुछ इजाफा करते रहना चाहिए।

पाठा : सीधा तौ समदर ई निठ जावै।

सीधा माथै दोय लदै। १३९२६

सीधे पर दो लदते हैं।

—सीधा जानवर हो चाहे सीधा मनुष्य, उस पर ज्यादा भार लादा जाता है।

—मनुष्य समाज में ज्यादा सीधा होना भी उचित नहीं। उसे सभी परेशान करते हैं।

मि.क.सं.६६९३

सीधा रूंख वाढ़ीजै, बांका रूंख ऊभा रैवै। १३९२७

सीधे पेड़ काटे जाते हैं, टेढ़े पेड़ खड़े रहते हैं।

—सीधे व्यक्ति से सभी बेगार करवाते हैं। छोटे-से-छोटे काम के लिए उसके पास दौड़ते हैं। उसकी राय लेते हैं। उसे काम बताने में कोई संकोच नहीं करता। पर बदमाश व्यक्ति को कोई नहीं छेड़ता। उससे दूर रहने में ही खैरियत समझते हैं।

सीधा रौ मुंहडौ कूतरा चाटै। १३९२८

सीधे का मुँह कुत्ते चाटते हैं।

—जो व्यक्ति कुत्ते को भी पुचकारता है, उससे प्यार करता है, वह भी उसका मुँह चाटता है। दुत्कारने वाले के पास से पूँछ दबाकर भाग जाता है। इसके विपरीत आतंक जताने वाले का सभी आदर करते हैं। उसके सामने हाथ जोड़े खड़े रहते हैं।

—लोगों में भय पैदा करो तो वे तुमसे प्रीत करेंगे। तुम्हारी खुशामद करेंगे। तुलसी बाबा बहुत पहिले इस सच्चाई को प्रकट कर गये कि भय बिना प्रीत नहीं।

सीधी आंगळियां घी नंह नीसरै। १३९२९

सीधी अँगुलियों से घी नही निकलता।

—सीधेपन से काम नहीं निकलता, सख्ती बरतने पर निकलता है। जिस तरह सीधी अँगुलियों से जमा हुआ घी नहीं निकलता, उलटे नाखूनों में फाँस गड़ जाती है। यदि घी निकालना है तो अँगुलियाँ टेढ़ी करनी ही होंगी।

—किसी दुरूह काम में सीधे तरीके से कामयाबी न मिले तो अनुचित उपाय सोचने में दुविधा नहीं होनी चाहिए।

पाठा : **संवी आंगळियां घी कद निकळै। सीधी आंगळियां घी कोनी कढ़ै।**

सीधी सासू री बहू, जेठांणी ज्यूं ठौर जतावै। १३९३०

सीधी सास की बहू, जिठानी ज्यों रुआब गाँठती है।

—कैसी विडंबना है कि मनुष्य समाज में सीधा होना एक गुनाह हो गया है। सीधे की कहीं नहीं चलती और बदमाश की सर्वत्र पूछ होती है। आतंक को सभी सलाम करते हैं और भलाई की उपेक्षा।

सीधौ बोल्यां हेत बधै, आडौ बोल्यां राड़। १३९३१

सीधा बोले प्रेम बढ़े, टेढ़ा बोले राड़ बढ़े।

—विनम्र व्यवहार और मीठे बोलने से शांति और प्रेम का दायरा बढ़ता है। टेढ़ा बोलने से या अपशब्द कहने से दुश्मनी का दायरा बढ़ता है। तब विवेकशील मनुष्य को स्वयं ही यह निर्णय करना चाहिए कि दूसरों के साथ उसका व्यवहार कैसा हो?

सीधौ मत खावौ। १३९३२

सीधा मत खाओ।

सीधौ = ब्राह्मणों को भोजन के निमित्त दी जाने वाली कच्ची खाद्य-सामग्री जिसमें प्रायः घी, आटा, मिर्च, नमक, दाल आदि अनिवार्य होते हैं।

—मुफ्त का माल या दान का धन नहीं खाना चाहिए। इससे निष्क्रियता बढ़ती है।

—बुजुर्गों की सीधी पूँजी को उड़ाने में कही दूर-दूर तक पुरुषार्थ नहीं है, पुरुषार्थ है अपने परिश्रम से पूँजी अर्जित करने में।

सी नै पाखरियौ। १३९३३

सर्दी का जाब्ता किया।

—पर्याप्त वस्त्र पहिनकर सर्दी का अच्छी तरह जाब्ता करना ही उचित है, वरना कुछ भी बीमारी शरीर में प्रवेश कर सकती है।

—किसी भी छोटे-बड़े कष्ट के निवारण-हेतु उचित व्यवस्था करना जरूरी है।

सी पड़्यां स्याळ आपरी दर संभाळै। १३९३४

सर्दी पड़े सियार अपनी दर सँभालते हैं।

दे.क.सं.५६६२

सीयाळा में कांईं नीपजै के हांडियां? १३९३५

सर्दी में क्या उपजता है कि हॉड़ियाँ?

—कुम्हार के लिए सर्दियों में बासन घड़ना सुविधाजनक रहता है। पके हुए बासनों का एक आवाँ तैयार होने पर कच्चे बासनों का दूसरा आवाँ जलाते हैं। जिस स्थान विशेष में वर्षा की मौसम के अलावा अनाज पैदा न हो, यदि कोई राहगीर वहाँ के आदमी से पूछे कि सर्दियों में यहाँ क्या पैदा होता है, तब वह मुस्कराते हुए जवाब देता है कि यहाँ हाँड़ियाँ पैदा होती हैं।

—हर व्यक्ति अपने अभाव को छिपाने के लिए कुछ-न-कुछ उचित बहाना खोज लेता है।

सीयाळा में तौ सी इज लागै। १३९३६

सर्दियों में तो ठंडक ही लगती है।

—मौसम का असर पड़ना तो अवश्यंभावी है।

—कष्ट छोटा हो या बड़ा, उसकी अनुभूति तो होती ही है।

सीयाळा रा सी पड़ै, ऊन्हाळै री लूवां। १३९३७
चौमासा में माछर खावै, अै दुख जासी मूवां॥

सर्दियों में ठंडक पड़े, गर्मियों में लूएँ चलें।
चौमासे में मच्छर काटें, सब दुख मिटें चिता में जले॥

—मनुष्य के जीवन में कुछ-न-कुछ दुख तो लगा ही रहता है। एक दुख मिटा और दूसरा तैयार। जीवन रहते दुखों का ताँता मिटता ही नहीं। दुखों से मुक्ति पाने का एकमात्र उपाय है—मृत्यु।

—दुखों के निवारण हेतु मनुष्य मात्र की खातिर मरने के अलावा दूसरा कोई उपाय नहीं है।

सीयाळा रौ मावठौ तौ बेजां इज व्है। १३९३८

सर्दी का मावटा तो बेजा होता है।

मावठौ = हेमंत ऋतु या माघ मास में होने वाली वर्षा।

—जब मनुष्य पर दोहरा दुख आन पड़े तो उसे सहन करना बड़ा मुश्किल है। इधर तो पूस की कड़कड़ाती सर्दी और तिस पर बरसात।

—मनुष्य इकहरे कष्ट को जस-तस बर्दाश्त कर सकता है, दुहरे कष्ट से वह पस्त हो जाता है।

सीयाळौ सभागियां। १३९३९

सर्दी भाग्यशालियों के लिए।

—जो भाग्यशाली अच्छा खाते हैं, अच्छा पहिनते हैं, जिनके पास ऐश्वर्य के सारे साधन मौजूद हैं, उनके लिए सर्दी की मौसम बड़ी मुफीद है। पर जिन गरीबों को भरपेट खाने के लिए नहीं मिलता और पहिनने के लिए फटे-पुराने चिथड़े शरीर पर झूलते हों, उनके लिए तो सर्दी नर्क की नाईं है।

—साधन-संपन्न श्रीमंत कुदरत के मिजाज को भी अपने अनुकूल बना लेते हैं।

पूरी उक्ति इस प्रकार है :

सीयाळौ सभागियां, दोरौ दोजखियांह।

आधौ हाळी-बाळदी, पूरौ पांणतियांह ॥

सीरख परवांणै पांव पसारीजै। १३९४०

रजाई के अनुसार पाँव फैलाये जाते हैं।

दे.क.सं.५३१०

सीर घाल्यां तौ सिंघ ई हार थाकै। १३९४१

साझा करने पर तो शेर भी हार-थके।

—लोक-मानस को साझे के काम से जितनी चिढ़ है, उतनी किसी बात से नहीं। चिढ़ निराधार नहीं है। उसमें पीढ़ियों का निचोड़ समाहित है। जब-तक किसी काम से ममत्व जुड़ा रहता है, वह सफल होता है। साझे के काम में ममत्व मिट जाता है, इसलिये देर-सवेर उसमें व्यवधान आते ही रहते हैं। और उसकी असफलता अपरिहार्य है। मनुष्य तो मनुष्य साझे के काम में शेर भी फँस जाय तो तोबा कर उठे।

सीर तौ घर रौ इज भलौ। १३९४२

साझा तो सिर्फ अपना ही भला।

—मनुष्य एक ऐसी वहमी बला है कि उसे अपने अलावा अपनी छाया का भी भरोसा नहीं। फिर साझे के काम में वह दूसरे व्यक्ति पर क्योंकर भरोसा कर सकता है ? वहम की आग धीरे-धीरे सुलगती रहती है। और जहाँ संशय वहाँ कलह। इसलिए साझा तो अपने मन-प्राण के अलावा किसी का भी हानिप्रद है।

सीर तौ भगवांन रौ ई खोटौ। १३९४३

साझा तो भगवान का भी बुरा।

—ईश्वर का कोई भौतिक अस्तित्व न होने पर भी मनुष्य उस पर आँखें मूँदकर आस्था रखता है। पर साझे का सवाल खड़ा हो तो वह ईश्वर के साझे को भी पसंद नहीं करेगा। क्योंकि

ईश्वर सर्वशक्तिमान है और मनुष्य निर्बल। और कब सर्वशक्तिमान निर्बल मनुष्य को पस्त करके समूचे पर ही अपना अधिकार जमा ले, कुछ पता नहीं।

सीर तौ स्यावड़ रौ ई सांतरौ। १३९४४

साझा तो सावढ़ का ही श्रेष्ठ है।

स्यावड़ = सावढ़ = कृषि की अधिष्ठात्री एक देवी जिसे किसान हल जोतते समय व बीज बोने से पहिले प्रणाम करते हैं।

—बाजरी के जिस पौधे की सिट्टी से ही दो, तीन या पाँच तक भी सिट्टियाँ निकलती हैं, उसे लोकमान्यता के अनुसार सावढ़ माता का ही प्रतिरूप माना जाता है। सिट्टी के इस गुच्छे को किसान सबसे पहिले तोड़कर कुठले में रखते हैं, फिर उसमें बाजरी भरते हैं ताकि साल भर अनाज की बरकत अच्छी रहे।

—साझे की चर्चा चलने पर किसान अमूमन यही उक्ति दोहराते हैं कि साझा तो सावढ़ का ही है और किसी का नहीं।

—साझा तो अपने भाग्य की देवी के अलावा किसी का भी नहीं रखना चाहिए।

सीर में सौळवी पांती अर लड़ाई में आध। १३९४५

साझे में सौलहवॉं हिस्सा और लड़ाई में आधा।

—जो व्यक्ति अकिंचन अधिकार पाते ही उद्दंडता में जाने-अनजाने कोई कसर न रखे।

—जिस काम में लाभ तो हो नगण्य और मगजमारी हो बहुत ज्यादा।

—किंचित् लाभ प्राप्ति की खातिर अधिक परेशानी उठानी पड़े, तब...।

सीर री तौ होळी इज व्है। १३९४६

साझे की तो होली ही होती है।

—साझे का काम अंततः नष्ट होता ही है।

—मनुष्य को चाहिए कि अपने बूते पर थोड़ा ही काम करे, पर साझे का काम काफी मुनाफे की आशा दिखने पर भी न करे। आखिर साझे के काम की परिणति विनाश में ही होती है।

सीर री मां नै सियाळ्या खावै। १३९४७

साझे की माँ को सियार खाते हैं।

दे.क.सं.१३६७५

पाठा : सीर री मां नै सियाळ ठिरड़ै।

सीर री सास, उखरड़ा ऊपरै कांण। १३९४८

साझे की सास, घूरे पर शोक।

दे.क.सं.१३८८९

सीर री हांडी चौपाळ में फूटै। १३९४९

साझे की हँड़िया चौपाल में फूटती है।

दे.क.सं.१३६७६

सीर री होळी रै लांपौ लागै। १३९५०

साझे की होली को आग लगे।

—साझे की दीवाली हो चाहे होली,उसमें अंततः आग ही लगती है।

—साझे का कोई भी काम शुभ नहीं होता।

—इस उक्ति का सार-तत्त्व यही है कि साझे के काम की बजाय भूख से मर जाना बेहतर है।

मि.क.सं.१३९४६

सीर-संस्कार है। १३९५१

सीर-संस्कार है।

—इस उक्ति को हिंदी में ढालना मेरे लिए संभव नहीं हुआ। इसलिए अर्थ समझाना भी थोड़ा कठिन है,संकेत भर किया जा सकता है। यों 'सीर' का सीधा अर्थ साझा ही होता है। पर संस्कार शब्द के साथ वह ऐसा जुड़ा है कि उससे जुदा नहीं किया जा सकता।

—उदाहरण देकर समझाना उपयुक्त रहेगा। मैं और कोमल करीब बावन साल से 'साहित्य के काम' में साथ हैं। कभी अनबन नहीं हुई। इस अभिन्न मैत्री के लिए बुजुर्ग लोग इस उक्ति के द्‌वारा ही अपने मन को व्यक्त कर सकते हैं कि पिछले जन्मों के 'सीर-संस्कार' हैं। अन्यथा ऐसी आत्मीयता संभव ही नहीं होती।

—किसी व्यक्ति का अप्रत्याशित सहयोग मिलने पर संबंधित व्यक्ति के मुँह से स्वतः निकल पड़ता है कि यह पिछले जन्म का ही सीर-संस्कार है जिसका यह मांगलिक परिणाम हुआ।

सीर, सगाई, चाकरी, मन मिळियां रा कांम। १३९५२

साझा, सगाई, चाकरी, मन मिले का काम।

—हिस्सेदारी, सगाई और नौकरी के अलावा और भी बहुत सारे काम हैं, जो मन मिलने पर ही मांगलिक होते हैं। मन न मिले तो बाप बेटे का भी साझा नहीं निभ सकता।

—जिस काम के साथ मन का जुड़ाव हो, उसमें कामयाबी के साथ प्रसन्नता भी घुली रहती है।

पूरी उक्ति इस प्रकार है :

सीर, सगाई, चाकरी, मन मिळियां रा कांम।
बिरखा तौ तद होवसी, जद राजी होसी रांम॥

सीर सीहातर सूं राखीजै।—व.२१४ १३९५३

साझा सज्जन के साथ ही रखा जाता है।

—दुष्ट का साझा तो एक ही दिन में सारे मामले को चौपट कर सकता है। भले आदमियों में साझा निभ सकता है।

—जब अपने से भी अधिक दूसरे साझेदार पर विश्वास हो तो साझे के काम में सफलता मिल सकती है।

सीरा माथै चरी। १३९५४

हलुवे पर चरी।

—आजकल तो बाजार में घी के नाम पर चाहे जितने रुपये देकर मन को खुश करलो, पर उसमें घी के अलावा बाकी सब-कुछ होता है। खैर, गाँवों में आज भी श्रेष्ठ भोजन वही माना जाता है, जब 'हलुवे पर चरी' हो। यानी घी से पीतल का बासन भरा हो और आमंत्रित व्यक्ति की थाली में उसके मना करते-करते भी कम-से-कम पाव भर घी डाल दिया जाय।

—किसी काम में दोहरे लाभ से भी अधिक अप्रत्याशित मुनाफा हो।

सीरा रै भरोसै राबड़ी को ढोळीजै नीं। १३९५५

हलुवे के भरोसे राब नहीं गिराई जाती।

—बड़ी आशा के भरोसे छोटी वस्तु की अवज्ञा नहीं की जा सकती।

—भविष्य की लालसाओं के चक्कर में वर्तमान को बिगाड़ना उचित नहीं।

सीरी अर वळै बट फाड़ू। १३९५६

साझेदार और फिर बटमार।

—यों किसी सामान्य व्यक्ति के साथ भी साझे का धंधा नहीं चलता, तिस पर साझेदार बदमाश और दुष्ट हो तब तो वह सब-कुछ चौपट कर देगा।

—कोई परिजन भी विश्वास के योग्य न हो तो उससे बचकर रहना चाहिए।

—किसी के भी साथ साझे का काम बहुत सोच-विचारकर करना चाहिए।

सीरी ऊपरला सीरी। १३९५७

हिस्सेदार के ऊपर हिस्सेदार।

—बड़ी मेहनत से अर्जित धन को चोर सहज ही उड़ा ले जाते हैं। डाकू मार-पीटकर सारा धन हड़प लेते हैं। और ठग धोखा करके माल हथिया लेते हैं। हिस्सेदार तो विनम्रता-पूर्वक अपना हक माँगता है, पर ये दुष्ट तो बिना हिस्सेदारी के भी माल झपट लेते हैं।

—बदमाश नेता और दुष्टों का हर किसी की संपत्ति में हिस्सा होता है। क्योंकि ये हिस्सेदारों के भी हिस्सेदार हैं।

सीरी रौ टाबर तावड़ै ई बळियौ सही। १३९५८

साझेदार का बच्चा धूप में जला तो सही।

—धंधे में साझेदारी है तो कष्ट में भी बराबर हिस्सा बँटना चाहिए। साझेदार का बच्चा धूप में जला ही सही। कुछ बिगड़ भी जाएगा तो बुरा नहीं। साझेदार को जाने-अजाने पनपने नहीं देना चाहिए।

—साझेदार के प्रति डाह होना स्वाभाविक है।

पाठा : सीरी रौ टाबर तावड़ै बळियोड़ौ ई चोखौ। सीरी रौ टींगर तावड़ै तौ बळसी।

सीरोळी खेती, सींठां हेती। १३९५९

साझे की खेती, बाल बराबर।

—साझे के काम की कोई तिनके जितनी भी परवाह नहीं करता।

—साझे के काम में उदासीनता स्वाभाविक है। लेकिन उदासीनता से कोई काम सफल नहीं होता। इसलिए साझे के धंधे में बर्बादी अवश्यंभावी है।

सीरौ ई वादी करै, देख दई रौ खेल। १३९६०

हलुवा भी बादी करे, देख दैव का खेल।

—गरीब पैसों की तंगी के कारण अच्छी रोटी नहीं खा सकता। यह उसकी मजबूरी है। और इसके विपरीत धनी लोग बदहजमी के कारण पौष्टिक भोजन नहीं कर सकते। घी-दूध उन्हें पचता नहीं। हलुवा बादी करता है। भाग्य अथवा दैव जाने क्या-क्या खेल खेलता है? उसके खेलों की माया अपरंपार है।

—सामाजिक और आर्थिक वैषम्य कुछ भी हो भाग्य किसी-न-किसी रूप में अमीरों को गरीबों के समतुल्य कर देता है। जब उन्हें पौष्टिक खाना न पचे तो वे धन को चाटने से रहे।

पूरा दोहा इस प्रकार है :

लूखै धांन न धापता, सपनै दिखतौ तेल।
सीरौ ई वादी करै, देख दई रौ खेल॥

सीरौ खातां दांत घिसै तौ घिसवा दौ। १३९६१
मिसरी खातां दांत पड़ै तौ पड़वा दौ॥

हलुवा खाते दाँत घिसें तो घिसने दो।
मिश्री खाते दाँत पड़ें तो पड़ने दो॥

—लाभ और सुख प्राप्त करने में व्यवधान तो आते ही हैं, उनकी परवाह न करके अपने उद्देश्य में वैसे ही जुटे रहना चाहिए।

—अपनी स्वार्थ-सिद्धि के निमित्त कड़वे अनुभव हों तो उन्हें अनदेखा करना ही उचित है।

—आनंद प्राप्ति के लिए कुछ खोना भी पड़े तो कोई हर्ज नहीं।

मि.क.सं.११३४६

पाठा : सीरौ खातां दांत घिसै तौ घिसवा दौ, स्वारथ सधतां लोग हंसै तौ हंसवा दौ।

सीरौ तौ लूखौ ई खाय लेस्यां। १३९६२

हलुवा तो रूखा भी खा लेंगे।

—यदि ऊपर से डालने के लिए घी न हो तो हलुवा रूखा भी चलेगा,हम चटौरे नहीं हैं। जैसी भी परिस्थिति हो मिल-जुलकर सलटा लेते हैं।

—व्यर्थ का शिष्टाचार दिखाने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति उदारता दिखाकर भी अपनी स्वार्थ-सिद्धि में पीछे न रहे।

पाठा : **सीरौ तौ कोरौ ई खाय लेस्यां।**

सीरौ देख्यां राबड़ी सै कोई भूलै। १३९६३

हलुवा देखने पर राबड़ी को सब भूल जाते हैं।

—अच्छी चीज मिले तो हलकी वस्तु की कोई परवाह नहीं करता।

—सुंदर,स्वादिष्ट और उत्तम वस्तु के प्रति सबकी लालसा रहती है।

—यदि चुनने का मौका मिले तो तुच्छ चीज की बजाय सभी अच्छी वस्तु ही चुनते हैं।

सीरौ बिगड़्यौ तौ ई राब सूं चोखौ। १३९६४

हलुवा बिगड़ा तब भी राब से अच्छा।

राब = बाजरी,ज्वार या मकई आदि के आटे को छाछ में पकाकर बनाया जाने वाला एक पेय पदार्थ,जो सामान्यतया गरीबों की भूख का सहारा है।

—चटौरे व्यक्ति अकसर इस उक्ति का मौका मिलने पर प्रयोग करते हैं।

—इस उक्ति का छिपा मर्म यह भी है कि पराई औरत असुंदर भी हो तो घरवाली पत्नी से बेहतर है।

मि.क.सं.१०९४१

सीरौ, लाडू बीबी खाय, ढूंढ कुटावण बांदी जाय। १३९६५

हलुवा लड्डू बीवी खाय, अंग टुकवाने बाँदी जाय।

—जो व्यक्ति मौज की वेला अपनों को साथ रखे और मौत की वेला परायों को फँसाये।

—जब कोई मालिक अपने सेवकों के साथ बहुत भेदभाव रखता हो,तो भुक्तभोगियों के मन में असंतोष होना स्वाभाविक है।

—दुर्दिन के साथियों को भुलाकर जो व्यक्ति सुख के दिनों में उन्हें भूल जाय और अपनी नँई मित्र-मंडली बना ले तब पुराने मित्र विवश होकर इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

सी लाग्यां ईं सीरख याद आवै। १३९६६

ठड लगने पर रजाई याद आती है।

—जो व्यक्ति कतई दूरदर्शी न हो।

—जरूरत पड़ने पर ही जिस व्यक्ति को संबंधित चीज की याद आये उस पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति योजनाबद्ध तरीके से काम करना न जाने।

सीळी व्हौ, सपूती व्हौ, सात बेटां री मायड़ व्हौ—के रैवण दै थारी आसीस, नौ तौ पैला ई है। १३९६७

शीलवती हो, सपूती हो, सात बेटो की मॉ हो कि रहने दे तेरी आसीस, नौ तो पहिले ही है।

—आशीर्वाद की व्यर्थता पर कटाक्ष।

—अभावग्रस्त व्यक्तियों को ही आशीर्वाद की चाह होती है, साधन-सपन्न व्यक्ति आशीर्वाद की परवाह नहीं करते। वे सोचते हैं कि जो कुछ भी हुआ है, उनके पुरुषार्थ और भाग्य से ही हुआ है।

सीसा रै गारै। १३९६८

सीसे की गार के उनमान।

—कोई इमारत पूरी देखरेख में सुदृढ बनी हो तब मेमार मालिक को पूर्णतया आश्वस्त करने के लिए इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

—जो काम पूर्णतया कौशलपूर्वक हुआ हो, उसके लिए।

सु-सू

सुआ ज्यूं पढ़ावै तौ गधा ज्यूं रेंकतौ जावै। १३९६९

तोते ज्यों पढ़ाये तो गधे ज्यों रेंकता जाये।

—रटने मे न विद्या आती है और न बुद्धि बढ़ती है। उपमा का सहारा लिया जाय तो कहना पड़ेगा कि तोता रटंत विद्या, गधे के रेंकने जैसी ही होती है।

—विद्या और ज्ञान तो आत्मसात होने पर ही सार्थक होते हैं। संस्कारों का हिस्सा बनते हैं।

—विद्या जब तक स्मृति का ही अंश बनी रहती है, वह निरर्थक है। वह चरितार्थ तभी होती है, जब वह व्यक्तित्व का आधार बने।

सुख जांणनै सासरै गई, नेव झाल ऊभी रही। १३९७०

सुख जानकर ससुराल गई, नेव पकड़कर खड़ी रही।

नेव = ढलुवाँ छप्पर या मकान में दीवार पर से बाहर की ओर रहने वाला वह छज्जेनुमा भाग जहाँ से वर्षा का पानी गिरता है। अरवाती, औलती।

दे.क.सं.१३५३५

सुख तौ घड़ी रौ ई सांतरौ। १३९७१

सुख तो घड़ी का भी अच्छा।

—भोगवादियों का दर्शन कि सुख तो घड़ी भर का भी बेहतर है। जब कभी भी आराम करने या सुख प्राप्ति का अवसर मिले चूकना नहीं चाहिए। घड़ी भर का सुख बाद में दुखदाई भी साबित हो जाय तो कोई हर्ज नहीं। सुख के क्षण भोग लिये सो अपने हैं।

—मनुष्य जीवन का लक्ष्य ही सुख-प्राप्ति का है, जहाँ से भी हाथ लगने की आशा हो झपट लेना चाहिए।

सुख तौ सीढ़ी रौ ई सिरै। १३९७२

सुख तो अर्थी का भी अच्छा है।

—मुर्दे को सुख-दुख की कोई अनुभूति नहीं होती, वह सब अनुभूतियों से परे है, फिर भी अर्थी तनिक आरामदेह हो तो अच्छा ही है। सुख तो सपने का भी उत्तम है।

—सुख का एक क्षण भी हो तो उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। मनुष्य जीवन की सार्थकता ही सुख के क्षणों पर निर्भर करती है।

सुख-दुख तौ आवता ई रैवै। १३९७३

सुख-दुख तो आते ही रहते है।

—इसलिए उन्हें तटस्थ भाव से ही ग्रहण करना चाहिए। सुख आये तो प्रमुदित होने की आवश्यकता नहीं और दुख आये तो चिंतित होने की जरूरत नहीं। ये धूप-छाँह की नाईं अपना रुख बदलते ही रहते हैं।

सुख-दुख तौ मन रौ। १३९७४

सुख-दुख तो मन का।

—सुख या दुख का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। वह तो प्रत्येक व्यक्ति की मनोदशा या धारणा पर निर्भर करता है। सरदार भगतसिंह को दासता में जीने की अपेक्षा आजादी के लिए मरने में ज्यादा सुख प्रतीत हुआ। और इसके विपरीत उसके मुखबिर को येन-केन प्रकारेण रुपये हथियाने में स्वतंत्रता से अधिक सुख नजर आया तो उसने अंग्रेजों से मुखबरी की एवज में धन प्राप्त किया। कोई व्यक्ति किसी भी शुद्ध वस्तु में मिलावट करके अधिक-से-अधिक मुनाफे में ही सुख की झलक देखता है और कोई ऐसी कमाई को ठोकर मारकर अध-भूखे पेट में भी सुख का अनुभव कर लेता है। मन माने सो सुख और मन माने सो दुख।

सुख दुख नी जोड़ी है।—भी. ७५१ १३९७५

सुख-दुख की जोड़ी है।

—जोड़ी है तो अधिक समय तक एक-दूसरे से जुदा नहीं रह सकती। इसलिए दोनों को समभाव रूप में ग्रहण करना चाहिए।

—सुख-दुख तो जीवन की गाड़ी के दो पहिए हैं, एक के अभाव में वह चल नहीं सकती।

—मनुष्य के जीवन का अर्थ यही है कि सुख के बाद दुख और दुख के बाद सुख। इसके बिना जीवन अपूर्ण है।

पाठा : सुख-दुख रौ जोड़ौ।

सुख नो तो अेक भलो, दुख ना बे खोटा।–भी.७५२ १३९७६

सुख का तो एक ही भला, दुख के दो बुरे।

—जिस वस्तु से सुख मिले वह तो एक भी काफी है और जिन वस्तुओं को प्राप्त करने में दुख उठाना पड़े वे दस भी हों तो व्यर्थ है। सुख या दुख कोई वस्तुओं की गिनती या मात्रा से जुड़ा नहीं रहता। वह तो अपने भीतर ही रहता है।

सुख में भीडू अनेक, दुख में नीं कोई अेक। १३९७७

सुख में साथी अनेक, दुख में न कोई एक।

—सुख के दिन आते हैं तो साथियों का जमघट लग जाता है। और दुख के दिनों में जब साथियों की सख्त जरूरत होती है, तब एक भी नजर नहीं आता।

—साथी वही जो दुख में काम आये।

सुख रा सै सीरी। १३९७८

सुख के सब संगाती।

—सुख में संगातियों की भीड़ लग जाती है मानो ऐसे शुभ-चिंतक खोजे भी नहीं मिलेंगे। पर दुख की वेला सभी धीरे-धीरे खिसक जाते हैं।

—विपत्ति की वेला कोई पास तक नहीं फटकता। सभी मुँह मोड़ लेते हैं।

सुख री तौ आधी भली, दुख री भली न अेक। १३९७९

सुख की तो आधी भली, दुख की भली न एक।

—सुख-पूर्वक शांति से मिले तो आधी रोटी भी पर्याप्त है। दुख उठाकर सौ गुनी चीज भी प्राप्त हो तो वह कम है, अपर्याप्त है।

—मनुष्य का वास्तविक लक्ष्य तो सुख-शांति में है, वस्तुओं की प्राप्ति में नहीं। चाहे जितना कूड़ा इकट्ठा करलो, कुछ भी साथ नहीं चलता।

मि.क.सं. १३९७६

सुख री तौ सूखी रोटी ई सांतरी। १३९८०

सुख की तो सूखी रोटी भी अच्छी।

—केवल गरीब ही दुखी नहीं होता, अमीर भी दुखी होते हैं। और जिस अमीरी को पाने में आत्मा संतप्त हुई हो, वह अमीरी किस काम की ? सुख से सूखी रोटी मिल जाय तो वह दुख की चुपड़ी से बेहतर है।

सुख री नींद कुण नीं सूवणी चावै ? १३९८१

सुख की नीद कौन नही सोना चाहता ?

—सुख की नींद तो सभी सोना चाहते हैं, पर वह मिलती कहाँ है ? स्वयं मनुष्य ने बड़ा संघर्ष करके अपनी नींद हराम की है और भविष्य में भी करता रहेगा। वह भूल गया कि सुख वस्तुओं में नहीं मन के भीतर अवस्थित है। वह भूल गया कि साथ कुछ भी नही चलेगा, फिर भी रात-दिन प्राणों का खतरा झेलकर भी वह संचय, संचय और अधिक संचय में जुटा है, इसलिए लाख चाहने पर भी वह सुख की नींद सो नहीं पाता।

सुख री राब सखरी, दुख रौ सीरौ ई खोटौ। १३९८२

सुख की राब अच्छी, दुख का हलुवा भी बुरा।

—यदि कुछ भी प्रपंच न करना पड़े, मिलावट नहीं करनी पड़े, झूठ न बोलना पड़े, धोखा-धड़ी न करनी पड़े तो राब खाकर भी सुखी अनुभव किया जा सकता है। शांति-पूर्वक जिया जा सकता है। और यदि हलुवा प्राप्त करने के लिए दुख उठाना पड़े, आत्मा को मारना पड़े, छल-कपट करना पड़े और प्राणों की जोखिम लेनी पड़े तो वह हलुवा बेकार है। उससे पेट तो भरा जा सकता है, पर आत्मा की क्षुधा शांत नहीं होती।

सुख री सोय सगळा करै। १३९८३

सुख की तलाश सभी करते हैं।

—सुख की खोज में तो सारा संसार भाग रहा है, पर वह मिलता किसी को भी नहीं । क्योंकि यह खोज ही गलत है । सुख भागने से नहीं मिलता । एक ठौर बैठकर सोचने से मिलता है । मनन करने से मिलता है । पर कोई भी मनन करना चाहता नहीं, सभी भागना चाहते हैं । सुख की मृगतृष्णा के पीछे । और मृगतृष्णा से आज दिन तक किसी की प्यास नहीं बुझी । प्यास तो पानी से बुझती है । लेकिन मनुष्य तो पानी को भूलकर मृगतृष्णा के पीछे भाग रहा है । भागता ही रहेगा । और सुख की तलाश जारी है और जारी रहेगी ।

—गरीब भी सुख की चाह करे तो वह गलत नहीं है ।

—सुख की तलाश फकत अमीरों की ही इजारेदारी नहीं है ।

सुख रै लारै दुख १३९८४

सुख के पीछे दुख ।

—सुखी मनुष्य यह सोचने की भूल न करें कि वे हमेशा इसी तरह सुखी रहेंगे । दुख की छाया भी उनके पास होकर नहीं फटकेगी । पर उन्हें पता नहीं कि सुख के पीछे दुख भी दबे पाँव चला आ रहा है । और किसी भी क्षण उनके सामने इस तरह खड़ा हो जाएगा कि वे सकते में आ जाएँगे ।

सुख सूं पींजण पींजती, कांईं कुमतड़ी आई । १३९८५
पींजण बेच बंदूकड़ी लीन्ही, खटकै गोळी खाई ।।

सुख से पिंजन पींजती, कैसी कुमति आई ।
पिंजन बेच बंदूक खरीदी, सीधी गोली खाई ।।

—इसीलिए तो कवि के सबद कभी झूठे नहीं होते कि भाग्य अथवा ईश्वर किसी को भी लाठी से नहीं मारता, वह तो केवल कुमति देकर छूमंतर हो जाता है । वह स्वयं अपने ही हाथों मारा जाता है । 'दई न मारै डांग सूं, दई कुमत्तां देय ।'

सुख सूं रोटी खावतां कैड़ी कुमत आई ? १३९८६

सुख से रोटी खाते कैसी कुमति आई ?

—बड़े मजे से सुबह-शाम रोटी खाते थे । सुख की नींद सोते थे । सुख की नींद उठते थे । घर में धुनकी गुंजार करती थी । संसार के सारे सुख उस गुंजार में समाहित थे कि अचानक

चौक में निन्यानबे की थैली क्या पड़ी, मानो दुनिया भर के दुख आकाश से टपक पड़े हैं। ऐसी कुमति सूझी कि निन्यानबे के पूरे सौ रुपये करने हैं। फिर तो हजार, दस हजार की लालसा बढ़ती ही गई। आँखों की नींद उड़ गई। मन का चैन उड़ गया।

दे.क.सं.७५०८

सुख सूं सूवै कूंभार, चोर न माटी ले जाय। १३९८७

सुख से सोये कुम्हार, चोर न माटी ले जायँ।

—कुम्हार टाँग-पर-टाँग धरकर बड़े ठाट से सुख की नींद सोता है, फकत इसीलिए कि उसकी माटी को चोरने कोई नहीं आएगा। न उसे चोरी का डर और न डकैती का। माटी गोंदकर बासन बनाता है, जिनसे दुनिया ठंडा पानी पीकर अपनी प्यास बुझाती है। दूध ठंडा करती है। दही जमाती है। मक्खन निकालती है। वह स्वयं सुखी है और अपनी मेहनत से संसार को सुखी बनाता है। कैसा उम्दा धंधा हाथ लगा है।

—और उधर धन का स्वामी, चोर और डकैतों के भय से बार-बार झिझक उठता है। न आँखों में नींद और न मन में चैन। सुख तो धन के आस-पास भी नहीं फटकता।

पाठा: सुख सूं सूवै कूंभार, चोर न गधिया ले जाय।

सुख हारां चावे दुख को नी चावे।–भी.३५१ १३९८८

सुख सभी चाहते हैं, दुख कोई नहीं चाहता।

—इसीलिए तो सब दुखी हैं कि सभी सुख चाहते हैं, दुख कोई नहीं चाहता। दुख से बचने के कारण ही लोग सुखी नहीं हो पाते। वे तभी सुखी होंगे जब वे सुख-दुख को एक ही मानेंगे, दो नहीं। यह द्‌वैत ही सब दुखों की जड़ है। अद्‌वैत का बोध होते ही दुनिया में एक भी दुखी नजर नहीं आएगा।

सुखी परेवा जगत में, अेकै तुंहीं विहंग। १३९८९

सुखी कबूतर जगत में, एक तू ही विहंग।

—इस प्राणी जगत में कबूतर के अलावा सभी दुखी हैं। सुखी है तो मात्र एक कबूतर, जिसकी पाँखें ही उसका वस्त्र है। पेट भरने के ठौर-ठौर कंकर बिखरे हैं। जिधर भी चोंच घुमाये चुग्गा तैयार। और उसके साथ ही छाया की भाँति उसकी जीवन-संगिनी कबूतरी

गुटरगूँ-गुटरगूँ के मीठे गीत सुना रही है। कभी विछोह नहीं होता। सुखी होने के अलावा और क्या चाहिए ? कपड़ा भोजन और स्त्री, सभी तो आँखों के पास मौजूद है।

पूरा दोहा :

पटु पांखें, भखु कांकरी, सदा परेई संग।
सुखी परेवा जगत में, अेकै तुंहीं विहंग॥

सुगन गांठड़ी बांधौ। १३९९०

शकुन गठरिया बाँधो।

—कोई भी यात्रा शुभ-शकुन लेकर ही करनी चाहिए, जिससे लाभ होने की संभावना बनी रहती है।

—मनुष्य के जीवन में शकुन का भी वही दखल है, जो भाग्य का है। शकुन अच्छे हों तभी किसी काम की शुरुआत करनी चाहिए, अन्यथा नहीं।

सुगन भला के स्यांम ? १३९९१

शकुन भले कि श्याम ?

—महाभारत की इस घटना से अधिकांश लोग परिचित हैं कि जब श्रीकृष्ण सारथी के रूप में अर्जुन का रथ हाँक रहे थे, तब संयोग से हिरणों की टोली सामने आ गई। खराब शकुन के कारण अर्जुन ने श्रीकृष्ण से रथ रोकने की प्रार्थना की। श्रीकृष्ण ने उसकी प्रार्थना सुनकर मुस्कराते हुए रथ और तेज किया। अर्थ स्पष्ट था कि जब भगवान स्वयं रथ हाँक रहे हैं, तब शकुन-अपशकुनों की क्या बिसात ? अर्जुन मन-ही-मन लज्जित हुआ कि वह श्याम की अपेक्षा शकुनों को बड़ा समझ रहा था।

पाठा : सुगन बड़ा के स्यांम।

सुण अै माता बावड़ी, म्हारी भैंस गमगी बापड़ी। १३९९२
म्हे हां खाती बांडा, वा ई कवाड़ी अर वै ई डांडा॥

सुन ऐ माता बावड़ी, मेरी भैंस खो गई बापड़ी।
हम हैं बढ़ई बंडे, वही कुल्हाड़ी और वे ही डंडे॥

—लातों के देव बातों से नहीं मानते।

—जो व्यक्ति सीधी तरह से नहीं माने तो उसके लिए कई पेचीदे तरीके हैं, जिन्हें आजमाते ही वह सीधा हो जाता है।

सुण रे भींत-भाटका, अेक थाळी नै बीजौ बाटका।–व.२०५ १३९९३

सुन रे भीत-पत्थर, एक थाली और दूसरा कटोरा।

—जिस अभावग्रस्त व्यक्ति के घर में थाली और कटोरी के अलावा कुछ न हो। और वह अपनी दयनीय अवस्था को किसी से छिपाना भी नहीं चाहता। कोई चोर भी पास हो तो साफ सुनले कि उसे चोरों का कतई डर नहीं है। कुछ हो तो डरे?

सुण रे लिखमा यार, खाड खिणै सो कूवौ त्यार। १३९९४

सुन रे लिखमा यार, खड्ड खने तो कुआँ तैयार।

दे.क.सं.२८७०

सुण रे भाई सूजा, जोधांणै राज करै जका जोधा ई दूजा। १३९९५

सुन रे भाई सूजा, जोधपुर राज करें वे जोधा ही दूजा।

ऐतिहासिक प्रसंग: किसी गाँव के एक ठाकुर का नाम सुजान सिह था, जोधपुर के जोधा राजाओं की और उसकी जाति एक ही थी। इस बात का उसे बड़ा घमंड था कि वह भी जोधा और मारवाड़ के राजा भी जोधा। राव जोधा के वंशज। वह अपने गर्व में फूला किसी से सीधे मुँह बात भी नहीं करता था। तत्काल राजा को उसके घमंड का पता चला तो उसे माकूल सजा मिली। राजा की बराबरी करने का फल उसे चखना पड़ा।

—कोई व्यक्ति अपने ही मुँह से अपने गुणों का बखान करे, तब उसे लज्जित करने के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

—लोग बखानें तब किसी व्यक्ति की महत्ता है, खुद के बखानने से कुछ नहीं होता।

सुणि रे ढोल, बहू रा बोल।–व.२०४ १३९९६

सुन रे ढोल, बहू के बोल।

संदर्भ-कथा : एक युवक की स्त्री बदचलन थी। जब प्यास लगने पर दूसरों के यहाँ पानी पिया जा सकता है तो वासना जगने पर दूसरे पुरुषों का सहारा क्यों नहीं लिया जा सकता? कुछ ऐसी ही विचित्र समझ थी उस औरत की। युवक के मित्र उसे पत्नी की शिकायत करते

तो वह ध्यान देकर सुनता ही नहीं। सुंदर पत्नी ने उसे पूरी तरह अपने वश में कर रखा था। लेकिन संयोग के आगे उस स्त्री का भी वश नहीं चला। एक बार वह काफी बीमार हो गई। पास ही के गॉव का एक वैद्य उसका इलाज करने आया। पर खास फर्क नहीं पड़ा।

जब मित्रगण शिकायत करते-करते हार थके तब उन्होंने लड़के की माँ के कान भरे। पर उसने माँ की शिकायतों को भी सुनी-अनसुनी कर दीं। तब माँ ने वैद्य को एक तरकीब सुझाई। वैद्य जाति का ब्राह्मण था। पंडिताई का काम भी करता था। बुढ़िया ने पाँच रुपये दिये तो वह उसकी बात मान गया। रोगिणी के सामने एक काला पर्दा ताना गया। एक तरफ रोगिणी एवं वैद्य। दूसरी ओर बुढ़िया और एक ढोल, जिसमें उसका बेटा छिपा था। वैद्य ने रोगिणी से कहा, 'तुम्हारी अंतिम घड़ी आ गई है, अब लोक-मर्यादा छोड़कर अपने गुनाह कबूल करलो तो तुम्हारे सारे गुनाह माफ हो सकते हैं। वरना तुम घोर नर्क में सड़ोगी।' रोगिणी सिहर उठी। वैद्य ने अधिक आग्रह किया तो वह अपने अपराध स्वीकार करने के लिए मान गई। उसने सबसे पहिला नाम सुनाया लड़के के अभिन्न मित्र का। बुढ़िया ने ढोल बजाते कहा, 'सुन रे ढोल, बहू के बोल।' इस तरह बुढ़िया हर नाम पर ढोल बजाती और वे ही शब्द दोहराती। इस तरह उस औरत ने लड़के के उन सभी मित्रों के नाम सुनाये, जो हमेशा उससे शिकायत करते थे। लेकिन बहू ने अंतिम नाम जब अपने श्वसुर का लिया तो बुढ़िया के हाथ का डंडा छूट गया। उससे कुछ भी बोला नहीं गया। लड़के की भी बड़ी बुरी हालत हुई। बहू की हड्डी-पसलियाँ तोड़ने की मन में रह गई।

—जब अपने पर गुजरती है तो सारी हेकड़ी खिसक जाती है।

पाठा : सुण रै फूट्या ढोल, बहू रा मीठा बोल।

सुणी-सुणाई बातां सूं तौ माथा ई फूटै। १३९९७

सुनी-सुनाइ बातो से तो सिर ही फूटते हैं।

—अफवाहों पर विश्वास करने वालों के तो परस्पर सिर ही फूटते हैं।

—आँखों देखी सच्चाई के अलावा, सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

सुणै नीं कोई सांभळै, कैड़ी आंन अड़ीह। १३९९८
कुण किणनै समझाय, कूवै ई भांग पड़ीह॥

सुने न कोई विचारे, कैसी बात अड़ी।
कौन किसे समझाय, कुएँ ही भाँग पड़ी॥

दे.क.सं.२३९२

सुणौ सब री, करौ मन री। १३९९९

सुनो सब की, करो मन की।

—दूसरों की राय सुनने में तो कुछ जोर पड़ता ही नहीं है और न पैसा ही खर्च होता है,इसलिए धैर्य-पूर्वक सबकी बातें सुननी चाहिएँ,पर करना वही जो अपना मन कहे।

—काम तो अपनी इच्छा के अनुसार ही करना चाहिए पर अपने हितैषियों की राय लेने में तो हर्ज ही क्या है?

पाठा : सुणौ सगळां री, करौ मन जांणी।

सुथारण वाळौ दीवौ कांईं करै? १४०००

बढ़इन वाला दीया क्या कर रही है?

दे.क.सं.२८८६

पाठा : सुथार वाळौ दीयौ।

सुथार नै देख'र वेवता री लाठी लांबी व्है जाय। १४००१

बढ़ई को देखकर राहगीर की लाठी लंबी हो जाती है।

दे.क.सं.२८८२

सुथार मरै जणा दोय साथै मरै। १४००२

बढ़ई मरें तब दो साथ मरते हैं।

दे.क.सं.२८८३

सुथार रसावळ व्है तौ बांका ई पाधरा करै। १४००३

बढ़ई चतुर हो तो टेढ़े भी सीधे कर देता है।

दे.क.सं.२८८०

सुथार रा मन में बांवळिया बसै। १४००४

बढ़ई के मन में बबूल ही बसते हैं।

दे.क.सं.२८८४

सुथार री बेटी सासरै जावै, गतराड़ौ गाती मारै के म्हारै मूवां जासी। १४००५

बढ़ई की बेटी ससुराल जाये और हिंजड़ा गाती मारे कि मेरे मरने पर जाएगी।

दे.क.सं.२८८५

सुद आई नै वद गीवी। १४००६

शुक्ल-पक्ष आया और कृष्ण-पक्ष गया।

—अँधेरी रातें गईं और चाँदनी रातें आईं। दुख का अँधियारा छँटा और सुख की चाँदनी खिली। सभी दिन एक से नहीं रहते। इसलिए न सुख स्थायी रहता है और न दुख स्थायी रहता है।

सुदामा वाळा चावळ। १४००७

सुदामा वाले चावल।

— महाभारत के आख्यान से निःसृत यह उक्ति आज भी प्रचलित है—क्या गाँवों में और क्या शहरों में? कहाँ द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण और कहाँ सुदामा? उनका बाल्य सखा। तब भी गरीब था। और बरसों बाद बामनी के आग्रह से द्वारिका के भव्य महल में आया, तब भी वैसा ही गरीब रहा। मित्र के लिए भेंट-स्वरूप जो चावल लाया, वे भी काँपते हाथों से गिर पड़े। श्रीकृष्ण भगवान आज भी गरीब मित्र के उन चावलों का ऋण उतार नहीं सके हैं।

—कोई किसी को कैसा भी बहुमूल्य उपहार देते समय—उसे सुदामा वाले चावल ही बताकर कृतार्थ होता है।

सुधरी नै कांई सरावणौ, बिगड़ी नै कांई बिसरावणौ। १४००८

सुधरी को क्या सराहना, बिगड़ी को क्या बिसराना।

—न सुधरे हुए काम की सराहना में कुछ भी सार है और न बिगड़े हुए काम की बुराई करने में कोई तुक है।

—किसी भी काम की निंदा स्तुति करने की बजाय सम-भाव दृष्टि रखना ही संगत है।

सुधरै तौ नाऊ रा, बिगड़ै तौ काहू रा। १४००९

सुधरे तो नाऊ का, बिगड़े तो काहू का।

—किसी के बाल काटने में, दाढ़ी बनाने में कष्ट तो यजमान को ही होता है। और धीरे-धीरे काम सीखने के दौरान होशियार तो नाई के बच्चे ही होते हैं।

—दूसरों की कीमत पर काम सीखने वालों पर व्यंग्य।

दे.क.सं.१३९२०

सुधर्‍यौ काज बिगड़्यौ नाहीं, घी ढुळ्यौ तौ ई मूंगां मांही। १४०१०

सुधरा काज बिगड़ा नहीं, घी गिरा तो भी मूँगों में।

दे.क.सं.४१११

सुनार चिपड़ी चेपण रौ बेली व्है। १४०११

सुनार चिपड़ी चिपकाने में माहिर होते हैं।

—इसीलिए कि चिपड़ी की चतुराई के कारण सोने के वजन का सही पता नहीं चलता। कहाँ चिपड़ी का भाव और कहाँ सोने का भाव। किंचित् फर्क से भी काफी नफे की गुंजाइश निकल आती है।

—जब एक पक्ष की होशियारी से दूसरे पक्ष को हानि पहुँचे, तब...।

सुनार तौ आपरी मां रा ई हांचळ वाढ़ लेवै। १४०१२

सुनार तो अपनी मॉ के भी स्तन काट लेता है।

—जो व्यक्ति अपने स्वार्थ की खातिर माँ के ममतामय पवित्र रिश्ते को भी तिलांजलि दे दे।

—स्वार्थ में अंधे व्यक्ति पर कटाक्ष।

सुनार तौ मां री हांसळी सूं ई काढ़लै। १४०१३

सुनार तो मॉ की हँसुली से भी निकाल लेता है।

दे.क.सं.१४०१२

सुनार तौ सगी मां सूं ई नीं चूकै। १४०१४

सुनार तो सगी माँ से भी नहीं चूकता।

—जिन व्यक्तियों के जेहन में स्वार्थ ही सर्वोपरि रिश्ता हो, तब उनके लिए माँ का रिश्ता भी कुछ माने नहीं रखता।

—स्वार्थी मनुष्य किसी का भी सगा नहीं होता।

सुनार बिगड़ै तौ स्वामी व्है। १४०१५

सुनार बिगड़े तो स्वामी हो जाता हैं।

—प्रतिष्ठा मिटने पर कमाई के सारे रास्ते बंद हो जाते हैं। सिर्फ एक ही रास्ता खुला रहता है और वह है साधु बनकर अलख जगाने का रास्ता।

—सुनार के घाटे की अन्य किसी भी काम से पूर्ति नहीं हो सकती, तब उसके लिए साधु बनने के सिवाय दूसरा कोई उपाय शेष नहीं रहता। ताकि वह और भी ज्यादा ठगाई कर सके।

—धूर्त व्यक्ति पकड़े जाने पर संत का बाना धारण कर लेता है, ताकि बेरोकटोक खुले आम ठगाई की छूट मिल जाय।

सुनार लड़ाई। १४०१६

सुनार लड़ाई।

—जब दो चालाक व्यक्ति परस्पर दिखावटी रूप से लोगों के सामने अपनी दुश्मनी जाहिर करें और भीतर-ही-भीतर दोनों एक हों।

—अपना मतलब बनता हो तो दिखावटी लड़ाई बताने में भी क्या हर्ज है ?

सुपारस सगळै चालै। १४०१७

सिफारिश सर्वत्र चलती है।

—सिफारिश तो ईश्वर के दरबार में भी चलती है तब मनुष्य बेचारे की औकात ही क्या ? न बड़ा अधिकारी इससे बचा है और न छोटा अधिकारी।

—सिफारिश की हुंडी सर्वत्र चलती है।

सुपारस सै कांम सुधारै। १४०१८

सिफारिश से सब काम सुधरते हैं।

—ऐसा कोई काम नहीं जो सिफारिश से संभव न हो। आजादी की एक यह भी बड़ी उपलब्धि है।

—जहाँ रिश्वत से काम न हो, वहाँ सिफारिश से हो जाता है।

सुपारी लेय, सराफ बण बैठौ। १४०१९

सुपारी लेकर सराफ बन बैठा।

—किंचित् हिकमत से बड़ा काम करने का दुस्साहस करना।

—मामूली योग्यता वाला व्यक्ति जब तिकड़म से बड़ा पद हथियाले, तब...।

—छोटी बात का बड़ा दिखावा करना।

सुभराज कैवतां गुजरात आवै अर बाई कैवतां रांड। १४०२०

शुभराज कहते गुजरात आये और बाई कहते राँड़।

—जिस व्यक्ति के मस्तिष्क और जीभ में सामंजस्य न हो, वह कहना तो कुछ चाहे और निकल कुछ जाय।

—जिस व्यक्ति का वाणी पर नियंत्रण कुछ ढीला पड़ गया हो।

सुरग पूग्योड़ा कद रांमा-सांमां करै? १४०२१

स्वर्ग पहुँचे हुए कब राम-राम करते हैं?

—बड़े व्यक्ति जब अपने दर्प में अभिवादन का जवाब न दें, तब...।

—पहुँचे हुए संत महात्मा जब भक्तों की अवहेलना करने लगें, तब...।

—दिवंगत व्यक्तियों से, लोक-व्यवहार की आशा रखना व्यर्थ है।

सुरग रौ बारणौ कुण देख्यौ? १४०२२

स्वर्ग का दरवाजा किसने देखा?

—जीवित मनुष्य स्वर्ग-नर्क का केवल नाम ही जानता है, सुनी-सुनाई कल्पना पर विश्वास करता है, इसके अतिरिक्त वह उसे प्रत्यक्ष रूप में कुछ भी नहीं जानता, जान सकता नहीं। और दिवंगत व्यक्ति आज दिन तक लौटकर नहीं आया, जिससे स्वर्ग के बारे में अधिकृत जानकारी मिल सके। फिर वह क्या है, क्या नहीं है, किसे भी इसका अता-पता नहीं है। फिर शास्त्रों की इस कल्पना पर क्योंकर विश्वास किया जाय।

—स्वर्ग-नर्क की बातें सिर्फ कल्पना-मात्र हैं और कुछ भी नहीं।

पाठा : सरग रौ दरवाजौ कुण जोयौ?

सुरग सूं पड़्यौ, खिजूर में अटक्यौ। १४०२३

स्वर्ग से गिरा, खजूर में अटका।

—कोई काम बनते-बनते बीच में अटक जाय, तब...।

—एक परेशानी दूर हो, तब तक दूसरी सिर पर आ पड़े, तब...।

—किसी दुष्कर कार्य में सफलता के पूर्व कोई बाधा उपस्थित हो जाय, तब...।

मि.क.सं.९७

सुरतण सींवाड़ै जकौ मूतण री ठौड़ राखै। १४०२४

सुरतन सिलाये वह मूतने की ठौर रखता है।

—चतुर व्यक्ति किसी काम में उलझने से पूर्व, उसका उपाय अवश्य सोच रखता है।

—होशियार झगड़ालू झगड़ा करने से पहिले उसके बचाव की तरकीब पहिले से सोचता है।

पा[illegible] · सूतण सिंवाड़ै सौ मूतण री ठौड़ ई राखै।

सुर सरग में, असुर नरग में। १४०२५

सुर स्वर्ग में, असुर नर्क में।

—अपने-अपने कर्मानुसार दुष्ट नर्क में और भले आदमी स्वर्ग में जाते हैं।

—पुण्यार्थी स्वर्ग में और पापी नर्क में।

सुळियौ काठ बळीतै जोग। १४०२६

सड़ा काठ ईंधन जैसा।

—जो चीज काम में न आये, उसे सँभालकर रखने में कोई तुक नहीं, फेंक देनी चाहिए या नष्ट कर देनी चाहिए।

—बूढ़े व्यक्ति की उपयोगिता काफी कम हो जाती है।

—जिस वस्तु की कोई उपादेयता न हो उससे मोह रखना व्यर्थ है।

सुळियौ धांन दळणौ पड़ै। १४०२७

सड़ा अनाज दलना पड़ता है।

—बिगड़ी हुई वस्तु का कुछ-न-कुछ उपयोग तो होता ही है।

—किसी भी चीज को अच्छी तरह सोच-समझकर रद्द करना चाहिए। क्योंकि कोई भी पदार्थ पूर्णतया व्यर्थ नहीं होता।

सुवाड़ी गाय री लात ई भली। १४०२८

दूध देने वाली गाय की लात भी सुहानी।

—उपकार करने वाले की तो झिड़कियाँ भी सुहाती हैं।

—स्वार्थ सधता हो तो गालियाँ भी बुरी नहीं लगतीं।

—आदमी अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी समझौता कर सकता है।

दे.क.सं.३८०६

सुवाड़ी, सुंघ-मोली, पाडी री मां अर घण दूधाळ। १४०२९

सुवाड़ी, सस्ते मूल्य की, पाड़ी की माँ और बहुत दूध वाली।

सुवाड़ी = वह गाय या भैंस जिसे प्रसव किये हुए बहुत थोड़े दिन हुए हों।

—ऐसी भैंस जो कुछ दिन पहिले ही ब्यायी हो, जिसने पर्याप्त पौष्टिक बाँटा चर लिया हो, पाड़ी की माँ हो और काफी दूध देने वाली हो, फिर तो सब ठाट-ही-ठाट है।

—ऐसी सुखद कामना जिसमें सब तरह से फायदा-ही-फायदा हो।

दे.क.सं.३८०५

सुवाड़ौ ढांढ़ौ बाड़ा तोड़ै। १४०३०

सुवाड़ा ढोर बाड़े तोड़ता है।

—ब्याने के बाद जितने दिन तक भैंस या गाय पौष्टिक बाँटा (सुवावड़) खाती है, वह समय पर बाँटे की खातिर छटपटाती है। सुवाड़ी गाय भैंस नन्हें बछड़े या पाड़े के लिए बहुत बेताब रहती है, उनकी आवाज सुनते ही बाड़ तोड़ डालती हैं।

—सुवावड़ खाई हुई औरत सहवास के लिए बहुत उद्विग्न हो जाती है।

—प्रसव की वेला तोबा करने वाली जच्चा महीने भर बाद ही साजन मे मिलने की खातिर बेताब होने लगती है।

सुसरौजी नथ घड़ावौ के म्हैं तौ नाक वाढ़ण नै खपूं। १४०३१

ससुरजी नथ घड़ाओ कि मैं तो नाक काटने की कोशिश मे हूँ।

—कोई अयोग्य व्यक्ति इनाम या पुरस्कार की चाहना रखे,तब...।

—बदमाश व्यक्ति प्रोत्साहन,प्रशंसा या लाभ की आशा करे तब उसे चुप कराने के लिए यह उक्ति यथेष्ट है।

पाठा : सुसरौजी नथ घड़ावौ के म्हैं तौ नाक वाढ़ण री सोय में हूं।

ससुरौजी ! बहू उघाड़ी फिरै कै म्हारी किसी फूट्योड़ी है। १४०३२

सुसरजी ! बहू उघाड़ी फिर रही है कि मेरी कौन-सी फूटी हुई हैं।

—परिस्थितियों की मजबूरी घर की लाज बचाने में भी कभी-कभार असमर्थ हो जाती है। देखते हुए भी अंधा होना पड़ता है।

—अभावग्रस्त व्यक्ति को असहनीय स्थिति भी सहनी पड़ती है।

दे.क.सं.८८५५

सुसरौजी वैद अर कुठौड़ पीड़। १४०३३

ससुरजी वैद्य और कुठौर पीड़ा।

दे.क.सं.२४०३

सुसिया ! मांस खासी रे के म्हारौ बच जावै तौ ई घणौ। १४०३४

खरगोश ! मांस खाएगा कि मेरा बच जाय तब भी गनीमत है।

—जिस व्यक्ति को हरदम अपनी जान का ही खतरा है,वह भला दूसरों को सताने की क्योंकर हिमाकत कर सकता है ?

—गरीब व्यक्ति जस-तस जिंदा रह जाय तो यही बहुत है,वह दूसरों को क्षति पहुँचाने की कल्पना भी नहीं कर सकता।

—असहाय से समाज को कोई खतरा नहीं,खतरा है तो फकत साधन-संपन्न व्यक्तियों से।

पाठा : सुसिया ! मांस खासी रे के म्हारौ बच जावै तौ ई लाख लाधा।

सुसिया री मींगणी सूं गरज पड़े, हांकरतां डूंगर चढ़ै। १४०३५

खरगोश की मेंगनी से काम पड़े तो वह अदेर पहाड़ पर चढ़ जाता है।

—ओछे मनुष्य से नगण्य सहयोग की आशा करना भी व्यर्थ है।

—निकृष्ट या कंजूस से चूल्हे की राख भी माँगी जाय तो वह उसे भी देने में हिचकिचाता है।

पाठा : सुसिये री मीगणी अकासां चढ़ै।

सुसिया रौ सिकार अर इग्यारै तोप। १४०३६

खरगोश का शिकार और ग्यारह तोपें।

—किसी गरीब को बेइंतहा सताया जाय, तब...।

—असहाय व्यक्ति जो समर्थ की डाट-फटकार से भी डरे, उस पर धावा बोलने की क्या जरूरत।

—जब कोई ताकतवर किसी निरीह को डराने की मंशा से बेकार ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन करे।

सुसिया रौ सिकार चढ़ै तद सिंघ रौ सराजांम करणौ पड़ै। १४०३७

खरगोश का शिकार चढ़े तो सिह की व्यवस्था करनी पड़ती है।

—बुजुर्गों की सीख है कि छोटे-से-छोटे काम के निमित्त भी तैयारी पूरी करनी चाहिए।

—आयोजन छोटा भी हो तो उसकी अधिक-से-अधिक व्यवस्था करनी संगत है।

—मामूली फसाद के लिए भी युद्ध जैसी तैयारी करना ही नीति-सम्मत है।

सुसिये रै चौथौ पग ई कायनीं। १४०३८

खरगोश का चौथा पॉव ही नही।

—शिकारियों का ऐसा अनुभव है कि बंदूक का छर्रा खरगोश की पिछली टॉग पर लग जाय तो उसके दौड़ने में कोई खास कसर नहीं पड़ती। चौथी टाँग से खून बहता रहता है और निरीह प्राणी दौड़ता रहता है।

—गरीब की जीविका का सहारा टूट जाय तब भी वह हिम्मत हारे बिना संघर्ष के लिए उद्यत रहता है।

सुसियौ निगै आयौ अर कूतरी हंगाणी। १४०३९

खरगोश नजर आया और कुतिया हॅगाई।

दे.क.सं.१३८५१

पाठा : सुसियै रौ नीसरणौ अर कुत्ता रौ हंगणौ।

सुहागण नै रांड सूं आगै गाळ नीं। १४०४०

सुहागिन को राँड से बड़ी गाली नहीं।

—जब कोई व्यक्ति अपनी आन में सब-कुछ गँवाने पर उतारू हो जाय और किसी भी शर्त पर समझौता न करे, तब...।

—जिस व्यक्ति को अपने हिताहित का भय न हो, उसके लिए...।

दे.क.सं.१२०२०

सुहागण रांड रै पगां लागी के म्हारै जिसी थूं ई व्हैजै। १४०४१

सुहागिन रॉड के पॉव लगी कि मेरी जैसी तू ही होना।

—यह मानव स्वभाव की कमजोरी है कि वह किसी की बढ़ती हुई स्थिति को बर्दाश्त नहीं कर सकता।

—मनुष्य में ईर्ष्या की भावना जन्मजात है, इससे छुटकारा पाना आसान नहीं।

सुहावै जैड़ौ पैरणौ अर भावै जैड़ौ खावणौ। १४०४२

सुहाये जैसा पहिनना और इच्छा करे वही खाना।

—फैशन के चलन या लोगों को दिखने में अच्छे लगें, उस दृष्टि से कपड़े नहीं पहिनने चाहिएँ, स्वयं को सुविधा-जनक लगें, वैसे वस्त्र पहिनना ही उचित है। और जितनी इच्छा हो, जैसी इच्छा हो, वही खाना चाहिए।

—मनुष्य को दिखावे के लिए न तो कपड़े पहिनने चाहिएँ और न भोजन करना चाहिए।

सूंआळै माथै दोय गूणती।–व.४९ १४०४३

सीधे पर दो बोरी।

गूणती = टाट, कंबल या चमड़े आदि की बनी हुई वह खुरजी, जिसमें दोनों ओर अनाज आदि सामग्री भरने का स्थान होता है। गधे या बैल आदि की पीठ पर उसे रखकर एवं सामान भरकर एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाया जाता है।

—गरीब व्यक्ति पर सभी अत्याचार करते हैं।

—भोले आदमी से हर कोई बेगार करवाता है।

—ज्यादा सीधा होना भी अच्छा नहीं।

दे.क.सं.६६९३

सूंखियौ मेह तालरै बरसै।—व.७५ १४०४४

शंख वाला मेह मैदान में बरसता है।

दे.क.सं.१३२७२

सूंघै काठ रौ कोडायौ मसांण जावै। १४०४५

सस्ते काठ की मंशा से मसान जाये।

—कंजूस का जीवन-दर्शन सबसे निराला होता है। उसके हर कदम से कंजूसी झलकती है। उसे सपने भी आते हैं तो कंजूसी के। उसे लकड़ियाँ खरीदनी हों तो 'टाल' का उसे खयाल ही नहीं आता। सीधे मसान का खयाल आता है। टाल की बजाय वहाँ चिता से बची हुई लकड़ियाँ सस्ती मिलती हैं, शायद मुफ्त भी हाथ लग जाएँ।

—कंजूस व्यक्ति लिए के परिहास में...।

सूंघौ मूंघौ इक सार। १४०४६

सस्ता महँगा एक बराबर।

—सस्ती चीज अधिक टिकती नहीं, वह जल्दी ही खराब हो जाती। और इसके विपरीत महँगी वस्तु अधिक चलती है। इसलिए सस्ते और महँगे में कुछ भी फर्क नहीं होता। अतएव मनुष्य को महँगी चीज खरीदने में हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए।

पाठा: सूंघौ-मूंघौ बराबर पड़ै। सूंघौ-मूंघौ सारीसा।

सूंघौ रोवै बारंबार, मूंघौ रोवै अेक बार। १४०४७

सस्ता रोये बारबार, महँगा रोये एक बार।

दे.क.सं.११४३८,१३४८९

सूंटा-ढंचा मिळाय, मेळ-मांढौ कर दीन्हौ। १४०४८

जोड़-तोड़ करके, हिसाब का मेल बिठा दिया।

—कोई चालाक व्यक्ति जैसे-तैसे भी करके अपने हित में बात बिठा ले।

—अपनी बही और अपनी कलम। तिस पर भोलाभाला गँवार असामी—फिर बोहरे को कैसी हिचक! वह ज्यों-त्यों करके किसान को हिसाब समझा देता है—यानी उसकी मौत की माकूल व्यवस्था कर देता है।

पाठा : ढाया-ढंचा मिळाय, मेळ-मांढ़ौ कर दियौ।

सूंठ रौ गांठ्यौ लेय पंसारी बणग्यौ। १४०४९

सोंठ का टुकड़ा लेकर पंसारी बन गया।

—कोई व्यक्ति अकिंचन पूंजी से बड़ा व्यापार करना चाहे, तब...।

—जो व्यक्ति पास में कुछ नहीं होने पर भी सब-कुछ होने का दिखावा करे।

पाठा : सूंठ रै गांठ्या सूं पंसारी ना हुवै।

सूंठ रै गांठ्ये कोई पंसारी थोड़ौ ई बाजै।

सूंठ सड़ ई जावै तौ धांणां सूं माड़ी नीं व्है। १४०५०

सोठ सड भी जाय तो धनिये से बुरी नही होती।

—बड़े आदमियों की स्थिति बिगड़ भी जाय तो गरीबों से बेहतर होती है।

—पहलवान बीमार भी पड़ जाय तो सामान्य व्यक्ति की तुलना में ताकतवर ही होता है।

—कुलीन व्यक्ति भ्रष्ट भी हो जाय तो अकुलीनों से बढ़कर होता है।

पाठा : सूंठ सड़ ई जावै तौ धांणां सू आछी।

सूंठ सड़ ई जावै तौ आदा (अदरक) सूं सिरै।

सूंप्योड़ौ माल सांप ई को खावै नीं। १४०५१

सौपा हुआ माल सॉप भी नही खाता।

—अमानत में खयानत तो सॉप भी नही करता, पर मनुष्य कर जाता है, इसीलिए तो इस उक्ति की सार्थकता है।

—किसी बोहरे को गिरवी का माल सँभलाते समय असामी की सूरत पर संशय का भाव झलकने लगता है तब पास खड़ा कोई व्यक्ति उसे आश्वस्त करने की खातिर कहता है—अरे भाई, सौंपा हुआ माल तो साँप भी नहीं खाता, बेकार घबरा रहे हो!

पाठा : सूंप्योड़ौ माल तौ सांप ई नी नटै। सूंप्योड़ी चीज तौ डाकण ई नी नटै।

सूंवाळी खेजड़ी सगळा ई चढ़ै। १४०५२

कोमल खेजड़ी पर सभी चढ़ते हैं।

—बिना काँटों वाली खेजड़ी (शमी-वृक्ष) पर आसानी से चढ़ा जाता है, इसलिए हर कोई उस पर चढ़ने का इरादा कर लेता है।

—बच्चे भी कमजोर को दबाने का मानस बना लेते हैं।

पाठा : सुंवाळी खेजड़ी टाबर ई चढ़ै। सुंवाळी खेजड़ी सोरौ चढ़ीजै। सुंवाळै खेजड़ा माथै चढ़णौ सोरौ।

सूई जितरी सेरी में हाथी नीसर जावै। १४०५३

सूई जितनी सेरी से हाथी भी निकल जाता है।

सेरी = तंग रास्ता।

—मामूली कमजोरी वक्त पर दूर नहीं की जाय तो वह देखते-देखते बहुत बड़ी हो जाती है।

—छोटी-सी गफलत का भीषण दुष्परिणाम संभव है।

—बाइबिल का एक कथन मशहूर है कि सूई के छेद से हाथी निकल सकता है पर स्वर्ग के दरवाजे में कंजूस नहीं समा सकता।

सूई नै ई संचार कोनीं। १४०५४

सूई की भी जगह-नहीं है।

—किसी खचाखच भरे स्थान में जहाँ सूई रखने की भी जगह न हो, तब...।

—स्थानाभाव के लिए इस कहावत का प्रयोग होता है।

सूई रौ दांन अर अेरण री चोरी। १४०५५

सूई का दान और एरण की चोरी।

अेरण = आहरण = लोहे का वह चौकोर खंड जिस पर लुहार या सुनार गर्म धातु को रखकर पीटते हैं।

—सूई का वजन तो नगण्य होता है। और एरण का लगभग बीस-पच्चीस सेर। दान और चोरी के अनुपात का अंतर कोई मामूली नहीं, बेशुमार है।

—उन दानवीरों पर करारी चोट जो एरण की चोरी करके सूई का दान करते हैं।

—अपने पहाड़ जैसे दुष्कृत्य को जो पाखंडी कंकर जितने पुण्य से ढकने का प्रयास करते हैं, उनके लिए...।

सूई लारै डोरौ, मत कर सासू जोरौ। १४०५६

सूई के पीछे डोर, मत कर सासू जोर।

—सास के द्वारा उत्पीड़ित बहू को आखिर मुँह खोलने के लिए बाध्य होना ही पड़ता है कि उसके पति की कमाई पर इतना आतंक शोभा नहीं देता।

—जो व्यक्ति दूसरों की पूँजी पर मौज उड़ाये और गरीबों पर अत्याचार करे, उस पर कटाक्ष।

—जो नेता अपने अहंकार में भूल जाता है कि वह मतदाताओं के बूते पर ही विजयी हुआ है।

सूई लावै, जिणरी हळबांणी जावै। १४०५७

सूई लाये उसकी हलबानी जाती है।

—जो व्यक्ति सूई चुराकर लाता है, उसे किसी-न-किसी रूप में हलबानी का घाटा हो ही जाता है।

—भ्रष्ट या रिश्वतखोर की कमाई से बरकत नहीं होती। उसके नुकसान का ताँता निरंतर बढ़ता ही रहता है।

सूकरड़ी घर खायौ, कदै न लेखौ आयौ। १४०५८

सूअरनी ने घर खाया, न कभी खयाल आया।

—छिनाल औरत कब किसके घर का सत्यानाश कर देती है, पता नहीं चलता।

—दुश्चरित्र महिला के जाल में फँसने पर छुटकारा मुश्किल है।

सूखा संख सड़ासड़ बाजै। १४०५९

सूखे शंख सड़ा-सड़ बजे।

—भूखे व्यक्ति का स्वभाव रूखा और चिड़चिड़ा हो जाता है। उसकी चिड़चिड़ कभी मिटती ही नहीं।

—भूखा व्यक्ति हतशून्य होकर अपना विवेक खो बैठता है।

सूखा साथै आला ई बळै। १४०६०

सूखे के साथ गीले भी जलते हैं।

—गेहूँ के साथ जिस तरह घुन पिस जाते हैं, उसी तरह सूखी लकड़ियों के साथ गीली लकड़ियाँ भी जल जाती हैं। ऐसा ही है कुदरत और ईश्वर का न्याय।

—ठीक इसी न्याय की अनुकृति मनुष्य-समाज में भी मिल जाती है कि दोषी के साथ निर्दोष भी दंडित होता है।

—काल के जबड़े में बालक, जवान और बूढ़े सभी खिंचते चले जाते हैं।

दे.क.सं.१०१४

सूखै घसीजै हळबांणी, आलै घसीजै चवू। १४०६१
सांवण घसीजै डीकरौ, काती घसीजै बहू॥

सूखे मे घिसे हलबानी, गीले में घिसे चवू।
सावन में घिसे बेटा, कार्तिक में घिसे बहू॥

चवू = चऊ = हल में हलबानी के नीचे लगाया जाने वाला लकड़ी का नुकीला व सामने से चपटा उपकरण।

—जानकारी प्राप्त करने के लिए यह कहावत पद्‌य-बद्‌ध की गई है ताकि जल्दी याद हो सके। सूखी जमीन पर हल चलाने से लोहे की हलबानी घिसती है। गीली जमीन में हल चलाने से चऊ घिसती है। सावन में खेती की बुवाई के समय बेटा घिसता है, कष्ट पाता है और कार्तिक में जब फसल पकने आती है तब बहू घिसती है, उँसे खूब मेहनत करनी पड़ती है।

सूखै वौ समदर नीं। १४०६२

सूख जाय वह समंदर नहीं।

—दानी का दिल सूख जाय वह दानी नहीं।

—जिस व्यक्ति के दिल में अन्य प्राणियों के प्रति करुणा नहीं, वह मनुष्य भी नहीं।

—जो व्यक्ति भावना से शून्य है, वह मनुष्यता से भी शून्य है।

—जो व्यक्ति जल्दी क्रुद्‌ध हो जाय, वह छिछला है। गंभीर व्यक्ति समुद्र की नाईं शीघ्र नहीं उफनता।

सूखौ ऊमरौ कोनीं कढ़ै। १४०६३

सूखे में हल नही चलता।

—कंजूस का मन द्रवित नहीं होता।

—गरीब व्यक्ति इच्छानुसार काम करने में असमर्थ होता है।

—भूखे व्यक्ति से परिश्रम की आशा रखना व्यर्थ है।

सूखौ काठ तूटै पण निंवै कोनीं। १४०६४

सूखी लकड़ी टूट भले ही जाय, पर झुकती नहीं।

—सूखी लकड़ी समझौता नहीं करती। वह टूट जाय, जल जाय पर झुकने के लिए तैयार नहीं होती।

—स्वाभिमानी, हठी, सत्यवादी या सिद्धांतवादी सूखी लकड़ी के उनमान टूट भले ही जाएँ, वे झुक नहीं सकते।

पाठा : सूखौ काठ तूट भलां ई जावै, लुळै कोनी।

सूख्यां गळै सावळ उघड़ै। १४०६५

सूखने के बाद अच्छी तरह उघड़ते हैं।

—साधुओं के तिलक सूखने के बाद ही उघड़ते हैं।

दे.क.सं.१३७२३

पाठा : सूख्यां पूठै सोरा उघड़ै।

सूझा सूं बूझ्यौ भलौ। १४०६६

सूझे से पूछा भला।

—सूझने की अपेक्षा पूछ लेना बेहतर है।

—कोई व्यक्ति किसी बात से अनभिज्ञ है तो दूसरों से जानकारी प्राप्त करने में संकोच नहीं करना चाहिए।

—अपनी जानकारी की पुष्टि होने पर लाभ ही होता है।

सूझी हाळी सूझ। १४०६७

समझदार की सूझ।

—समझदार को समय पर अच्छी बात सूझती है।

—समझदार की सूझ से ही उलझे हुए काम सुलझ जाते हैं।

सूत उळझ्यां केड़ै सुळझै दोरौ। १४०६८

सूत उलझने के बाद मुश्किल से सुलझता है।

—सूत उलझने में देर नहीं लगती पर उसे सुलझाने में बहुत देर लगती है। और सुलझाना कठिन भी है।

—कोई काम बिगड़ने में देर नहीं लगती, लेकिन एक बार बिगड़ जाने के बाद उसे सुधारने में बहुत ज्यादा समय लगता है। और सुधारना कठिन भी है। इसलिए आदमी की चेष्टा यही होनी चाहिए कि काम बिगड़े ही नहीं। सूत उलझे ही नहीं।

सूत जिसी पेटी, मां जिसी बेटी। १४०६९

सूत जैसी पेटी, माँ जैसी बेटी।

—माँ की अनुवांशिकता, उसका रूप और उसका स्वभाव बेटी में व्यक्त होता है।

—माँ के लक्षण संतान में चरितार्थ होते हैं।

दे.क.सं.१२४१२

सूतां झख पड़ै नीं ऊभां आवड़ै। १४०७०

न सोते को चैन और न खड़े को शांति।

—मान लीजिए कोई एक बस बदरीनाथ की यात्रा पर निकली हो, उसमें किसी परिवार के चार सदस्य भी शामिल हों। उस बस की दुर्घटना होने पर बीस यात्रियों के मरने की खबर छपी हो। तब वह खबर पढ़कर उक्त परिवार के शेष सदस्यों को न सोते चैन पड़े और न खड़ों को शांति मिले।

—किसी संभाव्य खतरे की आशंका से नींद हराम हो जाय, तब...।

सूतां टाळ सपना कठै ? १४०७१

सोये बिना सपने कहाँ ?

—अभिशप्त जिंदगी जीने वालों के लिए सपनों के अलावा सुखी होने का दूसरा उपाय ही क्या है ?

—एक ठौर सोते हुए भी बादलों के बीच उड़ने, पहाड़ों की घाटियाँ लाँघने और समंदरों की गहराइयों में तैरने का सहज माध्यम सपना ही तो है।

—जागृत-अवस्था के अनुभवों की तुलना में नींद के सपनों का अनुभव किसी भी दृष्टि से कम नहीं है।

—कारण के बिना किसी भी कार्य का अस्तित्व नहीं होता।

—स्वयं को भूलने से ही कोई असाध्य उपलब्धि संभव हो सकती है।

सूतां पछै सवार व्है। १४०७२

सोने के बाद सवेरा होता है।

—आलसी और लापरवाह व्यक्ति के भरोसे कोई काम नहीं हो सकता। उसे तो अपने आलस्य से ही फुरसत नहीं। वह तो सोने के बाद सवेरे ही उठता है और काम की याद नहीं आती।

—अकर्मण्य व्यक्ति के जिम्मे काम सौंपना ही मूर्खता है।

सूतां री भैंस पाडा जिणै। १४०७३

सोने हुए की भैस पाड़ा जनती है।

दे क.सं.४९९९

पाठा : सूतां री पाडा जिणै।

सूतां सरै तौ बैठौ कुण रैवै ? १४०७४

सोने से पार पड़ जाय तो बैठा कौन रहे ?

—सोने से पार पड़ जाय तो काम करना कौन चाहेगा ?

—आराम करने से निर्वाह होता रहे तो काम करने की तकलीफ कोई नहीं उठाना चाहता।

पाठा : सूतां सरै तौ निकमौ कुण रैवै ?

सूतां सारीसौ सुख नीं अर दैणा सारीसौ दुख नीं। १४०७५

नीद के बराबर सुख नही और देने के बराबर दुख नही।

—आलसी और मुफ्तखोरों का जीवन के प्रति और क्या दृष्टिकोण हो सकता है कि उन्हें सोने के अलावा और किसी बात में आनंद नहीं आता और एक बार उधार लिए हुए माल या पैसों को वापस चुकाने जैसा दुख और किसी बात से नहीं मिलता।

—आलसी और मुफ्तखोरों के प्रति तिरस्कार।

सूता रै सिरहांणै भातौ कोई नीं मेलै । १४०७६

सोने वाले के सिरहाने भाता कोई नहीं रखता ।

भातौ = खेत में काम करने वाले व्यक्ति के लिए निर्दिष्ट स्थान पर भेजा जाने वाला भोजन ।

—राजस्थान की एक कहावत है कि चमड़ी प्यारी नहीं, काम प्यारा है ।

—आलसी या अकर्मण्य किसी भी सुविधा का अधिकारी नहीं होता और उसके लिए किसी के मन में सहानुभूति नहीं होती ।

—जो मेहनत करता है, वही खाने-पहिनने का अधिकारी है ।

सूता सांप नै नीं छेड़णौ । १४०७७

सोये सॉप को नही छेड़ना चाहिए ।

—किसी शक्तिशाली से बिना बात बैर करना उचित नहीं ।

—अपने से बड़े व्यक्ति को छेड़ने में नुकसान के सिवाय लाभ रंचमात्र भी नहीं होता ।

पाठा : सूतोड़ा सिंघ नै कुण जगावै ? सूतोड़ा सांप नै कुण छेड़ै ?

सूतोड़ा सांप नै कुण जगावै ?

सूती गंगा बहै । १४०७८

सोती गंगा बह रही है ।

—जब परिवार, समाज, प्रांत और देश में सर्वत्र अमन-चैन हो । वांछित सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हों, तब ऐसे सुखद परिवेश के लिए कहा जाता है कि सोती गंगा बह रही है । पर अब तो गंगा ही उलटी बहने लगी है । कोई सुनने वाला नहीं, कोई शिकायत करने वाला नहीं । जाने कब इस देश में सोती गंगा बहेगी ? आशा अमर-धन है ।

सूती-बैठी डूमणी , घर में घाल्यौ घोड़ौ । १४०७९

सोती बैठी डोमनी, घर में बॉधा घोड़ा ।

संदर्भ-कथा : एक डोमनी के घर में अच्छी गाय थी । घरवालों के लिए पर्याप्त दूध देती थी । आराम से गाना-बजाना करती । मजे से दिन बीत रहे थे । जाने क्या कुमति सूझी कि उसने गाय बेचकर घोड़ा खरीद लिया । गाय तो जंगल में कहीं भी चर आती थी । घोड़े को छुट्टा नहीं छोड़ा जा सकता था । घर में बँधा रहता । डोमनी हर वक्त घोड़े के लिए पर्याप्त दूब काटकर लाती । गाना-बजाना सब छूट गया । घोड़े की हिनहिनाट के मारे रात की नींद तक उड़ गई ।

—जो व्यक्ति अच्छी तरह सोच-समझकर काम नहीं करता, उसे तकलीफ उठानी पड़ती है।

पूरी उक्ति इस प्रकार है :

सूती-बैठी डूमणी, घर में घाल्यौ घोड़ौ।

दूध कटोरौ पीवती, धोब खोदण दोड़ौ॥

सूतै दरजी सात कोस वाढ़ी। १४०८०

सोते हुए दरजी ने सात कोस दूरी काटी।

दे.क.सं.६३६४

पाठा : सूतौ दरजी सात कोस चालै।

सूतै नै जगावै, पण जागतै नै कियां जगावै? १४०८१

सोते हुए को जगाये, पर जागते हुए को क्योंकर जगाये?

—जो सब-कुछ जानते हुए भी अनजान बना हो, उसे दुनिया में कोई नहीं समझा सकता।

—जो व्यक्ति जान-बूझकर काम का बहाना बना रहा हो, उससे भला कौन काम करवा सकता है?

मि.क.सं.४९९३

सूतोड़ा री भैंस्यां किसा पाडा लावै? १४०८२

सोते हुए की भैंस क्या पाड़े ही लाती है?

—इस उक्ति से पहिले एक विपरीत कहावत आ चुकी है कि 'जागे उसके पाड़ी और सोये उसके पाड़ा।' संदर्भ-कथा भी साथ में दी है। लेकिन इस उक्ति का जायका ही अलग है, जिससे लोक-मानस का 'जागना' चरितार्थ होता है।

—सभी सोने वालों की भैंसियाँ पाड़ा नहीं लातीं। यदि भैंस के पेट में पाड़ी है तो वह पाड़ी ही जनेगी। समर्थ व्यक्ति सोये भी तो वह गरीब के जागने से ज्यादा सुरक्षित रहता है। समर्थ गफलत भी करे तो उसे कोई दूसरा ठग नहीं सकता। ये दोनों कहावतें मिलकर एक नये ही सत्य को उजागर करती हैं।

सूतौ खावै, हंगतौ गावै, उण में अकल कदै नीं आवै। १४०८३

सोते खाये, हँगते गाये, उसमें अक्ल कभी ना आये।

—मूर्खों के और भी कई लक्षण हैं। इस उक्ति में दो ही बताये हैं। जो व्यक्ति सोते-सोते खाये और शौच की वेला गाये, वह अव्वल दरजे का मूर्ख है। बुद्धि उसके पास होकर भी नहीं फटकती। सोते-सोते खाने में निवाला फँसने का भी खतरा है। बुजुर्गों की सीख के अनुसार शौच की वेला बोलना भी नहीं चाहिए। स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

सूतौ-सूतौ ई सरग चाटै। १४०८४

सोता-सोता ही स्वर्ग चाटता है।

—जो आलसी व्यक्ति कल्पना-कल्पना में ही आनंद प्राप्त करने की चेष्टा करता है। स्वर्ग चाटना तो दूर, सोते-सोते तो दो कदम चलना भी संभव नहीं।

—छोटे-से-छोटा काम भी हाथ पाँव हिलाये बिना संपन्न नहीं होता, फिर सोते-सोते स्वर्ग कैसे चाटा जा सकता है।

—बड़ा काम करने के लिए समुचित पुरुषार्थ और अथक परिश्रम अनिवार्य है।

सूधा माथै सब सांड व्है। १४०८५

सीधे पर सभी शेर होते हैं।

—सीधा व्यक्ति पलटकर जवाब देता नहीं, प्रतिरोध करता नहीं, इसलिए उस पर सभी रुआब झाड़ते हैं। चलते ही बेगार बता देते हैं, जैसे वह उनका गुलाम हो।

—दूसरों को जाने-अनजाने क्षति नहीं पहुँचे, यहाँ तक तो सीधा रहना एकदम संगत है। लेकिन अपने सीधेपन से लोग नाजायज फायदा उठाएँ तो आँखें दिखा देनी चाहिएँ।

—ऐसा सीधापन भी किस काम का जो स्वयं को क्षति पहुँचाये।

सूधी दीसै विसूंदरी, अणगिण जीव गिटै। १४०८६

सीधी दिखे छिपकली, अनगिन जीव डकारे।

—ऊपर से सीधा दिखने वाला व्यक्ति यदि भीतर से कपटी और छद्म-प्रवृत्ति का हो तो वह ज्यादा घातक होता है।

—बदमाशों की तरह छद्म शरीफों से भी दूर रहना चाहिए।

—सीधे दिखने वाले व्यक्तियों पर कटाक्ष।

पाठा : सूधी विसूंदरी घणा फिड़कला खाय।

सूधै नै सौ दुख। १४०८७

सीधे को सौ दुख।

—यह कहावत कल की बजाय आज ज्यादा प्रासंगिक है और परसों-तरसों और भी अधिक प्रासंगिक होगी, जब सीधे, भले और नेक इनसानों की नस्ल ही समाप्त हो जाएगी।

—अब तो जमाना ही बदमाशों और समाज-कंटकों का है। सीधे व्यक्ति को सताने वाले तो कदम-कदम पर मौजूद हैं। और यों सीधा व्यक्ति अपनी आदतों से भी कम दुख नहीं पाता। उसका तो जन्म ही दुख उठाने के लिए ही होता है।

सूधै में ई बांक। १४०८८

सीधे में ही बाँक।

—जिस सीधे व्यक्ति के दिल में टेढ़ापन हो।

—ऐसे बिरले ही सीधे व्यक्ति होते हैं जिनके अंतस् में कुछ-न-कुछ कुटिलता न हो।

सूधौ स्वांमी सूंठ रौ गांठियौ। १४०८९

सीधा स्वामी सोंठ का टुकड़ा।

—सीधा व्यक्ति गुणवान हो, विद्वान हो फिर भी लोग उसका यथायोग्य आदर नहीं करते।

—कुछ-न-कुछ टेढ़ा हुए बिना विशिष्ट व्यक्ति की कहीं पूछ नहीं होती।

सूना खेत सुलाखणा, हिरण्या चर-चर जाय। १४०९०

सूने खेत अमोलक, हिरण चर-चर जाएँ।

—पति के विछोह में वियोगिनी इस उक्ति के बहाने उसे उलाहना दे रही है कि इस तरह निश्चिंत होकर दूर कैसे बैठे हो? तुम्हारा हरा-भरा खेत हिरण चर रहे हैं। अंतर्निहित मर्म स्पष्ट है कि तुम्हारी प्रिया का यौवन समय नष्ट कर रहा है। खेत चरने के बाद आ भी गये तुम्हारे हाथ कुछ नहीं लगेगा। जब तक खेत हरा-भरा है, लौट आओ।

सूना गांव में गतराड़ौ ई भूवाजी। १४०९१

सूने गाँव में हिंजड़ा भी बूआ।

—अनपढ़ लोगों के बीच मामूली साक्षर भी विद्वान कहलाता है।

—अंधों में काने राजा की नाईं मूर्खों की जमात में अकिंचन समझदार भी मनीषी कहलाता है।

—'कुछ नहीं' के बीच 'कुछ' का महत्त्व बढ़ जाता है।

सूना गांव में सात दिन रहै।—व ९ १४०९२

सूने गॉव में सात दिन रहे।

—जिस निठल्ले व्यक्ति के पास कुछ भी काम न हो, वह कही भी गप-शप करने के लिए बैठ जाता है।

—जो व्यक्ति अकारण ही अपना समय व्यर्थ नष्ट करे।

—जिस काम में घड़ी भर का वक्त लगे, उसमें सात दिन व्यतीत कर दे, उसके लिए।

पाठा : सूनै गांव में सौ दिन गाळै। सूना गांव में साठ दिन लगावै।

सूना घर रौ रांम इज रुखाळौ। १४०९३

सूने घर का राम ही रखवाला।

—जिस परिवार, समाज और देश में व्यवस्था न हो, उसका खुदा ही मालिक है।

—जिम्मेदार व्यक्तियों के अभाव में बना-बनाया काम भी बिगड़ जाता है। ईश्वर भी उसमें कुछ मदद नहीं कर सकता। वह किसी की जिम्मेदारी तो सँभालने से रहा।

सूना धन रौ तौ रांम इज धणी। १४०९४

सूने धन का तो राम ही मालिक।

धन = पशुधन।

—घर के जिम्मेदार व्यक्ति की देख-रेख के बिना मवेशी तितर-बितर हो जाते हैं। दूसरों के खेत में नुकसान करने पर उनकी पिटाई होती है, मवेशीखाने की कैद भी भुगतनी पड़ती है और कभी-कभार वे बूचड़खाने में कटने के लिए पहुँच जाते हैं।

—जिस चीज का कोई मालिक न हो वह अंततः बिगड़ती ही है।

सूना माथा रौ बांमण आछौ कोनीं। १४०९५

बिना तिलक का बामन अच्छा नही।

—बामन या पंडित के ललाट पर तिलक न हो तो अपशकुन माना जाता है। इसी क्रम में बिना शस्त्र के राजपूत का भी शकुन अच्छा नहीं माना जाता। नंगे सिर वालों के शकुन भी अशुभ होते हैं।

सूना सो रूना। १४०९६

सूने सो रोये।

—उचित निगरानी के बिना कोई भी काम बिगडता है और काम बिगड़ने पर दुख तो होता ही है।

—लापरवाही बरती और नुकसान हुआ।

पाठा : सूना, रूना।

सूनी गांगरत गावै। १४०९७

सूनी बकवास कर रहा है।

—जो व्यक्ति काम की बात न करके व्यर्थ बकवास करे, उसके लिए...।

—सुनने वाले को जिस बात मे रुचि न हो, वह बकवास ही लगती है।

सूनी ठकराई में कीं नीं धर्‌यौ। १४०९८

सूनी ठकुराई मे कुछ नही रखा।

—जो व्यक्ति अनधिकृत रुआब गाँठे, उसके लिए।

—झूठा दिखावा करने से बात बिगड़ती ही है, सुधरती नहीं।

सूनी दळै। १४०९९

सूनी दले।

—कोई सुने चाहे न सुने, फिर भी जो व्यक्ति व्यर्थ बकवास करता रहे, उसके लिए...।

—जो व्यक्ति बात शुरू करने के बाद उसे खतम करना ही न जाने, उसे झिड़कते हुए यह कहावत कही जाती है।

पाठा : साव सूनी दळै।

सूनी नाडी रौ कीरथंभ व्है ज्यूं। १४१००

सूने तालाब का कीर्तिस्तंभ हो जैसे।

—अपने समाज या सामान्य व्यक्तियों से अलग अकेला खड़ा व्यक्ति जो असाधारण रूप से लंबा और भरकम नजर आये।

—लंबे और भद्दे व्यक्ति पर कटाक्ष।

सूनी रांड रौ कांई पतियारौ ! १४१०१

सूनी राँड का क्या भरोसा !

—बदचलन औरत कतई विश्वास के योग्य नहीं होती।

—दुश्चरित्र औरत पर भरोसा किया और डूबे।

सूनै खेत ढांढ़ा चरै। १४१०२

सूने खेत में ढोर चरते हैं।

—निगरानी बगैर हर काम बिगड़ता है—चाहे खेती हो चाहे व्यापार।

—जिस परिवार में योग्य अभिभावक न हो, वह हर दृष्टि से बिगड़ता है। अर्थ की दृष्टि से भी और चरित्र की दृष्टि से भी।

सूनै गांव ढोलण ई वूजी। १४१०३

सूने गाँव में ढोलन ही माँजी।

दे.क.सं.१४०९१

सूनै घर नाहर वड़ै। १४१०४

सूने घर मे नाहर घुसे।

—जिस घर का मुखिया गैर-जिम्मेदार और अयोग्य हो, वहाँ लंपट व्यक्तियों की घुसपैठ हो जाती है।

—जिस घर के अभिभावक अंधे हों वहाँ बदचलन व्यक्तियों की पहुँच होने लगती है।

सूनै घर स्याळ ब्यावै। १४१०५

सूने घर में सियार ब्याये।

—जिस घर की चौकसी कमजोर होती है, वहाँ लफंगों का उत्पात शुरू हो जाता है।

—जो घर आजाद हुआ, वह बिगड़ा।

—जिस घर की मर्यादा भंग, तो सभी रंग बदरंग।

सूनै बखांण मढ़ में धांन कुण देवै ? १४१०६

कोरे-मोरे बखान से मठ में अनाज कौन दे ?

—मठ-मंदिर का कुछ-न-कुछ चमत्कार हुए बिना उसकी पूछ नहीं होती । पूछ न हो तो कोई प्रसाद नहीं चढ़ाता ।

—प्रशंसा के योग्य हुए बिना किसी संत-महात्मा का सिक्का नहीं जमता ।

सूनौ खेत चिड़ियां तालकै । १४१०७

सूना खेत चिड़ियों के जिम्मे ।

—जिस खेत की माकूल देख-रेख नहीं होती उसे पक्षी खा जाते हैं ।

—जिस घर के मुखिया ढीले हों वहाँ लफंगों का डेरा जम जाता है ।

सूनौ घर सायधण बिना । १४१०८

घरवाली के बिना घर सूना ।

—जिस घर में लक्ष्मी (पत्नी) न हो तो वह बड़ा सूना-सूना लगता है ।

—देवता की मूर्ति के बिना जिस तरह मंदिर सूना लगता है । उसी तरह स्त्री के बिना घर अखरने लगता है ।

सूम रै घर डूंम कांई वांधलै ! १४१०९

कंजूस के घर डोम क्या ले ले !

—कंजूस के घर से सभी लोग खाली हाथ ही लौटते हैं । लाखों की संपत्ति होने पर जो कंजूस स्वयं भरपेट रोटी नहीं खाता, वह भला दूसरों को क्या दे सकता है ?

—समझदार व्यक्ति को कंजूस से किसी प्रकार की आशा ही नहीं रखनी चाहिए ।

सूम रै घर, धूम कीकर ? १४११०

सूम के घर, धूम क्योंकर ?

—सूम यानी कंजूस की मृत्यु के बिना वहाँ खुशी की कोई दूसरी धूम मच ही नहीं सकती ।

—या फिर कोई कंजूस पागल हो गया हो और निर्भीक बच्चे वहाँ इकट्ठे होकर धूम मचा रहे हों । इसके अलावा तीसरी स्थिति नहीं हो सकती ।

पाठा : सूम रै घर घमरोळ कैड़ी ?

सूम रौ धन बिरथा जावै । १४१११

सूम का धन बिरथा जाय ।

—कंजूस का धन कंजूस के काम नहीं आता । वह तो सारी उम्र पेट के गाँठें लगा कर ही दिन तोड़ता है । और दिवंगत होने के बाद वह साँप बनकर धन की रखवाली करता है । सूम के प्रति ऐसा ही दृष्टिकोण है लोगों का ।

सूरज अस्त अर मजूर मस्त । १४११२

सूरज अस्त और मजूर मस्त ।

—मजूरी का समय खत्म होते ही मजदूर पूर्णतया स्वतंत्र हो जाता है । चाहे तो घर जाये और चाहे तो शराब की दुकान पर । उसे कोई पूछने वाला नहीं । पूरी रात उसकी है, रात का अँधियारा उसका है और समस्त तारे उसके हैं ।

सूरज कांनी धूळ उछाळ्यां आपरी आंख्यां भरीजै । १४११३

सूरज की ओर धूल उछालने पर अपनी ऑखे ही भरती है ।

—किसी महान विभूति की निदा करने से अपना ही भद्दा लगता है, जैसे सूरज की तरफ धूल उछालने से अपनी आँखें ही भरती हैं ।

—सत्पुरुषों की बुराई करने से उनका कुछ भी नहीं बिगड़ता, उलटे लोग उसी पर थूक उछालते हैं ।

दे.क.सं.३४

पाठा : सूरज मांम्ही थूंक्यां आपरै माथै इज पड़ै ।

सूरज किसौ थांभा रै पांण टिक्योड़ौ । १४११४

सूरज किसी खंभे के सहारे टिका हुआ नहीं है ।

—शूरवीर कोई दूसरों के सहारे मशहूर नहीं होता, वह तो अपने पराक्रम के द्वारा ही सर्वत्र जाना जाता है ।

—महाकवि, विद्वान या कलाकार अपनी ही प्रतिभा से पूजे जाते हैं, किसी आलोचक की सराहना के कारण नहीं ।

सूरज कोई अठै इज नीं तपै। १४११५

सूरज कोई यहीं नहीं तप रहा है।

—प्रतिभा का आलोक अपनी जन्मभूमि तक ही सीमित नहीं रहता, वह सर्वत्र फैलता है।

—प्रतिभा किसी देश की बपौती नहीं होती, उस पर सारे संसार का समान अधिकार है।

पाठा : सूरज तौ सौ कोसां ई तपै।

सूरज खारी सूं नीं ढाकीजै। १४११६

सूरज टोकरी से नहीं ढका जा सकता।

—सूरज की नाईं प्रतिभा का प्रकाश भी प्रचंड होता है, उसे घड़े में बंद नहीं किया जा सकता।

—विद्‌वान सर्वत्र पूजनीय होता है।

पाठा : सूरज छाबड़ी हेटै नी दटै।

सूरज-चांद रै ई गैण लागै। १४११७

सूरज-चाँद को भी ग्रहण लगता है।

—महापुरुषों में भी कुछ-न-कुछ कमजोरी होती है।

—संत-महात्माओं को भी कष्ट तो होता ही है।

—ऋषि-मुनि भी कलंक से अछूते नहीं होते।

दे.क.सं.४२८०

सूरज-चांद रौ जोड़ौ। १४११८

सूरज-चाँद का जोड़ा।

—जब दो विभूतियों में अभिन्न मित्रता होती है, तब उन्हें इस उक्ति के द्‌वारा अलंकृत किया जाता है। मसलन रवींद्रनाथ ठाकुर और जगदीशचंद्र बसु में ऐसी ही प्रगाढ़ मैत्री थी—जैसी सूरज-चाँद की जोड़ी हो।

—आदर्श दंपती के लिए भी।

सूरज तौ उगूणी दिस में ई ऊगसी। १४११९

सूरज तो पूर्व दिशा में ही उगेगा।

—महापुरुष कभी अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होते।

—सिद्ध-पुरुष किसी भी लोभ के वशीभूत अपनी राह नहीं बदलते।

सूरज तौ ऊगतौ ई रातौ अर आथमतौ ई रातौ। १४१२०

सूरज तो उगता हुआ भी लाल और अस्त होता हुआ भी लाल।

—महापुरुष सुख-दुख दोनों का समान भाव से अभिवंदन करते हैं। सुख में तो हर कोई प्रफुल्लित होता है, पर वे तो दुख के समय भी उसी तरह हँसते-मुस्कराते हैं।

—ब्रह्मज्ञानी सुख-दुख को तटस्थ भाव से ग्रहण करते हैं।

सूरज नै दीवा रौ कांई छिग बतावै ? १४१२१

सूरज को दीपक का क्या रुआब बताना ?

—किसी प्रकांड विद्वान या महाकवि से अति सामान्य व्यक्ति की तुलना की जाय, तब सूरज को दीपक का उजाला बताये जैसी ही मजाक होगी।

—किसी पहुँचे हुए महात्मा को मंदिर का मामूली पुजारी ज्ञान देने की धृष्टता करे, तब...।

पाठा : सूरज नै कांई चिराग बतावै ! सूरज नै दीवा रै चांनणा रौ कांई छिग बतावै !

सूरज भगवांन भूखा तौ जगावै पण भूखा सुवाणै कोनीं। १४१२२

सूरज भगवान भूखा तो जगाता है पर भूखा सुलाता नहीं।

—यों तो कई कहावतों के साथ मेरी कई व्यक्तिगत अनुभूतियाँ जुड़ी हैं। पर इस उक्ति का मर्म मेरे स्नायु-तंतुओं में इस तरह घुलकर एकाकार हो गया जैसे मेरे शरीर का ही अंश हो। बहुत पुरानी बात है, जब मै नौवीं कक्षा में फेल होकर पहली बार घर से भागा था। जोधपुर से रात को चली रेलगाड़ी फुलेरा जंक्शन पर सूर्योदय के आस-पास ही पहुँचती थी। प्लेटफार्म पर घूमते-घामते, घर की स्मृतियों में खोया उद्विग्न-चित्त से इधर-उधर देख रहा कि अकस्मात् मेरी निगाह एक बुढ़िया पर पड़ी, जो लोटे से सूर्य-भगवान को अर्घ्य दे रही थी। मै दौड़कर उसके पास पहुँचा। वह स्पष्ट शब्दों में गुनगुना रही थी—'हे सूरज भगवांन थूं आखी दुनिया नै भूखी तौ जगाजे, पण किणी नै भूखौ सुवाणजे मती।' तब से वह दृश्य मेरी आँखों के सामने जाने कितनी बार कौंध चुका है। जब कभी अपने अंतरंग मित्रों को यह घटना सुनाता हूँ तो हर बार मेरे शरीर में वीणा-सी बज उठती है।

—भूखे तो सभी उठते हैं—क्या गरीब, क्या अमीर, पर दुनिया में कोई भी भूखा सोये नहीं, तभी सूर्य की महिमा है। ईश्वर की सार्थकता है।

सूरज में कद काळस व्है। १४१२३

सूरज में कालिख नहीं होती !

—महान विभूतियाँ किसी भी प्रकार के कलंक से अछूती रहती हैं।

—सत्पुरुषों की निंदा में कुछ भी सच्चाई नहीं होती।

पाठा : सूरज रै कदै ई खंख (धूल) नीं लागै।

सूरज रात रा तपै तौ तारा कांईं झख मारै ! १४१२४

सूरज रात को भी तपे तो तारे क्या झख मारें !

—महान् विभूतियाँ समकालीन प्रतिभाओं की झिलमिल कौंध को बुझाने की बजाय प्रोत्साहित करती हैं। वे अपनी जाज्वल्यमान प्रतिभा से उन्हें आतंकित नहीं करतीं, बढ़ावा देती हैं।

सूरज सांम्ही तारा झख मारै। १४१२५

सूरज के सामने तारे झख मारते हैं।

—एकाध प्रतिभा सूरज की नाईं सर्वत्र प्रकाश फैलाती है। कई छुटपुट प्रतिभाएँ तारों की नाईं झिलमिलाती हैं। लेकिन सूरज के सामने उनकी झिलमिलाहट बुझ जाती है। सूरज तो सूरज ही है और तारे तारे ही हैं। फिर भी रात के अँधियारे में सूरज के न रहने पर वे बहुत सुहाने लगते हैं।

सूरज सूं कीरत बड़ी। १४१२६

सूरज से कीर्ति बड़ी है।

—सूरज का आलोक भी कम नहीं, करीब आधी दुनिया में फैला रहता है, लेकिन कीर्ति का आलोक तो सारी दुनिया को प्रभावित करता है और वह रात को भी उसी तरह जगमगाता है। इसलिए कीर्ति की महिमा सूरज की अपेक्षा बहुत ज्यादा है।

सूरज सै ठौड़ अेक-सो तपै। १४१२७

सूरज सर्वत्र एक-सा ही तपता है।

—महानतम प्रतिभाएँ—मसलन वाल्मीकि, वेद व्यास, विष्णु शर्मा, कालिदास, भवभूति, तुलसी, सूर, कबीर, रवींद्रनाथ ठाकुर, शरतचंद्र, लेव तॉलस्तॉय, दोस्तोयेवस्की, अंतोन

चेखोव इत्यादि अपनी कालजयी कृतियों से सर्वत्र एक-सा आनंद प्रदान करती हैं, वे किसी स्थान विशेष की पक्षधर नहीं होतीं। वे दुनिया के प्रत्येक पाठक को अपना समझती हैं।

मि.क.सं.१४११५

सूरदासजी रांम-रांम के थारौ ई निंवतौ। १४१२८

सूरदासजी राम-राम कि तेरा ही न्योता।

—जो व्यक्ति मामूली मुँह लगाने पर पीछा ही न छोड़े।

—जो व्यक्ति बात करते ही गले पड़ जाय।

सूरदासजी ल्यौ मोठ के दूजा मरग्या कांई ? सूरदास जी ल्यौ खांड अर घी के क्यूं सुणावै बापां नै घाल तौ को दैवै नीं। १४१२९

सूरदासजी लो मोठ कि दूसरे मर गये क्या ? सूरदास जी लो खाँड और घी कि क्यों सुनाय बापां को डाल क्यों नहीं देता।

—उस चटौरे व्यक्ति पर कटाक्ष जो सामान्य भोजन की ओर झाँके तक नहीं, पर चकाचक भोजन सामने आये तो वह दूसरों की बारी ही न आने दे और चुपचाप अकेला ही गटकना चाहे।

—स्वार्थी मनुष्य को अपने मतलब के सिवाय अन्य किसी बात में रुचि नहीं होती।

सूरदास री काळी कमरिया, चढ़ै न दूजौ रंग। १४१३०

सूरदास की काली कमरिया, चढ़े न दूजो रंग।

—जो व्यक्ति हमेशा इकरंगा रहे और जिस पर अन्य किसी रंग का कोई प्रभाव न पड़े। ऐसा रंग तो सूरदास की कमरिया के उनमान काला ही होता है, जिस पर कोई दूसरा रंग नहीं चढ़ सकता।

—प्रेमी की आँखों में जिस प्रियतमा की छवि उतर जाती है, वह आसानी से मिटती नहीं।

—जिस व्यक्ति का स्वभाव आजीवन नहीं बदले।

—जो व्यक्ति अपनी लगन से तनिक भी न हटे।

सूर नंह पूछै टीपणौ, सुगन देखै नंह सूर। १४१३१

शूर न पूछे पंचांग, शकुन देखे नहीं शूर।

—ज्योतिषी के पास मुहूर्त एवं शकुन पूछने वही व्यक्ति जाता है, जिसे जीवन के प्रति अत्यधिक मोह हो, जिसे मरने का बहुत अधिक डर हो, जो सुख-सुविधाएँ भोगने का आकांक्षी हो और जिसे कमाने का प्रबल लोभ हो। लेकिन इसके विपरीत जो शूरवीर युद्ध में मरने को ही एक मात्र सुख मानता हो भला वह मुहूर्त व शकुन पूछने की खातिर जोशी के पास क्यों खामखाह चक्कर काटेगा।

पूरा दोहा :

सूर नंह पूछै टीपणौ, सुगन देखै नंह सूर।
मरणा नै मंगळ गिणै, समर चढ़ै मुख नूर॥

सूर, सांप अर सेर नदी नै सीधी फाड़ै। १४१३२

सूअर, सॉप और शेर नदी मे सीधे जाते हैं।

– पुरु॥र्थी किसी भी काम के लिए अटकते नहीं, वे सीधे ही सफलता की ओर आगे बढ़ते रहते हैं।

—पराक्रमी अपने रास्ते की हर अड़चन को पार करते जाते हैं।

सूर सौ कोसां ईं चावौ। १४१३३

शूरवीर सौ कोस तक विख्यात।

—शूर अपनी वीरता के कारण सर्वत्र जाना जाता है। वह मरकर भी अमर है।

—गुणी मनुष्य अपने गुणों के कारण कहीं भी छिपा नहीं रहता।

सूरां तणी तरवार। १४१३४

शूरवीरो के लिए तलवार।

—रणक्षेत्र में जूझने के लिए हथियार तो शूरवीरों को ही शोभा देते हैं, कायरों को नहीं। कायरों के जीवन में तो जूझने की बजाय भागना ही बदा है।

—हर व्यक्ति के संघर्ष का अपना-अपना हथियार होता है और उसे ही अपने हथियार की मर्यादा रखनी है। लेखक को कलम की, चित्रकार को तूलिका की, शिल्पकार को छेनी और हथौड़े की, नर्तक को अंग प्रदर्शन की और गायक को स्वर की। सभी अपनी-अपनी जगह श्रेष्ठ हैं।

सूरां री आंख्यां छाती में। १४१३५

शूरवीरों की आँखें सीने में।

—शूरवीरों का सीना तगड़ा होना चाहिए ताकि उसमें भय का रेशा तक प्रवेश न कर सके।

—शूरवीर ललाट की आँखों से देखता है और सीने की आँखों से सारी स्थिति को परखता है।

—शूरवीर सिर कटने के बाद भी लड़ता है, जैसे उसके सीने में आँखें गड़ी हों।

सूराजी रा हौ, सो सिवराजी रा व्है नीं। १४१३६

सूरज जी के हो सो शिवजी के हो नहीं सकते।

—साँड के पुट्ठे पर जब सूरज का दाग लग जाता है, तब वह सूरज के निमित्त ही अर्पित हो जाता है। सूरज का दाग लगने के बाद वह किसी भी खेत में निर्विघ्न चर सकता है, उसे कोई नहीं रोकता। लेकिन एक बार सूरज का साँड हो जाने के पश्चात् वह शिवजी का नंदी नहीं हो सकता।

—हवा का रुख देखकर या स्वार्थ-सिद्धि के लिए किसी भी मनुष्य को अपना मत नहीं बदलना चाहिए।

—आजकल के दल-बदलू नेताओं की प्रेरणा के निमित्त यह कहावत बहुत उपयोगी है। पर स्वार्थ के अंधे को कुछ दिखता भी तो नहीं। वह कुछ भी समझने को तैयार नहीं होता।

सूरा तेही साचा, ज्यांरा बैरी करै बखांण। १४१३७

शूर वे ही सच्चे, जिनके बैरी करें बखान।

—घरवाले तो अपने कायर परिजन की भी निंदा नहीं करते, लेकिन मोह से सराबोर उनकी राय का कुछ अर्थ नहीं होता। लेकिन शूरवीर का प्रमाण-पत्र तो घरवालों का नहीं बैरियों का मान्य होता है। दुश्मन जिसकी प्रशंसा करें, वही सच्चा शूरवीर है।

सूरा सो पूरा। १४१३८

शूरा सो पूरा।

—जो शूरवीर है, वह अपने-आप में संपूर्ण व्यक्तित्व का धनी है। वह पूर्ण मनुष्य है।

—शूरवीर की भाँति हर प्रतिभा-संपन्न व्यक्ति अपने वजूद में पूर्ण होता है।

—अंधा व्यक्ति बहुत होशियार, चालाक और बुद्धिमान होता है। ललाट की दो आँखें मुँदने पर उसके रोम-रोम में कई नेत्र खुल जाते हैं।

सूरौ सूतौ नींद में, भूंडण पौरौ देय। १४१३९
उठौ सूरा निंदाळ्का, फौज हिलोळा लेय॥

सूरा सूता नींद में भूँडण पोहरा देत।
उठो सूर नींदालका फौज हिलोरें लेत॥

भूंडण = सूअरनी।

—जंगली सूअर पहाड़ पर सो रहा था। भूँडण (सूअरनी) उसका पहरा दे रही थी। जब उसे भनक पड़ी कि शिकारियों ने पहाड़ को चारों ओर से घेर लिया है, तब वह सूअर को सतर्क रहने के लिए जगाती है। कहती है—नींद त्यागो और दुश्मनों पर अंधे होकर टूट पड़ो। घेरे को तोड़ डालो, मरकर भी इन दुष्टों की मनचाही मत होने देना।

—सूअर प्रतीक है वीरों का और सूअरनी प्रतीक है स्त्रियों की जो अपने शूरवीर पतियों को युद्ध के लिए उकसाती हैं।

सूळी ऊपर जा पण, सौक ऊपर मत जा। १४१४०

सूली ऊपर जा पर शौक ऊपर मत जा।

—शौक या फैशन एक ऐसा चस्का है कि वह मनुष्य को अंततः बर्बाद करके ही छोड़ता है। शौक केवल कपड़ों का नहीं—खाने-पीने का, देखने-सुनने का, काम-तृप्ति के लिए औरतें बदलने का व्यसन का और जुए का। इन सब बातों का शौक मनुष्य को काम करने की प्रवृत्ति से हटा देता है। वह निष्क्रिय हो जाता है। सूली मनुष्य को जल्दी मारती है और शौक उसे धीरे-धीरे समाप्त करता है।

—दूसरा अर्थ यह भी है कि सौत की यातना सूली से भी ज्यादा होती है। रोजमर्रा के कलह से तो जल्दी मरना बेहतर है।

सूवणौ तौ रात रौ व्हौ भलां ई रेत ई। १४१४१

सोना तो रात का हो भले रेत ही।

—पेट भरने के प्रपंच में कई व्यक्ति रात भर काम करते हैं और दिन को जस-तस नींद निकालते हैं, पर सोना तो रात के अँधियारे में, तारों को निरखते हुए और चाँदनी में नहाते हुए ही तो श्रेष्ठतम है। उसका कोई मुकाबला नहीं, बिछौने की बजाय रेत ही क्यों न हो।

—प्रकृति ने रात सोने के लिए बनाई है और दिन मेहनत करने के लिए। प्रकृति के नियमों की अवहेलना करना भी स्वास्थ्य के लिए उचित नहीं है।

सूवता नै बिछावणौ लाधौ। १४१४२

सोते हुए को बिछौना मिला।

—इच्छा होते ही कोई अचीती सुविधा मिल जाय, तब...।

—मंशा के अनुरूप किसी कार्य में सफलता मिल जाय, तब...।

—आकांक्षा के अनुकूल काम होना।

सूवतौ ई पादै, तौ रात दौरी काढ़ै। १४१४३

सोते ही पादे तो रात मुश्किल से निकाले।

—किसी काम की शुरुआत में ही मन खट्टा हो जाय तो उसमें मनवांछित सफलता नहीं मिलती।

—कोई काम प्रारंभ करते समय उसमें अशुभ-अड़चन आ जाय तो उसकी सफलता संदिग्ध हो जाती है।

दे.क.सं.७८००

सूवा जैड़ौ सुख नीं, मूवा जैड़ौ दुख नीं। १४१४४

सोने जैसा सुख नही, मरने जैसा दुख नहीं।

—नींद के दौरान मनुष्य सब प्रकार की चिंताओं से मुक्त हो जाता है। सुहाने सपने देखता है। जीवित रहते हुए भी मरना और मरते हुए भी जीवित रहने का यह एक अलौकिक ही आनंद है जो नींद के बिना किसी भी सूरत में प्राप्त नहीं किया जा सकता। और इसके विपरीत मरने की कल्पना के दुख का भी कोई पार नहीं है। धीरे-धीरे साँस लेना, उसकी हलकी-हलकी आवाज सुनना, आँखों से चारों ओर का परिदृश्य देखना, कानों से सभी प्रकार की ध्वनियाँ सुनना, प्रेम की बातें करना, वियोग में आहें भरना इत्यादि ये सारे आनंद

मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाते हैं। मरने पर न प्यास लगती है, न भूख और न काम-वासना ही जागृत होती है, इससे बड़ी त्रासदी और क्या हो सकती है!

सूवै उखरड़ी माथै अर सपना जोवै महलां रा। १४१४५

सोये घूरे पर और सपने देखे महलों के।

दे.क.सं.११८५

सें-सै

सेंग दाड़ो तपत्या तापत्यो हूं। – भी.७५३ १४१४६

दिन भर तपस्या की है।

—कोई व्यक्ति किसी काम को दिन भर अथक मेहनत से करे और मालिक उसका सही रूप में मूल्यांकन नहीं कर सके और कहे कि काम संतोषप्रद नहीं हुआ, तब मजदूर अपनी सफाई में इस कहावत का प्रयोग करता है।

—किसी भी योग्य व्यक्ति के काम का सही आकलन नहीं करने पर।

सेंठां री संकरांत है। १४१४७

बड़ों की संक्रांति है।

दे.क.सं.१२६३४

सेंठा भेळी लट खाईजै। १४१४८

ईख के साथ लट भी खाई जाती हैं।

—दोषी के साथ किसी निर्दोष को वैसी ही सख्त सजा मिले, तब।

—संगति का अच्छा-बुरा फल तो भोगना ही पड़ता है। इसलिए किसी की भी संगति बहुत सोच-विचारकर करनी चाहिए।

सेंत-मेंत रौ चंदण घस रै लाल्या, थूं ई घस, थारै घरवाळां नै बुलाल्या। १४१४९

मुफ्त का चंदन घिस रे लाला, तू भी घिस, तेरे घरवालों को भी बुलाला।

—मुफ्त की चीज का उपयोग करने के लिए सभी लालायित रहते हैं।

—यह एक अजीब मानसिक विकार है कि मुफ्त की वस्तु का आनंद नकद खरीदी हुई वस्तु की अपेक्षा ज्यादा मिलता है।

सेंत-मेंत रौ माल मसखरा खावै। १४१५०

मुफ्त का माल मसखरे खाते हैं।

—जिस किसी व्यक्ति के हाथ मुफ्त का माल लगता है,वह ठहरता नहीं,उसे दूसरे उड़ा जाते हैं।

—मुफ्त के माल की कद्र नहीं होती,इसलिए उसकी कोई परवाह नहीं करता,उसे उड़ाने में आनंद आता है। इसके विपरीत पसीने की खरी कमाई खर्च करते हुए दस बार सोचना पड़ता है।

सेंपरड़ै चरयोड़ी, घण दूधाळ अर घण मोली। १४१५१

डटकर चरी हुई, खूब दूध वाली और कीमती।

—संयोग से ऐसी गाय-भैंस मिल जाय तो-और क्या चाहिए?

—जब भ्रष्ट अधिकारी ने दबंग होकर हर किसी से रिश्वत ली हो,तब उसके ठाट में क्या कमी रह जाती है।

सेंस अकल रौ सींदरौ, दस अकल री दड़ी। १४१५२
आछी म्हारी अेक अकल, ऊभै मारग पड़ी॥

सहस्र अक्ल की रस्सी, दस अक्ल की दड़ी।
अच्छी मेरी एक अक्ल, सीधी राह पड़ी॥

दड़ी = गेंद।

संदर्भ-कथा: किसी एक जंगल में साँप,सेवला और सियार में गाढ़ी दोस्ती थी। वे दिन-भर जंगल में आहार-विहार करने के पश्चात् शाम को इकट्ठे हो जाते। घरेलू बातों के अलावा इधर-उधर की गपशप भी कर लेते थे। एक दिन साँप तनिक गंभीर नजर आया। उसने सियार की तरफ टेढ़ी निगाह से देखते हुए कहा,'जहाँ भी जाता हूँ सब जगह तेरी बुद्धि की तारीफ सुनता हूँ कि जंगल में कोई जानवर तेरा मुकाबला नहीं कर सकता। इसी तेज बुद्धि के कारण

जंगल का शेर तुम्हें दीवान बनाता है। क्यों, हम से भी तुम गीदड़ों में ज्यादा अक्ल है। हम शेष-नाग के वंशज हैं, जिसके फन पर पृथ्वी टिकी है, समझे। तुम सबने हुक्की-हुक्की करके अपना प्रचार करने में कोई कसर नहीं रखी। तू मेरा मित्र है, सो तो अच्छी बात है। अब तू ही बता, तुझ में मुझसे ज्यादा बुद्धि है?'

सियार ने अत्यंत विनम्रतापूर्वक कहा, 'जंगल के दूसरे जानवरों की जबान तो मैं बंद नहीं कर सकता। लेकिन मुझे अपनी बुद्धि के बारे में कोई मुगालता नहीं है। केवल बुद्धि ही क्यूँ, मैं किसी भी बात में आपकी बराबरी नहीं कर सकता। मित्र के सामने झूठ बोलना महापाप है। सच कहता हूँ, आप में मुझसे सौ गुना बुद्धि ज्यादा है...।' शेषनाग का वंशज सियार की बात सुनकर एकदम खुश हो गया। दर्प में झूमते हुए बोला, 'बिल्कुल ठीक कहा तूने। मेरा भी अनुमान यही था। तुझसे सौ गुनी अक्ल नहीं होती तो हम चालाक मनुष्य से बच सकते थे, भला? तुम तो सभी जंगल में रहते हो। पर हम तो निर्भय होकर मनुष्य के घर में भी डेरा जमाये रहते हैं। मनुष्य जितना हम से डरता है उतना तुम्हारे राजा शेर से भी नहीं डरता। क्यों, सच कह रहा हूँ, न?'

सियार ने सिर हिलाते कहा, 'बिल्कुल, सच कह रहे हैं। बुद्धि और हिम्मत नहीं होने के कारण हम मनुष्यों की बस्ती में जाते हुए भी डरते हैं। और इधर जंगल में ताकतवर हिंसक जानवरों से किसी तरह बचने के लिए मेरे पास तो सिर्फ एक ही अक्ल है। वह बची रहे तो काफी है। इससे ज्यादा अक्ल की हमें जरूरत ही नहीं पड़ती।'

सेवला भी अब तक दोनों मित्रों की बातें बड़े चाव से सुन रहा था। सियार की बात सुनकर खिलखिल हँसते बोला, 'बुरा न मानें तो एक बात कहूँ, तुम से दस गुनी अक्ल तो मुझ में भी है। खतरा जानकर इस तरह अपने हाथ-पाँव और मुँह छिपा लेता हूँ कि मेरा कुछ नहीं बिगड़ सकता। बता, तू छिपा सकता है मेरी तरह हाथ-पाँव?'

आज तो सियार की विनम्रता का कोई पार नहीं था। अपने दाहिने पंजे से उसकी नुकीली पीठ सहलाते कहने लगा, 'मैंने तो अपनी ऐसी अक्ल का क ी दावा नहीं किया। उलटे मैं तो चूहे से भी अपनी अक्ल का मुकाबला नहीं करना चाहत:। तुम दोनों मित्र कहो तो सबके सामने यह कबूल करने को तैयार हूँ कि मुझ में तो सिर्फ एक अक्ल है, जिसकी बदौलत जैसे-तैसे अपने प्राण बचा लेता हूँ।' साँप ने फन हिलाते कहा, 'नहीं रे नहीं, सबके सामने हम अपने मित्र का भद्दा थोड़े ही लगाएँगे। यह अपने घर की अंदरूनी बात है।'

'इतना तो मैं भी समझता हूँ कि आप दोनों से बड़ा मेरा कोई हितैषी नहीं। दोस्तो, कभी जरूरत पड़ जाय तो मेरी मदद कीजिएगा। बेचारी एक अक्ल को कहाँ-कहाँ काम में लूँ।' दोनों ने ही पुरजोर हामी भरी, 'जरूर, जरूर, मित्र की मदद नहीं करेंगे तो ढेर सारी अक्ल का अचार थोड़े ही डालना है।' सियार पूरी तरह आश्वस्त हो गया कि मित्र हों तो ऐसे हों।

और सचमुच ही कुछ ही दिन बाद सियार को मित्रों से मदद लेने की जबरदस्त जरूरत पड़ गई। साँझ की वेला वह मित्रों के पास जा रहा था कि उसे आग का पुंज दिखा तो सोचा कि डूबते सूरज की पीली रोशनी है। पर वह पुंज तो घटने की बजाय क्षण-क्षण बढ़ रहा था। सियार तुरंत समझ गया कि जंगल में आग लगी है। तेजी से दौड़ा और मित्रों के पास पहुँचते ही बोला, 'भागो, भागो। पश्चिम वाले बाँसों में आग लगी है। लगता है इस बार जंगल बचेगा नहीं।'

साँप ने बीच ही में टोकते कहा, 'जंगल में आग तो लगती ही रहती है। उसके डर से पीढ़ियों का ठिकाना तुम छोड़ सकते हो, मैं नहीं छोड़ सकता। सैंकड़ों बिल हैं, जिसमें चाहूँगा, गहरे दुबककर बैठ जाऊँगा। तुम तो खामखाह घबरा रहे हो।' सेवले ने भी जाने से मना कर दिया। कहा, 'आग पास आई नहीं और वह सीधा बिल के भीतर। मेरी चिंता तुम करो...।'

आग का पुंज बहुत बढ़ गया था। सियार ने दोनों मित्रों की ओर देखते कहा, 'मगर मुझे तो अपनी चिंता करनी होगी। मैं तो चला।' और इतना कहते ही सियार तो आग की विपरीत दिशा में तेजी से दौड़ा तो कुछ ही देर में खतरे की सीमा से बाहर निकल गया।

सचमुच आग बड़ी भयंकर थी। रात-भर में सारे जंगल को लील गई। सियार को आशंका थी कि दोनों मित्र कहीं आग की चपेट में तो नहीं आ गये? कुछ दिन पश्चात् आग ठंडी होने पर वह मित्रों की तलाश में निकला। कैसा हरा-भरा जंगल था, राख का काला-स्याह मैदान बन गया। कई जानवर जल गये थे। आखिर खोजते-खोजते उसने दोनों मित्रों को खोज तो लिया, पर पहिचानने में काफी जोर पड़ा। दोनों ही एक दूसरे से काफी दूर अपने-अपने बिल के पास जले पड़े थे। लगता है आग पास आते ही वे बिलों में दुबक गये थे। पर बेइंतहा गर्मी बर्दाश्त नहीं होने के कारण वापस बाहर निकल आये और फिर अंदर नहीं जा सके। साँप के बदले जली हुई निर्जीव रस्सी जमीन से चिपकी पड़ी थी। और दूसरे बिल के पास जली हुई-सी एक गेंद नजर आई। सियार तुरंत समझ गया कि वह सेवला ही है। दोनों ही मित्र किस तरह जलते हुए छटपटाये होंगे। कितना समझाया, पर माने नहीं। फिर साँप की सौ और

सेवले की दस अक्ल कहाँ घास चरने गई थीं ? सियार की आँखें भर आईं। मित्रों की वैसी दुर्दशा देखना तक असह्य हो रहा था। लौटते हुए भर्राये गले से फुसफुसाया—सेंस अकल रौ सींदरौ, दस अकल री दड़ी। म्हारी अेक अकल बापड़ी सीधै मारग पड़ी।

—जहाँ सहज-बुद्धि से काम बन जाता है, वहाँ तेज बुद्धि से बिगड़ने की संभावना रहती है। ज्यादा बुद्धिमान होना भी कई बार हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

सेखचिल्ली वाळौ घर है। १४१५३

शेखचिल्ली वाला घर है।

संदर्भ-कथा : एक बनिया किसी तेली में रुपये माँगता था। कई बार चक्कर काटने पर रुपये नहीं पटे तो उसने सफेद तिल्ली के तेल का ही सौदा कर लिया। तेली भोला था। बनिये ने उसे भाव से भी काटा और तौल में भी। वहीं से मुफ्त में मिट्टी का एक घड़ा लिया जो तेल से पका हुआ था। बनिये का गाँव दो कोस दूर था। उसने नौकर के बारे में सोचा ही था कि संयोग से शेखचिल्ली उधर से गुजरा। उसकी एक खास आदत थी, जो भी मजूरी मिल जाय, वह अदेर मान जाता। बनिये ने टका देने की बात कही तो वह खुशी-खुशी मान गया। शेखचिल्ली की एक विशेषता और थी कि सर पर कुछ वजन धरते ही वह घड़ी की सुइयों के उनमान घूमने लगता था। सो तेल के घड़े का वजन सिर पर पड़ते ही वह हरकत में आ गया। सोचने लगा कि टके में तो सिर्फ मुर्गी का एक अंडा ही आ सकता है। पर अंडे की करामात भी तो कम नहीं। उससे चूजे निकलते हैं और चूजे ही बड़े होकर मुर्गे बनते हैं। ऐसा योग फिर कब जुड़ेगा ? पड़ोस में ही मुर्गीवाला मियाँ रहता है। कुछ दिन अंडा सेने पर चूजा निकलेगा। वह निश्चित रूप से मुर्गी ही होगी। मुर्गी रोज एक अंडा देगी। क़माल है खुदा का। कुछ ही दिनों के बाद घर में मुर्गे-मुर्गियों का झुंड तैयार हो जाएगा। फिर अंडों की क्या कमी। टकों से झोली भर लो। जब टकों की पाँच-सात थैलियाँ हो जाएँगी—वह एक बीवी लाएगा। गोरी-चिट्टी और भोली। होशियार बीवी किसके पास टिकी है भला ? बीवी आएगी तो समय पर बच्चे भी होंगे। खूबसूरत। गोरे चिट्टे। नजर न लग जाय इसलिए बीवी को सख्त हिदायत देगा कि सब बच्चों के ललाट पर और गालों पर काजल की बिंदियाँ दे। सर्दियों में जब बीवी अपने हाथ से गर्म-गर्म रोटियाँ और गोश्त बनाकर रखेगी तो वह रसोई के बाहर आँगन में बैठ जाएगा। बच्चे खाने का कहने के लिए आएँगे तो हाथ से मना कर देगा। प्यारी

बीवी उन्हें फिर भेजेगी तो कहेगा—जरा ठहरो। मकान की दूसरी मंजिल बन रही है। खाने की बजाय घर की दूसरी मंजिल ज्यादा जरूरी है। बच्चे अचरज से पूछेंगे—दूसरी मंजिल? तब वह खुलासा करते कहेगा, 'हाँ, दूसरी मंजिल। शादी करने के बाद अलग नहीं सोओगे?' तब बच्चे हुल्लड़ मचाते हुए माँ के पास जाएँगे। माँ उन्हें तिबारा समझाकर भेजेगी कि अब्बा रोटी नहीं खाएँगे तो घर में कोई भी रोटी नहीं खाएगा। न खाएँ। दूसरी मंजिल का बनना बहुत जरूरी है। तीसरी बार पाँव पटककर जोर से कहेगा—नहीं खाऊँगा, नहीं खाऊँगा।

लेकिन यह क्या? मना करने के साथ उसने जोर से सिर हिलाया तो घड़ा सख्त जमीन पर गिर पड़ा और गिरते ही चूर-चूर हो गया। बंधन से छूटते ही तेल इधर-उधर बहने लगा। बनिये का बुरा हाल। शुद्ध तेल की यह दशा देखी तो वह जोर-जोर से रोने लगा। शेखचिल्ली को बनिये का रोना बड़ा अखरा। बेवकूफ कहीं का, एक नाकुछ तेल के लिए रो रहा है? उसका तो भरा-पूरा घर बिखर गया तब भी उफ्फ नहीं की। घर की याद आते ही वह भी जोर-जोर से रोने लगा। शेखचिल्ली का रोना सुनते ही बनिया उसी क्षण चुप हो गया। उसके पास जाकर पूछा, 'मेरा तो तेल से भरा घड़ा फूट गया, इसलिए रो रहा हूँ। पर तुम खामखाह क्यों चिल्ला रहे हो। दिमाग तो नहीं चल गया तुम्हारा।'

शेखचिल्ली ने रोते-रोते ही जवाब दिया, 'दिमाग तो तुम्हारा चल गया लगता है जो तेल के एक घड़े की खातिर चिल्लाने लगे? फिर मेरा तो बना-बनाया घर उजड़ गया, उसके लिए रोऊँ भी नहीं।'

—शेखचिल्ली का घर तो जितना जल्दी बनता है, उससे पहिले ढह जाता है।

—कल्पना के घर तो यों ही बनते हैं और यों ही बिगड़ते हैं।

सेखाजी नै भातौ आयौ। १४१५४

शेखा के लिए भाता आया।

भातौ = किसी खेत में काम करने वाले व्यक्ति के लिए खेत में भेजा जाने वाला भोजन।

संदर्भ-कथा: एक किसान की भैंस दलदल में फँस गई थी। एक सियार ने भैंस को फँसे देखा तो मन-ही-मन बहुत खुश हुआ। यह तो घर बैठे गंगा आई। कई दिनों तक मांस खाने का मजा आ जाएगा। वह छलाँगें भरता हुआ भैंस की ओर बढ़ा। जब भाग्य ही विमुख हो तो क्या किया जाए? भैंस से सातेक हाथ की दूरी पर वह भी फँस गया। काफी जोर लगाया पर निकल नहीं सका। बोला, 'यह लो, ऐन मौके पर कैसी बुरी हुई?'

भैंस ने हँसते हुए कहा,'अभी कहाँ हुई ? मेरे मालिक को आने दे। जेई की एक ठोकेगा और दो उघड़ेंगी।' भैंस का इतना कहना हुआ कि उसे अपना स्वामी दिखाई दिया। कंधे पर लंबी जेई रखी थी। भैंस ने फिर मजाक में कहा,'यह आ गया तुम्हारे लिये भाता। आराम से खाना।'

थोड़ी देर बाद सियार की पीठ पर जेई की धमाधम उड़ने लगी।

—किसी को अपने किये का हाथोंहाथ फल मिल जाय, तब...।

सेखा री तळाई अर सेखा सूं ई टर। १४१५५

सियार का तालाब और सियार से ही टर्र।

—जब कोई बदमाश अधिकृत व्यक्ति को ही अपने अधिकार से वंचित करना चाहे, तब...।

—जब कोई अनधिकृत व्यक्ति सही उत्तराधिकारी को धमकाने की चेष्टा करे, तब...।

सेज बिना पांनौ नीं आवै। १४१५६

सेज के बिना दूध नहीं आता।

—सहवास के बिना गर्भ नहीं ठहरता और प्रसव के बिना स्तनों में दूध नहीं आता।

—कारण के बिना कोई भी परिणाम संभव नहीं।

सेज री माखी ई भूंडी। १४१५७

सेज की मक्खी भी बुरी।

—सौत तो कैसी भी हो वह बुरी है।

—सौत की उपस्थिति असह्य होती है।

सेठ कद हांकरै के नफौ घणौ। १४१५८

सेठ कब हामी भरे कि नफा बहुत है।

दे.क.सं.८९४१

पाठा : सेठ कद हांमी भरै के लाभ व्हियौ।

सेठ बोलै सो सवा बीस। १४१५९

सेठ बोले सो सवा बीस।

—बड़े व्यक्तियों की बात का सभी समर्थन करते हैं, उनके मुँह से जो भी निकलता है, वह सच ही निकलता है ।

—श्रीमंतों की बात सबको सही लगती है ।

सेठ रै अगाड़ी अर घोड़ा री पिछाड़ी सूं बचणौ । १४१६०

सेठ के आगे और घोड़े के पीछे से बचना जरूरी है ।

—सेठ के सामने होकर कोई असामी निकले तो वह उसे कुछ-न-कुछ बेगार बता ही देता है । घोड़े के पीछे चलने पर वह लात झाड़ देता है । इन दोनों ही परिस्थितियों से दूर रहने की चेष्टा करनी चाहिए ।

—धूर्त और दुष्ट से जहाँ तक बन पड़े दूर रहना ही लाभदायक है ।

मि.क.सं. २६७८,३२०५,५६५२

सेठ रै पेट में पापां री पोट । १४१६१

सेठ के पेट में पापों की गठरी ।

दे.क.सं.८९१५

सेठां ! आंबा-हळ्द रौ कांई भाव के पीड़ परवांण । १४१६२

सेठजी ! आँबा-हल्दी का क्या भाव कि पीड़ा के अनुसार ।

दे.क.सं.५७८

सेठां, कंवर-सा कैड़ा के तावड़ा रौ रेसौ ई खराब नीं करै । १४१६३

सेठजी, कुँअरजी कैसे हैं कि धूप का रेशा भी खराब नहीं करते ।

संदर्भ : जो व्यक्ति किसी भी बात को स्पष्ट न कहकर संकेत द्वारा समझाये ताकि मनमुटाव न हो । किसी लड़के की सगाई करने के लिए लोग आये तो उन्होंने लड़के के बारे में एक बनिये से पूछा तो बनिया धर्म-संकट में फँस गया । लड़का बिना किसी काम के दिन भर बाहर भटकता था । सीधा कहना तो उचित नहीं । तब उसने लपेटकर सच्चाई प्रकट कर दी कि लड़के का क्या कहना है, धूप का एक रेशा भी बेकार नहीं गंवाता ।

—दिन भर मटरगश्ती करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

सेठां, कंवर-सा कैड़ाक के पांणी री छांट ई खराब नीं करै । १४१६४

सेठजी, कुँअरजी कैसे कि पानी की बूँद भी खराब नहीं करते ।

संदर्भ : पिछली उक्ति से मिलती-जुलती ही यह कहावत है । सिर्फ कथन का फर्क है । एक ठाकुर का कुँअर कभी स्नान नहीं करता था । सगाई करने आये मेहमानों ने सेठ से पूछा तो उसने तथ्य लपेटकर प्रकट किया कि कुँअरजी का तो जवाब ही नहीं, पानी की बूँद भी खराब नहीं करते ।

—स्नान से परहेज रखने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

सेठां, गांव में मल्ल आया के बैठोड़ा नै तौ पटकै कोनीं । १४१६५

सेठजी, गाँव में मल्ल आये कि बैठे हुओं को तो नहीं पटकेंगे ।

—जो व्यक्ति अपने काम से काम रखे, बाकी किसी बात से वास्ता नहीं रखे । गाँव में पहलवान आये चाहे बाजीगर, बनिये के लिए तो अपने धंधे के अलावा दुनिया का कोई अस्तित्व ही नहीं होता । तराजू भला और बटखरे भले ।

—जो व्यक्ति जोखिम के काम में हाथ डाले ही नहीं, उसे कैसा नुकसान ?

पाठा : काका ! गांव में मल्ल आया के बैठोड़ा नै तौ नीं पटकै ?

गांव में मल्ल आया के बैठोड़ा नै तौ नीं पटकै ?

सेठां, थांरी छुरी हेटै पड़गी, के डोफा आ तौ कलम है के म्हारै गळै तौ आ इज फिरी । १४१६६

सेठजी, आपकी छुरी नीचे गिर गई कि बेवकूफ यह तो कलम है कि मेरे गले पर तो यही फिरी थी ।

संदर्भ-कथा : एक बनिया बगल में बही दबाये और कान में कलम खोंसे हुए अपनी हाट पर जा रहा था । पीली पगड़ी । नीची मूँछें । एक भुक्तभोगी असामी उसके पीछे नंगे पाँव चल रहा था । फटी धोती और चिंदी-चिंदी मैले-कुचैले साफे के अलावा उसके शरीर पर कुछ भी बेकार कपड़ा नहीं था । सिर और अंग की लाज ढकना जरूरी था । अचानक किसी चीज के गिरने की हलकी-सी भनक उसके कानों में पड़ी । उसने अपनी नैतिक जिम्मेदारी का निबाह करते हुए सेठजी को आवाज देकर कहा, 'सेठजी ! आपकी छुरी नीचे गिर गई ।' सेठ ने चौंक कर पीछे देखा । आश्चर्य से दोहराया, 'छुरी ? कैसी छुरी ? मुझे छुरी से क्या वास्ता ?'

तब निरीह असामी ने सहज भाव से इशारा करते हुए कहा, 'यह पड़ी है, न ?' अब कहीं सेठ को उस गँवार की बेवकूफी नजर आई। व्यंग्य में मुस्कराते कहा, 'मूर्ख कहीं का, यह तो मेरी कलम है, कलम !'

मूर्ख असामी ने रुँधे गले से कहा, 'लेकिन मेरे गले पर तो यही चली थी।' सेठ ने कुछ भी जवाब नहीं देकर चुपचाप अपनी कलम उठाई, कान में खोंसी और खखारकर अपनी राह चल पड़ा।

—श्रेष्ठ वस्तु भी यदि बुरे काम में आये तो वह बुरी ही है।

—बोहरे की कलम भी किसी आततायी की तलवार से कम नहीं होती।

—शोषण करने के अपने-अपने हथियार होते हैं और अपने-अपने तरीके।

सेठां ! थांरी बहियां राज में लेयग्या के बंचावैला तौ म्हारा सूं ई ! १४१६७

सेठजी ! आपकी बहियाँ राज में ले गये कि बँचाएँगे तो मुझ से ही !

—कितना निश्चिंत है बनिया ! उसके घर राज का छापा पड़ा और दरबारी उसकी बहियाँ जब्त करके ले गये तो क्या हुआ ? उसकी बहियाँ बाँचने वाला तो राज्य में कोई दूसरा है नहीं। जो मन में आएगा, वही बाँचेगा। कौन गलती निकालने वाला है ?

—समाज-कंटकों के बचाव की खातिर बीसियों रास्ते हैं, उन्हें कोई भी राज्य दंडित नहीं कर सकता।

—राज्य से भी बड़ी ताकत पैसों की है। या यों कहा जाय तो ज्यादा उचित होगा कि पैसे वाले ही राज्य चलाते हैं।

पाठा : सेठां ! थांरी बहियां राज में लेयग्या के बांचण नै तौ म्हनै ई बुलावैला।

सेठां ! दस्सा के बीसा ? नीं दसा नीं बीसा, साढ़ी बाईसा ! १४१६८
किसा गोता के करणी पोता, जीम लिया तौ मनावौ तैंतीसा ॥

सेठजी ! दस्सा कि बिस्सा ? न दस्सा न बिस्सा, साढ़े बाईसा।
कौनसा गोत्र कि करनी पौत्र, जीम लिये तो मनाओ तैंतीसा ॥

—जो व्यक्ति बिना आमंत्रण के कहीं खाने पर पहुँच जाय तो वह अनादर-पूर्वक ही बाहर निकाला जाता है।

—सम्मान-पूर्वक निमंत्रण न मिले तो कहाँ भी नहीं जाना चाहिए। उससे गरिमा बनी रहती है।

सेठां ! दुखी क्यूं, के समझां ज्यूं ! १४१६९

सेठजी ! दुखी क्यों कि समझते हैं !

—इस प्रश्नोत्तर की कहावत में सेठ के बहाने दुनिया के बहुत बड़े प्रश्न का निवारण करने की समर्थ चेष्टा है कि सेठजी दुखी क्यों हैं ? बहुत गंभीर प्रश्न है जिसका समुचित उत्तर सिर्फ दो शब्दों का ही है कि समझते हैं ? नहीं समझने वाला सब-तरह की समस्याओं से चितामुक्त है। देश पर विदेशी आक्रांताओं का हमला हो तो उसे चिंता नहीं, देश गुलाम हो तो उसे कोई वास्ता नहीं, आजाद हो तो उसे कोई खुशी नहीं। वह अपनी नासमझी में हरदम गोते लगाता रहता है। लेकिन समझने वाले को कदम-कदम पर चिंताएँ सताती हैं कि अधिकांश लोग गरीब क्यों हैं और कुछ लोग अमीर क्यों है ? क्या इसके लिए भाग्य की दुहाई देना काफी है ?

—खर, गोगू, मूरख, पसु सदा सुखी परथीराज। गधा, उल्लू, मूर्ख और पशु हमेशा सुखी रहने हैं। और इसके विपरीत समझने वाला सदैव उदास रहता है।

पाठा : सेठां ! दुमना क्यूं के समझां ? सेठां, दुखी घणा के समझां जिण सूं।

सेठां ! दुमना कीकंर के लोभ खातर। १४१७०

सेठजी ! उदास क्योकर कि लोभ की खातिर।

—प्रश्न तो एक ही है कि सेठजी ! उदास क्योंकर ? लेकिन उत्तर पिछली कहावत से एकदम विपरीत है कि लोभ की खातिर। दोनों ही उत्तर समान रूप से महत्त्वपूर्ण और सही हैं। समझने वाला हर बात से दुखी रहता है और लालची भी हमेशा उदास रहता है। यदि चाँदनी और फूलों की महक से उसका लोभ पूरा न हो तो वह दुखी हो जाता है ? और बुद्ध समझते थे, इसलिए दुखी थे। बूढ़े को देखा तो दुखी हो गये। मुरदे को चिता में जलते देखा तो दुखी हो गये ? और हम सभी सुबह शाम ये दृश्य देखते हैं, पर दुखी नहीं होते, हाँ क्षणभर के लिए प्रभावित जरूर हो सकते हैं। और एक वह भी मनुष्य है जो मसान की लकड़ियों से भी कमाई करना चाहता है। और उधर अपनी समझ के कारण बुद्ध

अपना छोटा-बड़ा राज्य गोबर की नाईं छोड़कर सारी दुनिया को दुख से मुक्त करने के लिए तपस्या में लीन हो गये।

—लोभ ही दुनिया में समस्त दुखों का एकमात्र कारण है।

सेठां ! दुमना क्यूं के सैंधा नीं मिळ्या। १४१७१

सेठजी ! उदास क्यों कि परिचित नही मिले।

—एक ही प्रश्न के कितने विभिन्न उत्तर हो सकते हैं पर सभी सही और समीचीन भी हों यह बड़ा मुश्किल है। लेकिन लोक-मानस के लिए कितने सहज और सरल हैं। सेठजी ! उदास क्यों हैं कि समझते हैं। सेठजी ! उदास क्यों हैं कि लोभ की खातिर। सेठजी ! उदास क्यों हैं कि परिचित नहीं मिले। और उधर परिचित यह सोचकर खुश होते हैं कि दुकानदार जरूर उनका लिहाज रखेगा। वह भाव-ताव भी करना शोभनीय नहीं समझता। लेकिन जो व्यक्ति लोभ की मंशा से कमाई करना चाहता है, उसका कोई सगा नहीं होता। उलटे वह तो परिचितों से ज्यादा मुनाफा कमाता है, इसलिए परिचित उस पर भरोसा करते हैं और वह भरोसे का फायदा उठाना जानता है।

—कोई भी दुकानदार परिचितों से ज्यादा मुनाफा कमाता है।

सेठां ! निंवतौ जोखजौ के पेढ़ी माथै तौ चढ़ण दै। १४१७२

सेठजी ! पलड़ा भारी रखना कि पेढ़ी पर तो बैठने दे।

दे.क.सं.७४६७

सेठां री गीगली मांस में कांई समझै ? १४१७३

सेठजी की बेटी माँस में क्या समझे ?

दे.क.सं.८९२१

सेठां ! लोढ़ीज्या कीकर के लाभ रै भरोसै। १४१७४

सेठजी ! घाटा क्योंकर हुआ कि लाभ के भरोसे !

—कई बार लाभ की आशा में घाटा हो ही जाता है तो मन मारकर सहन करना पड़ता है।

—खरीदी हुई हर वस्तु पर लाभ ही हो, यह जरूरी नहीं।

—दुनिया में अधिकांश बेचैनी लाभ और लोभ की वजह से ही होती है।

सेठां वाळौ ब्याव । १४१७५

सेठजी वाला ब्याह ।

संदर्भ-कथा : जहाँ धन होता है, वहाँ चोर तो बिना निमंत्रण के ही पहुँच जाते हैं। और अपने हुनर की जो कुछ भी कला वे जानते हैं, उसमें कमी नहीं रखते। और उधर धन का संचय करने वाले बनिये भी अपने हुनर में कम माहिर नहीं होते। तो भगवान सबको सुमति दे कि एक चोर धन की कमी को पूरा करने के लिए सेठ के घर सेंध मारकर अंदर घुसा। संयोग ऐसा बना कि सेठ-सेठानी ने चोर को देख लिया पर वे इस तरह चुप रहे, मानो कुछ भी नहीं देखा हो। और उधर चोर ने भी उन्हें देख लिया। साहसी था। भागने की बजाय खंभे के पीछे छिप गया। अमावस का स्याह अँधेरा फैला था। चोर को सहज ही यह विश्वास हो गया कि घर के मालिकों ने उसे नहीं देखा। देखते तो चिल्लाये बिना नहीं रहते। वापस ओरी में जाएँगे तो मजे से हाथ साफ कर लेगा। लेकिन सर्दी के बावजूद सेठ-सेठानी अंदर नहीं गये। सेठ को एक चुहल सूझी। उसने सेठानी से कहा, 'कल की बात है पर आज अपने ब्याह को पचास बरस हो गये। मुझे गठ-बंधन की भाँवरें आज भी उसी तरह याद हैं। आज उस याद को फिर ताजा करना चाहता हूँ? मेरा गुलाबी साफा लाना तो जरा, हाँ, उस दिन गठ-बंधन का कपड़ा भी गुलाबी था। मुझे आज की तरह याद है।' सेठानी पति की आदतों से पूर्णतया परिचित थी। चुपचाप कमरे में गई और साफा ले आई। सेठ ने साफे का एक छोर मुँह पर रखा और बाकी साफा सेठानी को सँभलाते हुए कहने लगा, 'मैं दो कदम आगे-आगे चल रहा था और तुम पीछे-पीछे पाँव घसीटते हुए चल रही थी। मुझे आज ज्यों याद है। कल आपस में थोड़ी अनबन हो गई थी, आज नये सिरे से भाँवरे फिरकर उसे मिटा देते हैं। पति-पत्नी में अनबन ठीक नहीं।'

चोर मन-ही-मन हँसा। कैसे बेवकूफ हैं। अनबन भला यों मिटती है? आठ-दसेक जूते सेठानी के सिर पर झटकने थे, सारी अकल ठिकाने आ जाती। बस, ये कमरे में घुसे नहीं कि साफे के आँटे खोलकर अपना हुनर दिखा दूँगा।

कुछ ही देर में सेठ-सेठानी ने भाँवरें खाकर साफे का खुला छोर मजबूती से पकड़ लिया। चोर के हाथ बँधे थे। गला भी बँधा था और पाँव भी। दोनों पति-पत्नी एक साथ जोर से चिल्लाये—चोर, चोर। ठंडी और निस्तब्ध रात थी। कुछ ही क्षण बाद अड़ोसी-पड़ोसियों ने दरवाजा खटखटाया तो सेठानी ने झट दरवाजा खोल दिया। फिर कैसी ढील? लोगों ने और ज्यादा कसकर चोर को रस्सियों से बाँध दिया। बँधे हुए चोर को भी वे पीट नहीं सके।

बनियों के हाथ नहीं चलते, बुद्धि चलती है। पर ठाकुर के कारिंदे सिर्फ हाथ चलाना ही जानते थे, सो उन्होंने जमकर हाथ चलाये।

—बनियों की बुद्धि वक्त पर खूब काम देती है, चोर उसका मुकाबला नहीं कर सकते।

सेठां ! सूवौ कठै के सूवां हाटां, सूवां बाटां, सूवां अर सूवां ई कोनीं। १४१७६

सेठजी ! सोते कहाँ हो कि सोयें हाट, सोयें बाट, सोयें और सोयें भी नहीं।

संदर्भ-कथा : एक चोर ने सुराग लगाने के लिए, दुकान से घर लौटते हुए एक बनिये को पूछा, 'सेठजी सोते कहाँ हैं ?' सेठ तो बोली सुनते ही समझ गया कि माजरा क्या है ? मुस्कराते हुए जवाब दिया,' सोयें हाट, सोयें बाट और सोयें भी नहीं। तुम्हें क्या काम है, वही बताओ, न !' काम बताने लायक नहीं था, सो चोर चुपचाप वहाँ से चलता बना।

—किसी को भी जाने-अनजाने अपना भेद नहीं बताना चाहिए।

—बेचारे चोरों की क्या बिसात कि वह बनियों की बुद्धि का मुकाबला कर सकें।

सेठां ! हेटा पड़्या लागी तौ नीं के पड़्या धूड़ खावण नै। १४१७७

सेठजी ! नीचे गिरने पर लगी तो नहीं कि पड़े धूल खाने के लिए।

संदर्भ-कथा : एक बनिये ने एक आसामी का कुआँ गिरवी लिख लिया। उसने गेहूँ-जौ की बजाय जीरा किया। और जीरा भी बड़ा लाजवाब हुआ। जिसने भी देखा—जीरे की सराहना की। लेकिन भाग्य तो बनियों का भी लिहाज नहीं रखता। इधर तो जीरा पकने पर आया और उधर ओले बरसे। जमीन से उगा जीरा, वापस जमीन के ही हवाले। छाछ में डाले जितना भी हाथ नहीं लगा। बनिये सीधी बात न करके इशारों में बात करते हैं। पड़ोसी बनिये ने पूछा, 'सेठजी, नीचे गिरने पर लगी तो नहीं ?' सेठ ने तनिक खीज भरे स्वर में उत्तर दिया कि फिर पड़े क्या धूल खाने के लिए। मतलब कि वह ऐसे-वैसे गिरने की परवाह नहीं करता।

—नुकसान का दुख तो स्वाभाविक है, पर उसका सामना धैर्य-पूर्वक हिम्मत से करना चाहिए।

सेडळ माता घोड़ौ दीजै के म्हैं ई गधै चढ़ी फिरूं। १४१७८

शीतला-माँ घोड़ा देना कि मैं ही गधे पर चढ़ी डोलती हूँ।

दे.क.सं.१३९२१

सेडळ माता भली करज्ये के आंख परवांणै फूलौ करस्यूं । १४१७९

शीतला-माँ भली करना कि आँख के अनुसार फूली करूँगी ।

—चेचक की देवी शीतला माता का प्रकोप होने पर सारा शरीर मवाद के फोड़ों से भर जाता है । मुँह पर के दाग तो कभी मिटते ही नहीं । कभी-कभार आँखों में भी फोड़े हो जाते हैं । फूली पड़ने पर आँख चली जाती है और बड़ी भद्दी दिखने लगती हैं । देवी के प्रकोप से बचने के लिए लोग हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं—हे शीतला-माँ भली करना ? तब वह आश्वस्त करते हुए जवाब देती है—घबराओ मत,आँख से बड़ी फूली नहीं करूँगी । इससे बड़ा शुभ-चितक भला और कौन हो सकता है ? देवी लाख चाहे तब भी आँख से बड़ी फूली नहीं हो सकती ।

—दुष्ट लोगों से किसी भी प्रकार के भले की आशा रखना व्यर्थ है ।

सेडा में दूध रौ स्वाद व्है तौ दुवारी नीं व्हैती । १४१८०

सेडे मे दूध का स्वाद हो तो दुहारी नही होती ।

—बुरी वस्तुओं से काम निकलता हो तो भला उन्हें कौन छोड़ना चाहेगा ?

—घृणित वस्तुओं का उपयोग होने लगे तो फिर अच्छी वस्तुओं के दाम कौन खर्चना चाहेगा ।

—बुरी वस्तुएँ काम नही आती,इसलिए तो अच्छी वस्तुओं की पूछ है ।

सेडावू दूध व्है जैड़ौ । १४१८१

धारोष्ण दूध हो जैसा ।

—जिस व्यक्ति का मन दूध की तरह उजला और पवित्र हो ।

—निष्कपट निर्मल व्यक्ति के लिए ।

सेनापति नै जोर सेना रौ अर सेना नै जोर सेनापति रौ । १४१८२

सेनापति को जोर सेना का और सेना को जोर सेनापति का ।

—कितना ही बड़ा व्यक्ति हो वह पूर्णतया आत्म-निर्भर हो ही नहीं सकता, उसे दूसरों पर निर्भर होना ही पड़ता है ।

—मानव-समाज में अन्योन्याश्रित हुए बिना काम नहीं चलता ।

सेफां बाई, रांम-रांम के म्हारौ नांव कुण बतायौ के थारी तक देख' र कह्यौ। १४१८३

सेफॉ बाई, राम-राम कि मेरा नाम किसने बताया कि तेरा हुलिया देखकर कहा।

दे.क.सं.११८१६

सेबासी देई सके भण करी नी सके।– भी.७५४ १४१८४

शाबाशी दे सकता है पर कर नहीं सकता।

—शाबाशी देना और बात है, पर जिस काम के लिए शाबाशी दी जाती है, उसे तो करने वाला ही करता है, शाबाशी देने वाले स्वयं थोड़े ही कर सकते हैं।

—जब कोई किसी को प्रोत्साहित करता है, पीठ थपथपाता है, पर स्वयं उस काम को करने में असमर्थ हो तब उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

सेर आळी ई दूयलै और पाव आळी ई दूयलै। १४१८५

सेर वाली भी दुह लेता है और पाव वाली भी दुह लेता है।

—जो भ्रष्ट अधिकारी भेदभाव से ऊपर उठा हुआ हो, वह किसी धनाढ्य से बड़ी रिश्वत भी ले लेता है और किसी गरीब व्यक्ति से भी छोटा रिश्वत लेने में आना कानी नहीं करता। उसका धर्म है, किसी का भी काम रिश्वत के बिना नहीं करना सो वह निर्विकार भाव से अपने धर्म का सर्वत्र निबाह करता है।

सेर जठै सवा सेर। १४१८६

सेर जहाँ सवा सेर।

—किसी परिवार में एक साथ अधिक मेहमान आ जाएँ, तब मजबूरी में यह सोचकर संतोष कर लेना पड़ता है कि जहाँ अब तक सेर आटा खर्च होता रहा है, आज सवा सेर ही सही। खाना तो खिलाना ही होगा।

—जब बेमन से निर्धारित खर्च के बदले अधिक खर्च करना पड़े, तब...।

सेर जवार नै जुहार। १४१८७

सेर ज्वार को जुहार।

—बड़े आदमी को सभी जुहार करते हैं।

—जिसके पास पैसा है, सभी उसकी खुशामद करते हैं।

—जिस व्यक्ति से परोक्ष-अपरोक्ष सहयोग की आशा हो, उसके प्रति अनजाने ही सम्मान प्रकट हो जाता है।

सेर नी दवा ने जंगळ नी हवा।– भी.७५५ १४१८८

शहर की दवा और जंगल की हवा।

देे.क.सं.१३४९४

सेर नै दुसेरी मिळ्यां अकल ठिकांणै आवै। १४१८९

सेर को दुसेरी मिले तो अकल ठिकाने आ जाती है।

—किसी छोटे दुष्ट को बड़ा दुष्ट मिलने पर वह अपने-आप सीधा हो जाता है।

—अपने से बड़ा शक्तिशाली यमराज के समान होता है।

सेर नै सवा सेर। १४१९०

सेर को सवा सेर।

—यह दुनिया बहुत लंबी-चौड़ी है। यहाँ किसी भी क्षेत्र में एक-से-एक बढ़कर व्यक्ति मिल ही जाते हैं।

—जब कोई बदमाश किंसी गरीब को सताता हो और अपनी मनमानी करना नहीं छोड़े और जब संयोग से उस बदमाश को सीधा करने वाला कोई उससे भी बडा गुंडा मिल जाय, तब यह उक्ति चरितार्थ होती है।

—धूर्त को शैतान मिलने पर ही वह अपनी जघन्य हरकतों से बाज आता है।

पाठा: **सेर नै सवा सेर मिळ ई जावै।**

सेर नै सवा सेर मिळसी जद बेरौ पड़सी। १४१९१

सेर को सवा सेर मिलेगा तब पता चलेगा।

—किसी दुष्ट की मनमानी तभी मिटती है जब किसी शैतान से उसका पाला पड़े। और यह दुनिया इतनी बड़ी है कि जैसे-को तैसा मिल ही जाता है।

—बदमाश किसी गरीब से नहीं, बड़े दुष्ट से ही सीधा होता है।

सेर बाजरी री आस करै जकौ ढाल तरवार साथै राखै। १४१९२

सेर बाजरी की आस करे, वह ढाल-तलवार साथ रखे।

—पुराने जमाने में सामान्य राजपूत ढाल-तलवार लेकर घर से रवाना होता तो कोई परिचित पूछ लेता कि कहाँ चल दिये। तब जवाब मिलता कि सेर बाजरी के लिए। बस,इतना ही उत्तर पर्याप्त होता था।

—जिसे जीना है,उसे संघर्ष तो करना ही पड़ता है,किसी पर एहसान नहीं करता।

—यह दुनिया एक विशाल रणक्षेत्र है। जिसे लड़कर जिंदा रहना है उसे अपने-अपने हथियार तो भाँजने ही पड़ते हैं। क्षत्रिय ढाल-तलवार से निर्वाह करता है,बनिया तराजू-बटखरों व गज से,दरजी सूई-कैंची से,लुहार छेनी-हथौड़े से और मजदूर कुदाल-फावड़े से।

सेर मूंगां ई ब्याव अर सेर मोत्यां ई ब्याव। १४१९३

सेर मूँगों से भी ब्याह और सेर मोतियों से भी ब्याह।

—जिसकी जैसी आर्थिक-स्थिति होती है,उसीके अनुसार वह सामाजिक अनुष्ठान संपन्न करता है और वे अनुष्ठान अपने-आप में संपूर्ण होते हैं। गरीब व्यक्ति सेर मूँगों से ही ब्याह निबटा देता है और अमीरों के लिए सेर मोती भी कम पड़ते हैं। लेकिन ब्याह तो किसी भी स्थिति में संपन्न होता ही है।

—हर व्यक्ति अपने साधनों के अनुसार ही उत्सव मनाता है।

सेर में पंसेरी रौ धोखौ। १४१९४

सेर में पंसेरी का धोखा।

—बहुत बड़े धोखे-बाज के लिए कुछ भी असंभव नहीं। वह सेर के भीतर भी पाँच सेर का धोखा दे सकता है।

—कुछ बरसों पहिले यह कहावत संभव नहीं लगती थी कि सेर में पाँच सेर का धोखा कैसे हो सकता है? लेकिन अब तो सर्वोच्च अधिकारी और बड़े नेताओं के लिए यह कुछ भी बड़ी बात नहीं,उनके बाएँ हाथ का खेल है। वे चाहें पाव भर में पाँच मन का धोखा दे सकते हैं।

सेर में पूणी ई को काती नीं। १४१९५

सेर में पूणी भी नहीं काती।

—अभी तो सेर रूई में एक लच्छी भी नहीं काती गई।

—जब अधिकांश काम करना बाकी हो।

दे.क.सं.१०५११

सेर री खाल में गरदभ। १४१९६

शेर की खाल में गर्दभ।

संदर्भ-कथा: जब भाग्य प्रबल हो तो गधे को भी शेर की खाल मिल जाती है। गधे ने सोचा, दुनिया में सब खाल ही का प्रताप है। सिह,बाघ,सूअर और रीछ की खाल ही से तो सब डरते हैं। भीतर झाँककर कौन देखता है ? गधे के नाप की ही खाल थी सो उसने अदेर पहन ली। उत्साह के वशीभूत उसने तालाब के पानी में अपना हुलिया देखा तो फूला नहीं समाया। अब तो वह सारे जंगल पर आसानी से राज्य कर सकता है। इतने में एक सियार उसके पास आकर निःशंक पानी पीने लगा तो गधा चौंका। तब सियार ने कहा,'मामा,मुझसे चौंकने की जरूरत नहीं। मैं दूर से सब देख रहा था। आवाज के अलावा तुम पूरे शेर लगते हो। पर तुम्हें आज से ही बोलने और रेंकने की शपथ लेनी होगी। बाकी सारा काम मैं सँभाल लूँगा। जैसा मैं कहूँ,वैसा करते रहना। आज से ही मैं आजीवन आपका मत्री रहूँगा।' मूर्ख होते हुए भी गधा अपने मतलब की बात तो पूरी समझता ही था। उसने बोलकर सियार को भी कुछ जवाब नही दिया। गर्दन ऊपर नीचे हिलाकर ही चुप हो गया। तब सियार ने मुस्काराते कहा, 'मेरे सामने खुलकर बातें करिये,तभी हम अपनी योजना में सफल हो सकेंगे।' शेर का मंत्री बहुत चालाक था। थोडी ही देर में सारी योजना तैयार हो गई।

दूसरे दिन तो वह शेर लिपे-पुते चबूतरे पर बड़े रुआब से बैठा था। लोमड़ी ने सारे जंगल में डोंडी पिटवाई तो जंगल के सभी छोटे-बड़े जानवरों का मेला-सा लग गया। एक सिह भी आया जो उस जंगल का राजा था। सियार के कहने पर ही काफी घबराया-सा दिखाई दे रहा था। उसने इंद्रलोक से आये नये राजा को प्रणाम किया तो उसके बाद कोई भी जानवर पीछे नहीं रहा। हाथी ने भी उसके चरणों में तीन बार सूँड़ से धोक दी। लोमड़ी ने आरती उतारी।

मंत्री ने घोषणा की,'भगवान इंद्र ने अपने राज्य से नये राजा को भेजा है। बरसों इंद्रलोक में रहने के कारण हुजूर मांस खाना भूल गये। देवताओं वाला भोजन करते हैं—खीर मालपूवे, घेवर,दूध-जलेबी और पराँठे। मैंने हलवाई की व्यवस्था कर ली है। हमारे नये राजा ने साल

भर के लिए मौन-व्रत लिया है । लेकिन काली का इष्ट होने की वजह से रोज एक पशु की बलि दी जाएगी । जिसे मैं कहूँ उसे गुफा के भीतर जाकर अपनी बलि देनी होगी । एक चीते को मैंने इसके लिए तैनात कर दिया है । जंगल में सबको शांति रखनी होगी । जिसने भी निरीह जानवर पर अत्याचार किया, उसे पूरा दंडित किया जाएगा । अब आप सभी जाएँ । नये राजा अब गुफा में जाकर जाप करेंगे ।' तत्पश्चात् नकली शेर की सभा विसर्जित हो गई ।

वैसी मौज सियार की सात पीढ़ियों ने भी नहीं की होगी । कुछ ही दिनों में वह सूअर की नाईं मुस्टंड हो गया । पर उसने दूसरों का कोई हिस्सा नहीं रखा तो धीरे-धीरे उसके कई दुश्मन हो गये । एक लोमड़ी तो उसके पीछे ही पड़ गई । गुफा के आस-पास लीद देखकर वह सारा भेद समझ गई । दुश्मनों से निबटने के लिए मंत्री ने फिर सभा बुलाई । सारे जानवर आतंकित होकर इकट्ठे हुए । मंत्री नई घोषणाएँ करने ही वाला था कि इंद्रलोक के शेर की निगाह एक गधी पर पड़ी । वह क्षणभर भी धीरज रख नहीं सका । चबूतरे से नीचे उतरा और जोर से रेंकता हुआ गधी की ओर दौड़ा । लेकिन भाग्य विमुख होने से वह गधी के पास पहुँच नहीं सका । शेर का पंजा उसकी पीठ पर पड़ा तो वहीं ढेर हो गया । मंत्री ने भागने की चेष्टा की तो एक चीते ने उसे धर दबोचा । जिस तरह मामला बनने में देर नहीं लगी, उसी तरह बिगड़ने में भी देर नहीं लगी ।

—आदमी की असलियत ज्यादा दिन तक छिपी नहीं रह सकती ।

—शेर की खाल ओढ़े उस गधे का तो पता चल गया, लेकिन मनुष्यों ने जो तरह-तरह के मुखौटे लगा रखें है, उनकी पहिचान जाने कब होगी ?

सेर री तौ ही अर सवा सेर माथै लियौ, चीरीजनै दो ड‌ळा व्हैगी । १४१९७

सेर की तो थी और सवा सेर ऊपर उठाया, चिरकर दो टुकड़े हो गई ।

—अपनी क्षमता से परे काम करने वाले की दुर्दशा निश्चित है ।

—हर व्यक्ति को अपनी औकात के अनुसार ही काम करना चाहिए, अन्यथा वह किसी भी घड़ी पिट सकता है ।

सेर री देवै, सवा सेर री लेवै । १४१९८

सेर की दे तो सवा सेर की ले ।

—जो व्यक्ति किसी को क्षति पहुँचाता है, उसे देर-सवेर दुगुनी क्षति झेलने के लिए तैयार रहना चाहिए। वह टल नहीं सकता।

—मनुष्य जैसा करता है, वैसा ही फल उसे मिलता है।

मि.क.सं.२८७०

सेर री हांडी में सवा सेर नीं ऊरीजै। १४१९९

सेर की हँड़िया में सवा सेर नही डाला जाता।

—क्षमता के अनुसार ही किसी को जिम्मेदारी सौंपना चाहिए। ज्यादा भार पड़ने से क्षति की संभावना रहती है।

—हर व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार ही काम सौंपना उचित है।

पाठा : सेर री हांडी में सवा सेर नी खटै। सेर री हांडी में सवा सेर नी सीझै।

सेर रौ बेटौ स्याळियौ। १४२००

शेर का बेटा सियार।

—किसी बहादुर व्यक्ति का बेटा डरपोक हो, तब...।

—किसी बड़े व्यक्ति का बेटा निकम्मा हो, तब...।

सेर विद्या नै सवा सेर अकल जोईजै। १४२०१

सेर विद्या को सवा सेर अक्ल चाहिए।

—बुद्धि प्रखर हो तभी विद्या ग्रहण की जा सकती है, अन्यथा नहीं।

—आखिर वह बुद्धि ही है जो, ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, शिक्षा आदि ग्रहण करती है, यदि वही कमजोर हो तो सारा प्रयास व्यर्थ हो जाता है।

सेर सूं पंसेरी भारी। १४२०२

सेर से पंसेरी भारी।

—संसार में बड़े-से-बड़े मनुष्यों का अभाव नहीं है। सेर से बड़ा भी मौजूद है—सवा सेर, दो सेर, तीन सेर व पॉच सेर।

—कोई भी दो मनुष्यों का व्यक्तित्व समान नहीं होता। एक-से-एक बढ़कर होते हैं।

सेर सोना रौ कांईं गसकौ ! १४२०३

सेर सोने की क्या बिसात !

—सेर सोना तो सेर ही होता है,उसकी बिसात तो जितनी है,उतनी ही है,उससे हजारों मनुष्यों का काम तो चल नहीं सकता। जिसके पास है,उसीके काम आता है।

—मनुष्य के गुणों की तुलना में सोने की मात्रा कुछ भी महत्त्व नहीं रखती।

सेर हंदौ स्यांमी अर सवा सेर रौ संख। १४२०४

सेर भर का साधु और सवा सेर का शंख।

—जो व्यक्ति अपनी औकात से अधिक दिखावा करे,तब...।

—अपने सामर्थ्य से अधिक काम करना किसी भी रूप में श्रेयस्कर नहीं है।

सेरी तणा सिंघ। १४२०५

शेरनी के सिह।

—सिघ तो शेरनी के ही योग्य होते हैं।

—शेरनी के ही सिह पैदा होते है।

—वीर माता की कोख से वीर ही जन्म लेते हैं।

—पराक्रमी पुरुष का तेज शौर्य वाली स्त्री ही झेल सकती है।

सेरी सांकड़ी अर बिचाळै सांप। १४२०६

सेरी सॅकड़ी और उसमे सॉप।

—अचानक कोई दुविधा-जनक स्थिति उत्पन्न हो जाय तो उसका निवारण आसान नहीं होता।

—जीवन की राह में जब कोई दुर्गम व्यवधान उपस्थित हो जाय,तब...।

पाठा : सेरी सांकड़ी अर बिचाळै सांड।

सेर्‌यां वाळौ सांड। १४२०७

सेरियों वाला सॉड।

—गाँव के आस-पास घूमने वाला साँड जो थोड़ी-सी पोल देखते ही भीतर घुस पड़े।

—जो बदचलन व्यक्ति गाँव में ही इधर-उधर मुँह मारता फिरे,उस पर तीखा कटाक्ष।

सेलड़ी री गरज इरंडिया री तिरस बुझै । १४२०८

ईख की गर्ज से एरंड की प्यास बुझती है ।

—ईख के खेत में एरंड के पौधे खड़े हैं । ईख की जरूरत पर खेत में पानी दिया जाता है तो एरंड भी सूखे नहीं रहते । उन्हें भी पानी मिल जाता है ।

—बड़े व्यक्तियों के सहारे छोटे भी पल जाते हैं ।

पाठा : सेलड़ी रै सागै इरंडियौ ई जीवै ।

सेवट तौ पीस्यां पीसीजै । १४२०९

आखिर तो पीसने से ही पिसा जाता है ।

—काम तो आखिर करने से ही संपन्न होता है, बातें बघारने से नहीं ।

—किसी भी काम को आगे के लिए टालना उचित नहीं है ।

सेवट तौ मर्‍यां लार छूटसी । १४२१०

आखिर तो मरने पर पीछा छूटेगा ।

—दुखी आदमी के लिए दुखों से छुटकारा पाने का सिर्फ एक ही उपाय है—मृत्यु । मृत्यु के बिना उसके दुखों का सिलसिला समाप्त हो ही नहीं सकता ।

—चाहे ऐश्वर्यशाली हो चाहे निर्धन, मनुष्य जीवन की फाँसी तो मरने पर ही कटती है ।

सेवट तौ म्हारै इज भिळियां बीस व्हिया । १४२११

आखिर तो मेरे जुड़ने पर ही बीस हुए ।

—अपनी गलती या भूल को सार्थक समझने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

दे.क.सं. ३५७१, ७८४३

सेवट तौ रांम री कचेड़्यां न्याव है । १४२१२

आखिर तो राम की कचहरी मे न्याय है ।

—किसी असहाय अथवा गरीब व्यक्ति के प्रति अन्याय की कहीं सुनवाई न हो तब उसका आखिरी सहारा बचता है—केवल ईश्वर, जिसकी कचहरी में ही उसे सच्चा न्याय मिलेगा ।

—अन्यायी को अंततः उसके अपराधों की सजा राम के दरबार में मिलकर ही रहती है ।

पाठा : सेवट भगवांन रै दरीखांनै न्याव है । सेवट रांम रै घरै न्याव है ।

सेवट तौ रांम रै दियां ईं पूरौ पड़सी। १४२१३

आखिर तो राम के देने पर ही पूरा पड़ेगा।

दे.क.सं.८३५०

सेवतां-सेवतां सब व्है। १४२१४

सेते-सेते ही सब-कुछ होता है।

—क्या अंडा, क्या पेड़ और क्या पशु—सबकी सार-सँभाल करने से ही सुरक्षित रहते हैं, पनपते हैं।

—धीरे-धीरे ही सब कार्य संपन्न होते हैं, एक ही उछाल में कुछ नहीं होता।

सेवळी है जणा तौ बिल में, नींतर चरण नै गी। १४२१५

सेही है तो बिल में ही है, वरना चरने के लिए गई।

दे.क.स.२६०२

सेवा ई इण हेवा है। १४२१६

सेवा ही इस योग्य है।

—जो व्यक्ति बार-बार मार खाने या दंडित होने पर भी अपनी आदतों से बाज न आये, उसके लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है कि यह तो सेवा ही इस योग्य है।

—जिस व्यक्ति को सुधारना किसी भी उपाय से संभव न हो।

सेवा में मेवा है। १४२१७

सेवा में मेवा है।

दे.क.सं.१८७२

सेवै सो पावै नीं, फळ ले जाय लंगूर। १४२१८

सेवे सो पावे नहीं, फल ले जाय लंगूर।

—पेड़ तो लगाने वाले लगाते हैं और फल पकने पर बंदर खा जाते हैं।

—जो नादान व्यक्ति कमाई तो खूब अच्छी कर ले पर उसकी अर्जित पूँजी को दूसरे लोग उड़ा ले जाएँ।

—जो समाज-कंटक दूसरों की कमाई पर जीवन बसर करते हैं।

सेस करणाळौ हाकी है, बीजू कूंण जांणे?– भी.७४९ १४२१९

सहस्त्र किरणों वाला साक्षी है, दूसरा कौन जानता है?

—जब सच्चे व्यक्ति की कहीं सुनवाई न हो और झूठा व्यक्ति सच्चा कहलाये तब सच्चा व्यक्ति हैरान होकर कहता है कि या तो ईश्वर जानता है या सहस्त्र किरणों वाला सूरज जानता है।

—सच्चा व्यक्ति हैरान होकर आखिर अदृष्ट शक्ति पर सब-कुछ छोड़कर आश्वस्त हो जाता है।

सेही रै मूंडै दांत व्है तौ दिन रा ई नीं चरै। १४२२०

सेही के मुँह में दाँत हों तो वह दिन को ही न चरे।

—लंपट, बदमाश या चोर अनुकूल अवसर देखकर ही अपनी हरकतें करते हैं।

—समाज-कंटकों की दाल गलती हो तो वे सरेआम बदमाशी करने से न चूकें।

सैंदेस चोरी अर परदेस भीख। १४२२१

स्वदेश चोरी और परदेस भीख।

—चोरी करने के लिए तो साहस और हुनर अनिवार्य हैं, उसके लिए लज्जित होने की आवश्यकता नहीं, पर माँगना तो निहायत मजबूरी का काम है, उसके लिए लज्जा भी महसूस होती है। इसलिए नीति की बात यही है कि चोरी अपने इलाके में करनी चाहिए ताकि पकड़े जाने पर कोई जमानत तो दे सके। और मजबूरी में भीख ही माँगनी हो तो अपरिचित इलाके में माँगनी चाहिए ताकि कोई जान-पहिचान वाला देख तो नहीं सके।

—आदमी को बहुत सोच-विचारकर तय करना चाहिए कि कौन-सा काम परिचित इलाके में करना है और कौन-सा काम अपरिचित इलाके में।

सैंध-मैंद तौ अबखी में आडी आवै। १४२२२

जान-पहिचान तो कठिनाई में काम आती है।

—अधिक-से-अधिक आदमियों से संपर्क रखना या मेलजोल रखना हमेशा ही अच्छा रहता है। आफत पड़ने पर अपरिचित काम नहीं आता, परिचित ही सहयोग करता है।

—मेल-मुलाकात कभी व्यर्थ नहीं जाती।

सैंधौ कूतरौ घरवाळां नै खावै। १४२२३

परिचित कुत्ता घरवालों को ही खाता है।

—चोरी की आदत सबसे पहिले घर से ही शुरू होती है।

—जो व्यक्ति परिजनों को ही धोखा दे, उसके लिए...।

सैंधौ बांणियौ माल लेवतौ ई मारै, देवतौ ई मारै। १४२२४

परिचित बनिया माल लेते हुए भी मारता है, देते हुए भी मारता है।

—परिचित ग्राहक तो अपनी फौकियत में भरोसा कर लेता है कि जान-पहिचान वाला बनिया उसका कुछ तो लिहाज रखेगा, पर लाभ के निमित्त काम करने वाले का कोई मित्र या पराया नहीं होता, वह तो उलटा घरवालों से ज्यादा नफा वसूल करता है।

सैंधौ मसांण, असैंधौ निवांण। १४२२५

परिचित मसान, अपरिचित तालाब।

—परिचित मसान में भूत-प्रेत का डर हमेशा बना रहता है। और इसके विपरीत अपरिचित जलाशय में फिसलने या डूबने का डर लगता है।

—परिचित मसान और अपरिचित तालाब से हमेशा दूर रहना ही नीति संगत है।

सैंधौ सवार दो थड्डा वत्ता मारै। १४२२६

परिचित सिपाही दो धक्के अधिक देता है।

—कभी-कभी अधिक परिचय से नुकसान भी होता है। अपरिचित की बजाय परिचित कर्मचारी सहयोग करने में अड़चनें पैदा करता है।

—परिचित व्यक्ति बाजदफा पूर्वग्रह से कुंठित होता है और वह काफी रुखाई से पेश आता है।

सैंधौ स्यांमी सूंठ रौ गांठियौ। १४२२७

परिचित साधु सोंठ का गाँठिया।

—परिचित व्यक्ति प्रतिभा, हुनर और गुणों की कद्र नहीं करते। क्योंकि वे ठेठ बचपन से उसको जानते हैं। उसके प्रति अच्छी-बुरी राय बन जाती है।

—परिचितों के बीच लिहाज-मुरौवत नहीं रहता। छोटी-मोटी बेगार बताते भी संकोच नहीं होता। हँसी-मजाक के भी संबंध बन जाते हैं। ऑख की शर्म भी मिट जाती है।

सैंस कळा, अेक हळा। १४२२८

सहस्र कला, एक हला।

हला = हल।

—हजारों कलाएँ एक तरफ और हल एक तरफ। हल द्वारा उत्पन्न अनाज से दुनिया पेट भरती है। पेट खाली रहे तो न कला सूझती है और न साहित्य।

—हल के प्रताप से ही अब तक दुनिया जीवित रही है, इसलिए हल सभी कलाओं से श्रेष्ठ है। स्वयं कलाकार या साहित्यकार भी तो अन्न के सहारे जीते हैं और अपनी-अपनी कला को जीवित रखते हैं।

सै कोई झुकतै पलड़ै रा सीरी। १४२२९

सभी झुकते पलड़े के हिमायती होते है।

—हर व्यक्ति समर्थ का साथ देता है, असहाय का हाथ कोई नहीं थामता।

—जो जरूरतमंद है उसकी मदद कोई नहीं करता और जिसे मदद की कतई जरूरत नही है यानी संपन्न व्यक्ति को सहयोग करने के लिए सभी तैयार रहते हैं।

सै गांव में फी-फी फुररै बाजगी के रांड अैड़ीज ही। १४२३०

सारे गॉव मे हिप-हिप फुर्रे हो गई कि रॉड ऐसी ही थी।

—चरित्रहीन व्यक्ति की बदनामी स्वतः हवा के साथ फैल जाती है, उसे कोई भी रोक नहीं पाता।

—एक बार बदनाम हो जाने के बाद वापस प्रतिष्ठा बहुत मुश्किल से जमती है।

सै गुळ गोबर व्हैगौ। १४२३१

सब गुड़ गोबर हो गया।

—कभी-कभार गुड़ बनाते समय चाशनी बिगड़ जाय तो गुड़ की भेली नहीं बनती, गुड़ बहने लगता है। गोबर के समान अपदार्थ हो जाता है। और कभी-कभार सीलन में रखने से भी गुड़ पिघलकर बेकार हो जाता है। सस्ते भाव भी नहीं बिकता।

—जब कोई बना-बनाया काम बिगड़ जाय तब यह उक्ति काम में आती है।

सै घोड़ा सोळै टका। १४२३२

सभी घोड़े सोलह टके।

—अराजक व्यवस्था पर कटाक्ष।

—जहाँ भले-बुरे सभी एक समान हों।

—जहाँ न अवगुणों की प्रताड़ना होती है और न गुणों का आदर।

सैज देख्यां निंदरा उपजै, माळा देख्यां रांम। १४२३३
सस्तर देख्यां हित्या उपजै, कांमण देख्यां कांम॥

सेज दिखे तो निद्रा उपजे, माला दिखे तो राम।
शस्त्र दिखे तो हत्या उपजे, रमणी दिखे तो काम॥

—परिवेश, वातावरण और संगति के प्रभाव से कोई बच नहीं सकता। मसलन बिछौना देख कर आँखें झपकने लगती हैं। माला पर नजर पड़े तो राम का नाम लेने की सूझती है। शस्त्र दिखने पर हत्या करने की बात मन में उपजती है और कामिनी से भेंट होने पर वासना उद्दीप्त होती है।

—यदि परिवेश और वातावरण शुद्ध हो तो मन में विकार उत्पन्न नहीं होते।

सै ठाट पड़्या रह जावैला जद लाद चलैगा बणजारा। १४२३४

सब ठाट पड़ रह जायेगा, जब लाद चलेगा बनजारा।

—जब बनजारा अपने बैलों को माल से लादकर चल देता है तो पीछे गोबर, काले ठीये और राख के अलावा कुछ नहीं बचता।

—सारी दुनिया को जीतने वाला और बेशुमार माया का एक-छत्र अधिष्ठाता सिकंदर महान तक खाली मुट्ठी संसार से कूच कर जाता है तो सामान्य व्यक्ति की चर्चा ही व्यर्थ है।

—मरने पर मनुष्य अपनी देह भी अपने साथ नहीं ले जा सकता।

सैण करै जकौ तौ बैरी ई नीं करै। १४२३५

परिजन करें सो बैरी भी नहीं करे।

—घरवालों के जितना संताप तो दुश्मन भी नहीं दे सकता। दुश्मन को दया आ सकती है लेकिन परिजन को नहीं।

—रक्त-संबंधों में जितना जहर घुला रहता है, उतना दुश्मन की नाड़ियों में भी नहीं घुला रहता।

सैण तौ सांकड़ा ई भला। १४२३६

परिजन तो सँकड़े ही भले।

—स्थान की मार तंगी होने पर भी परिजन या मित्र जितने अधिक साथ रहें उतना ही अच्छा है। मिलजुलकर उठाया हुआ दुख भी अकेले के सुख से बेहतर है।

—मित्रों की तकलीफ, तकलीफ नहीं होती, तुष्टि होती है।

सैण तौ सिर माथै ई छाजै। १४२३७

परिजन तो सिर पर ही शोभा देते हैं।

—परिजनों का जितना सत्कार किया जाये थोड़ा है।

—परिजनों के साथ रहने जैसा सुख और आनंद दुनिया में दूसरा नहीं है।

सैण तौ सौ मण री सिला माथै सिरकाय दै। १४२३८

परिजन तो सौ मन की शिला ऊपर डालते हैं।

—परिजन तो आत्मीयता प्रकट करते-करते कब दुखों का कहर ढा दें, कुछ पता नहीं चलता।

—दुश्मन का भरोसा कर लेना पर रिश्तेदारों का भरोसा सपने में भी नहीं करना चाहिए।

सैणप में किरकिर पड़ै। १४२३९

समझदारी में किरकिर पड़ती है।

—जो व्यक्ति ज्यादा समझदारी बघारता है वह ज्यादा काम बिगाड़ता है।

—गँवार और नादानों की अपेक्षा समझदारों ने ही दुनिया को बंटाढार किया है।

—समझदार की बजाय बुद्धू पर भरोसा करना बेहतर है।

सैणप में भीजै है। १४२४०

समझदारी में भीगता है।

—समझदारी का दावा करने वाले पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति सज्जनता के कारण कष्ट उठाये।

—जिस व्यक्ति में आत्मीयता का लिहाज बहुत ज्यादा हो।

सैणौ देख'र सगळा ई सांड बणै। १४२४१

सीधे पर सभी सवारी गाँठते हैं।

—सज्जन व्यक्ति को लोग जब-तब परेशान करते ही रहते हैं।

—दुष्ट से सभी डरते हैं और सीधे को बेगार बताते हैं।

सै दिन सारीसा नीं व्है। १४२४२

सभी दिन समान नहीं होते।

—सुख के दिनों में मनुष्य को यह नहीं भूलना चाहिए कि ये सुख के दिन हमेशा रहने वाले नहीं हैं। दुख आने पर उसे झेलने का साहस भी होना चाहिए।

—दुख से घबराकर यह नहीं सोचना चाहिए वह हमेशा स्थिर रहेगा। सभी दिन समान नहीं होते। दुख के दिन बीतने पर सुख की चाँदनी भी खिलेगी।

पाठा : सै दिन होत न अेक समांन।

सै धांन बाईस पंसेरी। १४२४३

सभी अनाज बाईस पंसेरी।

—जहाँ भले-बुरे की कतई पहिचान न हो।

—अराजक व्यवस्था का सही चित्रण।

मि.क.सं.१४२३२

पाठा : सै धांन बाईस पायली।

सै धौळौ-धौळौ दूध नीं व्है। १४२४४

सफेद-सफेद सब दूध नहीं होता।

—सही है कि दूध का रंग सफेद होता है, पर सफेद-सफेद दिखने वाले सभी पदार्थ दूध नहीं होते। आक का दूध भी सफेद होता है, पर वह कुछ मात्रा में जहरीला भी है।

—ऊँचे आदर्शों की बातें बघारने वाले सभी सज्जन नहीं होते।

दे.क.सं.७१२१

सैन करै सो ई मरद। १४२४५

सहन करे सो ही मर्द ।

—दूसरों को यातना पहुँचाने वाला मर्द नहीं होता,यातना सहन करने वाला मर्द होता है ।

—शूरवीर एवं ज्ञानी की अपेक्षा सहनशक्ति वाला पुरुष वास्तव में बड़ा होता है ।

सै नटै तौ जावां कठै, सगळा पटै तौ घालां कठै, फिर-घिर नै आवां अठै। १४२४६

सब नटे तो जाएँ कहाँ, सब दे तो रखे कहाँ, फिर-घिरकर आये यहाँ ।

—किन्हीं दो मनुष्यों का स्वभाव एक-सा नहीं होता । इसलिए संसार में मानव-स्वभाव का इतना वैविध्य है । यदि सब मनुष्यों का स्वभाव एक हो और किसी साधु या भिखारी को मना न करें तो इतनी भिक्षा वे रखें कहाँ ? और यदि स्वभाव की समानता के अनुसार सभी मना कर दें तो वे खाएँ क्या ? वे घूम-फिरकर हमेशा वही फेरी लगाते हैं । कोई भिक्षा देता है और कोई मना करता है । और साधु या भिखारी का निर्वाह हो जाता है ।

पाठा : **सै पटै तौ घाला कठै, सै नटै तौ जावा कठै ।**

सै पीळी-पीळी किसौ सोनौ इज व्है। १४२४७

पीला-पीला सब सोना ही नही होता ।

—हर चमकने वाली पीली चीज सोना नही होती तो फिर मानव का रूप धारे सभी मनुष्य एक-से क्योंकर हो सकते हैं ? मानव के रूप में कोई शैतान होता है,कोई ढोर होता है,कोई साँप होता है । कोई कौवा तो कोई कबूतर होता है । सभी मनुष्य भले या सज्जन नहीं होते ।

—सभी संत-महात्मा ज्ञानी या पहुँचे हुए नही होते ।

—सब शिक्षित व्यक्ति बुद्धिमान नही होते ।

सै बातां रौ हुंकारौ दैणौ, हौ-हौ करणौ। १४२४८
हौ रा हौ इज कैणौ, निन्नांणूं नीं कैणौ ॥

सब बातो की हामी भरना, हॉ-हॉ करना ।

सौ-के-सौ ही कहना, निन्यानबे नही कहना ॥

—बड़े आदमियों की हाँ-में-हाँ मिलाने से ही जीवन सुविधा-पूर्वक चल सकता है। जहाँ अपना मत प्रकट किया, वहीं झमेला हुआ। कोई सौ की बात करे तो सौ की ही हामी भरनी चाहिए, एक भी कम करके निन्यानबे नहीं कहना चाहिए।

—सुविधापूर्वक जीने का रामबाण उपाय है—सबकी हाँ-में-हाँ मिलाते रहना।

सै भूखा ऊठै, पण भूखा सूवै कोनीं। १४२४९

सभी भूखे उठते हैं, पर भूखे सोते नहीं।

अमीर हो चाहे गरीब, रंक हो चाहे राजा, चोर हो चाहे साहूकार सभी भूखे उठते हैं पर भूखे सोते नहीं।

—कुदरत या ईश्वर ही सब प्राणियों के भले-बुरे का ध्यान रखता है। उसे एक-एक प्राणी का पुख्ता ध्यान है। यदि वह सबको भूखा उठाये नहीं तो जीना मुहाल हो जाये, पर रात को सबको खिलाकर ही सुलाता है। यदि सोते समय उन्हें न खिलाये तब भी जीना मुश्किल हो जाय।

मि.क.सं. १४१२२

पाठा : सै भूखा ऊठै।

सै'र में दवा, गांव में हवा। १४२५०

शहर में दवा, गाँव में हवा।

—गाँव के निवासी शहर के बाशिंदों की तुलना में अपने-आपको कई सुविधा-जनक स्थिति में रखने की चेष्टा करते हैं। उन्हीं सुविधाओं में एक उक्ति यह भी है कि शहरों में जो काम दवा नहीं कर सकती वह गाँव में शुद्ध हवा से संभव है।

पाठा : सै'र री दवा, गांव री हवा।

सैल घमोड़ा जो सहै, सो जागीरी खाय। १४२५१

भालों के घाव जो सहे, वही जागीर लहे।

—सामंती व्यवस्था के दौरान राज्य जीतने या उसकी सीमा बढ़ाने के लिए युद्ध अनिवार्य होते थे। योद्धाओं को सर्वोपरि सम्मान था। युद्ध में मरने वालों को जागीर मिलती थी। जो शूरवीर सीने पर भालों के घाव सहते थे, वे ही जमीन या जागीर के अधिकारी थे।

—तब की सामंती मान्यता आज युद्ध की बजाय संघर्ष के रूप में बदल गई है। जो व्यक्ति जीवन-संग्राम में संघर्ष-पूर्वक जूझेगा, वही जीने योग्य सुविधाएँ प्राप्त कर सकेगा।

—जो व्यक्ति कष्ट उठाता है, वही सुख भोगता है।

सैल रौ मार्‍यौ ऊंचौ जोवै अर कवा रौ मार्‍यौ नीचै भाळै। १४२५२

भाले का मारा ऊँचा देखता है और कौर का मारा नीचे।

—जो योद्धा निःसंशय रण में भालों के घाव सहता है वह गर्व से सर्वत्र सिर उठाकर घूमता है, उसके विपरीत याचक या दूसरों से सहयोग लेने वाला कहीं भी सिर उठाकर नहीं चल सकता, बल्कि सिर नीचा करके ही निकलता है।

सै संसार, स्वारथ रौ अंबार। १४२५३

सब संसार, स्वार्थ का अंबार।

दे.क.सं.१३३३४

सो

सोई जीतै जो पैली मारै, ग्यांन गिणतां पोरख हारै। १४२५४

वही जीते जो पहिले मारे, ज्ञान गिनते पौरुष हारे।

नीति संबंधित कहावत है कि पहिले प्रहार करने या धावा बोलने वाला जीत हासिल करता है। सोच-विचार करने वाला पराक्रमी हार जाता है। इसलिए बिना सोचे-विचारे मार की पहल करना ही लाभदायक है।

मि.क सं ८४४९

सोक तौ आटा री ई भूंडी। १४२५५

सौत तो आटे की भी बुरी होती है।

—अपने प्यार में हिस्सा बटाने वाला आटे का पुतला भी बुरा होता है।

—प्यार को किसी भी तीसरे व्यक्ति की छाया भी मंजूर नहीं होती।

मि.क.सं. १४१५७

पाठा: सोक तौ माटी री ई भूंडी। सोक तौ मेण री ई खोटी। सोक नै सोक कोनी सुहावै।

सोक रै ईसकै घर-धणी सूं राड़। १४२५६

सौतिया-डाह के मारे पति से राड़।

—एक-दूसरे की डाह से जब तीसरे व्यक्ति को क्षति पहुँचे और वह तीसरा व्यक्ति भी जब अपना हो।

—अनबन किसकी और नुकसान किसी और का।

सोक वाळौ ईसकौ । १४२५७

सौत वाली ईर्ष्या ।

—ऐसी ईर्ष्या जिससे हानि परिवार ही को पहुँचे ।

—पारिवारिक डाह विनाशकारी होती है ।

—प्यार में किसी की दखल बर्दाश्त नहीं होती ।

सोक वाळौ साल है । १४२५८

सौत वाली पीड़ा है ।

—प्यार में किसी तीसरे व्यक्ति का प्रवेश बड़ा कष्टदायक होता है ।

—सौतिया-डाह भीतर-ही-भीतर शरीर को जलाती है ।

सोगन अर सीरौ तौ खावण नै इज व्है । १४२५९

सौगंध और हलुवा तो खाने के लिए ही होते हैं ।

—जो व्यक्ति बात-बात में सौगंध खाये, उस पर कटाक्ष ।

—जिस व्यक्ति के मन में सौगंध की कोई अहमियत न हो ।

पाठा : सोगन अर सीरणी तौ खावण सारू इज व्है ।

सोगन खाई अर झूठ चौड़ै आई । १४२६०

सौगंध खाई और असलियत नजर आई ।

—झूठा व्यक्ति ही अमूमन सौगंध खाता है ।

—जो सौगंध खाये, समझलो कि वही झूठा है ।

पाठा : सोगन खावै सौ कूड़ौ ।

सोगन खायां साच नीं मांनीजै । १४२६१

सौगंध खाने से ही सच नहीं माना जाता ।

—सौगंध खाने से ही कोई बात सच नहीं हो जाती ।

—सौगंध खाना सच्चाई प्रमाणित करने के लिए काफी नहीं है ।

सोगरा सूं कांम के थपाथप सूं कांम । १४२६२

सोगरे से काम कि थपाथप से काम ।

दे.क.सं.१२७४८

सोगी सोनौ अर रूपौ दोनां में कांम आवै। १४२६३

सुहागा सोने और चाँदी दोनों में काम आता है।

सोगी = सुहागा = एक प्रकार का क्षार, जो सोने और चाँदी के आभूषण साफ करने में काम आता है।

—चुगलखोर दोनों पक्षों को खुश रखता है।

—खुशामद हर व्यक्ति को सुहाती है।

सोच कस्यां कीं सांधौ लागै नीं। १४२६४

चिंता करने से कुछ भी गर्ज पूरी नही होती।

—चिंता करने से कुछ भी समाधान नहीं होता।

—जब चिंता करने से बिगड़ी हुई बात सुधरती नहीं, तब चिंता करने से फायदा क्या ?

सोट पड़तां जेज नीं लागैला। १४२६५

लट्ठ पड़ते देर नही लगेगी।

—बुरा काम करने पर पिटाई में देर नहीं लगती।

—बुरे काम का हाथोंहाथ दंड मिलता है।

—ईश्वर के दरबार में देर नहीं, अपराध किया और सजा मिली।

सोटां साटै मतीरा। १४२६६

लट्ठ के बदले तरबूज।

—सुविधाओं के लिए दुख उठाना अनिवार्य है।

—संघर्ष करने से ही कोई वस्तु प्राप्त होती है।

—खतरा झेले बिना कुछ भी हासिल नहीं हो सकता।

मि.क.सं.११०३९

सोटै री छींयां कित्तीक ताळ बैठौ रहीजै। १४२६७

लट्ठ की छाया में कब तक बैठा रहा जा सकता।

—लाठी की ताकत पर भला कितने दिन तक सुविधाएँ भोगी जा सकती हैं ?

—अत्याचार के भरोसे ज्यादा दिन तक आराम नहीं किया जा सकता।

—अन्याय की नींव गहरी नहीं होती।

सोड़ज सी री स्यांन। १४२६८

रजाई सर्दी की शान।

—जिस तरह रजाई सर्दी से बचाव करती है,उसी तरह बड़े व्यक्तियों के सहारे दुख से छुटकारा पाया जा सकता है।

—कोई चीज जरूरत पर काम आये,तब...।

सोडा सूं ई ऊजळा नीं व्हिया जका रेत सूं कद होसी। १४२६९

सोडे से भी उजले नहीं हुए, वे रेत से कब होने वाले।

—जो विद्यार्थी स्कूल जाकर भी नहीं पढ़ सका,वह घर पर क्या खाक पढ़ेगा ?

—जो व्यक्ति विद्वानों की संगत करने पर भी गँवार रह गया वह भला मूर्खों के साथ रहकर क्या सीख सकता है ?

सोढ़ां री जमीं में सांठा अर मालां री जमीं में मूसा। १४२७०

सोढ़ों की धरती में ईख और मालों की धरती में चूहे।

—सोढ़े राजपूतों का ऊमरकोट में राज्य था। वहाँ की मटियाली उर्वर धरती ईख के लिए बहुत मुफीद है। और इधर मालानी में मालदेव का राज्य था,जिस धरती पर चूहों की बहुतायत है।

—अपने-अपने भाग्य के अनुसार ही फल मिलता है।

सोढ़ा रा मन में सिरावण री रैवै। १४२७१

सोढ़े के मन में नाश्ते का ही खयाल रहता है।

सोढ़ा = राजपूतों में पँवार वंश की एक शाखा।

—जिस व्यक्ति को खाने का बहुत शौक हो।

—जो व्यक्ति भोजन के निमित्त ही जीता हो।

सोढ़ा रै घर सांखली अर सांखली रै घर सोढ़ौ, दोय घर डूबता, एक इज डूबौ। १४२७२

सोढ़ा के घर साँखली और साँखली के घर सोढ़ा, दो घर डूबते, एक ही डूबा।

सोढ़ौ = राजपूतों की पँवार शाखा का व्यक्ति।

सांखली = साँखले राजपूत की कन्या।

—जो दंपती मितव्ययी न हो, घर की सार-सँभाल अच्छी तरह नहीं कर सकते, यदि वे अलग-अलग ब्याहे जाते तो दुगुना अपव्यय होता, एक ही गठबंधन में बँधने से फकत एक घर ही बर्बाद हुआ।

—जो दंपती घर की समुचित व्यवस्था करने में अक्षम हों।

सोढ़ीजी वाळौ सिणगार। १४२७३

सोढ़ीजी वाला शृंगार।

—जो व्यक्ति स्नान अथवा अन्य कामों में बहुत समय लगाता हो।

—ढीले व सुस्त व्यक्ति पर कटाक्ष।

सोढ़ीजी वाळौ सिणगार किणनै पोसावै? १४२७४

सोढ़ीजी वाला शृंगार किसको पोसाये?

—जो व्यक्ति छोटे काम में अधिक समय व्यतीत करे।

—जो व्यक्ति समय की अहमियत कतई नहीं समझे।

सोढ़ीजी सिणगार करसी जित्तै रांणौजी पोढ़ जासी। १४२७५

सोढ़ीजी शृंगार करेंगी तब तक राणाजी सो जाएँगे।

—समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, वह एक बार हाथ से निकल गया सो हमेशा के लिए निकल गया।

—अवसर बार-बार नहीं मिलता।

पाठा : सोढ़ीजी सिणगार करसी, जैड़ै रांणौजी चढ़ जासी।

सोढ़ीजी सिणगार करैला, जित्तै रांणौजी उदैपुर पूग जावैला।

सोढ़ीजी सिणगारै जित्तै बजार ऊठ जासी।

सोढ़ीजी सिणगार सजै पण वर रौ वांदौ। १४२७६

सोढ़ीजी शृंगार सजें लेकिन वर का झमेला।

—निष्फल प्रयास करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष, जब वर का तो पता ही नहीं और दुलहन शृंगार करने में ही व्यस्त है।

—जिस व्यक्ति के कार्य और उद्‌देश्य में कोई तालमेल न हो।

सोधै अेक लाधै अनेक। १४२७७

खोजे एक, मिलें अनेक।

—दुनिया में मूर्खों की कोई कमी नहीं है, एक को खोजने जाओ तो सौ मिल जाते हैं।

—संसार में और चीजों की कमी आ सकती है, पर मूर्खों की कमी कभी नहीं आ सकती।

सोना डांडी ज्यूं कांईं तोलै? १४२७८

सोना-डंडी के उनमान क्या तौल रहा है?

—जब कोई दुकानदार निहायत सस्ती चीजें भी सोने की नाईं सतर्कता-पूर्वक तौलता हो, तब उसे झिड़कने के लिए यह उक्ति काम आती है।

—हर वस्तु का महत्त्व उसके मूल्य पर निर्भर करता है।

सोना बिचै घड़ाई मूंघी। १४२७९

सोने से घड़ाई महँगी।

—जिस वस्तु के मूल्य की अपेक्षा उसे बनाने में अधिक कीमत लगे, तब...।

—छोटे काम की खातिर बहुत खर्च करना पड़े, तब...।

पाठा : सोना सूं घड़ाई मूंघी।

सोना में सुगंध। १४२८०

सोने में सुगंध

—जिस काम में दुहरा लाभ हो, तब...।

—जब कोई काम आकांक्षा के अनुरूप संपन्न हो जाय, तब...।

पाठा : सोना में सौरम।

सोना में सौरम नीं व्है। १४२८१

सोने में सुगंध नहीं होती।

—यदि सोने में सुगंध हो जाय तो फिर चाहिए ही क्या, पर ऐसा होता नहीं है।

—बड़े व्यक्तियों के दिल में दया नहीं होती।

—कुदरत दोहरा लाभ किसी को इनायत नहीं करती।

सोनार री सौ ठक-ठक अर लुहार रौ अेक धमीड़। १४२८२

सुनार की सौ ठक-ठक और लुहार का एक धमीड़।

संदर्भ-कथा : एक सुनार और एक लुहार में ऐसी घनिष्ठ मित्रता थी कि सगे भाई भी उनसे ईर्ष्या करते थे। लुहार तो सुनार के घर जब तब भोजन करता ही था, पर सुनार भी जात-पाँत का भेदभाव भूलकर उसके घर अकसर खाना खा लेता था। सुनार की दोस्ती के बाद लुहार के घर में भी अच्छी तरह सफाई रहने लगी थी। सुनार स्वभावतः लालची होते हैं। वह जब भी लुहार के घर जाता, कुछ-न-कुछ चीज बिना माँगे उठा लाता—कभी काँटा कढ़ना, कभी चिमटा, कभी कुड़ची, कभी संडासी, पली, पलटा, जर, हथौड़ी इत्यादि। मित्र से क्या दुराव! सुनार तो खुश होता ही था। पर लुहार भी खुश हो जाता था। एक दिन स्वयं लुहार ने आगे चलकर दोस्त को अच्छा सफीट ऐरण घड़कर दिया। तब पहली बार लुहारी के मन में वह बात अखरी। पुरानी सारी चीजें एक-एक करके याद आने लगीं। मित्रता के नाते इतनी चीजें मुफ्त चली गईं तो कोई बात नहीं। लेकिन मित्रता तो दोनों ओर है! क्या सुनार अपने घर से मित्र को इस तरह कुछ लाने दे सकता है? उसने लुहार को रात भर अच्छी तरह समझाया तो आखिर उसकी समझ में आ गया। सुनार कुछ दिन से एक सेठानी के लिए सोने की हँसुली घड़ रहा था। शायद कल तक संपूर्ण हो जाय। उसे पूरा विश्वास था कि जब सुनार उसके यहाँ से बीसियों चीजें ले गया है तो एक हँसुली के लिए मना थोड़े ही करेगा। मित्रों के बीच सस्ता-महँगा कुछ भी बखत नहीं रखता।

सो दूसरे दिन लुहार जब सुनार के घर पहुँचा तो सचमुच हँसुली तैयार थी। मित्र बड़े चाव से उजाल रहा था। भोजन करने के बाद हँसुली हाथ में लेकर उसे अच्छी तरह देखने लगा। लुहारी का रूप सौ गुना निखर जाएगा। जवान दीखने लगेगी। लेकिन जाते समय जब मित्र हँसुली बिना लौटाये ही रवाना हुआ तो सुनार ने मुस्कराते पूछा, 'इसे कहाँ ले जा रहे हो?' लुहार ने सहज भाव से उत्तर दिया, 'तुम्हारी भाभी के लिए। बहुत खुश होगी?'

सुनार का मुँह उतर गया। हकलाते बोला, 'इसकी कीमत जानते हो, कितनी है ?'

लुहार अब भी बात का सार नहीं समझा। अबोध की नाईं जवाब दिया, 'मुझे कीमत जानकर करना ही क्या है ? मित्रता के बीच कीमत नहीं आँकी जाती। भावना आँकी जाती है ? हैसियत देखी जाती है। तुम मेरे यहाँ से कितनी चीजें लाये, मैंने एक के लिए भी मना किया ? उलटे इस हँसुली से पचास गुना ज्यादा वजन का तुम्हारे खास काम का ऐरण मैंने अपनी मरजी से बनाकर दिया ?'

सुनार ने सोचा कि मित्र मजाक़ कर रहा है ? लेकिन मजाक-वजाक करने की तो उसे आदत ही नहीं है। जरूर लुहारी ने कुछ-न-कुछ पाटी पढ़ाई है। अब तो साफ बात करना ही उचित है। उसने मुस्कराने की चेष्टा करते कहा, 'एक ऐरण की बात खूब कही। तेरा सारा घर भी बिक जाय तो इस हँसुली का मोल नहीं चुक सकता।'

लुहार को और कोई बात नहीं सूझी तो बड़ी गंभीरता से पूछा, 'फिर अपनी दोस्ती का क्या होगा ?'

'दोस्ती गई भाड़ में। आज पता चला कि मूरख की दोस्ती जी का जंजाल कैसे बनती है ?'

लुहार से आगे कुछ भी सुनना बर्दाश्त नहीं हुआ तो सोने की हँसुली झट से फेंकने के पश्चात् दोनों कानों में अँगुलिया डालकर भुनभुनाता हुआ वहाँ से रवाना हो गया।

—सुनार की नन्हीं हथौड़ी की सौ ठक-ठक से लुहार के हथौड़े का एक वार भी ज्यादा भारी पड़ता है।

—गरीब व्यक्ति बलवान का सपने में भी सामना नहीं कर सकता।

सोना रा जामा रै गुळ रा पागड़ा कोई नवी बात नीं व्है। १४२८३

सोने के जामे पर गुड़ के पागड़े कोई नई बात नहीं होती।

—बड़े लोग सब-के-सब समझदार ही हों, यह जरूरी नहीं, लेकिन अधिकांश श्रीमंत मूर्ख ही होते हैं। छोटी-छोटी बातों में उनकी मूर्खता साफ झलकती है।

—बड़े व्यक्तियों का नासमझ होना कोई नई बात नहीं है। पैसा कमाने का बुद्धि से कोई वास्ता नहीं होता।

मि.क.सं.५६३३

सोना रा डूंगर बतावै। १४२८४

सोने के पहाड़ बताये।

—जो व्यक्ति खामखाह किसी की लालसाएँ जगाये। सब्ज-बाग दिखाये।

—जो व्यक्ति सहयोग तो रंचमात्र भी न करे और व्यर्थ की आशाएँ उकसाने में कोई कसर नहीं रखे।

सोना रा थाळ में लोह री मेख। १४२८५

सोने के थाल में लोहे की मेख।

—जो व्यक्ति सर्वगुण-संपन्न हो, पर एक विशिष्ट दुर्गुण के परिणामस्वरूप उसके सब गुणों पर पानी फिर जाता है।

—समूची प्रतिष्ठा को धूल में मिलाने के लिए मात्र एक अवगुण ही पर्याप्त है।

पाठा : सोना री थाळी में तांबा री मेख।

सोना रा थाळ में स्वाद वत्तौ नीं व्है। १४२८६

सोने के थाल में विशिष्ट स्वाद नही होता।

—व्यर्थ के आडंबर का कुछ भी अर्थ नहीं होता।

—महँगे प्रदर्शन की अपेक्षा वास्तविक भावना का अधिक मूल्य होता है।

—रूप के तामझाम की बजाय कथ्य महत्त्वपूर्ण होता है, जिस तरह सोने के थाल में परोसने मात्र से भोजन का स्वाद नहीं बदल जाता।

सोना रा सोगरा अर मोत्यां री दाळ तौ सिकंदर ई नीं खातौ व्हैला। १४२८७

सोने के सोगरे और मोतियो की दाल तो सिकंदर भी नही खाता होगा।

—चाहे दुनिया भर की तमाम पूँजी इकट्ठी कर लो भूख तो अन्न और साग से ही मिटती है। कोहनूर हीरे से मन की तृष्णा शांत हो सकती है, पर उससे पेट की भूख नहीं मिटती।

—नमक की जगह नमक ही काम आता है, सोने-चाँदी से उसकी पूर्ति नहीं हो सकती। इतनी छोटी-सी बात भी आज दिन तक मूर्ख उद्योगपतियों की समझ में नहीं आई, तो अब आयेगी भी नहीं।

सोना री कटार कड़ियां सोहै, पेट में नीं। १४२८८

सोने की कटार कमर पर सोहे, पेट में नहीं।

—हर चीज की अपनी-अपनी उपयोगिता है और हर उपयोगिता का अपना-अपना महत्त्व है। सोने की कटार चाहे जितनी बहुमूल्य हो, वह ग्वार-फली का विकल्प नहीं बन सकती। कितनी छोटी बात है, पर अब तक धनवानों की समझ में नहीं आई।

पाठा : सोना री कटार पेट में थोड़ी ई खाईजै। सोना री कटोरी कोई गिटण सारू नीं व्है।

सोना री खेती नीं व्है। १४२८९

सोने की खेती नहीं होती।

—सपूत, विद्वान, वीर और प्रतिभाशाली घर-घर में पैदा नहीं होते।

—एक ही बाप की सभी संतानें एक-सी नहीं होतीं। पीढ़ियों में एक विलक्षण व्यक्ति पैदा होता है।

—यदि सोने की खेती होती तो बनिये ही समूची धरती पर अधिकार जमा लेते और अनाज पैदा करने वाले किसान भीख माँगने लग जाते।

सोना री खोट तौ सुनार ई जांणै। १४२९०

सोने की खोट तो सुनार ही जाने।

—मनुष्य की कमजोरी और अच्छाइयों की पहिचान तो कोई मनोवैज्ञानिक ही कर सकता है।

—हर व्यक्ति अपने ही हुनर में पारंगत होता है और वह दूसरों के हुनर का कौशल समझने में असमर्थ होता है।

सोना री जोई पळक, मुनियां रौ मन ई ढळक। १४२९१

सोने की देखी चमक, मुनियों का मन भी ढलक।

—सोने की चमक देखते ही संत, मुनि, पंडित, धनवान और राजा तक की समझ चौंधिया जाती है। इस चमक का जादुई प्रभाव ही ऐसा है, जिससे कोई अछूता नहीं रह सकता।

—सोना प्राप्त करने का लोभ कोई छोड़ नहीं सकता।

सोना री भाळ, मौत री आळ। १४२९२

सोने की तलाश, मौत से छेड़छाड़।

संदर्भ : जातक कथा की एक ब्रह्म-सूक्ति है कि तीन युवा मित्र मौत की तलाश में निकले। रास्ते में उन्हें सोने की ढेरी मिली और वही मौत थी। लोक-मानस और जातक कथाओं की अनंत ऊँचाई एक दूसरे से बढ़कर है।

—सोना पीली मौत है जो जिदा व्यक्ति को मुरदे में बदल देती है।

सोना री माळा, स्याळ लै न्हाटौ। १४२९३

सोने की माला, सियार ले भागा।

—जो चालाक व्यक्ति स्वय चोरी करके किसी दूसरे पर अपराध मँढ़े, तब...।

—जो चोर अपने बचाव की खातिर निर्दोष को फँसाने की कुचेष्टा करे, तब...।

सोना रै काट नीं आवै। १४२९४

सोने पर जंग नहीं लगता।

—ज। व्यक्ति सोने की तरह खरा और विशुद्ध है, उस पर कलंक नहीं लगता।

—सज्जन व्यक्ति निदा, बदनामी और प्रशंसा से ऊपर होता है।

पाठा : सोना रै काट नी लागै।

सोना रौ बेरौ कियां पटै, पाड़ोसी रौ बेरौ जियां पटै। १४२९५

सोने की पहिचान कैसे हो, पडोसी की पहिचान जैसे हो।

—सोने और पड़ोसी की पहिचान तो बरतने पर ही होती है।

—पहली दृष्टि में देखते ही किसी की पहिचान नही होती, काम पड़ने पर होती है।

सोना रौ सूरज। १४२९६

सोने का सूरज।

—जब कोई अभिन्न मित्र या कोई घनिष्ठ आत्मीय अचानक अतिथि के रूप में प्रकट हो, तब पहिला वाक्य वाणी से यही निःसृत होता है कि आज यह सोने का सूरज कहाँ से उगा ?

—सूरज के दर्शन जितना ही आनंद जिस प्रिय व्यक्ति के मिलन पर हो।

सोनी री बेटी सूंघी सरूप, बांणिया री बेटी मूंघी करूप। १४२९७

सुनार की बेटी सस्ती सरूप, बनिये की बेटी महँगी कुरूप।

—सुनार सोने जैसी महँगी वस्तु में मिलावट करके खूब कमाई कर लेता है और इसके विपरीत बनिया काफी पूँजी लगाकर भी मामूली नफे से ही संतुष्ट हो जाता है।
—सुनार की कमाई सस्ती और सुंदर भी है, बनिये की महँगी और कठिन भी है।

सोने री छुरी पेट में मारणी नावै, बाप री तळाई री गार खावणी नावै।–व.२५६ १४२९८

सोने की छुरी पेट में नही मारी जाती, बाप के तालाब की गार नही खाई जाती।
—खाने में तो रूखी और बासी रोटी ही काम आती है, सोना निगलने से तो मृत्यु भी हो सकती है। रिश्ता बाप से है, उसके लिए प्राण दिये जा सकते हैं पर उसके तालाब की मिट्टी से तो कोई रिश्ता नहीं, वह भावुकता में खा भी लें तो बाप की मर्यादा नहीं बढ़ सकती !
मि.क.सं.१४२८८

सोने रौ बाळलौ पड़ीयौ व्है जठै आंधौ होण रौ मन में वरतै।–व.३८७ १४२९९

सोने की हँसुली पड़ी हो वहाँ अंधे होने की जँचती है।

संदर्भ-कथा: एक था बामन। निर्लोभी, वीतराग और निर्मल स्वभाव का। सौभाग्य से बामनी भी वैसी ही मिली। शादी होते ही दोनों ने शिवजी की उपासना शुरू की तो साठ बरस तक पहुँचते-पहुँचते भी कभी नागा नहीं की। संतान का योग दूर-तक नहीं था। फिर भी दोनों संतुष्ट थे। बामन का व्यवसाय मानो तो भिक्षा और हुनर मानो तो भिक्षा। आस-पास के गाँवों में उस बामन दंपती की बड़ी प्रतिष्ठा थी। कोई भी उन्हें भिक्षा के लिए मना नहीं करता था। जिसके यहाँ इच्छा होती एक दिन पहिले कह देते थे। उस दंपती को अपने हाथों से खिलाना सभी अपना भाग्य समझते थे। और सचमुच जिसके घर भी वे भोजन करते, किसी-न-किसी रूप में उस मेजवान का लाभ होता। लेकिन बार-बार आग्रह करने पर भी वह बामन किसी का भी आमंत्रण स्वीकार नहीं करता। उसका मन होता, वहीं भोजन के लिए कह देता। अपने गाँव के उनमान ही दूसरे गाँव वाले भी उनका मान रखते थे।

उस बामन का एक नियम था कि सीधे या भोजन के अलावा वह दूसरी दक्षिणा मंजूर ही नहीं करता था। जब भी लोग-बाग उससे ज्यादा आग्रह करते तो वह एक ही जवाब देता, 'बामन के लिए एक जून की भीख ही सर्वोत्तम दक्षिणा और पावना है। आप तो मोहर की

बात कर रहे हैं, पर मुझे रास्ते में सोने की हँसुली दूर से दिखाई दे जाय तो अंधा होने की जँचती है। बामन के लिए सोना छूना पाप है।' इतना कहने के बाद भी लोग बड़ी मुश्किल से मानते।

शिव-पार्वती अपने विमान पर आते-जाते अकसर उस अपूर्व जोड़े को देखते तो खुश भी होते, दुखी भी होते। महादेव के अनन्य भक्त होने की वजह से उन दोनों के प्रति शिव-पार्वती का पर्याप्त स्नेह था। पर बामन और बामनी के हठी स्वभाव की खातिर दोनों ही दुखी थे कि वे बेकार ही स्वेच्छा से दुख भोग रहे हैं, अन्यथा कई यजमान उन्हें मालामाल करने की चाह रखते हैं। पर बामन टस-से-मस नहीं होता। संतान के लिए भी पार्वती भोले महादेव से जाने कितनी बार आग्रह कर चुकी। तब वे बार-बार एक ही जवाब देते कि जब इनके भाग्य में भी संतान का योग नहीं है तो कुछ नहीं किया जा सकता। भाग्य को अनदेखा करना उनके वश की भी बात नहीं है। मन मारकर पार्वती ने उनके लिए संतान का हठ तो छोड़ दिया, पर आज चिलचिलाती दोपहरी में उस हठी जोड़े को पसीने में तरबतर देखा तो जगत्-जननी का हिया पसीज गया। उसने भाँग में ऊँघते पति की ओर देखा तो क्षण-भर के लिए झुँझला गई—कैसे औघड़ देवता से पाला पड़ा है। दो-तीन बार आवाज दी पर देवों के देव हलके-हलके खर्राटे भरते रहे। तब पार्वती ने हमेशा की तरह दो-तीन बार पति की जटा खींचकर झटके दिये तो उन्होने चौंककर पत्नी की ओर देखा। आँखें मसलते हुए पूछा, 'क्या बात हुई ?' पार्वती की झुँझलाहट मिटी नहीं थी। मुँह मस्कोरकर बोली, 'विमान को उतारो, वरना मैं नीचे कूद पड़ूँगी ?'

आधी ऊँघ के कारण महादेव मामले की गंभीरता को समझ नहीं सके। जटा के झटकों से थोड़ा नशा भी उतर गया था। उन्हें भी खुंदक चढ़ आई। बोले, 'रोज-रोज की धमकी से तो अच्छा है कि एक बार कूद ही जा। दोनों को चैन मिलेगा।' पार्वती एक बार तो सकते में आ गई। ऐसा जवाब उसने पहली बार ही सुना था। बारूद में जैसे चिनगारी पड़ी। मुँह तमतमा गया। विमान से कूद पड़ने ही को थी कि भोले शंकर ने दोनों हाथों से अपनी ओर खींचा तो वह उनकी गोद में लुढ़क पड़ी। उठने के लिए छटपटाई तो महादेव ने एक हाथ से गाल सहलाते कहा, 'इससे तो अच्छा है कि दोनों साथ ही कूद पड़ें ? तुम्हारे अभाव में मेरी क्या दुर्दशा होगी, जिसकी कल्पना मात्र से मेरी जटा में झुरझरी चलने लगती है। लेकिन कूदने से पहिले बता तो सही कि मुझसे जाने अजाने ऐसी क्या गलती हुई ?'

'गलती कोई एक हो तो बताऊँ ?' फिर उसी तरह गुस्से में बामन-दंपती की ओर इशारा करते कहा, 'देख रहे हो इनकी हालत ! घर में बैठकर आराम करने के दिन हैं और ये आग बरसती धूप में गरीब कुम्हार के घर भोजन करने जा रहे हैं। तुम्हारे अनन्य भक्तों का यह हाल ? तुम सहन कर सकते हो, मैं नहीं कर सकती। लोगों के ताने सुन-सुनकर मेरी छाती छिल गई है। तुम तो औघड़ हो, न तो बदनामी की परवाह करते हो और न यश की चाह रखते हो। पर मैं तो दूसरे देवताओं की तरह तुम्हारी बदनामी से खुश नहीं हो सकती ! या तो इनका दुख हमेशा के लिए मिटाओ, वरना...।'

महादेव अब पूरे होश में आ गये थे। बीच ही में टोकते कहा, 'लेकिन इन्हें दुख हो तो मेटूँ। ये तो अपने-आप को दुनिया में सबसे अधिक सुखी समझते हैं। तू विश्वास थोड़े ही करेगी, कभी-कभार मुझे इनसे ईर्ष्या होती है। सच, पार्वती, मैं इनके लिए कुछ नहीं कर सकता। सोने का परस करना भी इनके भाग्य में नहीं है। मैं तेरे मन की बात बिना कहे ही समझ गया।'

'कहाँ समझे, केवल सोने का हार नहीं, अमूल्य हीरे-मोतियों से जड़ा सोने का हार रास्ते के बीच डालो। देखती हूँ, कैसे परस नहीं करते ?'

'तो फिर देख ले ! तुझे मेरा अपमान ही करवाना है तो कुछ भी कसर मत रखना। वह देख, अपनी आँखों से साफ देखले, जैसा तूने चाहा, वैसा ही हार रास्ते के बीच जगमगा रहा है। ऐसा हार न किसी राजा के पास है और न किसी सेठ के पास। अब तो खुश !'

पार्वती ने बोलकर जवाब देने की बजाय औघड़ पति के होंठ चूम लिए। महादेव नशे में झूम उठे। पर पार्वती ने मना करते कहा, 'नहीं, अभी नहीं। पहिले मैं अपनी आँखों से इस जनम दुखियारे जोड़े को हार उठाते देखना चाहती हूँ। बामन अपनी हेकड़ी में न उठाये तो कोई बात नहीं, लेकिन बामनी ऐसी गलती नहीं करेगी।'

यह कहकर पार्वती अदेर उनकी गोदी से उठकर विमान से नीचे झाँकने लगी।

लेकिन बामन-बामनी तो नितांत बेखबर थे कि शिव-पार्वती को उनकी भी कुछ चिंता हो सकती है। वे तो केवल अपने में ही खोये हुए थे। शंकर-भगवान की उपासना के अलावा उन्हें दूसरा कुछ भी सरोकार नहीं था।

अचानक बामन ने किसी गंभीर मसले पर गहराई से सोचने-विचारने के बाद बामनी का हाथ पकड़कर कहा, 'जरा रुक तो, ऐसी भी क्या जल्दी है। खाना तो रोज ही खाते हैं। जरा सोच तो यदि हम दोनों ही अचानक अंधे हो जाएँ तो भीख माँगना कितना कठिन हो जाएगा ?'

'सो तो हो ही जाएगा ? लेकिन पहिले चिंता करने से मतलब क्या...?'

'मतलब है, तभी तो तुझसे राय लेना चाहता हूँ। यदि आँखें ठीक रहते हम पहिले ही अंधों की तरह चलने का अभ्यास करलें तो बाद में सुविधा हो जाएगी...।'

'सो तो हो ही जाएगी। तुम्हारी इच्छा हो तो अभी से अभ्यास शुरू कर दें। शुभ कार्य में देर करना ठीक नहीं।'

बामन की खुशी का पार नहीं रहा। आवेश में आकर बोला, 'तू इतनी जल्दी मेरे मन की बात समझ जाएगी, ऐसी आशा नहीं थी...।'

'तब तुम मुझे समझे ही नहीं।' आगे बात बढ़ाना उचित नहीं समझा तो वह अंधी की तरह हाथ आगे बढ़ाते हुई चलने लगी। अभ्यास तो था नहीं, रास्ते से थोड़ा दूर निकल गई। उधर बामन ने भी ऑंखें बंद करते हुए कहा, 'तू मेरा हाथ पकड़ ले...।'

'नहीं, तुम मेरा हाथ पकड़ लो...।' बामन ने और भी जोर से आँखें मींचलीं। वह रास्ते के दूसरे किनारे निकल गया। पार्वती ने आह भरते हुए सिर पीट लिया। पति की ओर देखते बोली, 'कैसे मूर्ख हैं ! उल्लू कहीं के ?'

महादेव ने मुस्कराकर पार्वती का गाल चूमते हुए कहा, 'नहीं पार्वती, नहीं, इनसे अधिक बुद्धिमान दुनिया में कोई नहीं है...।'

पार्वती ने जैसे कुछ सुना ही नहीं हो। अपनी जिज्ञासा पर नियंत्रण नहीं रख सकी तो वह फिर विमान से नीचे झाँकने लगी। मूर्खों के सरताज दोनों ही अंधों का अभिनय करते हुए हार से काफी आगे निकल गये। थोड़ी दूर और चलकर उन्होंने एक साथ आँखें खोलीं। बामन ठहाका मारकर जोर से हँसा। हँसते-हँसते ही कहने लगा, 'कितना अच्छा रहा ! दस-बारह दिन इस तरह अभ्यास करते रहे तो जनम के अंधे भी अपनी बराबरी नहीं कर सकते।'

'सो तो है ही...।'

पार्वती के लिए अब और देखना असह्य था। नीम-बेहोशी में वह पति की गोद में लुढ़क पड़ी। तत्पश्चात् वे दोनों ही एक ऐसी अनिवर्चनीय समाधि में लीन हो गये कि उन्हें दीन-दुनिया की कोई खबर ही नहीं रही।

—सोने का हार तो दूर की बात भाग्य विमुख हो तो एक कौड़ी भी हाथ नहीं लग सकती।

सोनौ अर वळै सौरम ! १४३००

सोना और फिर सौरभ !

—किसी काम में दोहरा लाभ हो, तब...।

—आशा से अधिक कोई काम फलीभूत हो जाय, तब...।

मि.क.सं.१४२८०

सोनौ उजाळता जावौ। १४३०१

सोना चमकाते जाओ।

—जहाँ चोर-डाकुओं या समाज-कंटकों का भय नहीं हो तो शांति-पूर्वक मन-वांछित जीवन बिताने पर।

—आशाओं के अनुरूप काम संपन्न होते रहें तो मौज मनाने में खामी नहीं रखनी चाहिए। पुराने सोने को सोगी से उजाल-उजालकर नया करते रहो और दुनिया को भरमाते रहो।

सोनौ कसियां अर मांनखौ बसियां। १४३०२

सोना कसने से और आदमी बसने से।

दे.क.सं.७७८

सोनौ कोई खेत में नीं निपजै। १४३०३

सोना कोई खेत में नही उपजता।

—कोई सुनार जब सोने में अधिक मिलावट कर दे, तब ग्राहक उसे उलाहना देते इस उक्ति का प्रयोग करता है।

—बड़ी कठिनाइयों से अर्जित की हुई वस्तु को लापरवाही से बरतना उचित नहीं है। सोना इकट्ठा करने में खून का पानी हो जाता है, इसलिए बहुत सोच-विचारकर उसकी हिफाजत रखनी चाहिए।

—विद्वान या प्रतिभाशाली व्यक्ति घर-घर में पैदा नहीं होते।

सोनौ गियौ करण रै साथ। १४३०४

सोना गया कर्ण के साथ।

—अब तो सोने का बस नाम रह गया है, वह तो दानवीर कर्ण के साथ ही समाप्त हुआ।

—जब कोई व्यक्ति किसी दानवीर की प्रशंसा करता है तो सुनने वालों में से कोई जवाब देता है कि सोना दान करने वाला तो बस एक कर्ण हो गया, उसके बाद तो लीक पीटना भर शेष रह गया है।

पाठा : सोनौ गियौ राजा करण री लार।

सोनौ तोलै अर ईंटां रौ घड़ौ करै। १४३०५

सोना तौले और ईंटो का धड़ा करे।

—जो उदार व्यक्ति छोटी-छोटी बातों में कंजूसी करे।

—जिस बड़े व्यक्ति से तुच्छ बातों की आशा न हो।

—जिस व्यक्ति में सामान्य बुद्धि का भी अभाव हो।

—नितांत अव्यावहारिक व्यक्ति पर कटाक्ष।

सोनौ तौ गैणौ बण्यां ई ओपै। १४३०६

सोना तो गहना बनने के बाद ही अच्छा लगता है।

—उपयोग में आने पर ही किसी चीज के महत्त्व का पता चलता है।

—उच्च शिक्षित व्यक्ति की नौकरी न लगे तो घरवाले इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

—विद्वता किसी के काम आये तभी शोभा देती है।

—शादी होने पर ही औरत के रूप-यौवन की सार्थकता है।

सोनौ न हाल्यौ साथ, रावण मरतां राजिया। १४३०७

सोना न चला साथ, रावण मरते राजिया।

—जब तक मनुष्य एक स्वस्थ जीवन जीने की बजाय सोने के पीछे भागता रहेगा, तब तक इस उक्ति की प्रासंगिकता घटने की बजाय हमेशा बढ़ती रहेगी।

—जिंदा उद्योगपतियों और मायापतियों को कवि की चेतावनी है कि वे किस मुगालते में हैं, जब लंकाधिपति रावण भी किसी युक्ति के द्वारा रत्ती भर भी सोना अपने साथ नहीं ले सका तो तुम क्योंकर ले जा सकते हो ?

सोनौ सिरावण में जासी। १४३०८

सोना नाश्ते में चुक जाएगा।

—जो व्यक्ति स्वयं कमाई न करके बुजुर्गों द्वारा संचित धनें पर ही मौज करे,उसे चेतावनी है कि इस तरह तो सोना नाश्ते-नाश्ते में ही चुक जाएगा यों निठल्ले बैठे मत रहो।

—पुरानी पूँजी पर इतराना उचित नहीं।

सोनौ, सीसौ, सुघड़ नर, मधरा ई बोलंत। १४३०९
कांसी, कुत्ती, कुभारजा, कर लाग्यां कूकंत॥

सोना, सीसा, सुघड़ नर, मीठे ही बोलते हैं।
काँसी, कुत्ती, कुभार्या, ठेस लगते ही चिल्लाते हैं॥

—इस कहावत की बस इतनी ही सीख है कि मनुष्य को धैर्यवान और सहनशील होना चाहिए।

—समझदार व्यक्ति जल्दी आपे से बाहर नहीं आता।

सोनौ सुनार रौ, सोभा संसार री। १४३१०

सोना सुनार का, शोभा संसार की।

—संतान किसी की हो यदि वह नेक,सज्जन,विद्वान या प्रतिभाशाली है तो सारा समाज उस पर गर्व करता है,सारे समाज में उसकी शोभा बढ़ती है।

—मेधावी संतान का आलोक परिवार की सीमा लाँघकर सारे देश को प्रकाशित करता है।

सो फूल महेसर चढ़ै।–व.३०१ **१४३११**

सब फूल महेश पर चढ़ते हैं।

—जो व्यक्ति किसी से भेदभाव न रखे।

—जो महान व्यक्ति अच्छे-बुरे सभी मनुष्यों को गले लगाये और किसी से घृणा न करे।

पाठा: सै फूल महेस चढ़ै।

सोबत सार फळ। १४३१२

सोहबत जैसे फल।

—सोहबत के प्रभाव से बचना किसी भी तरह संभव नहीं होता।

—इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह बुरी संगत से बचे और अच्छे व्यक्तियों की सोहबत करे।

मि.क.सं.१३२७४,१३२७६

सोभा गुणां री व्है, गाभां री नीं। १४३१३

शोभा गुणों की होती है, वस्त्रो की नही।

—चाहे भगवा लिबास पहिनो, चाहे रेशमी यदि मनुष्य में पर्याप्त गुण नहीं हैं तो सस्ते-महँगे वस्त्र कुछ भी माने नहीं रखते।

—महँगे वस्त्र या दिखावटी बाने से अवगुण नहीं छिपते।

सोम साजौ नीं मंगळ मांदौ। १४३१४

सोम स्वस्थ न मंगल बीमार।

—जिस व्यक्ति का हमेशा एक-सा ढर्रा रहे यानी जिसमें उतार-चढ़ाव तनिक भी न हो।

—अति सामान्य व्यक्ति के लिए जिसमें कुछ भी विशेषता न हो।

—जो व्यक्ति अपनी ही धुन मे मस्त रहे।

सोमोती अमावस अर सुक्कर वार। १४३१५

सोमवती अमावस और शुक्रवार।

—सोमवती अमावम और शुक्रवार को किये हुए पुण्य का फल अच्छा होता है।

—पुण्य-लाभ के लिए प्रत्येक वेला शुभ नहीं होनी। प्रत्येक समय का अपना-अपना महत्त्व होता है।

सोयां बिना सपना कठै? १४३१६

सोये बिना सपने कहाँ?

—सोना एक आराम का काम है, लेकिन उसे भी न किया जाय ता सपनों का जायका नहीं लिया जा सकता।

—कुछ भी काम किये बिना, उसका फल नहीं मिल सकता।

—अचेतन अवस्था में ही कोई सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

दे.क.सं.१४०७१

सोर अर चर रौ आसिंगौ नीं करणौ। १४३१७

बारूद और ढोर का भरोसा नही करना चाहिए।

—दुष्ट व्यक्ति की संगति का परिणाम बुरा ही होता है।

—जिस व्यक्ति पर पूरा एतबार न हो, उस पर भरोसा नहीं करना चाहिए।

सोर बासदी भेळा नीं खटै। १४३१८

बारूद और आग साथ नहीं रह सकते।

—जवान लड़के-लड़कियों का संसर्ग बारूद और आग की तरह विस्फोटक होता है।

—जिसकी कुसंगति का दुष्प्रभाव पड़े, उससे दूर रहना चाहिए।

पाठा : सोर रै पाखती वासदी नीं खटै।

सोरा ऊंट माथै दो चढ़ै। १४३१९

आरामदेह ऊँट पर दो चढ़ते हैं।

—सीधे व्यक्ति को कोई भी परिचित बेगार बता देता है।

—सीधे व्यक्ति को सभी परेशान करते हैं।

दे.क.सं. १३९२६

सोळवौ सोनौ। १४३२०

सोलहवॉं सोना।

—अंग्रेजी शासन के दौरान सोलह आनों का रुपया होता था। जो एक पूर्ण इकाई का प्रतीक था। सौलह शृंगार सजने पर ही औरत का सौंदर्य पूर्णता प्राप्त करता है। सोलह वर्ष की उम्र, चढ़ते यौवन की देहरी समझी जाती है। सोलह गुणों से संपन्न व्यक्ति 'पूर्ण-पुरुष' की उपाधि से अलंकृत होता है। विद्या भी सोलह और कलाएँ भी सोलह। सब मिलाकर सोलह का अंक बड़ा शुभ, मांगलिक और श्रेष्ठ है।

—जो व्यक्ति सर्व-गुण-संपन्न हो।

—जिस व्यक्ति में शुद्ध सोने की नाई कोई खोट न हो।

—जो व्यक्ति सबके सम्मान का पात्र हो।

सोळ सवायौ डंड। १४३२१

सोलह सवाया दंड।

—अपराध की तुलना में अधिक दंड मिल जाय, तब...।

—जैसा अपराध हो वैसी ही सजा मिलनी चाहिए, न कम और न बेशी।

सोळा दूणी आठ सिखावै। १४३२२

सोलह दूनी आठ सिखाये।

—गलत शिक्षा देने पर। आजकल तो दूर-दर्शन व भारतीय फिल्मों में सोलह दूनी आठ की शिक्षा दी जा रही है।

—अमीरों का वश चले तो गरीबों को साक्षर तक न होने दें।

सोळा दूणी पंच्चांणूं, पांच छोड्या सौ तौ लाव। १४३२३

सोलह दूनी पंचानबे, पाँच छोड़े सौ तो ला।

—सामंती व्यवस्था के दौरान बनिया और ठाकुर गरीबों के साथ ऐसा ही सही हिसाब करते थे।

—महा-धूर्त व्यक्ति पर कटाक्ष।

—किसी को सरासर उल्लू बनाने की चेष्टा करना।

सोळा साल में माथौ धोयौ, अेक जेळी सूं सुळझायौ। १४३२४

सोलह साल से माथा धोया, एक जेली से सुलझाया।

जेळी = एक लंबी लकड़ी के आगे दो नुकीले डंडे लगा हुआ उपकरण जिससे किसान या चरवाहा काँटे, कँटीली झाड़ियाँ आदि हटाने के काम लेते हैं।

—फूहड़ व्यक्ति जो स्नान से कतराता है।

—मैले-कुचैले व्यक्ति पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति असाधारण रूप से गंदा हो।

सोळै आंना साच। १४३२५

सोलह आने सच।

—जो बात शत-प्रति-शत सही हो।

—जब किसी बात की सच्चाई में रंचमात्र भी आशंका न हो, तब उसके प्रमाण-स्वरूप यह कहावत कही जाती है।

पाठा : सोळै आंना साची।

सोळै कोस री लापसी, बारै कोस रौ सीरौ। १४३२६
नीं छोडै ओ पदमणौ, नणदल बाई रौ वीरौ॥
सोलह कोस की लपसी, बारह कोस का हलुवा।
न छोड़े यह मुसाहिब, ननद बाई का ठलुआ॥
—जो चटौरा व पेटू खाने के मामले में आलस्य न करे।
—जो व्यक्ति निर्लज्ज की तरह कहीं भी खाने के लिए पहुँच जाय।

सोळै धोबां रौ पाव। १४३२७
सोलह धोबों का पाव।
—जिस फिजूल-खर्ची की दृष्टि में रुपये का पैसे जितना भी महत्त्व न हो।
—लापरवाह व्यक्ति पर कटाक्ष।
—जो व्यक्ति दूसरों की पूँजी पर मौज उड़ाता हो, वह खरी कमाई का महत्त्व कभी नहीं समझ सकता।

सोळै पाटी भण्योड़ा नै कुण कांई भणावै? १४३२८
सोलह पाटी पढ़े हुए को कौन क्या पढ़ाये?
—जो व्यक्ति अपने-आप को बहुत होशियार समझता हो, वह दूसरों की मानने योग्य सीख भी नहीं मानता।
—जिस व्यक्ति को अपनी बुद्धि पर बहुत नाज हो, वह कुछ भी नया सीखने के योग्य नहीं होता।

सोळै बरस रा होबजी, ऊखळ में थई करै। १४३२९
सोलह बरस के होबजी, ओखली में ताता-थैया करते है।
—जो व्यक्ति युवा होने पर भी बच्चों का सा व्यवहार करे।
—अपरिपक्व व्यक्ति पर कटाक्ष।

सोळै मांचां माथै कमर खोलै। १४३३०
सोलह खाटों पर कमर खोलते हैं।
—जो व्यक्ति व्यर्थ का आडंबर करे।

—जो व्यक्ति बहुत आराम-तलबी हो।

सोळै सई अर पनरै पायली रौ भाव है। १४३३१

सोलह सई और पंद्रह पायली का भाव है।

सई = अनाज मापने का एक माप जो आठ माणो का होता है। और एक माणा चार पायली का होता है। सई,माणा और पायली या तो मिट्टी या धातु या काष्ठ के होते हैं। पुराने जमाने में अनाज इन्हीं से मापा जाता था।

—कोई भी चीज सस्ती हो या महँगी,लेकिन भाव निश्चित होने के पश्चात् वह सबके लिए मान्य होता है।

—भाव की मान्यता सर्वोपरि होती है,उसे कोई चुनौती नहीं दे सकता।

सोळै सवाया बीस, कम क्यूं करै? १४३३२

सोलह सवाये बीस, कम क्यों करते हो?

—वाजिब बात में किसी को भी एतराज नहीं करना चाहिए।

—जो सच्चाई हिसाब की तरह स्पष्ट है उससे मुकरना उचित नहीं।

सोळै सहंस सहेलियां, तुरी अठारै लक्ख। १४३३३
सांई थारै कारणै, छोडिया सहर बलक्ख॥

सोलह सहस्र सहेलियाँ, तुरंग अठारह लाख।
सॉई तेरे कारण ही, छोड़ा शहर बलाख॥

—बंगाल का राजा गोपीचंद जो उज्जैन के राजा भरथरी का भानजा था,उसने अपनी माता नैणावती के कहने पर ईश्वर की भक्ति के निमित्त जन्म-मरण के फंदे से मुक्त होने की खातिर अपना सर्वस्व त्याग दिया और दीक्षा के लिए गुरु गोरखनाथ की शरण में चला गया। बंगाल जैसा बड़ा राज,अठारह लाख घोड़े और सोलह हजार रानियों का परित्याग इस तरह सहज भाव से किया,जैसे पशु गोबर को त्यागकर आगे निकल जाता है।

—ईश्वर भक्ति की तुलना में सारी दुनिया का राज्य भी तुच्छ है।

सोळै हाथ साड़ी पण आधी पींडी उघाड़ी। १४३३४

सोलह हाथ साड़ी पर आधी पिंडुली उघाड़ी।

—जिस फूहड़ औरत को कपड़े पहिनने का भी शऊर न हो।

—लापरवाह व्यक्ति के लिए।

सोवै सो खोवै, जागै सो पावै। १४३३५

सोये सो खोये, जागे सो पाये।

—बाकी हर चीज का मूल्य है, पर समय को किसी भी मूल्य पर खरीदा नहीं जा सकता और न बीते हुए एक क्षण को भी वापस लौटाया जा सकता है। एक-एक क्षण का मूल्य है।

—समय को व्यर्थ गँवाने से बड़ी हानि और कुछ भी नहीं हो सकती। और सचेष्ट होकर समय का सदुपयोग करने से बड़ा लाभ और कुछ नहीं हो सकता।

—जो अज्ञानी है, वह जीवन-रूपी रत्न को खोता है और जो ज्ञानी है वह इस रत्न का सही उपयोग करता है।

पाठा : **सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सो पावत है।**

सौ-स्वे

सौ अकल तूयज्या, अेक अकल आडी आवै। १४३३६

सौ अक्ल बेकार जाय, एक अक्ल आड़े आय।

दे.क्र.सं. १४१५२

सौ अजांण, अेक सुजांण। १४३३७

सौ अजान, एक सुजान।

—एक समझदार व्यक्ति सौ मूर्खों से अच्छा है।

—संख्या की बजाय गुणों की पहिचान बड़ी होती है।

सौ ऊंदरां री खाल सूं ई नगारौ नीं मंढ़ीजै। १४३३८

सौ चूहों की खाल से भी नगारा नहीं मँडा जा सकता।

—पर्याप्त साधन के अभाव में कोई भी छोटा या बड़ा काम नहीं हो सकता।

—सौ अयोग्य व्यक्ति मिलकर भी उस काम को नहीं कर सकते, जिसे एक निपुण व्यक्ति कर सकता है।

सौक तौ मुलकां रौ पण गळी गिंधावै। १४३३९

शौक तो दुनिया भर का पर गली गंधाये.

—जो व्यक्ति बातें तो ऊँची-ऊँची बघारे, ठाट से रहे पर गली में गंदगी भभके।

—आडंबर करने वाले व्यक्ति पर कटाक्ष ।

—थोथे प्रदर्शन से वास्तविकता छिप नहीं सकती ।

सौ कपूतां बाप निपूतौ । १४३४०

सौ कपूत पर बाप निपूत ।

—सुपुत्र तो एक भी, बाप की कीर्ति को बढ़ा सकता है पर कुपुत्र तो उसे बदनाम ही करते हैं ।

—कुपुत्रों की बजाय तो निसंतान रहना ही बेहतर है ।

—जो सतान माँ-बाप को सुख न दे, उसका जीना ही व्यर्थ है ।

सौकीन डोकरी पण टाट री ओढ़णी । १४३४१

शौकीन बुढ़िया पर टाट की ओढ़नी ।

—जो व्यक्ति तबीयत से तो शौकीन हो, पर आर्थिक मजबूरी के कारण शौक पूरे नहीं कर सकता हो, उस पर कटाक्ष ।

—मन तो महाराजा का पर धन का टोटा ।

सौ कुमांण, अेक बांण । १४३४२

सौ कुमानुस और एक बान ।

—एक बान यानी एंक व्यसन जितनी क्षति कर सकता है, उतनी क्षति सौ कुमानुस मिलकर भी नहीं कर सकते ।

—एक व्यसन भी ज्यादा घातक होता है ।

सौ कोस री बीजळी अर सोळै कोस री गाज । १४३४३

सौ कोस की बिजली और सोलह कोस की गाज ।

—वर्षा हो-न-हो पर वर्षा के आसार तो बहुत दूर से दिख जाते हैं ।

—आशाओं के अनुकूल पूर्ति होने लगे, तब...।

—सौभाग्य का आभास पहिले ही प्रकट हो जाता है ।

—धन का प्रभाव दूर-दूर तक छिपा नहीं रहता ।

सौ कोसां ईं आपरौ घर सूझै । १४३४४

सौ कोस से भी अपना घर दिखता है ।

—कहीं भी दूर-दिसावर चले जाओ, अपने घर की चिंता पीछा नहीं छोड़ती ।

—विदेश में भी अपना घर आँखों से ओझल नहीं होता ।

—दुनिया तो बहुत लंबी-चौड़ी है, दूर-दूर तक फैली हुई है पर आदमी के सोच का दायरा अपने घर तक ही सीमित रहता है ।

सौ कोसां ईं दाग धणी रौ । १४३४५

सौ कोस दूर भी दाग स्वामी का ।

—ऊँट कहीं भी चला जाय लेकिन उस पर अंकित मालिक का चिह्न नहीं मिटता ।

—पुत्र कहीं भी चला जाय पर वल्दियत नहीं बदलती ।

—मनुष्य अपने कुल से पहिचाना जाता है ।

सौ कोसां ईं निरवाळौ । १४३४६

सौ कोस तक भी निवृत्त ।

—जो व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों से हमेशा कतराता रहे ।

—लापरवाह व्यक्ति सब तरह की चिंताओं से मुक्त होता है ।

—कामचोर व्यक्ति पर कटाक्ष ।

सौ कौसां बीज खिंवै, उणसूं किसौ सनेह । १४३४७
तिसना तौ जद भागसी, आंगण बरसै मेह ॥

सौ कोस पर बिजली चमके, उससे कैसा नेह ।
प्यास तो तब बुझे, जब आँगन बरसे मेह ॥

—कोरी-मोरी आशाओं से चाह नहीं बुझती, वह तो मनवांछित वस्तु के प्राप्त होने पर ही बुझती है ।

—सपना जब तक साकार न हो, सपना ही रहता है ।

—रोटी दिखाने से पेट नहीं भरता, खाने से भरता है ।

सौ खतां री अेक फारगती। १४३४८

सौ खातों की एक फारखती।

—सीधे मतलब की बात पर जोर देना।

—इधर-इधर की बातें छोड़कर जब मुद्दे की बात का आग्रह किया जाय, तब...।

सौ गत, सौ मत। १४३४९

सौ गति, सौ मति।

—प्राकृतिक वैविध्य की तरह मनुष्य में स्वभावगत वैविध्य होता है। कोई दो व्यक्ति समान नहीं होते—न सूरत में और न स्वभाव में।

—हर व्यक्ति की गति भी भिन्न होती है और मति भी, इसलिए हर व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की गति-मति का सम्मान करना चाहिए।

सौ गुंडा, अेक मुछमुंडा। १४३५०

सौ गुंडा, एक मुँछमुंडा।

—गुंडों की बजाय मुछमुंडा ज्यादा खतरनाक होता है।

—पुरुष को अपनी मूँछों के प्रति बड़ा गर्व होता है। पर धीरे-धीरे मूँछों से मोह भंग होता जा रहा है।

—पुरुष-प्रधान समाज में संभवतया यह उक्ति औरतों पर भी लागू हो सकती है।

सौ गोलां ईं कोटड़ी सूनी। १४३५१

सौ गोलों से भी कोठरी सूनी।

—नौकर चाहे जितने हों, पर मालिक की निगरानी के बिना सारी चौकसी व्यर्थ है।

—हर सूरत में मालिक की जिम्मेदारी ही महत्त्वपूर्ण होती है।

दे.क.सं.३७९९

सौ घड़ा पांणी ढोळ्यौ। १४३५२

सौ घड़े पानी डाला हो।

दे.क.सं.४९७१

सौ घोड़ा चढ़ै जिणरै आगै कुण दौड़ै ? १४३५३

सौ घोड़े चढ़े जिसके आगे कौन दौड़े ?

—बातूनी व्यक्ति से कोई जीत नहीं सकता।

—जब कोई व्यक्ति डींग मारना न छोड़े तब तंग आकर उसे यह कहावत सुनाई जाती है।

सौ जठै सवा सौ। १४३५४

सौ जहाँ सवा सौ।

—बड़े उत्सव-आयोजन में खर्च अधिक बढ़ने लगे तब मालिक खुले मन से कहता है—कोई बात नहीं, जहाँ सौ वहाँ सवा सौ, किसी भी सीगे में भद्दी नहीं लगनी चाहिए।

—मनुष्य अपनी मर्यादा के निमित्त खर्च करने में कोताही नहीं करता।

पाठा : जैड़ा निन्नांणूं वैड़ा सौ। सौ ज्यूं सवा सौ।

सौ जणां री लाकड़ी अेकण रौ भारौ। १४३५५

सौ जनों की लकड़ियाँ, एक जने का गट्ठर।

दे.क.सं.७९८५

सौ जणां री वीणती, अेकण रौ ठोसौ। १४३५६

सौ जनों की विनती, एक का ताना।

—सौ व्यक्तियों की बनी-बनाई बात एक व्यक्ति के कटु वचन से बिखर जाती है।

—विनम्रता से बिगड़ी हुई बात भी बन जाती है और अपशब्द से बनी हुई बात भी बिगड़ जाती है।

पाठा : सौ वीणती अर अेक ठोसौ।

सौ जोसी अर अेक डोसी। १४३५७

सौ जोशी और एक बुढ़िया।

—सौ भविष्यवक्ताओं की अपेक्षा एक अनुभवी व्यक्ति की बात ज्यादा सही और वजनदार होती है।

—किताबी ज्ञान की तुलना में भुक्तभोगी का अनुभव अधिक प्रामाणिक होता है।

सौ ज्यूं पचास। १४३५८

सौ ज्यों पचास।

—उधार डूबती हुई राशि से जो भी मिल जाय वह लाभकारी है।

—मनुष्य को थोड़े में ही संतोष कर लेना चाहिए।

—दूसरी व्यंजना यह भी है कि मामूली खर्च और करना पड़े तो कोई बात नहीं। जैसे सौ वैसे ही पचास।

पाठा : **सौ ज्यूं पचास, गांगौ ज्यूं हरदास।**

यानी जब गंगादास को दिया है तो हरदास को भी दो।

सौ ठग ठाकर अेक। १४३५९

सौ ठग ठाकुर एक।

—सौ ठगों की अपेक्षा एक ठाकुर ज्यादा लूटता है, खसोटता है और वह ज्यादा क्रूर होता है। ठग तो एक बार ठगता है, पर ठाकुर से तो रोज साबका पड़ता है।

—सामंती व्यवस्था समाप्त होने पर भी इस कहावत की अर्थ-वत्ता कभी समाप्त नहीं होगी, इसलिए किसी भी सामाजिक-व्यवस्था में सत्ता नष्ट नहीं होती, उसका रूप बदलता है। जिस व्यक्ति के हाथ में सत्ता की बागडोर है वह दुष्ट, क्रूर, संवेदनहीन और लोभी हुए बिना नहीं रह सकता।

सौ ठरकावूं अर अेक गिणूं। १४३६०

सौ लगाऊँ और एक गिनूँ।

—जो दुष्ट व्यक्ति किसी से न दबे, तब गरीब के प्रति उससे कुछ आशा रखना ही व्यर्थ है। वह सौ जूते मारता है और एक गिनता है।

—ज्यादती करने वालों की निर्मम प्रवृत्ति का चित्रण।

पाठा : **सौ ठोकूं अर अेक गिणूं।**

सौक तौ कंवळै मंड्योड़ी ई भूंडी। १४३६१

सौत तो दरवाजे पर मंडी हुई भी बुरी।

—कोई भी व्यक्ति अपने प्यार में किसी की साझेदारी बर्दाश्त नहीं कर सकता। उसकी बजाय तो वह मरना पसंद करता है।

—प्यार नितांत स्वार्थी, आत्मनिष्ठ, संवेदन शून्य और अंधा होता है।

दे.क.सं.१४१५७

सौ थारी झिकाळ, अेक म्हारौ आदेस। १४३६२

सौ तेरी बकवास, एक मेरा आदेश।

—बहू कितनी ही बकवास करे, सास के आदेश की वह अवहेलना नहीं कर सकती।

—कोई भी अधिकारी हो, वह धीरे-धीरे निरंकुश हो जाता है।

—अधिकार और मनमानी में तालमेल तुरंत बैठ जाता है।

पाठा : सौ दलीलां अर अेक आदेस।

सौ दरजी पूण मांटी। १४३६३

सौ दरजी पौन पति।

दे.क.सं.६३६४

सौ दवा अर अेक हवा। १४३६४

सौ दवा और एक हवा।

—सौ औषधियाँ जितना फायदा नहीं पहुँचा सकती, वहाँ शुद्ध हवा ही पर्याप्त है।

—औषधियों की तुलना में हवा की महिमा को इस उक्ति में प्रतिष्ठापित किया है।

दे.क.सं.१४२५०

सौ दिन चोर रा तौ अेक दिन साहूकार रौ। १४३६५

सौ दिन चोर के तो एक दिन साहूकार का।

—कई चोरियों में सफल होने के बाद आखिर एक दिन तो चोर पकड़ में आता है, तब पिछली चोरियों की सारी कसर निकल जाती है।

—बदमाश या दुष्ट हमेशा अपनी मनमानी नहीं कर सकते, एक दिन तो सज्जन व्यक्तियों की भी चलती है।

पाठा : सौ दिन चोर रा तौ अेक दिन धणी रौ।

सौ दिन सासू रा तौ अेक दिन बहू रौ। १४३६६

सौ दिन सास के तो एक दिन बहू का।

—सास का आतंक समाप्त होने के पश्चात् एक दिन बहू का राज स्थापित होकर ही रहता है।

—अमीरों का अत्याचार हमेशा कायम नहीं रहता, एक दिन गरीबों के दिन भी लौटते हैं।

सौ दिन सूं साधू मिळ्यौ, घर रौ धणी आंधौ मिळ्यौ। १४३६७

सौ दिन से साधु मिला, घर का स्वामी अंधा मिला।

—बड़ी मुश्किल से किसी पहुँचे हुए महात्मा का संसर्ग हुआ पर सामने वाला व्यक्ति अज्ञानी होने के कारण उनका कुछ भी लाभ नहीं उठा सका।

—जो व्यक्ति अपनी नासमझी के कारण किसी विद्वान की संगति में भी हमेशा के लिए मूर्ख रह जाय।

—जो व्यक्ति समय पर मिले दुर्लभ अवसर का लाभ न उठा सके।

सौ दूझै अर एक विसूखै तौ कांईं व्है? १४३६८

सौ दुहे और एक टले तो क्या हो?

—धनाढ्य को मामूली घाटा भी हो तो वह बड़े मजे से इस तरह सहन कर लेता है, मानो कुछ हुआ ही न हो। पर गरीबी में आटा भी गीला हो जाय तो उसकी पूर्ति नहीं हो सकती।

—गरीबों के लिए किंचित् नुकसान भी असह्य होता है, जबकि अमीर मामूली नुकसान की परवाह तक नहीं करते।

सौ धोती अर अेक गोती। १४३६९

सौ धोती और एक गोती।

—एक सगोत्री अन्य सारे धोतीवालों से बढ़कर होता है।

—पानी की बजाय खून गाढा होता है।

—सामान्य संपर्क की अपेक्षा रिश्तेदार अधिक नजदीक होता है।

सौ नगटां में अेक नाक वाळौ ई नक्कू बाजै। १४३७०

सौ नकटा में एक नाक वाला भी नक्कू कहलाता है।

—सौ बदमाशों के बीच एक भले या सज्जन व्यक्ति की कुछ भी पूछ नहीं होती, उलटे सभी मिलकर उसकी खिल्ली उड़ाते हैं।

—अनेक भ्रष्ट अधिकारियों के बीच एक ईमानदार व्यक्ति बड़ा अटपटा महसूस करता है क्योंकि बहुमत वाले भ्रष्ट अधिकारी उसे अवज्ञा की दृष्टि से देखते हैं।

—जनतंत्र में बहुमत की जीत होती है, गुणों की नहीं।

सौ नागौरी अेक अजमेरी, सौ अजमेरी अेक कसमीरी। १४३७१

सौ नागौरी, एक अजमेरी, सौ अजमेरी, एक कश्मीरी।

—किस प्रांत का व्यक्ति किससे कितना ज्यादा होशियार होता है, उसके संबंध में यह युक्ति है कि एक अजमेरी सौ नागौरियों की अपेक्षा अधिक चतुर होता है तो एक कश्मीरी सौ अजमेरियों के मुकाबले अधिक होशियार होता है।

सौ नार, अेक सोनार। १४३७२

सौ नार, एक सुनार।

—सौ औरतों को ठगने के लिए एक ही सुनार काफी है। औरतों को तो सिर्फ गहनों का चाव होता है, मिलावट का उन्हें ध्यान नहीं रहता। और उधर सुनार का सारा ध्यान मिलावट पर ही केंद्रित होता है।

—एक दूसरा अर्थ यह भी है कि न्यारिया जाति के लोग सुनारों की बस्ती के आस-पास राख और धूल छानकर सोने के कण एकत्रित करते हैं, वे सौ मिलकर भी एक सुनार के बराबर कमाई नहीं कर सकते।

—उत्कृष्ट लोभी का कोई मुकाबला नहीं कर सकता।

सौ नीच, अेक अंखमींच। १४३७३

सौ नीच, एक अंखमींच।

—जो व्यक्ति एक आँख आधी मींचकर बात करता है वह सौ नीच व्यक्तियों से भी बड़ा नीच है, ऐसा लोक-मानुस का अनुभव है।

—शारीरिक लक्षणों के द्वारा भी व्यक्ति की पहिचान होती है, जिनमें एक यह भी है।

सौ नै लेग्यौ पंजौ, पंजा नै लैग्यौ पाव। १४३७४
अबै के है बिणियांणी, आव भलां ईं जाव॥
सौ को ले गया पंजा, पंजे को ले गया पाव।
अब क्या है बनियाइन, आ भले ही जाय।

संदर्भ-कथा : एक थी विधवा बनियाइन। आगे-पीछे कोई था नहीं। औरत जात, दूसरा कोई धंधा बस का नहीं। सो गुजारे के लिए ब्याज का धंधा करने लगी। जिसको जरूरत होती वह घर आकर रुपये ले जाता था। पर चुकाते बखत जरूर चक्कर लगवाते थे। जैसे-तैसे करके वह अपना खर्च अच्छी तरह चला लेती थी। उसका ब्याज औरों से कुछ ज्यादा जरूर था, पर वह किसी को मना नहीं करती थी। जो भी आता उसे रुपये दे देती थी।

एक बार एक जाट उससे कर्ज लेने आया। हाथ जोड़कर बोला, 'सेठानीजी, मेरी लाज अब आपके हाथ में है। बेटी को विदा करना है। सौ रुपयों की सख्त जरूरत है। भगवान की दया से इस बरस बरसात अच्छी हुई। फसल कटते ही आपके रुपये लौटा दूँगा। फकत एक महीने की बात है। यह फंदा काट दो। जिंदगी भर आपका गुण मानूँगा।'

सेठानी बहुत लालची थी। उसका ब्याज रुपयों के हिसाब से नहीं, जरूरत के हिसाब से होता था। जाट यह जानता था। जेब से पाँच रुपये निकालकर बोला, 'यह लो एक महीने का पेशगी ब्याज और जल्दी से मुझे सौ रुपये दो। समझूँगा कि आपने मुझे नया जनम दिया।'

सेठानी ने नये जनम की बात पूरी सुनी ही नहीं। पर पाँच रुपये देखते ही वह सब समझ गई। पाँच का ब्याज और वह भी पेशगी! तुरंत सौ रुपये गिन दिये। जाट उसका बहुत-बहुत एहसान मानता हुआ चला गया।

अगले दिन घड़ी दिन चढ़े वह फिर आया। सफेद झक नई चवन्नी देते हुए कहने लगा, 'आपके सौ रुपयों से सारा काम निपट गया। फकत पाँच रुपये और चाहिएँ। खलिहान पर ये पाँच रुपये भी लौटा दूँगा। यह लो ब्याज की पेशगी चवन्नी और फटाफट पाँच रुपये दो। बारात चलने के लिए तैयार खड़ी है। बेटी को विदा करना है।'

चवन्नी का ब्याज सुनकर सेठानी ललचा गई। मन-ही-मन खुश हुई कि यह असामी खूब मिला। बेचारा पेशगी ब्याज देता है। उसने झट पाँच रुपये दे दिये।

उस दिन के बाद जाट ने बनियाइन के घर का रुख ही नहीं किया। बनियाइन खलिहान निकलने से पहले दो-तीन बार जाट को याद दिलाने गई, पर उसने बहुत ठंडा जवाब दिया।

हाँ-हूँ,हाँ-हूँ करता रहा। खलिहान भी निपट गया,पर उसने पैसे लौटाने का नाम ही नहीं लिया। चक्कर लगा-लगाकर बनियाइन के पाँवों में छाले पड़ गये। पर जाट को क्या परवाह।

एक दिन सेठानी ने तंग आकर चिढ़ते हुए कहा,'राममार्या,उस दिन तो कह रहा था कि खलिहान निकलते ही पैसे लौटा देगा,उम्र भर गुण मानेगा और अब सीधे मुँह बात भी नहीं करता। मेरे बीर,तू गुण-एहसान रहने दे,बस,मेरे पैसे लौटा दे,तेरी बड़ी मेहरबानी होगी। तेरे घर के बीसियों चक्कर लगा चुकी हूँ ,कुछ तो शरम कर।'

जाट ने ढीठता से कहा,'सेठानी,तूने रुपये मेरी जरूरत देखकर नहीं,पेशगी ब्याज देखकर दिये थे। अब कान खोलकर सुन ले :

सौ को ले गया पंजा, पंजे को ले गया पाव।

अब तो हे बनियाइन, तू आव भले ही जाव॥

चिलम का कस लगाकर वह आगे कहने लगा,'रास्ते पर चलने की किसी को मनाही नहीं है जी भरकर चक्कर लगा। पर तुझे देने के लिए मेरे पास कानी कौड़ी भी नहीं है। सवा पाँच रुपये थे सो तूने पेशगी ब्याज के ले लिये।'

—लोभ का परिणाम हमेशा बुरा होता है।

—जो लोभ करेगा,वह डूबेगा।

सौ पंचां रै गांव सूं निसायौ ई आवणौ पड़ै। १४३७५

सौ पंचों के गाँव से नि:सहाय भी आना पड़ता है।

—एक से अधिक व्यक्तियों की जिम्मेदारी कुछ माने नहीं रखती।

—अधिक पंचों की पंचायती में किसी की भी सुनवाई नहीं होती।

सौ पछै ई साहजी क्यूं? १४३७६

सौ के पीछे भी शाहजी क्यों?

—गाँव में सो आदमी मर जाएँ फिर भी शाहजी की बारी क्यों आए? मरने वाले मरते रहें, जीवित मनुष्यों का उनसे क्या सरोकार।

—जो व्यक्ति हरदम सशंकित रहते हुए,जाने अनजाने किसी तरह के खतरे का सामना न करना चाहे,उसके लिए।

सौ पाई अर अेक तिसाई। १४३७७

सौ पिलाई और एक तिसाई।

—सौ गायों को पानी पिलाने का जितना पुण्य होता है, उतना एक गाय को प्यासी रखने का पाप बढ़ जाता है।

—किसी की भलाई करने का अधिकार तो आपका है पर किसी को महरूम रखने का अधिकार आपको नहीं है।

सौ बकिया अर अेक लिख्या। १४३७८

सौ बका और एक लिखा।

दे.क.सं.१५२५

पाठा : सौ भखिया अर अेक लिखिया।

सौबत करणी तौ मरद री करणी। १४३७९

सोहबत करनी तो मर्द की करनी।

—जो सुख में भले ही साथ न रहे, पर दुख में हरदम साथ निभाये।

—मर्द व्यक्ति स्वयं खतरा झेलकर मित्र का साथ देने के लिए उद्‌यत रहता है।

सौबत जिसौ असर। १४३८०

सोहबत जैसा असर।

दे.क.सं.१३२७८

सौ बरस रौ भोमियौ, घड़ी रौ जागीरदार। १४३८१

सौ बरस का भोमिया, घड़ी का जागीरदार।

भोमियौ = अपने बाहुबल द्‌वारा उपार्जित भूमि का स्वामी।

—एक भोमिया अपनी मेहनत से सौ वर्ष में उतनी कमाई नहीं कर सकता, जितनी एक ठाकुर या जागीरदार दूसरों की कमाई से एक दिन में अर्जित कर लेता है।

—जितनी सत्ता उतनी कमाई।

सौ बरस रौ सिलावटौ, बारै बरस रौ घर-धणी। १४३८२

सौ बरस का सिलावटा, और बारह वर्ष का मालिक।

—मेमार या कारीगर उम्र में चाहे जितना बड़ा हो, उसे कम उम्र वाले मालिक का कहना मानना पड़ता है।

—उम्र के अधिकार की अपेक्षा सत्ता का अधिकार बड़ा होता है।

—अपनी चीजों के प्रति ममत्व जितना स्वामी का होता है, उतना दूसरों का नहीं।

सौ बरसां रौ सईकौ। १४३८३

सौ बरस की शताब्दी।

—अनुकूल अवसर बार-बार नहीं मिलता।

—उतावली करने से समय का अतिक्रमण नहीं किया जा सकता।

—एक साथ कोई अचीता लाभ हो जाय, तब...।

सौ बातां री अेक बात। १४३८४

सौ बातों की एक बात।

—जब किसी प्रमुख बात पर जोर दिया जाय, तब...।

—विषयांतर होने पर खास मुद्दे की याद दिलाना।

मि.क.सं.१४३४८

सौ भैंस्यां में अेक पाडियौ, राकड़सिंह नांव। १४३८५

सौ भैंसियों में एक पाड़ा, राकड़सिंह नाम।

—सौ मूर्खों में एक बुद्धिमान बड़े ठाट से उन पर रुआब जताता है।

—गँवारों की बस्ती पर जब किसी समझदार ने पूरा आधिपत्य जमा रखा हो।

सौ मण तिल है, पण घरटी में गाळौ ऊरै जितरौ धांन नीं। १४३८६

सौ मन तिल हैं, पर चाकी में डालें जितना मुट्ठी अनाज भी नहीं।

—और तो सब ऊँचे ठाट हैं पर खाने के लिए घर में अनाज नहीं है, बस इतनी ही कसर है।

—आडंबर चाहे कितना ही क्यों न हों, जब घर में पेट भर खाना भी हाथ न आये, तब दिखावा किस काम का?

सौ मण धांन री मूठी बांनगी। १४३८७

सौ मन अनाज की मुट्ठी बानगी।

दे.क.सं.३४५६

सौ मण री कोठी भरीजै पण सवा सेर रौ पेट नीं भरीजै। १४३८८

सौ मन का कुठला भर जाय पर सवा सेर का पेट नही भरता।

—कोई अमीर चाहे तो हजार मन का तहखाना एक साथ भर सकता है,पर छोटे से पेट को हमेशा के लिए एक साथ नहीं भर सकता,वह तो एक जून से ज्यादा भरा ही नहीं जा सकता।

—पेट की भूख कभी नहीं मिटती,न अमीर की और न गरीब की।

—दुनिया में सारा प्रपंच पेट के लिए ही है पर उसकी माँग कभी पूरी नहीं होती।

पाठा : सौ मण री कोठी भरणौ सोरौ, पण सवा सेर री कोठी भरणौ दोरौ।

सौ मरज्यौ पण सौवां नै पाळण वाळौ मत मरज्यौ। १४३८९

सौ भले ही मरें पर सौ को पालने वाला न मरे।

—जिस व्यक्ति पर अनेक व्यक्तियों के भरण-पोषण की जिम्मेदारी हो,उसका जीवन बहुत महत्त्वपूर्ण है,उसे किसी भी प्रकार की आँच न पहुँचे तो बेहतर है।

—जिसका जीवन दूसरों के लिए लाभकारी है,ईश्वर उसे स्वस्थ व सानंद रखे।

सौ मरया अर अेक जलम्यौ। १४३९०

सौ मरे और एक जन्मा।

—आतताई या बेईमान व्यक्ति अपने जन्म से पहिले ही अनेक व्यक्तियों के प्राणों की आहुति लेकर जन्म लेता है।

—दुष्ट व्यक्ति अकेला ही हजार प्राणों को कष्ट देने के लिए पर्याप्त होता है।

सौ मांटी मारनै अेक छिनाळ घड़ी। १४३९१

सौ खसम मारकर एक छिनाल घड़ी।

—विधाता ने छिनाल औरत को घड़ने के लिए बहुत समय और बहुत शक्ति बर्बाद की है।

—छिनाल औरत सबसे ज्यादा खतरनाक और विध्वंसकारी होती है।

सौ में सूर अर हजार में दातार। १४३९२

सौ में शूर और हजार मे दातार।

—सौ आदमियों में एक शूरवीर और हजार आदमियों में एक दानवीर बड़ी मुश्किल से पैदा होता है।

—मनुष्यों की अनंत भीड़भाड़ में गुणी, वीर, दातार, प्रतिभाशाली और विद्वान बिरले ही नजर आते हैं।

सौ मेळां रौ अेक असाढ़। १४३९३

सौ मेलों का एक असाढ़।

—जो बैल कई मेलों में नहीं बिकता, वह आषाढ़ महीने में आसानी से ऊँची कीमत पर बिक जाता है, इसलिए कि पहली बरसात होते ही जुताई के लिए बैलों की माँग बहुत बढ़ जाती है।

—किसी वस्तु की माँग बढ़ने पर उसका मूल्य स्वतः बढ़ जाता है।

सौ रांडां नै भांग'र अेक रंडवौ घड़्यौ। १४३९४

सौ राँडों को तोड़कर एक रँडुआ घड़ा।

—बेशर्म व्यक्ति के लिए, जिसे न झूठ बोलने में शर्म महसूस होती है और चुगली करने में।

—जो व्यक्ति मानवीय मर्यादा का रंचमात्र भी खयाल न रखे।

सौ रा भाई साठ, आधा गिया न्हाट, दस देवूंला, दस दिरावूंला अर दस रौ कांईं देणौ! १४३९५

सौ के भाई साठ, आधे गये भाग, दस दूँगा, दस दिलाऊँगा और दस का क्या देना!

संदर्भ-कथा : एक बनिया एक जाट में सौ रुपये माँगता था। जाट की साख अच्छी नहीं थी। बस चलते लिया हुआ रुपया वापस नहीं देता था। हर बार कोई-न-कोई बहाना गढ़ लेता था। एक बार बनिये ने ज्यादा तकाजा किया तो जाट ने कहा, 'बही लेकर घर आ जाना। आज हिसाब साफ कर दूँगा। बहुत दिन हुए आपको चक्कर लगाते हुए।'

सेठ खुशी-खुशी बही लेकर उसके घर गया। सोचा—आज चौधरी को जब्बर सुमत सूझी। सनकी के जँच गई सो भली।

जाट ने सेठ के पास खड़े होकर कहा, 'क-ों सेठजी मेरे खाते में सौ रुपये बोलते हैं ना? आज एक-एक पाई चुका देता हूँ। देखो, ठीक से हिसाब साफ करना।'

फिर अँगुलियों पर जोड़-बाकी करते बोला—

सौ के भाई साठ,

आधे गये भाग,

दस दूँगा, दस दिलाऊँगा,

और दस का क्या लेना-देना !

'बोलो हिसाब साफ हुआ कि नहीं। चलो, बच्चों का मुँह मीठा कराओ। बहुत दिनों के बाद वसूली हुई है।'

यह सुनकर बनिये से भी हँसे बिना नहीं रहा गया। जाट का एक छोकरा पास ही खड़ा था। बोला, 'क्यों काका, आज सेठजी बहुत खुश दिख रहे हैं।'

जाट ने कहा, 'आज खुश नहीं होंगे तो कब होंगे, पूरे सौ का हिसाब साफ किया है। अब भी तेरा मुँह मीठा न कराएँ तो इनकी मरजी।'

—जैसे को तैसा मिलने पर ही मामला एकदम बढ़िया जमता है।

—चालाक को ताकत से नहीं चालाकी से ही हराना चाहिए।

सौ रै सागै सौ गिया। १४३९६

सौ के साथ सौ गये।

—ज्यादा लोभ की खातिर घाटा सहन करना पड़े, तब...।

—आशा के अनुरूप काम न होने पर।

—धोखे से प्राप्त की हुई वस्तु, धोखे में ही चली जाती है।

सौ रौ ई गुवाळ अर अेक रौ ई गुवाळ। १४३९७

सौ का भी ग्वाला और एक का भी ग्वाला।

—छोटे-बड़े काम में समय तो अपनी गति से ही व्यतीत होता है, इसलिए छोटे की बजाय बड़ा काम करना ही उचित है।

—बड़े काम में ही समय खर्च करना ज्यादा संगत है।

सौ लरड़ियां मांय सूं अेक तूईज जावै तौ कांई व्है ? १४३९८

सौ भेड़ों में से एक का गर्भ गिर भी जाय तो क्या हो ?

—बड़े आयोजन में किसी एक सामान्य व्यक्ति का सहयोग न भी मिले तो कुछ फर्क नहीं पड़ता।

—बड़े कारोबार में मामूली हानि भी हो जाय तो वह बड़े मजे से सहन हो जाती है।

मि.क.सं.१४३६८

सौ लौ, पचास लौ, हूता जैड़ा हुय जावौ। १४३९९

सौ लो, पचास लो, जैसे थे वैसे हो जाओ।

—लेन-देन तो चलता ही रहता है, उसकी वजह से आपसी संबंधों में फर्क नहीं पड़ना चाहिए। रुपयों की अपेक्षा रिश्ता बड़ा होता है।

—समझदार व्यक्ति रुपयों के कारण संबंध नहीं तोड़ता।

सौ सती अर अेक जती। १४४००

सौ सती और एक यती।

—सती की अपेक्षा यती होना बहुत कठिन है।

—पतिव्रता औरतें तो मिल जाती हैं, पर एक ब्रह्मचारी मिलना दुर्लभ है।

सौ सयांणा अेक मत। १४४०१

सौ सयाने एक मत।

संदर्भ-कथा : दरबार-ए-खास का मजमा जुड़ा था। अकबर-बादशाह बहुत खुश नजर आ रहे थे। संगीत शिरोमणि तानसेन के पास बीरबल बैठा था। बादशाह ने तानसेन से पूछा, 'क्यों, सभी सयानों का एक मत होता है क्या ? मेरा तो खयाल है किन्हीं दो सयानों का मत नहीं मिलता। जितने सर हैं, उतनी तरह की समझ है.। तुम्हारा जो भी खयाल हो, वही बताना।'

'वही बताऊँगा, जहाँपनाह ! आपने बिल्कुल ठीक फरमाया कि किन्हीं दो सयानों की बुद्धि नहीं मिलती।' जहाँपनाह, तानसेन के विचार जानकर बड़े खुश हुए। तत्पश्चात् उन्होंने बारी-बारी से एक-एक रत्न को यही सवाल पूछा। सभी ने बादशाह के खयाल का ही समर्थन किया। लेकिन बीरबल का खयाल सबसे ही अलग था। उसने विनम्रता-पूर्वक कहा, 'नहीं, जहाँपनाह मेरा विचार आपसे बिल्कुल उलटा है...।' बादशाह की त्यौरियाँ चढ़ गईं। यकायक कानों को विश्वास नहीं हुआ। बीरबल की इतनी हिम्मत ! रुआब से पूछा, 'क्या कहा ?'

'वही कहा जो मुझे सच महसूस हुआ। जिसे सुनने के लिए आप हमेशा बेताब रहते हैं।' बीरबल के इन शब्दों का बादशाह पर ऐसा असर हुआ, जैसे दूध के उफान पर ठंडे पानी की फुहार छूटी हो। मुस्कराते हुए पूछा, 'यही तो मैं चाहता हूँ। जो तुम्हारे दिल में हो, वही बताओ।'

तब बीरबल आश्वस्त होकर कहने लगा, 'हुजूर, मुझ नाचीज के खयाल से तो सभी सयानों का एक मत होता है—क्योंकि वे ज्यादातर बुद्धि का आदेश मानते हैं, दिल का नहीं। इसे प्रत्यक्ष समझाने के लिए मुझे तीन दिन की मोहलत दीजिये, गरीब-परवर।'

बादशाह अपनी जिज्ञासा का शमन करने की मंशा से तुरंत मान गये। साथ-ही-साथ उन्होंने यह फरमान भी जारी करने के लिए वजीर को कह दिया कि आज से तीसरे दिन रात की वेला सभी दरबारी शुद्ध दूध का एक घड़ा हौज में लाकर डालें। हौज के पास कोई पहरेदार खड़ा नहीं होगा। खबरदार, दूध में बूँद भर पानी की मिलावट न हो।

उसी वक्त सारे नगर में फरमान जारी हो गया। जहाँपनाह के लिए एक-एक घड़ी बिताना मुश्किल था। पहली बार उनकी समझ में आया कि वक्त किसी का लिहाज नहीं रखता। दरबार लगाने की बजाय उन्होंने बेगमों के रंग-महल में तीन दिन बिताये।

चौथे दिन अल्ल सवेरे अकबर बादशाह नौ रत्नों को साथ लेकर दूध मे भरा हौज देखने गये। पहरेदार ने काला पर्दा हटाया तो हौज में दूध के बदले शुद्ध पानी नजर आया। बादशाह के चेहरे की रंगत बदल गई। पाँव पटकते हुए जोर से बोले, 'दरबारियो की यह गुस्ताखी? सबको सरेआम सौ-सौ कोड़े लगवाये जाएँ—नंगी पीठ पर...।'

बीरबल हाथ जोड़कर बीच ही में बोला, 'नहीं, जहाँपनाह, गुस्ताखी माफ हो। इसके लिए मैंने पहिले ही दरबारियों की ओर से क्षमा माँगली थी। और आपने क्षमा बख्श दी थी।'

गुस्से के उबाल में बादशाह क्षमा की बात भूल चुके थे। याद दिलाते ही वे तत्काल मान गये। बीरबल की ओर आश्चर्य से देखते हुए पूछा, 'मगर, यह हुआ कैसे? दरबार का फरमान तो निखालिस दूध के लिए था।'

तब बीरबल ने मुस्कराने की बजाय गंभीर स्वर में कहा, 'यही बताने के लिए मैंने मोहलत माँगी थी। यह सभी सयानों के मत का नतीजा है। हर समझदार ने सोचा कि उसके एक घड़े पानी का दूध के हौज में क्या पता चलेगा? अब जो भी पता चला है, आपकी नजर के सामने है। यदि हर समझदार का मत अलग होता तो जहाँपनाह सचमुच दुनिया का नजारा ही दूसरा होता। समझदारों के एक मत ने सारी दुनिया की रंगत बिगाड़ी है।'

बादशाह ने बीरबल की पीठ थपथपाई और खजांची को एक हजार मोहरें देने का हुक्म फरमाया तो बीरबल ने कोरनिश करते हुए कहा, 'एक और गुस्ताखी माफ हो जहाँपनाह कि सभी सयानों का एक मत होना बुरी बात है। मैं इस बुरी बात के लिए इनाम लेने की हिमाकत नहीं करूँगा। किसी अच्छी बात के लिए आपसे माँगकर इनाम लूँगा।' अकबर बादशाह ने और अधिक खुश होकर दुबारा उसकी पीठ थपथपाई। मुस्कराते हुए बोले, 'इसीलिए तो मैं तुम्हें इतना चाहता हूँ और तुम्हारी इतनी इज्जत करता हूँ।'

—यदि सयानों का एक मत नहीं हो तो यह दुनिया जीने काबिल रह जाय।

सौ सांढ्यां, सौ करहला, पूत निपूती होय। १४४०२
मेहड़ला तौ वूठा ई भला, होणी हो सो होय॥

—एक अचीती बाढ़ में किसी गड़ेरिन की सौ ऊँटनियाँ मर गईं, सौ ऊँट मर गये। सारे लड़के-पोते बह गये, फिर भी बरसात की वजह से जो भी नुकसान हो-सो-हो, उसका तनिक भी पछतावा नहीं है। लाख क्षति के बावजूद मेह तो बरसा हुआ ही बेहतर है। वह बरसे, खूब बरसे।

दे.क.सं. ११६०४

सौ सांसी अर अेक मद्रासी। १४४०३

सौ सॉसी और एक मद्रासी।

—यह उक्ति मद्रास के मूल निवासियों पर नहीं, मद्रास में ब्याज का धंधा करने वाले राजस्थानी बनियों पर लागू होती है। वे बेहद लोभी, निर्मम और निपट स्वार्थी होते हैं। एक प्रवासी बनिया सौ साँसियों की अपेक्षा ज्यादा दुष्ट होता है।

सौ साळा अर अेक न्यात। १४४०४

सौ साले और एक न्यात।

—सौ सालों को खिलाने की अपेक्षा बिरादरी को खिलाने का महत्त्व और पुण्य अधिक है।

—सालों की अपेक्षा बिरादरी की अहमियत ज्यादा है।

सौ साळा अेक जात व्है। १४४०५

सौ सालों की एक जाति।

—मायके में बहिन जिसको भाई माने वे सभी जीजा के साले हैं। और साले-साले में भेद करना जीजा के लिए उचित नहीं। वे सभी एक ही जाति के हैं।

—सभी सालों के निहित स्वार्थ, संस्कार और विचार एक जैसे ही होते हैं।

सौ सींगी अर अेक भींगी। १४४०६

सौ सीगी और एक भींगी।

भींगी = वर्षा ऋतु के बाद एवं शरद ऋतु के प्रारंभ में पाया जाने वाला एक कीट विशेष जिसकी गर्दन पर हरे रंग का चमकदार ठोस आवरण होता है।

—सौ गायों की अपेक्षा एक भींगी मारना ज्यादा पाप है, ऐसी लोक-मान्यता है।

—असहाय व्यक्ति को सताना उचित नहीं।

सौ सुगनी नै अेक काळ डकार जावै। १४४०७

सौ शकुनियो को एक अकाल डकार जाता है।

—अच्छी बरसात के शकुन बताने वालों को अकाल की विभीषिका झूठा साबित कर देती है।

—वर्तमान की वास्तविकता प्रकट होने पर भविष्यवाणियों का दावा खोखला साबित हो जाता है।

सौ सुजांण, अेक अजांण। १४४०८

सौ सुजान, एक अजान।

—समझदार व्यक्ति गलती करे तो वह क्षम्य नहीं, पर अनजान व्यक्ति गलती करे तो वह क्षम्य है।

—समझ को दंड है और नासमझ को क्षमा।

सौ सुनार री अर अेक लुहार री। १४४०९

सौ सुनार की और एक लुहार की।

दे.क.सं.१४२८२

सौ सुरंगां में अेक सपूत, सौ कुमेतां में अेक कपूत। १४४१०

सौ सुरंगो मे एक सपूत, सौ कुमेतो मे एक कपूत।

कुमेत = घोड़ों का एक रंग जो स्याही लिए लाल होता है, लाखी। वह शुभ माना जाता है।

—घोड़ों की जानकारी बाबत इस उक्ति का महत्त्व है। जिन घोड़ों का रंग बिल्कुल लाल हो, वे अशुभ होते हैं, उनमें कुछ-न-कुछ कमी मिल ही जाती है। दूसरी ओर कुमेत रंग का घोड़ा शुभ माना जाता है। खरीददार आँख मींचकर उसका सौदा कर लेते हैं।

—घोड़ों की नाईं मनुष्यों में भी शुभ-अशुभ के लक्षण माने जाते हैं।

सौ सोगी अर अेक दोगी। १४४११

सौ मित्र और एक दुश्मन।

—सौ हितैषियों के मुकाबले एक दुश्मन ज्यादा भारी पड़ता है।

—सौ मित्र मिलकर जितना भला कर सकते हैं, उससे ज्यादा नुकसान एक दुश्मन पहुँचा सकता है।

सौ सोगी अर अेक पागी। १४४१२

सौ सोगी और एक खोजी।

सोगी = शकुन बताने वाला। पागी = पदचिह्नों से विशेष व्यक्ति की पहिचान करने वाला।

—शकुन बताने वालों की अपेक्षा खोजी ज्यादा सच्चा होता है।

—शकुन बताने वालों की तुलना में खोजी का अधिक महत्त्व है।

सौ-सौ ऊंदर खाय, मिनकी हज करवा जाय। १४४१३

सौ-सौ चूहे खाय, बिल्ली हज करने जाय।

दे.क.सं.११२७५

पाठा: मिनकी हज करवा जाय, सौ-सौ ऊंदर खाय।

सौ-सौ ऊंदर खाय, बिलाड़ी पाटै बैठ माळा धारी।

सौ-सौ कोस रा पल्ला लेवणिया। १४४१४

सौ-सौ कोस के पल्लू लेने वाले।

—अत्यधिक चालाक व होशियार व्यक्ति के लिए जो सौ-सौ कोस तक की पूरी जानकारी रखे।

—जिस व्यक्ति का सौ-सौ कोस तक भारी रुतबा हो।

स्री गणेसायनमौ में ई डबकौ। १४४१५

'श्री गणेशाय नमः' में ही भूल।

—किसी कार्य की शुरुआत में ही कुछ गड़बड़ हो जाय, तब...।

—कार्य के प्रारंभ में ही उसकी सफलता के प्रति संशय उत्पन्न हो जाय, तब...।

स्रीमाळियां री गोठ में गियोड़ौ खटावै। १४४१६

श्रीमालियों की गोठ में जो आये सो ही चलता है।

—यदि आयोजक उदार और शालीन हों तो वहाँ पहुँचे हर व्यक्ति को सम्मान-पूर्वक भोजन मिल जाता है।

—बड़े उत्सव में दस-बीस अनामंत्रित आदमी भी चल सकते हैं।

स्यांणां रै संग, सेर स्यांणौ नीं बणै। १४४१७

सयानों के संग शेर सयाना नही बनता।

—सज्जन व्यक्तियों की संगति में भी दुष्ट अपनी दुष्प्रवृत्ति नहीं छोड़ सकता।

—सही है कि अच्छी संगति का प्रभाव पड़ता है, पर जो व्यक्ति स्वभावतः दुष्ट होता है उसके लिए किसी की भी अच्छी संगत कुछ भी माने नहीं रखती।

स्यांणा सदावंत थकै री सोचै। १४४१८

सयाने हमेशा आगे की सोचते हैं।

—समझदार व्यक्ति वर्तमान के परे दूर की बात सोचते हैं।

—बुद्धिमान हमेशा दूरगामी परिणामों को ध्यान में रखते हैं।

स्यांणा समझवांन री तौ सगळी बातां में मौत है। १४४१९

सयाने समझवान की तो सब बातों में मौत है।

—इसके पहिले भी इसी आशय की उक्ति आई है—सेठजी! उदास क्यों हैं कि समझते हैं, इसलिए। समझदार को हर कदम फूँक-फूँककर रखना पड़ता है, वह चारों तरफ की चिंताओं से घिरा रहता है। सभी उसे बेगार बताते हैं और वह मना नहीं कर पाता।

—समझदार होने का ही अर्थ है, आफतों को आमंत्रित करना।

स्यांणी चाली सासरै अर काली देवै सीख। १४४२०

सयानी चली ससुराल और बावरी सीख दे।

—जब कोई मूर्ख व्यक्ति समझदार को नसीहत देने लगे, तब पास खड़ा कोई व्यक्ति यह कहावत ठोक देता है।

—जहाँ तक बन पड़े मूर्ख व्यक्ति को ज्यादातर चुप रहना चाहिए, ताकि उसकी पोल न खुले। जब वह पंडित को ज्ञान देना चाहेगा तो लोग उसका मखौल उड़ाएँगे ही।

स्यांणी बहू पापड़ पांणी में घोळै। १४४२१

सयानी बहू पापड़ पानी में घोले।

—जो व्यक्ति जरूरत से ज्यादा समझदार हो, उससे जाने-अजाने भूल हो ही जाती है।

—ज्यादा होशियारी भी काम की नहीं।

स्यांणी रै बावळा, बावळी रै स्यांणा। १४४२२

सयाने के बावरे और बावरी के सयाने।

—आनुवंशिकता में कभी-कभार अपवाद हो जाता है—मूर्ख माँ-बाप के बच्चे समझदार निकल आते हैं और समझदार माँ-बाप के बच्चे मूर्ख साबित हो जाते हैं।

—यह कतई जरूरी नहीं कि समझदारों के बच्चे समझदार ही हों और मूर्खों के बच्चे मूर्ख ही निकलें।

स्यांणी लुगाई, पांणी माथै मलाई। १४४२३

सयानी लुगाई, पानी पर मलाई।

—समझदार व्यक्ति के लिए कोई भी काम मुश्किल नहीं, वह पानी से भी मलाई निकाल लेता है।

—समझदार व्यक्ति किसी भी हल्की-भारी बात से सार ग्रहण कर लेता है।

स्यांणौ कमावै अर सूता चबावै। १४४२४

सयाना कमाये और सोने वाले चबाएँ।

—संयुक्त परिवार में कमाई करने वाले एक-दो व्यक्ति ही होते हैं और बाकी सारे बच्चे-बूढ़े बैठे ठाले ही खाते हैं और उधर बेचारे मुखिये को रोटी खाने का समय भी नहीं मिलता। समझदार को सब जगह दबना पड़ता है। उसके हिस्से तो आफत-ही-आफत मिलती है।

—जब किसी समझदार का माल निकम्मे व्यक्ति उड़ायें, तब...।

स्यांणौ किणरौ चोर ! १४४२५

सयाना किसका चोर !

—सयाना व्यक्ति किसी को भी तकलीफ नहीं देता, उसके हाथ से किसी का भला ही होता है।

—सयाना व्यक्ति समझ-बूझ से काम लेता है, इसलिए वह किसी के प्रति भी कसूरवार नहीं होता।

स्यांणौ मिनख तौ बात सुण्यां ईं मरै। १४४२६

सयाना मनुष्य तो बात सुनते ही मरता है।

—समझदार व्यक्ति किसी के बारे में ऐसी-वैसी बात सुनकर दुखी होता है।

—सयाना मनुष्य तो बदनामी सुनने से पहिले मर जाना अच्छा समझता है।

स्यांन रा टका व्हैगा। १४४२७

शान के टके हो गये।

—जब किसी बदनामी से इज्जत धूल में मिल जाय, तब...।

—किसी प्रतिष्ठित परिवार में कोई कुत्सित घटना हो जाय, तब .।

स्यांम गवाळिया री धरती है। १४४२८

श्याम ग्वाले की धरती है।

—यह समूची धरती श्री कृष्ण-भगवान की मिल्कियत है।

—एक दिन सभी को यह धरती छोड़कर हमेशा के लिए कूच करना पड़ता है, इसलिए किसी को भी यह अहंकार करना शोभा नहीं देता कि वह धरती का मालिक है, धरती का स्वामी तो एक ईश्वर ही है।

स्यांम सूं किसौ संगरांम ! १४४२९

श्याम से कैसा संग्राम !

—ईश्वर को किसी भी भली-बुरी बात के लिए दोषी नहीं मानना चाहिए,क्योंकि जो कुछ भी घटित होता है,वह भाग्य के अनुसार ही होता है ।

स्यांमीजी री सेवा करत्यां पूंद रा दरसण व्है । १४४३०

स्वामीजी की सेवा में लिंग के दर्शन होते हैं ।

—ओछे व्यक्ति की भलाई करने का नतीजा बुरा ही होता है ।

—पाखंडी साधुओं की सेवा करने से कुछ-न-कुछ नुकसान की ही संभावना रहती है,उनसे भलाई की आशा रखना ही मूर्खता है ।

पाठा : स्वांमी नै सेवियां पूंन दिखावसी ।

स्याई तौ ढुळ्योड़ी इज मंगळीक । १४४३१

स्याही तो गिरी हुई भी मांगलिक ।

—बचपन में पढ़ते समय दवात उलटने पर सभी कहते कि स्याही गिरना शुभ लक्षण है, चिंता करने की बजाय खुशी मनानी चाहिए ।

—सामंती व्यवस्था में एक ऐसी ही बात सुनने में आती थी । रजवाड़े में राजा का आदेश सर्वत्र मान्य होता था,उसके लिए यह मुहावरा काम में लिया जाता था कि यहाँ तो राजा की स्याही गिरती है । स्याही गिरना सत्ता का प्रतीक माना जाता था । संभवतया इस उक्ति का स्रोत राज्य की स्याही गिरने से ही हो ।

स्यारै रा मसांण रौ तौ बेरौ इज है । १४४३२

पास के मसान का तो पता ही है ।

—जहाँ तक संभव हो अहितकारी बात से बचने की चेष्टा करनी चाहिए ।

—गाँव में कौन बुरा है और कौन नहीं,इसकी जानकारी तो सबको रहती है ।

स्याळ कद सिकार करै ? १४४३३

सियार कब शिकार करता है ?

—निर्बल व्यक्ति बड़ा काम करने के लिए समर्थ नहीं होता ।

—जो परजीवी हैं वे काम करने का कष्ट नहीं उठाना चाहते।

स्याळ कह्यौ अर लूंकी साख भरी। १४४३४

सियार ने कहा और लोमड़ी ने गवाही दी।

—जब किसी धूर्त व्यक्ति की कोई झूठा व्यक्ति गवाही दे तो वह कुछ भी माने नहीं रखती।

—गैर जिम्मेदार व्यक्तियों की बात का एतबार नहीं करना चाहिए।

पाठा : स्याळ री साख लांकी भरै।

स्याळकां सूं समदर नीं फाटै। १४४३५

सियारों से समंदर नहीं फटता।

—निरंतर अभ्यास और वांछित साहस के बिना कोई भी काम संपन्न नहीं हो सकता।

—डींग मारने से कोई काम पूरा नहीं होता, कौशल से होता है।

स्याळ कैड़ा बोल्या के पौ'र बोल्या जिसा। १४४३६

सियार कैसे बोले कि पिछले वर्ष बोले वैसे ही।

—जो व्यक्ति गालियाँ बोलने का आदी होता है, उसके मुँह से जब-तब गालियाँ ही निकलती हैं, भूल-चूक से भी शिष्ट बोली का प्रयोग संभव नहीं होता।

—अच्छे संस्कार एक दिन में नहीं सीखे जाते, लंबे प्रशिक्षण की जरूरत रहती है।

—बुरी आदतें आसानी से नहीं छूटतीं।

पाठा : स्याळिया कैड़ा बोल्या के मूंडा हुता जैड़ा।

स्याळ पड़्यौ धेड़ में के आज अठै ई डेरौ। १४४३७

सियार गिरा गड्ढे में कि आज यही डेरा।

—जब किसी व्यक्ति पर अचानक मुसीबत आ पड़े और वह उसका इजहार करने की अपेक्षा छिपाने की चेष्टा करे, तब...।

—जो व्यक्ति अपनी विपदा को भी खुशहाली बताने का स्वाँग करे, तब...।

—इसी आशय की एक राजस्थानी कहावत का हिंदी अर्थ है—पाँव फिसला तो हर-हर गंगा।

स्याळ भालोड़ी लियां जाय।–व.२९३ १४४३८

सियार भालोड़ी लिये जा रहा है।

भालोड़ी = किसी शस्त्र के आगे का नुकीला भाग।

—शरीर में भालोड़ी गड़ने से सियार तो अपनी जान बचाने के लिए भागा जा रहा है और उधर शिकारी को भालोड़ी ले जाने की ही चिंता हो रही है।

—जो व्यक्ति किसी के प्राणों की बजाय अपनी तुच्छ वस्तु की ज्यादा चिंता करे।

स्याळ री खतावळ सूं बोर कोनीं पाकै। १४४३९

सियार की उतावली से बोर नहीं पकते।

दे.क.सं.३४७७, ८९६५

पाठा : स्याळियां री उतावळ सूं बोर कद पाकै।

स्याळ री मींगणी सूं कांम पड़ै तरां भाखर चढ़ै।–व.२९० १४४४०

सियार की मेंगनी से काम पड़े तब पहाड़ पर चढ़ जाता है।

दे.क.सं.१४० ३५

पाठा : स्याळ रा फूड़ा सूं कांम पड़ै तौ वौ डूंगर जाय चढ़ै।

स्याळ रै चींत्यां हाथी नंह मरै। १४४४१

सियार की कामना से हाथी नही मरते।

—निर्बल के शाप से शक्तिशाली का अनिष्ट नहीं होता। शक्तिशाली तो अपनी ताकत के बल पर जीता है, निर्बल की कामना का उस पर रंचमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता।

—तुच्छ व्यक्तियों के चाहने मात्र से बड़े आदमियों का कुछ नहीं बिगड़ता, वे तो अपने साधनों पर मौज करते हैं।

स्याळ रै मार्‌योड़ौ सिकार नाहर कद खावै? १४४४२

सियार का मारा शिकार नाहर कब खाता है?

दे.क.सं.३४७८

स्याळ रै मूंडै न्याव। १४४४३

सियार के मुँह से न्याय।

दे.क.सं.३४८०

स्याळ रौ सुभराज कुण मांनै ?–व.२०८ १४४४४

सियार की शुभराज कौन माने ?

—जब कोई बड़ा व्यक्ति छोटे मानुस की सुनवाई न करे, तब...।

—श्रीमंतों को तो सामान्य व्यक्ति की उपस्थिति ही नजर नहीं आती

स्याळ सूं सांढ़ न फाटै ।–व.२०९ १४४४५

सियार से साँढ़ नही फटती ।

—अक्षम व्यक्ति के हाथों बड़ा काम संपन्न नहीं हो सकता ।

—जहाँ ताकत की जरूरत होती है, वहाँ ताकत ही काम आती है, चालाकी से पार नहीं पड़ता ।

स्याळियां रै ब्याव में ऊंदरा जांनी हुवै । १४४४६

सियारो के ब्याह में चूहे बाराती होते हैं ।

—मौका आने पर चोरों का साथ गिरहकट ही देते हैं

—बदमाशों से मेलजोल बदमाश ही रखता है ।

स्याळियां रौ राज कितराक दिन रौ ? १४४४७

सियारों का राज कितने दिन तक ?

—अयोग्य और भ्रष्ट व्यक्ति राज्य करने के काबिल नहीं होते । यदि येन-केन-प्रकारेण राज्य हथिया भी लें तो वह अधिक समय तक टिक नहीं सकता ।

—राज्य करना चालाक व्यक्तियों के बूते की बात नहीं है । इसके लिए दृढ़ संकल्प, निष्ठा, त्याग, ईमानदारी और धैर्य की आवश्यकता है ।

स्याळिया कद छींका तोड़्या ? १४४४८

सियारों ने कब छींके तोड़े ?

—वांछित योग्यता के बिना कोई भी काम संपन्न नहीं हो सकता ।

—हर काम चालाकी से पूरा नहीं होता, अपेक्षित योग्यता अनिवार्य है ।

स्याळिया री बुध गांव रै सलबै आयां घटती जावै। १४४४९

सियार की बुद्धि गॉव के पास आने पर घटती जाती है।

—जो व्यक्ति काम की सफलता के बारे में खूब डींग हाँके पर काम की जिम्मेदारी सौंपने पर धीरे-धीरे पीठ दिखाने लगे उस पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति काम के समय बहानेबाजी करने लगे, तब...।

स्याळिया री मां कद सुवावड़ खाधी? १४४५०

सियार की मॉ ने कब सुवावड़ खाई?

मि.क.सं.८९७८, दे.क.सं.१३८६६

पाठा : स्याळिये री मां कद सेर अजमौ खायौ? स्याळिये री मां कद सूंठ मोलाई?

स्याळिया री मौत आवै जणा गांव कांनी मूंडौ करै। १४४५१

सियार की मौत आये तब गॉव की ओर मुँह करता है।

दे.क.सं.३४७९

स्याळिया रौ खज है। १४४५२

सियार का भक्ष्य है।

—सियार की मन-पसंद चीजें हैं झड़बेरी के बेर और ककड़ी। जिस व्यक्ति को बेर या ककड़ी ज्यादा पसंद हों तब व्यंग्य में उसे कहा जाता है—क्या खूब पसंद है, बिल्कुल सियार जैसी।

—जब कोई बालक हलकी-फुलकी चीजें खाने का हठ करे।

स्याळिया वाळी घुरी। १४४५३

सियार वाली मॉद।

—सर्दी की मौसम में ठिठुरते समय सियार माँद बनाने का दृढ़ संकल्प करता है कि इस बार गर्मियों में रहने लायक मॉद खोद लेगा। लेकिन गर्मियों की ऋतु आने पर ठिठुरने की बात याद ही नहीं रहती।

—जब कोई आलसी व्यक्ति अपने रहने लायक झोंपड़ी तक नहीं बना सके, तब...।

स्याळिया वाळौ पट्टौ। १४४५४

सियार वाला पट्टा।

दे.क.सं.३४७४

स्याळिया सूं डरणौ अर कुत्ता नै छेड़णौ। १४४५५

सियार से डरना और कुत्ते को छेड़ना।

—सियार और कुत्ते की प्रवृत्ति एक दूसरे से उलटी होती है। सियार तो डरकर भागने वाले का पीछा करता है और कुत्ता छेड़ने पर काटने को तैयार होता है। इसलिए सियार से डरना और कुत्ते को छेड़ना दोनों ही अनिष्टकारी हैं।

—चालाक व उच्छृंखल व्यक्ति से डरना और दुष्ट व्यक्ति को छेड़ना—दोनों ही नुकसानकारी हैं।

स्याळी चांद सूं भागनै कठै जासी। १४४५६

सियारी चॉद से भागकर कहाँ जाएगी।

—ऐसी मान्यता है कि चाँदनी रात में सियारी अपनी परछाई देखकर डरती है और उससे दूर भागने की चेष्टा करती है। वह रात-भर इधर-से-उधर डरकर भागती रहती है, किंतु परछाई से छुटकारा तो वह जीवन-भर नहीं पा सकती।

—इसी प्रकार आदमी दुखों से भागकर कहाँ छिप सकेगा? भागने की बजाय, सामना करने पर ही वह दुखों से मुक्त हो सकता है।

स्वांग में साच नंह होय। १४४५७

स्वाँग में सच्चाई नहीं होती।

—रामलीला में राम का अभिनय करने वाला राम नहीं होता, वह तो केवल राम का स्वाँग होता है—मात्र नाटक! अभिनय!

—स्वाँग सत्य से कोसों दूर रहता है।

स्वांमियां रा कांन सुनार नीं वींधिया। १४४५८

स्वामियों के कान सुनारों ने नहीं बींधे!

दे.क.सं.७४१७

पाठा: स्वामियां रा कांन किसा सोनार बींधिया, हाथै ई किचड़का दिया।

स्वांमी कद ढोल बजाया। १४४५९

स्वामियों ने कब ढोल बजाये।

—हर व्यक्ति अपने-अपने काम में पारंगत होता है और उसे अपने ही काम में तन्मय रहना चाहिए।

—काम करने की योग्यता सबकी एक जैसी नहीं होती।

मि.क.सं.९२०८

स्वांमीजी जैस्त्री के परसाद अठै इज करसां। १४४६०

स्वामीजी जयश्री के प्रसाद यही करेगे।

दे.क.सं.९२३८

स्वांमीजी तिलक तौ जाडा काढ्या के सूख्यां बेरौ पड़सी। १४४६१

स्वामीजी तिलक तो गहरे निकाले कि सूखने पर पता चलेगा।

दे.क.स.९२३४,९२५६,१३७२३

स्वामीजी बाछड़ा वाळौ के घर रा ई छुट्टा फिरै। १४४६२

स्वामीजी बछड़े घेरो कि घर के ही छुट्टे फिरते है।

दे.क.सं.९२४०

स्वांमीजी राती भाजी खावौ के किणरौ बाड़ौ फाड़ां? १४४६३

स्वामीजी लाल भाजी खाओ कि किसका बाड़ा फाड़े?

दे.क.सं.३३३३,९२४७

स्वांमीजी री मढ़ी रौ बारणौ अठी नीं तौ उठी ई सही। १४४६४

स्वामीजी के मठ का दरवाजा इधर नही तो उधर ही सही।

—गृहस्थियों की तरह साधुओं के लिए शुभ-अशुभ का कोई झंझट नहीं होता है। उनके मठ का दरवाजा किसी भी दिशा में रह सकता है। और न उनकी रुचि के अनुसार ही मठ का निर्माण होता है।

—निःस्पृह व्यक्ति सांसारिक कार्यों में रुचि नहीं रखता।

मि.क.सं.९६९३

स्वांमीजी लारलै गांव कूटीजनै जावै अर धकलै गांव सिद्ध ! १४४६५

स्वामीजी पिछले गाँव पिटकर आयें और अगले गॉव में सिद्ध !

—दुनिया बहुत लंबी चौड़ी है—यदि एक स्थान पर साधु अपने कुलच्छनों की वजह से मार खाकर दूसरे स्थान पर चला जाता है तो वहाँ फिर उसको नये भक्त मिल जाते हैं। वह सिद्ध बन जाता है।

—बदमाश व्यक्ति बदनाम होने पर अजानी जगह चले जाते हैं और वहाँ पुनः अपना जाल फैलाने में उन्हें सफलता मिल जाती है।

स्वांमीजी हरजस कोनीं गावौ के रोवण सूं ई कोनीं धापां। १४४६६

स्वामीजी भजन नही गाते कि रोने से ही नही थकते।

दे.क.सं.९२४२

स्वांमीजी माराज मांगै नीं तौ ठोकै कांई ? १४४६७

स्वामीजी महाराज माँगें नहीं तो खायें क्या ?

—परजीवी मनुष्य दूसरों पर निर्भर न रहे तो निर्वाह कैसे करे ?

—माँगना ही जिसका धंधा है,उसे माँगने में तनिक भी हिचकिचाहट नहीं होती।

स्वांमी व्है जका सगळा ई सिद्ध नीं व्है। १४४६८

सबके सब स्वामी सिद्ध नही होते।

—साधुओं का बाना धारण करने से ही कोई सिद्ध नहीं हो जाता।

—शिक्षित व्यक्ति बुद्धिमान हो, यह जरूरी नहीं है। उच्च शिक्षा के बावजूद वह मूर्ख हो सकता है।

—ब्राह्मण सभी पंडित नहीं होते।

स्वाद री पिछांण तौ जीभ ई करै। १४४६९

स्वाद की पहिचान तो जीभ ही करती है।

—प्रत्येक इंद्रिय की अनुभूति का बिंदु अलग-अलग होता है और संबंधित इंद्रिय ही उसका अनुभव कर सकती है। मसलन आँख सुनने में अक्षम है तो नाक देखने में। खाने-पीने

की जितनी भी चीजें हैं, उनका स्वाद केवल जीभ ही जानती है, कान उसके लिए सर्वथा अयोग्य हैं।

—भक्ति के आनंद का स्वाद केवल भक्त ही जानता है और ज्ञान के अपूर्व आनंद का अनुभव केवल ज्ञानी ही कर सकता है।

स्वारथी में समझ नीं व्है। १४४७०

स्वार्थी में समझ नहीं होती।

—यदि स्वार्थी में वांछित समझ हो तो वह दूसरों का खयाल रखे बिना नहीं रह सकता। और दूसरों का खयाल रखने वाला व्यक्ति अपना स्वार्थ पूरा नहीं कर सकता।

—इसलिए जो व्यक्ति मूर्ख होता है वही स्वार्थी हो सकता है।

स्वारथी रै किसा सींग व्है। १४४७१

स्वार्थी के सींग थोड़े ही होते हैं।

दे.क.सं.११५५०

स्वेता नै कृष्णा।–व.२५१ १४४७२

श्वेता और कृष्णा।

दे.क.सं.२२७२

हं-ह

हंगण री वेळा इज उखरड़ी याद आवै । १४४७३

हॅगने की वेला ही घूरा याद आता है ।

—पूर्व योजना के बिना काम संपन्न होने में कई अड़चनें खड़ी हो जाती हैं, इसलिए हर काम की पहिले रूपरेखा बन जाय तो सुविधा रहती है ।

—ऐन मौके पर याद आने से काम का समाधान तत्काल नहीं हो सकता, पहिले सोचना जरूरी है ।

हंगण री वेळा गांठ संभाळै । १४४७४

हॅगने की वेला गॉठ सॅभाले ।

—कच्छा, सलवार या पाजामे की गाँठ सख़्त लगी हो तो ऐन मौके पर सँभालने से दिक्कत भी हो सकती है । इसलिए समय रहते काम पर विचार कर लेना चाहिए ।

—काम के समय उपाय सोचने से बात नहीं बनती, पहिले से ही किसी काम का उपाय सोचने से सुविधा रहती है ।

मि.क.सं. १४४७३

हंगणी छै तौ हंगण आयौ रहसी ।—व. १३६ १४४७५

गुदा है तो पाखाना निकलेगा ही ।

—कार्य कारण का सबंध अविच्छिन्न रहता है, मसलन जहाँ धूआँ है, वहाँ आग तो होगी ही और जहाँ आग है, वहाँ धूआँ भी होगा ।

—गंदे काम का परिणाम हमेशा गंदा ही होता है।

हंगणी धोय-धोय अेकण दिन न धोई जैतौ गंधाव।–व.२२ १४४७६

हँगनी हमेशा धोई, एक दिन नहीं धोई तो गंधाई।

—गंदगी को हमेशा नियमित रूप से साफ करना चाहिए अन्यथा बदबू असह्य होने लगती है।

—बुरे या गंदे व्यक्ति को चाहे जितनी नसीहतें दो, वह नहीं सुधरता।

हंगता रै बिचाळै मूंडौ घातै। १४४७७

हँगते के बीच में मुँह डाले।

—बुरे या गंदे काम में हाथ डालना उचित नहीं।

—अशोभनीय झगड़ों की पंचायती करना संगत नहीं है।

हंगती बोर खायौ। १४४७८

हॅगती ने बेर खाया।

संदर्भ-कथा : औरतों को यों भी बेर या खटाई खाने का शौक होता है। एक बार दो सहेलियाँ एक झड़बेरी के पास शौच करने बैठीं। झड़बेरी पर लाल-सुर्ख बेर-ही-बेर लगे थे। एक सहेली से न रहा गया तो उसने छिपाने की तो पूरी कोशिश की पर दूसरी ने तिरछी निगाहों से बेर खाती सहेली को देख ही लिया। फिर भी उसने अभिनय ऐसा किया कि उसे कुछ पता ही न हो। लेकिन तीसरे दिन वह बिना कहे रह नहीं सकी। मुँह मस्कोरकर बोली, 'अब तो तेरा साथ करने को भी मन नहीं करता। ऐसी कौन-सी मरी जा रही थी? बेर खाने का मुझे भी शौक है, पर हॅगते समय तो मर जाने पर भी न खाऊँ। यदि माँ को पता चल गया तो वह कितनी नाराज होगी! और भूल-चूक से कहीं ससुराल वाले जान गये तो संभव है, तुझे छोड़ दें। इतनी सयानी होकर भी तू मन को वश में नहीं रख सकी—छि:, छि:!'

सहेली का मुँह उतर गया। काटो तो खून नहीं। हाथ जोड़कर कहा, 'तुझे मेरी कसम है, किसी को कहना मत, नहीं तो मुझे कुआँ-बावड़ी करनी होगी, लोगों को मुँह कैसे दिखाऊँगी?'

सहेली बड़ी चालाक थी। ऐसी कमजोरी हाथ लग जाय तो उसे छोड़ना नहीं चाहिए। कहने लगी,'औरत जात की यही तो मुश्किल है। पेट में बच्चा नौ महीने रह सकता है,पर उसके पेट में बात नहीं टिकती। कोशिश तो पूरी करूँगी,पर वादा नहीं करती।'

चालाक सहेली जब-तब उसे परेशान करती रहती। वह इशारे से समझाती और वह मान जाती। पर बेर खाने वाली सहेली तो उसे देखते ही घबराने लगती। एक दिन सहेली ने घर आकर माँ के सामने ही पूछा,'कहूँ?'

इस तरह घबराने से तो जीना हराम हो जाएगा। वह भी तैश में आकर बोली,'कह दे, कह दे। माँ,कोई जान से मारने से तो रही। वह खूब अच्छी तरह जानती है कि मुझे बेर खाने का बहुत शौक है। शौच की वेला भी मैं सबर नहीं रख सकी,यही न? अब तुझे जो कहना है,सब नमक-मिर्च लगाकर कह दे।'

फिर तो सहेली की जबान ही नहीं उथली,जैसे बोलना ही बिसर गई हो।

—रोज-रोज दबने की बजाय तो एक दिन किसी गुप्त भेद का खुलासा हो जाय तो अच्छा रहता है।

हंगनै लारै जोवै। १४४७९

हॅगकर पीछे देखे।

—बेमिसाल कंजूस व्यक्ति पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति एकाध पैसे की खातिर लोभ करे,उसके लिए।

हंग रै छोरा पेट फोड़ूं। १४४८०

हॅग रे छोकरे पेट फोड़ूं।

—पेट फोड़ने की धमकी देने से किसी बच्चे को शौच नहीं करवाया जा सकता।

—किसी भी व्यक्ति को जरूरत के बिना उसकी इच्छा के विरुद्ध काम नहीं करवाया जा सकता।

हंगायौ कूतरौ किणरौ सिकार करै? १४४८१

हॅगाया कुत्ता क्या शिकार करे?

—जो व्यक्ति स्वयं अपने ही कष्ट से पीड़ित हो,उससे काम नहीं करवाया जा सकता।

—किसी भी आदमी को पहिले अपने काम की चिंता रहती है, दूसरों की नहीं।

हंगायौ रह जाय पण उमायौ नीं रैवै। १४४८२

हँगाया रह जाय पर उमाया नही रह सकता।

—शौच जाने वाला व्यक्ति रुक सकता है, पर कामासक्त नहीं रुक सकता।

—शौच की अपेक्षा काम की अभिलाषा ज्यादा उत्कट होती है।

हंगियौ नै घरै राख्यौ। १४४८३

हँगा और घर रखा।

—किसी भी वस्तु का उपयोग न करके उसका संचय करने वाले मनुष्य पर तीखा कटाक्ष।

—मनुष्य के लिए संचय की वृत्ति मर्यादाजनक नहीं होती।

हंतै थोड़ी हाल घणी। १४४८४

भेट कम और हल्ला ज्यादा।

—किसी नगण्य बात का अधिक दिखावा करने पर।

—सहयोग की तुलना में एहसान का बोझ अधिक जताने पर।

—काम निहायत कम और उसका प्रदर्शन बहुत ज्यादा हो, तब...।

हंस चगे मोती वो ना चगे चणा।—भी.७५६ १४४८५

हंस मोती ही चुगता है, चने नही।

—जिस व्यक्ति की अभिरुचि बहुत परिष्कृत हो, उसके लिए।

—शालीन व्यक्ति अशोभनीय काम नहीं करता, परिणाम कुछ भी हो।

हंसणौ नै रोवणौ साथै नीं व्है। १४४८६

हँसना और रोना साथ-साथ नही होता।

—हँसना खुशी का सूचक है और रोना अवसाद का। खुशी और अवसाद दोनों एक साथ नहीं हो सकते।

—दो विरोधी तथ्यों का मेल संभव नहीं होता।

हंसतां-हंसतां बेरा में पड़गी। १४४८७

हँसते-हँसते कुएँ में पड़ गई।

—मजाक-मजाक में कोई अनर्थ हो जाय, तब...।

—हँसी-मजाक का कोई दुष्परिणाम हो जाय, तब...।

हंसता नै नीं पण रोवतां नै सै कोई देखै। १४४८८

हँसते हुए को नहीं पर रोते हुए को सब देखते हैं।

—शांति के प्रति किसी का ध्यान नहीं रहता पर कलह-क्लेश का सभी ध्यान रखते हैं।

—पैसे का पता नहीं चलता, पर दिवाले का तत्काल सुराग लग जाता है।

हंसती रा ई पांवणा अर रोवती रा ई पांवणा। १४४८९

हँसती हुई के भी मेहमान और रोती हुई के भी मेहमान।

दे.क.सं.१२५३६

हंसतौ चूरमौ दूणी दाळ मांगै। १४४९०

हँसता चूरमा दूनी दाल माँगता है।

—जिस चूरमे में घी ज्यादा हो, वह रोता हुआ चूरमा कहलाता है, उसे बिना दाल के भी खाया जा सकता है। पर हँसता हुआ चूरमा तो एकदम रूखा होता है, उसे दाल या सब्जी की मात्रा अधिक चाहिए।

—गरीब को कई लोगों की बेगार निकालनी पड़ती है।

—दुखी व्यक्ति कई समस्याओं से घिरा रहता है।

हंसनै दांत बतावणा। १४४९१

हँसकर दाँत बताने।

—जो व्यक्ति कृत्रिम मुस्कराहट के द्वारा अपना दुख छिपाने की चेष्टा करे।

—खुशी की बात न होने पर भी हँसने का अभिनय करना।

पाठा : हंसनै दांत काढ़णा।

हंस मोती चगै कां गांठे गरथ।–भी.७५७ १४४९२

हंस मोती चुगता है, गाँठ में पैसा कहाँ ?

—ऐश्वर्य का जीवन बिताने वाले के पास पूँजी टिकती नहीं।

—या तो मौज करलो या संचय करलो, दोनों साथ नहीं निभ सकते।

—दूसरों की पूँजी पर ऐश करने वाले के पास अपना पैसा कहाँ ?

—आदर्शवादी बंदों की टेक ईश्वर निभाता है।

हंस रै गळै काग बंधग्यौ। १४४९३

हंस के गले कौवा बँध गया।

—अनमेल ब्याह पर कटाक्ष। भले आदमी के पल्ले कर्कशा औरत बँध जाय तब, या सुंदर, भली औरत को चिड़चिड़ा बुड्ढ़ा मिल जाय, तब...।

—अपनी अभिरुचि के अनुकूल साथी न मिलने पर...।

हंसला उड़ सरवर गिया, काग भया परधांन। १४४९४
जा पांड्या घर आपणै, सिंघ किणरा जजमांन॥

हंस उड़ सरवर गया, काग भया परधान।
जा विप्र घर आपके, सिह किसका यजमान॥

संदर्भ-कथा: एक सिह प्रौढ़ होने पर कुछ अशक्त हो गया तो लंबी छलाँगें भरकर शिकार का पीछा करना मुश्किल हो गया। फिर भी पेट की आग बुझाने के लिए उसे दिन में एकाध हत्थल तो मारनी ही पड़ती थी। वह कभी खरगोश तो कभी मृग-शावक झपट ही लेता था। एक दिन संयोग ऐसा हुआ कि उस सिह को थोर के झुरमुट में एक तगड़ा खरगोश छिपा हुआ नजर आया। इधर खरगोश को भी सिंह के खूनी पंजे की झलक मिल गई थी। सिंह का पंजा पड़ने से पहिले ही वह तो जान बचाकर भागा। सिह की हत्थल खरगोश की बजाय थोर की डालियों पर जोर से पड़ी। सिह के पंजे में जैसे आग दहक उठी हो। यकायक पंजा उठाना भारी पड़ गया। आँखों के सामने अँधेरा छा गया। जैसे-तैसे लँगड़ाता हुआ राह तक पहुँचा। कुछ देर तो मजबूत रहा, फिर धीरज खो बैठा। जोर-आर से चिल्लाने लगा। जंगल के पत्ते-पत्ते से रुदन प्रतिध्वनित होने लगा। राह के ऊपर से हंसों की पाँत गुजरी। एक बुजुर्ग हंस से शेर की चिल्लाहट बर्दाश्त नहीं हुई तो वह पाँत छोड़कर नीचे उतरा। सिह के पंजे पर नजर पड़ते ही

वह सारी बात समझ गया। पर जोर क्या करता! थोर के गहरे गड़े काँटे चोंच से निकालना संभव नहीं। सिंह को आश्वस्त करते हुए वह फिर ऊपर उड़ा। संयोग ऐसा बना कि कंधे पर गमछा लटकाये, त्रिपुंडधारी एक बामन दूर से आता दिख पड़ा। हंस नीचे उतरकर उसके पास पहुँचा। सिंह की दर्दनाक पीड़ा का हवाला दिया तो ब्राह्मण उसी वक्त मान गया। झगड़ालू बामनी के कारण दृढ़ संकल्प करके वह घर से निकला था। ऐसे नारकीय जीवन से मृत्यु बेहतर है। हंस के साथ चलते हुए उसने कंदोरे से बँधा काँटा-कढ़ना तुरंत निकाल लिया।

सिंह को अधिक कष्ट तो हुआ पर आखिरी काँटा निकलते ही उसके जी-में-जी आया। पंजे को चाटने के बाद उसे और ज्यादा राहत मिली। और उधर पंडित का अवरुद्ध भाग्य भी खुल गया। सिंह के कहने पर उसने सामने के पीपल की जड़ें खोदीं तो उसे मोहरों से भरे तीन कलश मिले। बामन लोभी नहीं था। उसने अँगोछे में सिर्फ सात मोहरें बाँधी। सिंह को आशीर्वाद देते बोला, 'बामन का असली धन तो केवल भिक्षा है। फिर भी मैंने सात मोहरें दक्षिणा के रूप में ग्रहण की हैं। मैं हर मंगलवार को आपके पास आऊँगा। सात मोहरें ले जाऊँगा और आपको गीता का अमूल्य ज्ञान सुनाऊँगा।' सिंह और हंस ने बार-बार आग्रह किया तब भी नेक बामन पूरा कलश लेने को राजी नहीं हुआ। लेकिन सिंह के आग्रह करने पर हंस वहीं ठहर गया और जंगल के राजा का दीवान बनकर उसे नेक सलाह देने लगा। सिंह भी हंस की संगत से खुश था और हंस भी सिंह की संगत से खुश था।

अगले मंगलवार को वादे के अनुसार पंडित आया। सिंह और हंस दोनों ने गीता का उपदेश सुना और कृतार्थ हुए। हंस और सिंह के कहने से पंडित ने सात मोहरें लीं और विदा हो गया।

अगले मंगलवार को फिर पंडित उस जंगल में आया, तो बीच राह में एक पेड़ पर बैठे तोते की आवाज सुनकर पंडित चौंका। तोता नीचे वाली डाली पर उतरकर रुँधे गले से कहने लगा, 'मैं आपकी ही प्रतीक्षा कर रहा था।' फिर उसने बड़े दुख के साथ हंस के मरने का संवाद सुनाया। 'अब सियार और लोमड़ी की सलाह से एक धूर्त कौआ महाराजा का दीवान बन गया है। सारे जंगल का बुरा हाल है। सिंह पहिले से ज्यादा हिंसक हो गया है। और-तो-और दो अबोध बच्चों को भी मार डाला। सियार, लोमड़ी और कौआ भोले जानवरों को पटाकर लाते हैं। तुम यहीं से लौट जाओ। महाराजा ने स्वयं मुझे यह कहने के लिए चुपके से भेजा है।'

लेकिन उस हठी बामन ने तोते की बात नहीं मानी। और वह सिंह के पास पहुँचा। कौए की काँव-काँव सुनते ही सिंह बामन पर झपटने के लिए तैयार हुआ। पर अगले ही क्षण सिंह ने पंडित को पहिचान लिया। पूँछ हिलाता हुआ पीछे हट गया। कौए को दहाड़कर चुप किया। धीरे से बोला, 'तोते ने आपको कोई खबर नहीं दी?' तब बामन ने हामी भरते हुए कहा, 'उसने तो आपके पास आने के लिए खूब मना किया, पर मैं ही नहीं माना।'

'क्यों विश्वास नहीं हुआ?' सिह ने तनिक लज्जित होकर पूछा।

'विश्वास न करना ही तो उचित था।' पंडित ने सिंह की आँखों में घूरते हुए कहा।

'ये सारी ऊँची-ऊँची बातें हंस की मौत के साथ चली गईं। अब मेरे सलाहकार बिल्कुल दूसरे स्वभाव के हैं—सियार, लोमड़ी और कौआ। मैं अपनी असली प्रकृति में लौट आया हूँ। मेरे जबड़े और पंजे में खुजली चल रही है। अब पूरा कलश उठाकर तुरंत चले जाओ। तुमने मेरे प्राण बचाये हैं—उसीकी यह अंतिम दक्षिणा है।'

'मैं कुपात्र से दक्षिणा नहीं लेता। यही तो बामनी के साथ लड़ाई है मेरी।' इतना कहते ही वह मूर्ख बामन पीठ फिराकर अपनी राह लगा सो पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। तोता उसी पेड़ पर बैठा पंडित के लौटने का इंतजार कर रहा था। सिर्फ भीगे कंठ से इतना ही बोल सका:

हंमला उड सरवर गिया, काग भया परधांन।

जा पांड्या घर आपणै, सिंघ किणरा जजमांन॥

—जैसे राजा के सलाहकार होते हैं, उन्हीं की भली-बुरी राय से राजा का स्वभाव बदलता रहता है।

हंसला के तौ मोती चुगै के लंघण करै। १४४९५

हंस या तो मोती चुगें या लंघन करें।

—महापुरुष चाहे जितना कष्ट उठाले, पर अपने सिद्धांतों के साथ समझौता नहीं करता।

—महान व्यक्ति किसी भी कीमत पर अपने आदर्श से विचलित नहीं होता।

पाठा: हंस तौ मोती ई चुगैला।

हंसली तौ घड़ायल्यूं पण घर रौ धणी बस में कोनीं। १४४९६

हँसुली तो घड़ा लूँ किंतु घर का मालिक वश में नहीं।

—*अक्षम की आकांक्षाएँ कभी पूरी नहीं होतीं।*

—जो व्यक्ति दूसरों के सहयोग पर जीता है, वह कभी स्वावलंबी नहीं बन सकता।

हंसलौ धोरी तौ हळ वहै अर कबली दूझै गाय। १४४९७
घाघ कहै सुण भड्डुळी ज्यांरौ घर जड़ामूळ सूं जाय॥

हँसला-बैल तो हल चले और कबली दूझे गाय।
घाघ कहे सुन भड्डुली, जड़-समेत घर जाय॥

हंसलौ-धोरी = बैल का एक लक्षण विशेष जो पूरा सफेद होता है, जिसकी जीभ, पूँछ और भौंहें भी सफेद होती हैं, यह बहुत अशुभ माना जाता है।

कबली = दो रंगों वाली गाय। यह भी अशुभ मानी जाती है।

—जब दो अशुभ लक्षणों का संयोग जुड़ जाय तो उसके विनाश का कोई पार नहीं रहता।

—जहाँ तक बन पड़े अशुभ लक्षणों से बचकर चलना ही लाभकारी है।

हंस-हंस नै बदळा बांधै सो रोय-रोयनै छूटै। १४४९८

हँस-हँसकर बदले बाँधे, वे रो-रोकर छूटते है।

—जो हँस-हँसकर दूसरों को क्षति पहुँचाते हैं, आखिर उन्हें भी वैसे ही दुर्दिन देखने पड़ते हैं, जिनसे रोने-चिल्लाने पर भी पीछा नहीं छूटता।

—बुरे का नतीजा बुरा ही होता है, इसमें कोई संशय नहीं।

हंसां नै सरवर घणा, सरवर हंस किरोड़। १४४९९

हंसो को सरवर बहुत, सरवर हंस करोड़।

—गुणी को गुणी मिल ही जाते हैं।

—यदि किसी व्यक्ति में प्रतिभा है तो दुनिया में कद्रदानों का अभाव नहीं।

—कलाकार किसी का भी मोहताज नहीं रहता।

पूरा दोहा :

आवतड़ां रोकूं नहीं, जावत लावूं न मोड़।
हंसां नै सरवर घणा, सरवर हंस किरोड़॥

हंसिया नै फंसिया, मुळक्या नै मांय। १४५००

हँसे और फँसे, मुस्कराये और अंदर।

—औरतों की हँसी और उनकी मुस्कान को लक्ष्य करके यह उक्ति कही जाती है।

—हँसी सहमति का लक्षण है और मुस्कान मौन निमंत्रण का।

हंसै तौ हंस भलां ई, रोवैली जद पलड़ै घाल पजावैली। १४५०१

हँस तो हँस भले ही, रोयेगी जब पलड़े में डालकर तौलेगी।

संदर्भ-कथा : एक बहरी औरत ने पिंजारे को रूई पींजने के लिए दी। जब उसने धुनी हुई रूई का ढेर देखा तो बड़ी खुश हुई। वह बोलकर तो अपनी भावना का इजहार नहीं कर सकती थी—सो उसने निर्मल हँसी हँसकर अपनी खुशी जाहिर कर दी। पर पिजारा तो असलियत जानता था। उसने कहा—अभी तो चाहे जितनी हँसले, जब घर जाकर रूई को तराजू में तौलेगी, तब स्वतः आँसू छलक आएँगे।

—कभी-कभार आँखों से दिखने वाली सच्चाई भी भ्रामक होती है, इसलिए उसे विश्वस्त मानकर एकदम एतबार नहीं करना चाहिए।

हक नो मण खवाये, बेहक नो कण नी खवाये।–भी.७५८ १४५०२

हक का तो मन खाये, बेहक का कण भी नही खाये।

—अपने अधिकार में कोई चीज है तो जी भरकर खाओ, मगर किसी दूसरे के कण पर भी आपका अधिकार नहीं है। उसे खाने की कुचेष्टा की तो वह पचेगा नहीं।

—किसी भी व्यक्ति को अपने अधिकार की सीमा का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए।

हक में बरगत है। १४५०३

हक में बरकत है।

—अपने अधिकार की चीज खाने में ही बरकत है और अनधिकार की चीज हराम है।

—ईमानदारी की कमाई में ही बरकत होती है।

हकीमजी ! म्हैं तौ मर्‌यौ के अठै कुण जीवतौ रैवै ? १४५०४

हकीमजी ! मैं तो मरा कि यहाँ कौन जिदा रहता है ?

दे.क.सं.१३२०५

हकूमत रौ डोकौ डांग फाड़ै। १४५०५

हुकूमत का डंठल लट्‌ठ फाड़ता है।

दे.क.सं.१२६३५

हगते होते नी बळवु ।– भी.७५९ १४५०६

साथ नही जलना चाहिए ।

—किसी की इच्छा न होने पर स्वयं आगे होकर यों ही जल-मरना नहीं चाहिए।

—कोई कहे तो उसके लिए कष्ट उठाया जा सकता है, पर बिना कहे अपनी इच्छा से पहल करके किसी के लिए भी बर्बाद नहीं होना चाहिए।

हजार मिंत ई थोड़ा, बैरी अेक ई मोकळौ। १४५०७

हजार मित्र भी थोड़े, बैरी एक ही काफी ।

—अनेक मित्र मिलकर जो भला नहीं कर सकते पर अकेला दुश्मन बेशुमार क्षति पहुँचा सकता है।

—दुश्मन से प्रति क्षण सावधान रहना चाहिए।

दे.क.सं.१४४११

हजार रिपियां रौ साग रांधै पण दो पईसां रा लूण टाळ स्वाद नीं आवै। १४५०८

हजार रुपयो की सब्जी बनाये, पर दो पैसे के नमक बिना स्वाद नही आये ।

—दुनिया में अकिंचन चीज की भी अपनी उपयोगिता और अपना महत्त्व है।

—कभी-कभार तुच्छ वस्तु के अभाव में बड़ी चीज भी व्यर्थ हो जाती है।

हड़बोलौ व्है ज्यूं रैवैला के धंधै लागैला ? १४५०९

उल्लू की तरह बैठा रहेगा या किसी धंधे से लगेगा ?

—बड़ा और योग्य होने पर भी जो व्यक्ति कुछ काम न करे, उसके लिए...।

—घर में किसी को भी निठल्ला नहीं रहना चाहिए।

हड़मांनजी रौ बळ चितारतां ई धायौ आवै। १४५१०

हनुमानजी का बल याद करते ही वह उड़ा आता है ।

—हनुमानजी बड़े प्रबल देवता हैं, वे याद करते ही भक्तों की सहायता करने को उद्यत हो जाते हैं।

—निर्बल और कायर व्यक्ति भी हनुमान के बल की आशा करे तो वह उसे प्राप्त हो जाता है।

हड़मांन नै कांईं हाक सिखावै ? १४५११

हनुमान को क्या हाक सिखाये ?

—महाबली के सामने अपने नगण्य बल का प्रदर्शन करना उचित नहीं होता।

—पहुँचे हुए साधु को भक्ति का महत्त्व बताना व्यर्थ है।

हड़मांन नै सिंदूर अर संकर नै धतूरौ। १४५१२

हनुमान को सिंदूर और शंकर को धतूरा।

—हनुमान को तो तेल, सिदूर और मालीपन्ना चढ़ते हैं, पर अघोरी महादेव को आक, धतूरा, भॉग और गाँजा चढ़ता है।

—देवताओं के गुण देखकर ही उन्हें प्रसाद चढ़ाया जाता है।

हथकड़ी तौ सोना री ई भूंडी। १४५१३

हथकडी तो सोने की भी बुरी।

—गुलामी का तो सुख भी स्वीकार नहीं करना चाहिए। और इसके विपरीत आजादी का कष्ट भी वरेण्य है।

—बंधन का कोई भी स्वरूप हो, वह मनुष्य के लिए मर्यादाजनक नहीं है।

हथकार री रोटी अर चोवटै डकार। १४५१४

मॉगी हुई रोटी और चौराहे डकार।

—ओछा आदमी अहंकार की बात करे, तब...।

—छोटे व्यक्ति को हेकड़ी शोभा नहीं देती।

हथळेवै परण्योड़ी, जापै री ऊठ्योड़ी अर बिरखा री कूट्योड़ी। १४५१५

नव विवाहिता या जापे से उठी हुई या वर्षा से पिटी हुई।

दे.क.सं.५०४१

हथाळी माथै दही नीं जमै। १४५१६

हथेली पर दही नही जमता।

—उतावली से कोई काम नहीं होता, उसके लिए वांछित समय अनिवार्य है।

—हर काम करने का अपना तरीका होता है, उसे बदलने से बात नहीं बनती।

—साधनों के अभाव में कोई काम संपन्न नहीं हो सकता।

हथाळी माथै सिरसूं कद ऊगै? १४५१७

हथेली पर सरसो कब उगती है?

—जल्दबाजी करने से कोई भी काम संपन्न नहीं होता। वह तो अपने अपेक्षित समय में ही पूरा होता है।

—बातें बनाने से कोई काम नहीं होता, उपयुक्त परिश्रम, साधन और वांछित समय आवश्यक है।

मि.क.स.१४५१६

पाठा: हथाळी माथै राई कद ऊगै?

हथाळी माथै सिरसूं उगावणी चावै।

हथाळी रा छाला ज्यूं टाबर नै राखणौ पड़ै। १४५१८

हथेली के फोडे की नाईं बच्चे को रखना पड़ता है।

—बच्चे के लिए बहुत देख-रेख, बहुत सार-संभाल, बेहद सतर्कता और बहुत सुरक्षा अपरिहार्य है, तभी उसे बड़ा किया जा सकता है।

—बच्चे का पालन-पोषण आसान नहीं है, बहुत जिम्मेदारी का काम है।

हथाळी रै छाला ज्यूं राखै। १४५१९

हथेली के फोड़े की तरह रखता है।

—हथेली के फोड़े को कोई ठेस न लगे, उसके लिए अपेक्षित हिफाजत और सतर्कता अनिवार्य होती है।

—कोई किसी को बहुत लाड़-प्यार से रखे तब इस उक्ति के माध्यम से ही मन की बात व्यक्त होती है।

हथाळी सरग दिखाळै ।–व.३९६ १४५२०

हथेली पर स्वर्ग दिखाता है ।

—कोई किसी को व्यर्थ के सब्ज-बाग दिखाये, तब...।

—किसी के मन में झूठी आशाएँ जगाये, तब...।

हद सूं बा' रै व्हैगी । १४५२१

हद से बाहर हो गई ।

—बहुत ज्यादती होने पर ।

—असह्य बात के लिए ।

हमालां आटौ नै पखालां पांणी । १४५२२

हमाल को आटा और पखाल को पानी ।

—हमाल को पूरी खुराक मिले, तब वह भरपूर मेहनत कर सकता है, उसी प्रकार पखाल पानी से पूरा भरी जाय तभी उसका उपयोग है । उसका चमड़ा सूखता नहीं ।

—मेहनत करने वाले की पाचनशक्ति तगड़ी होती है, उसीके अनुरूप उन्हें भोजन की जरूरत पड़ती है ।

हमाली कांम दोरौ । १४५२३

हमाली काम मुश्किल ।

—भारी वजन उठाने का काम बड़ा मुश्किल है । उसके लिए उतनी ही ताकत अपेक्षित है । और वैसी खुराक भी ।

—पीठ पर या सिर पर भारी वजन ढोने की कमाई में छठी का दूध याद आ जाता है ।

हमाली धंधौ चोपड़ मांगै । १४५२४

हमाली धंधा चिकनाई माँगता है ।

—रूखी-सूखी रोटियों से हमाली नहीं होती । उसके लिए गरिष्ठ भोजन अनिवार्य है ।

—काम अपने अनुरूप खुराक माँग लेता है ।

हमेस चांदणी रातां नीं व्है । १४५२५

हमेशा चाँदनी रातें नहीं होती ।

हर अमावस सोमोती नीं व्है । १४५२६

हर अमावस सोमवती नहीं होती ।

—पुण्य कमाने का मौका बार-बार नहीं मिलता ।

—समय रहते सत्कार्य कर लेना चाहिए,उसके लिए अवसर की प्रतीक्षा करना व्यर्थ है ।

हर करनै घर कर्यौ पण बात रैगी काची । १४५२७

अै लै थारा आटी-डोरा, म्हैं तौ जावूं पाछी ॥

इच्छा से घर किया, पर बात रह गई कच्ची ।

यह ले तेरे आटी-डोरे, मैं तो जाऊँ सच्ची ॥

—मन मिले का सौदा है,जितने दिन निभ जाये श्रेयस्कर है ।

—किसी भी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध बाँधकर नहीं रखा जाता ।

पाठा : दूसरी पंक्ति के लिए :

अै लै थारा अलिया-बिलिया, म्हैं तौ जावूं पाछी ।

अै लै थारा चूड़ा-चूंदड़ी, म्हैं तौ जावूं पाछी ।

हर कांम में हिकमत जोईजै । १४५२८

हर काम में हिकमत चाहिए ।

—कोई भी काम केवल अथक मेहनत से ही संपन्न नहीं होता । उसे कुशलता-पूर्वक करने के तरकीब,हुनर व बढ़िया सलीका जरूरी है ।

—निष्ठा,मेहनत,हिकमत और कौशल हो तभी कोई कार्य सफल होता है ।

हरका ना भाई हारा हरका ।– भी.७६० १४५२९

हरका के सभी भाई हरका ।

—एक ही स्थान पर जन्मे और पले हुए व्यक्ति लगभग समान प्रवृत्तियों के होते हैं ।

—अनुवांशिकता के अलावा वातावरण व परिवेश का भी व्यक्ति के विकास पर प्रभाव पड़ता है । वातावरण की समानता से मनुष्य के संस्कार भी धीरे-धीरे समानता ग्रहण कर लेते हैं ।

हरचीती होवै नरां, मनचीती ना होय। १४५३०

हरचीती होय नरों, मन-चीती ना होय।

दे.क.सं.७२०८,१०५६२

हरणी नी गत हींयारू जाणे, बीजू कूंण जाणे ?– भी.७६१ १४५३१

हिरणी की चाल सियार जाने, दूसरा कौन जाने ?

—हमेशा निकट और साथ रहने वाला व्यक्ति ही किसी के व्यवहार,स्वभाव और गतिविधियों की सही जानकारी रखता है।

—रात-दिन के संपर्क से ही एक-दूसरे के चरित्र का पता चलता है।

हर बिना गांवतरौ को हुवै नीं। १४५३२

इच्छा के बिना यात्रा नही होती।

—यह कहावत सामान्यतया प्रेम-संबंधों को लेकर कही जाती है कि इच्छा के बिना प्रेम नहीं होता। प्रेमी या प्रेमिका जब आरोपों से बचने की सफाई देते हैं,तब इस कहावत का प्रयोग होता है कि 'हर बिना गांवतरौ को हुवै नीं।'

—किसी भी कार्य की शुरुआत इच्छा के बिना नहीं होती।

पाठा : हर होवै जद इज गांवतरौ हुवै।

हर सूं हेत, खसम सूं चोरी। १४५३३

हरि से प्रेम, खसम से चोरी।

—ऊँची-ऊँची बातें बघारने वाला,जब ओछी हरकतों पर उतरने लगे,तब...।

—जो व्यक्ति बड़े-बड़े आदमियों से संपर्क रखे और परिजनों की अवज्ञा करे,तब...।

हर-हर गंगा गोदावरी, कीं सरधा अर कीं जोरावरी। १४५३४

हर-हर गंगा गोदावरी, कुछ तो ताकत और कुछ जोरावरी।

—भगवत्-भजन या किसी आदर्श की प्राप्ति हेतु कुछ तो क्षमता और कुछ शक्ति की आवश्यकता होती है,जिसके बिना उपलब्धि संभव नहीं।

—कोई भी पुण्य कार्य यथायोग्य आर्थिक-स्थिति, भावना और लगन के बिना नहीं होता।

हर हर गंगा गोमती, बिना कूट्यां रो मती। १४५३५

हर-हर गंगा गोमती, बिना कूटे रो मती।

मती = मत।

—बचपन में छोटी बहिन, छोटे भाई या अन्य किसी छोटे रिश्तेदार के रोने-रींकने पर इस तुकबंदी को बार-बार दोहराते थे।

—अकारण ही रोना-धोना या रूठना अच्छा नहीं लगता।

हरांम रा घोड़ा मज्झ मैदांन में थाकै। १४५३६

हराम के घोड़े मैदान के बीच थकते हैं।

दे.क.सं.६१४५

पाठा : हरांमी रौ घोड़ौ मैदांन में थाकै।

हरांम री कमाई, हरांम में गमाई। १४५३७

हराम की कमाई, हराम में गँवाई।

—बुरे काम का धन यों ही फालतू खर्च होता है।

—कमाई जिस रूप में होती है, उसी तरह उड़ जाती है। अच्छी कमाई अच्छे काम में लगती है और बुरी कमाई बुरे काम में।

पाठा : हरांम रौ पईसौ हरांम में जावै।

हरि बडा के हिरण बडा, सुगन बडा के स्यांम? १४५३८

हरि बड़े कि हिरण बड़े, शकुन बड़े कि श्याम?

दे.क.सं.१३९९१

पूरा दोहा :

हरि बडा के हिरण बडा, सुगन बडा के स्यांम।
अरजण रथ नै ढाब मत, भली करै भगवांन॥

हरिया-हरिया चरै। १४५३९

हरे-हरे चरता है।

दे.क.सं.१२८३२

हरी करी सो खरी । १४५४०

हरी ने करी सो खरी ।

—ईश्वर जो कुछ भी करता है, अच्छा ही करता है ।

—ईश्वर की इच्छा कोई टाल नहीं सकता ।

—संसार में जो कुछ घटित होता है, वह ईश्वर के किये ही होता है ।

हरी खेती, गांभण भैंस नो हूं भरोसो ?– भी.७६२ १४५४१

हरी खेती, ग्याभिन भैंस का क्या भरोसा ?

दे.क.सं. ३७६९

हरेक घर री आपरी मरजाद व्है । १४५४२

प्रत्येक घर की अपनी मर्यादा होती है ।

दे क.स.३८९१

हरेक जंगळ में चंदण को हुवै नीं । १४५४३

प्रत्येक जंगल में चंदन नहीं होता ।

—कलाकार, विद्वान, दार्शनिक व प्रतिभाशाली बिरले ही पैदा होते हैं ।

—सज्जन या नेक व्यक्तियों की बहुतायत नहीं होती, वे किसी भी समाज में अँगुलियों पर गिनने लायक ही मिलते हैं ।

हरेक मिनकी डाकण नीं व्है । १४५४४

प्रत्येक बिल्ली डायन नहीं होती ।

—हर अधिकारी भ्रष्ट नहीं होता ।

—हर व्यक्ति नृशंस या निर्दयी नहीं होता ।

हर्‍यौ देख'र लपकै, सूखौ जोय'र बिदकै । १४५४५

हरा देखकर लपके, सूखा देखकर बिदके ।

—जो चटौरा व्यक्ति अच्छे खाने के अलावा रद्दी खाने में हाथ ही नहीं डाले ।

—जो व्यक्ति लाभ की खातिर हमेशा उद्यत रहे और घाटा लगने पर खिन्न हो जाय ।

हलका जे झलका।–भी.७६३ १४५४६

हलके ही छलके।

—इसी आशय की एक कहावत यह भी है कि जो घड़ा भरा होता है,वह छलकता नहीं। और जो घड़ा छलकता है,वह आधा खाली रहता है।

—ओछा व्यक्ति जल्दी उखड़ जाता है।

—गंभीर व्यक्ति सहनशील होता है।

हलकौ नीं कोई धचकौ। १४५४७

हिलना न कोई डुलना।

—जिस काम में किसी तरह का व्यवधान न हो उसे मजे में पूरा कर लेना चाहिए।

—जब किसी की जिंदगी रोज-मर्रा की अड़चनों के बिना आराम से गुजर रही हो तब वह मस्ती की रौ में इस कहावत का प्रयोग करता है।

हलवाई रा दोउठा अर बाबौजी रा फातिहा। १४५४८

हलवाई के दोउठा और बाबाजी के फातिहे।

दोउठा = एक मिठाई विशेष।

—बूढ़े बाबा के मृत्यु-भोज में काफी मिठाइयाँ बनीं। बूढ़ी मौत का कोई शोक तो था नहीं। लोगों ने बड़े चाव से डटकर भोजन किया।

—जब किसी दोहरे आनंद का संयोग जुड जाय,तब...।

हळ अर होका वैवता ई छाजै। १४५४९

हल और हुक्के चलते हुए ही अच्छे लगते हैं।

—हल चले बिना खेती में अड़चन उपस्थित हो जाती है और उधर हुक्का रुकने से मजमे का ठाट समाप्त हो जाता है। इसलिये ये दोनों चलते रहें तो अच्छा है।

—हुक्के वाले अपने महत्त्व को स्थापित करने के लिए इस उक्ति का गर्व के साथ प्रयोग करते हैं।

हळकी बात हूंकारै मूंघी। १४५५०

हलकी बात हुंकारे महँगी।

—ओछी बात के लिए हामी भरना भी अशोभनीय है।
—हलकी-फुलकी बात का समर्थन करना भी अनुचित है।

हळकौ बळ दरसावै। १४५५१
हलका जोश दिखाता है।
—कमजोर मनुष्य ज्यादा जोर दिखाता है।
—इसी आशय की एक दूसरी कहावत भी है—कम ताकत और गुस्सा भारी।

हळ छूटौ अर भातौ आयौ। १४५५२
हल छूटा और भाता आया।
—इधर खेत में हल का काम समाप्त हुआ और उधर दोपहर का खाना आया।
—उँचित अवसर पर मनवांछित संयोग जुड़ जाय, तब...।

हळजी रौ मूंडौ धूड़ में। १४५५३
हलजी राम का मुँह धूल मे।
संदर्भ-कथा : शराब, अफीम और महफिलों के कारण एक ठाकुर की आर्थिक स्थिति बिगड़ती गई। पास के ठाकुरों ने राजा के कान भरे तो ठिकाने की जब्ती का आदेश आ गया। उस आदेश के साथ ठाकुर की सारी रौनक ही समाप्त हो गई। ठकुरानी ने ज्यादा कोंचा तो बेचारा खुद खेती करने के लिए तैयार हो गया। बाकी सारी व्यवस्था तो कामदार ने कर दी। बैल और बीज। पर हल का जुगाड़ नहीं हो सका। पड़ोस में ही एक बारहठजी का मकान था। ठाकुर के अच्छे दिनों में खूब बख्शिशें मिली थीं। दूसरा कोई तैयार नहीं हुआ तो आधी रात के समय स्वयं ठाकुर ने जस-तस हिम्मत जुटाकर बारहठजी के बाड़े से हल चुरा लिया।

बारहठजी को अपने हाथों से खेती करने का शौक था। सवेरे बाड़े में जाकर देखा तो हल गायब। खोज देखकर वे तुरंत समझ गये कि चोर कौन है? उनके पास भी एक ही हल था। खेती का अवसर चूका तो गया हाथ से। लिहाज भी लिहाज की जगह शोभा देता है। सीधे ठाकुर के खेत पर गये। पास जाते ही अपने हल की पहिचान हो गई। पर ठाकुर पर चोरी का इलजाम भी तो नहीं लगाया जा सकता और न सीधे-सीधे हल ही माँगा जा सकता

है। बुद्धि तो तेज थी ही। ठाकुर से विनम्रता-पूर्वक अभिवादन करने के बाद हल को संबोधित करते हुए बोले—आप यहाँ पधार गये तो कोई बात नहीं। पर बड़े आदमियों के यहाँ भी आपका मुँह तो धूल में गड़ा है। मैंने सोचा कुछ और ही ठाट होंगे। ठाकुर साहब का हाथ ऊपर होते हुए भी धूल चाट रहे हैं, बात समझ में नहीं आई।

पर उनकी बात ठाकुर साहब उसी क्षण समझ गये। तनिक लज्जित होते हुए बोले, 'काम करने की लाज कैसी ? घर की बात समझकर मैं बिना पूछे ही हल ले आया। परसों घर पहुँचा दूँगा।' बारहठजी सोचकर तो बहुत-सी बातें आये थे। पर रूबरू कुछ कहने की हिम्मत नहीं हुई, 'बोले, कोई बात नहीं, मैं दो दिन तक किसी से हल माँगकर काम चला लूँगा।'

—गरीब या कोई मजदूर कहीं भी चला जाय, उसे तो सभी जगह मेहनत करके ही पेट भरना होता है।

—गरीब को कहीं भी सुविधा और आराम नहीं।

हळद खायां गुण नीं आई तौ झख मारण नै खाई ? १४५५४

हलदी खाने पर फायदा नहीं हुआ तो झख मारने के लिए खाई ?

—अच्छी वस्तु तो निःसंदेह लाभदायक और उपयोगी होती ही है।

—सज्जनों की संगत का प्रभाव तो पड़ता ही है।

हळद में रंग्योड़ी चादर अर नांव पीतांबर। १४५५५

हलदी में रँगी चादर और नाम पीतांबर।

—मामूली हस्ती रखने वाला यदि बड़प्पन का दिखावा करे।

—जो व्यक्ति सस्ते में बड़ा दिखने का प्रयास करे।

हळद रौ गांठियौ लेय'र पंसारी बणग्यौ। १४५५६

हलदी का टुकड़ा लेकर पंसारी बन गया।

दे.क.सं. १४०४९

हळद लागी नीं फिटकड़ी, रंग चोखौ-रौ-चोखौ। १४५५७

हलदी लगी न फिटकड़ी, रंग आया चोखा।

—जब किसी काम की सफलता के निमित्त न तो अधिक खर्च करना पड़े और न अधिक मेहनत, तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

—बिना खर्च और बिना मेहनत के कोई अच्छा कार्य संपन्न हो जाये, तब...।

हळ भागौ के हाल, मांमौ घरै आयौ रे लाल। १४५५८

हल टूटा कि हाल, मामा घर आया रे लाल।

संदर्भ-कथा : एक था किसान। प्रौढ़ उम्र में पुनर्विवाह किया। रोटी-बाटी का तो आराम हो गया पर औरत कुछ ढीले चरित्र वाली थी। घर में एक किशोरवय का भानजा रहता था। उसे बातों-ही-बातों में एकाध-पैसा देकर कुछ खाने के लिए बाहर भेज देती थी। किसान दिन-भर खेती के काम में लगा रहता था। दोपहर का भाता अकसर वही पहुँचाने जाती थी। एक दिन भाते की बेला यार घर आ गया तो मामी ने बुखार का बहाना करके भानजे के साथ भाता भेज दिया।

भाता देकर भानजा वापस जल्दी ही घर लौट आया। पाँवों की आहट सुनते ही मामी ने खेस ऊपर खींच लिया। फिर भी छोकरे की बाल्य-दृष्टि से वह अशोभनीय नजारा छिपा नहीं रहा। उसने भोलेपन से पूछ ही लिया, 'मामी, थे चार हाथ किसके हैं?' मामी ने झट घड़ा-घड़ाया जवाब उछाल दिया, 'इतना बड़ा हो गया, इतना भी नहीं समझता, दो हाथ मेरे हैं और दो बुखार के।' छोकरे की जिज्ञासा शांत नहीं हुई। फिर पूछा, 'और ये चार पाँव?' मामी के लिए उसी जवाब को दोहराना जरूरी हो गया। भानजे ने आगे कुछ भी नहीं पूछा। भूख लगी थी सो रिरियाते बोला, 'मामी भूख लगी है।' मामी ने मीठे लहजे में कहा, 'मैं बुखार में उठ नहीं सकती। कुठले में सारा सामान रखा है। तेरी इच्छा हो सो खाले। घी, गुड़-शक्कर, दूध-दही। कुठले का किवाड़ खुला मत रखना।'

भानजे की मन-चीती हुई। मामी का हाथ खुला हुआ नहीं था। अब तो वह कुछ भी कसर नहीं रखेगा। इच्छानुसार घी-शक्कर और मलाई के दूध से कटोरा भरकर आँगन में आ बैठा, मामी की ओरी से पीठ फिराकर। घी-शक्कर का पहिला कौर मुँह में लेते ही उसे एक मजाक करने की सूझी। जोर से बोला : 'हळ भागौ के हाल, मांमौ घरै आयौ रे लाल।'

दूसरी बार और जोर से बोला तो यार के दिल में खलबली मच गई। घर के मालिक का गुस्सा और उसकी ताकत को अच्छी तरह जानता था। एक ही वार में कमर तोड़ देगा।

मालकिन तो बाँहों में भरकर रोकना चाहती थी, पर वह तो उसके बंधन से मुक्त होकर तेजी से भागा। सीधा मुँह होने के कारण व लड़के को देख नहीं पाया। ठोकर का झटका लगते ही, घी-शक्कर और दूध की दोनों तासलियाँ औंधी हो गईं। भर्राये गले से बोला, 'मांमी रौ न्हाटौ ताव, म्हारौ घी ढोळग्यौ पाव। (न्हाटौ = दौड़ा। ताव = बुखार। ढोळग्यौ = गिरा दिया।)

मामी खेस तानकर खर्राटे भरने लगी, मानो उसे कुछ पता ही न हो।

—पुरुष के भाग्य और स्त्रियों के चरित्र को जब विधाता भी नहीं समझता, तब बेचारा मनुष्य किस गिनती में है!

हळ में गाय नीं जुतीजै। १४५५९

हल में गाय नहीं जोती जाती।

—कोई भी भारी और कठिन काम औरतों से नहीं करवाना चाहिए।

—कमजोर व्यक्ति से मुश्किल काम करवाना उचित नहीं।

हळवांणी री चोरी अर सूई रौ दांन। १४५६०

हलबानी की चोरी और सूई का दान।

दे.क.सं.१४०५५

हळ वाय'र हंसियौ, कस लेसी कसियौ। १४५६१

हल चलाकर खुश हुआ, पर फसल तो निराई से होगी।

—हल की लकीरें खींचने मात्र से खेती नहीं होती, अच्छी खेती तो एक-एक पौधे को निराने से फलती है।

—शुरू करने से ही कोई काम संपन्न होता, उसकी सारी प्रक्रियाएँ अपनानी पड़ती हैं।

—हल तो बैलों के बूते पर चलता है, पर निराई तो अपने हाथों से करनी पड़ती है, तब पसीना आता है। इसलिए दूसरे के बूते पर नहीं, काम तो अपने बूते पर करने से ही होता है।

पाठा : हळ वाय'र हंसियौ, कण लेसी कसियौ। वाय-वूय'र हंसियौ, कस लेसी कसियौ।

हळ, हालां अर खेत पड़ालां। १४५६२

हल, हाल और खेत पड़ाल।

हाल = हल की वह लंबी पट्टी या लट्ठा, जिसका एक सिरा हल के बीच में फँसा रहता है तथा दूसरे सिरे पर जूआ बाँधा जाता है, हरिसा।

पड़ाल = टीबों के बीच की नीची भूमि।

—ढाल से बहता हुआ पानी पड़ाल के आर-पार चला जाता है। इसमें फसल अच्छी होती है। उम्दा हाल वाले हल से ही यह खेत जोता जाता है।

—पर्याप्त साधन होने पर ही कार्य संपन्न होता है।

हलाल में हरकत, हरांम में बरकत। १४५६३

हलाल में हरकत, हराम में बरकत।

आज के समाज की व्यवस्था, इस कहावत के अनुसार ही विद्यमान है—खरी कमाई में तो घाटा-ही-घाटा है और हराम की कमाई में लाभ-ही-लाभ।

—इसी आशय की एक और कहावत है—करौ पाप, खावौ धाप। करौ धरम, फोड़ौ करम। जितना पाप करोगे—धन-धान से भंडार भरोगे। धर्म करोगे तो भाग्य फूट जाएँगे।

मि.क.सं.१८९४

हळाहळ लूण री पोवै। १४५६४

सरासर नमक की पोता है।

दे.क.सं.१२९०२

हळिये रौ कांई वावणौ, लूरै-लूरै जावणौ। १४५६५

हल का क्या चलाना, झुक-झुककर चलना।

—जो व्यक्ति स्वयं कुछ भी काम नहीं करे और दूसरों के श्रम-साध्य कार्य को आसान बताये, खिल्ली उड़ाये।

—अकर्मण्य व्यक्ति को हर काम आसान लगता है, इसलिए कि वह स्वयं कोई काम नहीं करता।

हळो घुण लोगो ते रेवानो नी है।—भी.३५२ १४५६६

घुन लगी लकड़ी अधिक नही टिकती।

—असाध्य बीमारी के लिए यह कहावत उपयुक्त है।

—कोई व्यसन चिपकने पर आदमी की आयु कम हो जाती है।

हवा में बातां करै। १४५६७

हवा में बातें करता है।

—जो व्यक्ति निराधार बातें करे।

—व्यर्थ बकवास करना।

—तथ्य-हीन बातें करने वाला।

हवा रौ कोई रूप थोड़ौ ई व्है। १४५६८

हवा का कोई स्वरूप नहीं होता।

—हवा का अस्तित्व तो जरूर महसूस होता है, पर उसका कोई स्वरूप नजर नहीं आता।

—प्रतिभा अथवा ज्ञान व्यक्ति के माध्यम से चरितार्थ होता है, पर उसका अपना कोई स्वरूप नहीं होता।

—बहुत-सी वस्तुएँ ऐसी हैं, जिनका अस्तित्व तो महसूस किया जा सकता है, पर वे प्रत्यक्ष दिखलाई नहीं पड़तीं—मसलन सुगंध और हवा।

हवा-हवा रौ मोल। १४५६९

हवा-हवा का मूल्य है।

—हर जमाने की हवा अलग-अलग होती है और उसकी अलग-अलग ही अहमियत है।

—हर समय की अपनी पहिचान होती है और उसका अलग ही महत्त्व होता है।

मि.क.सं.१३४५९

हवेली मिनखां सूं सोहै। १४५७०

हवेली मनुष्यों से अच्छी लगती है।

—इमारत कोई पत्थरों की सुंदर कारीगरी से अच्छी नहीं लगती, अंदर रहने वाले नेक इनसानों से अच्छी लगती है।

—अंततः मनुष्य ही हर साहित्य, हर कला और हर शिल्प के खरे-खोटे की कसौटी है।

हवेली वाळौ रोवै, टपरी वाळौ सोवै। १४५७१

हवेली वाला रोये, टपरी वाला सोये।

—पैसे वाले को पचासों चिंताएँ लगी रहती हैं—चोर की, डकैत की और समाज-कंटकों की। गरीब निश्चिंत होकर निर्विघ्न सोता है।

—लोभी हमेशा दुखी रहता है और संतोषी सदा सुखी।

हवेली व्है जठै सैत-खांनौ ई व्है। १४५७२

हवेली मे पाखाना भी होता है।

दे.क.सं.४०३१

हसती हंदा खोज में सगळा खोज समाय। १४५७३

हाथी के पॉव मे सभी पॉव समाते है।

—एक महान विभूति की असंख्य सामान्य व्यक्ति भी बराबरी नहीं कर सकते।

—एक विशाल कारोबार में कई छोटे-बड़े धंधे समा जाते हैं।

—मैं अपने अभिन्न मित्र कोमल कोठारी जो अथाह ज्ञान का भंडार है, उसके लिए अकसर इस कहावत का प्रयोग करता हूँ। जानने वाले उसे सभी जीवंत विश्व-कोश ही मानते हैं।

हां - हा

हां अर ना रै आदू बैर है। १४५७४

हॉं और ना के आदिम बैर है ।

—दो विरोधी तत्त्वों में कभी मेल नहीं हो सकता ।

—नकारात्मक और सकारात्मक प्रवृत्तियों में हमेशा द्वंद्व रहता है ।

हांगणी हगाई बमणुं वैर ।– भी.७७६ १४५७५

नजदीक सगाई दुगना बैर ।

—जब नजदीक ही सगाई होकर ब्याह हो जाता है तो हमेशा कुछ-न-कुछ झगड़ा चलता ही रहता है ।

—नित्य के संपर्क में दरार पड़ ही जाती है ।

हांठा ने भरोसे ढांड पिलाई जाहें ।– भी.७८७ १४५७६

ईख के भरोसे दूसरे टंडल भी पैरे जाते है ।

—कष्ट में फँसे व्यक्ति के साथ रहने से स्वयं कष्ट उठाने की स्थिति बन जाती है ।

—अपराधी का साथ करने से बदनामी तो होती ही है,पर कभी-कभार सजा का भागीदार भी बनना पड़ता है ।

हांडी आडौ ढक दिरीजै पण दुनियां रै मुंहडै नीं दिरीजै । १४५७७

हँड़िया के मुँह पर ढक्कन दिया जा सकता है पर दुनिया के मुँह पर नही दिया जा सकता ।

दे.क.सं.१०९९७

हांडी कड़ाव नै ढकै। १४५७८

हँड़िया कड़ाव को ढँकती है।

—कड़ाव तो किसी विशेष उत्सव-आयोजन के अवसर पर चढ़ता है, पर हँड़िया तो दोनों जून चढ़ती है—उसे पार पटकना ज्यादा मुश्किल है।

—बड़े आयोजन पर आमंत्रित व्यक्तियों को खिलाने की बजाय नित्य घर में अतिथियों का सत्कार करना कुछ और ही बात है।

हांडी जिसा ठीकरा, बाप जिसा डीकरा। १४५७९

हाँड़ी जैसे ठीकरे, बाप जैसे डीकरे।

डीकरौ = बेटा।

दे.क.सं.३७७६

हांडी तौ पराई पण पेट तौ परायौ कायनीं। १४५८०

हँड़िया तो पराई थी पर पेट तो पराया नहीं था।

—बार-बार आग्रह करके खिलाने वाले हितैषियों को आखिर यह कहावत सुनानी पड़ती है, तब कहीं पीछा छूटे तो छूटे।

—अपने हिसाब से अधिक भोजन करना हानिकारक है।

हांडी तौ बासी पड़ी अर कागां नै निंवताह। १४५८१

हँड़िया तो बासी पड़ी और कौवों को न्योता।

—अपनी औकात को भूलकर जो व्यक्ति फालतू डींग मारे, उस पर कटाक्ष।

—अपनी हैसियत के अनुसार ही पाँव पसारने चाहिए।

हांडी दाझै पण बळै कोनीं। १४५८२

हँड़िया गर्म होती है पर जलती नहीं।

—जो व्यक्ति दुखी होने पर भी अपना दुख प्रकट न करे।

—गुस्सा आने पर भी जो व्यक्ति भड़के नहीं यानी अपने क्रोध का इजहार न करे।

—जो व्यक्ति संघर्षों से निरंतर जूझने पर भी हार न माने।

हांडी धोई नै बाई रोई । १४५८३

हँड़िया धोई और बाई रोई ।

—हँड़िया तो धोकर तैयार कर ली, लेकिन उसमें डालने का सामान न हो तो उसे चूल्हे पर क्योंकर चढ़ाया जाय ? ऐसी दारुण स्थिति में आँसू स्वतः छलक आते हैं ।

—जिस दुखियारे को दो जून खाना भी न मिले तो अपने भाग्य को रोने के अलावा उसके पास चारा ही क्या है ?

हांडी में ढकणी खावै । १४५८४

हँड़िया में ढक्कन खाता है ।

—थोड़े में से ही जो व्यक्ति अधिकांश हिस्सा उड़ा ले, उस पर कटाक्ष ।

—अपने अधिकार से ज्यादा हिस्सा खाने वाले व्यक्ति को लक्ष्य करके... ।

—कोई संबंधित व्यक्ति ही अपने परिजनों की संपत्ति पर अधिकार जमा सकता है, दूसरा नहीं ।

हांडी में रूप अर पेई में सिणगार । १४५८५

हँड़िया में रूप और पेटी में शृंगार ।

—स्वास्थ्य तो हँड़िया पर निर्भर करता है और शृंगार प्रसाधन और वस्त्रों की पेटी पर ।

—साधन उपलब्ध होने पर ही आवश्यकताओं की पूर्ति संभव है ।

पाठा : हांडी में रूप अर तिजोरी में सिणगार ।

हांडी रौ हमीर । १४५८६

हाँड़ी का हमीर ।

—अधिक भोजन करने वाले के लिए... ।

—जो व्यक्ति हँड़िया के इर्द-गिर्द ही बैठा रहे ।

हांडी-हथा कर दीन्हा । १४५८७

हँड़िया हाथ में थमा दी ।

—भिक्षा माँगने की स्थिति आ जाने पर ।

—किसी अचीते हादसे के कारण स्थिति एकदम डाँवाडोल हो जाय, तब... ।

हांण-लाभ, जीवण-मरण, जस-अपजस विधि हाथ। १४५८८

हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ।

—इधर तो दशरथ का मरना, उधर राम को बनवास और अयोध्या में सन्नाटा देखकर भरत हतप्रभ रह गये। ननिहाल से आते ही यह कैसा दुःस्वप्न आँखों के सामने प्रकट हो गया। उन्होंने मुनिवर वशिष्ठ से पूछा तो उन्होंने जवाब दिया—हानि-लाभ, जीवन-मरण और यश-अपयश सब विधाता के हाथ में है। किसी का भी उस पर वश नहीं चलता।

हांती आई पण हथाळी छोटी। १४५८९

हाँती आई पर हथेली छोटी।

हांती = विवाहादि कुछ विशिष्ट अवसरों पर बनने वाले विशिष्ट खाद्य-पदार्थ का वह अंश जो पड़ोसियों, सगे-संबंधियों एवं बंधु-बांधवों में बाँटा जाता है।

—खूब दहेज आये और उसे घर में धरने की जगह न हो, तब...।

—भाग्य फलने पर उसे झेलने का सामर्थ्य न हो तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

हांती आई, हथाळी चाटी। १४५९०

हाँती आई, हथेली चाटी।

—किंचित् लाभ होने पर जब कोई भी इच्छा पूरी न की जा सके।

—जब नहीं के बराबर भाग्य फलकर रह जाय।

हांती तौ हेत रौ दीवौ व्है। १४५९१

हाँती तो प्रेम का दीया होता है।

—भेंट का मूल्य नहीं आँका जाता, वह तो प्रेम की प्रतीक होती है।

—भेंट का संबंध भावना से जुड़ने के कारण वह अमूल्य होती है।

हांती थोड़ी नै हळवळ घणी। १४५९२

हाँती थोड़ी और हल्ला ज्यादा।

—जब छोटी बात का प्रदर्शन ज्यादा हो।

—काम बहुत कम और हल्ला-गुल्ला ज्यादा।

—जब वास्तविकता की तुलना में दिखावा बहुत ज्यादा हो।

पाठा : हांती थोड़ी नै हाकौ घणौ । हांती थोड़ी नै धमचक घणी ।

हांती में पांती खरी । १४५९३

हाँती में पाँती खरी ।

—स्नेह-भोजन में तो हर परिजन का हिस्सा होता है ।

—कुछ ऐसे अधिकार होते हैं, जिनसे किसी को भी वंचित नहीं किया जा सकता ।

पाठा : हांती में तौ पांती हुवै ई ।

हांती में हरखै हेत हीया रौ । १४५९४

हाँती में झलके प्रेम हृदय का ।

—हाँती की मात्रा और उसका स्तर नहीं देखा जाता, वह तो हृदय के प्रेम का साकार स्वरूप होती है ।

—भेंट की भावना का मूल्य नहीं आँका जाता, वह अमूल्य होती है ।

मि.क.सं.१४५९१

हांपस्या वाळी होळी अंगारा भोरी जाये ।– भी.७८९ १४५९५

सेंवर गाँव की होली अंगारों में ही चुक जाती है ।

—तात्पर्य यह है कि उक्त गाँव के लोग अधजली होली के अंगारे एक-दूसरे पर उछालते हैं । परिणाम-स्वरूप होली का अस्तित्व अंगारे बिखरने के साथ ही खत्म हो जाता है ।

—जब किसी काम का सार्थक उपयोग न हो ।

हांमजी-वांमजी भुरटां रा चोर भेळा व्हिया । १४५९६

हामजी-बामजी भुरटों के चोर शामिल हुए ।

—जब निकम्मे और व्यर्थ आदमियों का जमघट इकट्ठा हुआ हो ।

—नूरियों-जमालियों की भीड़-भाड़ की ओर लक्ष्य करते हुए ।

हांसी में ईं खांसी व्है जावै । १४५९७

हँसी में ई खाँसी हो जाती है ।

संदर्भ-कथा : एक सेठ का कारोबार बहुत बढ़िया चल रहा था । पर कल की रोशनी में क्या कालिख पुती है, कुछ पता नहीं चलता । दिनमान का चक्कर ऐसा उलटा चला कि उसकी

हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती ही गई। और अंत में बिगड़ी तो ऐसी बिगड़ी कि दो जून की रोटियों का जुगाड़ भी मुश्किल हो गया। सेठानी थोड़ी सनकी थी। जिस गाँव में घर-घर उनकी उधारी थी, वहाँ ऐसी स्थिति में रहना उसके लिए असह्य हो रहा था। उसने एक दिन मौका देखकर अपने मन की बात पति को बता दी, 'मैं तो यहाँ घड़ी भर भी नहीं रह सकती। औरतों के ताने सुन-सुनकर मेरा तो कलेजा छलनी हो गया है। मेरे मायके में सब ठाट हैं। मेरे भाई अपने व्यापार में आपका हिस्सा रख लेंगे। फिर कारोबार जमते क्या देर लगेगी ?' सेठ भी कई दिनों से कुछ ऐसी ही बात सोच रहा था। बहू के कहते ही मान गया। दूसरे ही दिन वे रवाना हो गये। बारह बरस का एक ही समझदार बेटा था। वह भी अपने बाल-साथियों को छोड़कर माँ-बाप के साथ चल पड़ा।

सेठानी रवाना तो बड़ी खुशी के साथ हुई थी। पर रास्ते में उसका मन बदलने लगा कि ऐसी दयनीय स्थिति में दामाद का ससुराल जाना क्या ठीक रहेगा ? सगे भाई भी दुख के दिनों में मुँह फेर लेते हैं, तब साले गरीब बहनोई का क्या लिहाज रखेंगे। कुछ ही दिनों में नौकर की तरह बेगार लेने लगेंगे। भौजाइयों के जहरीले ताने क्या वह सुन सकेगी ? यों ही अपना गाँव छोड़ा ! ईश्वर किसी को भी लाठी से नहीं मारता, वह तो सिर्फ कुमति सुझा देता है सो अपने-आप ही मरने की नौबत आ जाती है। वह प्यास लगने के बहाने पति को कुएँ पर ले गई। लड़का इमली की सघन छाया में वहीं बैठा रहा। सेठ पानी सींचने के लिए तनिक झुका तो पत्नी के मामूली धक्के से ही कुएँ में गिर पड़ा। लड़के को जैसे-तैसे समझाकर उसे ननिहाल ले गई।

पीहर पहुँचने के बाद भी उसने सुहागिन का वेश नहीं बदला। कहा कि वे दिसावर व्यापार करने गये हैं।

उधर कुएँ पर एक गड़रिया पानी पीने आया तो उसने भीतर चिल्लाने की आवाज सुनी। अपनी मोटी रस्सी डालकर सेठ को बाहर निकाला। सेठ ने भी सच्ची बात छिपाये रखी। उसने प्राण बचाने के बदले गड़रिये को नग-जड़ी अँगूठी देनी चाही तो गड़रिये ने साफ मना करते कहा, 'बस, आपके प्राणों का मोल इस अँगूठी जितना ही है ?' बनिया क्या जवाब देता। मन-ही-मन सोचने लगा कि वह अँगूठी जितना भी मोल समझती तो कुएँ में थोड़े ही पटकती। पर उसने होंठों से बाहर कुछ भी नहीं दरसाया। गड़रिये के गले लगकर कहीं अजान दिसावर को रवाना हो गया।

दिनमान किसी को पूछकर नहीं बदलते। दिसावर में जो हवेली उसने भाड़े पर ली, पानी की तंगी के कारण उसके आँगन में एक टाँका खुदवाने की सोची। मजदूरी चुकाये जितने पैसे भी उसके पास नहीं थे। पड़ोसी से कुदाल और फावड़ा माँगकर उसने अपने हाथों ही खुदाई शुरू कर दी। सेठ को सपने में भी आशा नहीं थी कि उसका भाग्य इतना जल्दी चमत्कार बता देगा। कोई एक दो नहीं—पूरे सात कलश। मोहरों से भरे हुए। ऐसे शहर को छोड़कर जाने की इच्छा नहीं हुई। और जाये भी तो किसके पास? उसने दृढ़ संकल्प करके वहीं व्यापार शुरू किया। धूल में हाथ डालता तो वह सोना हो जाती। तीन ही बरस में वह इलाके का सबसे बड़ा व्यापारी हो गया। अभी उसकी कोई विशेष उम्र नहीं हुई थी। बीसियों बाप उसे अपनी बेटियाँ देने को तैयार थे। पर दूसरी बार कुएँ में गिरने की हिम्मत नहीं रही। पर कुछ दिन से बच्चे की याद आने लगी। उसका तो कोई कसूर ही नहीं था। दो-तीन दिन उसके साथ रहकर वापस चला आएगा।

सो एक दिन जोशी से शुभ मुहूर्त निकलवाकर वह अपने ससुराल रवाना हुआ। नागौरी बैलों का बढ़िया रथ था। दूसरे दिन ससुराल पहुँचा तो सबने खूब खुशियाँ मनाईं। पर आश्चर्य की बात कि उसकी पत्नी खुशी मनाने में सबसे आगे थी। रात को एकांत में मिलन हुआ तो उसने सेठ को ऐसा भरमाया कि उसे पत्नी की बात पर पूरा विश्वास हो गया, तभी तो उसने सुहागिन का वेश नहीं बदला। भोले सेठ ने शंका की, 'यदि ऐसा ही सपना आया तो मुझे बताया क्यों नहीं?' सेठानी ने मुँह मस्कोरकर जवाब दिया कि पहले बता देती तो सपना साकार थोड़े ही होता। पुरुषों के लिए पत्नी की बात पर विश्वास करने के अलावा दूसरा कुछ भी विकल्प नहीं होता। सेठानी ने एक बात और समझाई तो बिना हुज्जत किये वह भी मान गया कि पुरखों का गाँव छोड़ना नहीं चाहिए। सेठ ने वादा किया कि दिसावर में सारा काम समेटकर वह अगले महीने की तेरस को गाँव आ जाएगा।

दूसरे दिन सेठ दिसावर के लिए रथ में बैठकर रवाना हुआ और सेठानी अपने ससुराल। बेटे की सगाई मामों ने कर दी थी। सेठ के गाँव पहुँचते ही बच्चे का धूमधाम से ब्याह कर देंगे।

और सचमुच बच्चे के ब्याह में धूमधाम की कोई कमी नहीं रही। पर संयोग से बहू बहुत झगड़ालू, तेज-तर्रार और गुस्सैल थी। सेठ समझ गया कि सालों ने इस ब्याह के नाते निश्चित रूप से अपनी कोई स्वार्थ-सिद्धि की है। लेकिन भाँवरें खाई हुईं वापस उधड़ने से रहीं। जो भाग्य में लिखा है, उसे मन मारकर स्वीकार करना पड़ता है।

बुरे दिन किसी को भी सूचित करके नहीं आते—न गरीब को और न अमीर को। गर्मियों के दिन थे। सेठ सूर्यास्त से दो घड़ी पहिले ब्यालू कर लेता था। सेठ के मुँह पर ढलते सूरज की किरणें पड़ने लगीं तो सेठानी ने रंगीन चुँदड़ी से छाया कर दी। खड़ी होकर एक हाथ से बयार करने लगी। सेठ के होंठों पर अचानक मुस्कान थिरक उठी। मजाक करते बोला, 'आज यह भी दिन है और वह कुएँ वाला दिन भी था, जब तुमने मुझे अपने हाथ से कुएँ में धक्का दिया। लेकिन बचाने वाले के हाथ ज्यादा लंबे होते हैं...।' बहू पास ही ओट से सुन रही थी। सेठानी ने इशारा किया तो सेठ तुरंत समझ गया। आगे उसने कुछ भी नहीं कहा। पर हाथ से छूटा पत्थर वापस लौटे तो मुँह के बोल वापस लौटें। बहू के लिए वह ब्रह्मास्त्र काफी था।

कुछ ही दिन बाद सास-बहू में किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। तब बहू ने पहिली बार वह ब्रह्मास्त्र काम में लिया। मुस्कराकर कहा, 'अब बढ़-बढ़कर बातें करना तुम्हें शोभा नहीं देता। तुम वही हो न जिसने अपने हाथ से भोले श्वसुर को कुएँ में धकेला। पति की हत्या तो कसाइन भी नहीं करती। तुम्हारा तो मुँह देखने से ही पाप लगता है।'

सेठानी के काटो तो खून नहीं। अब बहू का सामना क्योंकर कर सकेगी ? बदजात के पेट में कोई बात तो खटती नहीं। सारे गाँव में कल तक थू-थू हो जाएगी। उस पर सनक का दौरा पड़ा तो उसने अपने कमरे में जाकर फाँसी लगा ली। सेठानी की दुर्दशा देखकर सेठ ने कपाल ठोक लिया। एक मामूली मजाक से यह दुःस्वप्न घटित हो गया। यदि थोड़ा संयम बरतता तो यह घड़ी देखनी नहीं पड़ती। जब वह इतना अनुभवी होकर भी अपनी जबान पर नियंत्रण नहीं रख सका, फिर बहू तो अभी बच्ची ही है, वह क्योंकर नियंत्रण रख पाती।

—हँसी-हँसी में जब कोई अप्रत्याशित उत्पात खड़ा हो जाये।

—मनुष्य को चाहिए कि वह बेहूदी मजाक जबान पर न लाये।

हां-हम्मैं होय रही छै। १४५९८

हॉ-हम्म हो रही है।

—महफिल रंग पर है।

—जब किसी महफिल की रंगत चढ़ाव पर हो।

हाऊकारा अे हारा पूचे, आदमी अे को नी पूचे।–भी.७६८ १४५९९

साहूकार को सभी पूछते हैं, आदमी को कोई नहीं पूछता।

—व्यवसाय और लेन-देन के मसलों में ईमानदारी और प्रतिष्ठा की ही पूछ होती है, किसी व्यक्ति विशेष की नहीं।

—बड़ा व्यापारी वक्त पर अपना वादा न निभाये तो उसकी साख खत्म हो जाती है और इसके विपरीत सामान्य व्यापारी अपनी जबान पर पाबंद रहे तो उसका हाथ कहीं नहीं अटकता।

हाऊकारो हेंडता नो काम हारे।– भी.७६९ १४६००

साहूकार का चुटकियों में काम होता है।

—पास में अधिक पूँजी न भी हो तो साहूकार को माँगते ही रुपये मिल जाते हैं।

—व्यापार में पूँजी का इतना महत्त्व नहीं, जितना जबान की पाबंदी का है।

हाऊ जोई ने माटी कीदो, कुबार होई ने नवड़्यो।– भी. ७६४ १४६०१

अच्छा देखकर पति चुना, कुम्हार जैसा निकला।

—सोच-समझकर काम करने के पश्चात् भी कुछ-न-कुछ पछतावे की गुंजाइश रह जाती है।

—सारे काम मनुष्य के विवेक पर ही निर्भर नहीं करते, उनमें कई सुयोग-दुर्योग जुड़े रहते हैं।

हाऊ देखाये ते आवज्यो, नी ते जाज्यो।– भी.७६६ १४६०२

अच्छा समझो तो आना नही तो चलते बनना।

—किसी भी परिचित या परिजन के घर आना-जाना व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है। जहाँ उसका मन माने वहाँ दूर भी चला जाता है, नहीं तो पड़ोसी के घर भी नहीं जाता।

हाऊ भूंडा झाबे थोड़ू ऊबो रेवू है।– भी. ७७० १४६०३

अच्छे-बुरे की छाया में थोड़े ही खड़ा रहना है?

—यदि किसी व्यक्ति विशेष से खास काम न पड़े तो उसके भले-बुरे की चिंता करना अनावश्यक है।

—पारस्परिक संबंधों की निर्भरता तो एक-दूसरे के लगाव से जुड़ी रहती है, उस पर किसी की भी धौंस नहीं चलती।

हाऊ भूंडा ना जाबे ने बेहवो है।– भी.७७२ १४६०४

अच्छे-बुरे की छाया में बैठना थोड़े ही है!

—परिवार,जाति और समाज में सब तरह के व्यक्ति होते हैं,उनमें अच्छे-बुरों का चुनाव करना नीति-सम्मत नहीं । सभी किस्म के भले-बुरे व्यक्तियों के साथ निबाहकर चलना चाहिए ।

हाऊ भूंडू टाळवू नी , भूख नू मूंडू बाळवूं ।– भी.३५४ १४६०५

अच्छा-बुरा टालना नहीं, भूख की आग शांत करनी है ।

—सामने परोसी हुई थाली के हर पदार्थ को सम्मान-पूर्वक खाना चाहिए,नहीं तो अन्न देवता का अपमान होता है ।

—भोजन की सार्थकता मुँह के स्वाद में नहीं,पेट की आग को शांत करने में है ।

—आदमी को रुचि-अरुचि का ध्यान किये बिना,जो कुछ भी उपलब्ध हो जाय उसे प्रसाद की नाईं ग्रहण करना चाहिए ।

हाऊ-भूंडू नी जोवूं, चाये जेम करीने पेट भाडू आलवो ।– भी.३५५ १४६०६

अच्छा बुरा नहीं देखा जाता, जस-जस पेट पालना है ।

—मानवीय जीवन से बड़ा कोई वरदान नहीं । इसलिए अपनी देह को जीवित रखना ही मनुष्य का सर्वोपरि धर्म है । भोजन का स्तर कुछ विशेष माने नहीं रखता । जिससे स्वास्थ्य ठीक रहे,वही उत्तम भोजन है । भूख शांत होना ही भोजन की सर्वोच्च सार्थकता है ।

हाऊ भूंडो हगरवो परे , हाऊ कूंण न भूंडो कूंण ?– भी.७६७ १४६०७

अच्छे-बुरे सबको निभाना पड़ता है, अच्छा कौन और बुरा कौन ?

—मनुष्य के अच्छे-बुरे की पहिचान बहुत मुश्किल है । कल जिसे अच्छा समझा था,वह आज बुरा निकल जाता है । और आज का बुरा कल अच्छा हो जाता है । इसलिए अच्छे-बुरे का प्रश्न ही व्यर्थ है ।

—मिलनसार व्यक्ति सबके साथ निबाहकर चलता है ।

हाऊ-भूंडो हगरो तो हाऊ-भूंडा दाड़ा में काम आवे ।– भी.३५६ १४६०८

अच्छा-बुरा सब-कुछ अच्छे-बुरे दिनों में काम आता है ।

—सभी अच्छी-बुरी चीजों का संग्रह कर लेना चाहिए ताकि वे अच्छे-बुरे दिनों में काम आ सकें ।

—अच्छी चीज अपने-आप में कुछ नहीं होती, वह समय पर उचित उपयोग में न आये तो वह अच्छी नहीं है और इसके विपरीत बुरी चीज भी वक्त पर काम आ जाय तो वह अच्छी है।

—अच्छी-बुरी चीज का महत्त्व सापेक्ष होता है, निरपेक्ष नहीं।

हाऊ मांये धक्को ने देवो, राम देक्खे।–भी. ३५३ १४६०९

अच्छे काम मे बाधा नही डालनी चाहिए, राम सब देखता है।

—किसी के बनते काम को बिगाड़ना किसी भी दृष्टि से संगत नहीं है।

—ईश्वर चारों ओर चौकसी रखता है, किसी के सुधरते काम में अड़ंगा लगाने वालों को वह कभी क्षमा नहीं करता।

हाऊ लारे हाऊ, खोटा लारे खोटो।–भी. ७७३ १४६१०

अच्छे के साथ अच्छा, बुरे के साथ बुरा।

—जो व्यक्ति अच्छा है उसके साथ वैसा ही सलूक करना चाहिए और जो व्यक्ति बुरा है उसके साथ बुरा व्यवहार ही उचित है।

—जो व्यक्ति सबके साथ एक-सा व्यवहार करे, वह या तो पाखंडी है या नासमझ।

हाऊ सूं टाबर इज डरै। १४६११

हौवे से बच्चे ही डरते है।

—अकारण तो बच्चे ही डरते हैं। बड़ा व्यक्ति तो डर का कारण जाने बिना किसी बात से नहीं डरता।

—किसी बड़े को बेबात डराने पर वह इस उक्ति का प्रयोग करता है।

हाऊ हगरे ने वऊ वखरे हे तो बीजो कूण वगडू करे?–भी. ३५७ १४६१२

सास संग्रह करती है, बहू बिखेरती है तो दूसरा कौन पंचायती करे?

—किसी भी व्यक्ति के पारिवारिक झगड़ों की पंचायती करना व्यर्थ है। जब तक झगड़े का बुनियादी आधार खत्म न हो, झगड़ा तो चलता ही रहेगा।

—पारिवारिक झगड़े में किसी का भी पक्ष लो, एक पक्ष तो नाराज रहेगा ही इसलिए खामखाह किसी की अनबन मोल लेना उचित नहीं।

हाऊ हरखू देखाये तो हारां नी आंख फूटे ।– भी.७६५ १४६१३

अच्छे धनाढ्य दिखने पर सभी की आँखों में खटकते हैं ।

—यह एक मानव स्वभाव है कि वह दूसरों की बढ़ती सहन नहीं कर सकता, मन-ही-मन जलता है और उचित मौका मिलने पर उसे नीचा दिखाने की चेष्टा करता है ।

—सही है कि मनुष्य में ईर्ष्या की प्रवृत्ति है, पर जहाँ तक संभव हो, उस पर नियंत्रण रखने की चेष्टा करनी चाहिए ।

हाऊ हारा चावे , बोदूं को नी चावे ।– भी.७७४ १४६१४

अच्छे को सभी चाहते हैं, बोदे को कोई नहीं चाहता ।

—यह एक अच्छी प्रवृत्ति है कि अच्छे व्यक्ति का सर्वत्र आदर होता है और बुरे व्यक्ति से लोग दूर रहना चाहते हैं ।

—इसलिए जहाँ तक संभव हो, मनुष्य को अच्छाई की ओर ही प्रवृत्त होना चाहिए ।

हाकम जावै पण कुरसी नीं हिलै १४६१५

हाकिम जाय पर कुरसी नहीं हिलती ।

—अधिकारी आते-जाते रहते हैं, पद वहीं प्रतिष्ठित रहता है ।

—सत्ताधारी बदलते जाते हैं, लेकिन सत्ता अपनी ठौर कायम रहती है ।

हाकम बदळै पण हुकम नीं बदळै । १४६१६

हाकिम बदलता है, पर हुक्म नही बदलता ।

—हाकिम तो आते-जाते रहते हैं, पर उनका फैसला हमेशा के लिए कायम रह जाता है ।

—संसार बदलता रहता है, प्रकृति के नियम नहीं बदलते ।

हाकम सूंक नीं खावै तौ कांईं खावै ? १४६१७

हाकिम रिश्वत नहीं खाये तो क्या खाये ?

—भोजन की तरह रिश्वत भी खाने के लिए ही होती है वरना अधिकारियों का जीवन-स्तर ऊपर नहीं चढ़ सकता ।

—जब रिश्वत खिलाने वाले सर्वत्र मौजूद हैं तो खानेवाले क्यों कमी रखें !

हाक मार्‌यां सूं ईं बावड़ी नीं खुदै। १४६१८

हॉक मारने से ही बावड़ी नहीं खुदती।

—कैसा भी छोटा-बड़ा काम तो करने से ही संपन्न होता है, चिल्लाने से कभी नहीं होता।

—जब पानी जैसा मामूली काम भी पीने से ही गले उतरता है तब कुआँ तो उम्र भर बातें बघारने से नहीं खुद सकता।

पाठ : हाक मार्‌यां सूं ईं बेरौ कद खुदै ?

हाकमी गरम री, नौकरी नरम री, कमाई करम री और लुगाई सरम री। १४६१९

हाकिमी गर्म की, नौकरी नर्म की, कमाई कर्म की और लुगाई शर्म की।

—विभिन्न काम और विभिन्न मनुष्यों के अच्छे-बुरे की मान्यताएँ भी अलग-अलग होती हैं। मसलन हाकिमी सख्ती के बिना नहीं चल सकती, पर नौकरी में सख्ती बिलकुल ही नहीं चल सकती, वहाँ विनम्रता की आवश्यकता है। कमाई भाग्य से होती है—वहाँ सख्ती की रंचमात्र भी नहीं चलती। औरत के लिए शर्म अनिवार्य है, नौकरी में शर्म नहीं चलती।

हाकमी गरमाई री, हाट नरमाई री। १४६२०

हाकिमी गरमाई की, हाट नरमाई की।

दे.क.सं.६५६०

पाठा : हाकमी गरमाई सूं, महाजनी नरमाई सूं।

हाकर खातां दांत पड़े ते हूं करवू पड़े !– भी.७७५ १४६२१

मिश्री खाते दाँत पड़ें तो क्या किया जा सकता है !

—सुख और लाभ के निमित्त यदि कठिनाइयाँ बीच में आएँ तो उनकी परवाह नहीं करनी चाहिए।

—आनंद की खातिर थोड़ा कष्ट भी उठाना पड़ता है।

दे.क.सं.११३४६

हाच वे ते हो को माते ऊं आवे।– भी.७७७ १४६२२

सच्चाई हो तो लोग-बाग सौ कोस से आते हैं।

—पहुँचे हुए महात्मा की सर्वत्र पूछ होती है। लोगबाग दूर-दूर से उसके दर्शनार्थ आते हैं।
—सच्चे ज्ञानी या विद्वान का लोहा सभी मानते हैं।

हाजर नांणौ हाथ में तौ बैरी पूछै बात। १४६२३

हाजिर रोकड़ हाथ मे, बैरी पूछे बात।

—रुपये की महिमा सर्व-विदित है। जिस मनुष्य के पास कौड़ी नहीं, वह कौड़ी का और जिसके पास धन है, उसका सभी आदर करते हैं। यहाँ तक दुश्मन भी उससे दबता है।

हाजर-नाजिर रौ खिलकौ बतावै। १४६२४

हाजिर-नाजिर का तमाशा बताते है।

—आँखों के सामने यह जो अपूर्व सृष्टि है, वह ईश्वर के लिए हाजिर-नाजिर का तमाशा ही है। पता ही नहीं चलता इसका रचयिता कौन है ? इसे चलाने वाला कौन है ?
कोई किसी के साथ अत्याचार करे और उसे देर-सबेर वैसा ही फल मिल जाय तो कहते हैं कि मालिक हाजिर-नाजिर है, उससे कुछ भी छिपा नही। चुपचाप सब देखता है और समय पर अपनी जो इच्छा होती है, वही करता है।

हाजर में हुज्जत कैड़ी ? १४६२५

हाजिर मे हुज्जत कैसी ?

—जो चीज मौजूद है, उसमे मनाही कैसी।
—जो है सो हाजिर है, जब भी इच्छा हो ले पधारें।
—जो चीज हाजिर है, उसके लिए किसी भी परिजन को मना नहीं करना चाहिए।

हाजर में हुज्जत नहीं, गियां री न तलास। १४६२६

हाजिर मे हुज्जत नही, गयो की तलाश नही।

—जो वस्तु घर में मौजूद है, उसके लिए कोई मनाही नही है और जो हाजिर नहीं है, उसे कहीं से लाकर नहीं दिया जा सकता।
—अपने घनिष्ठ मित्र या परिजनों की जरूरत पर इस उक्ति का प्रयोग होता है कि उन्हें घर में हर मौजूद चीज को बिना पूछे लेने का अधिकार है।
पाठा : हाजर में हुज्जत नही, गैर में तलास नही।

हाजर री हांती। १४६२७

हाजिर की हाँती।

—मौके पर जो उपस्थित है, वही लाभ उठा सकता है।

—उचित अवसर पर मौजूद रहने वाला हमेशा लाभ में रहता है।

हाजर सो ई हथियार। १४६२८

हाजिर सो ही हथियार।

—समय पर जो हथियार मौजूद हो वही काम देता है, चाहे पत्थर ही क्यों न हो।

—उपलब्ध वस्तु की ही उपादेयता है।

मि.क.सं.६०५६

हाजरिया पांणी भरै ज्यांरै लाखां ऊपर लेखौ। १४६२९

नौकर जहाँ पानी भरते हैं उनके लाखों का हिसाब है।

—जो बड़े व्यक्ति परिश्रम की गरिमा नहीं जानते और वे छोटे-से-छोटा काम भी नौकरों से करवाते हैं—उनका तो हिसाब ही अलग है। भगवान ही उनका मालिक है।

—जहाँ तक बन पड़े घर का काम स्वयं करना चाहिए।

हाजरिया! भाटौ बधै के बधै हुकम बधै। १४६३०

हाजरिया! पत्थर बढ़ रहा है कि बढ़े हुजूर बढ़े।

—बड़ों की हाँ-में-हाँ मिलाना भी एक विवशता है, चाहे उनकी बातें कितनी ही असंगत, अप्रासंगिक या असंभव ही क्यों न हों।

—जिन व्यक्तियों का जीवन पूर्णतया चाटुकारिता पर ही निर्भर करता हो, उन पर बड़ा पैना कटाक्ष है।

—मजबूरी जो समझौता न कराये, वह थोड़ा है।

हाजरिया! म्हारी काळमी घोड़ी कठै के अंदाता माथै बिराज्या हौ नीं! तौ ई सावचेती वत्ती। १४६३१

हाजरिया! मेरी कालिमी घोड़ी कहाँ कि अंदाता ऊपर बिराजे हैं न? फिर भी सावधानी जरूरी है।

—जरूरत से ज्यादा होशियारी या सतर्कता का दिखावा करने वालों पर कटाक्ष।

—निराधार सतर्कता गफलत की पराकाष्ठा का ही दूसरा रूप होती है। जिसका ज्वलंत उदाहरण भारत की वर्तमान नौकरशाही व नेतागण हैं, जहाँ उन्हें प्रतिक्षण सतर्कता बरतनी चाहिए, उसकी तरफ बरसों तक उनकी निगाह नहीं पहुँचती और इसके विपरीत जिसके लिए उन्हें आँख उठाकर भी देखने की जरूरत नहीं, वहीं वे हरदम आँखें फाड़े चौकसी करते रहते हैं।

पाठा : हाजरिया घोड़ौ कठै के हजूर माथै बिराज्या हौ नीं के थारी हुंस्यारी जोवतौ।

हाजरियौ कठा सूं घोड़ा इनायत करै। १४६३२

हाजरिया कहाँ से घोड़े इनायत करे।

दे.क.सं.१३५३७

हाजा वाळो नागो देखाये, फाटा वाळो नी देखाये।– भी.७७८ १४६३३

वस्त्रों वाला नंगा दिखता है, फटे वस्त्रों वाला नहीं।

—अच्छे वस्त्रों वाला लापरवाही दिखाता है, क्योंकि वह तो पूर्णतया आश्वस्त रहता है कि उसके शरीर पर पर्याप्त कपड़े हैं। इसके विपरीत फटे कपड़ों वाला हरदम सतर्क रहता है कि कहीं वह उघाड़ा नहीं दिख जाय। वह जस-तस शरीर को ढके रहता है।

—जिसके पास बहुत-कुछ है, वह अकसर धोखा खा जाता है और जिसके पास थोड़ा है वह अधिक हिफाजत रखता है।

हाजी रा के गाजी रा कीकर रैसी ? १४६३४

हाजी के या गाजी के क्योंकर रहेंगे ?

—जब दो बड़े व्यक्तियों में परस्पर ठन जाय तब यह अनुमान करना मुश्किल है कि किसका पलड़ा भारी रहेगा ?

—जब किन्हीं दो श्रीमंतों का मामला सुलझता नजर न आये।

हाजी हेरा न लेखा पूरा।– भी.७७९ १४६३५

शाहजी शूरा और लेखा पूरा।

—जब कोई बोहरा जैसे-तैसे आँकड़े मिलाकर किसी असामी का हिसाब पूरा बिठा दे।

—जब कोई बनिया अपनी पुश्तैनी होशियारी के कारण उलटा-सीधा हिसाब करके असामी की चल-अचल संपत्ति पर पूरा कब्जा करले, जिसे राज्य में भी कोई चुनौती नहीं दे सकता।

दे.क.सं.१३८१८

हाट ई भाड़ै अर हवेली ई भाड़ै, पण टाबरियां नै मिठाई खाड़ै। १४६३६

हाट भी भाड़े पर और हवेली भी भाड़े पर, लेकिन बच्चों को मिठाई खिलाते हैं।

—जो व्यक्ति अपना घर देखकर नहीं चलता, उसे अंततः बर्बाद होना ही पड़ता है।

—जो व्यक्ति अपनी हैसियत से अधिक खर्च करता है, वह कामयाब नहीं हो सकता।

हाट नरमाई री, हाकमी गरमाई री। १४६३७

हाट नरमाई की, हाकिमी गरमाई की।

दे.क.सं.६५६०

हाडकां रौ माळौ। १४६३८

हड्डियो का ढाँचा।

—जो व्यक्ति कंकाल का ढाँचा मात्र रह गया हो।

—मरियल व्यक्ति के लिए संबोधन।

हाडकौ खाय गळा रै कुण ई नीं बांधै। १४६३९

हड्डी खाकर गले से कोई नही बॉधता।

—पराई औरत के साथ मौज करने के लिए तो सभी तैयार रहते हैं, पर उसे पत्नी के रूप में स्वीकार कोई नहीं करना चाहता।

—जो व्यक्ति आनंद तो पूरा उठाते हैं, पर उसकी कीमत पूरी नहीं चुकाते।

हाड गळै क्यूं बांधै? १४६४०

हड्डी गले से क्यो बॉधे?

—कोई नासमझ व्यक्ति पराई औरत को घर में रखना चाहे, तब समझदार लोग उसे समझाते हैं कि हड्डी का मॉस खाकर उसे दूर फेंक देना चाहिए, गले में लटकाना ठीक नहीं।

—सिर्फ मौज से वास्ता रखना चाहिए, मौज देने वाली वस्तु से नहीं।

हाड तौ ऊजळा है । १४६४१

हड्डियाँ तो उजली हैं ।

—सगाई-संबंध गरीब से भी कर लो पर वह होना चाहिए कुलीन । वर्ण-संकर से रिश्ता करना उचित नहीं ।

—अच्छे खानदान के लिए संबोधन ।

हाड रह्यां तौ मांस ई आवै । १४६४२

हड्डियाँ रहें तो माँस भी आये ।

—जब कोई व्यक्ति लंबी बीमारी के बाद एकदम मरियल दिखने लगे तो लोग इस उक्ति के द्वारा उसे आश्वस्त करते हैं कि बच गये सो गनीमत है, अब कोई चिंता की बात नहीं, हड्डियाँ रहेंगी तो उन पर धीरे-धीरे मांस भी आयेगा ।

—हताश व्यक्ति को आशा बँधाना बहुत लाभकारी सिद्ध होता है ।

पाठा : **हाड रैसी तौ मांस ई आसी ।**

हाड रौ कांईं लाड, मूंडौ तौ निकेवळौ ई भलौ । १४६४३

हड्डियों से क्या प्यार, मुँह तो सफाचट ही अच्छा ।

दे.क.सं. १०६७६

पाठा : **हाड रौ कांईं लाड, मूंडौ तौ साफ ई आछौ ।**

हाड व्है जठै गाढ़ है । १४६४४

हड्डियाँ हों वहाँ शक्ति होती है ।

—मजबूत हड्डियों पर ही बहुत-कुछ निर्भर करता है ।

—हड्डियाँ हों मजबूत तो न चाहिए और सबूत ।

हाडां री पूछ सराधां में ईं व्है । १४६४५

कौओं की पूछ श्राद्ध-पक्ष में ही होती है ।

—कभी-कभार दुष्ट व्यक्तियों का आदर करना लाजिमी हो जाता है ।

—मौका आने पर दुष्ट आदमी की भी गर्ज करनी पड़ती है ।

हाडां री रांमत में डेडरां री मौत। १४६४६

कौवों के खेल में मेंढ़कों की मौत।

—बड़े आदमियों के खेल में, गरीबों को जब क्षति उठानी पड़े।

—गरीबों की कीमत पर श्रीमंत मौज उड़ाते हैं।

हाडां रै माळै साकर नीं लाधै। १४६४७

कौवों के घोंसलों में शक्कर नहीं मिलती।

—गुड़ की डली तो कौआ चोंच में डालकर ले जा सकता है, पर शक्कर का दाना ले जाने में वह सक्षम नहीं है।

—जिस गरीब के भाग्य में अच्छी वस्तु का योग न जुड़े, तब...।

हाडा कदेई धवळा व्हिया? १४६४८

कौवे कभी सफेद होते हैं?

दे.क.सं. १७१९, २१०६

हाडा नै हांती कुण देवै? १४६४९

कौवे को हाँती कौन देता है।

हाँती = विवाहादि कुछ विशिष्ट अवसरों पर बनने वाले विशिष्ठ खाद्य पदार्थ का वह अंश जो पड़ोसियों, सगे.संबंधियों एवं बंधु-बांधवों में बाँटा जाता है।

—बदमाशों को न्योता कौन देता है, वे तो स्वयं आकर सबसे पहिले खा जाते हैं।

—बदमाश किसी के आमंत्रण का इंतजार नहीं करते।

हाडा! हींगड़ली चितार, कालै री बैपार। १४६५०

कौवे! जरा हींग और कल के दोपहर को तो याद कर!

संदर्भ-कथा: एक था कौवा और एक थी चिड़िया। दोनों में गहरी दोस्ती थी। दूसरे पक्षी कौवे की धूर्तता के बारे में चिड़िया को सावधान करते तो चिड़िया जवाब देती कि कौवों की नालायकी के बारे में वह खूब जानती है। पर यह कौवा थोड़ा भला है। उसे बहिन की तरह मानता है।

कौवे ने अपनी विशेषता जताने के लिए हींग का घर बनाया। खुशबूदार। सभी पक्षी सराहना करते तो कौवा फूला नहीं समाता। पर चिड़िया थी एकदम व्यावहारिक। छोटा-सा

पक्का घर बनवाया। उसमें एक झूला भी रखा। जब इच्छा होती झूलती। कौवे को भी झुलाती। कई बार खाना भी खिलाती। चिड़िया दयालु और उदार थी।

सर्दियों में तो कौवे का घर सुरक्षित रह गया, लेकिन बरसात के पूर्व की उमस से वह धीरे-धीरे पिघलने लगा। एक दिन घनघोर घटाएँ उमड़ीं। मूसलाधार पानी में कौवे का घर पिघलकर कहाँ बह गया, पता तक नहीं चला। कौवे का बुरा हाल। पानी की बौछारों और ठंडी हवा के कारण ठिठुरने लगा। क्राँव-क्राँव की आवाज एकदम पतली हो गई। चिड़िया को धीमे से पुकारा तब भी उसने सुन लिया। घर की खिड़की से ही चहचहाते पूछा, 'क्या बात है मेरे कौवे बीर?' कौवे ने कुछ कहा तो जरूर, पर चिड़िया को सुनाई नहीं दिया। वह उड़कर कौवे के पास पहुँची। हींग का घर एकदम गायब था। भीगा हुआ कौवा बुरी तरह काँप रहा था। चिड़िया तुरंत उसे अपने घर ले आई। अपनी ओढ़नी से पोंछा। चूल्हा जलाकर नमक से उसका सिकताव किया। गरम-गरम दूध पिलाया। कौवे की जान-में-जान आई। चिड़िया का बहुत एहसान माना। लेकिन चिड़िया को चैन कहाँ! भाई के लिए गुड़ का हलवा बनाया। यह कौवे का मन-पसंद भोजन था। बड़े चाव से खाया। नह खुशी से क्राँव-क्राँव करने लगा तब कहीं चिड़िया को धीरज बँधा। अपने इष्टदेव शंकर भगवान को सीरनी चढ़ाई।

अपनी बहिन के घर बड़े मजे से भाई के दिन गुड़क रहे थे। एक दिन चिड़िया ने विशिष्ट पकवान बनाया—खीर और मालपुए। परिंडे में देखा तो पानी नहीं। चारों ओर बरसात का पानी लहरा रहा था। चिड़िया ने फटाफट सभी बासन भर लिए। फिर भाई को आवाज दी। जवाब न मिलने पर उसने सब जगह तलाश की, पर भाई का पता नहीं चला। घबराकर पिछवाड़े देखा—कौवा एक डाली पर रोटी खा रहा था। चिड़िया ने उलाहना दिया, 'जब तुम्हारे लिए खीर और मालपुए बनाये तो यह बासी रोटी क्यों खा रहे हो? मुझे भी जोर से भूख लगी है। जल्दी आओ।'

मगर कौवा वहीं बैठा रहा। चिड़िया ने लाचार होकर रसोई सँभाली तो वहाँ खीर का एक चावल तक नहीं और न मालपुए का कोई टुकड़ा। मौका देखकर शैतान भाई सब चट कर गया। सामान लेने रवाना हुई तो चारों ओर फैले पानी की वजह से जा नहीं सकी। भूख मीठी होती है। अब करे तो क्या करे? कौवे को खाते देखकर उसकी चोंच से लार टपक पड़ी। रिरियाते बोली, 'खीर मालपुए चट कर गया नो कोई बात नहीं। आधी रोटी तो मुझे भी दे, भूख के मारे अच्छी तरह बोला भी नहीं जाता।'

लेकिन कौवे की बोली काफी खुल गई थी। आँख घुमाते हुए बोला, 'कौन से खीर-मालपुए, मैंने तो देखे तक नहीं। बिल्ली चट कर गई होगी ! ध्यान रखना, कहीं तुझे चट नहीं कर जाए।' चिड़िया ने रुँधे कंठ से बहुत आजिजी की, कौवे ने एक टुकड़ा तक उसे नहीं दिया। शायद कल की बात बताने से उसके दिल में कुछ भलाई व्याप्त हो जाय। चिड़िया ने आखिरी अस्त्र फेंका, 'हाडा भाई ! हींगड़ली चितार, कालै री बेपार।' कौवे की स्मरण-शक्ति बहुत कमजोर थी। उसे कुछ भी याद नहीं आया। मजे से रोटी में चोंच मारता रहा। चिड़िया की ओर देखा तक नहीं। तब चिड़िया हैरान होकर सामान लेने उड़ गई।

—कृतघ्न मनुष्य को भलाई की बातें याद दिलाने पर भी याद नहीं आतीं।

—किसी की भलाई करने का नतीजा बहुत बुरा मिले, तब...।

हाडै सूं ईं गोरौ ! १४६५१

कौवे से भी गोरा !

—काले-स्याह व्यक्ति के लिए संबोधन।

—जब किसी काले व्यक्ति का उपहास करना पड़े, तब...।

हाडौ खुड़ावै हंस री हाली ! १४६५२

कौवा चले हंस की चाल !

दे.क.सं.२०९२

हाडौ मोती देवै नीं, चिड़ी रोवती रैवै नीं। १४६५३

कौवा मोती दे नही, चिड़िया रोती रहे नही।

दे.क.सं.२१२९

हाडौ लै डूबौ गिणगौर। १४६५४

हाडा ले डूबा गनगौर।

—यह एक ऐतिहासिक कहावत है। इस कहावत के प्रसंग में महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपने वंश भास्कर, चतुर्थ भाग, सप्तम राशि, एकविंश मयूख में इस प्रकार लिखा है। लेकिन मैंने इसे डॉ. नाथूलाल पाठक द्वारा रचित 'हाड़ौती कहावतें' पृष्ठ संख्या २९७, कहावत संख्या १३०३ से अक्षरशः उद्धृत किया है :

बूंदी के महाराव बुधसिंहजी हाड़ा जयपुर के सवाई जयसिंहजी के जामाता थे तथा औरंगजेब के पुत्र शाह आलम के कृपा पात्र थे। जिन दिनों वे शाही नौकरी पर काबुल गये हुए थे, उनके छोटे भाई जोधसिंहजी हाड़ा, बूँदी का प्रबंध करते थे। एक साल गणगौर के उत्सव के दिन जोधसिंहजी ने गणगौर की सवारी नावों में निकलवाई। बूँदी के बड़े तालाब में वे अपने सुभट, सचिव और अनुचरों के साथ नौका में सवार होकर जल विहार करने लगे। वहीं वेश्याओं का समूह राग के साथ, बाईस श्रुतियों तथा स्वर-तालों के साथ नृत्य-गान कर रहा था। जोधसिंहजी का विवाह उदयपुर के महाराणा के यहाँ हुआ था। उदयपुर से दहेज में प्राप्त 'एकलिंग-प्रसाद' नामक हाथी उसी तालाब पर पानी पीने के लिए आया, उस मदोन्मत्त विशालकाय हाथी ने जब तालाब में नावों को तैरते देखा तो वह बिगड़ उठा और पानी में घुसकर उसने नाव पर आक्रमण कर दिया। जोधसिंहजी के सब साथी शराब में मस्त थे, इसलिए उनसे कुछ भी करते-धरते न बना। केवल एक धाय-भाई ने हाथी पर कटारी से वार किया, किंतु वह असफल रहा। इसी बीच में हाथी ने नाव को उलटकर पानी में डुबो दिया। दैव-योग से कुछ लोग तैरकर बाहर निकल आये। जोधसिंहजी और धाय-भाई को अंतिम साँस लेते हुए पानी के बाहर निकाला गया। धाय-भाई का तो उसी क्षण प्राणांत हो गया। जोधसिंहजी में कुछ प्राण बाकी थे, किंतु चौथे दिन उनके भी प्राण पखेरू उड़ गये और वे परलोक सिधार गये। उसी दिन से यह कहावत चली—हाडा ले डूबा गणगौर अर्थात् जोधसिंहजी हाड़ा की नाव जब डूब गई तो उनके साथ गणगौर भी डूब गई। तब से बूँदी में गणगौर का उत्सव बंद कर दिया गया और तीज का उत्सव मनाया जाने लगा।

—जब किसी निर्दोष को दोषी के साथ क्षति उठानी पड़े, तब...।

—अपराधी के पाप से जब किसी निरपराधी को डूबना पड़े, तब यह कहावत प्रयुक्त होती है।

हात हूरा भांजी ने अेक हूरो गड़्यो है।–भी.७८० १४६५५

सात शूरों को जोड़कर एक सूअर गढ़ा है।

—सूअर के अत्यधिक बल की महिमा इस कहावत में बखानी गई है।

—जो शूरवीर जंगली सूअर के उनमान शक्तिशाली हो।

हाथ ई बळग्या अर होळा ई दुळग्या। १४६५६

हाथ ही जल गये और पूँख भी गिर गये।

—कष्ट पाकर भी जो काम बिगड़ जाय ।

—मेहनत करने के पश्चात् भी जो काम सफल न हो ।

पाठा : हाथ ई बळग्या अर पूंख ई हुळग्या ।

हाथ करै सो हाथ सोहै पग करै सो पग । १४६५७

हाथ करे सो हाथ सोहे पॉव करे सो पॉव ।

—हाथ के काम की अपनी शोभा है और पॉव के काम की अपनी शोभा है ।

—शरीर के प्रत्येक अंग का अपना-अपना काम है और अपनी-अपनी महिमा है ।

—शरीर के अंगों की नाईं प्रत्येक व्यक्ति का भी स्वतंत्र अस्तित्व है और उसकी अंतरात्मा का अलग-अलग आलोक है ।

हाथ कर्‌यौ जांणै होम रौ डोयल्यौ व्है ज्यूं । १४६५८

हाथ किया है मानो होम का डोयला हो जैसे !

—टूटे हाथ वाला व्यक्ति जब डींग मारे तब उसे चुप कराने के लिए ..।

—भद्‌दे हाथ की ओर इशारा ।

हाथ कांकण नै दरपण री कांईं दरकार ? १४६५९

हाथ कंगन को दर्पण की क्या दरकार ?

—हाथ में पहिने हुए कंगनों को देखने लिए काच की जरूरत नहीं रहती । जब जी चाहा हाथ उठाकर ऑखों से प्रत्यक्ष देख लिया ।

—प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं रहती ।

पाठा : हाथ मठरिया नै आरसी कैड़ी ? हाथ मे गैणौ तौ काच री काई जरूरत !

हाथ कांम अर मुख रांम । १४६६०

हाथ से काम और मुँह से राम ।

—काम छोडकर अलग से राम का जाप करने की जरूरत नहीं है । हाथ से काम करो और मुँह से राम का नाम लो । बातचीत करने और भाषण देने के समय ही तो मुँह काम में आता है ।

—परिश्रम करते हुए राम का नाम लेना ज्यादा अच्छा है ।

हाथ गवूमुखी में अर मन कपट री कोथळी में। १४६६१

हाथ गोमुखी में और मन कपट की झोली में।

—पाखंडी व्यक्ति पर कटाक्ष जो मन से कपटी व धूर्त होते हुए भी दिखावा सज्जन का करे।

—जिस व्यक्ति की कथनी और करनी में जमीन आसमान का अंतर हो।

हाथ छोड खुणी कुण चाटै ? १४६६२

हाथ के बदले कोहनी कौन चाटे ?

—कोहनी पर शहद या गुड़ भी चिपका हो तो उसको सीधे मुँह से चाटना बहुत मुश्किल है। तब ऐसा व्यर्थ प्रयास ही क्यों करना चाहिए, जब हाथ में रखी चीज को अच्छी तरह खाया जा सकता है।

—टेढ़े काम की बजाय सीधा काम करना आसान है और सुविधा-जनक भी।

—हथेली के प्रत्यक्ष लाभ को छोड़कर व्यर्थ की आशा के पीछे भागना नीति-सम्मत नहीं है।

हाथ जांणै पंजाळी रौ लोडण व्है ज्यूं। १४६६३

हाथ मानो पंजाली का लोडन हो।

पंजाळी = पंजाली = चड़स खींचते समय बैलों की गरदन पर पहिनाया जाने वाला जुआ विशेष। उसके नीचे लोडण नाम का उपकरण जो काफी मजबूत होता है।

—जिस व्यक्ति के हाथ बहुत मजबूत हों, उसके लिए यह उपमा दी जाती है।

—जिस व्यक्ति की भुजाएँ लंबी और पुष्ट हों।

हाथ तळै सो हारसी। १४६६४

जिसका हाथ नीचे, वह हारेगा।

—जिस व्यक्ति की प्रवृत्ति ही माँगने की है, वह जीवन में कभी उन्नति नहीं कर सकता।

—जिसका हाथ नीचे है, वह ऊँचा मुँह नहीं कर सकता।

—जहाँ तक संभव हो हर व्यक्ति को परजीवी होने की बजाय स्वावलंबी होना चाहिए।

हाथ तौ दोनूं ई भेळा धुपै। १४६६५

हाथ तो दोनों ही साथ धुलते है।

दे.क.सं.६८२२

हाथ दियां हंगार थोड़ौ ई ढबै। १४६६६

हाथ देने से हाजत थोड़े ही रुकती है ।

—जो काम संभव नहीं,उसके लिए प्रयास ही नहीं करना चाहिए।

—प्राकृतिक कर्म को रोकने की चेष्टा करना ही व्यर्थ है ।

—जिस काम में देरी नहीं खटती,उसे अविलंब करना चाहिए,देर करना घातक है ।

—पेट बॉधने से भूख शांत नही होती ।

हाथ धोया, ऊजळा होया। १४६६७

हाथ धोये, उजले होये ।

—शौच के बाद अच्छी तरह हाथ धोने से गदगी मिट जाती है तो पाप-कर्म भी धुल जाने चाहिएँ।

—धोने से हाथ उजले हो जाते हैं,मन नही होता। मन तो सत्कर्मो से ही उजला होता है ।

हाथ नै हाथ खाय। १४६६८

हाथ को हाथ खाता है ।

—जब भाई-ही-भाई के विरुद्ध हो जाय ।

—जब परिजन ही कष्ट देने को आमादा हो जाएँ तो फिर किससे आशा की जाय ?

—परिजनों से बड़ा दुश्मन और कोई नहीं होता।

हाथ पग वाडो, राम बाण्ने काडो।–भी ७८१ १४६६९

हाथ पैर काटो, राम को बाहर काढ़ो ।

काढो = निकालो ।

मदर्भ-कथा : एक भील दपती में परस्पर बहुत प्रेम था। गॉव वाले कभी-कभार परिहास में राम-सीता की जोड़ी कहकर उन्हें खिजाया करते थे। पति की बजाय पत्नी का प्रेम काफी बेशी था। परपरागत संस्कारों की वजह से। औरत तो पुरुष के पॉव की जूती होती है। जूती को ज्यादा प्यार करना ठीक भी नहीं। दूसरी ओर पति स्त्री के लिए राम तुल्य है,उसके चरणों की दासी है। ये सामाजिक मान्यताएँ भी आंतरिक भावनाओं को काफी प्रभावित करती हैं। सामाजिक प्रचलन से भी असंपृक्त नहीं रहा जाता। बूढी औरतों की देखादेख वह भी पति मे पहिले कभी खाना नहीं खानी थी,चाहे कितनी ही अबेर हो जाय।

आदिवासियों की जैसी जीवन प्रणाली होती है, उसके अनुसार दोनों का जीवन संतोष की वजह से सुखी ही था। नाच, गान और स्वतंत्रता के साथ दिन भी थिरकते हुए बीत रहे थे कि अचानक भाग्य को छेड़खानी की सूझी। पति को सत्ताईस दिन का निकाला (अंतरज्वर) निकल गया। रात को सिर-दर्द और बेचैनी। अन्न की दूर से बदबू आती तो उसे कौर तोड़ने के पहिले उबकाइयाँ शुरू हो जातीं। दिन-ब-दिन शरीर छीजता गया। जब राम खाना नहीं खाये तो सीता क्योंकर खाती? लेकिन कुटुंब और गाँव की औरतों ने उसे जबरदस्ती खाना खिलाया। रुचि के बिना वह जितना खा सकती, खा लेती। पति को भूखे देखकर उसे बड़ा दुख होता। उसे इस बात का भी पछतावा कम नहीं था कि वह तो खाना गटक रही है और उसका राम भूखा है। एक दिन उससे रहा नहीं गया तो उसने खिचड़ी बनाई। उसमें थोड़ा घी भी डाला। बार-बार अपनी कसमें दिलाकर उसने जस-तस पति को खिचड़ी खिला दी। दूसरे दिन बीमार की हालत बिगड़ गई और बिगड़ती ही गई। आखिर रोगी के मरने पर ही उसकी यातना खूटी। पत्नी लाश पर पछाड़ें खाती जोर-जोर से रोने लगी। कपाल पर मिट्टी का 'करवा' मारकर उसने खून निकाल लिया। तब घर की औरतों ने उसके हाथ पकड़ लिए। फिर वह सती होने के लिए हठ करने लगी। दूसरा कोई चारा न देखकर घरवालों ने उसके हाथ-पाँव कसकर बाँध दिये। पेट में सात महीने का गर्भ था। मुँह खुला रहने के कारण उसने गगन-भेदी चीत्कारों में कोई कसर नहीं रखी। पति तो कई अभागी औरतों के मरते हैं, पर ऐसा रोना-धोना व चिल्लाना अब तक नहीं सुना।

उसका रोना तब रुका जब उसने अर्थी के निकास हेतु सँकड़े दरवाजे को तोड़ने की खातिर लोगों को औजारों की तलाश करते देखा। घर की सही हालत उसके अलावा कोई नहीं जानता था। बच्चे के जन्म पर 'सुवावड़' की बात तो दूर, रोटी बनने का भी जुगाड़ नहीं था। पति की बीमारी में वैद्य ने चाँदी की कड़ियाँ लेने के बाद ही इलाज शुरू किया था। वह वैद्य नहीं साक्षात् यमराज का ही प्रतिरूप था। आस-पास के इलाके में उसकी वैसी ही प्रतिष्ठा थी। क्रूर और लालची होते हुए भी उसके हाथ में यश था। मरते हुए परिजन को बचाने के लिए लोगों को उसकी शरण में जाना ही पड़ता। जब सीता ने दरवाजे पर हथौड़े की चोट सुनी तो उसका चिल्लाना एक-दम बंद हो गया। घर की दयनीय हालत और प्यार की भावना में जबरदस्त ठन गई। आखिर उस द्वंद्व की सहज परिणति यह हुई कि प्रीत को घुटने टेकने पड़े। हाथ-पॉव बँधी हुई सीता चिल्लाई—दरवाजा मत तोड़ो। राम के हाथ पाँव काटकर उसे

बाहर निकाल लो। भले-मानुसो मेरा दरवाजा मत तोड़ो, मैं इसे उम्र भर ठीक नहीं करवा सकूँगी।'

उसकी बात तो दिन के उजाले की तरह साफ थी। लेकिन उस कुवेला में साफ होना ही काफी नहीं था। मानव-समाज की कई मान्यताएँ सच्चाई का उल्लंघन कर जाती हैं। सीता चिल्लाते-चिल्लाते बेहोश हो गई। मर्यादा की रक्षा हेतु मोतबरों ने दरवाजा चौड़ा किया और राम की अर्थी बाहर निकाली।

—औरत की आर्थिक मजबूरी कोई नहीं देखता, उसकी कृतघ्नता पर ही सबकी नजर केंद्रित रहती है।

—औरत की मजबूरियों को ईश्वर भी अनदेखी करता है, फिर पुरुष का तो कहना ही क्या?

हाथ पग हिलायां टाळ कीं नीं होवै। १४६७०

हाथ-पाँव हिलाये बिना कुछ नहीं होता।

—कुछ-न-कुछ काम किये बिना निर्वाह हो ही नहीं सकता।

—निकम्मे बैठने या आराम करने से पार नहीं पड़ता।

—उद्‌यम के बिना मनुष्य का जीवन व्यर्थ है।

हाथ-पगां री आंगळियां ई सारीसी नीं व्है। १४६७१

हाथ-पाँवों की अँगुलियाँ भी बराबर नहीं होतीं।

—सभी मनुष्य क्या बुद्‌धि में, क्या ताकत में और क्या गुणों में एक समान नहीं होते।

—जिस प्रकार मनुष्य की शक्ल-सूरत नहीं मिलती, उसी प्रकार उनके स्वभाव भी नहीं मिलते।

—मनुष्य और प्रकृति में जो वैविध्य है, उसे समान करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। अँगुलियों के वैविध्य को मिटाकर उसे समान करने की धृष्टता समाज के लिए बहुत घातक है।

हाथ पड़ै सो ई हथियार। १४६७२

हाथ आये वही हथियार।

दे.क.सं.६०५६

हाथ पसारणा बिचै पग पसारणौ आछौ । १४६७३

हाथ पसारने की बजाय पाँव पसारना अच्छा ।

—माँगने की बजाय,मरना श्रेयस्कर है ।

—जिसका हाथ नीचे है,उसका सिर कभी ऊँचा नहीं हो सकता ।

—किसी से कुछ माँगने पर जो हीन भावना पैदा हो जाती है,वह हरदम कोंचती रहती है ।

हाथ पांणी लीधां पछै कांई खोटा धंधा छूट जावै । १४६७४

संकल्प लेने पर क्या बुरे काम छूट जाते हैं ।

—अच्छे कर्म करने की बजाय बुरे कर्म करना मनुष्य का नैसर्गिक स्वभाव है,उसे कृत्रिम तरीके से नियंत्रित करना संभव नहीं ।

—यदि संकल्प करने मात्र से मनुष्य सुधर सकता तो आज सारी दुनिया ही स्वर्ग बन जाती ।

—सहज भाव से अपने-आप कोई दुष्प्रवृत्ति छूट जाय तो कोई बात नहीं पर थोथे संकल्पों से उसको जकड़ना उचित नहीं,अनुरूप मौका मिलने पर वह ज्यादा भभकती है ।

हाथ पोलौ , जगत गोलौ । १४६७५

हाथ पोला, जगत गोला ।

—हाथ खुला है तो सभी उसके साथ बँध जाते हैं,उसकी सेवा करने को तैयार हो जाते हैं ।

—जिसके हाथ से रुपया पारे के उनमान फिसलता है,उससे दुनिया चिपकती है ।

—रुपये का जादू राम से बढ़कर है,सोच-समझकर उछालो तो दुनिया पाँव चूमने लगती है ।

हाथ फेर्‌यां सूं माखण कद निकळै ? १४६७६

हाथ फिराने से मक्खन कब निकलता है ?

—कोई भी काम सुगमता या आसानी से संपन्न नहीं होता,उसके लिए अथक परिश्रम की आवश्यकता है ।

—यथायोग्य और पर्याप्त साधनों के बिना कोई भी कार्य सफल नहीं हो सकता ।

हाथ-बसू सो कांम रौ , सोवनी लंका अलंघां आंतरै । १४६७७

हाथ लगे वह काम का, सोने की लंका बहुत दूर है ।

—जो हाथ में आये वही पैसा काम का है, दूर की आशाओं के भरोसे निराशा ही हाथ लगती है।

—जो मौजूद है, वही उपयोगी है, दूर की वस्तुएँ या धन अपना होते हुए भी व्यर्थ है।

—वक्त पर जो चीज काम न आये वह क्या काम की?

दे.क.सं. २७००, ६०५६

पाठा : हाथ-बसू सो कांम रौ, सोना री लंका अळगी भांय।

हाथ मांयली खोसीजै, पण करमां हंदी कुण खोसै? १४६७८

हाथ से छीनी जा सकती है, पर भाग्य से कौन छीने?

—जो वस्तु हाथ में है उसे छीनना संभव है, लेकिन जो भाग्य में है, उसे भला कौन छीन सकता है।

—घर में चोरी हो सकती है, डाका पड़ सकता है, पर भाग्य को कोई नहीं लूट सकता।

पाठा : हाथ मांय सूं खोसै, पण करम मांय सूं नीं खोसीजै।

हाथ मांयलौ तीतर, कांकड़ रै सौ तीतरां सूं वत्तौ। १४६७९

हाथ वाला तीतर, जंगल के सौ तीतरों से बेहतर।

—जो चीज या पैसा पास में हो वही उपयोगी है, दूर की मृगमरीचिका पर निर्भर नहीं रहा जा सकता।

—जो मौजूद है, वह सोना है और दूर का सोना भी धूल के समान है।

—वास्तविकता पर ही विश्वास करना चाहिए, आशाओं के भरोसे निर्वाह नहीं होता।

हाथ मीठौ के हाट मीठी? १४६८०

हाथ मीठा कि हाट मीठी?

—खरीदने की इच्छा और हाथ में पैसा हो तो दुकान से गुड़, शक्कर, मिश्री, शर्बत व शहद खरीदा जा सकता है, वरना ये सारी वस्तुएँ दुकान में ही सजी रहती हैं, उन्हें टुकुर-टुकुर देखते भर रहो, उससे मुँह मीठा नहीं होता।

—संपन्न व्यक्ति खर्च करे, तभी घर में पकवान बनते है, वरना उनके नाम भले ही याद करते रहो।

पाठा : खरचियां तेवड़ सुधरै ।

हाथ में किसी चूड़ी पैरयोड़ी है । १४६८१

हाथ में कौनसी चूड़ियाँ पहिन रखी हैं ।

—मौके पर पुरुष कायरता दिखाये, तब उसे उत्साहित करने के लिए यह उक्ति बड़ी कारगर सिद्ध होती है ।

—मौका आये तो मर्दानगी दिखानी चाहिए, औरतों की तरह असहायता जाहिर करना शोभनीय नहीं है ।

हाथ में झोळी पण घालवा वाळी बोळी, अेक नटसी तौ अेक पटसी । १४६८२

हाथ में झोली पर डालने वाली बहरी, एक मना करेगी तो एक डालेगी ।

—भीख की पुकार तो भिखारी करते ही हैं, पर उस समय जाने क्यों घरवाले सभी बहरे हो जाते हैं, कोई सुनता ही है । किसी के मन में राम जागता है तो भिक्षा मिल जाती है । भिक्षा का काम है ऐसा ही, कोई देता है तो कोई मना करता है ।

—भिखारी को निराश होना पोसाता नहीं ।

हाथ में भालौ अर पेट में खटाळौ । १४६८३

हाथ मे भाला और पेट में खटाला ।

—इस कहावत में तुकबंदी की रचना ही प्रमुख है, फिर भी कुछ-न-कुछ भाव-प्रवणता भी है । यों दिखाने के लिए हाथ में भाला मौजूद है, पर भीतर उतना पौरुष नहीं, जिससे हाथ का भाला सार्थक हो सके ।

—जो व्यक्ति काम करने का दिखावा तो करे, पर मन में उत्साह की कमी हो, तब... ।

हाथ में माळा अर पेट में कुदाळा । १४६८४

हाथ में माला और पेट में कुदाला ।

—पाखंडी व्यक्ति का ऐसा ही चरित्र होता है । उसके मन में कुछ और, उसके होंठों पर कुछ और ।

—जो ढोंगी व्यक्ति दिखाने के लिए हाथ में माला रखे, पर वास्तव में उसके भीतर कपट के कई रूप होते हैं ।

पाठा : हाथ में माळा अर पेट में जाळा।

हाथ में मूसळ, पड़ै जठै ई खेम खूसळ ! १४६८५

हाथ में मूसल, पड़े वही क्षेम-कुशल !

—मूसल धन-धान्य का प्रतीक है, ओखली में अनाज के ऊपर बजता रहे तो घर में सब आनंद-मंगल है।

—यदि दिल में शक्ति और साहस हो और हाथ में उपयुक्त शस्त्र हो तो जहाँ वार करे वहीं सफलता निश्चित है।

हाथ में लाठी, उणरौ ई घोड़ौ अर उणरी ई काठी। १४६८६

हाथ में लाठी, उसीका घोड़ा और उसीकी काठी।

दे.क.सं.५१२३

हाथ में लियौ कांसौ तौ मांगण में कांई सांसौ ! १४६८७

हाथ मे लिया खप्पर तो मॉगने मे कैसा डर !

—जब सामाजिक मर्यादा ही छोड़ दी तो नीच काम करने में कैसा सकोच ?

—जब रिश्वत के लिए हाथ आगे कर दिया तो फिर ग्रहण करने में कैसी हिचक ?

—जब कसब कमाना ही शुरू कर दिया तब जात-पॉत का कैसा भेदभाव ?

हाथ में सुमरणी अर खाख में कतरणी। १४६८८

हाथ में सुमरनी और बगल मे कतरनी।

कतरणी = कतरनी = कैंची।

दे.क.सं.१४६८४

पाठा : हाथ सुमरणी, पेट कतरणी।

हाथ राखण री ठौड़ चाहीजै। १४६८९

हाथ रखने की ठौर चाहिए।

—कहीं मामला कुछ जमता नजर आये तो बाद में सब सॅभाला जा सकता है।

—शुरुआत में किमी का सहयोग मिल जाय तो बाद नें कोई दिक्कत नहीं।

—काम करने या जमने का कोई मौका तो मिले।

हाथ री अंवेर वत्ती है। १४६९०

हाथ की सॅभाल बेहतर है ।

—दूसरों से काम करवाने की बजाय अपने हाथ से काम करना अच्छा है ।

—अपने हाथ से काम करने का सुख ही दूसरा है ।

—अपने पर निर्भर किया जा सकता है, दूसरों पर नहीं ।

मि.क.सं.९५६

हाथ री खाज, हाथ सूं ई भागै। १४६९१

हाथ की खुजली, हाथ से ही मिटे ।

—अपना काम स्वयं करने से ही वास्तविक संतोष होता है ।

—अपनी गर्ज के लिए अपने को ही काम करना पड़ता है ।

पाठा : हाथां खिणियां टाळ खाज नी भागै ।

हाथ री चीस सूं गधा रौ पेट फूटै। १४६९२

हाथ की शूल से गधे का पेट फूटे ।

—अपने कष्ट निवारण हेतु, जब दूसरों को कष्ट देना पड़े, तब...।

—अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए दूसरों को बड़ी क्षति पहुँचाना ।

हाथ रै आळस मूंछ मूंडा में जावै। १४६९३

हाथ के आलस्य से मूँछ मुँह में जाती है ।

—बेमिसाल आलसी पर कटाक्ष जो कुछ भी काम नहीं करना चाहे तो न करे। पर मामूली हाथ हिलाने पर मूँछ के बालों को मुँह में जाने से रोका जा सकता है, पर इस काम में भी उसे आलस्य आता है ।

—जो व्यक्ति मुँह पर बैठी मक्खी तक नहीं उड़ा सके, उससे किसी काम की आशा रखना ही व्यर्थ है ।

पाठा : हाथ रै आळस मूंछ मूंडा में वळै ।

हाथ रौ कांम हाथां कीजै। १४६९४

हाथ का काम हाथों से करना चाहिए ।

—अपने हाथ से काम करने का संतोष ही दूसरा है।

—दूसरों के द्वारा काम करवाने से काम तो हो जाता है, पर वैसी तृप्ति नहीं होती जो अपने हाथ से करने पर होती है।

दे.क.सं.९५६

हाथ रौ गास, बैकूंठ रौ वास। १४६९५

हाथ का ग्रास, बैकुंठ का बास।

—अपने हाथ की खरी कमाई का कौर खाना, बैकुंठ के निवास जैसा आनंद-दायक होता है।

—अपने हाथ का कौर किसी दूसरे के मुँह में देना भी महापुण्य है।

—अपने हाथ से दान करने की अनिवर्चनीय अनुभूति का कोई मुकाबला नहीं।

—पास में अन्न है तो सब ठाट-ही-ठाट है।

—अपने हाथ से पकाये भोजन का स्वाद ही अपूर्व होता है।

हाथ रौ दियौ आडौ आवै। १४६९६

हाथ का दिया काम आता है।

—अपने हाथ से चाहे जितना खर्च करलो, वह साथ नहीं चलता। साथ केवल अपने हाथ से किया हुआ पुण्य ही चलता है।

—अपने हाथ से कुछ देना ही सर्वोपरि महत्त्व की बात है क्योंकि वही अंत समय में संतोष देता है।

हाथ रौ भाटौ अर मूंडै रा बोल। १४६९७

हाथ का पत्थर और मुँह के बोल।

—जो छूट गये सो छूट गये, इन्हें वापस लौटाया नहीं जा सकता।

—इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह मनुष्य की पवित्र देह पर वार करने से पहिले, दस बार सोचे और अपनी वाणी पर जबरदस्त नियंत्रण रखे।

पाठा : हाथ सूं छूट्यौ भाटौ अर मूंडै छूट्यौ बोल पाछौ नीं आवै !

हाथ रौ राच, पेट रौ मांन। १४६९८

हाथ का औजार, पेट का मान।

—हाथ में उपयुक्त उपकरण हो और काम करने की योग्यता हो तो पेट की मर्यादा अपने आप रह जाती है।

—अपने हाथ की कमाई खाने से ही पेट का मान रहता है, इसके विपरीत दूसरों का माल उड़ाने से भूख तो मिट जाती है, पर पेट का मान नहीं रहता।

हाथ रौ हजूर। १४६९९

हाथ का हुजूर।

—हाथोंहाथ किसी भी काम को अच्छी तरह संपन्न करना।

—जो व्यक्ति याद करते ही उपस्थित हो जाय, जैसे पास ही खड़ा हो।

हाथळ भाळी ने हूकू नाक खणाड़ दू।– भी.७८२ १४७००

जंघा दिखाकर सूखा चौक खुदवाया।

--किसी स्त्री के कृत्रिम प्रेम से ललचाकर जब कोई व्यक्ति धोखा खा जाय, तब...।

—मुस्कराकर या झूठे हाव-भाव दिखाकर अपने जाल में फँसाने वाली औरत पर व्यंग्य।

हाथ लुळियौ जकौ ई आछौ। १४७०१

हाथ झुका वही बेहतर।

संदर्भ-कथा : एक मुस्टंड साधु सवेरे-सवेरे हाथ में बड़ी चरी लेकर बस्ती में घर-घर आटे के लिए घूमता। एक घर की चौधराइन के अलावा उसे कोई मना नहीं करता। फिर भी वह बिना नागा उसके घर भी फेरी लगाता। चौधराइन उसे बहुत भला-बुरा कहती, 'पाँच आदमियों जितना काम करे जैसा मुस्टंडा है, भीख माँगते लाज नहीं आती। तेरी खातिर खेतों में पसीना नहीं बहाते? अनाज का एक-एक दाना हमारे खून से पैदा हुआ है। सो तुझे पिसा-पिसाया आटा डाल दें? खबरदार, जो मेरे घर की ओर मुँह किया तो दाँत तोड़ दूँगी। मुझे निठल्ले आदमी से कुत्ते जैसी घिन है।'

पर ठंडे दिमाग वाले साधु ने उसके कहने का कुछ भी बुरा नहीं माना। दूसरे दिन सबसे पहिले वह उसीके घर गया। चौधराइन बाहर के आँगन में फूस निकाल रही थी। गुस्से में झाड़ू फेंका तो पीठ पर थोड़ी लगी। साधु झाड़ू हाथ में लेकर उसे देने की खातिर आगे बढ़ा। चौधराइन ने झाड़ू वापस तो ले लिया पर कहा कुछ भी नहीं। साधु चुपचाप लौट गया।

साधु भी जिद्दी कम नहीं था। भीख माँगना उसका धर्म था। धर्म के मार्ग में कठिनाइयाँ तो आती ही हैं। इतनी जल्दी हार कैसे मान लेता? अगले दिन तीन घड़ी दिन चढ़े, उसने चौधराइन के खुले दरवाजे पर खड़े होकर आवाज दी, 'बाई! आटा डालना तो!' आवाज की भनक कानों में पड़ते ही चौधराइन समझ गई कि वही निर्लज्ज साधु है। इस बार उसे सबक सिखाना ही होगा कि आइंदा इस रास्ते पर भी नहीं आये। चूल्हे के पास बैठी सोगरे बना रही थी। आग-बबूला होकर बाहर आई। सामने ही एक गोल पत्थर पड़ा था। उसे उठाने के लिए झुकी तो साधु ठट्ठा मारकर हँसा। चौधराइन ने पत्थर तो उतावली में उठा लिया, पर फेंका नहीं। वह हतप्रभ-सी वहीं खड़ी रही। साधु उसी तरह हँस रहा था। उसने पत्थर को कसकर मुट्ठी में पकड़ा। पूछा, 'मैंने तो तुझे मारने के लिए ही पत्थर उठाया और तू निर्लज्ज की तरह दाँत निकाल रहा है?'

साधु ने उसी तरह मुस्कराते कहा, 'जब मन में खुशी होती है तो होंठों पर हँसी आ ही जाती है।'

'खुशी? खुशी किस बात की? सिर फूटने की?'

'नहीं, सिर तो अभी सलामत है। मुझे तुम्हारा हाथ झुकने की खुशी हुई है। आज पत्थर के लिए झुका तो कल आटे के लिए भी झुकेगा। बस, आदत पड़नी चाहिए। मनुष्य के जीवन में आदत ही तो सब कुछ है।' इतना कहकर वह मुस्कराते हुए रवाना हो गया। कोई पाँच सातेक कदम आगे बंढ़ा होगा कि पीछे से आवाज सुनाई पड़ी, 'थोड़ा रुकिये। मेरी आदत तो एक ही बार में बदल गई।' वह जल्दी से रसोई के भीतर गई। उतनी ही बड़ी चरी में आटा भरकर लाई और सारा आटा साधु की चरी में खाली कर दिया।

—भिखारी को रूठना नहीं पोसाता।

—धैर्य का फल मीठा होता है।

—आदत तो जैसी पटको, वैसी ही पड़ जाती है।

पाठा: आज भाटा सारू हाथ लुळियौ तौ कालै आटा सारू ही लुळैला।

हाथ सूं उत्तर देवणौ, मूंडा सूं नीं। **१४७०२**

हाथ से उत्तर देना, मुँह से नहीं।

—किसी भी व्यक्ति को मुँह से मना करने की बजाय हाथ से कुछ-न-कुछ देकर विदा करना चाहिए।

—जो आशा करके आया है, उसे खाली हाथ लौटाना उचित नहीं।

हाथ सूं दीन्हौ दूध जैड़ौ। १४७०३

हाथ से दिया दूध जैसा।

—अपने हाथ से चुराई चीज कुत्सित है, लेकिन वही वस्तु जब दूसरे के दवारा दी जाती है तो वह धारोष्ण दूध की नाई पवित्र हो जाती है।

—अपनी इच्छा से दी हुई चीज का बहुत महत्त्व है, उसे निःसंकोच ग्रहण करना चाहिए।

हाथ सूं हाथ अर पग सूं पग नेड़ौ। १४७०४

हाथ से हाथ और पॉव से पॉव नजदीक।

—अपने कुटुंब में सभी मदस्य एक दूसरे के आत्मीय होते हैं।

—अपने परिवार और ससुराल के रिश्तों की अपनी-अपनी मर्यादा होती है।

हाथ सूं हाथ नीं वढीजै। १४७०५

हाथ से हाथ नही काटा जाता।

—अपने सगाई-संबंध के लिए व्यक्ति स्वयं न जाकर दूसरे परिजनों को भेजता है। ऐसा काम करते खुद को लज्जा या संकोच महसूस होता है।

—जिस प्रकार खुद का हाथ खुद से नहीं काटा जाता, उसी प्रकार कुछ कामों की ऐसी ही मर्यादा होती है, जो स्वयं से संभव नहीं होते।

हाथ सूखौ अर टाबर भूखौ। १४७०६

हाथ सूखा और बच्चा भूखा।

—बच्चे की भूख का क्या, उधर खाना खाकर हाथ धोया और उधर भूख लगी।

—बच्चे दिन भर चंचलता के वशीभूत इधर-उधर दौड़ते-कूदते हैं, इसलिए उन्हें जल्दी भूख लग जाती है।

पाठा : होठ सूखौ अर टाबर भूखौ।

हाथ सूखौ अर फकीर भूखौ। १४७०७

हाथ सूखा और फकीर भूखा।

—घर-गृहस्थ वाला तो पूर्णतया आश्वस्त होता है कि जब भी इच्छा होगी या भूख लगेगी, अपने घर में खाना तैयार मिलेगा। पर फकीर या भिखारी तो इस तरह आश्वस्त नहीं हो सकता। इसलिए उनकी मानसिक क्षुधा कभी मिट ही नहीं सकती। उन्हें हरदम खाने की ही चिंता लगी रहती है। जब भी खाना मिलता है, खा लेते हैं। इनके लिए खाने का बँधा-बँधाया समय नहीं होता।

हाथ हाथ नै खावै। १४७०८

हाथ हाथ को खाये।

—जब भाई या अन्य परिजन एक दूसरे से लड़ने को आमादा हों, तब...।

—जब खून के रिश्तेदार ही एक-दूसरे के प्राण लेना चाहते हों।

—पारिवारिक कलह।

हाथ हिलै तौ बेली बोलै। १४७०९

हाथ हिले तो मित्र बोले।

—कुछ देने के लिए हाथ हिलता रहे तब तक मित्र साथ देते हैं, ज्यों ही हाथ खिंचा और दोस्त दूर हुआ।

—स्वार्थी दोस्तों पर कटाक्ष जो मतलब पूरा हो तब तक ही दोस्ती निभाते हैं, अन्यथा मुड़कर मुँह ही नहीं दिखाते।

हाथां कमाया कांमड़ा, किणनै दीजै दोस। १४७१०

हाथ से किया कबाड़ा, किसको दीजे दोष।

दे.क.सं.८३५

पाठा: हाथां कमाया कांमड़ा, दई न दीजै दोस। काजीजी री पालड़ी, कांदा लीन्हा खोस॥
आप कमाया कांमड़ा, किणनै दीजै दोस। खोजीजी री पालड़ी, कांदा लीन्हा खोस॥

हाथां करनै माथौ मांडै। १४७११

अपने हाथों सिर पर ले।

—जो व्यक्ति जान-बूझकर स्वयं अपना नुकसान करे।

—जो व्यक्ति अपनी इच्छा से दूसरों की बेगार अपने जिम्मे ले।

हाथां करनै होळी रम्या। १४७१२

अपने हाथो से होली खेले।

—जिस फसाद के लिए सारे संबंधित व्यक्ति जिम्मेदार हों।

—जो व्यक्ति पहल करके उत्पात मचाएँ, उनके लिए।

हाथां करम फोड़ै तौ बीजौ कुण कारी लगावै ? १४७१३

हाथ से सिर फोड़े तो दूसरा क्या इलाज करे ?

दे क.सं.१०१०५

पाठा : हाथां करनै माथौ फोड़ै, जिणरौ कुण कांई करै !

हाथां करै सो ई कांम। १४७१४

हाथ से करे वही काम।

दे क सं.९५६

हाथां कीधौ, हाथां लीधौ। १४७१५

हाथ से किया, हाथ से लिया।

—जैसा काम किया, वैसा ही फल मिला।

—अपनी करनी के अनुसार ही फल मिलते हैं।

—जो हाथ मे पेड़ बोया है, उसीके तो फल हाथ लगेंगे।

हाथां चीरौ कद लागै। १४७१६

अपने हाथ से चीरा नही लगता।

—अपने हाथ से अपना नुकसान भला कौन करना चाहता है ?

—सभी लोग अपने भले के लिए ही काम करते हैं, कोई अजाने नुकसान हो जाये तो बात दूसरी है, वरना अपने को क्षति पहुँचाने वाला काम कोई नहीं करता।

हाथां दीजै, दुस्मीं कीजै। १४७१७

हाथ से दीजे, दुश्मन कीजे

—यदि आपका कोई दुश्मन न हो तो उधार देकर प्रत्यक्ष परिणाम देख लो—जिसे उधार दोगे वही आपका दुश्मन हो जाएगा। रुपया लेते समय तो अच्छा लगता है, पर देते समय अच्छा नहीं लगता। अच्छा न लगने पर कहा-सुनी हो ही जाती है। बस, दुश्मनी के लिए इतना बहाना काफी है।

हाथां-पगां दीया बळै पूंद गीत गावै। १४७१८

हाथों-पाँवों में दीये जले, गुदा गीत गाये।

—हाथों और पाँवों दीये जलें तो न हाथ शांत रह सकते हैं और न पाँव। उन्हें हिलाये बिना चैन नहीं मिलता।

—अत्यंत चंचल व बदमाश लड़के के लिए जो पल भर भी ऊधम किये बिना नहीं रहता।

पाठा: **हाथै पगै, दीवा जगै।**

हाथां मरसी तौ कुण कांई करसी? १४७१९

अपने हाथ से मरे तो कौन क्या करे?

—बार-बार समझाने पर भी जो व्यक्ति न माने, तब उसके अनिष्ट को कौन रोक सकता है?

—जब कोई व्यक्ति भयंकर काम करने को आमादा हो और लोगों के लाख मना करने पर भी न माने, तब उसे समझाने वाले हताश होकर इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

दे.क.सं.९६४,१०१०५

पाठा: **हाथां करनै मरै, जिणरौ कुण कांई करै!**

हाथां में रमाय छोड्यौ है। १४७२०

हाथों में खिलाकर छोड़ा है।

—जो लड़का बड़ा होने पर उस व्यक्ति के सामने बातें बघारे, जिसने उसे हाथों में खिलाया हो। तब उसे मजबूर होकर इस उक्ति का प्रयोग करना पड़ता है।

—बुजुर्गों को नई पीढ़ी की बातें न सुहाये, तब...।

हाथां री मैंदी मैली व्है कांई? १४७२१

हाथों की मेंहदी मैली होती है क्या?

—हथेलियों पर गीली मेंहदी लगी हो, हाथ से काम करने में थोड़ी हिचक होती है।

—जो अकर्मण्य व्यक्ति हर वक्त काम से कतराना चाहे,उसे लक्ष्य करके यह उक्ति काम में ली जाती है ।

—कामचोर व्यक्ति के लिए उपयुक्त प्रताड़ना ।

पाठा : हाथां रै किसी मेंहदी लाग्योड़ी ।

हाथां लगावै अर पगां बुझावै । १४७२२

हाथों से लगाये और पाँवों से बुझाये ।

—जो दोगला व्यक्ति इधर की बात उधर भिड़ाये और उधर की बात इधर भिड़ाये,उसके लिए ।

—जिस व्यक्ति का काम ही जहाँ-तहाँ आग लगाना और बुझाना हो ।

—जिस व्यक्ति के चरण जहाँ भी पड़ें,वहाँ की शांति भंग हो जाय,तब...

पाठा : हाथै लगावै, पगै बुझावै !

हाथां हीरौ दियौ गमाय, कांईं कैवूंला सासू नै जाय? १४७२३

हाथ से हीरा खोकर, क्या कहूँगी सास को जाकर?

—अमूमन विवाहित कन्या का पहिला प्रसव मायके में ही होता है । वे बड़े चाव से कन्या को घर लाते हैं । लेकिन दुर्योग से पुत्र-रत्न चल बसे,तब कन्या बड़ी दुविधा में फँस जाती है । स्वयं उसके दुख का भी कोई पार नहीं रहता । किंतु सास को रत्न खोने का क्या जवाब देगी,उसे क्योंकर मुँह दिखा सकेगी,यह यातना भी कम नहीं है ।

—अपने हाथों उठाये कष्ट का पछतावा किसी के सामने दरसाया नहीं जा सकता ।

हाथियां री कमाई खावता, मींडकां री कुण खावै? १४७२४

हाथियों की कमाई खाते हुए, मेंढ़कों की कौन सुनता है?

—बड़े व्यक्तियों का सहयोग मिलने पर छोटे आदमियों को कौन पूछता है?

—पति की कमाई खूब हो तो देवर-जेठ व पुत्रों की कमाई के लिए कौन परवाह करता है?

हाथियां री गैल घणा ई गिंडकड़ा भुसै । १४७२५

हाथियों के पीछे कई कुत्ते भोंकते हैं ।

—बड़े व्यक्तियों की निंदा तो ओछे आदमी करते ही रहते हैं ।

—महान् विभूतियों की बदनामी फैलाने वाले भी कम नहीं होते।

—सज्जन व्यक्तियों को निदा की परवाह किये बिना अपना काम करते रहना चाहिए।

—गँवार लोग विद्वानों की आलोचना करते ही रहते हैं।

पाठा : हाथी हीडत देखनै, कूकर लव-लव कर मरै। हाथी लारै मोकळा ई कुत्ता भुसै। हाथीं लारै केई गिंडक भुसै। हाथी लारै घणा ई कूतरा भुसै।

हाथियां री लड़ाई में कीड़ियां रौ खोगाळ। १४७२६

हाथियों की लड़ाई में चींटियों का विनाश।

—बड़े देशों की लड़ाई मे सैनिक व गरीबों का सफाया होता है।

—श्रीमंतों के झगड़े में निरीह व्यक्तियों का ही नुकसान होता है।

हाथी अर पाडा री कांई बरौबरी ? १४७२७

हाथी और पाड़े की क्या बराबरी ?

—बड़े व्यक्ति और गरीब का क्या मुकाबला ?

—बड़े अधिकारी और मुशी की क्या बराबरी ?

—विद्वान के सामने गॅवार की बिसात ही क्या ?

हाथी आकड़ै री डाळ नीं बंधै। १४७२८

हाथी आक की डाल से नहीं बॅधता।

—हाथी का खर्च गरीब आदमी नहीं उठा सकता।

—हैसियत के बिना बड़ा खर्च उठाना सभव नहीं होता।

—बड़े अधिकारी को छोटा पद शोभा नहीं देता।

पाठा : हाथी किसौ इरडिये बंधै।

हाथी आगै पूळौ। १४७२९

हाथी के सामने पूला।

—हाथी से प्रचंड प्राणी के लिए किंचित् घास का क्या पता चले ?

—ज्यादा खुराक वाले व्यक्ति के लिए एकाध चपाती कुछ माने नहीं रखती।

—जो भ्रष्ट अधिकारी मामूली रिश्वत की ओर आँख भी न उठाये।

—'ऊंट के मुँह में जीरा' से काम चले तो हाथी के लिए एक पूले से काम चले।

हाथी आपरै माथै ई धूळ राळै। १४७३०

हाथी अपने सिर पर ही धूल डालता है।

—जो बड़ा व्यक्ति अपने कारनामों के कारण ही बदनाम हो।

—बुरे कामों की बदनामी तो होती ही है।

—कुलीन व्यक्ति कोई हीन काम करे, तब...।

पाठा : हाथी आपरै माथै धूड़ हाथै ई न्हाके।

हाथी उडै अर पूणियां रा लेखा लेवै। १४७३१

हाथी उड़े और लच्छियों का हिसाब करे।

—जो व्यक्ति भारी नुकसान के प्रति तो उदासीन रहे और नगण्य हानि की अधिक चिंता करे।

—जिस व्यक्ति के घर में एक तरफ तो बेइंतहा खर्च हो और दूसरी तरफ छोटे-छोटे खर्च पर पाबंदी लगाये।

पाठा : हाथी उडै जठै पूणी रौ कांई सांधौ लागै!

हाथी उडै जठै पूणियां रै लेखै कांई गरज सरै!

हाथी कद खेत खड़्या! १४७३२

हाथियों ने कब खेत जोता!

—कोई बड़ा व्यक्ति छोटा काम न कर सके, तब...।

—बड़े व्यक्ति के लिए हलका-फुलका काम करना शोभनीय नहीं होता।

हाथी कळगौ तौ ई कड़ियां सूदौ। १४७३३

हाथी धँस गया तब भी कमर तक।

—बड़े कारोबार वाले व्यक्ति के लिए छोटा नुकसान कुछ माने नहीं रखता।

—शक्तिशाली के कुछेक अधिकार छिन भी जाएँ तब भी सामान्य व्यक्ति की तुलना में उसका सामर्थ्य तो बड़ा होता ही है।

पाठा : गजराज कळ्यौ तौ ई कड़ियां तणौ।

हाथी गुळांचां खावै, पण माछळी सांम्ही पांणी चढ़ जावै। १४७३४

हाथी कुलाँचें खाये, पर मछली उलटे पानी चढ़ जाये।

—जिसका जो काम होता है, उसीको शोभा देता है।

—हर व्यक्ति के कौशल का मापदंड एक नहीं होता।

हाथी घणौ लांठौ पण अेकर तौ मरसी। १४७३५

हाथी बहुत भरकम पर एक बार तो मरेगा।

—मौत हाथी और चींटी में भेदभाव नहीं रखती। मौत आने पर हाथी को भी चींटी की नाईं मरना पड़ता है।

—चाहे कितना ही बड़ा मायापति हो, सत्ताधारी हो, समय आने पर मौत उसे भी दबोच लेती है।

हाथी जीवै जितरै हजार रौ अर मरयां पूठै लाख रौ। १४७३६

हाथी जिये तब तक हजार का और मरने के बाद लाख का।

—जिंदा हाथी पालने में भारी खर्च उठाना पड़ता है, सामान्य व्यक्ति तो उसे रखने की बात सोच ही नहीं सकता। मरे हुए हाथी की छोटी-से-छोटी हड्डी भी व्यर्थ नहीं जाती। बहुत महँगी बिकती है।

—बड़े व्यक्तियों की कीर्ति तो उनकी मृत्यु के बाद ही फैलती है। इतिहास में उनका नाम अमर हो जाता है।

हाथी जोड़ै तोड गोडां सूधौ दीसै। १४७३७

हाथी के सामने ऊँट का बच्चा घुटने जितना लगता है।

—विद्वान के सामने गँवार का कोई महत्त्व नहीं होता।

—पहुँचे हुए साधु की तुलना में सामान्य गृहस्थ की कुछ बिसात ही नहीं होती।

हाथी डूबै जठै बकरी रौ कांईं थाग लागै! १४७३८

हाथी डूबे वहाँ बकरी की क्या थाह लगे!

—जो काम बड़े-बड़े महारथी न कर सकें वहाँ अति सामान्य व्यक्ति का उसके लिए प्रयास करना नितांत उपहासास्पद है।

—अत्यंत शक्तिशाली से जो काम संभव न हो उसे भला कोई मरियल कैसे कर सकता है ?

—जो काम बेइंतहा मेधावी नहीं कर सकता, उसके लिए कोई मूर्ख पहल करे, तब...।

हाथी तुलै उठै गधा कांण में जावै। १४७३९

हाथी तुले वहाँ गधे पासंग में जाते हैं।

—जहाँ विद्वानों की मंडली जुड़ी हो, वहाँ मूर्खों का कुछ भी अता-पता नहीं चलता।

—युद्ध तो वीरों की बपौती है, कायरों की नहीं।

—महाकवियों की जहाँ पूछ हो वहाँ अरसिक का क्या काम ?

हाथी तौ अणसिणगारयोड़ा ई आछा लागै। १४७४०

हाथी तो बिना सजाये ही अच्छे लगते हैं।

—विद्वान तो फटे-कपड़ों में भी छिपा नहीं रहता।

—गुणी मनुष्य तो सामान्य वेश में भी सम्मान का अधिकारी होता है।

हाथी तौ नीसरग्यौ अर पूंछ लारै रैगी। १४७४१

हाथी तो निकल गया और पूँछ पीछे रह गई।

—कोई बड़ा काम संपन्न हो जाय और नगण्य काम बाकी रह जाय, तब...।

—मोटी मूल रकम वसूल हो जाय और मामूली ब्याज बाकी रह जाय तो ब्याज बढ़ते-बढ़ते उतना ही हो जाता है, जिससे कर्जदार कभी छुटकारा नहीं पा सकता।

—विख्यात व्यक्ति तो गुजर जाते हैं, पीछे बातें रह जाती हैं।

हाथी तौ बैठोड़ौ ई गधा सूं ऊंचौ। १४७४२

हाथी तो बैठा हुआ भी गधे से ऊँचा।

—वीर-पुरुष तो सोता हुआ भी कायर से बढकर होता है।

—विद्वान व्यक्ति बौरा भी जाय तब भी गँवार से श्रेष्ठ होता है।

हाथी ना दांत भाळवाना न्यारा ने खावाना न्यारा।– भी.७८३ १४७४३

हाथी के दाँत दिखाने के अलग और खाने के अलग।

—जो कपटी मानुस कहे कुछ और करे कुछ।

—पाखंडी व्यक्ति पर कटाक्ष।

हाथी ने कानां मांये मचरू पूंपूं करे ते पूंपूं कीदे हूं वे।– भी.७८४ १४७४४

हाथी के कानों में मच्छर भिनभिनाये तो क्या होता है?

—निर्बल व्यक्ति की बकवास से शक्तिशाली का कुछ भी नहीं बिगड़ता।

—विद्वान व्यक्ति मूर्ख के अपशब्दों की तनिक भी परवाह नहीं करता।

हाथी ने कीदे समद नी अडोळावे।– भी.७८५ १४७४५

हाथी के चाहने पर समंदर गँदला नहीं किया जाता।

—कोई व्यक्ति चाहे जितना शक्तिशाली हो वह प्रकृति को नहीं जीत सकता।

—असंभव काम के लिए प्रयास करना व्यर्थ है।

हाथी ने डाड़ा मांये डाळां नी रे।– भी.७८६ १४७४६

हाथी की दाढ़ों के बीच डालियाँ नहीं बचती।

—अत्याचारी के जाल से गरीब का कभी छुटकारा नहीं हो सकता।

—बनिये की बही में चढ़ने के बाद असामी पीढ़ियों तक मुक्त नहीं हो सकता।

हाथी नै कुण कहै हंराड़ौ? १४७४७

हाथी को हारा हुआ कौन कहे?

—बड़े आदमी के दोष बताने की हिम्मत कोई नहीं कर सकता।

—बड़े व्यक्ति की कमजोरी का जिक्र करना भी जुर्म है।

हाथी नै कुण पटकै? १४७४८

हाथी को कौन हराये?

—शक्तिशाली का सामना कौन करे?

—समर्थ को हराने की बात तो दूर उसका सामना भी कोई नहीं कर सकता।

पाठा : **हाथी नै कुण हरावै?**

हाथी नै हथियौ कुण कहै? १४७४९

हाथी को हत्थू कौन कहे?

—बड़ा व्यक्ति अपराध भी करे तो उसे अपराधी कौन कहे ?

—समर्थ व्यक्ति की आलोचना भी कोई नहीं कर सकता।

हाथी नै हरियाव कुण कैवै ? १४७५०

हाथी को विशाल कौन कहे ?

—प्रचंड डील-डौल वाले हाथी के पास जाकर कौन कहे कि तुम भी पहाड़ जैसे विशाल हो। पास जाने पर वह सूंड में पकड़कर रौंद डाले तो...!

—आतंकवादी के सन्निकट जाकर उसकी प्रशंसा करना भी खतरे से खाली नहीं है।

—बड़े आदमियों से दूर रहना ही बेहतर है।

हाथी नै हळ जोत्यौ। १४७५१

हाथी को हल जोता।

—बड़े आदमियों से अति सामान्य काम करवाने पर।

—हर व्यक्ति को उसकी योग्यता और शक्ति के अनुसार ही काम लेना चाहिए।

हाथी-पात तौ दरबारां ईं छाजै। १४७५२

हाथी-पात तो रजवाड़ों में ही शोभा देते हैं।

—महान व्यक्तियों की परवरिश तो बड़े व्यक्ति ही कर सकते हैं।

—बड़े काम बड़े आदमियों को ही शोभा देते हैं।

पाठा : हाथी रजवाड़ां सोहै।

हाथी बायरै उडै अर पींजारी पूंणियां ढाकै। १४७५३

हाथी हवा में उड़ें और पिंजारी लच्छियाँ ढके।

—चक्रवात में जहाँ हाथी, पेड़ और महल तक उड़ने लगें वहाँ कोई छतरी तानकर उसका सामना करना चाहे, तब...।

—बड़े विकट काम कोई सहज ही सुलझाना चाहे, तब...।

हाथी बारै निकळै सो पाछा वड़ै नहीं। १४७५४

हाथी बाहर निकले तो वापस अंदर नहीं आये।

—स्वच्छंद प्रवृत्ति वाले मानुस किसी भी प्रकार का बंधन स्वीकार नहीं करते।

—साँस बाहर निकलने पर वापस नहीं लौटता।

—बड़े आदमियों ने जो संकल्प कर लिया सो कर लिया, वे उसे वापस नहीं झुठला सकते।

हाथी बिक्यां अंकोड़ा री के राड़? १४७५५

हाथी बिकने पर अंकुश की क्या लड़ाई?

—सब-कुछ बिक जाने के बाद अकिंचन वस्तु की खातिर कलह करने पर...।

—बर्बाद हो जाने के पश्चात् तुच्छ वस्तु से कैसा मोह?

पाठा: **हाथी बिक्यां आंकस रौ कांई रांझौ?**

हाथी बिना दरवाजौ नीं तूटै। १४७५६

हाथी के बिना दरवाजा नही टूटे।

—बड़ा काम शक्ति व उचित साधनों के बिना संपन्न नहीं होता।

—बहादुर सैनिकों के बिना जीत संभव नहीं हो सकती।

हाथी मरै उठै ई गाडीजै। १४७५७

हाथी जहाँ मरे वही गाड़ा जाता है।

—वीर-पुरुष जहाँ मरते हैं, वहीं उनका स्मारक बनता है।

—वीर-पुरुष जहाँ मरते हैं, वही उनकी जन्मभूमि बन जाती है।

हाथी माथै बैठ्यां ई महावत नीं बाजै। १४७५८

हाथी पर बैठने से ही महावत नही कहलाता।

—हर काम के लिए यथायोग्य कौशल होना अनिवार्य है, वरना उपकरण कुछ भी माने नहीं रखते।

—निरंतर अभ्यास, निष्ठा और मेहनत के पश्चात् ही कोई व्यक्ति योग्य बनता है।

हाथी मूवौ तौ ई लाख रौ। १४७५९

हाथी मरा तो भी लाख का।

दे.क.सं.१४७३६

हाथी रा असवार नै कुत्तौ खाय सकै नीं। १४७६०

हाथी के सवार को कुत्ता नहीं खा सकता।

—साधन-संपन्न व्यक्ति को कई सुविधाएँ रहती हैं।

—जिसके पास उपयुक्त साधन होते हैं, वह कई कष्टों से बच जाता है।

हाथी रा कांन हिल्यां बिना नीं रैवै। १४७६१

हाथी के कान हिले बिना नही रहते।

—बड़े-से-बड़े व्यक्ति में भी कुछ-न-कुछ कमजोरी होती है।

—व्यक्ति चाहे किसी पद पर पहुँच जाय, उसमें एकाध ऐब या अवगुण तो होते ही हैं।

हाथी रा खोज में सगळा खोज समाय। १४७६२

हाथी के पॉव में सारे पॉव समाय।

दे क सं. १४५७३

पाठा : हाथी रा खोज में चूकता पांव समाय। हाथी हंदा खोज में सगळा खोज समाय।

हाथी रा टुढ़ में वडणौ सोरौ, निकळणौ दोरौ। १४७६३

हाथी की गुदा में घुसना आसान, निकलना मुश्किल।

संदर्भ-कथा : किसी सियार ने जंगल में एक हाथी को मरणासन्न अवस्था में देखा। उसकी ताकत पूर्णतया क्षीण हो चुकी थी। सियार ने उचित अवसर का लाभ उठाया। थोड़ी चेष्टा करने पर ही उसके भीतर घुस गया। उसके भीतर घुसते ही हाथी ने आखिरी साँस खींची। ऐसी मौज तो उसने कभी नहीं की। खड़े हाथी की छाया तक मे वह दूर भागता था। आज वह बड़े मजे से हाथी का मांस खा रहा है और वह उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। चार-पाँच घंटे के बाद उसे प्यास लगी तो उसने खूब मुँह मारा, पंजे काम में लिए, पर सब अकारथ। वह हाथी के पेट से बाहर निकल नहीं सका और उसका वहीं देहांत हो गया।

—बड़े आदमियों के चक्कर में फँसना तो आसान है, पर उससे छुटकारा आसान नहीं।

हाथी रा दांत कद सीधा देख्या ? १४७६४

हाथी के दाँत कब सीधे देखे ?

—बड़े व्यक्तियों में कुछ-न-कुछ छल-कपट तो होता ही है।

—या यों कहना ज्यादा सही है कि छल-कपट किये बिना कोई बड़ा आदमी हो ही नहीं सकता।

हाथी रा दांत कुण गिणै ? १४७६५

हाथी के दाँत कौन गिने ?

—बड़े व्यक्ति की दुर्बलता कौन उजागर करे ?

—आतताई का सामना करने की कोई हिम्मत नहीं कर सकता।

हाथी रा दांत, गिंडक री पूंछ, कुमाणस री जीभ सदावंत आंटी रहै। १४७६६

हाथी के दाँत, कुत्ते की पूँछ, बदमाश की जीभ सदा टेढ़ी रहती है।

—बड़े आदमियों के दोगलापन में, हीन व्यक्तियों की नीचताओं में और दुष्ट व्यक्ति की बातचीन में कुछ-न-कुछ टेढ़ापन होता है, उन पर आसानी से विश्वास नहीं करना चाहिए।

—आदमी जिस रूप में दिखते हैं, वैसे होते नहीं है।

हाथी रा बड़दांत निकळग्या सो निकळग्या। १४७६७

हाथी के बड़-दाँत निकल गये सो निकल गये।

—बचपन में जो आदतें पड़ गईं सो पड़ गईं, उनमें आसानी से परिवर्तन नहीं होता।

—बड़े व्यक्तियों में जो व्यसन शुरुआती दौर में पड़ जाते हैं, उनसे छुटकारा पाना आसान नहीं है।

हाथी रा बळ री खबर नहीं। १४७६८

हाथी के बल का पता नही चलता।

—हाथी की सही ताकत का अंदाज मनुष्य नहीं लगा सकता। मनुष्य में न तो उससे भिड़े जितनी ताकत है और न उस ताकत को आजमाने की अन्य तरकीब है। मनुष्य केवल अनुमान लगा सकता है।

—बड़े आदमियों के वैभव को गरीब नहीं जान सकता।

हाथी री पूंद में हरड़ै। १४७६९

हाथी की गुदा मे हरड़।

—अपर्याप्त औषधि मे उपचार नहीं होता।

—बड़े आदमियों के लिए अकिंचन सुविधा कुछ भी माने नहीं रखती।

हाथी री डाढ़ां झिल्यां पछै कांई बचै ? १४७७०

हाथी की दाढ़ में फँसने पर क्या बचता है ?

दे.क.सं.१४७४६

हाथी री मौत कीड़ी रै हाथ। १४७७१

हाथी की मौत चींटी के हाथ।

—ऐसी मान्यता है कि हाथी के कान में चींटी घुस जाय तो बेचैनी और छटपटाहट के कारण उसे अंततः मरना पड़ता है।

—बड़े व्यक्तियों को यह समझने की भूल नहीं करनी चाहिए कि गरीब व्यक्ति नितांत अपदार्थ होता है,कभी उसके द्वारा भी उन्हें कष्ट पहुँच सकता है।

हाथी रै आगै लकड़ी न्हाकणी सोरी पण उठावणी दोरी। १४७७२

हाथी के आगे लकड़ी डालनी आसान पर उठानी मुश्किल।

—अपने से बलवान को कोई भी चीज देना जितना आसान है,उतना ही मुश्किल है उस चीज को उससे वापस प्राप्त करना।

—अपने से बलवान या बड़ा व्यक्ति यमराज के समान होता है,उससे व्यवहार रखना उतना ही कठिन है,जितना यमराज से व्यवहार रखना।

हाथी रै खावण रा दांत दूजा अर दिखावण रा दूजा। १४७७३

हाथी के खाने के दाँत दूसरे और दिखाने के दूसरे।

दे.क.सं.१४७४३

पाठा : हाथी रा दांत खावण रा बीजा अर दिखावण रा बीजा।

हाथी रा दांत खावण रा न्यारा अर दिखावण रा न्यारा।

हाथी रै बाथ घालणी दोरी। १४७७४

हाथी को बाँहों में भरना मुश्किल।

—बड़े व्यक्तियों से भिड़ना बहुत मुश्किल है।

—बड़े आदमियों से संपर्क रखना नितांत कठिन है।

हाथी रैवै तौ हील रा बंधिया रैवै। १४७७५

हाथी रहें तो बंधन के बाँधे रहते हैं।

—बड़े व्यक्तियों को भी समुचित बंधन से नियंत्रित किया जा सकता है।

—दुनिया में ऐसा कोई शक्तिशाली नहीं, जिसे बंदी नहीं बनाया जा सकता।

हाथी रौ गरु आंकस। १४७७६

हाथी का गुरु अंकुश।

—बड़े व्यक्तियों को भी नियंत्रित करने के लिए उपयुक्त उपाय हैं।

—बड़े-से-बड़ा व्यक्ति भी भय से मुक्त नहीं है। सच बात तो यह है कि छोटे-बड़े सबका गुरु भय ही है।

हाथी रौ जोर हाथी नै को दीसै नीं। १४७७७

हाथी की ताकत हाथी को नही दिखती।

—किसी भी प्रतिभाशाली को अपनी प्रतिभा का सही अनुमान नहीं होता।

—शक्तिशाली को अपनी ताकत की पुख्ता जानकारी नहीं होती। या तो उसको जरूरत से ज्यादा मुगालता रहता है और उसे कम आँकता है।

हाथी रौ बोझ हाथी नै भारी! १४७७८

हाथी का बोझ हाथी को भारी।

—व्यसन की बुराइयाँ व्यसनी को ही झेलनी पड़ती हैं, दूसरों से उनका कोई वास्ता नहीं।

—अपने किये का फल अपने को ही भोगना पडना है।

हाथी रौ भार हाथी इज खिंवै। १४७७९

हाथी का भार हाथी ही सहता है।

—अपनी पारिवारिक व सामाजिक जिम्मेदारियाँ स्वयं उठानी पड़ती हैं।

—बड़े कामों का बोझ बड़े ही ढो सकते हैं।

—कुशल और सक्षम व्यक्ति ही कठिन काम को करने में समर्थ होता है।

—अपना सलीब आप उठाना पड़ता है, उसमें कोई दूसरा हाथ नहीं बँटा सकता।

पाठा : हाथी रौ बोझ हाथी ई उठावै।

हाथी रौ हाड आंगळ ई अैळौ नीं जावै । १४७८०

हाथी की हड्डियाँ एक अंगुल भी व्यर्थ नहीं जातीं ।

—परमार्थी की एक-एक घड़ी दूसरों के निमित्त ही बीतती है ।

—महापुरुषों के जीवन की सार्थकता ही समाज और देश के लिए उत्सर्ग होने में है ।

—विद्वान,ज्ञानी या साधु का एक क्षण भी व्यर्थ नष्ट नहीं होता ।

हाथी लाख दूबळौ व्है, पाडा सूं नीं पड़ै । १४७८१

हाथी लाख दुबला हो, पाड़े से नही पड़ता ।

—धनाढ्य व्यक्ति का भारी नुकसान होने के बावजूद गरीब उसकी बराबरी नहीं कर सकता ।

—बलवान दुबला भी हो जाय तो वह सामान्य मानुस की तुलना में भारी पड़ता है ।

—विद्वान विक्षिप्त भी हो जाय तब भी गँवार से उसकी क्या बराबरी ?

हाथी वाळी धूळ माथै क्यूं न्हाकै ? १४७८२

हाथी वाली धूल सिर पर क्यों डालता है ?

—जब किन्हीं तुच्छ हरकतों की वजह से किसी बड़े आदमी की बदनामी फैलने लगे,तब...।

—जहाँ तक संभव हो बड़े आदमियों को बदनामी से बचने के लिए हर चंद चेष्टा करनी चाहिए । हर क्षण सतर्क रहना चाहिए ।

हाथी वाळी लाकड़ी ।–व.१९३ १४७८३

हाथी वाली लकड़ी ।

दे.क.सं.१४७७२

हाथी वाळौ आंकस है । १४७८४

हाथी वाला अंकुश है ।

—दुष्ट व्यक्ति समुचित दंड के बिना सीधा नहीं हो सकता ।

—मनुष्य स्वभावत: बर्बर है,उसे नियंत्रित रखने के लिए कठोर पाबंदियाँ अनिवार्य हैं ।

हाथी वेग चढ़ै, कीड़ी वेग उतरै । १४७८५

हाथी-वेग चढ़ता है, चींटी-वेग उतरता है ।

—अकसर बुखार के लिए यह उक्ति सुनने को मिलती है कि वह हाथी की गति से चढ़ता है और चींटी की गति से उतरता है।

—किसी भी बीमारी का प्रकोप जिस तेजी से होता है, उतनी जल्दी वह ठीक नही होती। धीरे-धीरे उस में सुधार होता है।

—काम बिगड़ने में वक्त नही लगता, सुधरने में लगता है।

हाथी हजार रौ, महावत कौडी च्यार रौ। १४७८६

हाथी हजार का, महावत कौड़ी चार का।

—कीमत हाथी की आँका जाती है, महावत की नहीं।

—जो औरत अत्यधिक सुलक्षणा, सुंदर, शीलवती और गुणवती हो, पर दुर्भाग्य से पति बहुत निकम्मा और वाहियात मिल जाये, तब...।

हाथी, हाथ, ऊंट, घोड़ा, बाकी सै चित्रांम थोड़ा। १४७८७

हाथी, हाथ, ऊँट, घोड़े, बाकी सब चित्र थोड़े।

—चित्रकला को लेकर यह उक्ति है कि हाथी, हाथ, ऊँट और घोड़े का चित्र अच्छी तरह नहीं बनाना आये तो बाकी चित्र व्यर्थ हैं।

—किसी भी शिल्पकार, चित्रकार या कवि की योग्यता का आकलन उसकी कृतियों से तत्काल हो जाता है।

हाथी-हाथी आथड़ै, बांटां रौ खोगाळ। १४७८८

हाथी-हाथी भिड़े तो झाड़ियों का विनाश।

दे.क.सं.३१४९

हाथी हुड़साळ में, घोड़ा घुड़साळ में। १४७८९

हाथी हुड़साल में, घोड़े घुड़साल में।

—जिसकी जैसी योग्यता और जैसा महत्त्व होता है, वैसे आवास की व्यवस्था करनी पड़ती है।

—व्यक्ति की योग्यता के अनुसार पद मिल जाता है।

—गुणों के अनुसार ही आदर होता है।

हाथै ई नाचै, हाथै ई वारणा लेवै। १४७९०

खुद ही नाचे, खुद ही बलैयाँ ले।

दे.क.सं.३०२८

हाथै पिण जळ्या, पूंख पिण ढुळ्या।–व.७ १४७९१

हाथ भी जले, पूँख भी गिरे।

दे.क.सं.१४६५६

हाथै सो ई साथै, पूठा सो ई झूठा। १४७९२

हाथ में सो साथ में, पीछे की बात झूठी।

—जो वस्तु हाथ में है, वही वक्त पर काम देती है, दूर की सारी माया व्यर्थ है।

—मौजूद वस्तु नगण्य होते हुए भी बहुमूल्य है और इसके विपरीत बहुमूल्य वस्तु दूर होने की वजह स नगण्य है।

—भविष्य की अपेक्षा वर्तमान ही महत्त्वपूर्ण है।

हाथौहाथ नटिया, सगळा फंद कटिया। १४७९३

हाथोहाथ नटे, सारे फंद कटे।

दे.क.सं.११४८९

हाथौहाथ लेणौ अर हाथौहाथ देणौ। १४७९४

हाथोहाथ लेना और हाथोहाथ देना।

—व्यवसाय और निजी व्यवहार का यही उसूल है कि इस हाथ दिया और उस हाथ लिया।

—लेन-देन के मामलों में ढील हानिकारक होती है।

हाप तो परो गियो न धांहरो कूटव्ये हूं थावा नूं।–भी.७८८ १४७९५

साँप तो चला गया, फिर लकीर पीटने से क्या मतलब।

दे.क.सं.१३५५४,१३५६५

हाबली नै लाधौ बाटकौ, पांणी पी-पी पेट फाटगौ। १४७९६

हाबली को मिला कटोरा, पानी पी-पी कर पेट फोड़ा।

हाबली = नासमझ औरत का एक नाम विशेष। बाटकौ = कटोरा।

दे.क.सं.२५१

हाय घोड़ा, दिन थोड़ा। १४७९७

हाय घोड़ा, दिन थोड़ा।

—समय तो सीमित है और अनंत है मनुष्य की भागदौड़ और संचय की प्रवृत्ति ? आखिर इस भागदौड़ का उद्देश्य क्या है ? उसकी सार्थकता क्या है ? और जबकि संचय की हुई पूँजी से एक तुस भी ले जाना आपके वश की बात नही है, फिर उस संचय का महत्त्व क्या है ?

—हाय-हाय करते ही जिदगी समाप्त हो जाती है।

—जिदगी व्यर्थ गँवाने का पश्चाताप।

हायड़ा-मांयड़ा तौ करणा हा—सगी सासू मरी ही। १४७९८

हाय-हाय तो करनी थी, सगी सास मरी थी।

—लोक-दिखावे के लिए कुछ तो दुख प्रकट करना ही पडता है। मनुष्य के मामाजिक जीवन की यह बदिश अनिवार्य है।

—मनुष्य को समाज में रहना है तो उसके नियम-कायदे मानना आवश्यक है।

हाय फजीती ! के मिंयांजी वा तौ उबरती पड़ी। १४७९९

हाय फजीती ! कि मियाँजी वह तो बहुतेरी पडी है।

दे.क सं.११२१०

हाय बिना दाय किणनै ? १४८००

हाय बिना दया किसे ?

—दुख को दरसाये बिना किसी को भी दया नहीं आती।

—जिसे ठेस लगती है, वही दया करता है।

हाय भली न बोह भली।–व.२११ १४८०१

हाय भली न त्राय भली।

—किमी भी रूप में किसी की हाय नहीं लेनी चाहिए।

—बद्दुआ का दुष्प्रभाव अवश्यंभावी है। जहाँ तक मनुष्य का वश चले किसी को भी सताना नहीं चाहिए।

हायरी ना हतरे कायदा।– भी.७९० १४८०२

ससुराल के सत्रह कायदे है।

दे.क.सं.१३७६३

हाय हुसैन आय फंस्या। १४८०३

हाय हुसैन आ फँसे।

संदर्भ : हसन और हुसैन दोनों भाई थे। मोहम्मद साहब के नवासे। मोहम्मद साहब का इंतकाल होने पर हुसैन मदीना के इमाम बने। अरब देश के सभी खलीफा इमाम की आज्ञा से चुने जाते थे। जब इराक का खलीफा गुजर गया तो पुरानी रस्म तोड़कर यजीद वहाँ का खलीफा बन गया। हुसैन ने अपने कासिद के साथ यजीद को यह समाचार भिजवाया कि उसने कायदा तोड़कर जो सल्तनत हथियाई है, यह अच्छा नहीं किया। तब इराक के खलीफा यजीद ने कासिद के साथ कहलवाया कि वह कर्बला में आ जायें। वहाँ बैठकर उनकी सलाह से काम कर लिया जाएगा। हुसैन ने विश्वास कर लिया। वह बहत्तर आदमियों का काफिला लेकर कर्बला पहुँच गये। उनमें हसन का लड़का भी साथ था। जब वह कर्बला पहुँचे तो उनके शुभ चितकों ने आगाह किया कि वे गलत फँस गये हैं। यजीद ने उन्हें धोखे से बुलवाया है। और वाकई वही हुआ। यजीद ने उन पर चढ़ाई करने के लिए बाईस हजार सैनिक भेजे। हुसैन के सभी साथी शहीद हो गये।

—किसी भयंकर धोखे का आभास, होने पर।

हाये-हाये करता हा निकळी जाये।– भी.३५८ १४८०४

हाय-हाय करते साँस निकल जाएगी।

—इसलिए मनुष्य को धैर्य-पूर्वक सत्कार्य करते हुए जीवन को शांति से व्यतीत करना चाहिए।

—रुपये-पैसे की खातिर हाय-हाय करते हुए जीवन देखते-देखते बीत जाएगा, अतएव राम-नाम के अलावा कोई निस्तार नहीं है।

मि.क.सं.१४७९७

हार अर हाथी री काणिक नै अभिलाख। १४८०५
दो दिन में नर मूवा, अखरै बे-लाख॥
हार और हाथी की काणिक को अभिलाष।
दो दिन में नर मरे, अखरे दो लाख॥
दे.क.सं.४६६

हार ई खावै अर कटार ई खावै। १४८०६
हार भी खाये और कटार भी खाये।
—जब किसी काम में दोहरी हानि उठानी पड़े, तब...।
—जब किसी मनुष्य के लिए दुतरफा कष्ट उठाने की नौबत आ जाय तब...।

हार ना कोई डोर, बाई रौ काजळ माथै जोर। १४८०७
हार न कोई डोर, बाई का काजल ऊपर जोर।
—अभावग्रस्त व्यक्ति की मजबूरी दरसाने के लिए ही इस कहावत का महत्त्व है।
—साधनों की मजबूरी हो तो आदमी विक्षिप्त होकर बेढंगे काम करने लगता है।

हार मांना अर झगड़ौ मिट्यौ। १४८०८
हार मानी और झगड़ा मिटा।
—दबकर चलने से जिंदगी में कठिनाइयाँ नहीं आतीं।
—सबके सामने सिर झुकाकर चलते रहो, जस-तस राह कट जाएगी।
—यदि किसी व्यक्ति का उद्देश्य सिर्फ पेड़-पौधों और अन्य प्राणियों की तरह मात्र जीना ही है तो सिद्धांत छोड़कर समझौतों की नीति अपना लो और अपना निर्वाह करते रहो।

हार माथै मार है। १४८०९
हार पर मार है।
—हार ही पर्याप्त नहीं होती, उसके साथ मुसीबतें भी झेलनी पड़ती है।
—हार वाले को सजा के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

हारा हरखा वे तो चावे हूं ?– भी. ३५९ १४८१०

सभी समान हों तो और क्या चाहिए ?

—यदि किसी तरह की सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक विषमता न हो तो सारे झमेले मिट जाएँ। इस आदर्श स्थिति का तो कोई जवाब ही नहीं।

—साथ-ही-साथ सारे मनुष्य भी एक समान भले और नेक हों, तभी कोई व्यवस्था सार्थक हो सकती है।

हारिये न हिम्मत बिसारिये न हरिनांम, १४८११
जाहि विध राखै रांम ताहि विध रहिये।

हारिये न हिम्मत बिसारिये न हरिनाम, जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये।

—मनुष्य की देह धरकर जब मनुष्य समाज में जन्म ले ही लिया है तो हिम्मत के साथ डटे रहिये। ईश्वर को क्षण भर के लिए भी मत बिसराइये। जिस रूप और जिस ढंग से राम रखना चाहे, कुछ भी शिकवा-शिकायत किये बिना उसे बखुशी स्वीकार करिये, जीने का सबसे अच्छा तरीका यही है।

हारी आंटी देवी भण पेटे पाव आटा नी आंटी नी देवी।– भी. ७९१ १४८१२

सब कुछ सहन कर लेना पर पेट के लिए पाव आटे का कष्ट नहीं होना चाहिए।

—जैसे-तैसे मनुष्य की इस पवित्र देह को बचाना ही जीवन की सर्वोपरि सार्थकता है। दूसरी सुविधाएँ मिलें-न-मिलें लेकिन जिंदा रहने के लिये पाव भर आटे का जुगाड़ तो निश्चित होना चाहिए।

—मनुष्य-जीवन की पहली और अंतिम शर्त सिर्फ पाव भर आटा, बाकी सुविधाएँ गौण। ऐश करना जीवन का आदर्श नहीं हो सकता।

हारू चोडी ने टीटका नो दीवो टमकावो।– भी. ७९२ १४८१३

सब छोड़कर लकड़ी का दीया तो जलाओ।

—जो भी वस्तु उपलब्ध हो वक्त पर उसी से काम चलाना चाहिए।

—गैर-मौजूद की चिंता छोड़कर मौजूद का सर्वोत्तम उपयोग करना ही पौरुष है।

हार्‌यां नै हरी मिळै, जीत्यां नै जम्म। १४८१४

हारों को हरि मिले, विजेताओं को यमराज।

—हारे हुए व्यक्ति का अन्य कोई आसरा न होने के कारण वह ईश्वर को ही हरदम याद करता है। और जो ईश्वर को सच्चे मन से याद करता है, ईश्वर उसे मिलता ही है। इसके विपरीत विजेता अपने अहंकार में ही खोया रहता है। उसे अपनी जीत के अलावा और किसी का ध्यान नहीं रहता। वह अपने अभिमान के मद में ईश्वर को ही भूल जाता है। परिणामस्वरूप मरने पर उसका यमराज से ही पाला पड़ता है।

हार्‌योड़ा जुवारी रौ कुण बेली ? १४८१५

हारे हुए जुआरी का कौन साथी ?

—केवल हारे हुए जुआरी तक ही यह बात सीमित नहीं है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में पराजित व्यक्ति का साथी कोई नहीं बनना चाहता। उसे निपट अकेले ही अपनी नैया पार लगानी पड़ती है।

हार्‌योड़ौ ऊंट धरमसाळ कांनी जोवै। १४८१६

थका-हारा ऊँट सराय की ओर देखता है।

—हारा-थका व्यक्ति किसी-न-किसी सुखद आश्रय की तलाश करना चाहता है।

—हारे-थके मनुष्य की दयनीय मन:स्थिति की ओर संकेत।

हार्‌योड़ौ जुवारी गळै इज पड़ै। १४८१७

हारा हुआ जुआरी गले पड़ता है।

—हारे हुए जुआरी की सहनशक्ति जवाब दे जाती है।

—हारा हुआ व्यक्ति सहायता के लिए पीछे ही पड़ जाता है।

हार्‌योड़ौ भांबी छांणा चुगै। १४८१८

हारा हुआ भाँबी उपले बीनता है।

—असहाय मनुष्य कैसा भी हीन-कर्म करने को तैयार हो जाता है।

—अभावग्रस्त व्यक्ति के लिए कैसी मर्यादा ? कैसी नैतिकता ?

पाठा : हार्‌योड़ौ भांबी छांणा हंगै।

हास्यौ जुवारी दूणौ रमै। १४८१९

हारा हुआ जुआरी ज्यादा खेलता है।

—जुआरी की मनःस्थिति का बड़ा सटीक वर्णन है, इस उक्ति में कि भावी जीत की आशा में वह अपना सब-कुछ दाँव पर लगा देता है।

—हारे हुए जुआरी का दुगुना खेलना, उसकी चरम निराशा का ही सूचक है।

हास्यौ बांणियौ बाटां जूंझै। १४८२०

हारा बनिया बटखरो से जूझता है।

—हताश बनिया काम के अभाव में बटखरे इधर-से उधर करता रहता है।

—दिवालिया सेठ मजबूरी में बाट और तराजू से मन बहलाता है।

—कोई भी हारा-थका व्यक्ति हतशून्य हो जाता है।

हास्यौ-हाकम जांमनी मांगै। १४८२१

हारा हुआ हाकिम जामिन माँगे।

—जो हाकिम किसी फैसले का उचित निर्णय न कर सके और दुविधाजनक स्थिति में फँस जाय तो वह जामिन माँगकर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाता है।

—हताश व्यक्ति कुछ-न-कुछ अनुपयुक्त विकल्प ढूँढने की चेष्टा करता है।

पाठा : **हास्यौ ठाकर जांमनी मांगै।**

हाल अे छांवळी, घड़ीक नै आवूं। १४८२२

चल री छाया, घड़ी भर मे आया।

—छाया तो मनुष्य को छोड़कर कही नहीं जा सकती। मनुष्य चलेगा तो वह भी साथ-साथ चलेगी। मनुष्य रुकेगा तो वह भी अदेर रुक जाएगी। फिर छाया की जुदाई कैसी? और घड़ी भर बाद का पुनर्मिलन कैसा?

—जो अपूर्व छैला अपनी छैलाई के बारे में विशिष्ट डींग मारे, तब..।

हाल कांई व्हियौ, रोवौला तौ धकै गियां। १४८२३

अभी क्या हुआ है, रोओगे तो आगे जाकर।

—बुरे कामों का प्रतिफल यहाँ हाथोंहाथ तो मिलता नहीं, अतः अगले जन्म में दंडित होने पर रोना तो पड़ेगा ही।

—इस जन्म के अपराधों की सजा अगले जन्म में निश्चित मिलती है, तब रोने के अलावा कोई चारा नहीं।

हाल कांईं हालरियौ हुलराय लियौ ? १४८२४

अभी क्या पालना झुला लिया ?

—जब कोई व्यक्ति किमी काम की सफलता के पहिले ही खुशी मनाने लगे, तब...।

—पता नहीं ऊँट किस करवट बैठे, इसलिए जब तक किसी काम का पूरा नतीजा नहीं निकले आश्वस्त नहीं होना चाहिए।

हाल किसा मिंयां मरग्या नै रोजा घटग्या। १४८२५

अभी कौन से मियाँ मर गये और रोजे घट गये।

दे.क.सं.२८७

हालण सींगी घर हिलाय न्हाकै। १४८२६

हालन सींगी घर हिला दे।

—ऐसी मान्यता है कि जिस गाय के सीग हिलते हों वह अशुभ भी है और शुभ भी। यदि मवेशियों से बाड़ा भरा हो तब हालन सींगी गाय नहीं खरीदनी चाहिए, उसका आगमन होते ही बाड़ा खाली हो जाता है और यदि बाड़ा खाली है तो हालन सींगी के आने पर वह भर जाता है।

—अधिक जीभ चलाने वाली औरत जो हरदम दूसरो को नीचा दिखाने की चेष्टा करे।

हाल तांईं तौ बेटी बाप रै ई है। १४८२७

अभी तक तो बेटी बाप के घर है।

दे.क.सं.११२१

पाठा : हाल तौ बेटी बाप रै।

हालतां कीड़ी ई नीं संताई। १४८२८

चलते हुए चीटी भी नही सताई।

—अतिशय सज्जन व सीधे व्यक्ति के लिए जो चलते समय चींटी को भी बचाकर चले।
—जिस व्यक्ति ने सपने में भी किसी को ठेस न पहुँचाई हो।

हालता बळद रै स्यार नीं लगावणी। १४८२९
चलते बैल को 'स्यार' नही लगानी चाहिए।
दे.क.सं.४३४९
पाठा : हालता रै आर क्यूं ?

हाल तौ कोरौ कागद है। १४८३०
अभी तो कोरा कागज है।
—जिस प्रकार खाली कागज पर कोई भी मसविदा लिखा जा सकता है, उसी प्रकार पूर्वग्रह से मुक्त बच्चे को संस्कारों के किसी भी साँचे मे ढाला जा सकता है।
—छोटे-बच्चे को जैसी शिक्षा दी जाती है, वह वैसा ही सीखता है।

हाल तौ घी नै रोगन इज कह्यौ। १४८३१
अभी तो घी को 'रोगन' ही कहा है।
—पुराने जमाने में घी को 'रोगन' कहकर भी संबोधित करते थे। तीली के मुँह पर जो रोगन मसाला होता है वह शक्ति का प्रतीक है। और आज भी यह मान्यता है कि घी खाने से शक्ति आती है।
—जब दो व्यक्तियो में कहा-मुनी हो जाये, लड़ने की सभावना उत्पन्न हो जाय तो उनमें से एक जो अधिक ताकतवर है, वह सामने वाले को कहता है, ज्यादा हेकड़ी मत दिखाओ, मैंने तो अभी घी को रोगन ही कहा है, अब अपनी खाल म न रहे तो वह करके दिखाऊँगा कि याद रखोगे।
—जब और भी कुछ चमत्कार दिखाना शेष हो।

हाल तौ चावळ काचा ई है। १४८३२
अभी तो चावल कच्चे ही है।
—अभी तो कुछ नहीं बिगड़ा है, समझदारी से काम किया जाय तो सारा मामला सुधर सकता है।
—जब किसी काम में संशोधन की पूरी गुंजाइश हो।

हाल तौ चिणा री दो फाड़ नीं व्ही। १४८३३

अभी तो चनों की दो दाल नहीं हुई।

—संयुक्त परिवार में जब तक परिवार के सदस्य अलग न हों।

—मिल-जुलकर रहने वालों के लिए जो एक ही चौके में खाना खाते हैं।

पाठा : हाल तौ मूंग री दो फाड़ां नीं व्ही।

हाल तौ होठां हांचळां रौ दूध ई नीं सूख्यौ। १४८३४

अभी तो होंठों पर स्तनों का दूध भी नहीं सूखा है।

—जब कोई कमसिन बच्चा बड़ी-बड़ी बातें बघारे, तब उसे चुप करने के लिए यह कहावत कही जाती है।

—जो लड़का अपनी उम्र से अधिक सयानापन दिखाये।

पाठा : हाल तौ ढेकां रौ थूक ई को सूख्यौ नीं।

हाल तौ दिल्ली आंतरै। १४८३५

अभी तो दिल्ली दूर है।

—अभी तो रास्ता बहुत तय करना है।

—जब करने के लिए बहुत काम बाकी पड़ा हो।

—आलसी व्यक्ति को उत्साहित करने के लिए कि अभी से विश्राम करने लगे तो दिल्ली कब पहुँचोगे?

हाल तौ दूधिया दांत ई नीं तूटा। १४८३६

अभी तो दूध के दाँत भी नहीं टूटे।

—जो इतनी बढ़-बढ़कर बातें छौंक रहे हो, अभी तुम्हारी उम्र वैसी नहीं हुई है।

—जो बच्चा छोटी उम्र में ही गलत राह पड़ जाता हो, तब उसे समझाने के लिए यह कहावत प्रयोग में ली जाती है।

हाल तौ पनजी पनरै बार परणीजसी। १४८३७

अभी तो पनजी पंद्रह बार ब्याहेंगे।

—जिस रसिक के मन में औरतों के प्रति चाह का कोई पार न हो।

—जो व्यक्ति हमेशा अपने बारे में कुछ-न-कुछ नई शेखी बघारता हो।

हाल तौ पायली में पाव ई को पीसीज्यौ नीं। १४८३८

अभी तो 'पायली' में पाव भी नही पीसा गया।

दे.क.सं.१३२

हाल तौ पोतड़ा ई सूखै है। १४८३९

अभी तो पोतड़े ही सूख रहे है।

—जो लड़का वयस्क होने के पहिले ही औरतों में रुचि लेने लगे, उसके प्रति कटाक्ष।

—छोटी उम्र में बहादुरी दिखाने वाले के लिए...।

हाल तौ म्हारौ मड़ौ थारा जीवता नै उथापै। १४८४०

अभी तो मेरा मुर्दा तेरे जिदा को पटकी दे।

—भले ही मेरी आर्थिक स्थिति बिगड़ गई हो, पर तुम्हें तो आज भी मोल ले सकने का माद्दा रखता हूँ।

—दिवालिये सेठ का दर्प कि वह अब भी अनेक धनाढ्यों से बेहतर है।

हाल तौ लोटा नै जळ-ठांव कैवणौ बाकी। १४८४१

अभी तो लोटे को जलपात्र कहना बाकी है।

दे.क.स १४८३१

हाल तौ सेर में पूणी ई नीं कतीजी। १४८४२

अभी तो सेर मे लच्छी भी नही काती गई।

—जब करने के लिए बहुत काम बाकी पड़ा हो।

—आलसी व्यक्ति के उद्बोधन की खातिर।

मि.क.सं.१४८३८

हाल तौ हळदी, हाटां में इज बोलै। १४८४३

अभी तो हलदी, बाजार मे ही बोले।

—किसी बिगड़ते काम को बीच में रोकने के लिए यह कहावत प्रयुक्त होती है।

—किसी लड़की का संबंध मनवांछित जगह पर न हो, तब...।

हाल तौ हांचळां रौ दूध ई नीं सूख्यौ । १४८४४

अभी तो स्तनों का दूध भी नही सूखा ।

दे.क.सं.१४८३६,१४८३९

पाठा : हाल तौ होठां हांचळां रौ दूध ई बासै ।

हाल रात आडी है । १४८४५

अभी रात बाकी है ।

—सफलता का सूर्य उगने के पहिले अभी तो रात का दुर्भेद्य अँधेरा बाकी है,उसमें जाने क्या-क्या अजानी बाधाएँ टिमटिमा रही हैं ?

—किसी भी काम की सफलता के पहिले आशाएँ सँजोना उचित नहीं ।

हाल रे बळदिया थारौ धणी हलावै ज्यूं । १४८४६

चल रे बैल तेरा मालिक चलाये ज्यो ।

दे.क.सं.४३५५

हाल रे म्हारा कागला, ज्यूं हाल्या थारा आगला । १४८४७

चल रे मेरे कौवे, ज्यो चले तेरे पूर्वज ।

दे.क.म.४३५४

हाळिअे हूझे खेतनूं, धणीअे हूझे बार नूं ।–भी.७९३ १४८४८

हाली को खेत की ही सूझती है, मालिक को बाहर की भी सूझती है ।

—हाली को जिम काम की मजदूरी मिलती है,वह फकत उसी काम की चिता रखता है,पर मालिक को तो सब तरफ चौकसी रखनी पड़ती है ।

—नौकर तो काम-से-काम रखता है,पर मालिक तो नौकर के साथ साथ अन्य कई बातों का ध्यान रखता है ।

हाळी किणनै कमाय घालै ! १४८४९

हाली किसे कमाकर दे !

दे.क.सं.४२९८

हाळी तौ खेत खड़ण रौ बेली हुवै। १४८५०

हाली तो खेत जोतने का जिम्मेदार होता है ।

—फसल बोने का काम मजूर का पर फसल कितनी होती है, यह जिम्मेदारी उमकी नहीं।

—फसल की पैदावार मालिक के भाग्य पर निर्भर करती है ।

—काम करने का अधिकार अपना है, फल देना न देना ईश्वर के अधीन है ।

हाळी फिरै उतावळौ अर हळ में सोळवीं पांती। १४८५१

हाली फिरे उतावला और हल मे हिस्सा सोलहवॉ ।

—हिस्सेदारी अकिचन और उत्साह का प्रदर्शन ज्यादा ।

—जो भोला व्यक्ति कम लाभ में भी अत्यधिक खुशी दरसाये ।

हाळी बह-बह थाक्यौ, धणी री हांम ई नीं पूरीजी। १४८५२

हाली दौड-दौडकर थका, मालिक की चाहना ही पूरी न हो ।

—नौकरों के प्रति कोई भी म्वामी मवेदनशील नही हो सकता ।

—जो मालिक नौकरो के लिए नितात अधा-बहरा हो । काम के मित्राय न तो उनका कष्ट उसे दिखाई देता है और न उनकी आहे उमे सुनाई देती है ।

—जिस अधिकारी को मातहतो की तनिक भी परवाह न हो ।

हाळी रै रगत सूं गवूं राता व्हैं। १४८५३

हाली के खून से गेहूँ लाल होते है ।

—जो खेत मे पसीना बहाता है, उसी की मेहनत से फसल पकती है ।

—मेहनत से ही सारे काम संपन्न होते है ।

पाठा : मैणत टाळ मजीठिया (गेहूँ) कठै ?

हालुवां हगाळ नी वळे।– भी ३६० १४८५४

गेहूँ पकने से पूरा नही पडता ।

—यह पहाडी इलाकों की आचलिक कहावत है । गेहूँ रबी की फसल का अनाज है, जो कुओ की सिचाई से पकता है । इसकी उपज पहाड़ों में कम होती है । इससे पूरा नही पडता, जब तक कि खरीफ की पैदावार पर्याप्त न हो ।

—हर क्षेत्र की अपनी-अपनी उपज और अपनी-अपनी जरूरतें होती हैं।

हालूं नीं चालूं नीं, म्हारौ नांव अचपळी। १४८५५

चलूँ न डोलूँ, मेरा नाम चंचला।

नाम के विपरीत आचरण।

पाठा: हिलीजै नीं, डुलीजै नीं, नांव म्हारौ अचपळी।

हालीजै नीं चालीजै, म्हारौ नांव अचपळी।

हालौ भाई जीवड़ा! साईना री सगायां व्है। १४८५६

चल मेरे जीव! साथियों की सगाइयाँ हो रही हैं!

—किसी बूढ़े व्यक्ति ने हम-उम्र बताकर किसी युवक की सगाई तुड़वा दी कि यहाँ तो बैठने का ही धर्म नहीं है,मेरी उम्र के बूढ़े व्यक्ति की सगाई हो रही है। सगाई की बातचीत चल रही थी और युवक बाहर गया हुआ था। बूढ़े का अप्रत्यक्ष इशारा पाकर कन्या-पक्ष वाले बहाना बनाकर लौट गये।

—ईर्ष्यावश किसी बनते हुए काम में विघ्न उपस्थित करना।

हाल्यां हालै, बैठ्यां बैठै अर सूयां सूवै। १४८५७

चलने से चलना, बैठने से बैठना और सोने से सोना।

—जो व्यक्ति चलता है,उसका भाग्य भी चलता है,जो व्यक्ति बैठता है,उसका भाग्य भी बैठ जाता है और जो व्यक्ति सोता है,उसका भाग्य भी सो जाता है।

—कर्म करने वाले का भाग्य भी सक्रिय होता है और निठल्ले का भाग्य निष्क्रिय।

हाल्या जित्तौ ई सांढ़ौ। १४८५८

चले जितना ही साथ।

—जब तक साथ निभा,बेहतर है।

—जितने समय तक एकता रही,वही ठीक है।

—जो निभा उसके लिए ही संतुष्ट रहना चाहिए और जो नहीं निभा उसके प्रति शिकायत करना मुनासिब नहीं।

हिं - ही

हिंजड़ा कद बजार लूट्यौ ? १४८५९

हिजड़ो ने कब बाजार लूटा ?

—असमर्थ व्यक्तियो के द्वारा कोई बड़ा काम सपन्न नही हो सकता।

—छोटे-बड़े कैसे भी काम के लिए योग्यता और शक्ति दोनों अपरिहार्य हैं।

मि क.सं.९९४३

हिंदुवां रै छोटा नै ई मुस्कल। १४८६०

हिदुओं मे छोटे को ही मुश्किल।

—फारसी में बिल्कुल इससे मिलती-जुलती कहावत है—सग बाश बिरादर-खुर्द मबाश। मतलब कि कुत्ता होओ छोटा भाई मत होओ।

—यदि किसी परिवार में दस व्यक्ति किसी मे बड़े हैं तो काम के सिलसिले में बेचारे की शामत आ जाती है। एक काम सपूर्ण हुआ नही, उसके पहिले दूसरा तैयार। बेचारे को नींद से जगाने में भी किसी को रहम नहीं आता, कुछ-न-कुछ काम तैयार।

हिंदू कैवतौ सरमावै, लड़तौ को सरमावै नीं। १४८६१

हिंदू कहते शर्माता है, लड़ते नही शर्माता।

—हिंदू पहिले तय करने में कृत्रिम संकोच दिखाता है, पर बाद में मामूली स्वार्थ की खातिर लड़ने में लज्जा का अनुभव नही करता।

—जो व्यक्ति शुरुआत में तो कुछ निश्चित न करे और काम पूरा होने पर झगड़ा करने को झटपट तैयार हो जाय।

हिंदू मरै जठै ई हद। १४८६२

हिंदू मरे वहीं हद।

—कब्र में दफ्न किये जाने वाले शव तो कब्रिस्तान में साढ़े तीन या पौने चार हाथ जमीन पर अधिकार जमाये रहते हैं पर हिंदू तो जलने के बाद मुट्ठी राख के अलावा कहीं कुछ भी अधिकार नहीं जमाता। मरने के साथ ही उसकी जीवन लीला समाप्त हो जाती है।

हिंदू लड़तौ लाजै, कौल करतौ नीं लाजै। १४८६३

हिदू लड़ते शर्माता है, कौल करते नही शर्माता।

—जो व्यक्ति पहिले कौल करने में तो उदारता दिखाये और बाद में छोटी बात पर निर्लज्ज की तरह लड़ने लगे।

—पहिले सारी बातें पक्की कर लेने पर बाद में झमेले की गुंजाइश ही नहीं रहती।

हिचकी, धांसी, उबासी, अै तीनूं काळ री मासी। १४८६४

हिचकी, जम्हाई, खाँसी, ये तीनो काल की मासी।

मासी = मौसी।

—छोटी-छोटी विकृतियाँ लापरवाही से बड़ी होकर घातक हो जाती हैं।

—यदि किसी रुग्णता का प्रारंभ में यथायोग्य उपचार हो जाय तो वह बाद में बढ़ती नहीं, वरना खतरनाक रूप धारण कर लेती है।

हिड़किया कूतरा हिरणां रै लारै दौड़ै। १४८६५

पागल कुत्ते हिरणों के पीछे भागते हैं।

—मूर्ख या पागल व्यक्ति ही व्यर्थ काम का पीछा करते है।

—जिस काम से किंचित् भी फल प्राप्ति न हो, उसे न करना ही लाभदायक है। और कुछ नहीं तो समय एवं मेहनत तो बचती ही है।

हिड़किया वाळी लाळ। १४८६६

पागल कुत्ते वाली लार।

—संक्रामक बीमारी से हमेशा दूर रहना ही उचित है।

—रिश्ता है तो व्यक्तियों से है, बीमारी से नहीं। अतएव छूत वाली असाध्य बीमारियों से दुश्मन की नाईं परहेज रखना चाहिए। कामासक्त व्यक्ति के लिए भी।

हिड़कियौ कुत्तौ ढाई घड़ी के ढाई दिन रौ। १४८६७

पागल कुत्ता ढाई घड़ी या ढाई दिन का।

—ऐसी मान्यता है कि पागल कुत्ता या तो ढाई घड़ी में या ढाई दिन में मर जाता है। यदि पागल कुत्ते के काटे का समय पर उचित उपचार न हो तो वह तीन घंटे, या तीन दिन या तीन मास या तीन साल में कूच कर जाता है।

—आततायी, दुष्ट व अन्यायी का देर-सबेर अंत होता ही है।

पाठा : हिड़कियौ अढ़ाई दिन रौ इज व्है। हिड़कियौ ढाई दिन में मरै।

हिड़कियौ कुत्तौ तौ बरकां ई करसी। १४८६८

पागल कुत्ता तो पिपियाता ही है।

—पागल या लालची व्यक्ति हर किसी से अकारण झगड़ा करता रहता है।

—दुष्ट व्यक्ति गरीब पर दहाड़ता ही रहता है।

हिड़की रा कांन अपड़ीजग्या! १४८६९

पागल कुतिया के कान पकड़ लिए!

—न हमेशा के लिए उसे पकड़कर रखा जा सकता है और न छोड़ा जा सकता है।

— जब कोई व्यक्ति ऐसी दुविधा-जनक स्थिति में फँस जाय, जिसका निवारण आसानी से न हो सके।

हिड़क्या नै आकड़ौ दीन्हौ। १४८७०

पागल कुत्ते को आक दिया।

—किसी दुष्ट व्यक्ति को छेड़कर और उत्तेजित करना।

—जब किसी आतताई को उसके दुष्कर्मों का उचित दंड मिल जाय।

हिड़हिड़ हंसै कुम्हारड़ी , माळण रा चरग्या बूंट । १४८७१
यूं मत हंसै कुम्हारड़ी , जांणै किण कड़ बैठै ऊंट ॥
हड़हड़ हँसे कुम्हारी, मालिन के चर गये बूँट ।
तू मत हँसे कुम्हारी, जाने किस करवट बैठे ऊँट ?
दे.क.सं.१२८७

हित अणहित पसु-पंछी जांणै । १४८७२
हित-अनहित पशु-पक्षी जानें ।
—यह पड़ताल करना आसान नहीं है कि भक्त कवियों की सूक्तियों ने लोकोक्ति का रूप धारण कर लिया या जन-मानस में प्रचलित लोकोक्तियाँ भक्त कवियों की कलम से निखार पा गईं, आखिर वे सब भी तो एक ही समाज और एक ही वाणी के भागीदार थे । तुलसी बाबा न इस सूक्ति के बहाने सर्व-कालिक और सर्व-देशीय सत्य उद्‌घाटित किया है कि अपना भला-बुरा मनुष्य की बात तो दूर, सब पशु-पक्षी और कीट-पतंग भी जानते हैं ।
—मूर्ख-से-मूर्ख व्यक्ति अपने स्वार्थ के प्रति पूरा सतर्क रहता है ।

हिमकै पड़ीयौ छूटूंगौ , नै पड़ीयौ डोबर कूटूंगौ ।–व.१७३ १४८७३
इस बार आफत से छूटा तो फटा बाँस बजाऊँगा ।
डोबर = डोबरौ = दरार पड़ा हुआ मिट्‌टी का बर्तन या फटा हुआ बाँस, जिन्हें बजाने पर विशेष किस्म की ध्वनि निकलती है ।
—निर्लज्ज एवं निठल्ले व्यक्ति के सारे काम बेहूदे ही होते हैं ।
—बेहया व्यक्ति को सजा भी दी जाय तो उस पर उसका कुछ भी असर नहीं होता ।

हिमायती री गधी , हाथी रै लात मारै । १४८७४
हिमायती की गधी, हाथी को लात मारती है ।
—हिमायत करने पर निर्बल व्यक्ति का साहस भी काफी बढ़ जाता है ।
—मौके पर हिमायत का संबल बहुत बड़ा होता है ।

हिमायती री गधी होय रही । १४८७५
हिमायती की गधी हो गई ।

—जो व्यक्ति बड़े व्यक्तियों की हिमायत पाकर अन्य छोटे-मोटे व्यक्तियों की परवाह न करे।

—बड़े आदमियों की पक्षधरता के कारण जो व्यक्ति दंभी हो जाय।

हिम्मत मरदां री, मदत खुदा री। १४८७६

हिम्मत मर्दों की, मदद खुदा की।

—आदमी को हिम्मत रखकर खूब मेहनत करनी चाहिए फिर ईश्वर उसकी मदद में कोई कमी नहीं रखेगा।

—हिम्मत मर्द की, मदद खुदा की—बस मनुष्य जीवन की सफलता के लिए यह मूल-मंत्र काफी है।

हियौ-फूटोड़ौ खळ-गुळ अेकण भाव आदरै। १४८७७

हिया-फूटा खली और गुड़ को बराबर समझता है।

मूर्ख व्यक्ति चीजों के महत्त्व को सही रूप में नहीं आँक सकता।

—नासमझ या नीम-पागल मनुष्य छोटे-बड़े व्यक्तियों का उचित आदर नहीं कर सकता।

हिरण ऊंचौ कूदै तौ ई पग नीचा मांडै।—व.२७८ १४८७८

हिरण ऊँचा कूदता है लेकिन पॉव नीचे ही टिकते हैं।

—कोई भी व्यक्ति चाहे जितना हवा में उड़े, अंततोगत्वा उसे ठोस धरती पर आना ही पड़ता है।

—पृथ्वी पर उतरे बिना पायलट का भी काम नहीं चल सकता, हवाई-जहाज में वह चाहे कितनी ही लंबी उड़ानें क्यों न भरे?

हिरण किसा घी खाय? १४८७९

हिरण कब घी खाते हैं?

—दो संवादात्मक दोहों में उक्ति संपूर्ण होती है:

कळै मत कर कांमणी घोड़ां घी देतांह।

कदयक आडा आवसी, वाढ़ाळी वेतांह॥

आग हकै, पवन भखै, तुरियां आगळ जाय।

हूं थनै पूछूं सायबा, हिरण किसा घी खाय?

कोई योद्धा अपनी पत्नी को नसीहत दे रहा है—हे कामिनी ! तू घोड़ों को घी देते समय कलह मत कर। युद्ध में तलवारों की टक्कर के दौरान ये कभी आड़े आएँगे। तब इनको खिलाया हुआ घी-दूध एक ही बार में वसूल हो जाएगा।

पत्नी जवाब देती है—हे साजन ! मैं यह पूछना चाहती हूँ कि ये जंगल के हिरण घी कब खाते हैं ? वे तो आग सहते हैं, हवा का भक्षण करते हैं और वे घी खाने वाले घोड़ों को बहुत पीछे छोड़ देते हैं।

— अजगर को चाहे जितना घी खिलाओ, उसकी चाल तो किंचित् भी नहीं बदलेगी। जिसकी जैसी प्रकृति होती है, वह वैसा ही चलता, दौड़ता है।

दे.क.सं.१९१२

हिरण खुरी दो आंगळी, धरती लाख पसाव। १४८८०
लिख्या विध रा नंह टळै, जंह पासा तंह पाव॥

हिरण खुरी दो अंगुली, धरती लाख पसाव।
लेख विधाता ना टले, जहाँ पासा तहँ पाँव॥

—यों तो हिरण घोड़ों के हाथ भी नहीं आते, फिर शिकारियों की तो बिसात ही क्या ? लेकिन मनुष्य के दिमाग का कोई पार है भला ! वे जंगल में कई स्थानों पर हिरण का पाँव फँसने के फंदे डाल देते हैं। उस पर पाँव पड़ा नहीं कि फंदे के अंदर। लाचार हिरण वहीं छटपटाता रहता है। यह सब विधि का खेल है, भाग्य का ही परिणाम है। धरती के विस्तार का कोई पार है भला ! जिस पर हिरण का खुर सिर्फ दो अंगुल का ! लेकिन विधि का लेख होगा, वहीं तो हिरण का पाँव पड़ेगा। पासे में फँसना है तो उसे कोई बचा नहीं सकता।

—किसी झाड़ी या पेड़ का पत्ता भी हिलता है तो विधाता के आदेश से, उसको टालने का सामर्थ्य किसी में भी नहीं है।

हिरण खोड़ा व्है वांरौ नांव लियां। १४८८१

हिरण लँगड़ाने लगते हैं, उनका नाम सुनकर।

—जिस व्यक्ति का सर्वत्र भयंकर आतंक हो कि जिसका नाम सुनकर हिरण भी अपनी चाल भूलकर लँगड़ाने लगें। ऐसी हस्तियों के बारे में अमूमन इस कहावत का हवाला दिया जाता है।

—जिस डकैत या बहादुर व्यक्ति का नाम सुनकर सारे शरीर में कँपकँपी छूटने लगती हो।

हिरण रा सींग गादड़ा नै कद सुहावै। १४८८२

हिरण के सीग, सियार को कब सुहाये।

—हिरण के तीखे सींगों की वजह से सियार उसका शिकार नहीं कर सकते। एक ही टक्कर में हिरण का सींग सियार के पेट को चीर डालता है। सियार दूर से ही देखकर हिरण के मांस की खातिर ललचाता रहता है। फिर भला उसके सीग सियार को क्यो अच्छे लगें?

—ईर्ष्या के वशीभूत हर मनुष्य अपने से बडे को नापसद करता है।

हिरण री सीगड़ी में को वड़ीजै नीं। १४८८३

हिरण के सींग मे नही घुसा जाता।

— जिस मुश्किल काम को करना सभव नही हो।

[illegible]तना ही दबाव पडे अपनी मरजी के खिलाफ किसी की खुशामद तो नही की जा सकती।

हिरण री सीगड़ी में वड़गी। १४८८४

[illegible]रण के सींग मे घुस गई।

--किसी भी कीमत पर कोई चीज उपलब्ध न हो तब कहा जाता है कि उसका तो मिलना ही दु[illegible]भ है, कही हिरण के सीगो मे तो नही घुस गई?

-- अत्यधिक महँगाई के कारण जो चीज हाथ न लगे, तब . ।

हिरणां लारै घोड़ा दाबणा। १४८८५

हि[illegible]णो के पीछे घोडे दौडाना।

—[illegible]र्थ परिश्रम के लिए, जिसका कुछ भी नतीजा न निकले।

—ज[illegible] काम किसी भी सूरत मे सभव न हो, उसे शुरू ही नहीं करना चाहिए। जब कैसा भी ते[illegible] दौडने वाला घोडा, हिरण को पकड़ ही नही सकता, फिर उसका खामखाह पीछा करने से [illegible]था लाभ?

पाठा हिरणा लारै दौड़णौ।

हिरणी नै जीव वाल्हौ, आहेड़ी नै मांस वाल्हौ। १४८८६

हिरणी को जीव प्यारा, शिकारी को मास प्यारा।

—हर प्राणी को अपने प्राणों से अत्यधिक प्रेम होना तो स्वाभाविक ही है, पर शिकारी का मांस के लिए ललचाना तो स्वाभाविक नहीं है, उसका घिनौना स्वार्थ है।

—एक पक्ष तो अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए जानवरों का मांस खाने को आतुर है और दूसरा पक्ष अपने प्राण बचाने की चेष्टा के लिए विह्वल है। यह संघर्ष क्या कभी मिट सकेगा?

—गरीबों और अमीरों की भी कुछ ऐसी ही समस्या है--गरीबों को तो अपने प्राणों की रक्षा के लिए मजदूरी करना आवश्यक है और उधर मुनाफे की खातिर अमीरों के द्वारा गरीबों को जिंदा रखना भी जरूरी है।

दे.क.सं.१९१८

हिरणी रा जायां नै हिरणी रा जाया इज पूगै। १४८८७

हिरणी के छौने ही हिरणी के छौनों की बराबरी कर सकते हैं।

—बहादुरों के बच्चे ही बहादुरों की बराबरी कर सकते हैं।

—बनियों के बच्चे ही व्यवसाय में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

हिरणी रा जायां में कुण माठौ? १४८८८

हिरणी के छौनों में कौन आलसी?

—व्यवसाय की दृष्टि से बनिये के बच्चे एक-से-एक बढ़कर माहिर होते हैं।

—जिस परिवार के बच्चे कार्य करने में अत्यधिक कुशल हों, उनके लिए।

—चोरों के बच्चे ही चोरों का मुकाबला कर सकते हैं।

पाठा: हिरण्यां रा जाया कदै ई माठा नीं व्है।

हिरणी रा हजार नै सिंघणी रौ अेक। १४८८९

हिरणी के हजार और शेरनी का एक।

—हजार कायरों के मुकाबले एक शूरवीर बढ़कर होता है।

—बनियों की व्यावसायिक कुशलता के लिए भी यह कहावत प्रयुक्त होती है कि दूसरी जातियों के बच्चे व्यापार में बणिक-बच्चों की होड़ नहीं कर सकते।

हिरणी री हाली स्याळियौ जांणै। १४८९०

हिरणी की चाल सियार जानता है।

दे.क.सं.१४५३१

हिरण्यां वाळी टोळी है। १४८९१

हिरणों वाली टोली है ।

—चंचल बच्चों की टोली जो खेल-कूद में मस्ती मना रही हो ।

—हिरणों को अपने समूह से बड़ा लगाव रहता है.एक दूसरे की जुदाई उन्हें अखरती है । ऐसी ही मित्र-मंडली की ओर इशारा है जो हमेशा साथ रहती हो ।

हिरदै गांठ तौ हाली में आंट। १४८९२

हृदय में गाँठ तो चाल में आँट ।

—मन में कपट हो तो चाल में भी टेढ़ापन आ जाता है ।

—भीतर की दुष्टता किसी-न-किसी रूप में बाहर प्रकट हो ही जाती है ।

हिलायां टाळ ओझै। १४८९३

हिलाये बगैर ओझे ।

ओझै = ओझणौ = अधिक आँच लगने से तली में कुछ चिपक जाने से द्रव या गाढ़े पदार्थ का जल जाना ।

—समुचित सतर्कता व होशियारी के बिना काम बिगड़ता है ।

—हर छोटे-बड़े काम के लिए उपयुक्त निगरानी अनिवार्य है,नहीं तो गड़बड़ होने की संभावना बनी रहती है ।

हिलायां दाळ बिगड़ै, लडायां पूत बिगड़ै। १४८९४

हिलाने से दाल बिगड़ती है, दुलारने से पूत बिगड़ता है ।

—छेड़छाड़ से काम बिगड़ता है और अधिक प्यार करने से बच्चे बिगड़ते हैं ।

—अच्छी तरह चलते काम में नुक्स निकालना उचित नहीं,इसी तरह बच्चों का आवश्यकता से अधिक लाड़ करना भी ठीक नहीं ।

पाठा : हिलायां दाळ बिगड़ै अर बांदरां बनराय बिगड़ै ।

हिलियौ चोर गुलगुला खाय। १४८९५

हिला हुआ चोर गुलगुले खाये ।

—किसी भी काम का चस्का लग जाने के बाद उसे बंद करना वश की बात नहीं रहती।

—चस्के-बाज व्यक्ति की अपनी मजबूरी होती है कि वह स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख सकता।

हिल्योड़ी कुत्ती गाबड़ भंगावै। १४८९६

हिली हुई कुतिया गर्दन तुड़ाये।

—पकड़े जाने पर आदतन बदमाश की अच्छी तरह मरम्मत हो, तब...।

—अभ्यस्त अपराधी को आखिर दंड मिलता ही है।

हिल्योड़ी कूतरी फेरूं आसी। १४८९७

हिली हुई कुतिया फिर आएगी।

—चस्का लग जाने के बाद रुकना आसान नहीं होता।

—आदतन बदमाश कुछ-न-कुछ बदमाशी किये बिना रह नही सकता।

—लपट व्यक्ति अपने मन को वश में नहीं रख सकता।

हिल्योड़ी नित लूंकड़ी, अड़क मतीरा खाय। १४८९८

हिली हुई लोमड़ी, अडक मतीरे खाय।

अडक = अशुद्ध बीज का अनाज, माग या फल जो खाने मे कड़वा होता है।

—चस्का लग जाने के बाद भले-बुरे का ध्यान नही रहता।

—लपट व्यक्ति जात-कुजात और सुंदर-असुंदर नहीं देखता।

पाठा : हिली-हिली वांदरी गुळ-मतीरा खाय।

हिवड़ै होळी अर दांतां दीवाळी। १४८९९

हृदय मे होली और दाँतो पर दीवाली।

—परिवार में बहू की स्थिति ऐसी ही होती है कि दिन-भर काम और ऊपर से झिड़कियाँ। उसके भीतर होली-सी जगी रहती है पर वह किसी को जता नही पाती। मुस्कराने के बहाने अपने कष्ट को छिपाने की चेष्टा करती है।

—विवाहिता नारी के लिए दुखमय स्थिति और मर्यादा के बीच जो संघर्ष रात-दिन चलता है, वह कभी मिटता नही, दिल में होली और दाँतों पर दीवाली।

हिसाब बाप-बेटा रौ, बगसीस लाख री। १४९००

हिसाब बाप बेटे का, बख्शिश लाख की।

देक.सं.८७०४,१२९१४,१२९१५

हिसाब बैठै ज्यूं रौ त्यूं, टाबर-टाबर डूब्या क्यूं? १४९०१

हिसाब बैठे ज्यो-का-त्यो, लड़के-वड़के डूबे क्यों?

संदर्भ-कथा : एक लहीम-शहीम बनिया तीन बच्चों को साथ लेकर अपने ससुराल जा रहा था। तीनों ही बच्चे छोटे थे—एक आठ बरस का, एक दस बरस का और एक बारह बरस का। बनिये का हिसाब बच्चों के बारे में भी एकदम सही निकला था। यों हिसाब-किताब के मामले में होशियार भी काफी था। कहीं अटकने पर आस-पास के सेठ साहूकार उसे बुलाते थे। अपने गाँव और ससुराल के बीच एक नदी पड़ती थी। चौमासे-चौमासे चार महीने नदी बहती और बाकी आठ महीने सूखी रहती। छोटे भाई की शादी पर बहू मायके गई हुई थी। बनिया व्यापार की खातिर इतने दिन कहीं बाहर थोड़े ही रह सकता है! शादी से एक दिन पहिले ही उसने जाना मुनासिब समझा।

रास्ते में एक गड़रिया मिला। उसने कहा, 'सेठजी, नदी में कुछ पानी चढ़ गया है। बच्चों के लिए पार करना थोड़ा मुश्किल रहेगा। पर आपके लिए कुछ कठिनाई नहीं। जब मैं पार हो गया, फिर आप तो मुझ से भी सवा बालिश्त लंबे हैं। जाना जरूरी हो तो बच्चों को कंधों पर बिठाकर पार कर सकते हो। वरना कल जाएँ तो ज्यादा अच्छा रहेगा।'

बनिये ने मुस्कराते हुए लापरवाही से कहा, 'कल? कल किसने देखा? हम सेठ साहूकार तुम गँवारों की तरह कल पर कोई काम नहीं छोड़ते। हमारा हिसाब-किताब ही अलग है। देख रहे हो—यह गज और यह लाठी! सब हिसाब ध्यान में है।'

गड़रिया भी देखा-देख मुस्कराया। बोला, 'तब कोई डर नहीं। चलिये आज मैं भी साथ चलकर आपका हिसाब समझ लूँ।'

'चल बड़े शौक से चल। कुछ-न-कुछ सीखना तो बेहतर ही है।'

नदी के पास पहुँचते ही सेठ ने धोती खोलकर, लंबा गमछा कमर से बाँध लिया। कुरता और साफा भी उतारकर धोती में बाँध लिये। नदी ज्यादा तेज नहीं थी। बनिये ने जूते खोलकर गठड़ी गड़रिये को थमा दी। चुटकी बजाते हुए कहा, 'अभी चुटकियों में सारा हिसाब लगा लेता हूँ।'

वह लाठी और गज लेकर नदी में उतर पड़ा। कई ठौर लाठी डुबोकर गज से नापता रहा। बीच में सबसे ज्यादा पानी था—उसके कंधों तक। गड़रिया बड़े आश्चर्य से बनिये का हिसाब देख रहा था। थोड़ी देर बाद ही बनिया खुशी दरसाते हुए बाहर आया। कहने लगा, 'मैंने कई जगह नापकर पानी का औसत निकाल लिया—एकदम सवा दो फुट। सबसे छोटे वाला बच्चा तीन फुट है। पानी से डरने की कोई बात नहीं।' फिर बच्चों की ओर देखकर आश्वस्त लहजे से बोला, 'हाथों में जूते लेकर मजे से चलो। मैं सबसे आगे चलता हूँ।' तीनों बच्चें तालियाँ बजाते हुए नदी में अलग-अलग ठौर उतर गये।

बनिया अपने सही हिसाब के गुमान में छपाछप आगे बढ़ रहा था कि उसके कानों में जोर से हल्ला सुनाई पड़ा—रुको, रुको। पीछे घूमकर देखा—गड़रिया नदी में कपड़ों समेत ही उतर गया। इधर-उधर झाँका—बच्चे कहीं दिखाई नहीं दिये। इतने में क्या देखता है कि सबसे छोटे बच्चे को वह बाहर उतारकर वह फिर पानी में कूद पड़ा। अदेर समझ गया कि तीनों बच्चे पानी में डूब गये थे। अगले ही क्षण गड़रिया दोनों बच्चों के हाथ पकड़े बाहर जाने लगा। सबसे छोटे भाई का चिल्लाना सुनकर दोनों बड़े भाई भी रोने लगे। तब तक बनिया भी बाहर आ गया। गमीमत है कि तीनों बच्चे गड़रिये के प्रताप से बच गये। सो तो अच्छा ही हुआ। लेकिन हिसाब तो एकदम सही था, फिर बच्चे डूबे क्योंकर? कहीं नदी का पानी और ऊपर तो नहीं चढ़ गया।

गड़रिये ने ठहाका मारते कहा, 'सेठजी, हिसाब के भरोसे तो तीनों बच्चे डूब गये होते। बही के हिसाब और नदी के हिसाब में बहुत फर्क होता है। आप इस झंझट में पड़े ही क्यों? पर वापस लौटते समय इस हिसाब के चक्कर में मत फँसियेगा। भाग्य से आपका हिसाब समझने की नीयत से मैं भी साथ चला आया, वरना आपके खाते में फकत हिसाब रह जाता और नदी अपने खाते में तीनों बच्चों को टीप लेती। आप तो हाट-बही का ध्यान रखें और कुदरत का हिसाब हमारे जिम्मे सौंप दें...।'

'लेकिन देवासी, मेरा हिसाब तो सोलह आने सही था, तू कहे तो एक बार और मिलान करके देख लूँ।'

'फिर कभी अकेले में देख लीजियेगा। अभी तो बच्चों को इनके ननिहाल ले जाइये। सबसे छोटा बच्चा अपने कंधे पर बिठा लीजिये और मैं दोनों बच्चों को बिठा लेता हूँ।'

बनिये ने जवाब तो कुछ भी नहीं दिया। पर उसके दिमाग में वही समस्या गूँज रही थी।

—मनुष्य की गणित से प्रकृति संचालित नहीं होती, वह तो अपने ही नियम-कायदों से चलती है।

हींग जाय पण बास नीं जाय। १४९०२

हींग जाय पर बास न जाय।

—मनुष्य तो हमेशा के लिए कूच कर जाता है पर उसके गुण याद आते रहते हैं।

—मनुष्य मर जाता है, पर उसका नाम नहीं मरता।

हींग री गरज ई कोनीं सरै। १४९०३

हीग की गर्ज भी पूरी नहीं पड़े।

—सहयोग देना हो तो पर्याप्त दीजिये, इससे तो हींग की गरज भी पार नहीं पड़ेगी।

हींग लागी नीं फिटकड़ी, रंग चोखौ ई आयौ। १४९०४

हींग लगी न फिटकरी, रंग अच्छा ही आया।

दे.क.सं.१४५५७

हींगाणिया मीठा व्है तौ अेवाळ कद छोडै ? १४९०५

हीगानियें मीठे हों तो गड़रिये कब छोड़ें ?

हींगाणिया = काँटेदार एक जंगली पेड़, जिसके फलों का भी यही नाम है। इसके फल किसी भी उपयोग में नहीं आते।

—यदि अपने मतलब की कुछ भी चीज हो तो मनुष्य उसे कभी नहीं छोड़ता और काम की न हो तो उधर आँख उठाकर भी नहीं देखता।

—मनुष्य में गुण हों तो उसे सभी पूछते हैं और गुणहीन की कहीं कद्र नहीं होती।

—निकम्मे आदमी से कोई संपर्क नहीं रखना चाहता।

हींजड़ां री कमाई मूंछ मुंडाई में जावै। १४९०६

हिंजड़े की कमाई मूँछ मुँडाने में जाय।

—हिंजड़े औरतों के ही कपड़े पहिनते हैं और जहाँ तक बन पड़े वैसा ही हुलिया बनाकर रखते हैं। इसलिए उन्हें रोज दाढ़ी-मूँछ साफ रखनी पड़ती है। जिसके लिए खर्च भी कुछ अधिक होता है।

—फैशन पर ज्यादा खर्च करना अनुचित है ।

—फैशनपरस्त छैलों पर कटाक्ष ।

हींजड़ां रौ डंड फकीरां माथै । १४९०७

हिजड़ों का दंड फकीरो पर ।

—दोषी के बदले किसी निर्दोष को दंड भुगतना पड़े, तब...।

—जब किसी एक का भार दूसरे को वहन करना पड़े, तब...।

हींजड़ां लारै भदर व्हैगा । १४९०८

हिजड़ो के लिए भदर हो गये ।

दे.क.सं. ३२४१

पाठा : हीजड़ां लारै भदर ।

हींजड़ां सूं राज व्है तौ सूरमा कांई मकिया खावै ? १४९०९

हिजड़ों से राज हो तो शूरवीर क्या भुट्टे खाएँगे ?

—अयोग्य व्यक्तियों से शासन की बात तो दूर किसी भी काम की आशा नहीं रखनी चाहिए ।

—अक्षम व्यक्तियों को काम सौपा और वर्बाद हुआ ।

हींजड़ा ई कद गांव लूट्या ? १४९१०

हिजड़ो ने कब गॉव लूटे ?

दे.क.सं. ३२११

पाठा : हीजड़ा कद कतार लूटी ।

हींजड़ा कद जांन लूटी । १४९११

हिजड़ो ने कब बारात लूटी ।

दे.क.स.९९४३

पाठा : हीजड़ा कद बजार लूट्यो ।

हींजड़ा भावै बिरमचारी । १४९१२

हिजड़े मजबूरन ब्रह्मचारी ।

—जब कोई मनुष्य अपनी कमजोरी का औचित्य सिद्ध करना चाहे।

—जब कोई व्यक्ति अपनी मजबूरी को प्रभामंडित करना चाहे।

हींजड़ा रै पांनौ कद आवै? १४९१३

हिजड़े के कब दूध आये?

दे.क.सं.८८९०

हींजड़ा लारै भदर नीं होईजै। १४९१४

हिजड़ों के लिए भदर नहीं हुआ जाता।

—निकम्मे नेताओं का अनुयायी होना व्यर्थ है।

—अयोग्य श्रीमतों के पीछे समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।

हींजड़ा वाळी ताळी। १४९१५

हिजड़े वाली ताली।

—जिस बात का कुछ भी अर्थ नहीं हो।

—बेहूदी हरकत के लिये।

हींजड़ौ किणी कांम रौ कोनीं। १४९१६

हिजडा किसी काम का नहीं।

—निकम्मे व्यक्ति पर कटाक्ष।

—जो व्यक्ति न लीपने का न पोतने का।

हीणी जेवड़ी रै घणौ वट लागै। १४९१७

कमजोर रस्सी ज्यादा बटी जाती है।

—कमजोर व्यक्ति को अधिक गुस्सा आता है।

—गरीब व्यक्ति को सभी तंग करते हैं।

हीणै री बहू, भीणै री भाभी। १४९१८

कमजोर की बहू, सबकी भाभी।

दे क.सं.१७९८,३३१९

पाठा : हीणा री बहू नै सगळा भाभी कैवै।

हीणै रौ हिमायती हारै । १४९१९

कमजोर का हिमायती हारता है ।

दे.क.सं.४४८५

हीदा माते हारा चाटू दिए ।– भी.७९४ १४९२०

सीधे को सभी चाटू देते हैं ।

चाटू = काठ का चम्मच ।

—सीधे आदमी को सहायक मिल ही जाते हैं ।

—सरल प्रकृति के मनुष्य का साथ देने में सभी तैयार रहते हैं ।

हीमत कीमत होय, बिन हीमत कीमत नहिं । १४९२१

हिम्मत कीमत होय, बिन हिम्मत कीमत नहीं ।

—हिम्मत के जोर पर ही सारे कार्य संपन्न होते हैं ।

—हिम्मत के सहारे तो असफल व्यक्ति भी सफल हो सकता है ।

पूरा सोरठा इस प्रकार है :

हीमत कीमत होय, बिन हीमत कीमत नहिं ।
करै न आदर कोय, रद कागद ज्यूं राजिया ॥

हीया फूटनै हाथ में आया । १४९२२

हिया फूटकर हाथ में आया ।

—किसी लापरवाही का खराब नतीजा सामने आये, तब... ।

—किसी बुजुर्ग के द्वारा अनर्थ का काम करने पर... ।

हीया फूटा नै आंधा मिळै । १४९२३

हिया फूटे को अंधे मिल ही जाते हैं ।

दे.क.सं.१८४८

पाठा : हीया रा फूटयोड़ा नै आंख्यां रौ आंधौ मिळै रौ मिळै ।

हीया फूटी रै ढोलौजी प्रांमणा । १४९२४

हिया-फूटी के गँवार मेहमान ।

—नासमझ व्यक्ति का मूर्ख से संपर्क हो ही जाता है।

—किसी मूर्ख के साथ गँवार की मैत्री होने पर।

हीया फूटोड़ा कद भली बिचारै ? १४९२५

हिया-फूटे कब भली विचारते हैं ?

—नासमझ व्यक्ति भली विचारें तो उन्हें नासमझ ही कौन कहे।

—मूर्ख व्यक्ति को हमेशा औंधी बातें ही सूझती हैं।

हीया-फूटोड़ी मीरकी, करै मीरां री होड। १४९२६

मीरां तौ पीयगी विस रा प्याला, थूं पीवैला तौ जावैला पोढ़॥

हिया-फूटी मीरकी करे मीराँ की होड़।

मीराँ तो पी गई विष के प्याले, तू पीएगी तो जाएगी पोढ़॥

— ··· की समानता से ही जब कोई सामान्य व्यक्ति महान पुरुष की होड़ करना चाहे तो उसका नतीजा घातक ही होता है।

—स्वयं में गुणवत्ता हुए बिना बड़े मनुष्य की देखादेखी नहीं करनी चाहिए।

हीया री सूझै नीं, दूजा नै बूझै नीं। १४९२७

हिये की सूझे नही, दूसरे को बूझे नही।

—मूर्ख व्यक्ति का यही तो लक्षण है कि उसे स्वयं कुछ सूझती नहीं और न दूसरों की सूझ का वह लाभ ही उठाना चाहता है।

—जिस में अपनी समझ नहीं होती,उसे दूसरों की राय माननी चाहिए।

पाठा: हीये री उपजै कोनी, बिरमाजी री मांनै कोनी। हीया री उपजै नी, कह्योड़ी मांनै नी।

हीया रौ आंधौ सबसूं कावळ। १४९२८

हिये का अंधा सबसे बुरा।

—आँखों के अंधेपन की कमी पूरी की जा सकती है,पर हृदय के अंधेपन की कमी कहीं से पूरी नहीं की जा सकती।

—संवेदनहीन व्यक्ति सबसे बुरा होता है।

हीये कांघसी फेरौ । १४९२९

हिये पर कंघी फेरो ।

—बालों को सुलझाने की बजाय मन को सुलझाना ज्यादा जरूरी है ।

—हृदय को साफ रखना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है ।

हीये री बात होठां आवै । १४९३०

हिये की बात होंठों आये ।

—मन में दबी हुई बात आखिर तो होंठों के बाहर आती ही हैं ।

—या यों कहना ज्यादा उचित है कि जो कुछ भी मुँह से निकलता है,वह मन में पहिले से ही मौजूद रहता है ।

पाठा : हीये री व्है जकौ ई होठां आवै । हीये सो ई होठै ।

हीये रौ आंधौ , गांठ रौ पूरौ । १४९३१

हिये का अंधा, गॉंठ का पूरा ।

—जो व्यक्ति अव्वल दर्जे का मूर्ख तो हो पर जिसके पास धन की कमी नहीं हो,उसे फुसलाना मुश्किल नहीं होता ।

—मूर्ख कंजूस से मित्रता की जाय तो लाभ उठाया जा सकता है ।

हीये सूं आंधौ , पण आंख्यां सूं तौ दीसतौ हौ । १४९३२

हिये से अंधा, पर आँखों से तो दिखता था ।

—फिर ऐसी भयंकर भूल कैसे हुई,मूर्ख होने पर भी आँखों से तो साफ दिखता था ।

—कोई कंजूस व्यक्ति अचानक अप्रत्याशित उदारता बरते तब घरवाले उसे इसी रूप में उलाहना देते हैं ।

हीये हां नै मुंहडै ना ।–व.२२४ १४९३३

हिये मे हॉं और मुँह से ना ।

—औरतों की यही दुर्बलता है कि वे मन से चाहने पर भी मुँह से स्वीकार नहीं कर पातीं ।

—जो व्यक्ति इच्छा होने पर भी हामी नहीं भर सके,उसके लिए... ।

—मजबूरी के कई विभिन्न स्वरूप होते हैं ।

पाठा : हिवड़ै हां अर मूंडै ना।

हीयोजी जावै फूट, कुसंगी मिळतां थकां। १४९३४

हिया जाये फूट, कुसंगी साथी मिले।

—खराब संगति से पहिले-पहल मति ही भ्रष्ट होती है। फिर भले-बुरे की पहिचान समाप्त हो जाती है। फिर न मर्यादा का नियंत्रण और न मान्यताओं का अंकुश।

हीयोजी होवै हाथ, कुसंगी केता ई मिळौ। १४९३५

हिया हो अपने हाथ, कुसंगी कितने ही मिलो।

—जब अपना मन पूरी तरह अपने वश मे हो तो खराब संगत का कुछ भी असर नहीं होता।

—दृढ़ मनोबल हो तो बदमाश चाहे जितना प्रयास करें, उसे डिगा नहीं सकते।

हीयौ आगै अर मन पाछै। १४९३६

हिया आगे और मन पीछे।

—यहाँ हिया का मतलब बुद्धि से है। जब किसी काम के लिए बुद्धि की स्वीकृत तो हो, पर मन जिसे अगीकार न करे। वैसा काम करना उचित नही है।

—दुविधाजनक मनःस्थिति उत्पन्न होने पर।

हीयौ फाट'र कमेड़ी रोवै। १४९३७

हिया फटा और कमेडी रोये।

कमेडी = फाखता।

—फाखता कमेड़ी का पर्याय होते हुए भी 'काया-कमेड़ी' की नाई प्रतीक रूप में काम नहीं आ सकती। कमेड़ी कबूतर की नाई बहुत डरपोक पक्षी है।

—जो व्यक्ति बात-बात में आँसू बहाये।

हीयौ फूटौ जांणै, सांवण में गधेड़ा रौ फूटै। १४९३८

हिया फूटा मानो सावन मे गधे का फूटा।

—जिस व्यक्ति को सावन के गधे की तरह सब हरा-ही-हरा दिखे।

—जो व्यक्ति वास्तविकता से पूर्णतया अनजान हो।

हीयौ फूटौ नै हांडला घड़ै। १४९३९

हिया फूटा और बासन घड़े।

—बुद्धि भ्रष्ट होने पर ही कोई मिट्टी के बासन घड़ता है। कितनी मेहनत करनी पड़ती है और जोखिम उठानी पड़ती है। और नफा नगण्य।

—मूर्ख व्यक्ति घाटे के धंधे में ही हाथ डालता है।

हीयौ फूटौ हाळी रौ, दूध भावै छाळी रौ।–व.१७४ १४९४०

हिया फूटा हाली का, दूध पीये छाली का।

छाळी = बकरी।

—यह एक तुकबंदी प्रधान कहावत है। जिसका तात्पर्य सिर्फ इतना ही है कि अपनी औकात भूलकर बड़ी चाहना नहीं करनी चाहिए।

—जो व्यक्ति अपनी हैसियत के परे बड़ी महात्त्वाकांक्षा सॅजोये।

हीयौ हिलोळा खाय। १४९४१

हिया हिलोरें खाय।

—मस्ती का आलम हो तब हिया स्वत: मगन हो उठता है।

—खुशी का इजहार करने वाली उक्ति।

हीरां नै जलम देवण वाळी तौ धरती। १४९४२

हीरों को जन्म देने वाली तो धरती ही है।

—हीरों को जन्म देने वाली भी धरती है और महान विभूतियों को पैदा करने वाली भी यही धरती है।

—धरती से ही सारी संपदा उत्पन्न होती है और समूची दुनिया उसी पर पलती है।

हीरां री खांन में भाटौ कठा सूं आयग्यौ। १४९४३

हीरों की खान में पत्थर कहाँ से आ गया।

—कुपुत्र पैदा होने पर ममतामयी माँ का दारुण पश्चाताप।

—कुपुत्र से बड़ा माँ के लिए कोई दूसरा दुख नहीं।

हीरां री परख जंवरी जांणै। १४९४४

हीरों की परख जौहरी जाने ।

—सुरुचि संपन्न विद्‌वान ही कवि,मेधावी और कलाकार की पहिचान कर सकता है ।

—गँवार व्यक्ति ज्ञानी की परख नहीं कर सकता ।

हीरा कदै ई रेत में रूळता नीं दीसै। १४९४५

हीरे कभी धूल में लोटते नही दिखते ।

—महान हस्तियों के द्‌वारा कुछ-न-कुछ बड़ा काम ही होता है,वे सामान्य काम से संतुष्ट नहीं होते ।

—महान-पुरुषों का अधःपतन आसानी से नहीं होता ।

हीरा किसा भाटा सूं फोड़ण रा व्है ? १४९४६

हीरे क्या पत्थर से फोड़ने के लिए होते हैं ?

—बुद्‌धिमान व्यक्ति मूर्खों से मगजमारी करने की बजाय उनसे दूर रहना ही उचित समझते हैं ।

—मूर्खों के उकसाने का समझदार व्यक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ।

पाठा : हीरा कोई भाटा सूं भांगण सारू नी व्है ।

हीरा नो मोल हीरो करे।–भी.७९५ १४९४७

हीरे का मोल हीरा ही कर सकता है ।

—बुरा व्यक्ति चाहे जितना बुद्‌धिमान हो वह सज्जन की पहिचान नहीं कर सकता,क्योंकि उसके संस्कार,उसके विचार एवं उसकी धारणा बिल्कुल दूसरी ही होती है ।

—इसके विपरीत सज्जन पुरुष चाहे कम बुद्‌धिमान हो,वह भले और नेक इनसान की कद्र करना जानता है ।

—कलाकार की सही पहिचान कलाकार ही कर सकता है ।

हीरा-पाथर अेकज रंग, हीरौ किणनै कैवै ? १४९४८
हीरापणौ थारौ जद इज जांणां, घण रा घमोड़ा सैवै ॥

हीरा-पत्थर एक ही रंग, हीरा किसको कहें ?
हीरा-पन तेरा जब ही जानें, हथोड़े की चोट सहे ॥

—सभी मनुष्य दिखने में एक जैसे ही दिखते हैं, पर कोई दो व्यक्ति समान नहीं होते। जो संघर्ष करता है, परिस्थितियों से रात-दिन जूझता है, वही तपकर बड़ा मनुष्य बनता है। कंकर हथौड़े की एक चोट से ही चूर-चूर हो जाता है पर हीरा लाख चोटें खाकर भी नहीं मुचता। यही महान् विभूति की कसौटी है।

हीरा मुंह्डै कद कहै, लाखज म्हारौ मोल। १४९४९

हीरा मुँह से कब कहे, लाख हमारा मोल।

दे.क.सं.८७६०

हीरा-मोती कोई रूंखां रै नीं लागै। १४९५०

हीरे-मोती कोई पेड़ों पर नही लगते।

—महान विभूतियाँ तो लाखों में एकाध ही बड़ी मुश्किल से जन्म लेती हैं।

—महान् पुरुषों की भीड़ कहीं भी नहीं मिलती।

हीरौ कोयलै री खांण में लाधै। १४९५१

हीरा कोयलों की खान में मिलता है।

—यह भी मान्यता है कि कोयला ही हजारों बरसों के पश्चात् हीरे का रूप धारण कर लेता है।

—इसमें कतई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि प्रतिभा गरीबी के बीच ही पलती है। सघर्षों के बीच ही निखरती है।

हीरौ.हीरै सूं वढ़ै। १४९५२

हीरा हीरे से कटता है।

—परिवार वाले ही एक-दूसरे को क्षति पहुँचाते हैं।

—विद्वान ही विद्वान को शास्त्रार्थ में पराजित कर सकता है।

पाठा: हीरै सूं ई हीरौ बींधीजै।

हूं - हो

हुंकारौ देवन्तै. मरै सौ कांई खांगा करै। १४९५३

हंकारा देत: मरे वह क्या बहादुरी करे।

—असमर्थ व्यक्ति से किसी भी प्रकार की आशा रखना व्यर्थ है।

—निकम्मा व्यक्ति कुछ भी काम करने के लिए सक्षम नहीं होता।

हुंकारौ हेटै ई नीं पड़ण दै। १४९५४

हुंकारा नीचे ही नही गिरने दे।

—चाटुकार व्यक्ति खुशामद का कोई मौका ही नहीं चूकता।

—स्वार्थी मानुस चिरौरी करने में बडा कुशल होता है।

हुंस्यारी आपरी है, किणी रा वाभौजी री कोनीं। १४९५५

होशियारी अपनी है, किसी के बाप की नहीं।

दे.क.सं.१३७५६

पाठा : हुस्यारी आपरी है किणी रा बाप री कोनी।

हुई खीर में क्यूं मूसळ मारै? १४९५६

हुई खीर में क्यो मूसल मारे?

—जो व्यक्ति बने-बनाये काम को बिगाडने की कुचेष्टा करे।

—किसी के भी बनते काम में भाँजी मारना उचित नहीं है।

हुई सो जांणै मन्न। १४९५७

हुई सो जाने मन।

संदर्भ-कथा : दो मित्र ब्यालू करने के बाद नदी-किनारे घूम रहे थे। मामूली सर्दी चमकने लगी थी। पूनम की चाँदनी लहरों पर झिलमिल-झिलमिल तैर रही थी। एक मित्र जाने क्या सोचकर अकस्मात् रुक गया। पानी के बहाव में उसे काला-स्याह एक कंबल नजर आया। भाग्य इसी तरह आँख-मिचौनी खेलता है। मित्र कहीं पहिले कूद गया तो उसीका भाग्य फलेगा। वह लालची भी जरूरत से ज्यादा था। आगे एक पल भर भी धीरज रखना उसके वश की बात नहीं थी, कपड़ों सहित नदी में छलाँग मार दी। दूसरे मित्र की अधूरी बात होंठों में ही रह गई। अचानक क्या सूझा उसे ? कहीं बौरा तो नहीं गया ? लेकिन वह तो पूरे होश-हवास में था। अतिरेक उत्साह से लपककर कंबल को पकड़ लिया। पर आश्चर्य कि अगले ही क्षण कंबल उसे अपनी ओर खींचने लगा तो वह जोर-जोर से चिल्लाया, 'रीछ...रीछ...रीछ...।' मित्र ने चौंककर उधर देखा। रीछ के काले स्याह बालों में नजर उलझते ही मित्र का लोभ उसकी आँखों के सामने प्रत्यक्ष कौंध उठा।...तो हजरत की यह आकस्मिक छलाँग कंबल के लिए थी ! आगे सोचने के प्रवाह को वहीं रोककर उसने खड़े-खड़े ही सलाह दी, 'छोड दे...छोड़ दे...।' मित्र के होंठों से हताशा और भय का स्वर लावे के उनमान फूट पड़ा, 'मैं तो छोड़ने को तैयार हूँ, पर वह मुझे नहीं छोड़ता।'

—लालच में फँसने के बाद छुटकारा पाना आसान नहीं है।

—अपनी विकास-यात्रा के दौरान मनुष्य ने ज्ञान-विज्ञान, धर्म-दर्शन, संप्रदाय और जाति-रिश्तों को आवश्यकतानुसार ईजाद किया, परंतु एक बार अस्तित्व में आने पर मनुष्य की तमाम सृष्टि ने कंबल की नाईं उसे ही जकड़ लिया। वह छोड़ना चाहे तब भी कंबल उसे नहीं छोड़ेगा, नोच-नोचकर निगल जाएगा।

—मनुष्य अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए कोई भी पेशा चुनता है, मगर कुछ समय गुजरने के पश्चात् वह पेशा ही उसे अपने नाग-पाश में आबद्ध कर लेता है।

—सुख की आशा में दुख गले पड़ जाय तो उसकी असह्य वेदना भुक्त-भोगी ही समझ सकता है।

पूरा दोहा :

कर तौ गह्यौ लख कंबली, तिकौ विलूमी तन्न।

जळ ऊंडौ थळ है नहीं, हुई सो जांणै मन्न॥

दे.क.सं.११८९१

हुकम वगर पान नी हाले।– भी.७९६ १४९५८

हुकम बगैर पान ही न हिले।

—ईश्वर की इच्छा के बिना पेड़ का एक पत्ता भी नहीं हिल सकता।

—सारी सृष्टि पर उसी एक-छत्र सत्ता पर-ब्रह्म का ही नियंत्रण चलता है। कोई भी बादशाह, सम्राट या अरबपति की उस में रंचमात्र भी दखल नहीं चलती।

पाठा : हुकम टाळ पांन ई नी हिलै।

हुतै जमांनै माजना डूबा, रिपिया री हुई अधेली। १४९५९

अच्छी फसल, इज्जत गई, रुपये की हुई अठन्नी।

—जब बेकाबू महँगाई से सारी प्रतिष्ठा धूल में मिल जाय।

—जब अनुकूल परिस्थिति भी प्रतिकूल पड़ने लगे, तब निस्तार का कोई रास्ता नहीं बचता।

हुरकै जांणै पाडियौ हुरकै ज्यां। १४९६०

पाड़े की नाई हुंकारे।

—कोइ नीम-पागल पाड़े की नाई व्यर्थ चिल्लाये, तब...।

—बिना बात क्रोध प्रकट करना अनुचित है।

हुरड़-हुरड़ दोय सेड, ठाकर लूखौ खावं। १४९६१

तुरता-फुरता दूध की धार, ठाकुर रूखा खाय।

—किसी श्रीमंत के प्रति गरीब व्यक्ति के द्वारा सहज सहानुभूति प्रकट करना।

—गरीबों के प्रति सहानुभूति दरसाना केवल अमीरों का ही अधिकार नहीं है, वक्त जरूरत गरीब भी अमीर की सहायता कर सकता है।

हुवा सौ अर भागा भौ, हुवा हजार, फिरौ बजार। १४९६२

हुए सौ और भगा भय, हुए हजार, फिरो बाजार।

—अब तो हजार रुपये कुछ भी माने नहीं रखते। यह कहावत उस सस्ते जमाने की है जब रुपये में बीस सेर अनाज मिलता था और अठन्नी में सेर घी। तब सौ रुपये की सचमुच महिमा थी। सौ रुपये हाथ में हों तो अभाव का कोई डर नहीं और हजार रुपये नौली में बँधे हों तो मदमस्त हाथी की नाईं बाजार में घूमो—सब आँखें फाड़े देखते रहेंगे।

—रुपये की महिमा का कोई पार नहीं है।

हुवै तौ ईद, नींतर रोजा। १४९६३

हो तो ईद, नहीं तो रोजे।

—मुस्लिम भाइयों की यह खास प्रवृत्ति है कि पास में रुपया हो तो वे लाटसाहब की परवाह नहीं करते। ईद पर दिल खोलकर खर्च करते हैं। सपरिवार नये कपड़े बनते हैं, नई जूतियाँ आती हैं। संपुष्ट बकरे हलाल होते हैं या मीठी सिवैयाँ बनती हैं। और हाथ खाली हो तो रोजे ही सही। वह भी धार्मिक पुण्य का काम है।

—जो व्यक्ति अंटी में पैसा हो तो मित्र-साथियों पर दिल खोलकर खर्च करता है और हाथ में पैसा न हो तो वह फाकामस्ती के लिए भी तैयार रहता है।

हूं अर हुंकारदास, चेलौ गोपालदास, म्हैं अर म्हारा बाबौजी। १४९६४

हूँ और हूँकारदास, चेला गोपालदास, मैं और मेरे बाबाजी।

—सिर्फ अपनी और अपने परिवार की चिंता रखने वाले मानुस जो अन्य किसी की कोई परवाह नहीं करते।

—निपट स्वार्थी व्यक्तियों पर कटाक्ष जो केवल अपने सगे-संबंधियों का ही खयाल रखें।

मि.क.सं.११८७९

हूं किसौ रांडोली रौ जंवाई छूं! १४९६५

मैं कोई विधवा का दामाद नहीं हूँ!

—जब कोई किसी व्यक्ति को डराये-धमकाये तो सामने वाला चुनौती के लहजे में कहता है कि वह भी कमजोर नहीं है। ऐसे डरने वाले कहीं और देखना, मैं कोई विधवा का दामाद नहीं हूँ।

—किसी के धमकाने पर सामने वाला ललकारते हुए कहता है कि वह अकेला नहीं है, उसके साथ जुड़ने वाले कई सगे-संबंधी हैं। अकेला समझने की गलती करोगे तो पछताओगे।

पाठा : म्हैं किसौ रांडोली रौ जंवाई थोड़ौ ई हूं।

हूंतै ना भरड़ा ही ना भीखै।– व २९८ १४९६६

होते हुए भी न भरड़ा न भिखारी।

भरड़ौ = भरड़ा जाति का व्यक्ति जो भीख माँगने का भी काम करता है।

—कंजूस के पास धन होते हुए भी वह उसका उपयोग नहीं कर सकता।

—पैसा होते हुए भी जो व्यक्ति भरड़े और भिखारी से गया गुजरा हो।

हूं बड़ौ , सेरी सांकड़ी। १४९६७

मै तो बड़ा, सेरी सँकड़ी।

—अहंकारी व्यक्ति के लिए जो दुनिया में अपने सिवाय किसी को न माने।

—जो व्यक्ति अभिमान में फटा जा रहा हो।

पाठा : म्है बडौ , गळी सांकड़ी।

हूंर तेवौ हांतरौ।– भी.७९७ १४९६८

जैसी स्थिति वैसी खातिरदारी।

—जैसा सामाजिक स्तर वैसी आवभगत।

—जैसी गुणवत्ता वैसा सत्कार।

—जैसे देव, वैसी पूजा।

हूता बैठा मोत मोल नी लेणी।– भी.७९८ १४९६९

सोते-बैठे मौत मोल नही लेनी।

—जान-बूझकर आफत में नहीं फँसना चाहिए।

—तैश में आकर ज़ान जोखिम में नहीं डालनी चाहिए

—जहाँ तक बन पड़े खतरे से दूर रहना चाहिए।

हूता हाप नी जगाड़वौ।– भी.७९९ १४९७०

सोते साँप को मत जगाओ।

—अकारण ही किसी दुष्ट को नहीं छेड़ना चाहिए।

—चलते रास्ते अपने से शक्तिशाली के साथ बेहूदी हरकत नहीं करनी चाहिए।

हूतो वैठो डूमड़ी घेर मांये घाले।– भी.३६१ १४९७१

सोते-बैठे डोमनी को घर में डाले।

—बैठे-बिठाये कोई लज्जा-जनक बेहूदा काम करना समझदारी नहीं है।

—जानते-बूझते आफत मोल लेना नीति-सम्मत नहीं है।

हेंदरा वाला हड़्या है, चूटता वळा नी करे।– भी.८०१ १४९७२

रस्सी वाली डोरियाँ हैं, खुलते देर नही लगती।

—किसी अविश्वसनीय व्यक्ति को जिम्मेदारी का काम सौंपने से पछतावा ही हाथ लगता है।

—ढुलमुल व्यक्ति को काम सौंपने से वह निश्चित बिगड़ता है।

हे ऊपला तूं जांणे तो ऊपलो हूं जांणे, चारे खूंणा वाळा जांणे।– भी.८०० १४९७३

हे ईश्वर ! तू जानता है तो ऊपर वाला भी जानता है, चारों दिशाएँ भी जानती है।

— ईश्वर सर्व-व्यापी है, यदि वह कोई बात जानता है तो फिर किसी से छिपी नहीं रहती।

—ईश्वर कण-कण में मौजूद है, वह सब देखता है। उससे किसी का कुछ भी भेद छिपा नहीं रहता। इसलिए ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए, जो ईश्वर को अच्छा नहीं लगे।

हेज टाळ पांनौ नीं आवै। १४९७४

स्नेह बिना दूध नही आता।

—स्नेह या प्रेम के बिना अपनत्व की भावना उत्पन्न नहीं होती।

—निमंत्रण तो कई मिलते हैं, मगर जहाँ अपनत्व की खुशबू आती है मन उधर ही खिंचता है।

हेज री हांती सिरै । १४९७५

प्रेम की हॉती श्रेष्ठ है ।

—प्रेम की भेंट का मूल्य नहीं ऑका जाता, भावना देखी जाती है ।

—प्रेम से भेजे हुए चने भी लड्डू की अपेक्षा अधिक मीठे लगते हैं ।

हेजवाळ रौ टाबर नीं राखीजै । १४९७६

प्यार मे पले बच्चे नही रखे जाते ।

दे क.सं.३८१०

पाठा : हेताळू रौ टाबर नी रमावणौ ।

हेड़ मूंघी नाहीं, हेड़ावू पण मूंघौ । १४९७७

हेड़ महॅगी नही, हेड़ाऊ महॅगा है ।

हेड़ – मवेशियों का झुंड ।

हेडाऊ = मवेशियों का मालिक ।

—मवेशियों का मूल्य तो उनकी देख-रेख या सार-सभाल करने वाले मालिक पर निर्भर करता है जो उनके चारे-बॉटे में कमी नही रखता, अपने बच्चों की तरह उनका पोषण करता है और जरूरत से ज्यादा काम नही लेता । अच्छी सेहत वाले पशु की कीमत भी अच्छी मिलती है ।

—जो मालिक बेचने की तरकीब जानता है, वही अपने मवेशियों को ऊॅचे दामों में बेच सकता है ।

पाठा : हेड़ नंह बिकै, हेड़ावू बिकै ।

हेत, कपट, विवहार, रहै न छांना राजिया । १४९७८

प्रेम कपट व्यवहार, रहे न छिपे राजिया ।

—मन में प्रेम हो तो उसकी झॉई ऑखो मे प्रकट हो ही जाती है । सूरत में उसकी झलक मिल जाती है । इसी तरह कपट भी छिपा नहीं रहता, उसकी अभिव्यक्ति भी जाने-अजाने उजागर हो ही जाती है । और आदमी के किसी भी व्यवहार से उसकी आतरिक भावना का पता चल जाता है । इन सोरठों के रचयिता स्व. किरपारामजी खिड़िया अपने स्वामीभक्त सेवक

राजिया को संबोधित करते हुए कहते हैं कि उपरोक्त तीनों भावनाओं को छिपाना बहुत मुश्किल है।

पूरा सोरठा :

हुन्नर करौ हजार, सैणप चतुराई सहत।
हेत कपट विवहार, रहै न छांना राजिया ॥

हेत नंह हाट बिकाय। १४९७९

प्रीत बाजार मे नहीं बिकती।

दे.क.सं.५६

हेत बिना रै सायबा, दूधां ईं बाड़ा साव। १४९८०

प्रेम बिना रे साहिबा, दूध मे कड़वा स्वाद।

—बिना प्रेम का दूध या शहद भी कड़वा लगता है। मिठास है तो भावना में है, पदार्थ में नहीं।

—प्रेम का तो जहर भी अमृत-सा लगता है।

—प्रेम ही सब संबंधों का माधुर्य है।

हेत में रेत पड़गी। १४९८१

प्रीत मे रेत पड़ गई।

—दो मित्रों के घनिष्ठ प्रेम में दरार पड़ जाय, तब...।

—प्रेम जैसी पवित्र भावना में धोखा हो जाने पर।

हेत रा सूखा टुकड़ा ई भला। १४९८२

प्रेम के सूखे टुकड़े ही भले।

—भोजन स्वादिष्ट नहीं होता, परोसने वाले की भावना स्वादिष्ट होती है। प्रेम के सूखे टुकड़े भी चुपड़ी रोटियों से अच्छे लगते हैं।

दे.क.सं.८५२२

हेत री दीठ ई छांनी कद रैवै। १४९८३

प्रेम की आँख छिपी नही रहती।

—आँखें तो दो ही हैं, पर उनसे कई विभिन्न भावनाएँ छलकती हैं—प्रेम दरसाने वाली आँखों की रंगत ही दूसरी होती है। ईर्ष्या, क्रोध, अवज्ञा, उपेक्षा और घृणा की रंगत एकदम अलग होती है।

—क्षण भर में पता चल जाता है कि सामने वाली आँखों में प्रेम है या घृणा या क्रोध।

हेत री मनवार में बासी-लूखी नीं देखीजै। १४९८४

प्रेम की मनुहार में बासी-रूखा नहीं देखा जाता।

—प्रेम की मनुहार में भोजन का स्तर कुछ भी माने नहीं रखता। उसकी तृप्ति तो भावना में है, भोजन में नहीं। भोजन तो कैसा भी हो, बासी या रूखा वही सबसे स्वादिष्ट लगता है।

मि.क.सं.१४९८२

हेत री हांती तौ हथाळी में ई भली। १४९८५

्रेम की हॉती तो हथेली मे भी अच्छी।

—प्रेम आडंबर में विश्वास नहीं करता। सहज निर्मल भाव से हथेली में परोसी हुई रोटियाँ सर्वाधिक स्वादिष्ट लगती हैं।

—प्रेम है तो सब-कुछ है, संसार की कोई भी संपदा उसके सामने तुच्छ है।

हेत रै हाथां कीथोड़ौ कांम वेगौ निवड़ै। १४९८६

लगन से किया हुआ काम जल्दी संपन्न होता है।

—जिस काम के साथ प्रेम, निष्ठा और लगन जुड़ी हो तो वह कठिन होते हुए भी आसान हो जाता है, जल्दी संपूर्ण होता है।

—लगन से किये हुए काम में थकान महसूस नहीं होती और न कभी उत्साह ही चुकता है।

हेम रा डूंगर बतावै। १४९८७

सोने के पहाड़ बताये।

दे.क.सं.१४२८४

हेमाळै मैल दिया। १४९८८

हिमालय ठेल दिया।

—बुरी तरह बर्बाद कर दिया।

—जब कोई व्यक्ति किसी के सर्वनाश का कारण बने।

हेरय्या नो हांड है।–भी.८०२ १४९८९

सेरियों का साँड है।

—जो व्यक्ति दूर न जाकर आस-पड़ोस या अपने ही गाँव में दुराचार फैलाये।

—जो व्यक्ति दूसरों की बजाय घरवालों को ही क्षति पहुँचाये।

हेळ भावळी छांना-छौळ। १४९९०

हेल भावली गुपचुप।

हेळ = क्रीड़ा, खेल-तमाशा। भावळी = चाही जमीन में सोलहवाँ हिस्सा।

—जिस काम में हिस्सेदारी तो कम हो, पर परेशानी ज्यादा हो, उसके लिए।

—खेल-खेल में कोई बात गले पड़ जाय, तब...।

हेला री ठौड़ हेला कर्‌यां ईं सरै। १४९९१

चिढ़ने की ठौर चिढ़ना ही पड़ता है।

—मनुष्य के आंतरिक जगत में सैकड़ों भावनाएँ हैं, यदि उचित जगह पर उनका सकारात्मक सदुपयोग किया जाय तो वे सार्थक हो जाती हैं। जहाँ 'गुस्से' का मौका हो, वहाँ गुस्सा भी प्रकट करना पड़ता है। युद्ध में प्रेम काम नहीं आता, क्रोध ही काम आता है। बच्चे बदमाशी करते न मानें तो उन पर चिढ़ना भी लाजिमी हो जाता है।

हे सूरज भगवांन खलक नै भूखौ तौ जगाजै, पण भूखौ सूवाणजै मत ना। १४९९२

हे सूरज भगवान जगत को भूखा तो जगाना, पर भूखा सुलाना नहीं।

दे.क.सं.१४१२२

हैं कैवतां भैं आवै। १४९९३

हैं कहते भैं निकलता है।

—जिस व्यक्ति को बोलने का शऊर न हो।

—जो नादान व्यक्ति बोलने में माहिर न हो।

दे.क.सं.९०२६

है कैड़ी चरायोड़ी चुगायोड़ी घांचियां री झोटी व्है ज्यूं। १४९९४

है कैसी चराई हुई, खिलाई हुई घाँचियों की पाड़ी के उनमान।

—लहीम-शहीम पुष्ट औरत के लिए।

—मायके से जब कोई सुडौल, सुंदर व अच्छी कद-काठी की बहू ससुराल आये तब उसकी सराहना में यह उक्ति काम आती है।

है जित्तौ ई खेड़ी रौ टुकड़ौ है। १४९९५

है जितना ही फौलाद का टुकड़ा है।

खेड़ी = एक प्रकार का पक्का लोहा, जिसके हथियार बनाये जाते हैं।

—जो व्यक्ति खरा, निर्भीक और अडिग हो।

—जो व्यक्ति संघर्ष का डटकर सामना कर सके।

है तौ देवर पण जेठ रा ई भोळा भांगै। १४९९६

है तो देवर पर जेठ को भी मात करता है।

—अत्यधिक चालाक और होशियार व्यक्ति के लिए।

—उम्र में कम होते हुए भी जो व्यक्ति बड़ो से ज्यादा ताकतवर हो।

है तौ बाडी पण नांव नैणजोत। १४९९७

है तो भेगी पर नाम नैणजोत।

—नाम के विपरीत लक्षण।

होइ है वही जे रांम रुचि राखा। १४९९८

होई है वही जे राम रुचि राखा।

—तुलसी बाबा का राम में अटल विश्वास था। उनकी धारणा के अनुसार राम की इच्छा के बिना संसार में कुछ भी हरकत नहीं हो सकती।

—राम ने जो पहिले से ही सोच रखा है, वही दुनिया में घटित होता है।

होका रौ पांणी। १४९९९

हुक्के का पानी।

—जित तरह हुक्के का पानो पीने के लिए एकदम व्यर्थ है, उसी तरह जो अकर्मण्य, असमर्थ व्यक्ति किसी काम के लिए काबिल न हो।

—बुढ़ापे में सर्वथा अक्षम, असमर्थ और अनुपयोगी व्यक्ति के लिए, चाहे पुरुष हो चाहे स्त्री।

होठ चाट्यां तिरस नंह बुझै। १५०००

होंठ चाटने से प्यास नहीं बुझती।

—अपर्याप्त पदार्थ से तृप्ति नहीं होती।

—समुचित साधन होने पर ही कोई काम संपन्न होता है।

—केवल चुंबन मात्र से वासना शांत नहीं होती।

—यथोचित युक्ति के बिना कोई भी कार्य संभव नहीं होता।

मि.क.सं.१६४५

होठ साजा तौ जबाब जाजा। १५००१

होंठ दुरुस्त तो जवाब बहुतेरे।

—इंद्रियाँ निर्दोष हों तो समय पर उन्हें ठीक काम में बरता जा सकता है।

—क्षमता के अनुरूप ही काभ संपन्न होते हैं।

होठां बुध सूं कोठां बुध आछी। १५००२

होंठों की बुद्धि से कोठों की बुद्धि अच्छी।

कोठ = कुठला = पेट।

—अच्छा बोलने की बजाय अच्छा सोचना अधिक श्रेयस्कर है।

—वाक् चातुर्य की अपेक्षा आंतरिक ज्ञान कहीं ज्यादा श्रेष्ठ है।

होठां रै बारै-बारै खाय लीजौ। १५००३

होंठों के बाहर-बाहर खा लेना।

—कोई झूठा या धत्ते-बाज खाने का आयोजन रखे तब आमंत्रित व्यक्तियों को जानकार आदमी सावचेत करता है कि निमंत्रण मिला है तो जरूर जाइये, पर होंठों के बाहर-बाहर भोजन करना। वहाँ खाने को तो कुछ मिलेगा नहीं।

होड करयां गोडा फूटै। १५००४

होड करने से घुटने फूटते है।

—अपनी हैसियत के अनुसार ही काम करना चाहिए, दूसरों की देखा-देखी करने से हानि उठानी पड़ती है।

—ईर्ष्यावश काम करने से लाभ की बजाय नुकमान की गुंजाइश अधिक रहती है।

होडां होळी, होडां पोळी, होडां बेटौ जिण अे भोळी। १५००५

होड से होली, होड़ से पोली, होड़ से बेटा जन ऐ भोली।

पोळी — त्योहार पर बनाई जाने वाली विशेष पुड़ियाँ।

—कोई बात नहीं ईर्ष्या के वशीभूत पड़ोसिन की देखादेखी वैसी ही ठाट से होली मनाई, वैसे ही उम्दा पकवान बनाये, अच्छा ही किया। मगर पड़ोसिन ने बेटा जना, यदि उसकी देखादेख तुम भी बेटा जनो तब जानें। देखा-देख काम करने का मजा तो तब है।

—होड़ या ईर्ष्या के वशीभूत काम करने वाले को आखिर नीचा देखना पड़ता है।

होडा-होड क्यूं गोडा फोड़ै? १५००६

होड़-होड़ मे क्यो घुटने फोड़े?

—दूसरों की देखादेखी नुकसान उठाना कहॉ की समझदारी है।

—दूसरों की नकल करने मे फायदा हो-न-हो, पर नुकसान तो निश्चित है।

होणहार नै निमौ। १५००७

होनहार को नमस्कार।

—होनी के आगे किसी का वश नहीं चलता, इसलिए उसे प्रणाम करना ही संतोषप्रद है।

—जो होना है, वह होकर ही रहता है, उसके लिए केवल अज्ञानी ही पश्चाताप करते हैं।

पाठा: होणी नै नमस्कार। होणी नै निमौ।

होणी तौ होकर रहै, अणहोणी नंह होय। १५००८

होनी तो होकर रहे, अनहोनी न होय।

—होनी के होने में कुछ भी अनहोनी बात नहीं है। जो होना है वह होकर ही रहता है। और न होने वाली बात कभी होती नहीं है।

—जो कुछ भी होता है,उस पर दुख और आश्चर्य करना मूर्खता है। क्योंकि वह तो पहिले से ही निर्धारित है।

होणी रा अलेखूं बांना। १५००९

होनी के अनेक रूप।

—होनी का कोई एक रूप नहीं होता वह तो तरह-तरह के बाने पहिनकर और तरह-तरह के मुखौटे लगाकर प्रकट होती है। लेकिन उसे पहिचानने वाली आँखें बिरली ही होती हैं। वह ललाट की आँखों से नहीं ज्ञान की आँखों से दिखती है।

होणी रौ जोग नंह टळै। १५०१०

होनी का योग नहीं टलता।

—किसी व्यक्ति को धन-जन की अपूर्व क्षति हो तब उसे सांत्वना देने के लिए इस ब्रह्म उक्ति का प्रयोग किया जाता है कि जो होनी है,वह होकर ही रहती है,उसे कोई नहीं टाल सकता।

—होनी की भवतव्यता अटल है,क्योंकि वह पूर्व निर्धारित है।

पाठा : होणी होय सो होय।

होणी सो होणी। १५०११

होनी सो होनी।

—ना,कुछ भी अनहोनी नहीं होती और जो होनी है,वह टल नहीं सकती।

—ईश्वर भी चाहे तो होनी को मिटा नहीं सकता।

—भाग्यवादी विचारधारा के लोग इसी तरह आश्वस्त होते हैं।

होत में बैरी ई भीडू, अणहोत में भीडू ई बैरी। १५०१२

अच्छे दिनो में बैरी भी साथी और दुर्दिन में साथी भी बैरी।

—पास में कुछ हो तो बैरी भी पास आने की चेष्टा करते हैं और पास की पूँजी खूटने पर साथ वाले भी दूर खिसकने की राह तकते हैं।

—पैसे की माया का ऐसा ही स्वॉंग होता है इस में आश्चर्य जैसी कोई बात नहीं।

होत री जोत है। १५०१३

होत की जोत है।

—जब तक पास में घी या तेल है, तब तक दीया जलता रहेगा। और ज्यों ही घी-तेल समाप्त तो ज्योति भी समाप्त।

—जब तक पास में धन है, तब तक सब-कुछ है।

—संसार में सब पैसे की माया है।

होत री भांण, अणहोत रौ भाई, मगरां पूठ नार पराई। १५०१४

होत की बहिन, अनहोत का भाई, पीठ पीछे नार पराई।

—भाई के पास पूँजी हो तो बहिन उससे रिश्ता रखती है और भाई की पूँजी समाप्त होने पर बहिन मुँह मोड़ लेती है, पर भाई दुख के दिनों में साथ निभाता है, अपने वश रहते पूरी मदद करता है। और पत्नी जब तक ऑंखों के सामने है, वह अपनी है और ऑंखों से अदीठ होते ही वह परायी हो जाती है।

होबड़-ख्रीच। १५०१५

होबड़-खीच।

—जहाँ किसी तरह का भेद-भाव नहीं हो। जो आये वह अपने हाथ से लेकर खाये।

—जहाँ खाना-पीने की पूरी छूट हो।

होम करतां हाथ बळै। १५०१६

होम करते हाथ जलें।

—शुभ कार्य करते समय कुछ अशुभ घटित हो जाय, तब...।

—अच्छा काम करते हुए भी जब लोग बदनामी करने लग जाएँ, तब...।

पाठा : **हवन करतां हाथ बळै।**

होया होठ बड़ा ज्यूं। १५०१७

हुए होंठ बड़े ज्यों।

—होंठों पर मार पड़ने से वे बड़े की नाईं फूल जाते हैं।

—बड़े और भद्दे होंठों की ओर लक्ष्य करते हुए।

होळी आया नीं, दीवाळी आया नीं, आया आखातीज। १५०१८

होली आये नहीं, दीवाली आये नहीं, आये आखातीज।

—कोई समधी या जामाता के सत्कार में घी की घीलोड़ी टेढ़ी करती हुई नजदीक रिश्ते की कोई औरत कहती है—होली पर आये नहीं, दीवाली पर आये नहीं और अब आये तो आखातीज पर इतना कहने के दौरान समधी बस-बस करते हुए कोहनी पकड़ता है, तब सारी घीलोड़ी लापसी में खाली हो जाती है।

—इच्छा के बावजूद जब कोई काम जबरन हो जाये, तब...।

—जब कोई व्यक्ति चालाकी से अपना काम बना ले, तब...।

होळी आळा खांडैला है। १५०१९

होली वाली तलवारचियॉ है।

—मेरे बचपन की बात है होली के त्योहार पर बढ़ई लकड़ी की छोटी-छोटी तलवारें बनाते थे। बच्चे हाथों में मूठ पकड़कर खेलते रहते थे। प्रह्लाद को बचाने हेतु उन्हे हरिण्यकशिपु से लड़ाई जो ठाननी थी।

—जिस वस्तु की कोई उपयोगिता न हो, उस पर किसी का ध्यान नहीं जाता।

—अनुपयोगी चीजों के प्रति उपेक्षा स्वाभाविक है।

होळी जिसौ तिंवार मांजरै मारै है। १५०२०

होली जैसे त्योहार का मटियामेट करता है।

—जो व्यक्ति त्योहार के दिन रूठना करके सारा मजा ही किरकिरा कर दे, उसके लिए।

—जो व्यक्ति उत्सव-आयोजन में कुछ-न-कुछ उत्पात किये बिना नहीं माने।

होळी तांईं तौ गुलाल उडै ई। १५०२१

होली तक तो गुलाल उड़ता ही है।

—होली तक तो मौज मनाने की स्वतंत्रता रहती ही है फिर छूट का आनंद क्यों नहीं मनाया जाय।

—उत्सव-त्योहार की वेला खुशी मनाने मे कोई कसर नहीं रखनी चाहिए।

होळी, दीवाळी अर आखातीज, सै तिंवार भेळा इज। १५०२२

होली, दीवाली और आखातीज, सब त्योहार इकट्ठे ही।

—जब अच्छे दिन हों तब हर दिन त्योहार की तरह ही ठाट से व्यतीत होता है और अंटी में कुछ जोर न हो तो त्योहार भी फीका रहता है।

—पैसे वालों के लिये तो आड़ा दिन भी त्योहार जैसा ही है।

होळी-दीवाळी ई कोई घाट रांधीजै? १५०२३

होली-दीवाली भी कोई घाट रॉधते है?

--त्योहार के दिन गरीब-से-गरीब व्यक्ति भी कुछ-न-कुछ मीठा बनाता है।

—त्योहार पर खुशी मनाने का अधिकार सबको है।

होळी पूठै धाबळौ, मार खसम रै मूंड। १५०२४

होली के बाद धावला, मार सिर पर खसम बावला।

धावळौ = एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो स्त्रियां कटि के नीचे पहिनती है। बडा घेरदार व मुदर होता है।

—धाबला अमूमन सर्दियो मे पहिना जाता है। जो नासमझ खाविद होली के बाद धाबला लाये उसे पति के मुँह पर फेंक देना चाहिए।

—हर वस्तु की उपयोगिता समय सापेक्ष होती है। समय बीतने पर उसकी उपयोगिता नही रहती।

होळी'र होळी, आवती दीवाळी। १५०२५

होली और होली, आने वाली दीवाली।

—जो व्यक्ति आगे-से-आगे वादा करता जाये।

—जिस व्यक्ति की जबान का कोई एतबार न हो।

होळै नाचौ, नागा दीस जावौला। १५०२६

धीमे नाचो, नंगे दिख जाओगे।

—ज्यादा ऊलफैल करना मर्यादा-जनक नहीं होता।

—अपनी औकात भूलकर प्रदर्शन करना उचित नहीं।

मि.क.सं.९०७०

होळै हाल्यां सावळ के आंचै हाल्यां। १५०२७

धीमे चलना अच्छा कि तेज चलना।

—पहिले कुछ भी पता नहीं चलना किसी काम में उतावली करने से लाभ है या धीरज रखने से। अमूमन यह कहावत खेती के लिए अधिक उपयुक्त है कि फसल पहिले बोना ठीक रहता है कि बाद में बोना।

—किसी काम का अच्छा-बुरा परिणाम तो काम संपूर्ण होने पर ही सामने आता है।

होवै नांणा तौ वींद परणीजै कांणा। १५०२८

गाँठ मे हो पैसा तो दूल्हा ब्याहे जैसा-तैसा।

दे.क.सं.११

।। इति राजस्थानी-हिंदी कहावत-कोश छठा धाम संपूर्ण

परिशिष्ट

राजस्थानी-हिंदी कहावत-कोश की जिन उक्तियों का दोहात्मक एवं पद्यात्मक रूप है, उन्हें एक साथ प्रकाशित करने से पाठकों को काफी सुविधा रहेगी। स्व. डॉक्टर कन्हैयालाल सहल व डॉक्टर मनोहर शर्मा ने इस प्रकार की कहावतों का नाम 'अधूरा-पूरा' रखा है।

पद्यबद्ध कहावतें	क्र.सं.
अणहोणी होणी नहि,होणी हौ सो होय । होणी तौ होकर रहै,अणहोणी ना होय ॥	२१३
सतहीणा सिरदार,मतहीणा राखै मिनख । अस आंधौ असवार,रांम रुखाळौ राजिया ॥	३५४
आंधी पीसै कुत्ता खाय, मारै फाकी उड-उड जाय ।	[illegible]००
कुलबै केस खिचाविया,चावै बधायौ चीर । [illegible]दयौ लाज गमायनै,आखर जात अहीर ॥	६३८
आप कमाया कांमड़ा,किणनै दीजै दोस । खोजीजी री पालड़ी,कांदा लीनी खोस ॥	८३५
कबिरा आप ठगाइये,और न ठगियै कोय । आप ठग्यां सुख ऊपजै,और ठग्यां दुख होय ॥	८४१
फारस गया,फारसी सीखी,बोलै अटपट वांणी । आब-आब करतां मर खूटा,सिरांणै पड्यौ पांणी ॥	९६६
मांगनै लाई लापसी,मांगनै लाई पूवा । बूझै नीं ताछै नीं,हूं लाडै री भूवा ॥	१०३९
आसोजां रा तावड़ा,जोगी हुयग्या जाट । सेवग तौ वांमण व्हिया,माजन व्हैगा भाट ॥	१०६३
पिड री हुती परतीत,साकड़दै जांणी सही । इण घर आ इज रीत,दुरगौ सफरां दागियौ ॥	१०८५
रातौ ओढ्यौ नीं तातौ खायौ,इण भव दि[illegible] भरतार । इसड़ौ बापड़ी बाड़ नै कांटौ,धकलै भव मत दीजै करतार ॥	११४४

जिण गांव में रैणौ, उण परवांणे वैणौ ।
ऊंट बिलाई लै गई, हांजी-हांजी कैणौ ॥ १३१०

आधा कांणा, आधा लूला अर दूजा दीखता ई भूत ।
अेक-अेक मूं आगला, अै पन्ना भूवा रा भूत ॥ १४४१

चाल सखी उण देसड़ै, जठै मिळै ब्रजराज ।
गोरस वेच्यां हरि मिळै, अेक पंथ दो काज ॥ १४८६

आसै डाभी री अगै, बारठ आसै बात ।
जग-जांणी जोड़ी जिका, पढ़ै अजै लग पात ॥ १६००

कोटड़ियौ बाघौ कठै, आसौ डाभी आज ।
गवरीजै जस गीतड़ा, गया भींतड़ा भाज ॥ १६००

कळजुग आयौ बांमणां, हळ सूं राखौ हेत ।
मंतर जमीं में गाड़दौ, माथै गळौ रेत ॥ १९०५

कळजुग नीं कर-जुग जांणौ, इण हाथ दै उण हाथ लै ।
नगदा-नगदी रौ सोदौ, दिन रा दै अर रात रा लै ॥ १९०६

कांई परदेसी री प्रीत, कांई फूस रौ तापणौ ।
ढळियौ माझल गत, कदे ई नीं आपणौ ॥ १९३८

कांमा जिणरा धामा, करै जिणनै छाजै ।
देखा-देखी होडवै, माथै मूसळ बाजै ॥ (या)
अणव्हैती गधेड़ै कीवी, कांनां लट्ठ बाजै ॥ २०५९

निरभागी नै कद मिळै, भली वसत रौ भोग ।
दाख पकै जद काग रै, हुवै कंठ में रोग ॥ २११५

तुलसी नर का क्या बड़ा, समय बड़ा बलवान ।
काबा लूटी गोपिका, वही अरजुन वही बाण ॥ २२२८

किणी नै बैंगण बायरा, किणी नै बैंगण पच्च ।
किणी नै चढ़ै आफरौ, किणी नै चढ़ै मच्च ॥ २३०६

रोटी, चरखौ, रांम, इतरौ मुतलब आपरौ ।
की डोकरियां कांम, राज-कथा सू राजिया ॥ २३८४

नांव रहसी ठाकरां, नांणौ नांह रहंत ।
कीरत हंदा कोटड़ा, पाड़्यां नांह पड़ंत ॥ २३८६

दुविध्या है अत अटपटी, घट-घट मांय घड़ीह ।
किण-किणनै समझावस्यां, कुअे ई भांग पड़ीह ॥ २३९२

चकवा चातक चतर नर, रहै सदा उदास ।
खर घोघू मूरख पसू, सदा सुखी प्रिथीराज ॥ २७६९

गूदळियौ तौ ई गंग-जळ, खांखळियौ तौ ई दीह ।
खरौ बिखायत 'खीमरौ', सांकळियौ तौ ई सीह ॥ २८०५

अेक सोड़ अर जणा पचास, सगळा करै ओढ़ण री आस ।
सांझ पड़्यां व्है खींचा-तांणी, खातां खांण न पीतां पांणी ॥ २८७५

खाया-पीया खरचिया, दीन्हा सो ई दत्त ।
[illegible] धर पोढ़ावतां, माल परायै हत्थ ॥ २९१९

गरज दीवांणी गूजरी, घर में मांदौ पूत ।
मांवण छाछ न घालती, भर बैसाखां दूध ॥ ३२९१

रहिमन हाय गरीब की, कबहुं न निरफळ जाय ।
मुई खाल की हाय से, लोह भसम हो जाय ॥ ३३१८

गुरु गोविद दोनों खड़े, काकै लागूं पांव ।
बलिहारी गुरुदेव की, गोविद दियौ बताय ॥ ३३३४

ऊजड़ खेड़ा, भल बसै, निरधनियां धन होय ।
गियौ न जोबन बावड़ै, मूवौ न जीवै कोय ॥ ३४१०

सुंदर कोऊ न जान सकै, यह गोकुल गांव कौ पैंडौ ई न्यारौ । ३७१९

गोला किणरा गोठिया, जोगी किण रा मित ।
वेस्या किणरी अस्तरी, तीनूं मिंत कुमित ॥ ३७४६

पाटा पीड़ उपाव, तन लाग्यां तरवारियां ।
बहै जीभ रा घाव, रत्ती न औखद राजिया ॥ ३७५३

ग्यांनी सूं ग्यांनी मिळै, बात, बात अर बात ।
गधा सूं गधा मिळै, लात, लात अर लात ॥ ३७६८

सांईं इतना दीजिए, ज्यामें कुटुम समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाय ॥ ३८४८

चलती को गाड़ी कहै, बनै दूध को खोया ।
रंगी को नारंगी कहै, देख कबीरा रोया ॥ ४२५९

चलती चाकी देखकर, दिया कबीरा रोय ।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय ॥ ४३०७

चिड़ी चूच भर ले गई, नदी न घटियौ नीर ।
दांन दिये धन ना घटै, कह गये दास कबीर ॥ ४३७८

भूंड मुंडायां हरि मिळै, सब कोई लेय मुंडाय ।
बार-बार के मूंडनै, भेड़ न बैकुंठ जाय ॥ (या) ४८२४
पाहन पूजै हरि मिळै तौ मैं पूजूं पहार ।
याते तौ चाकी भली, पीस खाय संसार ॥

चाह गई चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह ।
जाकौ कुछ ना चाहिए, वौ ही शाहंशाह ॥ ४८६९

रहिमन जिव्हा मौज में, कह गई सरग-पताल ।
आप तु कहि भीतर गई, जूती खाय कपाल ॥ ५१८९

बैठणौ, भायां रै भेळौ, व्हौ भलां ई जैर ई ।
छींयां तौ मौका री भली, व्हौ भलां ई कैर ई ।
धीणौ तौ भैंस रौ भलौ, व्हौ भलां ई सेर ई ।
जीमणौं मां रै हाथ रौ, व्हौ भलां ई जैर ई । ५२१३

नंह हंसतां हाथ गह्यौ, नंह खीच्यां-खांच्यां केस ।
जेड़ा कंथा घर भला, तेड़ा ई परदेस ॥ ५३३४

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब-कुछ होय ।
माली सींचै सौ घड़ा रितु आयै फल होय ॥ ५६१५

डाढ़ी दंत सवार, सिर साथै ई चालसी ।
तुरी, कटारी, नार, तीनूं ई पर घर मालसी ॥ ५७२५

डूमां आडी डोकरी अर बळदां आडी भैंस ।
विद्या आडी वींदणी, इज्जत आडी अैस ॥ ५७६९

सिघ गमन, पुरुस वचन, केळ फळै इक बार ।
तिरिया तेल, हमीर हठ, चढै न दूजी वार ॥ ६००५

तेल बळै बाती बळै, नाव दीवा रो होय ।
बेटा तौ गौरी जिणै, नाव पीव रौ होय ॥ ६११८

सास बहू पाणी नै चाली, गधौ-गधी घूमर घाली ।
चढ्या पैली ठरगी काया, थू ई मुबई गियौ रे भाया ॥ ६२५९

पाप छिप्योडौ नह छिपै, छिपै तौ मोटा भाग ।
दाबी दूबी नह रहै, रूई लपेटी आग ॥ ६४३२

वही आगन, वही देहरी, वही ससुर को गाव ।
दुलहन दुलहन टेरता, बुढिया पड गयौ नाव ॥ ६४८८

सुखिया सब ससार है, खावै अरु सोवै ।
दखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै ॥ ६५८२

लूखी-सूखी खायनै, ठाडौ पाणी पीव ।
देख पराई चोपडी, मत कळपावै जीव ॥ ६७१४

कूड कपट रा कोथळा, राखै मन मे खोट ।
देवण ने केवळ दगो, लेवण ने जम पोट ॥ ६७५५

मोढा रै घर साखली नै साखली रै घर सोढो ।
अखरै आ बात, दो घर डूबता एक ई डूबौ ॥ ६८१३

मान रखै तौ पीव तज, पीव तजे रख मान ।
दो दो गयद न बधहि, अेकै खभू ठाण ॥ ६८२१

राजा सू जोगी भयौ, जोगी सू भयौ कुमार ।
दोनू गमाई रे बूबना, मुदरा नै जुहार ॥ ६८२४

कनक, कनक तै सौ गुनी, मादकता इदकाय ।
वा खायै बौरात है, आ पायै बौराय ॥ ६९११

लाख लखारा नीपजै, बड पीपळ री साख ।
नटियौ मुहतौ नैणसी, ताबौ दियण तलाव । ७१७९

तुलसी या ससार मे भाति-भाति के लोग ।
सबसे हिलमिल चालिये नदी नाव सयोग ॥ ७१९२

हितकर जोड़ै हाथ,कांमण सूं अनमी किसा !
नमै तिलोकीनाथ,राधा आगळ राजिया ॥ ७२०४

नर चींती रीती रही,हर चींती ततकाळ ।
जांणौ चाहतौ सुरग में,भेज दियौ पाताळ ॥ ७२०८

कर फुलेल को आचमन,मीठौ कहत सराह ।
गंधी गंध गुलाब को,अतर दिखावत काह ॥ ७४६३

जरणी जणै तौ रतन जण,के दाता के सूर ।
नींतर रहजै बांझड़ी,मती गमाजै नूर ॥ ७५६५

बोदी बाड़ फरांस री,बिन छेड़्यां छिड़ जाय ।
नुगरौ मांणस छेड़तां,पत सुगरा री जाय ॥ ७६४०

पग पिछांणै मोचड़ी,नैण पिछांणै नेह ।
कंथ पिछांणै कांमणी,नार पिछांणै गेह ॥ ७७५८

आवतड़ां हरखै नहि,नैन न बरसै मेह ।
उण घर कबहुं न जाइये,कंचन बरसै मेह ॥ ७८५०

बांणिया थारी बांण-कुबांण,करै मन रौ जांणियौ ।
पांणी पीवै छांण,लोही पीवै अणछांणियौ ॥ ८०१५

हिम्मते मरदां,मददे खुदाह ।
बादशाह की बेटी से,फकीरं का निकाह ॥ ८१४६

घोड़ा जु व्है काठ रा,पिंड कीजै पाखांण ।
लोह तणा व्है लूगड़ा,जद जोईजै जैसांण ॥ ८२३४

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ,पिंडत भया न कोय ।
ढाई अच्छर प्रेम का,पढ़ै सो पिडत होय ॥ ८४८८

केसर री क्यारी करूं,कस्तूरी रौ खात ।
तेल-फुलेल सींचूं सदा,प्याज बास नहीं जात ॥ ८५२३

साधू तौ रमता भला,दाग न लागै कोय ।
बहता पांणी निरमळा,पड़्यौ सो गूदळ होय ॥ ८८४८

बांबी कूटै बावरा,सांप न मारा जाय ।
मूरख बांबी ना डसै,सांप सबन को खाय ॥ ८९९२

बातां रीझै बांणियौ, रागां में रजपूत ।
बांमण रीझै लाडुवां, बाकळ रीझै भूत ॥ — १००१

सहजै चुड़लौ फूटग्यौ, हळका व्हैगा हाथ ।
बाई रा बंधण कट्या, भली करी रुघनाथ ॥ — १०५५

घणी गई थोड़ी रही, ज्यांमें छिण-छिण जाय ।
भगतण कहै बजंदरी, बाजै ज्यों ही बजाय ॥ — १०९४

राजा डंडै रेत नै, रोवै किण ढिग जाय ।
बाड़ लगाई खेत नै, बाड़ खेत नै खाय ॥ — [illegible]१०६

आवै न कोई ऊपजै, सरवर मज्झ थयाह ।
बातां करस्यां डेडरा, तिरनै तीर गयाह ॥ — ११४६

मतलब री मनवार, निवत जिमावै चूरमौ ।
बिन मतलब रा यार, राब न पावै राजिया ॥ — १४०६

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहुं मांगन जाहि ।
उनते पहिले वे मुवे, जिन मुख निकसत नाहि ॥ — १४०७

बिन समझ्यां छापर चरै, समझ्या लागौ बाण ।
गाय सुहागिन हालरौ, जब लग घट मे प्राण ॥
मम सींगन की नाद कर, मम म्रिग छाल बिछाय ।
मम आंतन की तांत कर, गाय गाय पुनि गाय ॥ — १४०८

बिना बिचारै जो करै, सो पाछै पछताय ।
कांम बिगाड़ै आपनौ, जग में होत हंसाय ॥
जग में होत हंसाय, चित्त में चैन न पावै ।
खान पान सनमान, राग रंग मनहि न भावै ॥ — १४२८

रहिमन विपदा तूं भली, जो थोड़ै दिन होय ।
हित अनहित या जगत में जानि पड़ै सब कोय ॥ — १४४४

मिनखा जलम न मिलेगौ मूढ़ बार-बार,
बीज के झमंकै मोती पोयलै तौ पोयलै ॥ — १४८७

नैणां बरसै सेज में, आंगण बरसै मेह ।
होड़ा-होड़ी झड़ लगी, उत सांवण इत नेह ॥ — १५४२

थारै आंगण चीकलौ, म्हारौ आंगण फरकौ ।
ब्याव बिगाडूं परकौ, औ तौ म्हारै घर कौ ॥ ९८१८

कर तौ गह्यौ लख कंबळी, तिकौ विलूमी तन्न ।
जळ ऊंडौ थळ है नहीं, हई सो जांणै मन्न ॥ १०१३५

केहर, देवी, छत्रसी, दोलौ राजकंवार ।
मरतै मोडै मारया, चोटी वाळा च्यार ॥ १०६६७

मरदां मरणौ हक्क है, मगर पचीसां मांय ।
महलां झुरै थारी कांमणी, सैण हथायां मांय ॥ १०६९०

जेठ बीती पैल पिड़वा, घण बादळ, घण बीज ।
हळ फाड़ ईंधन करौ, बैठा चाबौ बीज ॥ ११०५६

मारवाड़ मंसोबां डूबी, पूरब डूबी न्हांणा सूं ।
खानदेस खांणा सूं डूब्यौ, दिखण डूबी गांणा सूं ॥ १११२८

सौ सांढ्या, सौ करहला, पूत निपूती होय ।
मेहड़ला तौ वूठा ई भला, होणी हो सो होय ॥ ११६०४

मोरियौ मिरचां में हिलियौ, फाल-फाल खावै रे ।
बूढ़ौ डैण रांडां में हिलियौ, गाल-गाल खावै रे ॥ ११७६१

रजपूती रही कठै, पूगी समंदां पार ।
पातरियां रा पाद में, रीझ गि़या मिरदार ॥ ११९५७

म्हां ई पाथर पूजता जे व्हैता रण रा रोझ । ११९६२

रिपिया थारी रात, जायौ नीं कोई जलमसी ।
जे जायौ परभात, थारौ रंग पायौ नहीं ॥ १२३५८

उरबांणौ अर ऊजड़ चालै, ठोकर वावै भाटा नै ।
फाटी पाग कड़कड़ी पाड़ै, रोवै रीत रा खाटा नै ॥ १२५४३

बुझावै कुण, किण सूं बुझै, लांपळा में लागी लाय ।
रेबारण ही नै डाकग व्हैगी, ऊंटां चढ़-चढ़ खाय ॥ १२६४०

माखी बैठी सैत पर, पंख रही लिपटाय ।
उडणा रौ सांसौ पड़्यौ, लालच बुरी बलाय ॥ १२७७६

परदेसां सूं साजन आया, ऊंची मेड़ी पिलंग बिछाया ।
आया हा पण रैग्या सोय, लैणा अेक नंह दैणा दोय ॥ १२९३७

भायां सूं भिड़ियां पछै, घर घड़ियां में जाय ।
वडियां सूं खेती करै, ज्यांरी जडियां ऊखल जाय ॥ १३०२९

विपदा बराबर मुख नहीं, जे गिणिया दिन होय ।
दुस्ट, मित्र, भ्रात, वंधु, जांण पड़ै मब कोय ॥ १३१४५

म्हारी हुती नै म्हैं ई लाई, बैन हुती नै सोक कहाई ।
सांम्ही बैठी सुरमौ सारै, माखी नीं आ मुळकौ मारै ॥ १३५९८

सीयाळै खाटू भली, उन्हाळै अजमेर ।
नागांणौ नित रौ भलौ, सांवण बीकानेर ॥ १३६०५

सांवण साजै सासरौ, काती ल्हासिया जाय ।
काळी-पीळी आंधी बाजै, धूळ बापड़ा खाय ॥ १३६११

चा गल चाड पाट, सिर डूबै, लोढा तिरै । १३८७३

मीयाळौ सभागियां, दोरौ दोजखियांह ।
आधौ हाळी-बाळदी, पूरौ पांणतियाह ॥ १३९३९

सीर, सगाई, चाकरी, मन मिळ्यां रा काम ।
बिरखा तौ जद होवसी, जद राजी होसी राम ॥ १३९५२

लूखै धांन न धापता, सपनै दिखतौ तेल ।
सीरौ ई वादी करै, देख दई रौ खेल ॥ १३९६०

पटु पांखें, भखु कांकरी, सदा परेई संग ।
सुखी परेवा जगत में, अेकै तुहीं विहंग ॥ १३९८९

सूती-बैठी डूमणी, घर में घाल्यौ घोड़ौ ।
दूध कटोरौ पीवती, धोब खोदण दोड़ौ ॥ १४०७९

सूर न पूछै टीपणौ, सुगन देखै नंह सूर ।
मरणा नै मंगळ गिणै, समर चढ़ै मुख नूर ॥ १४१३१

आवतड़ा रोकूं नहीं, जावत लावूं न मोड़ ।
हंसां नै सरवर घणा, सरवर हंस किरोड़ ॥ १४४९९

हरि बडा के हिरण बडा, सुगन बडा के स्यांम ।
अरजण रथ नै ढाब मत, भली करै भगवांन ॥ १४५३८

कळै मत कर कांमणी, घोड़ां घी देतांह ।
कदयक आडा आवसी, वाढ़ाळी बेतांह ॥
आग हकै, पवन भखै, तुरियां आगळ जाय ।
हूं थनै पूछूं सायबा, हिरण किसा घी खाय ? १४८७९

हीमत कीमत होय, बिन ह मत कीमत नहि ।
करै न आदर कोय, रद कागद ज्यूं राजिया ॥ १४९२१

हुन्नर करौ हजार, सैणप चतुराई सहत ।
हेत कपट विवहार, रहै न छांना राजिया ॥ १४९७८

* * *